मुंशी देवीप्रसाद।

अनुवादकका परिचय।

इस पुस्तकके अनुवादकर्त्ता श्रीयुक्त मुंशी देवीप्रसाद महोदयका कुछ परिचय पाठकोंको देना चाहता हूं। आप हिन्दीभाषा और देवनागरीके प्रचारके वडे पक्षपाती है। यद्यपि आप फारसी और उर्दूके विद्वान हैं तथापि हिन्दीके तरफदार बहुत दिनसे है। बहुत दिन पहले हिन्दीमें राजस्थानका स्वप्न नामकी पुस्तक लिखकर आपने अपने हिन्दीप्रेमका परिचय दिया था और राजस्थानकी रियासतोंमें देवनागरी अक्षरोंके प्रचारके लिये जोर दिया था। मुसलमान बादशाहों और हिन्दू राजाओंका इतिहास जाननेमें आप अद्वितीय पुरुष है। राजस्थानकी एक एक रियासतहीकी नहीं एक एक गांव और एक एक कसवेकी सब प्रकारकी बातोंको आपने इस तरह खोज खोजकर निकाला है कि आपको यदि राजस्थानका सजीव इतिहास कहें तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होती। राजस्थानके इतिहासकी खोजमें आपने जैसा श्रम किया है उससे आपका नाम सुवरिंखे राजपूताना पड गया है। पर सच पूछिये तो वह राजस्थानके केवल इतिहास लेखकही नहीं वरञ्च वहांके रीफार्मर या सुधारक भी है। बहुतसे देशी रजवाडोंमें उनकी लेखनीसे वहुत कुछ सुधार हुआ है। हिन्दीके प्रेमियोंके लिये यह एक वडे हर्षका विषय है कि इस प्रवीणावस्थामें वह हिन्दीके मुरब्बी हुए हैं और हिन्दीभाषाके इतिहासभाण्डारको पूर्ण करनेकी ओर उनका ध्यान हुआ है।

मुंशी देवीप्रसादजी गौड कायस्थ हैं। आपके पूर्वपुरुष दिल्लीसे भूपाल गये थे। उनमेंसे एक मुंशी नरसिंहदास थे। उनके पुत्र मुंशी आलमचन्द थे उनके वेटे घासीराम मुंशी देवीप्रसादके परदादा

थे जो बडे मुंशी और खुशनवीस थे। उनके बेटे मुंशी किशनचन्द जीका संबंध टौंकके नवाब अमीरखांके बख्शी दौलतरायजीकी कन्यासे हुआ था। इससे वह भूपाल छोडकर सिरौंजमें आबसे थे जो भूपालसे १८ कोस पर नवाब अमीरखांकी अमलदारीमें था। वहीं मुंशी देवीप्रसादके पिता मुंशी नत्थनलालजीका जन्म भादों बदी ८ संवत् १८७६ को हुआ। उसी साल अमीरखांने अङ्गरेजों से सन्धि होजाने पर टौंकमें रहना स्वीकार किया। इससे देवीप्रसाद जीके दादा सकुटुम्ब टौंकमें आबसे। जब आपके पिता लिख पढ कर होशियार हुए तो वह अमीरखांके छोटे बेटे साहबजादे अबदुलकरीमखांकी सरकारमें नौकर होकर संवत् १९०० विक्रमाब्दमें उनके साथ अजमेर चले आये। क्योंकि साहबजादेको उनके बडे भाई नवाब वजीरुद्दौलासे नहीं बनती थी इससे अंगरेजोंने उनको अजमेरमें रहनेकी आज्ञादी।

मुंशी देवीप्रसादका जन्म माघ सुदी १४ संवत् १९०४ को जयपुरमें नानाके घर हुआ। नाना हकीम शंकरलाल जयपुर राज्यके चौकीनवीस भैया* हीरालालजीके पुत्र थे। देवीपसादजीने फारसी हिन्दी अपने पितासे पढी और नौकरी भी टौंकहीकी सरकारमें संवत् १९२० से संवत् १९३४ तक की। इस बीचमें उनका रहना कभी अजमेरमें और कभी टौकमें हुआ। क्योंकि उक्त साहबजादे के पुत्र पिताके बाद कभी अजमेरमे और कभी टौकमें रहने लगे थे।

मुसलमानी राज्य होनानेसे टौंकमें हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार होने लगा। इससे संवत् १९३५ के आरम्भमें मुंशी देवीप्रसादजी को नौकरीही नहीं छूटी वरञ्च उन्हें टौंक छोडदेनेका भी हुक्महुआ। मुंशीजीने अजमेरमें आकर कोहेनूर आदि अखबारोंमें उन अत्याचारोंकी बात लिखना आरम्भ की। परिणाम यह हुआ कि टौंक दरबारको कुछ सुध हुई। अत्याचार कुछ कम किये गये और

* ढूंढारदेश और हाडोती (कोटाबूंदी) में कायस्थोंको भैयाजी कहते हैं और मारवाड मेवाडमें पंचोली।

लखनऊके अवधअखबारमें रियासतकी ओरसे विज्ञापन प्रकाशित हुआ कि अब पिछली बातें रियासतमें नहीं होने पावेंगी।

मुंशीजीके छोटेभाई बाबू बिहारीलाल जोधपुरकी एजण्टीमें सेकेण्डक्लार्क थे। उनकी चेष्टासे आपको एक नौकरी संवत् १९३६ में जोधपुर दरबारमें मिली। पहले कई साल तक आप अपीलकोर्टके नायब सरिश्तेदार रहे। संवत् १९४० में महकमे खासके सर-दफ्तर होगये। १९४२ में आप मुंसिफ हुए। १९४६ में महकमें तवारीखके मेम्बर हुए। संवत् १९४८ में मनुष्यगणनाके डिपटी सुपरिण्टेण्डेण्ट और १९५५ में महकमे वाकियात और खासो दुकानातके सुपरिण्टेण्डेण्ट हुए। अढाई सौ रुपये मासिक तक वेतन पाते रहे। संवत् १९५६ के अकालमें रियासतकी मुन्सिफी टूट गई तब आपने कुछ दिन तक फेमिन विभागमें काम किया। संवत् १९५७ में फिर जोधपुर परगनेमें मनुष्यगणनाके सुपरिण्टे-ण्डेण्ट हुए। आजकल रियासतके बड़े काम छोड़कर गुजारेकी लायक कुछ काम आपने अपने पास रखे हैं और साहित्यसेवामें लगे है। दुनियामें धन जोड़नेकी इच्छा अधिक लोगोंको रहती है पर धन अमर नहीं हैं। मुंशी साहब इस समय वह धन जोड़ रहे हैं जो सदा अमर रहे।

अङ्गरेजीमें छपी हुई मुंशी देवीप्रसादजीके सार्टीफिकटोंकी एक पुस्तक मेरे दृष्टिगोचर हुई। उसके देखनेसे विदित होता है कि वह जिस विभागमें गये हैं उसीमें उनके कामकी इज्जत और उनकी सेवाकी सराहना हुई है। नौकरके लिये यही बड़ी इज्जत है कि उनके कामकी प्रशंसा हो। पर जिनके दृष्टि है उनकी समझमें आजाता है कि मुंशी देवीप्रसाद मामूली काम करनेवालोंके सदृश नहीं थे। उनकी प्रतिभाने हर जगह अपना चमत्कार दिखाया है। इतिहासके समझने पढने और पुरानी बातोंको खोज खोज कर निकालनेकी जो बुद्धि भगवानने उनको दी है उसने हर जगह अपनी तेजी दिखाई है। मनुष्यगणनामें जाकर आपने जोधपुर

राज्यकी प्रजाकी वह सुन्दर रिपोर्ट लिखी है कि वैसी रिपोर्ट देशी रियासतोंमें तो कहां भारतके अंगरेजी इलाकोंकी भी बहुत कम है।

अब कुछ बातें उनके साहित्यसेवा संबंधकी लिखी जाती हैं। उसके दो विभाग हैं एक उर्दू विभाग जिसमें उन्होंने बहुत पुस्तकें लिखी हैं। उनमेंसे अधिक इतिहास नीति और स्त्रीशिक्षाके विषय में हैं। गुलदस्तयेअदब, तालीमउन्निसा और तवारीखे मारवाड़ नामकी पुस्तकोंके लिये उन्हें युक्तप्रदेशकी सरकारसे इनाम मिला। एक पुस्तक उन्होंने उर्दूमें कविता करनेवाले हिन्दूकवियोंके विषयमें बहुत सुन्दर लिखी है। हिन्दीमें आपने जो पुस्तकें लिखी हैं उनके भी दो विभाग है—एक तो वह जो मारवाड दरबारके लिये उक्त दरबारकी आज्ञासे बनाई गई है। वह मारवाड़में भी काम आती हैं और बाहर भी जाती हैं। उनमेंसे तीन तो मारवाड़ राज्यकी तीन सालकी रिपोर्ट है जिनमें सन १८८३—८४ ईस्वीसे १८८५—८६ तकका वर्णन है। एक सन् १८९१ ईस्वीकी मर्दुम-शुमारीकी रिपोर्ट है जिसके लिये उन्हें ५००) इनाम मिला। इसके पहले भागमें उमर, जाति और पेशे सहित मनुष्यगणना लिखी गई है। दूसरे भागमे मालाणी मारवाड़के कुल गांवोंकी परगनेवार लिष्ट अकारादि क्रमसे मनुष्य गणना मालिकोंके नाम और स्थानों का फासिला लिखा गया है। तीसरे भागमें मारवाडमें बसनेवाली सब जातियोंका हाल उनके पेशे और उनके चालचलनकी जरूरी बातें कितनेही कामके चित्रों सहित दी हैं। उसमें एक एक गांव की सूची, मनुष्यगणना आदि बहुतसी कामकी बातें लिखी हुई हैं। तेरह अलग अलग पुस्तकोंमें मारवाड राज्यके दीवानी फौजदारी और दूसरे प्रबन्ध संबंधी कायदे कानून लिखे हैं।

दूसरे विभागकी हिन्दी पुस्तकें वह है जो आपने अपनी रुचिसे लिखी हैं। यह हिन्दी साहित्यकी सेवाके लिये लिखी गई हैं। इनमेंसे कुछ छपी है कुछ नहीं छपी और कुछ अधूरी हैं। इनकी सूची इस लेखके अन्तमें दीगई है।

हिन्दीकी ओर आपका ध्यान थोडेही दिनसे हुआ है। कई एक विद्वानोंने आपसे आग्रह किया कि हिन्दीके भाण्डारमें इतिहासकी बहुत कमी है। आप इस कमीको दूर करें तो बडा उपकार होता। इतिहासका आपको सदासे [illegible] है। उसकी बडी सामग्री उन्होंने एकत्र की है। इनका कुछ परिचय उन्होंने अपनी सन् १८०५ ईस्वीकी जन्त्रीमें दिया है। यह अनुरोध उन्होंने अङ्गीकार किया और तबसे बराबर वह उस काममें लगे हुए हैं। इसके सिवा आप बहुतसे विद्वानोंको साहित्यसेवामें यथाशक्ति सहायता देनेसे भी नहीं रुकते हैं। भारतवर्षके नाना स्थानोंसे कितनी ही इतिहास संबंधी बातोंकी जांच पडतालके लिये उनके पास पत्र पहुंचते हैं। उनके उत्तरमें मुंशी साहब जोधपुरसे उनको अभीष्ट सामग्री भेज देते हैं। इतना परिश्रम करने पर भी वह साहित्य और इतिहासके संबंधके लेख समाचारपत्रोंको भेजते हैं। आपने विज्ञापन दे रखा है कि मुसलमानों और राजपूतोंके इतिहासके विषयमें कोई बात पूछना हो या किसी पुस्तककी जरूरत हो तो उनसे पत्रव्यवहार करें।

जब जब उन्होंने अपने या रियासती कामोंके लिये यात्रा की है तब तब कुछ समय निकालकर पुरानी बातें, पुराने ग्रन्थ, पुराने शिलालेख, पुराने पट्टे कागज और पुराने सिक्कोंके ढूंढ़नेमें बडा श्रम किया है। दो साल पहले काशीकी नागरीप्रचारिणी सभाके लिखने पर एक हज़ारके लगभग पुरानी हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का पता मारवाड़ जैसे विद्याहीन देशमेंसे झटपट लगा दिया था।

आप पुश्तैनी कवि हैं। आपके पिता उर्दू फारसीके अच्छे कवि थे, फारसी कवितामें उनकी बनाई भक्तमाल मैंने पढ़ी है। आप स्वय भी पहले उर्दूकी कविता करते थे और कितनेही कवि संशोधनके लिये अपनी कविता आपके पास भेजते थे। हिन्दीमें आपने कविता नहीं की पर पुरानी कविताका उद्धार किया है। "महिला मृदुवाणी" प्रकाशित कर आपने कविता करनेवाली स्त्रियोंकी

जीवनी और उनकी कविताको रक्षित किया है। राजरसनामृत नामसे आपने कविता करनेवाले राजा लोगोंकी कविता और जीवनीका एक अच्छा संग्रह किया है जो अभी छपा नहीं है। इसी प्रकार हिन्दीके कवियोंकी एक रत्नमाला गूंथी है। स्वर्गीय अजान कवि डुमरावंनिवासी पण्डित नकछेदी तिवारीने जिनकी मृत्युका शोक अभी बहुत ताजा है (जो गत मासमें इस असार संसारको छोड़ गये हैं) कवि पद्माकरकी जीवनी लिखकर उसकी इतिहास संबंधी बातोंको एकबार जांच जानेके लिये आपके पास भेजी थी। इसी प्रकार और बहुतसी बातोंकी खोज तलाश आपके द्वारा होती है। आपके पुत्र मुंशी पीताम्बरप्रसाद जिनकी उमर इस समय कोई ३० सालकी है उर्दूके बहुत अच्छे और होनेहार कवि हैं। उनकी बनाई नीतिकी कई पुस्तकें मैंने देखी हैं।

साहित्य संबंधमें राजस्थानको इस समय दो उज्वल रत्न प्राप्त हैं एक मुंशी देवीप्रसाद जोधपुरमें और दूसरे पण्डित गौरीशंकरजी ओझा उदयपुरमें। पहलेने मुसलमानी समयके भारतके इतिहास की खोज है और दूसरेने संस्कृत और अंगरेजीके विद्वान होनेसे हिन्दुओंके प्राचीन इतिहासको। सब साहित्यप्रेमियोंकी इच्छा है कि इन दो रत्नोंकी चमक दमक खूब बढे और सबकी आशा है कि भारतके विद्याभाण्डारकी इनके द्वारा बहुत कुछ पूर्ति हो।

कलकत्ता
कार्तिक शुक्ला ११ संवत् १९६२ विक्रमाब्द। } बालमुकुन्द गुप्त।

मुंशीजीकी बनाई हिन्दीभाषाकी पुस्तकोंकी सूची ।

१ अकबर बादशाहकी जीवनी ।
२ शाहजहांकी जीवनी ।
३ हुमायूं बादशाहकी जीवनी ।
४ ईरानके बादशाह तुहमास्पकी जीवनी ।
५ बाबर बादशाहकी जीवनी ।
६ शेरशाह बादशाहकी जीवनी ।
७ उदयपुरके महाराणा सांगाजीकी जीवनी ।
८ राणा रतनसिंह विक्रमादित्य और बनवीरजीकी जीवनी ।
९ महाराणा उदयसिंहकी जीवनी ।
१० महाराणा प्रतापसिंहकी जीवनी ।
११ आमेरके राजा पृथ्वीराज, पूरणमल, रतनसिंह, आसकरण, राजसिंह, भारमल और भगवानदासकी जीवनी ।
१२ महाराज मानसिंहकी जीवनी ।
१३ बीकानेरके राव बीकाजी और नराजीका चरित ।
१४ राव लूणकरणकी जीवनी ।
१५ राव जैतसीकी जीवनी ।
१६ राव कल्याणमलकी जीवनी ।
१७ मारवाडके राठ मालदेवका चरित ।
१८ राजा बीरबलकी जीवनी पहला भाग ।
१९ राजा बीरबलकी जीवनी दूसरा भाग ।
२० मीरांबाईकी जीवनी ।
२१ भाषाभूषणके कर्त्ता महाराज श्रीजसवन्तजीकी जीवनी ।
२२ जसवन्त स्वर्गवास ।
२३ सरदार सुख समाचार ।
२४ विद्यार्थी विनोद ।
२५ स्वप्न राजस्थान ।

॥ श्री ॥

जहांगीरनामा।

भूमिका।

मैंने पहले अकबर बादशाहका संक्षिप्त इतिहास लिखा था और पीछे शाहजहां बादशाहका, उक्त दोनों बादशाहोंके बीचमें जहांगीरने बादशाही की है उसका इतिहास बाकी था। वह अब लिखकर हिन्दुस्थानके उक्त तीन नामी मुगल बादशाहोंके इतिहास का सिलसिला पूरा कर दिया जाता है।

अकबर और शाहजहांके इतिहास उनके नौकरोंके लिखे हुए हैं। उनमें कुछ कुछ खुशामद और अत्युक्ति भी है। पर जहांगीर ने अपना इतिहास आप लिखा है और ठीक लिखा है। क्योंकि नौकर लोग कभी किसी बादशाहके घर दरबार राज्यकार्य्य स्वभाव आदिकी बातें वैसी खुलकर नहीं लिख सकते जैसी जहांगीरने अपनी आप लिखी है। लिखी भी ऐसी हैं कि पढ़कर आनन्द आता है। क्योंकि केवल इतिहासही नहीं किन्तु न्याय नीति लौकिक रीति विद्याविनोद और नये संस्कारोंकी कितनीही बातें भी इसमें आगई हैं। आश्चर्य है कि जो बादशाह आजतक लोगोंमें मौजी विलासी शराबी शिकारी आदि कहलाता है वह ऐसा विद्वान बुद्धि-मान और लिखने पढनेमें सावधान हो कि उसकी लेखनीका एक एक अक्षर ध्यान देनेके योग्य हो। अधिक क्या लिखें पढ़नेवाले पढ़कर स्वयं देख समझ लेंगे। यदि कुछ खेदकी बात है तो इतनी है कि इस इतिहासके अन्तिम तीन वर्षोंका हाल स्वयं जहांगीरका

लिखा या लिखाया हुआ नहीं था। पोथी अधूरी थी शाहजहांके समयमें मिर्जा हादी(१) ने पिछला हाल संक्षिप्त रीतिसे लिखकर पूरी की। इस पोथीकी भूमिका भी उसी मिर्जा हादीकी लिखीहुई है। उसमें जहांगीरके बादशाह होनेसे पहलेका हाल है।

अपना रोजनामचा आप लिखनेकी चाल जहांगीरके घरानेमें ८ पीढी पहलेसे चली थी। अमीर तैमूर साहिबकिरां जहांगीर का आठवीं पीढ़ीमें दादा था। उसने अपनी दिनचर्य्या जन्मकालसे मरण पर्य्यन्त लिखकर अपने सिरहाने छोडी थी। वह तुर्कीभाषा में है। उसका अनुवाद फारसी और उर्दूमें भी होगया है। उसका नाम तुजुकतैमूरी है।

दूसरी दिनचर्य्या बाबर बादशाहकी है जो तुजुकबाबरी और वाकआत बाबरीके नामसे प्रसिद्ध है। बाबर जहांगीरका परदादा था। उसका तुजुक भी तुर्कीभाषामें है। उसके फारसीमें दो अनुवाद हुए हैं एक ईरानमें मौलाना जैनुद्दीन खवाफीने किया और दूसरा हिन्दुस्थानमें मिर्जा अबदुर्रहीम खानखानांने किया।

तीसरी दिनचर्य्या यह जहांगीर बादशाहकी है। इसका ढङ्ग तुजुक बाबरीसे बहुत मिलता जुलता है। इतिहासके सिवा विद्या विज्ञान खगोल भूगोल काव्य कला राजनीति और लौकिक रीति आदि दूसरी दूसरी उपयोगी बातें जैसी बाबरके तुजुकमें हैं वैसीही वरञ्च उससे भी बढकर जहांगीरके तुजुकमें हैं। कारण यह कि हिन्दुओंकी धर्मनीति चालढाल आचार व्यवहार तथा भारतकी रीति भांति और प्रकृतिसे, अपने परदादाकी अपेक्षा जहांगीर अधिक जानकार होगया था। इसीसे उसने इन सब बातोंका वर्णन यथा प्रसङ्ग बाबरसे अच्छा किया है।

---

(१) पिछला हाल जो मिरजाहादीने लिखकर लगाया है "इकबाल नामये जहांगीरी" से लिया हुआ जान पड़ता है। इकबालनामा भी मोतमिदखां बख्शीने शाहजहांके समयमें पूरा किया था।

जहांगीर बादशाहकी इस किताबका नाम तुजुक जहांगीरी अर्थात् जहांगीर प्रबन्ध है। तुर्कीभाषामें प्रबन्धको तुजुक कहते हैं। पर इस पुस्तकको भोजप्रबन्ध या कुमारपाल प्रबन्ध आदिके समान न समझना चाहिये। क्योंकि उन पोथियोंमें बिना संवत् मिती और पते ठिकानेकी कथाएं हैं और यह पोथी सप्रमाण रोजनामचा है। विस्तारभयसे हमने इस जहांगीरनामेका अक्षर अक्षर अनुवाद नहीं किया है, अधिक स्थानोंमें सारांशसे काम लिया है और जहां अच्छा देखा है उसका पूरा आशय लेलिया है। तथा कहीं कहीं बादशाहके लेखका यथावत अनुवाद भी किया है।

बहुत जगह नोट भी लिखे हैं तथा मुसलमानी और इलाही तारीख और सनोंके साथ हिन्दी तिथि और संवत् गणित करके लिखे हैं। इसमें हमें अपनी ३५० वर्षकी इतिहाससहायक जन्त्री से बहुत सहायता मिली है।

इस प्रकार यह काम जो १ अप्रैल सन् १८०१ ईस्वीमें छेड़ा गया था अब चार सालके परिश्रमके पश्चात् पूरा हुआ है। पर इतने पर भी जबतक यह काम विद्वानोंके पसन्द न आवे तबतक मैं अपनेको कृतार्थ नहीं समझ सकता। ग्रन्थ बनाना सहज नहीं है फिर एक भाषासे दूसरी भाषामें अनुवाद करनेके लिये बहुतही समझ चाहिये। उसका मुझमें घाटा है। पर इतने पर भी अपनी मातृभाषामें इतिहासका घाटा देखकर इतना साहस करना पड़ा है।

तुजुक जहांगीरीमें तारीख महीने और सन् हिजरी भी लिखें है और इलाही भी। हिजरी मुसलमानोंका पुराना सन् है और इलाही अकबरने चलाया था। मैंने दोनोंके अनुसार हिन्दी तिथि महीने और वर्ष चण्डूपञ्चाङ्गसे गणित(२) करके इस पुस्तकमें यथा स्थान रख दिये है। यह श्रम न किया जाता तो पाठक ठीक तिथि न समझ सकते।

(२) इस गणितसे मैंने एक जन्त्री बना डाली है जो तारीखोंके मिलानेमें बहुत काम देती है।

पाठकोंके जाननेके लिये दोनों सनोंके महीने नीचे लिख दिये जाते हैं।

हिजरी महीने।	इलाही महीने।
१ मुहर्रम	१ फरवरदीन
२ सफर	२ उर्दीबहिश्त
३ रबीउलअव्वल	३ खुरदाद
४ रबीउस्सानी	४ तीर
५ जमादिउलअव्वल	५ अमरदाद
६ जमादिउस्सानी	६ शहरेवर
७ रजब	७ महर
८ शाबान	८ आबान
९ रमजान	९ आजर
१० शव्वाल	१० दे
११ जीकाद	११ बहमन
१२ जिलहिज	१२ असफन्दयार

हिजरी महीना चन्द्रदर्शनसे लगता है और इलाही सूर्यकी राशि बदलनेसे। मेखभानुके दिन फरवरदीनकी पहली तारीख होती है।

देवीप्रसाद,

जोधपुर।

॥ श्री ॥

जहांगीर बादशाहके तख्त पर बैठनेसे पहिलेका हाल जबकि वह शाहजादा सलीम, सुलतान सलीम और बादशाह सलीम कहलाता था।

जहांगीर बादशाह १७ रबीउलअव्वल सन ९७७ हिजरी बुधवार (आश्विन वदी ५ संवत् १६२६) को सीकरीमे शेख सलीम चिश्तीके घर पैदा हुआ था। उसका नाम इसी प्रसंगसे शाह सलीम रखा गया था। अकबर बादशाहने आगरेमें यह मङ्गलसमाचार सुनकर बहुतसा धन लुटाया और जितने कैदी किले और शहरमें थे उन सबको छोड दिया। फिर सीकरीमें शहर बसाकर फतहपुर नाम रखा और उसे राजधानी बनाकर आप भी वहां रहने लगा।

जब शाह सलीमकी उमर ४ वर्ष ९ महीनेकी हुई तो बादशाह ने २४ रज्जब सन ९८१ (अगहन वदी ११ संवत १६३०) को उसे पढने बिठाया। उसका अतालीक पहिले कुतुबमोहम्मदखां अंगा और फिर मिरजाखां खानखानां रहा।

सन ९८५ में बादशाहने उसको १० हजारी, १० हजार सवार का मनसब दिया जिससे बडा उस वक्त कोई पद नहीं था। जब उसकी उमर १५ वर्षकी हुई तो ९९३ (१६४२) में पहिला व्याह राजा भगवन्तदासकी बेटीसे दूसरा सन ९९४ (संवत १६४३) में उदयसिंहकी लड़कीसे, तीसरा जेनखां कोकेके चचा ख्वाजाहसनकी बेटीसे और चौथा केशव मारूकी लडकीसे हुआ।

पहिली बेगमसे पहिले सुलतान निसार बेगम और फिर २४ अमरदाद सन ९९५ (श्रावण सुदी १३ संवत् १६४४) को सुलतान खुसरो पैदा हुआ।

तीसरी बेगमसे १९ आबान सन ९९७ (कार्तिक सुदी ४ संवत् १६४६) को सुलतान परवेज जनमा।

चौथी बेगमसे २३ शहरेवर सन ९९८ (आश्विन बदी २ संवत् १६४७) को बहारबानू बेगम पैदा हुई।

दूसरी बेगमसे २९ रबीउलअव्वल गुरुवार सन १००० (माघ सुदी १ संवत् १६४८) को सुलतान खुर्रमका जन्म हुआ।

ता० ६ महर सन १००७ (आश्विन बदी १४ संवत् १६५५) को अकबर बादशाह तो दक्षिण फतह करनेके लिये गया और अजमेर का सूबा शाहसलीमको जागीरमें देकर राणाको सर करनेका हुक्म देगया।

शाहकुलीखां महरम और राजा मानसिंहकी नौकरी इनके पास बोली गई।

बङ्गालेका सूबा जो राजाको मिला हुआ था राजा अपने बडे बेटे जगतसिंहको सौंपकर शाहकी सेवामें रहने लगा।

शाह सलीमने अजमेर आकर अपनी फौज राणाके ऊपर भेजी और कुछ दिनों पीछे आप भी शिकार खेलता हुआ उदयपुर तक गया जिसको राणा छोड गया था और सिपाहको पहाड़ोंमें भेजकर राणाको पकडनेकी कोशिश करने लगा।

यहां खुशामदी और स्वार्थी लोग जो चुप नहीं बैठा करते हैं उसके कान भरा करते थे कि बादशाह तो दक्षिणको लेनेमें लगे हैं वह मुल्क एकाएकी हाथ आने वाला नहीं और वह भी बगैर लिये पीछे आनेवाले नहीं। इसलिये हजरत जो यहांसे लौटकर आगरेसे परेके आबाद और उपजाऊ परगनोंको लेलें तो बड़े फायदे की बात है। बंगालेका फसाद भी जिसकी खबरें आरही हैं और जो राजा मानसिंहके गये बिना मिटनेवाला नहीं है जल्द दूर हो जायगा। यह बात राजा मानसिंहके भी मतलबकी थी क्योंकि उसने बंगालेकी रक्षाका जिम्मा कर रखा था। इससे उसने भी हां में हां मिलाकर लौट चलनेकी सलाह दी।

शाह सलीम इन बातोंसे राणाकी मुहिम अधूरी छोडकर इलाहाबादको लौट गया। जब आगरेमें पहुंचा तो वहांका किलेदार

कुलीचखां पेशवाईको आया। उस वक्त लोगोंने बहुत कहा कि इसको पकड़ लेनेसे आगरेका किला जो खजानोंसे भरा हुआ है सहजमेंही हाथ आता है। मगर उसने कबूल न करके उसको रुखसत कर दिया और जमनासे उतरकर इलाहाबादका रास्ता लिया। उसकी दादी हौदेमें बैठकर उसे इस इरादेसे रोकनेके लिये किलेसे उतरी थी पर वह नावमें बैठकर जल्दीसे चलदिया और वह नाराज होकर लौट आई।

१ सफर सन १००९ (द्वितीय श्रावण सुदी ३ संवत १६५७) को शाह सलीम इलाहाबादके किलेमें पहुँचा और आगरेसे इधरके अकसर परगने लेकर अपने नौकरोंको जागीरमें देदिये। बिहारका सूबा कुतुबुद्दीनखांको दिया, जौनपुरकी सरकार लालाबेगको और कालपीकी सरकार नसीमबहादुरको दी। घनसूर दीवानने ३० लाख रुपयेका खजाना सूबे बिहारके खालसेमेंसे तहसीलकरके जमा किया था वह भी उससे लेलिया।

जब यह खबरें बादशाहको दक्षिणमें पहुंचीं तो उसने बड़ी महरबानीसे उसको अपने पास बुलानेका फरमान लिखा। जब अबदुस्समद मुंशीका बेटा शरीफ यह फरमान सलीम पास लेकर आया तो उसने पेशवाई करके फरमानको बड़े अदबसे लिया और जानेका भी इरादा किया। लेकिन फिर किसी खयालसे नहीं गया और शरीफको भी अपने पास रख लिया। वह खुशामद दरामदसे इनके दिलमें जगह करके वजीर बन गया।

बादशाह इन खबरोंके सुननेसे घरका फसाद मिटानेके लिये दक्षिणको फतह अधूरी छोडकर १५ उर्दीबहिश्त सन् १००९ (चैत सुदी २ संवत् १६५९) को आगरेकी तरफ लौटा। खानखानां और शेख अबुलफजलको वहांका काम पूरा करनेके लिये छोड आया। २० अमरदाद (श्रावण सुदी ३) को आगरेमें पहुंचा।

सन १०१० (संवत् १६५८) में शाहसलीम ३००० सजे हुए

सवारों और जंगी हाथियोंसे आगरेको रवाना हुआ। जाहिरमें बापसे मिलनेकी बात थी। पर दिलमें इरादा औरही था।

बादशाह भी इस धूमधड़ाकेसे उसका आना सुनकर बहुत घबराया।

इटावा आसिफखां दीवानकी जागीरमें था। सलीम जब वहां पहुंचा तो दीवानने एक लाल सलीमकी नजरके लिये भेजा। आसिफखां अकबरको सलीमकी ओरसे बहकाया करता था इससे सलीम का आना सुनकर मारे डरके वह घबरा गया। पर लालसे बला टल गई। क्योंकि वहीं बादशाहका फरमान पहुंचा। उसमें लिखा था कि बापके घर बेटेका इतने हाथी और सेना लेकर आना बापके जीको औरही विचारमें डालता है। यदि अपने लशकरको हाजिरी देना चाहते हो तो हाजिरी होगई। अपने आदमियोंको जागीरके इलाकोंमें भेजकर अकेले आओ। यदि इधरसे पूरी तसल्ली न हो तो इलाहाबादको लौट जाओ। जब दिलजमई हो जावे तब आना।

यह फरमान पढकर सलीमने अकबरको अर्जी भेजी कि यह गुलाम बड़े चावसे चौखट चूमने आता था। फसादियोंने गुलाम की ओरसे हजरतको बदगुमान करके कुछ दिनके लिये सेवासे अलग रखा। खैर मेरी अधीनता हजरतके दर्पणसे साफ हृदयमें आपही दरस जावेगी।

सलीम कुछ दिनों तक इटावेमें रहकर इलाहाबादको कूच कर गया। पीछेसे अकबरका दूसरा फरमान पहुंचा कि हमने बिहार और बंगालेके सूबे भी तुम्हारी जागीरमें दे दिये है अपने आदमी भेजकर अमल दखल करलो। पर सलीमने उधर लशकर भेजना उचित न देखकर इनकार लिख भेजा और इलाहाबाद पहुंचकर बादशाही करनी शुरू करदी। अपने नौकरोंको खान और सुलतानके खिताब देदिये। उससे और जो सब बादशाही नौकर मिले हुए थे पर शेख अबुलफज्ल वजीर नहीं मिला हुआ था। बादशाह

भी उसको अपना इकरंगा खैरख्वाह समझता था इसलिये अकबरने उसको बुलानेका फरमान भेजकर लिखा कि फौज और लश्कर अपने बेटे अबदुर्रहमानको सौंपकर आप बहुत जल्द हाजिर हों।

जब सलीमको शेखके बुलानेकी खबर पहुँची तो उसके आनेमें अपनी बात बिगडती देखकर उसने सोचा कि जो वह आजावेगा तो फिर और कुछ फसाद उठावेगा और जबतक वह रहेगा हमारा जाना दरगाहमें न होगा इसलिये इसका इलाज पहिलेसेही करना चाहिये।

दक्षिण और आगरेका रास्ता राजा बरसिंहदेवके मुल्कमें होकर था और यह बहादुर राजा बादशाहसे अकसर बिगड़ाहुआ रहता था इसलिये शाहने इसीको शेखके मारनेका हुक्म दिया। राजा जाकर घातमें बैठ गया। जब शेख गवालियरसे १० कोस पर पहुंचा तो राजाने बहुतसे सवार प्यादोंके साथ जाकर शेखका रास्ता रोका और उसको मारकर उसका सिर इलाहाबादमें भेज दिया।

शेखके मारे जानेसे उधर तो बादशाहको बड़ा दुःख हुआ और इधर सलीम भी बहुत लज्जित हुआ।

बादशाहने सलीमको तसल्ली देकर लेआनेके लिये अपनी लायिक बेगम सलीमासुलतानको रवाने किया। फतहलश्कर नामका हाथी खिलअत और खासेका घोड़ा साथ भेजा।

सलीम दो मंजिल आगे बढ़कर बेगमको बड़े अदब और धूम धड़केसे इलाहाबादमें लाया। और फिर उसके साथही बापकी सेवामें रवाना हुआ। जब आगरेके इलाकेमें पहुँचा तो बादशाहको अर्जी भेजी जिसमें लिखा था कि जब हुजूरने इस बन्देके कसूर माफ कर दिये हैं तो हजरत मरयममकानीसे अर्ज करें कि वे तशरीफ लाकर गुलामको हुजूरकी खिदमतमें लेजावें और हुजूरी ज्योतिषियोंको मुहूर्त्त देखनेका हुक्म होजावे।

बादशाहने अपनी मांके दौलतखानेमें जाकर पोतेकी अर्ज दादीको सुनाई और उसके कबूल करलेने पर जवाबमें लिखा कि मिलने

के वास्ते मुहूर्त्तका क्या बहाना करते हो मिलनाही स्वयं मुहूर्त्त है।

इस फरमानके पहुंचतेही सलीमने जल्दीसे कूच करदिया। इधर से मरयममकानी बेगम एक मंजिल आगे जाकर पोतेको अपने दौलतखानेमें लेआई। वहां बादशाह भी आगया। बेटेने बापके कदमोंमें सिर रख दिया बाप बेटेको छातीसे लगाकर अपने घर ले आया।

सलीमने १२ हजार मुहरें और ९७७ हाथी अकबरको भेंट किये। उनमेंसे ३५० अकबरने रख लिये बाकी वापिस करदिये। दो दिन पीछे अपनी पगडी उतार कर सलीमके सिर पर रखदी। और राणाकी मुहिम पूरी करनेका हुक्म दिया। दशहरेके दिन सलीमने उधर कूच किया। निम्नलिखित अमीर बादशाहके हुक्म से उसके साथ गये।

जगन्नाथ, राय रायसिंह, माधवसिंह, राय दुर्गा, राय भोज, हाशमखां, करीबेग, इफ्तखार बेग, राजा विक्रमाजीत, मोटाराजा के बेटे शक्तसिंह, और दलीप, ख्वाज हिसारी, राजा शालिवाहन, मिरजा यूसुफखांका बेटा लशकरी, आसिफखांका भाई शाहकुली, शाहबेग कोलाबी।

शाहने फतहपुरसें ठहरकर इस मुशकिल कामके लायिक लश-कर और खजाना मिलनेकी अर्जी भेजी मगर दीवानोंने बेजा ढील करदी। तब शाहने फिर बादशाहको अर्जी लिखी कि यह गुलाम तो हजरतके हुक्मको खुदाके हुक्मका नमूना समझकर बडे चावसे इस खिदमतको करना चाहता है मगर किफायती लोग इस मुहिम का सामान जैसा चाहिये नहीं करते हैं तो फिर बेफायदा अपनेको हलका करके वक्त खराब करना ठीक नहीं है। हजरतने कई दफे सुना होगा कि राणा पहाडोंसे बाहर नहीं निकलता है और हर रोज एक नये विकट स्थानकी ओटमें चला जाता है और जहां तक उससे होसकता है लडता नहीं है। उसके कामको तो यही दर्कार है कि लशकर हर तरफसे जाकर उन पहाडोंको

हाथीके शिकारकी तरह घेर ले और लश्कर इतना चाहिये कि जब उसके सामने पड़ जावे तो काम पूरा कर सके। दौलत-ख़्वाहोंने इसके सिवा जो और कोई सलाह देखी है तो बन्देको हुक्म होजावे कि सलाम करके अपनी जागीरमें चला जावे और वहां इस मुहिमका पूरा सामान करके राणाकी जड़ उखाडनेको रवाना हो क्योंकि अभी बन्देके सिपाही बहुत टूटे हुए है।

बादशाहने यह अर्जी पढ़कर अपनी बहन बखतुन्निसा बेगमको सलीमके पास भेजा और यह कहलाया कि तुम अच्छे मुहूर्त्तमें विदा हुए हो और ज्योतिषी लोग मिलनेकी शुभघडी नजदीकके दिनोंमें नहीं बताते हैं इसलिये अभी तो तुम इलाहाबादको सिधार जाओ फिर जब चाहो खिदमतमें हाजिर होजाना।

शाह सलीम यह फरमान पहुंचतेही मग़्मूम होकर इलाहाबाद चला गया। वहां कुछ दिनों पीछे खुसरोकी मा अपने बेटेके कपूतपनसे अफीम खाकर मर गई। इससे शाहको बहुतही रञ्ज हुआ बादशाहने यह सुनतेही फरमान भेजकर उसको तसल्ली दी।

बादशाहने सलीमको इलाहाबाद जानेकी आज्ञा दे तो दी थी मगर दिलसे उसका दूर रहना नहीं चाहता था बल्कि उसकी इस दूरीसे बहुत दुःखी था। तोभी फसादी लोग उसका दिल बेजार करनेके लिये हर रोज कोई न कोई शिगूफा छोड़ा करते थे और शाहके हमेशा नशेमें रहनेका गिला खैरख़्वाहीकी लपेटमें किया करते थे। इन्हीं दिनों शाहका एक वाकआनवीस और दो खिदमतगार एक दूसरेके इश्क़में फंसकर सुलतान दानियालकी पनाहमें जानेके लिये भागे थे पर रस्तेसे पकडे आये। शाहने गुस्सेसे वाकिआ नवीसकी खाल अपने सामने खिंचवाई एक खिदमतगारको खस्सी करा डाला और दूसरेको पिटवाया। इस सजासे उसकी धाक लोगोंके दिलोंमें बैठ गई और भागनेका रस्ता बन्द होगया।

जब स्वार्थी लोगोंने इस मामलेको खूब नमक मिरच लगाकर बादशाहसे अरज किया तो बादशाहने बहुतही नाराज होकर

कहा कि हमने आजतक एक जहानको तलवारसे फतह किया है मगर कभी अपने हजूरमें बकरीको भी खाल उधेड़नेका हुक्म नहीं दिया और हमारा बेटा अजब सङ्गदिल है जो अपने सामने आदमीकी खाल खिचवाता है।

इन्हीं लोगोंने यह भी अर्ज की थी कि शाह अफीमको शराब में घोलकर इतनी जियादा पीते हैं कि जिसको तबीअत भी बरदाश्त नहीं कर सकती है और फिर जब नशा चढता है तो ऐसेही ऐसे शर्मिन्दा करनेवाले हुक्म देतेहैं। उस वक्त किसीको कुछ कहने की मजाल नहीं होती अकसर लोग तो भागकर छुप जाते हैं और जिनको हाजिर रहनाही पडता है वह बेचारे दीवारकी तसवीरसे बने रहते हैं। बादशाहको बेटेसे बहुत मुहब्बत थी इसलिये इन बातोंसे घबराकर उसने यही मुनासिब समझा कि खुद इलाहाबाद जाकर बेटेको साथ लेआवे।

इस इरादेसे ४ शहरेवर सन् १०१२ (भादों बदी १२) की रात को नावमें बैठकर रवाने हुआ। मगर नाव जमीनमें बैठ गई मल्लाह बहुत पचे पर नावको उस आधीरातमें पानीके अन्दर न लेजा सके इसलिये लाचार तडके तक जमनामें ठहरना पडा। दिन निकलते निकलते बड़े बडे अमीर अपनी अपनी नावोंको बढाकर सलाम करने आये। अकसर स्याने आदमियोंकी समझमें यह शकुन अच्छा न था तोभी बादशाहके डरसे कोई लौट चलनेकी अर्ज नहीं कर सकता था।

बादशाह यहांसे चलकर डेरोंमें आये जो ३ कोस पर जमनाके किनारे लगे थे। उस समय मेह बडे जोरसे बरसने लगा और साथही मरयमसकानी बेगमके बीमार होजानेकी खबर आई जो बादशाहके जाने पर राजी नहीं थी। मेह दो तीन दिन तक लगातार बरसता रहा जिससे किसीका भी डेरा खडा न होसका। बादशाह तथा पासके और कई नौकरोंके सिवा किसीकी कनात नजर नहीं आती थी।

बुधवारको रातको खबर आई कि मरयममकानीका हाल बिगड़ गया है हकीमोंने निरास होकर इलाज छोड़ दिया है। बादशाह फौरन लौटकर उसके पास आया मगर उसकी जवान तब बन्द होगई थी।

१८ शहरेवर सोमवारको रातको मरयममकानीका देहान्त होगया। बादशाह और कई हज़ार अमीर, मनसबदार, अहदी और शागिर्दपेशोंने मुण्डन कराया। हजरत अपनी मांकी लाशको कांधे पर उठा कर कई कदम गये फिर तावूतकों दिल्ली रवाने करके लौट आये। दूसरे दिन आपने मातमी कपड़े उतारकर पोशाक बदली और सबलोगोंको खिलअत पहिनाये क्योंकि दसहरे का उत्सव था।

बेगमको लाश १५ पहर में दिल्ली पहुंची और वहां हुमायूं बादशाहके मकबरे में दफनकी गई।

शाह सलीम यह खबर सुनतेही बापके रंजमें शरीक होनेके लिये आगरेमें पहुंच कर आदाब और तोरेका दस्तूर बजा लाया। बादशाह उसको छाती से लगाकर मिला खुशीकी नौबतें झड़ीं सब लोगोंका दिल खुश हुआ। शाहने २०० मुहरें सौ सौ तोलेकी ८ मुहरें पचास पचास तोलेकी १ मुहर २५ तोलेकी और पांच दो दो तोलेकी नजर कीं। एक हीरा लाख रुपयेका और ४ हाथी पेशकश किये। फिर बादशाह खासोआम दरगाह से उठकर महल में गया और कुछ बातें मेहरबानीकी करके सलीमसे कहनेलगा बाबा ऐसा मालूम होता है कि जियादा शराब पीनेसे तुम्हारे दिमागमें खलल आगया है तुम कुछ दिन हमारे दौलतखानेमें रहो तो उसकी दुरुस्तीका इलाज करें। यह कहकर उसको इबादतखानेमें बिठा दिया और भरोसेके खिदमतगारोंको निगहबानीपर मुकर्रर किया। सलीमकी मा बहनें हर रोज उसके पास आया करती थीं और तसल्ली देती थीं। जब१०दिन बीत गये और शराब पीनेकी आदतसे उसका कुछ पागलपन नहीं

पाया गया जैसा कि बादशाहसे कहा गया था तो उसको अपने दौलतखाने में जानेकी छुट्टी होगई और उसके कुछ नौकर जो बादशाहके डरसे इधर उधर छुप गये थे फिर आकर अपना अपना काम करने लगे।

शाह सलीम रोज बापसे सलाम करने जाताथा और बादशाह भी उस पर बहुत मेहरबानी करता था।

इन्हीं दिनोंमें शेख हुसैन जामके खत शाहके पास पहुंचे जिनमें लिखा था कि मैने शेख बहाउद्दीन वलीको ख्वाबमें देखा, कहते थे कि सुलतानसलीम अब जल्द तख्त पर बैठेगा और दुनियाको लाभ पहुंचावेगा।

एक अजब बात और हुई कि शाहसलीमके पास गरांबार नाम एक हाथी बडा लडने वाला था। उससे लड सके ऐसा कोई हाथी बादशाही फीलखानेमें न था। मगर खुसरोके पास आपरूप नाम हाथी लडने में इक्का था। बादशाहने हुक्म दिया कि इन दोनोंको लडावें और खासेके हाथियोंमेंसे रणथंभण हाथीको मददके वास्ते लेआवें। जो हाथी हारे उसीकी मदद वह करे। ऐसे हाथीको महावत लोग "तपांचा" कहते थे। यह बात भी लडाईके वक्त लडाके हाथियोंको अलग करनेके लिये बादशाहकीही निकाली हुई थी। ऐसेही चरखी उचारी, और लोहलंगर भी उन्होंने निकाले थे।

शाहसलीम और खुसरोने अर्जकी कि घोडोंपर सवार होकर पाससे तमाशा देखें। बादशाह झरोकेमें बैठा और शाहजादे खुर्रम को अपने पास बिठा लिया।

जब लडते लडते गरांबार हाथीने आपरूपको दबा लिया तो रणथंभण उसकी मददको बढाया गया। शाहके आदमियोंने महावतको रोका और कई पत्थर भी मारे जिनसे उसकी कनपटी में खून निकला पर वह हुक्मके मुवाफिक हाथीको बढा ले गया।

खुसरो और कई चुगल खोरोंने जाकर बादशाहसे शाहके आदमियोंकी गुस्ताखी और महावतके जख्मी करनेका हाल बहुत बढ़ाकर कहा। जिससे बादशाहने बिगडकर शाहजादे खुर्रमको फरमाया कि तुम शाह भाईके पास जाकर कहो—शाह बाबा फरमाते हैं कि यह हाथी भी हकीकतमें तुम्हाराही है फिर इतनी जियादती करनेका क्या सबब है?

शाहजादे खुर्रमने जाकर दादाका हुक्म बापसे इस खूबीके साथ कहा कि सलीमको जवाबमें कहना पड़ा,—मुझे हरगिज इस बातकी खबर नहीं है। मैं हाथी और महावतको मारनेसे भी राजी नहीं हुआ हूं और न मैंने हुक्म दिया।

खुर्रमने अरज की कि यदि ऐसा है तो मुझे हुक्म होजावे मैं खुद जाकर आतिशबाज़ी और दूसरी तदबीरोंसे हाथियोंको अलग करदूं।

सलीमने खुशीसे उसको इजाजत देदी और उसने चरखी और बान छोड़नेका हुक्म दिया। और भी कई दूसरी तरकीबें कीगईं मगर कुछ न हुआ। आखिर रणथंभण भी हारकर भागगया और अब वह दोनों हाथी लड़ते लड़ते यमुनामे चले गये! गरांबार आपरूपसे लिपटा हुआ था और किसी तरहसे उसे नहीं छोडता था। अन्तको एक बड़ी नावके बीचमें आजानेसे अलग होगया।

शाहजादे खुर्रमने दादाके पास जाकर विनयकी कि शाहभाईने जो ऐसी जुरअत और गुस्ताखीका हुक्म नहीं दिया था न उनके जानते ऐसा काम हुआ। असल बात हुजूरके सामने कुछ फेरफार से अर्ज कीगई है।

२० जमादिउलअव्वल (कार्त्तिक वदी ७) को बादशाह बीमार हुआ। पहिले बुखार हुआ फिर दस्त आनेलगे हकीम अलीने बहुत इलाज किया पर कोई दवा न लगी।

उस वक्त दरबारमें राजा मानसिंह और खानआजम कर्त्तमकर्ता थे। खुसरो राजाका भानजा और खान आजमका जमाई था इस-लिये ये दोनों बादशाहके पीछे खुसरोको तखत पर बिठानेके जोड़ तोड में लगे हुए थे और जो लोग शाह सलीमको नहीं चाहते थे वह सब इनके पेटेमें थे। शाहने यह सब हाल देखकर किलेमें आना जाना छोड दिया, पर शाहजादे खुर्रमने दादाकी पाटी नहीं छोड़ी। उसकी माने बहुत कहलाया कि इस वक्तमें दरबार दुशमनोंसे भरा हुआ है वहां रहना अच्छा नहीं है बल्कि शाहके आज्ञासे उसकी माने खुद भी आकर यही बात उससे कही पर उसने जवाब दिया कि जब तक दादा साहिबका दम है मै उनकी खिदमतसे अलग होना नहीं चाहता।

इन्हीं दिनोंमें सलीमकी लौड़ियोंसे दो बेटे जहांदार और शहरयार नामक और पैदा हुए। जो लोग सलीमकी जगह खुसरोको बादशाह बनाना चाहते थे उन्होंने सलीमकी मौजूदगी में जब अपनी बात चलती न देखी तो लजाकर सलीमकी सेवा में आये। तब सलीम दूसरे दिन बापको देखने गया और शाहजादे खुर्रमको शाबाशी देकर अपने दौलतखानेमें लेआया।

१२ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक सुदी १५ संवत् १६६२) बुधवार की रातको बादशाहका देहान्त होगया। दूसरे दिन वह सिक-न्दरेके बागमें दफन किया गया और शाह सलीम अपना नाम जहांगीर बादशाह रखकर आगरेके किलेमें तखत पर बैठा। आगे जो कुछ हुआ वह जहांगीरने खुद अपनी कलमसे लिखा है।

नूरजहां बेगम।

नूरजहांका दादा ख्वाजा मुहम्मद शरीफ तेहरानी था वह खुरा-सानके हाकिम मुहम्मदखांका वजीर था। फिर ईरानके बादशाह तहमास्प सफवीका नौकर होकर यजदके सूबेका वजीर हुआ। उसके दो बेटे आका ताहिर और मिरजागयासबेग थे।

मिरजा गयासबेग बापके मरे पीछे दो बेटों और एक लडकी समेत हिन्दुस्थानको रवाना हुआ। कन्धारमें उसके एक लड़की और हुई।

मिरजा गयासबेग फातहपुरमें पहुँचकर अकबर बादशाहकी खिदमतमें रहनेलगा। बादशाहने उसको लायक देखकर बादशाही कारखानोंका दीवान कर दिया।' वह बड़ा मुन्शी, हिसाबी, और कवि था। फुरसतका वक्त कवितामें बिताता था काम वालोंको खूब राजी रखता था। मगर रिशवत लेनेमें बड़ा बहादुर था।

जब अकबर बादशाह पञ्जाबमें रहा करता था तो अली कुली-बेग अस्तंजलू जो ईरानके बादशाह दूसरे इसमाईलके पास रहने वालोंमेंसे था ईरानसे आकर नौकर हुआ और तकदीरसे बादशाहने उसकी शादी मिरजा गयासबेगकी उस लडकीसे करदी जो कन्धार में पैदा हुई थी। फिर अलीकुलीबेग जहांगीर बादशाहके पास जा रहा और शेरअफगनखांके खिताबसे सरफराज हुआ।

जब जहांगीर गद्दी पर बैठा तो उसने मिरजा गयासको एतमा-दुद्दौला खिताब देकर आधे राज्यका दीवान बनाया। और शेर-अफगनखांको बंगालेमें जागीर देकर वहां भेज दिया। उसने बंगालेमें जाकर दूसरेही साल वहांके सूबेदार कुतुबुद्दीनखांको मारा और आप भी मारा गया। वहांके कर्म्मचारियोंने मिरजा गयासकी लडकीको जहांगीरके पास भेज दिया। जहांगीर कुतु-बुद्दीनखांके मारे जानेसे बहुत नाराज था। क्योंकि कुतुबुद्दीनखां उसका धाय भाई था। इससे उसने वह लड़की अपनी सौतेली माता रुकैया सुलतानको देदी। वहां वह कई वर्ष साधारण दशा मे रही। जब उसका भाग्य उदय होने पर आया तो एक दिन नौरोजके जशनमें जहांगीरकी नजर उस पर पड़ गई और वह पसन्द आगई। बादशाहने उसे अपने महलकी लौंडियोंमें दाखिल कर लिया। फिर तो जल्द जल्द उसका दरजा बढ़ने लगा। पहले नूरमहल नाम हुआ फिर नूरजहां बेगम कहलाई। उसके

सब घरवाले और नौकर चाकर बडे बडे पदों और अधिकारों पर पहुंच गये। उसका बाप एतमादुद्दौला कुल मुखतार और बड़ा भाई अबुलहसन एतकादखांका खिताब पाकर खानसामान हुआ एतमादुद्दौलाके गुलामों और ख्वाजासराओं तकने खान और 'तरखान' के खिताब पाये। दिलाराम दाई जिसने बेगमको दूध पिलाया था हाजी कोकाकी जगह औरतोंकी "सदर" (१) हुई औरतोंको जो जीविका मिलती थी उसकी सनद पर वह अपनी मुहर करती थी जिसको सदरुस्सुदूर (२) भी मंजूर रखता था।

"खुतबा" तो बादशाहके नामकाही पढा जाता था बाकी जो कुछ बादशाहीकी बातें थीं वह सब नूरजहां बेगमको हासिल हो गई थीं। वह कुछ अरसे तक झरोकेमें बादशाहकी जगह बैठते और सब अमीर उसको सलाम करने आते और उसके हुक्म पर कान लगाये रहते थे। यहां तक कि सिक्का (३) भी उसके नामका चलने लगा था जिसका यह अर्थ था—

जहांगीर बादशाहके हुक्मसे और नूरजहां बादशाहके नामसे सोनेने सौ गहने पाये अर्थात् सौगुनी इज्जत पाई।

फरमानोंके ऊपर भी बेगमका तुगरा इस प्रकार होता था—

हुक्म उलियतुल आलिया नूरजहां बेगम बादशाह।

यहां तक हुआ कि जहांगीर बादशाहका नामही नाम रह गया। वह कहा भी करता था कि मैंने सलतनत नूरजहां बेगमको देदी है। मुझे सिवा एक सेर शराब और आध सेर गोश्तके और कुछ नहीं चाहिये।

बेगमकी खूबी और नेकनामीकी बात क्या लिखी जाय उसमें बुराई थोड़ी और भलाई बहुत थी। जिस किसीका काम अड़ जाता और वह जाकर बेगमसे अर्ज करता तो उसका काम निकाल देती

---

(१) दानाध्यक्ष (२) प्रधान दानाध्यक्ष।

(३) इस सिक्केमें सन् २१ और जलूस हिजरी सन् १०३० है।

थी और जो कोई उसकी दरगाहकी पनाहमें आजाता था फिर उस पर कोई जुल्म नहीं कर सकता था। उसने अपनी साहबीमें कोई ५०० अनाथ लडकियोंका व्याह कराया और उनको यथायोग्य दहेज भी दिया। नूरजहांके घरानेसे लोगोंको बहुत कुछ लाभ पहुंचा।

जहांगीर बादशाहके वजीर।

१ राय घनसूर—(बादशाह होनेसे पहिले)

२ वायजीदवेग काबुली (तथा)

३ ख़्वाजा मुहम्मददोस्त काबुली (बादशाह होनेके पीछे वजीर हुआ और ख़्वाजाजहांका ख़िताब पाया।)

४ जानवेग (वजीरुल मुमालिक)

५ शरीफखां (बादशाह होनेके पीछे अमीरुलउमराका ख़िताब पाया)

६ वजीरखां मुहम्मद मुकीम।

७ मिरजा गयास तेहरानी ख़िताब एतमादुद्दौला।

८ जाफरवेग कजवीनी (आसिफखां)

९ ख़्वाजा अबुलहसन।

१० आसिफखां यमीनुद्दौला नं० ७ का बेटा।

बडे बड़े मौलवी।

१ मुल्लारोज बहाय तबरेजी।

२ मुल्ला शुक्रउल्लाह शीराजी।

३ मीर अबुलकासिम गीलानी।

४ मुल्लाबाकर कशमीरी।

५ मुल्लामुहम्मद सीसतानी।

६ मुल्ला मकसूदअली।

७ काजी नूरउल्लाह।

८ मुल्ला फाजिल काबुली।

९ मुल्ला अबदुल हकीम स्यालकोटी।

१० मुल्ला अबदुल्ललतीफ सुलतानपुरी।

११ मुल्ला अबदुर्रहमान।

१२ मुल्ला फाजिल कावुली।

१३ मुल्ला हसन सुरागी।

१४ मुल्ला महमूद, जौनपुरी।

१५ मूरा गुजराती।

१६ मुल्लानफसाय, सोसतरी।

बादशाहके हकीम।

१ हकीम रुकनाय, काशी।

२ हकीम सदरा, (मसीहुज्जमां)

३ हकीम अबुलकासिम गीलानी (हकीमुल्मुल्क)

४ हकीम मोमनाई, शीराजी।

५ हकीम रूहउल्लह, कावुली।

६ हकीम वैद्य गुजराती।

७ हकीम तकी, गीलानी।

८ हकीम हमीद, गुजराती।

बादशाहके कवि।

१ बाबा तालिब इसफहानी।

२ हयाती, गीलानी।

३ मुल्ला नजीरी, नेशापुरी।

४ मुल्ला मुहम्मद सूफी, माजिन्दरानी।

५ तालिबे आमिली, (मलिकुश्शोरा)।

६ मईदाय गीलानी, जरगरबाशी।

७ मीर मासूम, काशी।

८ कौलसूरा, काशी।

९ मुल्ला हैदर, चगताई।

१० शैदा।

हाफिज या कुरानको कण्ठ करने वाले ।

१ हाफिज अली ।

२ हाफिज अबदुल्लाह ।

३ उस्ताद मुहम्मदमानी (हादी) ।

४ हाफिज चेला (हाफिज बरकत) ।

हिन्दुस्तानी गवैये ।

१ चतुरखां ।

२ माखू ।

३ खूमरा ।

४ जहांगीरदाद ।

५ खुसरोखां

६ परवेजदाद ।

७ खुर्रमदाद ।

८ नाखूजी ।

"इस नगरकी वस्ती जमनाके दोनो ओर है। पश्चिमको अधिक है। इसका घेरा ७ कोसका है। लम्बाई २ और चौडाई १कोस है। जो वस्ती पूर्वकी नदीके उधर है वह २॥ कोसकी है लम्बी १ कोस और चौडी आध कोस। पर इसमें इमारतें इतनी अधिक है कि उनसे ईरान, खुरासान और तूरानके शहरोंके समान कई शहर बस सकते हैं। बहुधा लोगोंने तीन तीन और चार चार खण्डके मकान बनाये हैं और आदमियोंकी इतनी अधिक भीड़ रहती है कि गलियों और बाजारोंमें मुशकिलसे फिर सकते हैं।

"आगरा दूसरी "अकलीम"(१) के अन्तमें है इसके पूर्वमें कन्नौजकी विलायत पश्चिममें नागौर उत्तरमें सम्भल दक्षिणमें चन्देरी है।"

"हिन्दुओंकी किताबोंमें लिखा है कि यमुनाका सोता कलिन्द नाम एक पहाड़में है जहां ठण्ड अधिक होनेसे मनुष्य नहीं जा सकते है। और जहां यमुना प्रकट होती है वह एक पहाड परगने खिजराबादके पास है।"

"आगरेकी हवा गर्म और खुश्क है। हकीम कहते है कि वह जान्दारोंको घुलाती और निर्बल करती है। बहुधा लोग उसे सह नहीं सकते। परन्तु जिनकी प्रकृति कफ और वायुकी होती हैं वह इसके अवगुणसे बचे रहते है। यही कारण है कि जिन पशुओं की ऐसी प्रकृति है जैसे कि भैंस और हाथी आदि वह इस जलवायु में अच्छे रहते हैं।

"लोदी पठानोंके राज्यमें पहले आगरा बडा नगर था किला भी था "मसऊदसाद" सुलेमानने सुलतान महमूद गजनवीके पड़पोते मसऊदके पोते इब्राहीमके बेटे महमूदकी प्रशंसाके कसीदे

---

(१) मुसलमान भूगोलवेत्ताओंने पृथ्वीके ७ खण्ड ठहराकर हिन्दुस्थानको दूसरे तीसरे और चौथे खण्डमें माना है यह ७ खण्ड ८ लम्बी रेखाओंके भीतर जो पूर्वसे पश्चिमको भूमिके नकशेमें दिखाई जाती हैं ठहराये गये है।

(काव्य) में इस किलेके जीतनेका वर्णन किया है जिसमें लिखा है कि—

आगरेका किला गर्दमें प्रकट हुआ,
जिसके ऊपर कंगूरे पहाड़ोंके समान थे।

"सिकन्दर लोदीका विचार गवालियर लेनेका था इस लिये वह हिन्दुस्थानके बादशाहोंकी राजधानी दिल्लीसे आगरेमें आया और वहां रहा। उस दिनसे आगरेकी बस्ती बढ़ने लगी और वह दिल्लीके बादशाहोंका "पायतख़्त" होगया।"

"जब परमात्माने हिन्दुस्थानकी बादशाही इस बड़े घरानेको दी तो बाबर बादशाहने सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीमको मारने और राना सांगाको जो हिन्दुस्थानके राजो और जमींदारोंमें सबसे बडा था हरानेके पीछे यमुनाके पूर्वकी एक भूमि पसन्द करके एक बाग बनाया जिसके समान सुन्दर बाग दूसरी जगह कमही होंगे। उसका नाम गुलअफशां रखा। एक छोटीसी मसजिद भी उसके कोनेमें तराशे हुए लाल पत्थरोंकी बनवाई और भी बड़ी इमारत बनवानेके बिचारमें थे परन्तु आयु शेष होजानेसे नहीं बनवा सके।"

"खरबूजे आम और दूसरे मेवे आगरेमें खूब होते है सब मेवों से आममें मेरी रुचि अधिक है। विलायतके कितनेही मेवे जो हिन्दुस्थानमें नहीं होते थे स्वर्गवासी श्रीमान (अकबर) के समयसे होने लगे है। साहिबी हबशी और किशमिशी जातिके अंगूर बडे बड़े शहरोंमें होने लगे हैं। लाहोरके बाजारोंसे अंगूरके मौसिममें जितनी जातिके चाहें मिल सकते हैं।

"एक मेवा अनन्नास नामक फरंगके टापुओंमें होता है जो बहुत सुगन्धित और स्वादिष्ट होता है, वह गुलअफशां बागसे हर साल कई हजार उत्पन्न होता है।"

"हिन्दुस्थानके सुगन्धित फूलोंको दुनिया भरके फूलोंसे उत्तम कहना चाहिये। कितनेही फूल ऐसे हैं जिनका किसी जगह पृथ्वीमें नाम निशान नहीं है। प्रथम चम्पाका फूल, बहुत कोमल और

सुगंधसम्पन्न केसरके फूलके आकारका है। पर चम्पाका रंग पीला सफेदी लिये हुए है उसका वृक्ष बहुत सुडौल बडा पत्तोंसे हरा भरा और छाया फैलानेवाला होता है। फूलोंके दिनोंमें एक झाड ही सारे बागको महका देता है। उससे उतरकर केवडेका फूल है। जो आकार और डौलमें अनोखाही है। उसकी सुवास ऐसी तीव्र और तीक्ष्ण है कि कस्तूरीकी सुगन्धसे कुछ कम नहीं है।"

"फिर रायवेलका फूल श्वेत चमेलीकी जातिका है जिसके पत्ते दो तीन गुच्छोंके होते है और एक फूल मौलसरीका है उसका झाड भी बहुत सुन्दर सुडौल और सायादार होता है। उसके फूलका सौरभ खूब हलका होता है।"

"एक फूल सेवतीका केवडेकी किस्मसे है केवडेमें कांटे होते हैं सेवतीमें नहीं। उसका फूल पीलाई लिये होता है और केवडेका श्वेत—इन फूलो और चमेलीके फूलोंसे सुगन्धित तैल बनता है। और भी फूल हैं जिनका वर्णन बहुत कुछ होसकता है।"

"वृक्षोंसे सर्व सनूबर चिनार, सफेदार और वेदमूला जिनका हिन्दुस्थानमें किसीने खयाल भी नहीं किया था बहुत होने लगे हैं। चन्दनका वृक्ष जो टापुओंमें होता था बागोंमें लगाया गया है।"

"आगरेके रहनेवाले विद्याओं और कलाओंके सीखनेमें बहुत परिश्रम करते हैं विविध धर्म्म और पथकी अनेक जातियोंके लोग इस नगरमें बसते हैं।"

न्यायकी सांकल।

सिंहासनारूढ होतेही जहांगीर बादशाहने पहला हुक्म न्याय की सांकल बांधनेका दिया जो ४ मन(१) खरे सोनेकी बनाकर किलेमें शाहबुर्जके लटकाई गई थी। उसका दूसरा सिरा कालिन्दी के तट पर पत्थरके एक स्तम्भ पर रखा था। यह सांकल ३० गज लम्बी थी। उसमें सोनेके ६० घण्टे लगे थे कि यदि किसीका

(१) ईरानका ३२ सेर।

न्याय अदालतमें न हो तो बादशाहको सूचना करनेके लिये उसको हिला दिया करे।

बादशाहके बारह हुक्म।

फिर बादशाहने यह बारह हुक्म अपने तमाम मुल्कोंमें कानून के तौर पर काममें लानेके वास्ते भेजे थे।

१—जकात(१) तमगा(२) मीरबहरी(३)के कर तथा और कितनेही कष्टदायक कर जो हरेक सूबे और सरकारके जागीरदारों ने अपने लाभके लिये लगा रखे हैं सब दूर किये जावें।

२—जिन रास्तोंमें चोरी लूट मार होती हो और जो बस्तीसे कुछ दूर हों वहांके जागीरदार सराय और मसजिद बनावें, कुए खुदावें, जिससे सरायमें लोगोंके रहनेसे बस्ती होजावे। यदि वह जगह बादशाही खालिसेके पास हो तो वहांका कर्म्मचारी काम करावे। व्योपारियोंका माल रास्तोंमें बिना उनकी मरजी और आज्ञाके नहीं खोला जावे।

३—बादशाही मुल्कोंमें जो कोई हिन्दू या मुसलमान मर जावे तो उसका माल असबाब सब उसके वारिसोंको देदेवें कोई उसमेंसे कुछ न ले और जो वारिस न हो तो उस मालको सम्हालके वास्ते पृथक भाण्डारी और कर्म्मचारी नियत करदें। वह धर्म्म के कामों अर्थात् मसजिदों सरायों कूओं और तालावोंके बनाने तथा टूटे हुए पुलोंके सुधारनेमें लगाया जावे।

४—शराब और दूसरी मादक चीजें न कोई बनावे न बेचे।†

---

(१) महसूल सायर (२) मुहराना (३) नदियों और समुद्रका कर।

† इस जगह बादशाह लिखता है कि मैं आप शराब पीता हूं १८ वर्षकी अवस्थासे अब तक ३८ सालका हुआ हूं सदा पीता रहा हूं। पहले पहले तो जब कि अधिक तृष्णा उसके पीनेकी थी कभी कभी बीस बीस प्याले दुआतिशाके पीजाता था। जब होते होते उसने मुझे दबा लिया तो मैं कम करने लगा। ७ वर्षसे १५ प्यालोंसे ५—६ तक घटा लाया हूं। पीनेके भी

सुगंधसम्पन्न कीसरके फूलके आकारका है। पर चम्पाका रंग पीला सफेदी लिये हुए है उसका वृक्ष बहुत सुडौल बडा पत्तोंसे हरा भरा और छाया फैलानेवाला होता है। फूलोके दिनोमें एक झाड ही सारे बागको महका देता है। उससे उतरकर केवड़ेका फूल है जो आकार और डौलमे अनोखाही है। उसकी सुबास ऐसी तीव्र और तीक्ष्ण है कि कस्तूरीकी सुगन्धसे कुछ कम नहीं है।"

"फिर रायवेलका फूल श्वेत चमेलीकी जातिका है जिसके पत्ते दो तीन गुच्छोंके होते है और एक फूल मौलसरीका है उसका झाड भी बहुत सुन्दर सुडौल और सायादार होता है। उस फूलका सौरभ खूब हलका होता है।"

"एक फूल सेवतीका केवडेकी किस्मसे है केवडेमें कांटे होते सेवतीमें नहीं। उसका फूल पीलाई लिये होता है और केवडेका श्वेत—इन फूलों और चमेलीके फूलोंसे सुगन्धित तेल बनता है और भी फूल है जिनका वर्णन बहुत कुछ होसकता है।"

"वृक्षोंमें सर्व सनूवर चिनार, सफेदार और वेदमूला जिनका हिन्दुस्थानमें किसीने खयाल भी नहीं किया था बहुत होने लगे हैं। चन्दनका वृक्ष जो टापुओंमें होता था बागोंमें लगाया गया है।"

"आगरेके रहनेवाले विद्याओं और कलाओंके सीखनेमें बहुत परिश्रम करते हैं विविध धर्म और पंथकी अनेक जातियोंके लोग इस नगरमें बसते हैं।"

न्यायकी सांकल।

सिंहासनारूढ होतेही जहांगीर बादशाहने पहला हुक्म न्याय की सांकल बांधनेका दिया जो ४ मन(१) खरे सोनेकी बनाकर किलेके शाहबुर्जमें लटकाई गई थी। उसका दूसरा सिरा कालिन्दी के तट पर पत्थरके एक स्तम्भ पर रुपा था। यह सांकल ३० गज लम्बी थी। उसमें सोनेकी ६० घण्टे लगे थे कि यदि किसीका

(१) ईरानका २ मन।

न्याय अदालतसे न हो तो बादशाहकी सूचना करनेके लिये उसको हिला दिया करे।

बादशाहके बारह हुक्म।

फिर बादशाहने यह बारह हुक्म अपने तमाम मुल्कोंमें कानून के तौर पर काममें लानेके वास्ते भेजे थे।

१—जकात(१) तमगा(२) मीरबहरी(३)के कर तथा और कितनेही कष्टदायक कर जो हरेक सूबे और सरकारके जागीरदारों ने अपने लाभके लिये लगा रखे है सब दूर किये जावे।

२—जिन रास्तोंमें चोरी लूट मार होती हो और जो बस्तीसे कुछ दूर हों वहांके जागीरदार सराय और मसजिद बनावें, कुए खुदावें, जिससे सरायमें लोगोंके रहनेसे बस्ती होजावे। यदि वह जगह बादशाही खालिसेके पास हो तो वहांका कर्म्मचारी काम करावे। व्योपारियोंका माल रास्तोंमें बिना उनकी मरजी और आज्ञाके नहीं खोला जावे।

३—बादशाही मुल्कोंमें जो कोई हिन्दू या मुसलमान मर जावे तो उसका माल असबाब सब उसके वारिसोंको देदेवे कोई उसमेंसे कुछ न ले और जो वारिस न हो तो उस मालकी सम्हालके वास्ते पृथक भाण्डारी और कर्म्मचारी नियत करदें। वह धर्म्म के कामों अर्थात् मसजिदों सरायों कूओं और तालावोंके बनाने तथा टूटे हुए पुलोंके सुधारनेमें लगाया जावे।

४—शराब और दूसरी मादक चीजें न कोई बनावे न बेचे।†

(१) महमूल सायर (२) मुहराना (३) नदियों और समुद्रका कर।

† इस जगह बादशाह लिखता है कि मैं आप शराब पीता हूं १८ वर्षकी अवस्थासे अब तक ३८ सालका हुआ हूं सदा पीता रहा हूं। पहले पहले तो जब कि अधिक तृष्णा उसके पीनेकी थी कभी कभी बीस बीस प्याले दुआतिशाके पीजाता था। जब होते होते उसने मुझे दबा लिया तो मैं कम करने लगा। ७ वर्षसे १५ प्यालोंसे ५—६ तक घटा लाया हूं। पीनेके भी

५—किसीके घरको सरकारी न बनावें।

६—किसी पुरुषके नाक कान किसी अपराधमें न काटे जावें और मैं भी परमेश्वरसे प्रार्थना कर चुका हूं कि इस दण्डसे किसी को दूषित नहीं करूंगा।

७—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्मचारी प्रजाकी पृथ्वी अन्यायसे न लें और न आप उसको बोवें।

८—खालिसेके और जागीरदारोंके कर्मचारी जिस परगनेमें हों वहांके लोगोंसे बिना आज्ञा सम्बन्ध न करें।

९—बड़े बड़े शहरोंमें औषधालय बनाकर रोगियोंके लिये वैद्यों को नियत करें और जो खरच पड़े वह सरकारी खालिसेसे दिया करें।

१०—रबीउलअव्वल महीनेकी १८ तारीखसे जो मेरे जन्मकी तिथि है मेरे पिताकी प्रथाके अनुसार प्रतिवर्ष एक दिन गिनकर इन दिनोंमें जीवहिंसा न करें प्रत्येक सप्ताहमें भी दो दिन हिंसा न हो, एक तो वृहस्पतिवारको जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है और दूसरे रविवारको जो मेरे पिताका जन्मदिवस है। वह इस दिनको शुभ समझकर बहुत माना करते थे क्योंकि उनके जन्मदिन होनेके अतिरिक्त सूर्य्य भगवानका भी यही दिन है और यह जगत्की उत्पत्तिका पहला दिन है। सो बादशाही देशोंमें जीवहिंसा न होनेके दिनोंमेंसे एक दिन यह भी था।

११—यह स्पष्ट आज्ञा है कि मेरे पिताके सेवकोंके मनसब और जागीरें ज्यों की त्यों बनी रहें। बरंच यथायोग्य हरेकका पद बढ़ाया जावे(१)। और सब मुल्कोंके माफीदारोंकी माफियां

पहले यह समय थे। कभी कभी पिछले ३—४ घण्टे दिनमें आरम्भ कर देता था और कभी दिनमेंही पीने लगता था। ३० वर्षकी अवस्था तक तो यही ढंग रहा फिर रातका समय स्थिर किया। अब तो केवल भोजनका स्वाद लेनेके वास्ते पीता हूं।

(१) बादशाह लिखता है कि फिर मैंने यथायोग्य सबके मनसब

बिलकुल उन पट्टोंके अनुसार जो उनके पास हों स्थिर रहें और मीरानसदरजहां (धर्माधिकारी) पालना करनेके योग्य लोगोंको नित्य प्रति मेरे सम्मुख लाया करें।

१२—सब अपराधी जो वर्षों से किलों और कारागृहोंमें कैद हैं छोड़ दिये जावें।

सिक्का।

फिर बादशाहने एक शुभमुहूर्त्तमें अपने नामको छाप सोने चांदी पर छपवाई और अनेक तौलके रुपये मोहरें और पैसे चलाये जिनके नाम पृथक पृथक रखे गये। यथा—

सिक्का	तौल	नाम
मोहर	१०० तोला	नूरसुलतानी
„	५० „	नूरशाही
„	२० „	नूरदौलत
„	१० „	नूरकरम
„	५ „	नूरमेहर
„	१ „	नूरजहांनी
„	आधा तोला	नूरानी
„	पाव तोला	रिवाजी
रुपया	१०० तोला	कौकबेताला
„	५० „	कौकबेइकबाल
„	२० „	कौकबेमुराद
„	१० „	कौकबेबखत

बढाये। १० के १२ से कम नहीं और अधिक १० के ३० और ४० (अर्थात् सवाये तिगुने और चौगुने) कर दिये। सब अहदियोंका खाना ड्योढा और कुल शागिर्दपेशोंका महीना सवाया कर दिया। अपने पूज्य पिताकी महलवालियोंका हाथखर्च उनकी दशा और व्यवस्थाके अनुसार १० से १२ और १० से २० तक सवाया और दूना बढ़ा दिया।

„	५ „	कौकवेसफेद
„	१ „	जहांगीरी
„	॥ „	सुलतानी
„	। „	निमारी
„	तोलेका १०वां भाग	खैरकबूल

इन सिक्कों पर बादशाहका नाम, मुसलमानी कलमा, सन् जुलूस और टकसालका स्थान छापा जाता था। नूरजहांनी मोहर की जगह चलता था और जहांगीरी रुपयेकी जगह।

बादशाहकी उदारता और न्यायनीति।

बादशाहने एक लाख रुपये खुसरोको देकर फरमाया कि किलेके बाहर जो मुनइमखां खानखानांका मकान है उसको अपने वास्ते सुधरा लो।

पंजाबकी सूबेदारी सईदखां मुगलको दी पर उसके नाजिरोंका अन्यायी होना सुनकर कहला दिया कि हमारी न्यायशीलता किसी के अनाचारका सहन नहीं करती है जो उसके अनुचरोंसे किसी पर अन्याय हुआ तो अप्रसन्नताका दण्ड दिया जायगा।

फरीद बखशीको मीरबखशीके पदपर स्थिर रखा और सिरोपाव के सिवा जडाऊ दवात कलम और जडाऊ तलवार भी उसको दी और उसका मन बढानेको कहा कि मैं तुमको तलवार और कलम का धनी (सिपाही और मुंशी) जानता हूं।

वजीरखां जो वजीर था और फतहउल्लह जो बखशी था वह दोनो अब भी उन्हीं कामों पर रहे।

अबदुलरज्जाक मासूरी जो बिना कारणही बादशाहके पाससे उसके बापकी सेवामें भाग आया था बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके बखशीके पद पर बना रखा और खिलअत दिया।

अमीनुद्दौला जो जहांगीरका बखशी था और फिर बिना आज्ञा उनके पिताके पास जाकर तोपखानेका अध्यक्ष होगया था। उसी काम पर बना रखा गया। इसी तरह जो लोग बाहर और भीतर

बापकी सेवामें थे जहांगीरने उन सबको उन्हीं कामों पर रहने दिया।

४ रज्जब अगहन सुदी ६ को शरीफखां जो बादशाहके भरोसे का आदमी था और जिसको तुमन और तोग मिला हुआ था विहारके सूबेसे आकर उपस्थित हुआ। बादशाहने प्रसन्न होकर उस को वकील और बडे वजीरका उच्च पद अमीरुलउमराकी पदवी और पांच हजार सवारका मनसब दिया। इसका बाप ख्वाजा अबदुस्समद बहुत अच्छा चित्रकार था और हुमायूं बादशाहके पास प्रतिष्ठापूर्वक रहता था जिससे अकबर बादशाह भी उसका बहुत मान रखता था।

बंगालेकी सूबेदारी राजा मानसिंहके पासही बनी रही। बादशाह लिखता है—"उसे इस बातका जरा गुमान न था कि मैं उसके साथ ऐसा उदार बरताव करूंगा। मैंने उसको चारकुब्बकका सिरोपाव जड़ाऊ तलवार खासा घोड़ा देकर उस देशको बिदा किया जो ५० हजार सवारोंके रहनेकी जगह है। उसका बाप भगवान दास(१) और दादा भारमल था। भारमल उन कछवाहे राजपूतोंमें पहला पुरुष था जो मेरे बापकी सेवामें आकर रहे थे। सचाई राजभक्ति और वीरतामें अपनी जाति वालोंसे बढ़कर था।

उदयपुर पर चढ़ाई।

जहांगीर लिखता है—

राज्यतिलकके पीछे सब अमीर अपनी अपनी सेना सहित दरबारमें उपस्थित थे। मैंने सोचा कि यह सेना अपने पुत्र परवेज के साथ देकर रानासे लडने भेजूं। वह हिन्दुस्थानके दुष्टों और कट्टे काफिरोंमेंसे है। पिताके समय भी कई बार उसपर सेनाएं भेजी गईं पर उसका पाप नहीं कटा। मैंने शुभमुहूर्त्तमें पुत्र परवेजको भारी खिलअत जड़ाऊ परतला जड़ाऊ पेटी मोतियोंकी माला जो कीमती रत्नोंकी बनी ७२ हजारकी थी अरबी एराकी घोडे और

(१) भगवन्तदास।

अच्छे हाथी देकर बिदा किया। बीस हजारके लगभग हथियार बन्द सजे हुए सवार अच्छे सरदारों सहित लड़ाईमें भेजे।

आसिफखां दीवानको खिलअत जड़ाऊ कमरपेटी हाथी घोड़ और शाहजादेकी "अतालीकी" का काम मिला और सब छो बड़े अमीरोंको उसकी सलाह पर चलनेका हुक्म दिया गया।

अबदुलरज्जाक मामूरी बखशी और मुखतारबेग शाहजादेक दीवान हुआ।

राजा भारमलके बेटे जगन्नाथको जो पांच हजारी था खिलअ और जड़ाऊ परतला मिला।

राना सगर, राना(१)का चचा था और अकबर बादशाह उसको राना पदवी देकर खुसरोके साथ रानाके ऊपर भेजना चाहता था पर इसो बीचमें सर गया। जहांगीरने उसे भी खिलअत और जड़ाऊ पट्टा देकर परवेजके साथ कर दिया।

राजा मानसिंहके भतीजे माधवसिंह(२) और सेखावत रायमाल दरबारीको इस हेतु कि वह दोनों उसके पिताका विश्वासपात्र और तीन हजारी मनसबदार थे झंडे दिये।

इनके सिवा शेरखां पठान, शेख अबुलफजलका बेटा शेख अब दुर्रहमान, राजा मानसिंहका पोता महासिंह, वजीर जमील और कराखां जो दो दो हजार सवारोंके मनसबदार थे घोड़े औ सिरोपाव पाकर शाहजादेके साथ बिदा हुए और राजा मनोह भी गया।

बादशाह मनोहरके विषयमें लिखता है—"राजा मनोह

(१) तुजुक जहांगीरीमें इसका नाम शंकर और रानाका चचेर भाई लिखा है। पर यह राना अमरसिंहका चचा था क्योंकि राना उदयसिंहका बेटा और प्रतापसिंहका भाई था।

(२) माधवसिंह मानसिंहका भाई था भतीजा न जाने कैं तुजुकमें लिखा है।

शेखावत जातिके काछवाहोंमेंसे है। मेरे बाप बचपनमें उससे बहुत मोह रखते थे। यह फारसी बोलता था। उससे लेकर आदम तक उस घरानेके किसी आदमीमें भी समझका होना नहीं कहा जा सकता है। परन्तु वह समझसे शून्य नहीं है और फारसीकी कविता भी करता है।"

यह लिखकर बादशाहने उसकी बनाई एक बैत भी लिखी है जिसका अर्थ यह है—छायाकी उत्पत्तिमे यही प्रयोजन है कि कोई सूर्य्य भगवानके प्रकाश पर अपना पांव न धरे।

इस लड़ाईमें बहुतसे अमीरों, खानोंके बेटों और राजपूतोंने अपनी इच्छासे जानेकी प्रार्थना की थी। एक हजार अहदियों (इक्कों) की नौकरी भी उक्त लड़ाईके लिये बोली गई थी।

बादशाह लिखता है—"साराश यह है कि यह ऐसी फौज तय्यार हुई है कि काम पडे तो बड़े बड़े शक्तिमान श्रीमानोंमेंसे हरेकका सामना करे।

दान पुण्य और पदवृद्धि।

बादशाहने २० हजार रुपये दिल्लीके गरीबोंके लिये भेजे।

सब बादशाही राज्यकी विजारत [माल] का काम आधा आधा वजीरुलमुल्क और वजीरखांको बांट दिया।

शेख फरीद बख्शीको चार हजारीसे पंज हजारी किया।

रामदास कछवाहेका मनसब दो हजारीसे तीन हजारी कर दिया वह अकबरके कृपापात्र सेवकोंमेंसे था।

कन्दहारके हाकिम मिरजा रुस्तम, अबदुर्रहीम खानखानां उसके बेटों एरच, दाराब और दक्षिणमे रखे हुए दूसरे अमीरोंके वास्ते सिरोपाव भेजे गये।

बाज बहादुरको चार हजारी मनसब बीस हजार रुपये और उडीसेकी सूबेदारी मिली। उसका बाप निजाम, हुमायूं बादशाह की किताबें रखा करता था। सदरजहांका मनसब दो हजारीसे चार हजारी कर दिया। वह बादशाहके साथ पढ़ा था और उसके

बापकी बीमारीमें जब सब अमीर पलट गये थे तब भी वह नहीं पलटा था।

केशवदास मारूका मनसब बढ़कर डेढ़ हजारी होगया। यह मेड़तिया राठोड़ोंमेंसे था और स्वामिभक्तिमें अपने बराबरवालोंसे बढ़ गया था।

गयासबेगको जो कई वर्षोंतक ब्यूतात [कारखानों] का दीवान था सात सदीसे डेढ़ हजारी करके वजीरखांकी जगह आधे राज्यका वजीर किया और ऐतमादुद्दौलाका खिताब दिया। वजीरखांको सूबे बंगालका दीवान करके जमाबन्दी तय्यार करनेके लिये भेजा।

कुलीचखांको एक लाख रुपये और गुजरातका सूबा इनायत हुआ।

पितरदासको जिसे अकबर बादशाहने रायरायांकी पदवी दी थी। इस बादशाहने राजा विक्रमादित्यकी उपाधि देकर मीरआतिश अर्थात् तोपखानेका अध्यक्ष बनाया और हुक्म दिया कि हमेशा अरदलीके तोपखानेमें ५० हजार तोपची और ३ हजार तोपें तैयार रखे। वह खत्री था अकबर बादशाहने उसे हाथीखानेकी मुशरफी अर्थात् कामदारीसे बढ़ाकर अमीरोंके पद तक पहुंचाया था सिपाही भी था और प्रबन्धकर्त्ता भी।

खान आजमके बेटे बैरमका मनसब दो हजारीसे अढ़ाई हजारी होगया।

लाल छाप।

बादशाहकी यह इच्छा थी कि अपने और अपने पिताके सेवकों के मनमनोरथ पूरे करे। इससे आज्ञा दी कि उनमेंसे जो कोई अपनी इनआमकी जागीरमें चाहता हो वह प्रार्थना करे। उसे चंगेजखाना तोरे और कानूनके अनुसार लाल छापका पट्टा कर दिया जावेगा जिसमें फिर कुछ हेरफेर न हो।

बादशाह लिखता है कि हमारे बाप दादे जिस किसीको जागीर देते थे। उसके पट्टे पर लाल छाप कर देते थे। यह लाल छाप

शिंगरफसे लगाई जाती थी। मैंने हुक्म दिया कि छाप लगानेकी जगह पट्टे पर सोना चढा दिया करें। अब इस छापका नाम "आलतमगा" रख दिया है। (१)

अमीरोंके इजाफे।

बदख्शांके मिरजासुलेमानके पोते और शाहरुख़के बेटे मिरजा सुलतानको बादशाहने बेटोंकी भांति पाला था। उसे एक हजारी मनसब दिया।

भावसिंहका मनसब बढ़कर डेढ हजारी होगया। यह राजा मानसिंहकी सन्तानमें बहुत योग्य था।

गयूरबेग काबुलीके बेटे जमानाबेगको डेढ हजारी मनसब, महाबतखांका खिताब और शागिर्दपेशेके बख्शीका पद मिला (२) यह पहले अहदी था फिर पानसदी हुआ था।

राजा बरसिंह देव।

राजा बरसिंहदेव(३) बुन्देलेको तीन हजारी मनसब मिला। बादशाह लिखता है कि यह बुन्देला राजपूत मेरा बढाया हुआ है। बहादुरी भलमनसी और भोलेपनमें अपने बराबरवालोंसे बढकर है। इसके बढनेका यह कारण हुआ कि मेरे पिताके पिछले समय से शेख अबुलफाजलने जो हिन्दुस्थानके शेखोंमें बहुत पढा हुआ और बुद्धिमान था स्वामिभक्त बनकर बडेभारी मोलमे अपनेको

(१) जहांगीर बादशाहके कई फरमान इस लाल छापके हमारे देखनेमें भी आये हैं।

(२) कर्नल टाडने भूलसे इसको रजपूत लिख दिया है यह मुगल था।

(३) फारसी तवारीखमें नरसिंहदेव भूलसे लिखा है यह भूल एक नुक्तेकी है क्योंकि 'बे' और 'नून' की शक्लमें एक नुकतेका फर्क है नीचे नुकता लग जावे तो 'बे' और ऊपर लगे तो 'नून' होजावे। फारसी लिपिमें नुकतोंके हेर फेरसे अर्थका अनर्थ होजाता है। इसके कई दृष्टान्त मैं स्वप्न-राजस्थान ग्रन्थमें लिख चुका हूं।

मेरे बापके हाथ बेच दिया था। उन्होंने उसको दक्षिणसे बुलाया। वह मुझसे लाग रखता था और हमेशा ढके छुपे बहुतसी बातें बनाया करता था। उस समय मेरे पिता फसादी लोगोंसे मेरी चुगलियां सुनकर मुझसे नाराज थे। मैं जान गया था कि शेखके आनेसे यह नाराजी और बढ़ जावेगी जिससे मैं हमेशाके लिये अपने बापसे विमुख होजाऊंगा। इस बरसिंहदेवका राज्य शेखके मार्ग में पड़ता था और वह उन दिनों बागी भी होरहा था। इसलिये मैंने इसको कहला भेजा कि यदि तुम उस फसादीको राहमें मार डालो तो मैं तुम्हारा बहुत कुछ उपकार करूंगा। राजाने यह बात मानली। शेख जब उसके देशसे होकर निकला तो इसने मार्ग रोक लिया और थोड़ीसी लड़ाईमें उसके साथियोंको तितर बितर करके शेखको मारा और उसका सिर इलाहाबादमें मेरे पास भेज दिया। इस बातसे मेरे पिता नाराज तो हुए परन्तु परिणाम यह हुआ कि मैं बेखटके उनके चरणोंमें चला गया और वह नाराजी धीरे धीरे दूर होगई।

३० घोड़ोंका दान।

बादशाहने तबेलेके कर्मचारियोंको हुक्म दिया कि नित्य ३० घोड़े दानके लिये लाया करें।

मिरजाअलो अकबरशाहीको चार हजारी मनसब और संभल की सरकार जागीरमें मिली।

अमीरुलउमराकी एक उत्तम बात।

बादशाह लिखता है—"एक दिन किसी प्रसङ्गमें अमीरुलउमरा ने एक बात ऐसी कही जो मुझे बहुत पसन्द आई। उसने कहा कि ईमानदारी और बेईमानी कुछ धन मालहीमें नहीं देखी जाती है वरन यह भी बेईमानी है कि जो गुण अपनेमें न हो वह दिखाया जावे और जो गुण दूसरोंमें हो वह छिपाया जावे। बेशक यह बात सच्ची है। पास रहनेवालोंको चाहिये कि अपने और पराये

का राग द्वेष छोड़कर हरेक मनुष्यकी जैसी व्यवस्था हो वैसी अर्ज करते रहें ।"

तूरान जीतनेका विचार ।

"मैने परवेजसे जाते समय कह दिया था कि जो राणा अपने पाटवीपुत्र कर्ण समेत हाजिर होजावे और अनुचर्य्या स्वीकार करे तो उसके देशको मत बिगाडना । इस सिफारिशके दो प्रयोजन थे एक तो यह कि तूरानकी विलायत जीतनेका विचार मेरे पिताके मनमें रहा करता था । परन्तु जब कभी उन्होंने यह इरादा किया तभी कोई न कोई विघ्न पड गया । अब यदि राणाकी लडाई एक तरफ होजाय और यह खटका जीसे निकल जाय तो मै परवेजको हिन्दुस्थानमें छोडकर अपने बाप दादोंके देशको चला जाऊं । वहां अभी कोई जमा हुआ हाकिम नहीं है । बाकीखां भी जो अबदुल्लाखां और उसके बेटे अबदुलमोमिनखांके पीछे जोर पकड़ गया था मर चुका है । उसके भाई वलीमुहम्मदका जो इस समय उस देशका अधिपति है राज्य नहीं जमा है ।"

"दूसरे दक्षिण जीतनेकी तय्यारी करना जिसका कुछ भाग मेरे पिताके समयमें लिया गया था अब मै उस देशको एक बार अपने राज्यमें मिलाया चाहता हूं परमेश्वर मेरे यह दोनो मनोरथ पूरे करे ।"

मिरजा शाहरुख।

बदख्शांके हाकिम मिरजा सुलेमानके पोते मिरजा शाहरुख को अकबरने पांच हजारी मनसब और मालवेका सूबा दिया था जहांगीरने सात हजारी करके उसे उसी सूबेमें स्थिर रखा। अकबर भी इस मिरजाका बहुत मान रखता था। जब अपने बेटोंको बैठने का हुक्म देता तो इसको भी बिठाता।

ख्वाजा अबदुल्लह नकशबन्दीका कसूर माफ होकर जागीर और मनसब बहाल रहा। यह बादशाहको छोड़कर उसके बापके पास चला आया था।

अबुलनबी उजबकका मनसब अढाई हजारी होगया। यह तूरान का रहनेवाला था और अबदुलमोमिनखांके राज्यमें मशहदका हाकिम था।

सुलतान दानियालके बेटोंका बुलाना।

बादशाहने अपने विश्वासी सेवक शेख हुसैनको जो बडा शिकारी और जर्राह भी था अपने भाई सुलतान दानियालके बालबच्चोंको लानेके लिये बुरहानपुर भेजा था। खानखानांको भी कुछ ऊंची नीची बातें कहलाई थीं वह उसका और वहां भेजे हुए दूसरे अमीरोंका समाधान करके सुलतान दानियालके घरवालोंको लाहौर में बादशाहके पास ले आया।

नकीबखां इतिहासवेत्ता।

नकीबखांका पद बादशाहने बढाकर डेढ हजारी कर दिया। यह बड़ा इतिहासवेत्ता था। बादशाह लिखता है—"सृष्टिकी उत्पत्तिसे आजतक सारी दुनियाका हाल इसकी जबान पर है। ऐसी धारणाशक्ति परमेश्वर विरलेही मनुष्यको देता है। मेरे पिता ने बादशाह होनेसे पहले इससे कुछ पढा था इस लिये इसको उस्ताद कहते थे। यह इतिहास और परम्पराको ठीक ठीक जानने में अद्वितीय है।

अजयराज कछवाहके बेटे।

२७ आबान (माघ बदी १४) को राजा मानसिंहके काका भगवानदासके पुत्र अजयराजके बेटों अभयराम, विजयराम और श्याम रामने विलक्षण उपद्रव किया। अभयरामके अपराधोंसे बादशाह कई बार आनाकानी कर गये थे। उस दिन अर्ज हुई कि वह अपने कबीलोंको देशमें भेजते हैं पीछेसे आप भी भागकर राणाके पास जाना चाहते हैं। बादशाहने रामदास और दूसरे राजपूत सरदारोंसे कहा कि कोई इनका जामिन हो जावे तो इनके मनसब और जागीरें बहाल रखकर इनके पिछले कसूर माफ कर दिये जावें। पर दुर्भाग्यसे कोई उनका जामिन न हुआ। तब बाद

शाहने अमीरुलउमरासे कहा कि जबतक इनकी जामिनी न हो तबतक वह किसीके हवाले कर दिये जावें। अमीरुलउमराने उन को इब्राहीमखां काकड़ और शाहनवाजखांको सौंप दिया। उन्होंने इनके हथियार लेना चाहा तो यह लड़नेको तय्यार हुए। अमीरुल उमराने यह बात बादशाहसे कही। बादशाहने दण्ड देनेका हुक्म दिया। जब अमीरुलउमरा गया तो पीछेसे बादशाहने शेख फरीदको भी भेजा।

दो राजपूतोंने अमीरुलउमराका सामना किया। एकके पास तो तलवार थी और दूसरेके पास जमधर। जमधरवालेसे अमीरुलउमराका एक नौकर जिसका नाम कुतुब था लड़ा और मारा गया। इधर यह जमधरवाला भी काम आया और तलवारवाले को अमीरुलउमराके एक पठानने मार डाला। फिर दिलावर अभयरामके ऊपर गया जो दो राजपूतोंसे सजा खड़ा था और उन की तलवारोंसे घायल होकर वहीं खेत रहा। पीछे कुछ अहदियों और अमीरुलउमराके नौकरोंने मिलकर उनको मार डाला। एक राजपूत तलवार निकालकर शेख फरीदके ऊपर दौड़ा। पर शेख के एक हबशी गुलामने उसको भी ठिकाने लगाया।

यह मारामारी आमखास दौलतखानेमें हुई और इस दण्डसे बहुतसे बखड़ डर गये। अबुलनबी उजबकने बादशाहसे निवेदन किया कि जो ऐसा अपराध उजबकोंमें होता तो अपराधियोंका सपरिवार संहार कर देता।

बादशाहने फरमाया कि यह लोग मेरे बापके बढ़ाये हुए हैं मैं भी वही बरताव बरतता हूं। और फिर यह न्यायकी बात भी नहीं है कि एक मनुष्यके अपराधमें बहुतसे लोगोंको दण्ड दिया जावे।

मनसबोंका बढ़ाना।

बादशाहने ताजखां और पख्तावेग काबुलीका मनसब बढ़ाकर

२ हजारी और डेढ़ हजारी कर दिया। पिछला उनके चचा मिरजा मुहम्मद हकीमके पास रहा करता था।

अबुलकासिम तमकीनका भी जो अकबर बादशाहका पुराना नौकर था डेढ़ हजारी मनसब होगया। बादशाह लिखता है कि—"ऐसा बहुपुत्री कोईही होगा। उसके ३० लड़के हैं और लड़कियां इतनीही नहीं तो इससे आधीसे तो कम नहीं।"

पुत्र पदवी।

बादशाहने शेख सलीम चिश्तीके पोते शेख अलाउद्दीनको बेटे की पदवी प्रदान की। यह बादशाहसे एक वर्ष छोटा था। बहुत साधु और साहसी था।

अली असगर बारहको सैफखांका खिताब और तीन हजारी, फरेदूंबरलासको दो हजारी और शेख बायजीदको तीन हजारी मनसब दिया। शेख बायजीद भी शेख सलीम चिश्तीका पोता था। उसकी माने सबसे पहले बादशाहको दूध पिलाया था।

पण्डितोंसे शास्त्रार्थ।

बादशाह लिखता है—"एक दिन मैंने पण्डितोंसे कहा कि यदि ईश्वरका १० भिन्न भिन्न शरीरोंमें अवतार लेना तुम्हारे धर्मका परम सिद्धान्त है तो यह बुद्धिमानोंको प्रमाण नहीं। इस कल्पना से यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर जो सब उपाधियोंसे न्यारा है लम्बाई चौड़ाई और गहराई भी रखता है। यदि यह अभिप्राय है कि उसमें ईश्वरका अंश था तो ईश्वरका अंश सब प्राणियोंमें होता है उनमें होनेकी कोई विशेषता नहीं है। और जो ईश्वरके गुणोंमेसे किसी गुणके सिद्ध करनेका प्रयोजन है तो इसमें कोई मुख्य बात नहीं जिस वास्ते कि प्रत्येक धर्म्म और पन्थमें सिद्ध पुरुष होते रहे हैं जो अपने समयके दूसरे मनुष्योंसे समझमें बढ चढ़ कर थे।"

"बहुतसे वाद विवादके बाद वह लोग उस परमेश्वरको मान गये जो रूप और रेखासे विभिन्न है। कहने लगे कि हमारी बुद्धि

उस परमात्मा तक पहुंचनेमें असमर्थ है और बिना किसी आधारके उसको पहचाननेका मार्ग नहीं पासकते इस लिये हमने इन अवतारोंको अपने वहां तक पहुंचनेका साधन बना रखा है।”

“मैंने कहा कि यह मूर्तियां कबतक तुम्हारे वास्ते परमात्मा तक पहुंचनेका द्वार होसकती हैं।”

बादशाहके घरका हाल।

इसके आगे बादशाहने अपने बाप माइयों और बहनोंका कुछ घरू वृत्तान्त लिखा है जो विलक्षण और सुहावना होनेसे यहां भी लिखा जाता है।

बादशाह लिखता है—“मेरे पिता प्रत्येक धर्म्म और पन्थके विद्वानों और विशेषकर हिन्दुस्थानके पण्डितोंका बहुधा सत्सङ्ग करते थे। वह पढे नहीं थे तो भी पण्डितों और विद्वानोंके पास बैठनेसे उनकी बातोंमें अविद्वत्ता नहीं दरसने पाती थी। गद्य और पद्यके गूढ़ार्थोंको ऐसे पहुंच जाते थे कि उससे बढ़कर पहुंचना सम्भव न था।”

“कद कुछ लम्बा था, वर्ण गेहुंवा, आंख भौं काली, छवि अच्छी, सिंहका सा शरीर, छाती चौडी, हाथ और बाहु दीर्घ, नाकके बायें नथने पर सुन्दर तिल, आधे चनेके बराबर, जो सामुद्रिक जानने वालोंके मनमें धन और ऐश्वर्य्यकी वृद्धिका हेतु है, बोली गम्भीर बातें सलोनी, स्वरूप और छवि इस लोकके लोगोंसे भिन्न थी, देवमूर्त्ति थे।”

बहन भाई।

“मेरे जन्मसे तीन महीने पीछे मेरी बहन शाहजादा खानम एक सहेलीसे पैदा हुई। पिताने उसे अपनी माताको सौंप दिया। उसके पीछे एक लडका दूसरी सहेलीसे फतहपुरके पहाड़ोंमें हुआ। उसका नाम तो शाह मुराद था परन्तु पिता पहाडी कहते थे। जब उसको दक्षिण जीतनेके वास्ते भेजा तो वह कुसङ्गतमें पड़कर इतनी अधिक शराब पीने लगा कि ३० वर्षकी अवस्थामें जालनापुर

के पास मर गया जो बरार देशमें है। उसका वर्ण सांवला था बदन छरेरा कद लम्बा चालढालसे धीरता वीरता और गम्भीरता पाई जाती थी।"

"तारीख १० जमादिउलअव्वल सन् ६७६(१) बुधकी रातको फिर एक लड़का एक सहेलीसे अजमेरमें दानियाल मुजावरके घर पैदा हुआ। पिताने उसका दानियाल नाम रखा और शाह मुराद के मरने पर दक्षिणको भेजा। पीछे आप भी गये। जिन दिनोंमें आपने आसेरगढ़को घेरा था दानियाल खानखानां और मिरजा यूसूफ आदि सरदारों सहित अहमदनगरके किलेको घेरे हुए था। जब आसेरगढ़ फतह होगया, पिता दानियालको वहां छोड़कर आगरेमें आगये फिर वह भी अपने भाई शाह मुरादका अनुगामी होकर अधिक शराब पीनेमे ३३ वर्षकी अवस्थामें मर गया। उसकी मृत्यु बुरी तरह हुई। उसको बन्दूक और बन्दूककी शिकारसे बहुत रुचि थी। अपनी बंदूकका नाम 'इक्का' और 'जनाजा' रखा था। जब शराब बहुत बढ गई और खानखानांने मेरे पिता की ताकीदसे पहरे बिठाकर शराबका आना बन्द कर दिया तो दानियालने अपने सेवकोंसे बहुत नम्रतासे कहा कि जैसे बन पड़े मेरे वास्ते शराब लाओ। और निज सेवक मुरशिदकुलीसे कहा कि इसी बंदूक इक्का और जनाजामें भर ला। वह दुष्ट इनामके लोभसे दोआतिशा शराब उस बंदूकमें भरकर लेआया। उसकी तेजीसे बारूत और लोहा कटकर उसमें मिल गया फिर उसका पीना और मरना साथ साथ था।"

"दानियाल बहुत सजीला जवान था। उसे हाथी घोड़ोंका बहुत शौक था। यह असम्भव था कि किसीके पास अच्छा हाथी

(१) अकबरनामेमें बुध, २ जमादिउलअव्वल ६८० है और यही सही है बुध भी इसी तारीखको था। १० जमादिउलअव्वल और तिथि आसोज सुदी २ सम्वत् १६२८ थी १० जमादिउलअव्वल ६७६ को बुध नहीं रविवार था।

या घोडा सुने और मंगा न ले। हिन्दुस्थानी रागोंका बडा रसिक था। हिन्दुओंके ढङ्ग पर हिन्दीमें यदि कुछ कविता करता तो बुरी न होती थी।

"दानियालके जन्मके पीछे फिर एक लडकी बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम शकरुन्निसा बेगम रखा। वह उनके पासही पली थी इससे बहुत अच्छी निकली। भलमनसी और सब पर दया रखना उसका स्वाभाविक गुण है। बचपनसे अबतक मेरे स्नेहमें डूबी हुई है ऐसी प्रीति बहन भाइयोंमें बहुत कम होती होगी। बाल्यावस्थामें पहली बार जैसी कि मर्य्यादा है बालकोंकी छाती दबानेसे दूधकी बून्द निकलती है। जब मेरी इस बहनकी छाती भी दबाई गई और उससे दूध निकला तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि बाबा इसको पी जा जिससे तेरी बहन तेरी मा की जगह भी हो जावे। ईश्वर जानता है कि जिस दिनसे मैंने उस दूधकी बून्दको पिया उसी दिनसे बहनपनेके सम्बन्धके साथ अपनेमें वह प्रीति भी पाता हूं जो लडकोंको मासे होती है।"

"कुछ दिनों पीछे एक और लडकी उसी बीबी दौलतशाहसे पैदा हुई। पिताने उसका नाम आरामबानू बेगम रखा। उसका मिजाज कुछ गर्म्म और तेज है। पिता उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी बहुतसी बेअदबियोंको सहते थे जो अति मोह होनेके कारण बुरी नहीं लगती थीं और मुझे सावधान करके कईबार कह चुके थे कि बाबा मेरी खातिरसे अपनी इस बहनके साथ जो हिन्दुओंकी बोलीके अनुसार मेरी लाड़ली है मेरे पीछे ऐसाही बरताव बरतना जैसा कि मैं उससे बरतता हूं। इसका लाड़ करना और इसकी बेअदबियोंसे बुरा न मानना।"

"मेरे पितामें जो उत्तम गुण थे वह कहनेमें नहीं आते। इतने बडे राज्य असंख्य कोष और हाथी घोडोंके स्वामी होकर परमेश्वर से डरतेही रहते थे और अपनेको उसकी सृष्टिका एक तुच्छ जीव जानते थे।"

"उनके विशाल राज्यमें जिसकी प्रत्येक सीमा समुद्रसे जामिली थी अनेक धर्म्म और पंथके लोग अपने अपने भिन्न भिन्न मतोंको लिये हुए सुखसे निर्भय बसते थे किसीको किसीसे कुछ बाधा न थी। जैसी कि दूसरी विलातयोंमें है कि शीया मुसलमानोंको ईरान और सुन्नियोंको रूम, हिन्दुस्थान और तूरानके सिवा जगह नहीं है। और यहां सुन्नी शीया एक मसजिदमें फरंगी और यहूदी एक गिरजामें नमाज पढते थे।"

"सुलहकुल अर्थात् सबके साथ निबाहने वाले पंथ पर चलते थे हरेक दीन और धर्म्मके श्रेष्ठ पुरुषोंसे मिलते थे और जैसी जिस कों समझ होती थी उसीके अनुसार उसका आदर सत्कार करते थे। उनकी रातें जागरनमें कटती थीं दिन और रातमें बहुतही कम सोते थे रात दिनका सोना एक पहरसे अधिक न था। रातोंके जागनेको गई हुई आयुका एक प्रतिकार समझते थे।"

"वीरताका यह हाल था कि मस्त और छुटे हुए हाथियों पर चढ जाते थे। खूनी हाथी जो अपनी हथनियोंको भी पास न आने देते थे यहांतक कि महावतों और हथनियोंको मारकर निकल खडे होते थे, उन पर राहकी किसी दीवार या पेड़के ऊपरसे चढ़ जाते थे और उन्हें अपने वशमें कर लेते थे। यह बात कईबार देखी गई है।"

"१४ वर्षकी अवस्थामें राज्यसिंहासन पर विराजमान हुए थे हेमू "काफिर" जिसने पठानोंको गद्दी पर बिठाया था हुमायूं बादशाहका देहान्त होने पर एक अपूर्व सेना और बहुतसे ऐसे हाथी सजाकर जैसे उस समय हिन्दुस्थानके किसी हाकिमके पास न थे दिल्ली पर चढ आया। आप उस समय पञ्जाबके पहाडोंकी तलहटीमें पठानोंको घेरे हुए थे। वहां यह समाचार पहुंचा तो बैरमखांने जो आपका शिक्षक था साथके सब सेनानियोंको बुलाकर आपको परगने कलानूर जिले लाहौरमें तख्त पर बिठाया। तरदीखां आदि मुगल जो दिल्लीमें थे हेमूसे लडे और हारकर आपके पास

आये। बैरमखांने तरद्दीबेगको भाग आनेके अपराधमें मारडाला।

"हेमू इस जीतसे घमण्डमें आकर कलानूरकी ओर बढ़ा। पानीपतके मैदानमें २ मोहर्रम गुरुवार सन् ९६४(१) को तम और तेजके पुञ्ज परस्पर भिडे। हेमूकी सेनामें ३० हजार जङ्गी सवार थे और पिताजीके पास चार पांच हजारसे अधिक न थे। हेमू हवाई नामक हाथी पर चढा हुआ था कि अकस्मात उसकी आंख मे तीर लगकर सिरमेंसे निकल गया। यह दशा देखकर उसकी फौज भाग निकली। दैवयोगसे शाहकुलीखां महरम हाथीके पास पहुंचकर महावत पर तीर मारता था। वह चिल्ला उठा मुझे मत मारो हेमू इसी हाथी पर है। फिर तो लोग दौड पड़े और उसको उसी दशामें पिताजीके पास लाये। बैरमखांने प्रार्थना की कि हजरत इस काफिरको मारकर गिजा (धर्म्मयुद्ध) के पुण्यको प्राप्त हों और आज्ञापत्रोंमें गाजी लिखे जावें।"

"आपने फरमाया कि मैं तो इसको पहलेही टुकडे टुकड़े कर चुका। काबुलमें जबकि मै ख्वाजा अबदुस्समद शीरींकलमसे चित्रकारीका अभ्यास करता था तो एक दिन मेरी लेखनीसे एक ऐसी तसवीर निकली कि जिसके अंग प्रत्यंग भिन्नभिन्न थे। एक पास रहने वालेने पूछा कि यह किसकी मूर्त्ति है तो मेरे मुंहसे निकला कि हेमूकी है।"

"निदान आपने हाथको उसके लोहूसे न भरकर एक सेवकको उसके मारनेका हुका देदिया। उसके सिपाहियोंकी ५०००लाशें तो गिनी गई थीं उनके सिवा और भी इधर उधर पड़ी थीं।"

"उनके दूसरे बड़े कामोंमेंसे गुजरातकी फतह और दौड़ है। जब इब्राहीमहुसेन मिरजा, मुहम्मदहुसेन मिरजा और शाह-मिरजा, बागी होकर गुजरातको गये और वहांके सब अमीरों (२) और दुराचारियोंसे मिलकर अहमदाबादके किलेको घेरलिया जिस

(१) अगहन सुदी ३ सम्बत् १६१३।

(२) यह अमीर गुजरातके अगले बादशाह मुजफ्फरके नौकर थे।

में मिरजा अजीजकोका और बादशाही लशकर था। आप मिरजा अजीज कोकाकी मा जीजी अगाके घबरा जानेसे तुरन्त निजसेना सहित फतहपुरसे गुजरातको रवाने होगये और दो महीने के रस्तेको कभी घोड़े कभी ऊंट और कभी बुड़बहलकी सवारीपर ८ दिनमें काटकर ५ जमादिउलअव्वलको दुश्मनके पास जापहुंचे। शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछने लगे तो कुछ लोगोंने रात्रिमें छापे मारनेकी सलाह दी। आपने फरमाया कि छापा मारना कायर और धूर्तोंका काम है। उसी क्षण नरसिंघे बजाने और सिंहनाद करनेका हुक्म देकर साबरमती पर आये और लोगोंको प्रबन्धपूर्वक नदीसे उतरनेकी आज्ञा की।"

"मुहम्मदहुसैनमिरजा कोलाहल सुनकर घबराया और स्वयं भेद लेनेको आया। इधरसे सुबहानकुली तुर्क भी इसी तलाशमें नदी पर आया था मिरजाने उसको देखकर पूछा कि यह किसकी फौज है। तुर्कने कहा कि जलालुद्दीन अकबर बादशाह है और उन्हीं की फौज है। मुहम्मदहुसैनमिरजाने कहा कि मेरे जासूस १४ दिन पहले बादशाहको फतहपुरमें देख आये हैं तू झूठ कहता है। सुबहानकुलीने कहा आज नवां दिन है कि हजरत फतहपुरसे धावा करके आये है। मिरजा बोला कि भला हाथी कैसे पहुंचे होंगे? सुबहानकुलीने जवाब दिया कि हाथियोंकी क्या आवश्यकता थी हाथियोंसे बढ़चढ़ कर पहाडोंको तोड़ देने वाले ऐसे ऐसे शूरवीर आये है कि तुमको सरकशी करनेकी हकीकत मालूम हो जायेगी।"

"मिरजा दूर जाकर अपनी सेनाको सजाने लगा और बादशाह शत्रुओंके हथियार बांधनेकी खबर आने तक वहीं ठहरे रहे। जब किरावलोंने यह खबर पहुंचाई कि अब गनीम हथियार पहिन रहा है तो आप आगे बढ़े और खान आजमके बुलानेको आदमी भेजे। परन्तु उसने आनेमें विचार करके कहलाया कि शत्रु प्रबल है जबतक गुजरातका लशकर किलेसे बाहर न आजावे नदीके पारही रहना चाहिये। आपने फरमाया कि हमको हमेशा और

खास करके इस सफरमें ईश्वरकी सहायताका भरोसा है जाहरी बातों पर नजर होती तो इस प्रकार छडी सवारीसे धावा करके नहीं आते। अब शत्रु लड़नेको तय्यार है तो हमको देर करना उचित नहीं। यह कहकर ईश्वर पर भरोसा करके अपने कई सेवकों सहित नदीमें घोडा डाला। नदी छिलछिली न थी तोभी कुशलपूर्वक पार होगये। फिर अपना दो बुलगा(१) मांगा तो कोरदार(२)ने घबराहटमें लाते हुए आगे डाल दिया। शुभचिन्तकोंने इसको अपशकुन समझा। आपने कहा कि हमारा शकुन तो बहुत अच्छा हुआ है क्योंकि हमारे आगेका रस्ता खुल गया। इतनेमें मिरजा सेना सजाकर अपने स्वामीसे सामना करनेको आया।"

"खानआजमको इस बातका शान गुमान भी न था कि हजरत इतनी फुरतीसे यहां पधार जावेंगे। जब कोई उसे हजरतके आने का समाचार कहता था वह स्वीकार न करता था। निदान जब उसको अनुमानों और प्रमाणोंसे आपके पधारनेका निश्चय होगया तो गुजरातके लशकरको सजाकर किलेसे बाहर निकलनेको तय्यार हुआ। आसिफखांने भी उसको यह खबर भेजी परन्तु उसके किलेसे निकलनेके पहलेही शत्रुका दल वृक्षोंसे निकल आया और आप उस पर चले। मुहम्मद कुलीखां तोकताई और तरदीखां दीवाना कुछ शूरवीरोंसे आगे बढ तो गये थे पर थोडी दूर जाकर पीछे फिरे। तब आपने राजा भगवान्दाससे फरमाया कि दुश्मन बहुत हैं और हमारे आदमी थोड़े हैं, हम सबको एक दिल होकर हल्ला करना चाहिये क्योंकि बंधी हुई मुट्ठी खुले हुए पंजेसे जियादा कारगार होती है। यह कहकर तलवार खेंची और साथियों सहित अल्लाहोअकबर और या मुईन कहते हुए दौडे। दहनी

(१) दोबलगेका अर्थ कोषोंमें नहीं मिला यह कोई ऐसे हथियार अथवा बकतर वगैरहका नाम है जो गिरनेसे खुल जाता हो।

(२) हथियार रखनेवाला।

बाईं और बीचकी सेनाके शूरबीर भी पहुंचकर शत्रुसे लड़ने लगे। शत्रुकी सेनासे कौकबाई जो एक प्रकारका अग्न्यास्त्र होता है छूटा और थूहरोंके वृक्षोंमें पडकर चक्कर खाने लगा। उसकी कड़कसे गनीमका हाथी भड़ककर अपने लश्करमें जापड़ा जिससे वहां बड़ी गडबड़ मची और बीचकी फौजने बढ़कर मुहम्मदहुसैन मिरजा और उसके सिपाहियोंको हटा दिया। शूरबीरोंने खूब युद्ध किया। मानसिंह दरबारीने हजरतके देखते देखते अपने शत्रुको मारलिया। राघोदास कछवाहा काम आया मुहम्मद वफा जखमी होकर घोडे से गिरा। ईश्वरकी कृपा और भाग्यबलसे शत्रु हार गये। आप इस विजयपर ईश्वरका धन्यवाद कररहे थे कि एक कलावन्तने सैफ खां कोकलताशके मारे जानेकी खबर दी। निर्णय करनेसे विदित हुआ कि जब मिरजा गोल (बीच) की फौज पर दौडा था तो सैफ खां दैवसंयोगसे उसके सामने आगया और बीरतापूर्वक लड़कर काम आया। मिरजा भी गोलवालोंके हाथों घायल हुआ।"

"सैफखां जैनखां कोकाका बडा भाई था और विचित्र वार्त्ता यह है कि लड़ाईसे एक दिन पहले जब बादशाह भोजन कररहे थे तो हजारेसे जो शानेकी हड्डी देख जानता था पूछने लगे कहो किसकी जीत होगी? उसने कहा कि जीत तो आपकी होगी परन्तु एक अमीर इस लश्करका शहीद होगा। सैफखांने निवेदन किया कि यह सौभाग्य मुझे प्राप्त होना चाहिये।

"जब मिरजा मुहम्मद हुसैन भागा तो घोडेका पांव थूहरमें फंस जानेसे गिर पडा। उसी समय गदाअली इक्का वहां पहुंचा और उसे अपने आगे घोडे पर बैठाकर हजूरमें लाया। उस समय दो तीन आदमी और भी उसके पकड़नेमें शामिल होनेकी बात कहने लगे। आपने मिरजासे पूछा तुझे किसने पकडा? उसने कहा "बादशाहके नमकने।" उसके हाथ पीछेको बंधे थे आपने आगे को ओर बांधनेको फरमाया। फिर उसने पानी मांगा तो फरहत खां गुलामने उसके सिर पर दुहत्थड मारा। आपने उससे नाराज

होकर अपने पीनेका पानी मंगाया और मिरजाको पिलाया।"

"मिरजा मुहम्मदहुसैनके पकड़े जाने पर आप धीरे धीरे अहमदाबादको चले। मिरजाको राय रायसिंह राठोड़के जो असद राजपूतोंमेंसे था हवाले किया कि हाथी पर डालकर साथ लावे।"

"इतनेमें अख्तियारुलमुल्क जो गुजरातियोंके बड़े सरदारोंमेंसे था ५००० आदमियों सहित आता हुआ दिखाई दिया। बादशाही लोग उसको देखकर घबराये। पर हजरतने अपनी स्वाभाविक वीरतासे बाजे बजानेका हुक्म दिया। शुजाअतखां राजा भगवानदास और कई बन्दे आगे जाकर लड़ने लगे और राय रायसिंहके नोकरोंने इस विचारसे कि कहीं मिरजा मुहम्मदहुसैनको शत्रुकी सेना छुड़ा न लेजावे राजाके अनुमोदनसे उसका सिर काट दिया। अख्तियारुलमुल्ककी फौज भी बिखर गई। घोड़ेने उसे थूहरोंमें गिरा दिया और सुहराबबेग इक्का उसका सिर काटलाया। यह इतनी बड़ी जीत उन थोड़ेसे आदमियों द्वारा ईश्वरकी कृपासे हुई थी।"

कारखानोंका दीवान।

"जिस दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाको दीवान किया था कारखानोंकी दीवानीका काम मुअज्जुलमुल्कको दिया था जो अकबर बादशाहके समयमें करकराकखानेका मुशरिफ था।"

"इसी तरह बगालें चित्तोड़ रणथम्भोर खानदेश और आसेर आदि भारतके प्रसिद्ध किलोंका जीतना है।"

"चित्तोड़के घेरेमें उन्होंने जयमलको जो किलेवालोंका सरदार था अपनी बन्दूकसे मारा था। यह बंदूक जिसका नाम संग्राम है, जगतकी अनोखी बंदूकोंमेंसे है। इससे तीन चार हजार पशु पक्षी उन्होंने मारे होंगे।"

"बन्दूकका निशाना वह बहुत अच्छा लगाते थे। इस काममें मैं भी उनका योग्य शिष्य होसकता हूं। बन्दूकसे शिकार करनेकी मुझे बड़ी रुचि है। एक दिन १८ हरन बन्दूकसे मारे।"

"जिन नियमों पर पूज्य पिताजी चलते थे उनमेंसे एक मांस-त्याग भी था। सालमें तीन मास मांस खाते थे और नौ मास न खाते थे। पशुवधकी रुचि उनको कदापि न थी। उनके शुभ शासनकालमें बहुतसे दिन और महीने ऐसे नियत थे जिनमें पशुवध का सर्वथा निषेध था। अकबरनामेमें उनका वर्णन है।"

रोजा ईद।

यह पहली ईद(१) थी इस लिये जब बादशाह ईदगाहको गया तो बहुत भीड़ होगई थी। आपने दौलतखाने (राजभवन) में लौट कर खैरातके वास्ते कई लाख दाम दोस्तमुहम्मदको, एक लाख(२) मीर जमालहुसैन अंजू मीरान सदरजहां, मीर मुहम्मद रजा सब्जवारी को और पांचहजार रुपये शेख मुहम्मदहुसैनजामीके चेलेको दिये। आज्ञाकी कि हरेक मनसबदार नित्य एक मुन्य ५० हजार दाम(३) भिक्षुकोंको दिया करे। हाजी कोकाको हुक्म दिया कि हररोज हकदार स्त्रियोंको जमीन और नकद रुपये दिलानेके लिये महलमें भेजा करे।

फिर कई मनुष्योंको हाथी घोड़े दिये। नकीब और तवेलेके कर्मचारी जो ऐसे लोगोंसे कुछ रुपये जलवानेके नामसे लिया करते थे बादशाहने उनको वह रकम सरकारसे देनेकी आज्ञा देकर उनसे लोगोंका पीछा छुड़ाया।

हाथी नूरगंज।

शालिवाहन बुरहानपुरसे सुलतान दानियालके हाथी घोडे ले कर आया। उनमेंसे मस्तअलस्त नाम हाथीको बादशाहने पसन्द करके नूरगञ्ज नाम रखा। उसमें अनोखापन यह था कि उसके कानोंके पास दोनो ओर दो तरबूजोंके बराबर मांस उठा हुआ था

---

(१) फागुन सुदी २ संवत् १६६२

(२) अढाई हजार रुपये।

(३) सवा हजार रुपये।

और सख्तीके समय उनमेंसे मद चूता था। उसका माथा भी उभरा हुआ था।

काबुलकी जकात।

बादशाहने और सब सूबोंकी जकात जो करोड़ोंकी थी पहले ही छोड दी थी अब काबुलकी जकात भी जिसकी जमा एक करोड़ २३ लाख दामकी थी माफ कर दी और कन्धारकी भी माफ की।

काबुल और कन्धारकी बड़ी आमदनी यही थी इस माफीसे ईरान और तूरानके लोगोंको बहुत लाभ हुआ।

रुकैया बेगम।

शाहकुलीखां महरमका बाग आगरेमें था परन्तु उसका कोई वारिस नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने अपनी सौतेली माता मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया बेगमको देदिया। अकबर बादशाह ने सुलतान खुर्रमको इसे सौंपा था और वह पेटके बेटेसे अधिक खुर्रम पर स्नेह रखती थीं।

पहला नौरोज।

११ जीकाद सन १०१४ हिजरी (चेत सुदी १२) मंगलवारकी रातको सूर्य्यनारायण मेखमें आये। दूसरे रोज नौरोज हुआ। उस दिन मेष राशिके १९ वें अंश तक खूब राग रंग और नाच कूद हुआ। क्योंकि यह पहला नौरोज था। बादशाहने आज्ञा दे दी थी कि इन दिनोंमें हर आदमी जो नशा चाहे करे कोई न रोके।

बादशाह लिखता है—इन १७।१८ दिनोंमें हर रोज एक बडा अमीर मेरे पिताको अपनी मजलिसमें बुलाकर रत्न और रत्नोंके जडे हुए गहने तथा हथियार और हाथी घोडे भेट किया करता था जिनमेंसे वह कुछ तो पसन्द करके लेलेते थे और शेष उसीको बख्श देते थे।

परन्तु मैंने इस वर्ष सिपाही और प्रजाके हितसे यह भेटें नहीं ली। हां कई पास रहनेवालोंकी भेंट ग्रहण की।

इन दिनोंमें कई अमीरोंके मनसब बढ़े जिनमें राजा बासूका मनसब अढ़ाई हजारीसे साढ़े तीन हजारी होगया। यह पञ्जाबका पहाडी राजा था और लड़कपनसे निरन्तर बादशाहका भक्त रहा था।

कन्धारके हाकिम शाहबेगखांका मनसब बढ़कर पांच हजारी होगया।

रायसिंह पांच हजारी हुआ।

राना सगरको १२०००) खर्चके लिये मिले।

गुजरात।

सुजफ्फर गुजरातीकी सन्तानमेंसे एक मनुष्य अपनेको अधिकारी समझकर बादशाहके राज्यसिंहासन पर बैठनेके समयसे अहमदाबादके आसपास लूट खसोट करने लगा था। पेम बहादुर उजबक और राय अलीभट्टी जो उस सूबेके वीर पुरुषोंमेंसे थे उससे लडकर मारे गये थे। इसलिये बादशाहने राजा विक्रमादित्यको कई सरदार और छः सात सौ सजे हुए सवार देकर गुजरातकी सेनाकी सहायताके लिये भेजा और कहा कि जब उस प्रांतमें शांति होजावे तो राजा गुजरातका सूबेदार रहे और कुलीचखां हजूरमें आजावे। जब यह सेना वहां पहुंची तो उपद्रवी लोग जङ्गलोंमें भाग गये और वह देश निर्विघ्न होगया।

रानाकी हार।

शाहजादे परवेजकी अर्जी पहुंची कि राना थाने मांडलको जो अजमेरसे ३० कोस है छोडकर भाग गया। बादशाही फौज उसके पीछे गई है।

खुसरोका भागना।

शाहजादा खुसरो जिसे अकबरकी बीमारीके समय कुछ ऐसे अमीरोंने बहका दिया था जिन्होंने कितनीही बार कितनेही अपराध किये थे और दण्डसे बचना चाहते थे ८वीं जिलहज्ज द्वितीय चैत सुदी ८ रविवारकी रातको अपने दादाकी समाधिके दर्शनका

मिष करके २५० सवारोंके साथ आगरेसे निकल गया। अमीरुल-उमराने जब यह समाचार सुना तो जनानी ड्योढ़ी पर जाकर नाजिरसे अर्ज कराई कि हजरत बाहर पधारें कुछ जरूरी अर्ज करना है।

बादशाहको इस बातका खयाल भी न था। वह समझा कि गुजरात या दक्षिणसे कोई खबर आई है। बाहर आने पर यह वृत्तान्त सुना तो कहा क्या करना चाहिये? मैं आप जाऊं या खुर्रमको भेजूं?

अमीरुल उमराने प्रार्थना की कि यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊं। बादशाहने कहा जाओ। तब उसने फिर पूछा कि जो समझानेसे न आवे और सामना करे तो क्या किया जावे? बादशाहने कहा जो किसी तरह भी सीधे रस्ते पर न आवे तो फिर जो तुझसे हो सके उसमें कमी मत करना क्योंकि राजासे किसीका सम्बन्ध नहीं होता है।

अमीरुलउमराको बिदा करनेके पीछे बादशाहने सोचा कि इसके हमारे पास अधिक रहनेसे खुसरो नाराज है ऐसा न हो कि इसको नष्ट करदे। इसलिये मुअज्जुलमुल्कको खुसरोके लौटा लाने को भेजा। शेख फरीदबखशीको भी उन सब ओहदेदारों और मन-सबदारोंके साथ जो पहरे चौकी पर थे इसी काम पर नियत किया और एहतिमामखां कोटवालको पता लगाने जानेका हुक्म दिया।

फिर समाचार लगे कि खुसरो पञ्जाबकी ओर जारहा है। उसका मामा मानसिंह बंगालेमें था इसलिये बहुधा अमीरोंका यह विचार हुआ कि वह रास्ता काटकर उधर चला जावेगा। इस पर हर तरफ आदमी भेजे गये। उसका पंजाबको जानाही निश्चय हुआ।

दिन निकलतेही बादशाह भी खुसरोके पीछे चला। २ कोस पर अकबर बादशाहका "रौजा"(१) आया। वहां पहुंचकर जहांगीर

(१) समाधिस्थान।

उनकी पवित्र आत्मासे सहायता मांगने लगा। इतनेहीमें मिरजा शाहरुखका बेटा मिरजा हसन जो खुसरोके पास जानेका उद्योग कर रहा था पकड़ा आया और पूछ ताछ करने पर असल बातसे इनकार न कर सका। बादशाह इसको अपने पिताके अनुग्रहका पहिला शुभशकुन समझकर आगे बढ़ा। जब दोपहर हुआ तो एक वृक्षकी छायामें ठहरकर खानआजमसे बोला कि सब तरहसे शान्तचित्त होने पर भी जब हमारी यह दशा हुई है कि मामूली अफीम भी जो पहरदिन चढ़े खानी चाहिये थी अबतक नहीं खाई है न किसीने याद दिलाई है तो उस कपूतका क्या हाल होगा? मुझे इसी बातका दुःख है कि बेटा बिना कारणही बैरी होगया। जो उसके पकड़नेकी दौडधूप न करूं तो लुच्चे लोग बल पकड़ जावेंगे या वह भागकर उजबक(१) तथा कजलबाश(२)के पास चला जावेगा जिसमें इस राज्यकी हलकी होगी।

निदान बादशाह थोडासा विश्राम लेकर फिर चला और मथुरा होकर जो आगरेसे बीस कोस है, उसी परगनेके एक गांवमें ठहरा। वह गांव मथुरासे दो तीन कोस था। वहां एक तालाब भी था।

खुसरो जब मथुरामें पहुंचा तो हुसैन बेग बदखशी जो काबुलसे दरबारमें आता था दो तीन सौ सवारोंसे उसको मिला और उस लुच्चाईसे जो बदखशांके लोगोंमें स्वाभाविक होती है अगुआ और सेनापति बनकर साथ होगया। वह और उसके आदमी रास्तेमें मुसाफिरी व्यापारियों और प्रजाको लूटते जाते थे। खुसरो देखता था कि किस प्रकार उसके बाप दादोंके राज्यमें अन्याय होरहा है और कुछ नहीं कह सकता था।

बादशाह लिखता है कि यदि उसका भाग्य बलवान होता तो लज्जित होकर बेधड़क मेरे पास चला आता और ईश्वर साक्षी है

(१) तूरानी लोग।
(२) ईरानी लोग।

कि मैं सर्वथा उसके अपराधोंको क्षमा करके उसपर इतनी दया करता कि उसके मनमें बालभर भी खटका न रहता। पर पूज्यपिता के स्वर्गवास होने पर उसने कई गुण्डोंके बहकानेसे अनेक कुविचार किये थे और जानता था कि उनकी सूचना मुझको होचुकी है इस लिये मेरी दया मयाका उसको विश्वास न था। उसकी मा भी मेरी कुमारावस्थाके दिनोंमें उसके कुलक्षणों तथा अपने भाई माधवसिंहके बुरे बरतावसे तंग आकर विष खाकर मर गई थी। मैं उसके शील और गुणोंको क्या लिखूं। वह पूरी बुद्धिमान थी उसको मुझसे इतनी प्रीति थी कि हजार बेटों और भाइयोंको मेरे एक बालके ऊपर वारती थी। उसने अनेकबार खुसरोको उपदेश लिखे और मुझसे भावभक्ति रखनेकी सम्मति दी। परन्तु जब देखा कि कुछ लाभ न हुआ और आगे न जाने क्या हो तो गैरतसे जो राजपूतोंमें प्रकृतिगत होती है, मरनेकी ठानली। कभी कभी उस को बावलेपनकी मिड भी होजाती थी और यह पैतृक रोग था। उसके बाप भाई भी एक एक बार पागल होकर चिकित्सासे अच्छे हुए थे। २६ जिलहज्ज सन् १०१३ जेठ बदी १३ सम्वत १६६२ को जब मैं शिकारको गया हुआ था वह उन्मादमें बहुतसी अफीम खाकर मर गई। मानो वह अपने अभागे बेटेकी भविष्य व्यवस्था पहलेही जान गई थी। मेरा यह पहला विवाह तरुणावस्थामें हुआ था। जब उसके खुसरो उत्पन्न होचुका तो मैंने उसे बेगम की पदवी दी थी। वह मेरे साथ भाई और बेटेकी कुपात्रता न देख सकती थी इस लिये प्राण देकर उस दुःखसे छूट गई।

मुझे उससे बड़ा प्रेम था। इस कारण उसके मरने पर मुझपर ऐसे दिन बीते कि जीनेका कुछ मजा न रहा था। ४ दिन तक ३२ पहर मैंने कुछ खाया पिया नहीं। जब यह हाल मेरे पिता को विदित हुआ तो उन्होंने परम प्रेमसे मुझको शान्तिपत्र भेजा सिरोपाव और पगड़ी जो सिरसे उतारी थी उसी तरहसे बन्धी हुई

मेरे वास्ते भेजी। उनकी इस मेहरवानीसे मेरा शोक सन्ताप कुछ कम हुआ। चित्तने धैर्य्य पकड़ा। तात्पर्य्य इस लेखसे यह है कि जो लड़का अपनी कुशीलतासे माताकी मृत्युका कारण हुआ हो और कोरे भ्रमसेही बापके पाससे भागा हो तो दैवके कोपसे उसे वही दण्ड मिलना चाहिये था जो अन्तमें उसको मिला। अर्थात् पकड़ा जाकर जन्मकैदी हुआ।

१० (द्वितीय चैत्र सुदी ११ सं० १६६३) मंगलवारको बादशाह होडलमें उतरा। दोस्त मुहम्मदको आगरेके किले महलों और कोषोंकी रखवालीके वास्ते भेजकर फरमाया कि एतमादुद्दौला वजीरको तो पंजाबमें भेज दे और मिरजा हकीमके बेटोंको कैदमें रखें। जब सगे बेटोंसे यह हरकत हुई तो भतीजों और चचाके बेटोंका क्या भरोसा रहा।

बुधवारको पलवलमें बृहस्पतिवारको फरीदाबादमें और १३ शुक्रवारको दिल्लीमें डेरे हुए। बादशाहने हुमायूं बादशाह और निजामुद्दीन औलियाकी जियारत करके बहुतसे रुपये कङ्गालोंको बांटे।

१४ शनि (द्वि० चैत सुदी १५) को नरेलेकी सरायमें डेरा हुआ। खुसरो उस सरायको जला गया था। यहांके लोग खुसरो की तरफ झुके हुए थे। इस लिये बादशाहने उनके मुखियोंके द्वारा उनको दोहजार रुपये दिलाकर अपना कृपाभाजन बनाया। कुछ रुपयेशेख फजलुल्लह और राजा धीरधरको देकर फरमाया कि मार्गमें फकीरों और ब्राह्मणोंको दिया करें और तीस हजार रुपये अजमेर में राणा सगरको दिलाये।

१६ (वैशाख बदी २) सोमवारको पानीपतमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—यह स्थान मेरे बापदादोंके लिये बहुत शुभकारी हुआ। यहां उनकी खूब जय हुई है। एक इब्राहीम लोदी पर बाबर बादशाहकी, दूसरी हेमू पर मेरे पिताकी। यहां खुसरोके पहुंचनेसे कुछ पहले दिलावर खांादिम पहुंचा था। और यह हाल

सुनकर उससे पहले लाहोरमें पहुंच जानेके लिये जल्दीसे कूच कर गया था परन्तु अब्दुर्रहीम जो उसी समय लाहोरसे आगया था बहादुरखांके समझाने पर भी खुसरोंसे जा मिला और मलिक अनवररायकी पदवी पाकर लड़ाईके कामोंका अधिकारी हुआ। यदि कमालखां दिल्लीमें और दिलावरखां पानीपतमें खुसरोका रास्ता रोक लेता तो उसके साथी बिखर जाते और वह भी पकड़ लिया जाता।

१७ (वैशाख वदी ३) को बादशाहने करनालमें पहुंचकर कपटी शेख निजाम थानेसरीको मक्के भिजवा दिया। उसने खुसरोको उसके मनचाहे वरदान देकर सन्तुष्ट किया था।

१८ (वैशाख वदी ५) को परगने शाहाबादमें डेरा हुआ। बादशाहने शेख अहमद लाहोरीको जो पुराना सेवक, खानाजाद और चेला भी था मीरअदल (न्यायाध्यक्ष) का पद दिया। चेले और भक्त लोग उसके द्वारा बादशाहकी सेवामें उपस्थित होते थे। जिसको हाथ और छाती देना चाहिये उसको निवेदन करके दिलाता(१) था। शिष्य होनेके समय चेलोंसे उपदेशके कई वाक्य कहे जाते थे अर्थात—

(१) अपने समयको किसी मतके वैरभावसे दूषित न करें।

(२) सब मतमतान्तरवालोंसे मेल रखें।

(३) किसी जीवको अपने हाथसे न मारें।

(४) तारोंको जो परमेश्वरके तेजको धारण करनेवाले हैं यथा योग्य मानते रहें।

(५) परमात्माको सब कामोंमें व्यापक समझें।

(६) किसी समय और स्थानमें मनको भगवतस्मरणसे शून्य न रखें।

---

(१) छाती और हाथ देना इलाही मतका कोई नियम था। यह मत अकबर बादशाहने चलाया था और जहांगीर भी उसे मानता था और चेले करता था।

जहांगीर लिखता है—"मेरे पिताने इन विचारोंमें निपुणता प्राप्त की थी और इन विचारोंसे वह कभी खाली न रहते थे।

२४ मंगल (वैशाख बदी ११) को ५ आदमी खुसरोके साथियोंमेंसे पकडे आये। उनमेंसे दोने खुसरोके पास नौकर होना स्वीकार किया था वह हाथीके पांवके नीचे कुचलवाये गये और तीनने इनकार किया था वह निर्णय होने तक हवालातमें रखे गये।

दिलावरखांने १२ फरवरदीन (२२ जीकाद चैत्र बदी ८) को लाहोर पहुंचकर किला सजाया था। फिर खुसरो भी पहुँचा और कहा कि एक दरवाजेके किवाड़ोंको जलाकर गढमें प्रवेश करें। गढ जीते पीछे ७ दिन तक नगर लूटनेकी आज्ञा दूगा उसके साथियोंने एक दरवाजेके किवाड जलाये परन्तु भीतरवालोंने आड़ी भीत उठाकर रास्ता रोक दिया।

घेरेके ८ दिन पीछे बादशाही लश्करको अवाई सुनी तो खुसरोने छापा मारनेके विचारसे नगरको छोड़ दिया ६।७ दिनोंमें १०।१२ हजार सवार उसके पास इकट्ठे होगये थे।

२६(१) (वैशाख बदी १३) गुरुवारको रातको खुसरोके आनेकी खबर सुनकर बादशाह मेह बरसतेमें सवार हुआ। सवेरे सुलतानपुरमें पहुंचकर दोपहर तक वहां रहे। उस समय दोनों ओरकी सेनाओंमें संग्राम मचा। मुअज्जुलमुल्क एक रकाबी बिरयानी(२) की बादशाहके वास्ते लाया था। परन्तु लडाईके समाचार सुनतेही बादशाह रुचि होने पर भी केवल एक ग्रास उसमेंसे शुकनके तौर पर खाकर सवार होगये। उसने अपना चिलता(३) बहुत मांगा पर किसीने लाकर न दिया। बरछे और तलवारके सिवा कोई हथियार भी पास न था। सवार भी ५० से अधिक चलनेके समय न

(१) मूलमें भूलसे १६ लिखी है।

(२) एक प्रकारका भोजन।

(३) भिलम कवच।

थे। क्योंकि कोई नहीं जानता था कि आज लड़ाई होगी। बादशाह ईश्वरके भरोसे उसी सामान और सेनासे चल पडे। गोविन्दवालकी पुल पर पहुंचे तबतक चार पांचसी सवार अच्छे बुरे आ मिले थे। पर पुलसे उतरतेही शमसी तोशकची फतहकी बधाई लाया और उसने खुशखबरखांकी पदवी प्राप्त की। इस पर भी मीर जमालुद्दीनहुसैनने जो खुसरोको समझानेके लिये भेजा गया था खुसरोके पास बहुतसी फौज होनेका वर्णन ऐसी धूमधामसे किया कि लोग डरने लगे। जीत होनेके समाचार लगातार चले आते थे तो भी वह सीधा सादा सैयद यही कहे जाता था कि जिस धडल्ले का लशकर मैं देख आया हू शेख फरीदको थोड़ीसी सेनासे वह क्योंकर हारा होगा ?

निदान जब खुसरोका सिंहासन उसके दो नाजिरों सहित लाया गया तो सैयद घोडेसे उतरकर बादशाहके पैरोंमें गिर पडा और कहने लगा कि भाग्य इससे बढकर नहीं होसकता !

लडाईका वृत्तान्त ।

बारहके सैयद बडे वीर थे और युद्धमें सबसे बढ चढ़कर काम करते थे। शेख फरीद बखशीने उन्हींको हिरावल बनाकर सेनाके आगे भेजा था। उनके सरदार सैयद महमूदके बेटे सैफखाने सतरह घाव खाये थे। सैयद जलाल माथे पर तीर खाकर कुछ दिन पीछे मरा था। सैयद कमालने वीर साथियों सहित बडी बहादुरी दिखाई। जब दहनी अनीके सिपाही बादशाह सलामत बादशाह सलामत कहते शत्रुओं पर दौडे तो उनके छक्के छूटगये। भागतेही बनी ४०० के लगभग मारे गये और घायल हुए खुसरोके रत्नोंका सन्दूक जिसे वह सदा अपने पास रखता था लूटमें उनके हाथ आया।

बादशाह लिखता है—कौन जानता था कि यह छोटी उमरका बालक मेरा भय और लज्जा छोड़कर ऐसा कुकर्म्म करेगा। ओछे आदमी इलाहाबादमें मुझे भी बापसे लड़नेके लिये उभारते थे।

पर यह बात कभी मुझको स्वीकार न हुई। मैं जानता था कि वह राज्य जिसका आधार पिताकी शत्रुता पर हो स्थिर न होगा। अतएव मैं उन कुबुद्धि लोगोंके कहनेसे भ्रष्ट न हुआ। अपनी समझ की प्रेरणासे पिताकी सेवामें पहुंचा जो गुरु तीर्थ और ईश्वर थे। फिर जो कुछ मुझे मिला वह उसी इच्छाका फल है।

खुसरोका पीछा।

जिस रात खुसरो भागा था बादशाहने उसी रात पञ्जाबके एक बड़े जमीन्दार राजा बासूको हुक्म दिया कि अपने देशमें जाकर उसे जहां पावे पकड़नेकी चेष्टा करे।

इनायतखां और मिरजाअली अकबरशाही बहुतसी सेनाके साथ खुसरोके पीछे भेजे गये। बादशाहने यह प्रतिज्ञा की कि जो खुसरो काबुलको जावे तो जबतक पकड़ा न जावे लौटके न आवें। यदि काबुलमें न ठहरे और बदखशांको चला जावे तो महाबतखां को काबुलमें छोड़ आवें। बादशाहको भय था कि बदखशां जाकर वह उजबकोंसे मिल जावेगा तो अपने राज्यकी बात हलकी होगी।

२८ (बैशाख बदी ३०) शनिवारको जैपालके पड़ाव पर जो लाहोरसे ७ कोस है बादशाहके तम्बू लगे। खुसरो जब चिनाव नदीके तट पर पहुचा तो पठानो और हिन्दुस्थानियोंने उसको हिन्दुस्थानकी तरफ लौटनेकी सम्मति दी और हुसैनबेग बदखशीने काबुल जाने पर पक्का किया। पीछे पठान और हिन्दुस्थानी तो उसको छोड़ गये और वह रात्रिमें सोधरे घाटसे चिनाव नदीके पार होने लगा। मगर चौधरीके जमाई केलणने खबर पाकर खेवटियोंसे कहा जहांगीर बादशाहका हुक्म नहीं है कि रातको बिना जाने पहिचाने कोई नदीसे उतर सके। यह गड़बड़ सुनकर खेवटिये तो भाग गये और इधर उधरके आदमी आधमके। हुसैन-बेगने पहिले तो रुपयेका लालच दिया फिर तीर मारना आरम्भ किया केलण भी इधरसे तीर चलाने लगा। नाव ४ कोस तक बिना खेवटियोंके चलकर रेतमें अड़ गई आगे नहीं चली। बादशाहका

हुक्म जगह जगह खुसरोके रोकने और पकड़नेका पहुंच चुका था इसलिये प्रातःकाल होतेही पश्चिमी किनारेको कासिमतगीन और खिजरखां आदिने तथा पूर्वतटको जमीन्दारोंने रोक लिया।

२९ (वैशाख सुदी १) रविवारको दिन निकलतेही लोग हाथियों और नावों पर सवार होकर नदीमें गये और खुसरोको पकड़ लाये।

३० (वैशाख सुदी २) सोमवारको बादशाहने काबुल पहुंचकर मिरजा कामरांके बागमें डेरा किया और खुसरोके पकड़े जानेके समाचार सुनकर अमीरुलउमराको उसके लानेके लिये गुजरातको भेजा।

बादशाह लिखता है—मैं बहुधा अपनीही समझ बूझसे काम करता हूं दूसरेकी सलाहसे अपनी सलाहकोही ठीक समझता हूं। पहिले तो मैं अपने सब शुभचिन्तकोंकी सलाहके विरुद्ध अपनी सलाहसे जिससे इस लोक और परलोकमें मेरी भलाई हुई, पिताकी सेवासे चला गया। फल यह हुआ कि मैं बादशाह होगया। दूसरे खुसरोका पीछा करनेमें मुहूर्त्त आदि किसी बातके वास्ते न रुका तो उसको पकड़ लिया। अजब बात यह है कि मैंने कूच करनेके पीछे हकीमअलीसे जो ज्योतिषके गणितमें निपुण है पूछा कि मेरे प्रस्थान करनेकी घड़ी कैसी थी तो उसने कहा कि इस मनोरथकी सिद्धिके लिये वही मुहूर्त्त उत्तम था जिसमें श्रीमान चल खड़े हुए। उससे उत्तम मुहूर्त्त वर्षोंमें भी नहीं निकल सकता।

दूसरा वर्ष।

सन् १०१५।

बैशाख सुदी ३ मंगलवार संवत् १६६३ से बैशाख सुदी १ शुक्रवार संवत् १६६४ तक।

खुसरोका पकडा आना।

३ मुहर्रम १०१५ (बैशाख सुदी ५) गुरुवारको चङ्गेजखांकी रीति और तोरेके अनुसार बादशाहके बाएं ओरसे खुसरोको दरबार में लाये। उसके हाथ बंधे थे पांवमें बेड़ी पड़ी थी। हुसैनबेगको उसके दाएं और अबदुलरहीमको बाएं हाथ पर खड़ा किया। खुसरो इन दोनोंके बीचमें खड़ा हुआ कांपता और रोता था। हुसैनबेग इस अभिप्रायसे कि कुछ सहारा लगे ऊल जलूल बकने लगा। बादशाहने उसका मनोरथ जानकर उसका बोलना बन्द किया। पीछे खुसरोको कारागारमें भेजकर उन दोनों दुराचारियों के लिये यह हुक्म दिया कि उनको गाय और गधेका चमडा पहिना कर गधेके ऊपर उलटा बिठावें और शहरकी आसपास फिरावें।

हुसैनबेग अन्तमें ४ पहर जीता रहकर सांस घुटजानेसे मर गया क्योंकि वह गायके चमडेमें था और यह जल्द सूखता है। अबदुर्रहीम(१) गधेके चमडेमें था जो देरसे सूखता है फिर ऊपरसे भी उसको गीला किया जाता था इसलिये वह जीता रहा।

इनाम और दण्ड।

बादशाह शुभघडी शुभमुहूर्त्त न होनेसे ८ मुहर्रम (बैशाख सुदी १०) तक शहरमें नहीं गया। शैख फरीदको मुरतिजाखांकी पदवी और बसवे भेरवा मिला जहां लडाई हुई थी। दण्ड देनेके वास्ते

---

(१) अबदुर्रहीमका नाम तुजुक जहांगीरीमें फिर भी कई जगह आया है। बादशाहने पहचानके वास्ते उसको अबदुर्रहीम गधा लिखा है।

मिरजा कामरांके बागसे शहर लाहोर तक दोनों ओर सूलियां खड़ी कीगई। जो बदमाश इस फसादमें शरीक थे उनको सूलियों पर चढाकर विचित्र विचित्र दण्ड दिये गये। जिन जमीन्दारोंने अच्छी सेवा की थी उनको चिनाब और भट नदीके बीचमें जमीनें देकर सरदारी और चौधराई बखशी गई। हुसैनबेगके साढ़े सात लाख रुपये तो मीरमुहम्मदबाकीके घरसे निकले और जो उसने अपने पास रखे थे अथवा दूसरी जगह सौंपे थे वह इसके सिवा थे। यह जब मिरजा शाहरुखके साथ बदखशांसे आया था तो केवल एक घोडा पास था और फिर बढते बढ़ते इस पदको पहुँचा। इतना धनवान होकर ऐसे ऐसे साहसके काम करने लगा।

परवेजको बुलाना।

बादशाहने लडाईके बहुत दिन तक चलने और राजधानी आगरेके सूना रहनेके विचारसे शाहजादे परवेजको लिखा था कि कुछ सरदारोंको राणाको लडाई पर छोड़कर आसिफखां सहित आगरे चले आओ। पर विजय होनेके बाद लिखा कि मेरे पास चले आओ।

बादशाह लाहोरमें।

८ बुध (वैसाख सुदी १०) को बादशाहने लाहोरमें प्रवेश किया। शुभचिन्तकोंने गुजरात दक्षिण और बंगालेमें उपद्रव होने से राजधानीको लौट चलनेकी प्राथना की। पर बादशाहके मनमें यह बात नहीं आई क्योंकि हाकिम कन्धारकी अर्जियोंसे पाया गया था कि ईरानी सीमाके सरदार कन्धार लेनेके विचारमें हैं। साथही यह समाचार लगा कि हिरात और सीसतां आदिके हाकिमोंने आकर कन्धारके किलेको तीन तरफसे घेर लिया है और शाहबेगखां स्वस्थ चित्तसे उनका सामना कर रहा है।

कन्धारकी सहायता।

बादशाहने सिन्ध और ठट्ठेके अगले अधिपति मिरजा जानीके

बेटे मिरजा गाजीको बहुतसी फौजसे कन्धारको भेजा और अट्ठावन हजार रुपये खर्चके वास्ते दिये।

गुरु अर्जुनका वध।

बादशाहने गुरु अर्जुन(१)को इस अपराधमें कि जब खुसरो लाहोरको जाता हुआ गोविन्दवालमें उतरा था तो वह खुसरोसे मिला था और केसरका तिलक उसके माथे पर लगाया था, गोविन्द वाल(२)से बुलवाकर मरवा डाला और उसके घरबार और लड़के वाले मुरतिजाखांको प्रदान कर दिये।

अर्जुन गुरुके दो चेले राजू और अम्बा दौलतखां ख्वाजासराकी सहायतामें रहते थे और खुसरोके बलवेमें लूट मार करने लगे थे। बादशाहने राजूको तो मरवा डाला और अम्बाको जो धनाढ्य था एक लाख १५ हजार रुपये लेकर छोड़ दिया। यह रुपये धर्म्म-शालाओंको बांटे गये।

परवेजका आना।

२८ (आश्विन सुदी १) गुरुवारको दो पहर तीन घड़ी दिन चढ़े शाहजादा परवेज हाजिर हुआ। बादशाहने मेहरबानीसे उसको छातीसे लगा कर माथा चूमा। बादशाही चिन्ह आफताब गीर तथा दस हजारी मनसब उसे दिया। दीवानोंको उसे जागीर देनेका हुक्म दिया। मिरजा अलीबेगको काश्मीरकी हुकूमत दी।

राणाकी अधीनता।

परवेजके बुलाये जानेसे पहले राणाने आसिफखांसे कहलाया

---

(१) अर्जुन गुरु नानक साहबके पांचवें उत्तराधिकारी थे। जब गुरु नानक सं० १५८५ में धाम प्राप्त हुए थे उनके पीछे गुरु अङ्गद जी हुए। अंगदजीकी गद्दी पर अमरदासजी बैठे। अमरदासजीके उत्तराधिकारी गुरु रामदासजी हुए। उनके पीछे गुरु अर्जुनमल हुए। इनसे अकबर बादशाह मिला था।

(२) गोविन्दवाल रावी नदी पर बसता है इसको गोंदा खत्री ने सं० १६०३ में बसाया था।

था कि मैं अपने अपराधोंसे लज्जित हूं तुम कह सुनकर ऐसा करो कि शाहजादा मेरे लड़के बाघाका आना स्वीकार कर ले। शाहजादा कहता था कि या तो राना आप आवे या करणको भेजे। परन्तु जब खुसरोके भागनेके समाचार पहुंचे तो आसिफखां आदि अमीर बाघाके आने पर राजी होगये। वह माण्डलगढ़में आकर शाहजादेसे मिला और शाहजादा राजा जगन्नाथ आदि सरदारों को वहां छोड़ आया।

सुलतान दानियालके बेटे।

मुकर्रबखां जो सुलतान दानियालके बेटोंको लानेके लिये बुरहानपुर गया था ६ महीने २२ दिन पीछे उनको लेकर आगया। ८रबीउस्सानी (सावन सुदी ११) सोमवारको बादशाहने उन्हें देखा। उन पर आशातीत कृपा की। वह सात बहन भाई थे। तीन लड़के तहमुर्स, बायशंकर और होशंग थे। चार लड़कियां थीं। तहमुर्सको तो बादशाहने अपनी सेवामें रख लिया बाकी अपनी बहनोंको सौंप दिये और कहा कि इनको अच्छी तरह सम्हाल रखना।

लंगरखाने।

बादशाहने अपने राज्यभरमें लंगरखाने खोलनेका हुक्म भेजा। कहा—प्रत्येक स्थान पर चाहे वह खालसेका हो चाहे जागीरका, वहांकी व्यवस्थाके अनुसार कंगालोंके लिये साधारण खाना पकवाया जाय जिससे मुसाफिरोंको भी लाभ हो।

राजा मानसिंह।

राजा मानसिंहके लिये बंगालमें खासा खिलअत भेजा गया।

शाहजादे खुर्रम और बेगमोंका लाहोरमें आना।

बादशाह चलते समय खुर्रमको महलों और खजानोंकी रखवाली पर आगरेमें छोड आया था। अब जो खुसरोके पकड़े जानेपर उसको बुलाया तो वह बेगमों सहित लाहोरमें पहुंचा। बादशाह

१२ शुक्र(१) को नावमें बैठकर "धर" नामक गांवकी सीमा तक अपनी मा "मरयममकानी" के स्वागतको गया। चंगेजखां, तैमूर और बाबरके नियत किये नियमोंके अनुसार अदब और आदाब बजा लाया।

रानाकी मुहिम।

१७ (भादों बदी ५) को मुअज्जुलमुल्क उस लशकरकी बखशी-गरी पर भेजा गया जो रानाके मुल्कमे नियत था।

रायसिंह और दलपतका बदल जाना।

रायसिंह और उसके बेटे दलपतका नागोर प्रान्तमें प्रतिकूल हो जानेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहने राजा जगन्नाथ और मुअज्जुल-मुल्कको हुक्म भेजा कि जल्द वहां जाकर फसाद मिटावें।

इबराहीम बाबा पठान।

शेख इबराहीम बाबा नामक एक पठान लाहौरके किसी परगने मे गुरु शिष्यका पन्थ चला रहा था। बहुतसे पठान उसके पास एकत्र होगये। बादशाहने उसकी दूकान उठा देनेके लिये हुक्म दिया कि शेख इब्राहीमको पकड़कर परवेजके हवाले किया जावे वह उसे चुनारके किलेमें कैद करे।

मनसबोंमें वृद्धि।

६ (२) जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ८) रविवारको बयालीस मनसबदारोंके मनसब बढ़े और पचीस हजार रुपयेका एक माणिक्य शाहजादे परवेजको दिया गया।

सौरपक्षका तुलादान।

८ (भादों सुदी १२) बुधवारको बादशाहका ३८वां वर्ष सौरपक्ष से लगा। राजमाताके भवनमें तोलनेके लिये तक लगाया गया। तीन पहर चार घड़ी दिन व्यतीत होने पर बादशाह तुलामें बैठा। उसके प्रत्येक पलड़ेको दीर्घावस्थावाली स्त्रियोंने थामकर आशीर्वाद दिया।

---

(१) मूलमें १२ भूलसे लिखी है।

(२) मूलमें भूलसे ७ लिखा है।

पहले सोनेमें तुला तीन मन सोना चढा। फिर ग्यारह बेर और पदार्थों में तुला। यह तुलादान एक सालमें दो बार सूर्य्य और चन्द्रके वर्षगांठके समय सोने चांदी धातु रेशम कपड़े और धानादि वस्तुओं में होता था। दोनोका धन अलग अलग खजाञ्चियोंको पुण्य करने के लिये सौंपा जाता था।

कुतुबुद्दीनखां कोका।(१)

इसी दिन धायभाई कुतुबुद्दीनखांको बादशाहने खासा खिलअत जडाऊ तलवार और खासा घोडा जडाऊ जीनका देकर बङ्गाले और विहारकी सूबेदारीपर जो पचासहजार सवारोंकी जगह थी वडीभारी सेनाके साथ भेजा। दो लाख रुपये उसको और तीन लाख रुपये उसके सहकारियोंको दिये। बादशाहको अपने इस धायभाई और इसकी माके साथ सगी मा और भाई बेटोंसे अधिक प्रेम था।

केशव मारू।

केशवदास मारूका मनसब डेढ़हजारी होगया।

नथमल मंझोलीका राजा।

मंझोलीके राजा नथमलको बादशाहने पांचहजार रुपये दिये।

मिरजा अजीज कोका।

मिरजा अजीजकोकाने बुरहानपुरके राजा अलीखांको एक पत्र भेजा था। उसमें अकबर बादशाहकी बहुतसी निन्दा लिखी थी। यह पत्र बुरहानपुरमें राजा अलीखांके माल असबाबके साथ अबुलहसनके हाथ लगा। उसने बादशाहको दिखलाया। बादशाहको पत्र पढ़कर बहुत क्रोध हुआ। बादशाह लिखता है—जो मेरे पिताने उसकी माताका दूध न पिया होता है उसको अपने हाथसे बध करता। मेरा यही निश्चय था कि उसका वैर मुझसे खुसरोकी दामादीके कारण है। पर इस पत्रसे उसकी दुष्टता और नमकहरामी मेरे बापके साथ भी सिद्ध हुई। जिन्होंने उसको और उसके घरानेको धूलसे उठाकर आकाश

(१) कोका तुर्कीमें धायभाईको कहते है।

तक पहुंचाया था। मैने उसे बुलाकर वह पत्र उसके हाथमे दिया और उच्चस्वरसे पढनेको कहा। मेरा ऐसा अनुमान था कि पत्र देतेही उसका दम बन्द होजावेगा। पर वह निर्लज्जतासे उसे इस तौर पर पढने लगा कि मानो उसका लिखा हुआ ही नहीं है। हुक्मसे पढता है। अकबरी और जहांगीरी बन्दोंमेंसे जो उस सभा मे उपस्थित थे जिस किसीने वह पत्र देखा और पढ़ा उसीने उसको धिक्कार दी। मैने पूछा कि उस दुष्टताको छोड़कर जो मुझसे तुझको है जिसके कारणोंकी कल्पना भी तूने अपनी कुटिल बुद्धिसे कर रखी है, मेरे बापसे क्या तेरा ऐसा बिगाड हुआ था जिससे उनके शत्रुओंको तुझे ऐसी बातें लिखनी पड़ी? मेरे साथ जो कुछ तूने किया मैने उसे टालकर तुझे फिर तेरे मनसब पर रहने दिया। मैं जानता था कि तुझको मुझीसे बैर है पर अब जाना कि तू अपने पालकर बडा करनेवालेका भी द्रोही है। मै तुझे उसी धर्म और कर्मको सौंपता हूं जो तेरा है और था। उसने उत्तरमें कुछ न कहा। कुछ कहता भी तो क्या कहता, -कालामुंह तो होही चुका था।"

बादशाहने यह कहकर उसकी जागीर छीन लेनेका हुक्म दिया। यह अपराध क्षमाके योग्य न होने पर भी कई कारणोंसे उसे कुछ दण्ड न दिया।

परवेजका ब्याह।

२६ जमादिउस्सानी (कार्त्तिक बदी १३) रविवारको शाहजादे परवेजका विवाह सुलतान मुरादकी बेटीसे मरयममकानी बेगमके महलमें हुआ और उत्सवकी मजलिस परवेजके स्थान पर रची गई। जो कोई गया उसे बहुत प्रकारके सत्कारोंके सिवा सिरोपाव भी मिला।

शिकार।

१० रज्जब (कार्त्तिक सुदी १३) रविवारको बादशाह शिकारके लिये किरहक और नन्दनेको जाता था। रास्ते में आगरेसे चलकर चार दिन तक राजा रामदासके बागमें डेरा किया।

परवेजका तुलादान ।

१३ रज्जब(अगहन वदी १) बुधवारको परवेजको तुला सौरपक्ष से हुई । उसको १२बार धातुओं और दूसरी वस्तुओंमें तौला गया । प्रत्येक तुला दो मन १८ सेरकी हुई ।

कंधार ।

उस सेनाके सिवा जो मिरजा गाजीके साथ गई थी बादशाहने तीन हजार सवार एक हजार बरकन्दाज और शाहबेगखां, मुहम्मद अमीन तथा बहादुरखांके साथ भेजे और दो लाख रुपये खर्च के लिये दिये ।

हजूरी बखशी ।

बादशाहने अबदुर्रज्जाक मास्मूरीको जो रानाके सूबेसे बुलाया गया था हजूरी बखशी बनाकर हुक्म दिया कि अबुलहसनसे मिल कर काम करे । यह अकबर बादशाहका बांधा हुआ प्रबंध था कि बड़े बड़े कामोंमें दो योग्य आदमी शामिल कर दिये जाते थे। वह लोग अविश्वासके विचारसे नहीं शामिल किये जाते थे वरञ्च इस लिये कि यदि कुछ हरज मरज हो तो सहायता करें ।

रामचन्द्र बुन्देला ।

बादशाहको सुनाया गया कि अबदुल्लहखांने दसहरेके दिन अपनी जागीर कालपीसे बुन्देलोंके देशमें धावा मारा । नन्दकुमारके बेटे रामचन्द्रको जो बहुत समयसे उधरके जङ्गलोंमें लूट खसोट कर रहा था पकड़ कर कालपीमें लेआया । बादशाहने इसके उपहारमें उसको झंडा, तीन हजारी जात और दो हजार सवारका मनसब दिया ।

राजा संग्राम ।

सूबे बिहारकी अर्जियोंसे विदित हुआ कि जहांगीर कुलीखांने संग्रामके साथ जो सूबेबिहारके बड़े जमींदारोंमें ३।४ हजार सवार और बहुतसे पैदलोंका स्वामी था एक विषम मैदानमें उसकी दुष्टता और शत्रुताके कारण युद्ध किया । संग्राम गोलीसे मारा गया ।

उसके आदमी जो मारे जानेसे बचे, भाग गये। बादशाहने इस कामके इनाममें उसका मनसब बढ़ाकर साढ़े चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका कर दिया।

शिकारकी गिनती।

बादशाहने ३ महीने ६ दिन तक शिकार खेला। ५८१ पशु बंदूकों, चीतों, जाल और हाकेसे शिकार हुए। उनमेंसे १५८बादशाहकी बंदूकसे मारे गये। दो बार हाका हुआ। एक बार तो करक्राकमें जहां बेगमें भी थीं १५५ पशु वध हुए। दूसरी बार नन्दनेमें १११। सबका व्योरा यह है—पहाड़ी मेंढ़े १८०, गोरखर नीलगाय ९, पहाड़ी बकरे २९, हरिन आदि ३४८। जोड़ ५६६। कमी रही जोडमें १५।

बादशाहने कई बडे भारी पशुओंका तोल भी लिखा है। जैसे एक पहाडी बकरा २ मन २४ सेर था। एक मेंढ़ा २ मन ३ सेर और एक गोरखर ९ मन १६ सेर निकला।

बादशाह लाहोरमें।

बादशाह शिकारसे लौटकर १६ शव्वाल (फागुन बदी २) बुधवारको लाहोरमें आया।

दलपत रायसिंहका बेटा।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको खबर पहुंची कि सादिकखांका बेटा जाहिदखां, शेख अबुलफजलका बेटा अबदुर्रहमान और मोअज्जुलमुल्क वगैरह मनसबदार दलपतका नागोरके परगनेमें होना सुनकर उसके ऊपर गये। वह भी भागनेका अवसर न पाकर लड़नेको खड़ा हुआ और थोड़ीसी लडाईमें अपने बहुतसे मनुष्योंको कटाकर माल असबाब सहित भाग निकला।

धायका मरना।

जीकाद (फागुन व चैत) में कुतुबुद्दीनकी मा जिसने बादशाह को दूध पिलाया था मर गई। बादशाह उसकी लाशका पाया अपने कन्धे पर रखकर कुछ दूर तक गया शोकके मारे कई दिन

तक खाना नहीं खाया न कपडे बदले क्योंकि उसकी गोदमें पला था और उसका मोह सगी मासे अधिक समझता था।

दूसरा नौरोज।

२२ जीकाद (चैत बदी ८) बुधवारको साढ़े तीन घडी दिन चढे सूर्य्य अपने राजभवन मेषमें आया। बादशाह राजरीतिके अनुसार दौलतखानेको सजाकर सोनेके सिंहासन पर बैठा, अमीरों और मुसाहिबोंको बहुतसा दान दिया।

कन्धार और ईरानका दूत।

मिरजा गाजी सेना सहित १२ शव्वाल (फागुन सुदी १३) को कन्धारमें पहुंचा। कजलबाश हिलमन्द नदीके तटको जो ५०।६० कोस पर है चला गया। इन लोगोंने अकबर बादशाहका मरना सुनकर फरह और हिरातके हाकिमों और सेवस्तानके मलिकोंके कहनेसे शाहअब्बासके बिना हुक्महो इतना साहस किया था। परन्तु जब यह वृत्तान्त शाहको विदित हुआ तो उसने पुरानी प्रीतिकी प्रेरणासे हुसेनबेगको उन लोगोंके रोकनेके लिये भेजा। वह रास्तेमें उनको मिला और तिरस्कार करके चमा मांगनेके लिए लाहोरमें आया।

शाह बेग जैसा कि हुक्म था कन्धार सरदारखांको सौंपकर दरगाहमें आगया।

रामचन्द्र बुन्देला।

२७ (जीकाद चैत बदी १४) अबदुल्लहखां रामचन्द्र बुन्देलेको लेकर आया। बादशाहने उसके पांवसे बेडी काटकर खिलअत पहनाया और राजा बासूको सौंपकर आज्ञा दी कि जमानत लेकर उसको उसके भाई बन्धुओं सहित जो उसके साथ पकड़े आये हैं छोड दे। उसे इतनी कृपाकी आशा न थी।

खुर्रमको मनसब।

२ जिलहज्ज (चैत सुदी४ सं० १६६४) को बादशाहने खुर्रमको तूमान तोग झण्डा और नक्कारा देकर आठ हजारी जात और पांच

हजार सवारोंके मनसब पर नियत किया और जागीर देनेकी भी आज्ञा दी।

पीरखां लोदीको सलावतखां और पुत्रकी पदवी।

बादशाहने दौलतखां लोदीके बेटे पीरखांको जो सुलतान दानियालके बेटोंके साथ आया था नक्कारा निशान सलावतखां उपनाम और ३ हजारी जात व डेढ़ हजार सवारोंका मनसब प्रदान किया और इसके सिवा पुत्रकी पदवी भी दी।

इसके दादा उमरखांके चचा बड़े दौलतखांने सुलतान सिकन्दर लोदीके बेटे इब्राहीम लोदीसे नाराज होकर अपने बेटे दिलावरखांको काबुलमें बाबर बादशाहके पास भेजा था। उसकी सलाह और सहायतासे पञ्जाब जीतकर वहांकी हाकिमी दौलतखांकेही पास रहने दी। दौलतखां बूढ़ा आदमी था इस लिये बाबर बादशाह उसको बाप कहता था।

दूसरी बार जब फिर काबुलसे आया तो दौलतखां उसी अवसर पर मर गया। बादशाहने दिलावरखांको खानखानांकी पदवी दी। वह सुलतान इब्राहीमकी लड़ाईमें बाबर बादशाहके साथ रहा था और हुमायूं बादशाहकी सेवामें बंगालेकी लड़ाइयोंमें भी गया था। मुंगेरकी लड़ाईमें पकड़ा गया। शेरखांने उससे अपनी नौकरी कर लेनेको बहुत कहा। परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया और कहा कि तेरे बाप सदा मेरे बड़ोंकी नौकरी करते थे फिर मैं कैसे तेरा नौकर रह सकता हूं। इस पर शेरखांने रोष करके उसे दीवारमें चुनवा दिया।

सलावतखांका दादा उमरखां जो दिलावरखांका चचेरा भाई था सलेमखांके राज्यमें बहुत बढ़ा। पर सलीमखांके पीछे जो उसके बेटे फीरोजको मुहम्मदखांने मार डाला इससे उमरखां शङ्कित होकर अपने भाइयों सहित गुजरातमें चला गया और वहीं मरा। उसका बेटा दौलतखां मिरजा अबदुर्रहीम खानखानांकी सेवामें रहा। खानखानां उसको सगे भाईके समान मानता था। उसने

बहुधा लडाइयोंमें इसी दौलतखांकी सहायतासे फतह पाई थी। जब अकबर बादशाहने खानदेश और आसेरगढ विजय करके सुलतान दानियालको दिया तो दानियालने दौलतखांको खानखानासे अलग करके अपनी सरकारका काम सौंपा। वह वहीं मरा। उसके दो बेटे मुहम्मदखां और पीरखां थे। मुहम्मदखां बापके पीछे तुरन्त ही मर गया और पीरखांको बादशाहने बुलाकर यह मान सन्मान दिया। उसकी खातिर यहांतक मंजूर थी कि बड़े बड़े अपराध जो किसीकी प्रार्थनासे भी माफ न किये जाते थे उसके कहनेसे क्षमा होजाते थे।(१)

बादशाह काबुलमें।

बादशाहका विचार अपने बाप दादाके देश तूरान जीतनेका था और चाहता था कि हिन्दुस्तानको निर्विघ्न करके सुसज्जित सेना जङ्गी हाथियों और पूरे कोष सहित उधर जाय। इसीलिये परवेज को राणाके ऊपर भेजा था और आप दक्षिण जानेके उद्योगमें था कि खुसरो प्रतिकूल होगया। न राणाकी लडाई फतह हुई न दक्षिणको जाना हुआ। खुसरोके पीछे लाहौर आना पडा उसके पकडे जाने और कजलबाशोंके कन्धार छोड़ देनेसे छुटकारा हुआ तो अपने पुराने स्थान काबुलके देखनेकी रुचि हुई। तब ७ जिल-हज (चैत्र सुदी ८) को लाहौरसे कूच करके दिलामेजबागमें जो रावी नदीके उस पार था डेरा किया और वहीं १८ फरवरदीन रविवार (चैत सुदी ११) को मेख(२) संक्रान्तिका उत्सव करके कई आदमियोंके मनसब बढ़ाये और ईरानके दूत हुसनबेगको दस ह-जार रुपये दिये।

---

(१) इसी पीरखांको फिर फरजन्द खानजहांकी भी पदवी मिल गई थी। इसका वृत्तान्त आगे बहुत जगह आवेगा इस लिये यह सविस्तर वर्णन उसके घरानेका किया गया है। यह शाहजहां बादशाहसे बागी होकर जुझारसिंह बुन्देलेके हाथसे मारा गया।

(२) चंडू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत सुदी १० को लिखी है।

हरनकी कबर पर लेख।

बादशाहने शनिवारको उस बागसे रवाना होकर गांव हरहर-पुरमें और मंगलको जहांगीरपुरमें डेरा किया। बादशाहके शिकार खेलनेके जो स्थान थे उनमेंसे एक यह गांव भी था। इसकी सीमा में बादशाहके एक प्यारे हरन हंसराज नामककी समाधि पर स्मारकस्तम्भ बनाया गया था जिस पर यह लिखा था—"इस सुरम्य वनमें एक हरन नूरुद्दीन जहांगीर बादशाहके जालमें फंसा और एक महीनेमें पशुपन छोडकर सब खासेके हरनोंका सरदार हुआ।" बादशाहने उस हरनके सद्गुणोंसे जो पाले हुए हरनों से लडने और जङ्गली हरनोंके शिकार करनेमें अद्वितीय था यह हुक्म दिया कि कोई इस जंगलके हरनोंको वध न करे और उनके मांसको हिन्दू मुसलमान गाय और सूअरके समान अपवित्र समझें। उसकी कबरके पत्थरको हरनके आकारमें बनादें। सिकन्दर मुईनको जो उस परगनेका जागीरदार था जहांगीरपुरमें किला बनानेका हुक्म दिया।

गुजरात।

१४ गुरुवार (चैत्र सुदी १५) को बादशाह जण्डालेमें(१) में और १६ शनिवारको हाफिजाबादमें ठहरा। वहांके करोरी मीर कमा-लुद्दीनने वहां एक मकान बनाया था उसीमें निवास किया। वहां से दो कूचमें चिनाव नदी पर पहुंचे। वहां जो पुल बांधा गया था २१ गुरुवारको उसके ऊपरसे पार होकर बादशाह गुजरातमें पहुंच गया।

गुजरात नामकी उत्पत्ति।

अकबर बादशाहने गूजर जाति पर एक किला चिनावके तट पर बनाया और गूजरोंको जो इस प्रान्तमें चोरी धाडा किया

---

(१) जण्डयाला।

करते थे उसमें बसाया। इसीसे उसका नाम गुजरात रखकर अलग परगना बना दिया।

गुजरातसे कूच।

शुक्रवारको गुजरातसे कूच होकर ५ कोस पर खवासपुरेमें जो शेरखांके गुलाम खवासखांका बसाया हुआ था मुकाम हुआ। वहां से दो कूचोंमें भटके तट पर पड़ाव हुआ। रातको मेंह वायुके प्रकोप और ओले गिरनेसे पुल टूट गया। बादशाहको बेगमों सहित नावमें बैठकर उस नदीसे पार होना पडा। फिरसे पुल बांधनेका हुक्म हुआ। एक सप्ताहमें जब पुल बंध गया तो सारी सेना कुशलपूर्वक पार होगई।

भट नदीका निकास।

भट नदी कश्मीरमें नरनाग नामक एक झरनेसे निकली है। नरनाग कश्मीरी बोलीमें सांपको कहते हैं कभी वहां सांप होंगे।

बादशाह लिखता है—"मैंने पिताके समयमें दो बार इस झरने को देखा है। कश्मीरसे यह २० कोसके लगभग है। वहां एक अठपहलू चबूतरा २० गज लम्बा और उतनाही चौड़ा बना है। उसके आसपास पत्थरकी कोठरियां और कई गुफाएं तपस्या करने वालोंके योग्य बनी हैं। इस झरनेका पानी ऐसा साफ है कि जो खसखसका एक दाना भी डालें तो तलीमें पहुंचने तक दिखाई देता रहे। इसमें मछलियां बहुत हैं। मैंने सुना था कि इस की थाह नहीं है इस लिये एक पत्थरसे रस्सी बंधवाकर उसमें डल-वाई और फिर नपवाई तो मालूम हुआ कि आदमीके कदके ड्योढ़े से ज्यादा गहरा नहीं है।

"मैंने सिंहासनारूढ़ होनेके पीछे इसके चौतरफ बगीचे पक्के घाट और महल बहुत उत्तम बनवा दिये थे जिनके समान पृथिवीमें फिरनेवाले लोग कहीं कम बताते हैं। यह पानी गांव यमपुरमें पहुंचकर जो शहरसे दो कोस है ज्यादा होजाता है। तमाम काश्मीरकी केसर इसी गांवमें होती है। मालूम नहीं कि दुनिया

मे कहीं इतनी केसर और होती है कि नहीं। हर साल पांचसौ मन केसर हासिलमें आती है। मैं केसर फूलनेके दिनोंमे पिताके साथ यहां आया हूं। संसारके सारे फूल कोंपल और पत्ते निकलनेके पीछे खिलते हैं और केसरकी सूखी जमीनसे पहले ४ उंगल लम्बी कोंपल निकलती है फिर सौसनी रंगके फूल निकलते है। उनमें चार पंखडियां और चार तंतु नारंगी रंगके कुसुम जैसे एक उंगल लम्बे होते हैं यही केसर है। कहीं एक कोस और कहीं आध कोसमें केसरकी क्यारियां होती हैं। दूरसे बहुत भली लगती है। फूल चुनते समय उसकी तीव्र सुगन्धसे पासवालोंके सिरमें दर्द होने लगा। मैं नशेमें था और प्याले पीरहा था तो भी मेरे सिरमें दर्द होगया। तब मैने पशुप्रकृति फूल चुननेवाले काश्मीरियोंसे पूछा कि तुम्हारा क्या हाल है? जाना गया कि उमर भर में कभी उनका सिर नहीं दुखा।"

"इस झरनेका पानी जिसको काश्मीरमें भट कहते हैं दायें बायेंके नालोंके आ मिलनेसे दरिया होजाता है। यह शहरके बीचोंबीच होकर निकलता है। इसकी चौडाई बहुधा एक तुर्कके टप्पेसे अधिक न होगी। इस पानीको मैला और बेमजा होनेसे कोई नहीं पीता है। काश्मीरके सब लोग डल नामके तालावका पानी पीते है जो शहरके पास है। भटका पानी इस तालावमें हो कर बारामूला, पगली और दन्तोरके रास्तेसे पञ्जाबमें जाता है। काश्मीरमें नदी नाले और झरने बहुत है मगर अच्छा पानी लार के दरेका है जो एक गांव काश्मीरके अच्छे स्थानोंमेंसे भटके तट पर है। वहां एक सौके लगभग चिनारके हरे भरे वृक्ष आपसमें मिले खड़े हैं। उनकी छाया इस सारी भूमिको घेरे हुए है जो दूबसे ऐसी हरी होरही है कि उस पर बिछौना बिछाना निर्दयता और फूहड़पन है।"

यह गांव सुलतान जैनुलआबिदीनका बसाया हुआ है जिसने ५२ वर्ष काश्मीरका राज्य स्वतन्त्रतासे किया था। उसको बड़ा

बादशाह कहते थे। उसकी बहुतसी करामातें कही जाती हैं काश्मीरमें उसकी बहुतसी इमारतें और निशानियां हैं जिनमेंसे एक जैनलङ्का तीन कोससे ज्यादा लम्बे और चौडे उलर नाम सरोवरमें बनी है। उसने इसके तय्यार करनेमें बहुत परिश्रम किया था। इस सरोवरका सोता गहरा दरियामें है। पहली बार तो बहुत पत्थर नावोंमें भर भर कर इस जगह पर डाले गये थे जब कुछ मतलब न निकला तो कई हजार नावें पत्थरों सहित डबोई गईं तब कहीं एक टीला १०० गज चौडा और इतनाही लम्बा पानीके ऊपर निकाला जिसे ऊंचा करके चबूतरा बांधा। उस पर एक तरफको उसने एक भवन ईश्वराराधनके लिये बनाया था। वहां वह नावमें बैठकर आता और भजन करता। कहते हैं कि उसने कई चिल्ले इस जगहमें रहकर खेंचे थे। उसके कपूत पुत्रोंमें से एक कुपात्र उसे सेवाभवनमें अकेला देखकर मारने गया। परन्तु ज्योंही उसपर नजर पडी डरकर निकल आया। कुछ देर पीछे सुलतान बाहर आया और उसी बेटेको लेकर नावमें बैठा। रास्तेमें कहा कि मैं माला भूल आया हूं तू दूसरी नावमें बैठकर जा और लेआ। लडका जब वहां गया और बापको बैठा पाया तो लज्जित होकर उसके पांओंमें गिर पडा और माफी मांगने लगा। इस प्रकार उस की और भी बहुतसी बातें लोग वर्णन करते हैं और कहते हैं कि उसने परकाय प्रवेशविद्यामें भी खूब अभ्यास किया था। निदान जब बेटोंको राज्यप्राप्त करनेमें आतुर देखा तो उनसे कहा—मुझे राज छोडना क्या प्राण त्याग करना भी सहज है लेकिन मेरे पीछे तुमसे कुछ नहीं होसकेगा। राज्य तुम्हारे पास नहीं रहेगा और तुम थोडे ही समयमें अपनी करनीका फल पाओगे यह कहकर खाना पीना छोड दिया। ४० दिन तक सोया भी नहीं। सन्तों और तपस्वियोंके साथ भगवत भजन करता रहा। चालीसवें दिन परमगतिको प्राप्त हुआ। फिर उसके तीनों बेटे आदमखां हाजीखां और बहरामखां आपसमें लडे और तीनोंही नष्ट होगये।

कश्मीरका राज वहींके साधारण सिपाहियोंमेंसे चक जातिके लोगोंके हाथ लगा।"

"जैनुलआबदीनने उलर तालावमें जो चबूतरा बनाया था उसके तीन कोनो पर वहांके तीन हाकिमोंने मकान बनाये है। मगर उनमेंसे एकभी मजबूतीमें जैनुलआबिदीनकी इमारतको नहीं पहुंचता।"

"कश्मीरकी बहार और खिजां (पतझड़) देखने योग्य है। मैंने खिजांकी ऋतु देखी है जैसी सुनी थी उससे अच्छी पाई। बहार अबतक नहीं देखी है आशा है कि वह भी देखी जावेगी।"

तीसरा वर्ष।

सन् १०१६।

बैशाख सुदी २ संवत् १६६४ से बैशाख सुदी २ संवत् १६६५ तक।

१ मुहर्रम १०१५ (बैशाख सुदी २) शनिवार(१)को बादशाह भट नदीके तटसे कूच करके तीसरे दिन रुहतासके किलेमें पहुंचा। यह किला शेरखांने उस प्रान्तके दंगई गक्खडोंके दबानेके लिये बनाया था। वह तो अधूराही छोड मरा था उसके बेटे सलेमखांने उसे पूरा किया। जो लागत आई वह हरेक पोल पर पत्थरोंमें खुदी हुई है। उससे ज्ञात होता है कि ४० लाख २५ हजार रुपये इसमे लगे थे।

४ मुहर्रम (बैशाख सुदी ५) मंगलको सवा चार कोस चलकर पोलेमें और वहांसे भकरामें पडाव हुआ। गक्खडोंकी बोलीमें पोला टीलेको और भकरा जङ्गलको कहते हैं। पोलेसे भकरा तक सारे रस्तेमें नदी आई जिसके किनारों पर बहुतसे फूल कनेरके फूले हुए थे। बादशाहने अपने साथके सवारों और पैदलोंको हुक्म दिया कि सब लोग इन फूलोंके गुच्छे सिर पर टांक लें जिसके सिर पर फूल न हो उसकी पगडी उतार दें। बादशाह लिखता है— "अजब बाग लग गया था।"

६ मुहर्रम (बैशाख सुदी ७) गुरुवारको शहर(२) में होकर सिहामें डेरा लगा। इस रस्तेमें पलाश बहुत फूले हुए थे। बादशाह उसके चमकीले रंग, बादलोंकी छाया और मेंहकी फुहारोंसे प्रसन्न मन होकर मदिरा का सेवन करने लगा। उसके आनन्दमें बड़ी मौजसे रस्ता कटा।

---

(१) मूलमें चन्द्रवार गलत लिखा है।

(२) शहरका नाम नहीं लिखा है।

इस स्थानको हथिया भी कहते हैं क्योंकि हाथी नाम एक गक्खड़ का बसाया हुआ है और देशका नाम मारकल्लासे हथिया तक पूर्हहार है। इधर काव्वे बहुत कम होते हैं। रुहतासमे हथिया तक "भोकयाल" लोग रहते हैं जो गक्खड़ोंके भाई बन्द हैं।

७ मुहर्रम (वैशाख सुदी ८) शुक्रवारको सवा चार कोस चलकर पक्केमें डेरा लगा। यहां एक सराय पक्की ईंटोंकी बनी हुई थी इसलिये पक्का नाम हुआ। इस रस्तेमें धूल बहुत उडती थी गाडियां बडी कठिनतासे मंजिल पर पहुंचीं।

८ मुहर्रम (वैशाख सुदी ९) शनिवारको साढ़े चार कोस चल कर कोरमें मुकाम हुआ। इधर वृक्ष बहुत कम थे। कोर गक्खड़ों की बोलीमें दरेको कहते है।

९ (वैशाख सुदी १०) रविवारको रावलपिण्डीमें मंजिल थी। यह गांव रावल नामक एक हिन्दूने बसाया था पिण्डी गांवको कहते हैं। इसके पास घाटीमें पानी बहता था और एक झालरेमें इकट्ठा होता था। बादशाहने उस जगह कुछ देर ठहर कर गक्खड़ों से पूछा कि यह पानी कितना गहरा है? उन्होंने कहा कि इसमें एक मगर रहता है जो कोई जानवर या आदमी पानीमें जाता है वह घायल होकर निकलता है। बादशाहने पहिले एक बकरी डलवाई वह सारे तालाबमें तैरकर आगई। फिर एक फर्राशको हुक्म दिया, वह भी उसी तरह तैरकर साफ निकल आया। गक्खड़ों की बात सही न निकली।

१० (वैशाख सुदी ११) चन्द्रवारको गांव खरबूजेमें मुकाम हुआ यहां गक्खड़ोंने पिछले समयमें एक बुर्ज बनाया था और मुसाफिरों से कर लिया करते थे। उस बुर्जका आकार खरबूजेकासा था इसलिये यह नाम प्रसिद्ध होगया।

११ मंगल (वैशाख सुदी १२) को बादशाह कालापानीमें उतरे यहां एक घाटी मारकल्ला नाम है। कल्ला काफिलेको कहते हैं इस घाटीमें काफिले मारे जाते थे इस कारण ऐसा नाम हुआ।

इस जगह गक्खड़ोंकी देशकी सीमा समाप्त होती है। बादशाह गक्खडो के वास्ते लिखते हैं कि अजब पशुप्रकृतिके लोग हैं आपसमें लडते झगडते रहते हैं। मैंने बहुत चाहा कि इनके झगड़े निबड जावें परन्तु कुछ सफलता न हुई।

१२ मुहर्रम (वैशाख सुदी १३) बुधवारको बाबा हसन अब्दाल में पड़ाव पड़ा। यहांसे एक कोस पूर्वको एक नाला है जिसका पानी बहुत वेगसे गिरता है। बादशाह लिखता है—"काबुलके तमाम रस्तेमें इसके समान और कोई नाला नहीं है कशमीरके रस्तेमें जरूर ऐसे तीन नाले हैं।

एक झरनेके बीचमें जहांसे इस नालेका पानी आता है राजा मानसिंहने कुछ मकान बनाये थे। यहां आध आध गज और पाव पाव गजकी लम्बी मछलियां बहुत थीं इसलिये बादशाह तीन दिन तक इस सुरम्य स्थानमें रहा। शराब पी और मछलियां पकडी। वह लिखता है—"मैंने सफरादामको जिसे हिन्दीमें भंवरजाल कहते हैं अबतक अपने हाथसे पानीमें नहीं डाला था क्योंकि उसका डालना सहज नहीं है पर यहां अपने हाथसे डालकर दस बार मछलियां पकड़ीं और नाकमें मोती डालकर छोडदीं।"

"हसनबाबाका समाचार वहांके इतिहास जाननेवाले और रहने वाले कुछ नहीं बता सके यहां जो प्रसिद्ध जगह है वह एक नाला है जो पहाड़मेंसे निकलता है बड़ा साफ सुथरा है। मानो अमीर खुसरोने उसीके वास्ते कहा है "इतना साफ है कि उसके नीचेकी रेतके कण अन्धा भी अंधेरी रातमें गिन सकता है।"

अकबर बादशाहके वजीर ख्वाजा शमसुद्दीन खाफीने यहां चबूतरा, कुण्ड और अपनी कबरके वास्ते एक गुंबद बनाया था। कुण्डमें पानी इकट्ठा होकर बागों और खेतोंमें जाता था। पर मरनेके पीछे यह गुंबद ख्वाजाके कुछ काम न आया। हकीम अबुलफतह गीलानी और हकीम हमाम दोनों भाई जो अकबर

बादशाहके सभासद थे मरनेके पीछे उसी बादशाहकी आज्ञासे यहां गाडे गये।

१५ (जेठ बदी १) को अमरोहोमें मुकाम हुआ। अजब हरा भरा स्थान था। यहां ७।८ सहस्र घर "खर" और दिलाजाक जातिके रहते थे और भांति भांतिका अनाचार और लूट मार करते थे इसलिये बादशाहने वह प्रांत और अटककी सरकार जैनखां कोका के बेटे जफरखांको सौंपकर हुक्म दिया कि हमारे लौटने तक तमाम दिलाजाकोंको यहांसे उठाकर लाहोरकी तरफ चलता करें और खरोंके मुखियोंको पकडकर कैद रखें।

१७ (जेठ बदी ३) सोमवारको कूच हुआ। बादशाह एक मंजिल बीचमें रहकर नीलाबके किनारे किले अटकमें पहुंचा। यह सुदृढ दुर्ग अकबर बादशाहका बनाया हुआ है। अटक पर १८ नावोंका पुल बांधा गया था परन्तु काबुलमें इतने लशकरकी समाई न देख कर बादशाहने बखशियोंको हुक्म दिया कि पास रहनेवालोंके सिवा और किसीको अटकसे न उतरने दें लशकर अटकके किलेमें रहे।

१९ (जेठ बदी ५) बुधवारको बादशाह शाहजादों और निज सेवकों सहित जाले पर सवार होकर नीलाबसे उतरा और कामा नदीके किनारे ठहरा। उसका पानी जलालाबादके आगे बहता है।

जाला एक प्रकारकी नाव है। जो घास और बांसोंसे बनाई जाती है और उसके नीचे मशकें हवासे भरकर बांध दीजाती हैं उस तरफ उसको शाल कहते थे। जिन नदियोंकी तहमें पत्थर रहते है उनमें वह बडी काम आती थी।

अबदुलरज्जाक मामूरी और अहदियोंके बखशी बिहारीदासको हुक्म हुआ कि जिन लोगोंको जफरखांके साथ जानेको कहा गया है वह तय्यार करके भेजे जावें।

बादशाह फिर एक मजिल बीचमें देकर बाड़ेमें पहुंचा, सरायमें ठहरा। यहां कामा नदीके उस पार जैनखां कोकाने जब वह यूसूफ-जई पठानोंको दण्ड देनेके वास्ते इधर आया था पचास हजार रुपये

लगाकर एक किला बनाया था। उसका नाम नया शहर रखा था हुमायूं और अकबर बादशाह यहां भेड़ियोंका शिकार खेला करते थे।

२५ (जेठ बदी १२) मंगलवार(१) को दौलताबादको सरायमें डेरे हुए। यहां परशावर (पिशौर) का जागीरदार अहमदबेग यूसुफ-जई और गोरियाखेलके मलिकों (चौधरियों)को लेकर आया। उससे इस जिलेका बन्दोबस्त बादशाहकी मरजीके मुवाफिक नहीं हुआ था इसलिये बादशाहने उसका काम छीनकर शेरखां अफगानको दिया।

२६ (जेठ बदी १३) बुधवारको परशावरके पास सरदारखांके बागमें डेरे हुए। यहां इस प्रान्तके जोगियोंका प्रसिद्ध तीर्थ गोरख खड़ी था बादशाह इस विचारसे कि कोई जोगी मिले तो उसके सतसङ्गसे लाभ उठावे वहां गया परन्तु कोई न मिला।

२७ (जेठ बदी १४) गुरुवारको जमरोदमें और शुक्रको खैबर-घाटेके पार अलीमसजिदमें और शनिको मारपेच घाटोसे उतरकर गरीबखानेमें बादशाहके मुकाम हुए। यहां जलालाबादका जागी-रदार कासमतगीन जर्दालू लाया। बादशाह लिखता है– कशमीर के जर्दालूसे अच्छे नहीं थे।" काबुलसे "केलास" भी आये जिनका नाम अकबर बादशाहने शाहआलू रख दिया था। क्योंकि केलास नाम छिपकलीका था।

२ सफर (जेठ सुदी ४) मंगलवारको पसावलके मैदानमें नदीके तट पर डेरे हुए। नदीसे उधर एक पहाड़ था जिसको हरयाली और वृक्ष नहीं होनेसे "कोहेबेदौलत" कहते थे बादशाह लिखता है कि मैंने अपने बापसे सुना है कि ऐसे पहाड़ोंमे सोनेकी खाने होती हैं।

आसिफखांका वजीर होना।

३ सफर (जेठ सुदी ५) बुधवारको बादशाहने अमीरुलउमराकी बीमारी बढ़ जानेसे जिसे जिले लाहोरमें छोड़ आया था आसिफखां

---

(१) मूलमें भूलसे गुरुवार लिखा है।

को भारी सिरोपाव और जडाऊ दवात कलम देकर वजीरका काम सौंपा। २८ वर्ष पहले अकबर बादशाहने भी इसको इसी स्थान पर मीरबख्शीका पद प्रदान किया था। इसने चालीस हजार रुपयेका एक माणिक्य वजीर होनेका सलाम करते समय बादशाह को भेंट किया। ख्वाजा अबुलहसन बख्शी भी उसके शामिल रखा गया।

नदीमें एक सफेद पत्थर पडा था बादशाहने उसका हाथी बनवाकर अपना नाम उसकी छाती पर खुदवा दिया।(१)

विक्रमाजीतके बेटे कल्याणको दण्ड।

इसी दिन राजा विक्रमाजीतका बेटा कल्याण गुजरातसे आया उस पर कई दोष लगाये गये थे जिनमेंसे एक यह भी था कि एक मुसलमानी कसबनको घरमें डालकर भेद छुपानेके लिये उसके मा बापको मारा और अपने घरमें गाड दिया। बादशाहने निर्णय करके उसकी जीभ कटवा डाली और उमरकैद करके हुक्म दिया कि कुत्ते पालनेवालों और हलालखोरोंके साथ खाना खाता रहे।

बुधको सुरखाबमें और वहांसे चलकर जगदलगमें डेरे हुए। यहां बलूतकी लकडी बहुत थी और रस्तेमे पत्थर भी बहुत आये।

१२ (जेठ सुदी १३) शुक्रवारको आबतारीकमें १४ को यूरत बादशाहमें १५ रविवारको छोटी काबुलमें मुकाम हुआ। यहां शाहआलू गुलबहार नामक स्थानसे बहुत बढिया आये थे बादशाह ने १०० के लगभग खाये और कुछ अनोखे फूल भी देखे जो अबतक देखनेमें नहीं आये थे। "मीरमूशा" नामक एक जानवर भी भेटमें आया जिसकी आकृति गिलहरीकीसी थी। वह जिस घरमें रहता था चूहे वहां नहीं आते थे रंग काला और सफेद था। नेवले से बडा था सूरत बिल्लीकीसी थी। बादशाहने चित्रकारोंसे उसका

---

(१) ऐसाही एक बडा हाथी अजमेरमें भी जहांगीर बादशाहका मदार दरवाजेके बाहर एक मन्दिरमें है जिसको हाथी भाटा कहते हैं।

चिन खिंचआया। अहमदबेगखां दो हजार-बरकन्दाजोंसे बंगशके पठानोंको दण्ड देनेके लिये नियत हुआ। अबदुर्रज्जाक मामूरीको जो अटकमें था हुक्म लिखा गया कि दो लाख रुपये राजा विक्रमाजीतके बेटे सोहनदासके साथ खर्चके लिये भेजदे।

शेख अबुलफजलके बेटे शेख अबदुर्रहमानको दो हजारी जात, डेढ़ हजार सवारका मनसब और अफजलखांका खिताब दिया गया।

बाग शहरआरा।

१३ (आषाढ़ बदी ५) गुरुवारको बादशाह पुलेमस्तांसे बाग शहर आरा तक दोनोंतरफ रुपये अठन्नियां चवन्नियां लुटाता गया। बागकी शोभा देखकर शराब पीने लगा। बीचमें चारगज चौडी एक नदी बहती थी। बादशाहने मौजमें अपने मित्रों और समान वय वालोंसे उसके फलांगनेको कहा। फलांगनेमें कई एक नदी में गिर पडे। बादशाह फलांग गया तो भी उसको यह लिखना पडा कि जिस फुरतीसे ३० वर्षको अवस्थामें अपने बापके सामने कूदा था अब ४० वर्षकी अवस्थामें नहीं कूद सकता हूं।

फिर पैदल सात बागोंमें फिरा जो काबुलमें मुख्य थे। पके हुए शाह आलू वृक्षोंमें ऐसे भले लगते थे कि मानो लाल और माणिक्य लटक रहे हैं।”

इन सातों बागोंमेंसे शहरआरा बाग तो बाबर बादशाहकी चची और मिरजा अबूसईदकी बेटी शहर बानू बेगमका था। और एक बाग अकबर बादशाहकी बडी मा बिग्गा बेगमका और एक बादशाहकी सगी मा मरयममकानीका बनाया हुआ था। पर शहरआरा बाग काबुलके सब बागोंमें श्रेष्ठ था। उसमें पीछेसे भी सुधार होता रहता था। बादशाह लिखता है—उसकी सरसाई यहां तक है कि जूता पहने उसके आंगनमें पांव रखना शुद्ध प्रकृति और सुसभ्य बुद्धिसे दूर है।

बादशाहने उसके पास धरती मोल लेकर और उसमें पानी

निकालकर एक नया बाग लगानेका हुक्म दिया जिसका जहांआरा नाम रखा।

बादशाह विशेषकर शहरआरा बागमें कभी सखाओं और कभी बेगमोंके साथ रहा करता था। रातोंको काबुलके मौलवियों और विद्यार्थियोंसे कहता था कि बगरा(१) पकानेकी सभा सजाकर आजाशक(२) नाच नाचें। फिर उन लोगोंको सिरोपाव देकर एक हजार रुपये नकद भी आपसमें बांट लेनेको दिये।

बादशाहने हुक्म देदिया था कि जबतक मै काबुलमें रहूं प्रति गुरुवारको एक हजार रुपये गरीबों और कङ्गालोंको बांटे जावें।

फिर बादशाहने चिनारके वृक्षोंके बीचमें गज भर लम्बा और पौन गज चौडा खेत पाषाण खडा कराकर उसपर एक तरफ अपना नाम और अपनी पीढ़ियां अमीर तैमूर तक खुदवादीं और दूसरी तरफ यह लिखाया कि हमने काबुलके सब जकात और टैक्स माफ कर दिये। हमारे बेटों पोतोंमेंसे जो कोई उन करोंको लेगा वह ईश्वरके कोपमें पडेगा। बादशाहके काबुलमें आनेकी तारीख जो १३ सफर गुरुवार थी वही इस पत्थर पर खोदी गई।

यह टैक्स प्राचीन समयसे लिये जाते थे। बादशाहके आने पर माफ होजानेसे प्रजा बडी प्रसन्न हुई।

गजनीन और उसके आसपासके जो मलिक और खान आये थे उनको सिरोपाव मिले और जो उनके काम थे कर दिये गये।

काबुलके दक्षिणको एक पहाडमें एक पत्थरका चबूतरा तख्तशाहके नामसे प्रसिद्ध था। उस पर बैठकर बाबर बादशाह मद्य पिया करता और वहीं एक कुण्ड खुदा हुआ था जिसमें दो मन मदिरा हिन्दुस्थानके तोलकी आती थी। चबूतरेकी दीवार पर

(१) आईन अकबरीमें लिखा है कि बगरा एक प्रकारका पुलाव होता था जो मांस बेसन घी खांड और सिरकेसे बनाया जाता था।

(२) इस नाचका अर्थ वर्णन सहित किसी कोषमें न मिला।

यह लेख खुदा था कि यह सिंहासन जहीरुद्दीन मुहम्मदबाबर बादशाहका है जिसका राज्य चिरस्थायी रहे। सन् ९१४ (सं० १५६१) बादशाहने इसके बराबर एक सिंहासन, और वैसाही एक कुण्ड पत्थर काटवाकर बनवाया और वहां अपना और अमीर तैमूर का नाम खुदवा दिया।

बादशाह जिस दिन इस सिंहासन पर बैठा था। उस दिन दोनो कुण्डोंमें मदिरा भरवा दी गई थी। जो नौकर वहां हाजिर थे उनको पीनेका हुक्म देदिया था।

गजनीनके एक शाइरने बादशाहके काबुलमें आनेकी यह तारीख कही थी।

बादशाहे बलाद हफ्त इकलीम (१)

अर्थात् सात विलायतोंके शहरोंका बादशाह।

बादशाहने उसको इनाम और सिरोपाव देकर यह तारीख भी उसी सिंहासनके पास दीवार पर खुदवा दी।

पचास हजार रुपये शाहजादे परवेजको दिये गये। वजीरुल-मुल्क मीरबखशी हुआ और कुलीचखांके नाम हुक्म लिखा गया कि एक लाख १७ हजार रुपये लाहोरके खजानेसे कन्धारके लशकरमें खर्चके वास्ते भेजदे।

चकरीका रईस एक जङ्गको तीरसे मारकर लाया यह जानवर बादशाहने तबतक नहीं देखा था। लिखा है कि पहाडी बकरे में और इसमें एक सींगका फर्क है। बकरेका सींग सीधा होता है और जंगका टेढ़ा बलदार।

वाकेआत बाबरी।

काबुलके प्रसंगसे बादशाह वाकेआतबाबरीको पढ़ा करता था। वह बाबर बादशाहके हाथकी लिखी हुई थी। उसके ३२ पृष्ट बादशाहने अपने हाथसे लिखे और उनके नीचे तुरकी बोलीमें

---

(१) इससे सन् १०१८ निकलते हैं और चाहिये १०१६।

समाप्ति लिखी। जिससे जाना जावे कि यह ३२ पृष्ठ उसके लिखे हुए हैं।

बादशाह लिखता है—मैं हिन्दुस्थानमें बड़ा हुआ हूं तो भी तुरकी भाषा बोलने और लिखनेमें असमर्थ नहीं हूं। (१)

काबुलमें पर्य्यटन।

२५ (अषाढ बदी) को बादशाह बेगमों सहित जलगाह सफिदसंगके देखनेको गया। जो अति सुरम्य और प्रफुल्लित बन था।

२६ (अषाढ बदी १३) शुक्रवारको बाबर बादशाहकी जियारत करने गया बहुतसा सीरा रोटी और रुपये पितृगणको पुख्य पहुंचानेके लिये फकीरोंको बांटे। मिरजा हिन्दालकी बेटी रुकैया सुलतान बेगमने अबतक बापकी जियारत नहीं की थी। अब वह भी करके कृतार्थ हुई। मिरजा हिन्दालकी कबर भी वहीं थी।

३ रबीउलअव्वल (अषाढ़ सुदी ४) गुरुवारको शाहजादों और अमीरोंने खासेके घोड़े दौडाये। एक अरबी बछेरा जो दक्षिणके शाह आदिलखानने भेजा था सब घोड़ोंसे अच्छा दौड़ा।

हजारेके सरदार मिरजा संजर और मिरजा वाशीके बेटे हाजिर हुए जंग नाम जानवरोंको तीरोंसे मारकर लाये थे वैसे बड़े जंग बादशाहने नहीं देखे थे।

बुन्देले।

बरसिंह देव बुन्देलेकी अरजी आई कि मैंने अपने फसादी भतीजेको पकड़ लिया है तथा उसके कई आदमी मार डाले हैं। बादशाहने आज्ञा दी कि उसे गवालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये भेजदो।

खुसरोका छूटना।

१२ (असाढ सुदी १३) को बादशाहने खुसरोको बुलाकर

(१) वाकेआत बाबरी भी तुरकीमें है।

शहरआरा बाग देखनेके लिये उसके पांवसे बेड़ी खुलवा दी यह काम पितृप्रेमसे हुआ।

अटकका किला अहमदबेगसे हटाकर जफरखांको दिया गया और ताजखांको जो बंगश जातिके पठानों पर भेजा गया था पचास हजार रुपये दिये गये।

मानसिंह ।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको भी बादशाहने बंगशकी मुहिम पर भेजा और राजा रामदासको उसका शिक्षक बनाया।

वर्षगांठकी तुला ।

१८ शुक्रवार (सावन बदी ४) को बादशाहकी ४० वीं सौम्य वर्षगांठका तुलादान दोपहर पीछे हुआ। उसमेंसे दस हजार रुपये गरीबोंको बांटे गये।

शाह ईरान ।

सरदारखां हाकिम कन्धारकी अरजी हजारा और गजनीनके रास्तेसे १२ दिनमें पहुंची। लिखा था कि शाह ईरानका एलची जो दरगाहमें हाजिर होनेके लिये आता है हजारेमें पहुंच गया है और शाहने अपने सेवकोंको लिखा है कि कौन दुराचारी बिना हुक्म कन्धार पर गया है जो नहीं जानता है कि हमारे और हजरत अमीर तैमूर और हुमायूं बादशाहकी सन्तानमें क्या सम्बन्ध है। जो वह देश ले भी लिया हो तो मेरे भाई जहांगीर बादशाहके नौकरोंको देकर लौट आवे।

राना सगर व राय मनोहर ।

१९ (सावन बदी ५) शनिवारको राना शंकर (सगर) का मनसब अढाई हजारी जात दो हजार सवारका, और राय मनोहरका, एक हजारी ६०० सवारोंका होगया।

कुतुबुद्दीन कोकाका मारा जाना ।

२७ रविवार (सावन बदी १४) को शामको इसलामखांकी

अरजी जहांगीर कुलीखांकी पत्र सहित जो बिहारसे आया था आगरेसे दरबारमें पहुंची। उसमें लिखा था कि ३ सफर (जेठ सुदी ५) को पहर दिन चढ़े वर्दवानमें अलीकुलीने कुतुबुद्दीनखांको जखमी किया जिससे वह आधीरातको मर गया। यह अलीकुली ईरान के शाह इसमाइलका रसोइया था। शाहके मरे पीछे कुटिलप्रकृति से कन्धारमें भाग आया। वहांसे मुलतानमें पहुंचकर खानखानां से मिला जबकि वह ठट्ठे के ऊपर जाता था। उसने अलीकुलीखांको बादशाही चाकरीमें रख लिया। फिर जब अकबर बादशाह दक्षिण जीतनेको जाता था और जहांगीर बादशाहको राना के ऊपर जानेका हुक्म दिया था तब वह जहांगीरसे मिला। जहांगीरने तब तो उसे शेरअफगनका खिताब दिया था और राजसिंहासन पर बैठनेके पीछे बंगालेमें जागीर देकर भेज दिया। वहांसे लिखा आया कि ऐसे दुष्टको इस देशमें रखना उचित नहीं है। इस पर कुतुबुद्दीनखांको लिखा गया कि अलीकुलीखांको हजूरमें भेजे। और जो वह दंगा करे तो दण्ड दे। कुतुबुद्दीनखां तुरन्त उसकी जागीर वर्दवानमें गया। वह दो पुरुषोंसे अगवानीको आया तो खानके नौकरोंने उसे घेर लिया। तब उसने खानसे कहा कि तेरी यह क्या चाल बदल गई है? खानने अपने आदमियोंको अलगकर दिया और बादशाही हुक्म समझानेके लिये अकेला उसके साथ हो गया। उसने तलवार निकालकर दो तीन घाव खानके लगाये और अम्बाखां काशमीरीको भी जो सहायताके लिये आया था जखमी किया। फिर तो कुतुबुद्दीनखांके चाकरोंने उसको भी मार डाला। अम्बाखां उसी जगह मर गया और कुतुबुद्दीनखां चार पहर पीछे अपने डेरेमें मरा।

बादशाह लिखता है—"कुतुबुद्दीनखां कोका प्रियपुत्र भाई और परम मित्रकी जगह था। पर ईश्वरकी इच्छा पर कुछ वश नहीं लाचार सन्तोष किया। पिताकी मृत्युके पीछे कोका और उसकी माताके दुःखके समान और दुःख मुझ पर नहीं पड़ा।

खुर्रमका तुलादान।

२(१) रबीउस्सानी (सावन सुदी ३) शुक्रवारको बादशाह खर्रम के डेरे पर जो "ओरते" बागमें था गया। अकबर बादशाह आप तो सालमें दो बार अपने जन्मकी सौर और सौम तिथिको तुला दान करता था और शाहजादोंको एक बार उनके जन्मकी सौर-तिथिको तोलता था। परन्तु इस दिन जो सौमपक्षका सोलहवां साल खुर्रमको लगा था उसको ज्योतिषियोंने भारी बताया था और वह कुछ बोमार भी था इस लिये बादशाहने उसको सोने चांदी और धातु आदि पदार्थोंमें विधिपूर्वक तौलकर वह सब माल पुण्य करा दिया।

काबुलसे कूच।

४(२) रबिउलअव्वल (सावन सुदी५) को बादशाहने हिन्दुस्थान जानेके लिये बाहर डेरे कराये और कुछ दिन पीछे आप भी काबुल से "जलगाह संगमफेद"में आगया। उसने काबुलके मेवों और विशेष कर साहबी और किशमिशी जातिके अंगूरों, शाह आलू, जर्द आलू और शफतालूकी बहुत प्रशंसा की है। अपने चचाके लगाये हुए जर्द आलूको सबसे अच्छा बताया है। एक बडे फलको तौलमें २५ रुपये भरका कहा है। अन्तमें लिखा है कि काबुली मेवोंके सरस होने पर भी मेरी रुचिमें उनमेंसे एक भी आमके स्वादको नहीं पहुं-चता है।

एक समय बादशाहने चलते चलते देखा कि अलीमसजिद और गरीबखानेके पास एक बडी मकडीने जो केंकडेके बराबर थी डेढ गज लम्बे सांपको गला पकडकर अधमरा कर रखा था। बादशाह यह तमाशा देखनेको ठहर गया। थोडी देरमें सांप मर गया।

---

(१) मूलमें ६ गलत लिखी है पृ० ५५।

(२) मूलमें ४ जमादिउलअव्वल गलत है रबीउस्सानी चाहिये पृष्ठ ५५।

पुरानी लोथ।

बादशाहने काबुलमें सुना था कि सुलतान महमूद गजनवीके समयमें जुहाक और बामियां स्थानोंके बीचमें ख्वाजा याकूत नाम एक मनुष्य मरा था जो एक गुफामें गडा हुआ है। उसका शरीर अबतक नहीं गला है।" इस पर आश्चर्य करके अपने भरोसेके एक समाचार लिखनेवाले और एक जर्राहको बादशाहने भेजा। उन्होंने वापिस आकर निवेदन किया कि उसका आधा अंग जो जमीन से लगा हुआ है गल गया है और आधा जो नहीं लगा है वैसाही बना है। हाथोंके नख और बाल नहीं गिरे है एक ओरकी डाढी मोंछ भी ठीक है। गुफाके द्वार पर तिथि भी खुदी हुई है। उससे सुलतान महमूदके पहिले उसका मरना प्रगट होता है। पर इस बातको कोई यथार्थरूपसे नहीं जानता।

मिरजाहुसैन।

१५ (भादों बदी २) गुरुवारको कहमर्दके हाकिम अरसलांबेगने जो तूरानके स्वामी वलीमुहम्मदखांका नौकर था हाजिर होकर सलाम किया और एक मनुष्यने मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजाहुसैन को अरजी लाकर दी और प्याजी रङ्गका एक लाल भेंट किया जो १००) का था। अर्जीमें लिखा था कि यदि कुछ फौज मिले तो बदख्शांको उजबकोंसे फतह करलूं। परन्तु बादशाह कभीसे सुना करता था कि मिरजाहुसैनको उजबकोंने मारडाला है इसलिये जवाबमें लिखा कि जो तू वास्तवमें शाहरुखका बेटा है तो सेवामें उपस्थित हो फिर फौज देकर तुझे बदख्शांको विदा करेंगे।

बंगश।

दो लाख रुपये उस सेनाकी सहायताके लिये भेजे गये जो महासिंह और रामदासके साथ बंगशके सरकश पठानों पर भेजी गई थी।

बालाहिसार।

२२ (भादों बदी ८) गुरुवारको बादशाहने बालाहिसार(१)के

(१) काबुलके किलेका नाम है।

मकानोंमेंसे किसीको भी अपने रहनेके योग्य न देखकर हुक्म दिया कि उनको गिराकर बादशाहोंकेसे राजभवन और दीवानखाने बनावें।

अस्तालिफ नाम स्थानसे आये हुए शफतालुओंमेंसे एक तोलमें ६३ रुपये अकबरी (६० तोले) का हुआ उसकी गुठलीका गूदा भी मीठा था।

शाहरुखकी मृत्यु।

२५ (भादों बदी १२) को मालवेसे मिरजा शाहरुखके मरनेकी खबर आई। यह बदखशांका अमीर था। २५ वर्ष पहिले अकबर बादशाहके समयमें आया था और जबसे अबतक विनयपूर्वक सेवा करता रहा था। उसके चार बेटे हसन, हुसैन, सुलतानमिरजा और बदीउज्जमानमिरजा थे। हुसैन तो बुरहानपुरसे भागकर ईरानकी राह से बदखशांको चला गया था। बदखशियोंने उसे अपना स्वामी बना कर बहुतसा अंश अपने देशका उजबकोंसे छीन लिया था। उजबकों ने उसको मारडाला फिर बदखशियोंने दूसरे आदमीको मिरजा हुसैनके नामसे अपना मुखिया बना लिया। इस प्रकार कई मनुष्य मिरजाहुसैन बने मारे गये और फिर जीगये। उनमेंसे एक मिरजा हुसैनको अर्जीका आना ऊपर लिखा गया है।

सुलतान मिरजाको बादशाहने अपने पास रखकर बेटोंके समान पाला था राज्याभिषेकके पीछे दो हजारी जात और हजार सवारोंका मनसब दिया था। उसीको अब मालवे भेजा और बदीउज्जमानको हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब दिया।

हांकेका शिकार।

बादशाहने काबुलमें आनेके पीछे हांकेका शिकार नहीं खेला था इसलिये अब फर्क नामक पहाडको जो काबुलसे ७ कोस पर है घिरवाकर ४ जमादिउलअव्वल (भादों सुदी ६) मंगलवारको वहां गया। सौ हरन निकले उनसेसे ५० शिकार हुए और पांच हजार रुपये हांकेवालोंको इनाम दिये गये।

शेख अबुलफजलके बेटे अबदुर्रहमानका मनसब बढकर दो हजारी जात और दो हजार सवारका होगया।

बाबर बादशाहका सिंहासन।

६ (भादों सुदी ८) गुरुवारको जिसके तडकेही काबुलसे कूच होनेवाला था बादशाह ईदकी चान्दरातके समान पुनीत समझकर बाबर बादशाहके सिंहासनके निकट गया और वहां जो पत्थरमें कुण्ड खोदा गया था उसको मदिरासे भरकर सभासदोंको प्याले दिये। वह दिन बहुत आनन्द और हर्षमें बीता।

काबुलसे कूच।

७ (भादों सुदी ९) शुक्रवारको एक पहर दिन चढे बादशाह बाग शहरआरासे "जलगाह संगसफेद" तक दोनों हाथोंसे द्रव्य और चेरन लुटाता गया।

११ (भादों सुदी १३) मंगलवारको एक कोस पर गिरामीमें और १८ मंगलवार (आश्विन वदी ६) को २॥ कोस पर जचाकमें डेरे हुए। यहां फिर हांकेका शिकार हुआ ११२ पशु मारे गये। जिनमें जङ्ग जातिके २४ हरन थे जो अबतक बादशाहने नहीं देखे थे। एक जङ्ग तोलमें २ मन १० सेरका हुआ और इतना भारी होकर भी ऐसा दौडता था कि १०।१२ कुत्ते दौडते दौड़ते थक गये थे तब कहीं बडी मुशकिलोंसे उसे पकड सके थे।

खुसरोका फिर कैद होना।

बादशाहने खुर्रमसे यह सुनकर कि खुसरो उसके प्राण लेनेके विचारमें है उसको हकीम अबुलफतहके बेटे फतहुल्लह सहित कैद कर दिया। गयासुद्दीनअली, आसिफखांके बेटे नूरुद्दीन और एतमादुद्दौलाके बेटे शरीफखांको जो उससे मिले हुए थे मरवा डाला।

हकीम मुजफ्फर।

२२ जमादिउलअव्वल (आश्विन वदी १०) शनिवारको हकीम मुजफ्फर अरदस्तानीके मरनेकी खबर पहुंची। यह अपनेको

यूनानी हकीम जालीनूसके वंशमें बताता था। ईरानके शाह तुह-मास्पने इसके विषयमें कहा था कि अच्छा हकीम है आओ हम सब बीमार होजावें।

२४ जमादिउलअव्वल (आश्विन बदी १२) को बागवफा और नीमलेके बीचमें शिकार हुआ।

२ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ३) को बागवफामें डेरे हुए।

अरसलाबेग उजबक जो अबदुल मोमिनखांके अमीरोंमेंसे किले काहमर्दका हाकिम था किला छोड़कर बादशाहकी सेवामें हाजिर आया।

४ जमादिउस्सानी (आश्विन सुदी ५) को जलालाबादके हाकिम इज्जतखांको हांकेके शिकारका बन्दोबस्त करनेके वास्ते हुक्म दिया गया। तीन सौ जानवर शिकार हुए। गर्मी बहुत होनेसे अच्छे अच्छे शिकारी कुत्ते मर गये।

१२ (आश्विन सुदी १४) गुरुवार(१) को सराय अकोरामें डेरे हुए। शाह बेगखां हाकिम कन्धारने आकर मुजरा किया।

१४ शनिवार(२) (कार्त्तिक बदी १) को बादशाहने उडीसेकी सूबेदारी दी।

मिरजा बदीउज्जमान।

इसी दिनको यह खबर आई कि मिरजा शाह रुखका बेटा बदीउज्जमान मालवेसे भागकर रानाके पास जाता था परन्तु वहांके हाकिम अबदुल्लहखांने पीछा करके पकड़ लिया और उसके कई साथियोंको मार डाला। बादशाहने हुक्म दिया कि एहतमाम खां आगरेसे जाकर मिरजाको हजूरमें ले आवे।

तूरान।

२५ (कार्त्तिक बदी १२) को खबर पहुंची कि वलीमुहम्मदखांके

---

(१) मूलमें शनि भूलसे लिखा है।

(२) मूलमें चन्द्र भूलसे लिखा है।

भतीजे इमामकुलीखांने मिरजा शाहरुखके बेटे हुसैनको मार डाला है। बादशाह लिखता है कि मिरजा शाहरुखके बेटोंको मारना मानो दैत्यका काम होगया है जैसा कि कहते हैं कि एक दैत्यके लोहूकी हरेक बून्दसे दूसरा दैत्य उत्पन्न होजाता है।

दिलाज़ाक और गक्खड़।

जफरखां दिलाज़ाक पठानों और गक्खड़ोंके एक लाख घरोंको, जो अटक और व्यास नदीके बीचमें उपद्रव मचाया करते थे लाहोर की तरफ कूच कराकर धक्के के डेरोंमें बादशाहके पास आगया।

अकबर बादशाहका तुलादान।

रज्जबके लगतेही जो अकबर बादशाहके जन्मका महीना है बादशाहने एक लाख रुपये जो उनके सौर और सौम पक्षोंके दोनों तुलादानोंके थे आगरा दिल्ली लाहोर और गुजरात आदि १२ शहरोंमें उनकी आत्माको प्रसन्न करनेके लिये पुण्यार्थ बांटनेको भेज दिये।

पदवी।

३ रज्जब (कार्तिक सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने खानजहांकी पदवी सलाबतखांको और खानदौरांकी काबुलके सूबेदार शाहबेग को, हाथी घोड़े और सिरोपाव सहित दी। काबुल, तिराह, बंगशकी तमाम सरकार और स्वात बिजोरकी विलायत खानदौराकी जागीर में लगाई और पठानोंके दबानेके वास्ते फौजदारी भी उस प्रान्तकी उसीको प्रदान की। रामदास कछवाहा भी उन्हीं परगनोंमें जागीर पाकर इस सूबेके सहायकोंमें नियत हुआ।

मोटे राजाके बेटे किशनसिंहका मनसब हजारी जात और ५०० सवारोंका होगया।

शिकार।

बादशाहने रास्तेमें कई जगह लाल हरनोंका शिकार खेला जो बाबाहसन अब्दाल रावलपिण्डी रुहतास करछाक और नन्दनके सिवा कहीं नहीं होते हैं। कुछ जीते हरन भी पकड़े कि उनसे

उस जातिके बच्चे पैदा कराये जावें। इन शिकारोंमें बेगमें भी शामिल थीं।

२५ (अगहन बदी १२) को रुहतासकी तलहटीमें जलालखां गक्खड़के चचा शम्सखांकी साधुताका बखान सुनकर बादशाह उसके घर गये। दो हजार रुपये उसको और इतनेही उसकी स्त्रियों बालकोंको देकर पांच आबाद गांव उसकी जीविकाके वास्ते दिये।

६ शाबान (अगहन सुदी ८) को अमीरुलउमरा अच्छा होकर जखडाले(१) में बादशाहके पास हाजिर हुआ। सब मुसलमान हकीम और हिन्दू वैद्य कह चुके थे कि वह न बचेगा। उसे अच्छा देखकर बादशाहको बहुत हर्ष हुआ।

राय रायसिंह।

राय रायसिंह जो बडे राजपूत अमीरोंमेंसे था अमीरुलउमरा की सुफारिशसे दरबारमें उपस्थित हुआ। बादशाहने उसके अपराध क्षमा करके उसका अगला मनसब जागीर सहित बहाल कर दिया। जब बादशाह खुसरोके पीछे गया था तो रायसिंह दर भरोसाऊरके उसे आगरेमें छोडा था और कहा था कि महलके लोग बुलाये जावे तो उनके साथ आवे। परन्तु जब ऐसा अवसर आया तो दो तीन मंजिल तक साथ रहकर मथुरासे अपने देशको चला गया और देखने लगा कि यह उपद्रव जो उठा है कहांतक फैलता है। कुछ दिनो पीछे जब खुसरो पकडा गया तो रायसिंह बहुत लज्जित हुआ और अमीरुलउमराका वसीला पकडा।

बादशाह लाहोरमें।

१२ (अगहन सुदी १५) चन्द्रवारको बादशाह दिलामेजबागमें जो रावी नदी पर था पहुंचकर अपनी मातासे मिला। मिरजागाजी कन्धारसे आया।

१३ (पौष बदी १) मंगलवारको बादशाहने लाहोरमें प्रवेश किया।

---

(१) जखडयाला।

खुर्रमका मनसब और जागीर।

बादशाहने दीवानोंको आज्ञा की कि खुर्रमको ८ हजारी जात और ५ हजार सवारोंके अनुसार जागीर तो उज्जैनमें दें और सरकार फीरोजा (१) उसको तनखाहमें लगा देवे।

आसिफखां वजीर।

२२ (पौष बदी ८) गुरुवारको बादशाह बेगमों सहित आसिफखां वजीरके घर गया। रातको वहीं रहा। उसने १० लाख रुपयेकी भेट जवाहिर जड़ाऊ गहनों हाथी घोड़ों और कपड़ों आदिकी बादशाहको दिखाई। बादशाहने कुछ लाल कुछ याकूत कुछ चीनके बढ़िया कपड़े पसन्द करके लेलिये और शेष पदार्थ उसीको बख्श दिये।

लालकी अंगूठी।

मुरतिजाखांने गुजरातसे एकही लालकी बनी हुई पूरी अंगूठी भेजी जो तोलमें एक टांक और एक रत्तीकी थी। रङ्गत और घडत भी उसकी बहुत उत्तम थी उसके साथ एक लाल भी २ टांक और १५ रत्तीका था। बादशाहको यह अंगूठी बहुत पसन्द आई। वह लिखता है कि ऐसी अंगूठी किसी बादशाहके हाथमें नहीं सुनी गई थी।

मक्का।

मक्केके शरीफ (महन्त) ने विनयपत्र और काबे(२) का परदा भेजा। बादशाहने लानेवालेको ५ लाख दाम दिये और शरीफके वास्ते एक लाख रुपयेके उत्तम पदार्थ भेजे।

कन्धार।

१४(३) रमजान (माघ बदी १) गुरुवारको कन्धारमें अच्छा

(१) हांसी हिसार।

(२) पूज्यस्थान मुसलमानोंका।

(३) मूलमें लेखके दोषसे १० लिखी है।

काम करनेके इनाममें मिरजागाजीका मनसब पूरा पांच हजारी और पांच हजार सवारका होगया। टट्ठेका सारा देश उसके पट्टेमें था तोभी मुलतानके सूबेमें कुछ जागीर उसको मिली। कन्धारकी हुकूमत भी जो सीमा प्रान्तका सूबा था उसको समर्पित हुई। विदा होते समय तलवार और सिरोपाव भी मिला यह मिरजा फारसी भाषाका कवि भी था।

खानखानाकी भेट।

१५ (माघ वदी ३) को खानखानांकी भेट बुरहानपुरसे पहुंची ४० हाथी कुछ जवाहिर कुछ जड़ाऊ चीजें तथा विलायत और दक्षिणके बने हुए कपड़े थे। सबका मूल्य डेढ़ लाख रुपये हुआ। ऐसीही उत्तम भेटें दूसरे अमीरोंने भी भेजी थीं जो उस देशमें नौकरी पर थे।

राय दुर्गाकी मृत्यु।

१८ (माघ वदी ५) को राय दुर्गाके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है कि यह मेरे पिताका बड़ा किया हुआ था। ४० वर्षसे अधिक उनकी सेवामें रहा और बढ़ते बढ़ते चार हजारी मनसब तक पहुंचा। मेरे पिताकी सेवामें आनेसे पहिले राना उदयसिंहका प्रतिष्ठित सेवक था और सिपाहगरीकी समझ अच्छी रखता था।

सुलतानशाह पठान।

खुसरोका भेदू सुलतानशाह पठान खिजराबादके पहाड़से पकड़ा आया। बादशाहने उसको लाहोरके मैदानमें तीरोंसे मरवा डाला।

मुहम्मदअमीनसे मिलना।

१ शव्वाल (माघ सुदी २) को बादशाह मुहम्मदअमीन नामक एक साधुसे जाकर मिला और उसके उपदेशसे सन्तुष्ट होकर एक हजार बीघे जमीन और एक हजार रुपये देआया। हुमायूं बादशाह भी इस साधुसे बहुत भाव रखता था।

लाहोरसे कूच।

रविवार(१) को पहर दिन चढ़े बादशाहने लाहोरसे कूच किया कुलीचखांको हाकिम, मीर कवामुद्दीनको दीवान, शेख यूसुफको बख्शी और जमालुल्लहको कोतवाल करके हरेकको यथायोग्य सिरोपाव दिया।

२५ शव्वाल (फागुन बदी ११) को सुलतानकी नदीको उतरकर नकोदरसे २ कोस पर पडाव हुआ। अकबर बादशाहने तुलादानके कोषमेंसे शेख अबुलफजलको बीस हजार रुपये इन दोनों परगनों के बीचमें पुल बांधकर पानी रोकनेके लिये दिये थे। बादशाह लिखता है—"सच यह है कि यह जगह बडी साफ और हरी भरी है।" उसने नकोदरके जागीरदार मोअज्जुलमुल्कको हुक्म दिया कि इस पुलके एक तरफ बगीचा और मकान बनावे जिसको देख कर आने जानेवाले प्रसन्न हों।

पानीपत और करनालके बीचमें मुसाफिरोंको दो सिंह सताया करते थे। बादशाहने १४ रविवार(२) (चैत्र बदी १) को दोनों सिंह हाथियोंके हलकेमें घेरकर बन्दूकसे मार दिये। रस्ता जो बन्द होरहा था खुल गया।

दिल्लीमें प्रवेश।

१८ (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको बादशाह दिल्लीमें पहुंचकर सलेमगढ़में उतरे जिसे सुलतान सलेमशाह पठानने यमुनाके बीचमें

---

(१) इस रविवारको क्या तिथि थी यह मूलमें नहीं लिखी है शव्वालकी १ तारीख माघ सुदी २ शनिवारको थी। पीछे एक रविवार तीजको, दूसरा एकादशीको, तीसरा फागुन बदी २ को और चौथा नवमीको था। इन चारों रविवारोंमेंसे किस रविवारको कूच किया? सुलतानपुर लाहोरके पासही है इससे सम्भव है कि फागुन बदी २ या नवमीको कूच किया होगा।

(२) मूलमें भूलसे सोमवार लिखा है।

बनाया था और अकबर बादशाहने सुरतिजाखांको बख्श दिया था जो दिल्लीका रहनेवाला था। सुरतिजाखांने यमुनाके तीर पर एक बड़ा चबूतरा पत्थरोंका बनाया था जिसके नीचे पानीसे मिली हुई एक चौखंडी काशी(१) के कामकी हुमायूं बादशाहके हुक्मसे बनाई गई थी। उसके समान हवादार स्थान कम था। हुमायूं बहुधा अपने सखाओं और सभासदों सहित वहां बैठा करता था।

बादशाहने ४ दिन तक उस स्थानमें रहकर अपने सखाओंके साथ खूब मद्य पान किया। उसका विचार सरकार पालमके रमनों में हाकेका शिकार खेलनेका था। पर राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त निकट आगया था और दूसरा मुहूर्त्त इन दिनोंमें नहीं था इसलिये उसने नौकामें बैठकर जलके रस्तेसे आगरेको प्रस्थान किया।

चैत्र वदी ७ को मिरजा शाहरुखकी सन्तानमेंसे ४ लड़के और ३ लड़कियां जो अकबर बादशाहको नहीं दिखाई गई थीं बादशाहके पास लाई गईं। बादशाहने लड़के तो अपने विश्वासपात्र अमीरोंको सौंपे और लड़कियां अन्तःपुरकी टहलनियोंको पालनेके वास्ते दीं।

राजा मानसिंह।

२० (चैत्र वदी ८) को राजा मानसिंह ६।७ फरसानोंके पहुंचने पर सूबे बिहारके किले रुहतासमे आकर बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"यह भी खानआजमके समान इस राज्यके पुराने खुर्राट भेड़ियोंमेंसे है। जो कुछ इन लोगोंने मेरे साथ और मैंने इनके साथ किया है उसको ईश्वर जानता है। शायद कोई मनुष्य किसी मनुष्यसे इतनी टाला नहीं दे सकता है। राजाने १०० हथिनी और हाथी भेट किये जिनमेंसे एक भी ऐसा न था जो खासेके हाथियोंमें रखा जाता। पर यह मेरे पिताके कृपापात्रोंमेंसे था इसलिये मैं उसका अपराध उसके मुंह पर नहीं लाया और बादशाहोंकीसी दया मया करके उसका मान बढ़ाया।

(१) पच्चीकारी।

तीसरा नौरोज।

२ जिलहज्ज (चैत्र सुदी ५) गुरुवारको सूर्य्य मेख राशिमें आया। बादशाहने रंगते गांवमें नौरोजका उत्सव करके खानजहांको पांच हजारी जात पांच हजारका मनसब और ख्वाजाजहांको बखशीका पद दिया और वजीरखांको बंगालेसे बदलकर अबुलहसनको उसकी जगह भेजा।

५ जिलहज्ज (चैत्र सुदी ८) शनिवारको मध्यान्ह कालमें बादशाह पांच हजार रुपयेकी रेजगी अपने दोनों हाथोंसे लुटाता हुआ आगरेके किलेमें गया।

सफेद चीता।

राजा बरसिंहदेवने एक सफेद चीता भेट किया। बादशाहने और पशु पची तो सफेद रंगके देखे थे पर चीता नहीं देखा था। इसलिये विशेष रूपसे उसका वर्णन अपने ग्रन्थमें किया है।

रावरतन हाडा।

इन्हीं दिनोंमें भोज हाडाके बेटे रावरतनने जो राजपूत जातिके बडे अमीरोंमेंसे था हाजिर होकर ३ हाथी नजर किये। उनमेंसे एक जो सबसे बडा था १५ हजार रुपयेका सरकारसें आंका गया और खासेके हाथियोंमें रखा गया। बादशाह लिखता है—"मैंने उसका नाम रतन गज रखा। हाथीका मोल हिन्दुस्थानके राजोंमें पचीस हजार रुपयेसे अधिक नहीं होता है लेकिन आजकल हाथी बहुत मंहगे होगये हैं। रतनको मैंने सरबलन्दरायके खिताबसे सम्मानित किया।

भावसिंह।

भावसिंहका मनसब दो हजारी जात और सौ सवारका होगया।

राजा सूरजसिंह।

२५ (बैशाख बदी ११) को राजा सूरजसिंहने हाजिर होकर नजर न्यौछावर की। वह राना अमराके चचेरे भाई श्यामसिंहको

भी साथ लाया था जिसके विषयमें बादशाह लिखता है—"कुछ शऊरदार है हाथीकी सवारी अच्छी जानता है।"

"राजा सूरजसिंह हिन्दीभाषाके एक कविको भी लाया था जिसने मेरी प्रशंसामें इस भावकी कविता भेट की—जो सूरजके कोई बेटा होता तो सदाही दिन रहता रात कभी न होती। क्योंकि सूरजके अस्त होने पर यह लडका उसका प्रतिनिधि हो जाता और जगतको प्रकाशमान रखता। परमेश्वरका धन्यवाद है कि उसने आपके पिताको ऐसा पुत्र दिया जिससे उनके अस्त होने के पीछे मनुष्योंमें शोकरूपी रात्रि नहीं व्यापी। सूरज बहुत पश्चात्ताप करता है कि हाय मेरा भी कोई ऐसा बेटा होता कि मेरी जगह बैठकर पृथ्वीमें रात न होने देता! जैसा कि आपके भाग्यके तेज और न्यायकी तपसे ऐसी भारी दुर्घटना हो जाने पर भी संसार इस प्रकारसे प्रकाशमय होरहा है कि मानो रातका नाम और पताही नहीं है—ऐसी नई उक्ति हिन्दीभाषाके कवियोंकी कम सुनी गई थी। मैंने इसके इनाममें उस कविको हाथी दिया। राजपूत लोग कविको चारण(१) कहते हैं। इस समय के एक फारसीके कविने इस कविताके भावकी फारसी कविता की है।"

---

(१) राजपूत कविको चारण नहीं कहते चारण तो एक जाति है जो विशेष करके कविता करती है।

जलाल मसऊदकी विचित्र मृत्यु।

८ मुहर्रम (बैशाख सुदी १०) गुरुवारको जलालमसऊद जिसको चार सदी जातका मनसब मिला हुआ था और कई लडाइयोंमें वीरतासे काम करचुका था ५०।६० वर्षकी अवस्थामें दस्तोंसे मर गया। जहांगीर लिखता है—"यह अफीमको टुकडे टुकडे करके खाया करता था और बहुधा अपनी माके हाथसे भी अफीम खाता था। जब मरने लगा तो उसकी मा भी अति मोहसे बहुतसी वही अफीम जो बेटेको खिलाया करती थी खाकर उसके मरनेसे एक दो घडी पीछे मर गई। अबतक किसी माकी बेटेसे इतनी ममता नहीं सुनी गई थी। हिन्दुओंमें रीति है कि स्त्रियां पतिके मरने पर प्रेम या अपने बाप दादाकी कीर्त्ति तथा लोकलाजसे जल जाती हैं परन्तु हिन्दू मुसलमानोंकी किसी मासे ऐसा काम नहीं हुआ(१)।

---

(१) जहांगीरके इस निश्चयके अनुसार बहुतसे हिन्दू मानते हैं कि मा बेटेके साथ सती नहीं होती। जैसा कि इस सोरठेसे प्रतीत होता है—

सगो सगाई नांह, मोह पगी सोही सगो।
यह अचरज जग मांह, मा बैठी तिरिया जले॥

पर मारवाडमें प्राचीनकालमें बेटे पोतोंके साथ भी स्त्रियां सती हुई हैं। इसका प्रमाण वह प्राचीन पुनीत पाषाण देते हैं जो उन की चिताओं पर सैकडों वर्षसे खडे हैं। उस पर तिथि संवत् नाम ठाम और संक्षिप्त हाल उन सत्यवती स्त्रियोंका खुदा हुआ है जो अपने बेटे या पोतोंके मोहसे उनकी लाशको गोदमें लेकर जल

मानसिंहका घोडा।

१५ (जेठ वदी १) को बादशाहने एक घोडा जो सब घोड़ोंमें उत्तम था परम प्रीतिसे राजा मानसिंहको दिया। बादशाह लिखता है—"इस घोडेको ईरानके शाह अब्बासने कई दूसरे घोडों और उत्तम सौगातों सहित अपने विश्वासपात्र दास मनूचिहरके हाथ मेरे पिताके पास भेजा था। इस घोड़के देनेसे राजाने इतनी प्रसन्नता और प्रफुल्लता प्रगट की कि यदि मैं एक राज्य भी उसको देता तो भी शायदही इतना आनन्द उत्साह दिखाता। यह घोड़ा यहां आया उस समय ४ वर्षका था। जब बड़ा हुआ तो सब मुगल और राजपूत चाकरोंने कहा कि इराक(१) से कोई ऐसा घोडा हिन्दुस्तानमें नहीं आया है। जब मेरे पिता खानदेश और दक्षिण मेरे भाई दानियालको देकर आगरेको आने लगे तो अति कृपासे दानियालको आज्ञा की कि एक वस्तु जो तेरी मनचाही हो मुझसे मांग। उसने अवसर पाकर यह घोडा मांगा और उन्होंने उसको दे दिया था।"

गई। ऐसी सतियोंको मा-सती और पोता-सती कहते हैं। पतिके साथ जलनेवालीकी पदवी महासती है। इन घटनाओंके जो चित्र पत्थरों पर दिये जाते थे उनमें पहचानके लिये सतियोंकी मूर्त्तियां भी भिन्न भिन्न रूपसे खोदी जाती थीं। पतिके साथ जलनेवाली की मूर्ति पतिके घोड़के आगे खडी और कहीं पतिके सामने बैठी बनाई जाती थी। बेटे पोतोंके साथ जलनेवालियोंके चित्रमें वह मृत बालक उनकी गोदमें दिखाये जाते थे। ऐसे कितनेही चित्र अब भी महासती मासती और पोता सतियोंके पत्थरों पर खुदे हुए मारवाड़के कितनेही गांवोंमें मौजूद हैं। उनका हाल हमने एक अलग पुस्तकमें लिखा है।

(१) ईरानको अरब लोग ईराक कहते थे इसीसे ईरानी घोड़े का नाम इराकी होगया था।

जहांगीरकुलीको मृत्यु।

२० (जेठ वदी ७) मंगलको इसलामखांकी अरजीसे जहांगीर-कुलीखां सूबेदार बंगालेके मरनेका वृत्तान्त सुनकर बादशाहको रञ्ज हुआ। यह उसका निजदास था और सुयोग्यतासे बड़े अमीरोंकी पांतिमें जा मिला था। बादशाहने बंगालेका शासन और शाहजादे जहांदारका संरक्षण इसलामखांको सौंपा और अफजल-खांको उसकी जगह बिहारकी सूबेदारी पर भेजा।

करनाटकके बाजीगर।

हकीमअलीका बेटा बुरहानपुरसे करनाटकके कई बाजीगरोंको लाया जो १० गोलियोंका खेल करते थे। बडीसे बडी गोली नारङ्गीके और छोटी घूंघचीके समान थी। पर एक भी इधर उधर नहीं होती थी। ऐसेही और भी कई करतब करते थे जिनको देखकर बुद्धि चकित होजाती थी।

टेवनक पशु।

ऐसेही सिंहलद्वीपसे एक फकीर टेवनक नामका एक पशु लाया जिसकी सूरत बन्दरसे मिलती थी परन्तु पूंछ न थी। और कला बनमानसकीसी करता था। बादशाहने उसके कई चित्र खिंचवाये जिनमें उसके कितनेही चरित्रोंको अङ्कित किया गया था।

फरङ्गी पर्दा।

मुकर्रबखांने खम्भात बन्दरसे फरंगियोंका बनाया एक पर्दा भेजा। बादशाहने फरंगियोंका बनाया हुआ उतना कारीगरीका काम और कोई नहीं देखा था।

नजीबुन्निसा बेगम।

बादशाहको चची या फूफी (क्योंकि दोनोंके वास्ते अरबीका एकही शब्द है) ६१ वर्षकी अवस्थामें मर गई। बादशाहने उसके बेटे मिरजावालीको हजारी जात और दोसौ सवारोंका मनसब दिया।

रूमका कृत्रिम दूत ।

तूरानका अक्रम नामक एक हाजी रूममें था वह अपनेको रूमके खूांदगार(१) (सुलतान) का दूत बनाकर आगरेमें बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ। एक जलजलूल पत्र भी उसके पास था। दरगाहके बन्दोंने उसके स्वरूप और दशाको देखकर उसके दूत होनेमें सन्देह किया। जहांगीर लिखता है—"हजरत अमीर तैमूरने रूमको जीता था। वहांका हाकिम एलद्रुमबायजीद पकडा आया। अमीरने उससे भेट और रूमकी सालभरकी उपज लेकर वह देश पूर्ववत उसके अधिकारमें रहने दिया। एलद्रुम-बायजीद उन्हीं दिनोंमें मर गया और अमीर तैमूर उसके बेटे मूसा चिलपीको वहांका देशाधिपति करके लौट आये। जबसे अबतक ऐसे उपकारके होते हुए भी वहांके कैसरों(२)की तरफसे कोई नहीं आया न उन्होंने कोई दूत भेजा। अब क्योंकर प्रतीत होसके कि यह मावरुन्नहर (?तूरान) का पुरुष खूांदगारका भेजा हुआ है। यह बात मेरी समझमें नहीं आई और न किसीने उसकी साक्षी दी। इसलिये मैंने कह दिया कि जहां जाना चाहता हो चला जावे।"

बादशाहका व्याह ।

४ रबीउलअव्वल (अषाढ सुदी ६) को बादशाहका व्याह राजा मानसिंहके बडे बेटे जगतसिंहकी बेटीसे मरयममकानीके महलमें हुआ। राजा मानसिंहने जो दहेज दिया उसमें ६० हाथी भी थे।

राणा ।

बादशाहको राणाका विजित करना अवश्य था इसलिये महा-बतखांको इस लडाई पर नियत किया और निम्नलिखित सेना और रुपये उसे दिये—

---

(१) मुगलोंकी तवारीखमें सुलतान रूम खूान्दगार लिखे जाते थे।

(२) रूमके सुलतानको कैसर भी कहते हैं।

सजे हुए सवार अनुभवी सरदारों सहित	१२०००
अहदी	५००
पियादा बरकन्दाज (बन्दूकची)	२०००
गजनाल और शतुरनाल तोपें	१७०
हाथी	६०
नकद रुपये	२० लाख

बुरहानपुरके आम।

बुरहानपुरके बखशीने कुछ आम भेजे थे उनमेंसे एक ५२ तोले का हुआ।

सङ्गयशमका प्याला।

महतरखांके बेटे मूनसखांने यशम जातिके पत्थरका एक स्वेत और स्वच्छ प्याला भेट किया जो मिरजा उलगबेग गोरगांके वास्ते बनवाया गया था और जिस पर मिरजाका नाम साल सहित खुदा था। बादशाहने भी अपना और अपने पिताका नाम उसकी कोर पर खुदा दिया।

संग्रामका देश।

१६ रबीउस्सानी (भादों बदी ३) बुधवारको हुक्म हुआ कि संग्रामका देश जो एक सालके लिये इसलामखांको इनाममें दिया गया था। एक साल अफजलखां सूबेदार बिहारके इनाममें भी रहे।

राणाकी लड़ाई।

इसी दिन महाबतखां तीन हजारी जात और अढाई हजार सवारका मनसब सिरोपाव खासा हाथी और जड़ाऊ तलवार सहित पाकर भादों बदी १२ को बिदा हुआ। उसके साथ जफरखां, शुजाअतखां, राजा वरसिंहदेव, मंगलीखां, नरायणदास कछवाहा, अलीकुली, बरमन, हुजब्रखा तुहमतन, बहादुरखां और मुअज्जुन सुल्ता नमगी आदि अमीर और सरदार उसके साथ गये। सबको यथायोग्य खासे सिरोपाव जड़ाऊ तलवारें और झंडे वगैरह मिले राजा वरसिंहदेवको खिलअत और खासका घोड़ा मिला।

खानखानां।

इसी दिन पहरदिन चढे खानखानां जो बादशाहका अतालीक (शिक्षक) था बुरहानपुरसे आया उसके ऊपर हर्ष और उत्साह ऐसा छाया हुआ था कि पांवसे आता है या सिरसे यह कुछ नहीं जानता था और व्याकुलतासे बादशाहके चरणोंमें गिर पडा। बादशाहने भी दया करके उसका सिर उठाकर छातीसे लगाया और मुंह चूमा। उसने मोतियोंकी माला कई लाल और पन्ने भेट किये जिनका मोल तीन लाख रुपयेका हुआ। इसके सिवा और भी बहुतसी वस्तु अर्पण की।

बङ्गालका दीवान।

१७ जमादिउलअव्वल (द्वितीय भादों बदी ४) को वजीरखां बङ्गालके दीवानने ६० हाथी हथनियां और कई लाल कुतबी(१) भेट किये उससे और इसलामखांसे नहीं बनती थी इसलिये बादशाहने उसको बुला लिया था।

आसिफखांकी भेट।

२२ (द्वितीय भादों बदी ९ तथा १०) को आसिफखांने ७ टंक भरका एक माणिक्य जो रंग ढंग और अंगमें अति सुन्दर था और ७५ हजार रुपयेमें खभात बन्दरसे मंगाया था बादशाहको भेट किया। वह बादशाहकी जांचमें ६० हजार रुपयेसे अधिकका न था।

दलपत।

राय रायसिंहके बेटे दलपतने बड़े बडे अपराध किये थे तोभी वह खानजहांकी सुफारिशसे जान बूझकर बख्श दिया गया।

खानखानांके बेटे।

२४ (द्वितीय भादों बदी १२) को खानखानांके बेटोंने बादशाह की सेवामें उपस्थित होकर पच्चीस हजार रुपये भेट किये और उसी दिन खानखानांने भी ८० हाथी नजर किये।

---

(१) लालकी एक जाति।

तुलादान।

१ जमादिउस्सानी (द्वितीय भादों सुदी २) गुरुवारको बादशाह की सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। उसका कुछ रुपया औरतोंको बांटा गया और बाकी रक्षित देशोंके दीन दरिद्रियोंके वास्ते भेजा गया।

दूध देनेवाली हरनी।

दूध देनेवाली एक हरनी भेटमें आई जो नित्य ४ सेर दूध देती थी उसका स्वाद गाय भैंसके दूधकासा था। कहते हैं कि यह दूध दमेकी बीमारीके लिये लाभदायक होता है।

राजा मानसिंह।

११ (द्वितीय भादों सुदी १२) को राजा मानसिंहने दक्षिण जानेकी आवश्यकतासे जहां उसकी नौकरी बोली गई थी सेना की सामग्री प्रस्तुत करनेके लिये अपने वतन आमेर जानेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने हुशियार मस्त नाम खासेका हाथी उसको देकर विदा किया।

१२ (द्वितीय भादों सुदी १३) को अकबर बादशाहको बरसी थी बादशाहने मामूली खर्चों के सिवा चार हजार रुपये उनके रौजे में गरीबों और फकीरोंको बांट देनेके लिये भेजे।

खुसरोकी बेटी।

१७ (द्वितीय भादों सुदी १४) को बादशाहने खुसरोकी बेटीको मंगवाकर देखा। उसकी सूरत बापसे ऐसी मिलती थी कि वैसी किसीकी सूरत कभी मिलते नहीं देखी गई थी। ज्योतिषियोंने बादशाहसे कहा था कि उसका जन्म बापके वास्ते शुभ नहीं है पर आपके वास्ते शुभ है। ऐसाही हुआ। यह भी कहा था कि तीन वर्ष पीछे आप उसको देखें। अब तीन सालकी होजाने पर बादशाहने उसे मंगवाकर देखा।

खानखानांकी प्रतिज्ञा।

२१ (आश्विन वदी ८) को खानखानांने निजामुलमुल्कके राज्य

को जिसमें अकबर बादशाहके मरे पीछे बहुतसा उपद्रव उठ खड़ा हुआ था दो वर्षमें साफ कर देनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिखदी कि जो दो वर्षमें यह काम न करदूं तो अपराधी समझा जाऊं। पर उस सेनाके सिवा जो दक्षिणमें है बारह हजार सवार और १२ लाख रुपये फिर मुझको मिलें। बादशाहने हुक्म दे दिया कि तुरन्त तय्यारी करके उसको बिदा करें।

पेशरौखां।

१ रज्जब (आश्विन सुदी २) को पेशरौखां मर गया। इसको शाह तुहमास्पने हुमायूं बादशाहको सेवा करनेके लिये दिया था।

इसका नाम तो आदत था पर अकबर बादशाहने फर्राशखाने का दारोगा बनाकर पेशरौखांका खिताब दिया था। इस काममें बहुत योग्य था ८० वर्षकी उमरमें १४ वर्षके जवानोंसे बढ़कर साहसी था। मरते समय तक दमभरके लिये भी मद्य पिये बिना नहीं रहता था। १५ लाख रुपये छोड मरा। बेटा सुपात्र न था इसलिये आधा फर्राशखाना उसके रहा और आधा "तहमाक" को मिल गया।

उसी दिन कमालखां भी मर गया। वह दिल्लीके कलालोंमेंसे था। बादशाहको उसका बहुत भरोसा था इसलिये बावरचीखाने का दारोगा बनाया था।

लालखां कलावत।

२ (आश्विन सुदी ३) को लालखां कलावत जो अकबर बादशाहकी सेवामें छोटेसे बडा हुआ था ६० वर्षका होकर मर गया। अकबर बादशाह हिन्दोके जो गान सुनता वह उसे याद करा देता था। उसकी एक लौंडी इस शोकमें अफीम खाकर मर गई। बादशाह लिखता है कि ऐसी वफादार स्त्री मुसलमानोंमें कम देखनेमें आई।

ख्वाजेसराओंका निषेध।

हिन्दुस्थान और विशेषकरके बङ्गालके जिले सिलहटमें बहुत

कालसे यह चाल पड़ गई थी कि वहांकी प्रजा अपने कुछ लड़कों को नपुंसक बनाकर मालगुजारीके बदले हाकिमोंको देदेती थी फैलते फैलते दूसरे देशोंमें भी यह चाल फैल गई। हर वर्ष कई हजार बालक नपुंसक बना दिये जाते थे। बादशाहने आज्ञादी कि अबसे यह खराब चाल बन्द हो। बालक ख्वाजेसराओंकी बिकरी रोकी जावे। इसलामखां और बङ्गालके सब हाकिमोंको लिखा गया कि अब जो कोई ऐस कर्म्म करे उसे दण्ड दें और जिसके पास छोटे ख्वाजेसरा मिलें लेलिये जावें। जहांगीर लिखता है—"अबतक किसी बादशाहका इधर ध्यान नहीं गया था। जल्द यह कुरीति मिट जावेगी। जब ख्वाजेसराओंकी बिकरी बन्द हो गई तो कोई व्यर्थ बालकोंको नपुंसक क्यों बनावेगा?"

खानखानांको घोड़े हाथी।

समन्द घोडा जो शाह ईरानका भेजा हुआ था और उस समय तक उतना बडा और अच्छा कोई घोडा हिन्दुस्थानमें नहीं आया था बादशाहने खानखानांको दे दिया इससे वह बहुतही प्रसन्न हुआ। फिर फतूह नामक हाथी जो लड़नेमें अनुपम था २५ दूसरे हाथियों सहित उसको प्रदान किया।

किशनसिंह।

किशनसिंह महावतखांके साथ भेजा गया था उसने अच्छा काम दिया। रानाके २० मनुष्य मारे और तीनसोके लगभग पकड़े। उसके भी पांवमें बरछा लगा था इस लिये उसका मनसब दो हजारी जात और एक हजार सवारोंका होगया।

कन्धार।

१४ (कार्त्तिक बदी १) को मिरजा गाजीको कन्धार जानेका हुक्म हुआ। उसके भक्करमें कूच करतेही कन्धारके हाकिम सरदारखांके मरनेकी खबर पहुंची। यह बादशाहके चचा मिरजाहकीमके निज नौकरोंमेंसे था।

अकबर बादशाहका रौजा।

१७ (कार्तिक बदी ४) चन्द्रवारको बादशाह अपने पिताके रौजेका दर्शन करने गया। वह लिखता है—"जो होसकता तो मैं इस मार्ग में मस्तक और पलकोंसे जाता। मेरे पिता तो मेरे वास्ते फतहपुरसे अजमेर तक १२० कोस पैदल ख्वाजे मुईनुद्दीनके दर्शनोंको गये थे। फिर मैं इस मार्गमें सिर और आंखोंसे जाऊं तो क्या बडी बात है।"

इस रौजेकी जो इमारत बनी थी वह बादशाहको पसन्द न आई। क्योंकि उसका यह मनोरथ था कि यहां ऐसी इमारत बने जिसके समान पृथिवीके पर्य्यटन करनेवाले कहीं नहीं बता सकें। उक्त इमारतको जब जहांगीर खुसरोकी तलाशमें गया था तो उसके पीछेसे मिलावटोंने तीन चार वर्षमें अपनी समझसे बनाया था। बादशाहने उसको गिराकर नये सिरेसे बनानेका हुक्म शिल्प-निपुण मिलावटोंको दिया। बनते बनते एक विशाल भवन, बाग, ऊंची पौल और श्वेत पाषाणोंके मीनारों सहित बन गया जिसकी लागत पन्द्रह लाख रुपये बादशाहको सुनाई गई।

हकीमअलीका हौज।

२३ (कार्तिक बदी १०) रविवारको जहांगीर अकबर बादशाह के समयका बना हकीमअलीका हौज अपने उन मित्रों सहित देखने गया जिन्होंने उसको नहीं देखा था। यह छः गज लम्बा और उतनाही चौड़ा था और उसकी बगलमें एक कमरा बना था जिसमें खूब उजाला रहता था। इस कमरेका रास्ता भी पानीमें होकर था लेकिन पानी उस रास्तेसे भीतर नहीं जाने पाता था। इस कमरेमें १२ आदमी बैठ सकते थे।

हकीमने अवसरके अनुसार धन माल बादशाहको नजर किया। बादशाह उसको दो हजारी मनसब देकर राजभवनमें आया।

खानखानांको दक्षिण जाना।

१४ शाबान (अगहन बदी २) रविवारको खानाखानां जड़ाऊ

परतला खिलअत और खासेका हाथी पाकर दक्षिणको बिदा हुआ। राजा सूरजसिंह भी उसके साथ भेजा गया और उसका मनसब तीन हजारी जात और दोहजार सवारोंका होगया।

गुजरात।

बादशाहने मुरतिजाखांके भाइयों और नौकरोंका प्रजा पर अन्याय करना सुनकर गुजरातका सूबा उससे छीन लिया और आजमखांको दिया। आजमखां तो हुजूरमें रहा और उसका बडा बेटा जहांगीरकुलीखां तीन हजारी जात और अढाई हजार सवारों का मनसब पाकर बापकी नायबीमें गुजरातको गया। बादशाहने उसको मोहनदास दीवान और मसऊदखां बखशीकी सलाहसे काम करनेका हुक्म दिया।

बलन्द अखतर।

४ जिलहज्ज (फागुन सुदी ६) बुधवारको खुसरोके घरमें खान-आजमकी बेटीसे लड़का उत्पन्न हुआ। बादशाहने उसका नाम बलन्द-अखतर रखा।

६ (फागुन सुदी ८) को मुकर्रबखांने एक तसवीर भेजी जिसे फरंगी अमीर तैमूरकी बताते थे। जब उनकी फौजने रूमके बाद-शाह एलद्रम बायजीदको पकड़ा तो अस्तम्बोलके ईसाई हाकिमने एक दूत सौगातसहित अमीरके पास भेजा था। उसके साथ एक चित्र-कारभी था वह अमीरकी तसवीर खेंच लेगया था। बादशाह लिखता है—"जो यह बात कुछ भी सच होती तो कोई पदार्थ इस चित्रसे बढ़कर मेरे समीप नहीं था पर यह तो अमीर और उनके बेटों पोतोंकी सूरतसे कुछ भी नहीं मिलती इसलिये पूरी प्रतीत नहीं होती।"

चौथा नौरोज।

१४ (चैत बदी १) शनिवारको रातको सूर्य्य मेखमें आया। चौथा नौरोज हुआ।
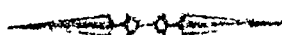
पांचवां वर्ष ।

सन् १०१८ ।

चैत सुदी २ संवत् १६६६ से चैत सुदी १ संवत् १६६७ तक ।

५ मुहर्रम (चैत सुदी ७) शुक्रवार सं० १६६६ को हकीम अली मर गया । यह बडा हकीम था इसने अकबर बादशाहके समयमें बू अलीसीना(१) के कानूनकी टीका लिखी थी । बादशाह लिखता है कि यह दुष्टात्मा और दुर्बुद्धि था ।

खान आलम ।

२० सफर (जेठ बदी ७) को मिरजा बरखुरदारको खानआलम का खिताब मिला ।

३३॥ सेरका तरबूज ।

फतहपुरसे इतना बडा एक तरबूज आया कि बादशाहने वैसा अबतक नहीं देखा था तुलवाया तो ३३॥ सेरका हुआ ।

सौमतुलादान ।

१८ रबीउलअव्वल (आषाढ बदी ५) चन्द्रवारको बादशाहकी सौम वर्षगांठका तुलादान उनकी मा मरयममकानीके भवनमे हुआ । जो स्त्रियां वहां जुड़ गई थीं उनको बादशाहने उसमेंसे कुछ रुपये दिलाये ।

दक्षिण पर चढाई ।

बादशाहने दक्षिणके कामों पर एक शाहजादेका भेजा जाना आवश्यक समझ कर परवेजको भेजने और उसके वास्ते सफरकी तय्यारी कर देनेका हुक्म दिया ।

---

(१) बूअलीसीना मुसलमानोंमें बड़ा हकीम होगया है उसने जो पुस्तक वैद्यकविद्याकी बनाई है उसका नाम कानून बूअली है ।

रानाकी लड़ाई।

बादशाहने महाबतखांको कई कामोंकी सलाहके वास्ते बुला कर उसकी जगह अबदुल्लहखांको उस लशकरका अफसर किया जो रानाके ऊपर भेजा गया था और उसको फीरोज जंगका खिताब भी दिया। बखशी अबदुर्रज्जाकको सब मनसबदारोंसे यह कहला देनेके लिये भेजा कि फीरोजजंगकी आज्ञा भंग न करें और उसके अच्छे बुरे कहनेमें अपना भला बुरा समझें।

दूध देनेवाला बकरा।

४ जमादिउलअव्वल (सावन सुदी ६) को चरवाहे एक खस्सी बकरा लाये जिसके थन बकरीकेसे थे और वह प्रतिदिन एक प्याला दूध देता था।

सूरतकी हुकूमत।

६ (सावन सुदी ७) को बादशाहने खानआजमके बेटे खुर्रमको दो हजारी जात और पांचसौ सवारका मनसब देकर सूरतकी हुकूमत पर भेजा जो जूनागढके नामसे प्रसिद्ध है।

राजा मानसिंह।

१६ (भादों बदी २) को तलवारका जड़ाऊ परतला राजा मान सिंहके वास्ते भेजा गया।

दक्षिण।

१६ (भादों बदी ८) को बादशाहने २० लाख रुपये उस लशकरके खर्चके वास्ते जो परवेजकी अफसरीमें तय्यार हुआ था एक अलग खजानचीको सौंपे और पांच लाख रुपये परवेजके खर्चके लिये भी दिये।

१ जमादिउस्सानी (भादों सुदी २) को अमीरुलउमरा भी उसी लशकरमें नियुक्त हुआ और उसको खिलअत और घोड़ा दिया गया।

जगन्नाथका बेटा करमचन्द भी दो हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका मनसब पाकर परवेजके साथकी सेनामें शामिल हुआ।

रानाकी लड़ाई।

४ (भादों सुदी ५) को २७० इक्के सवार उदयपुरके लश्करको सहायताके लिये अबदुल्लहखांको दिये गये। १०० घोडे भी सरकारी तवेलोंसे भेजे गये कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिन जिनको अबदुल्लहखां उचित समझे देदे।

लाल।

१७ (आश्विन बदी ३) को बादशाहने एक लाल साठ हजार रुपयेका परवेजको, दूसरा लाल दो मोतियों सहित खुर्रमको दिया। इनका मूल्य चालीस हजार था।

राजा जगन्नाथ।

२८ (आश्विन सुदी १) चन्द्रवारको राजा जगन्नाथका मनसब ५ हजारी जाती और तीन सौ सवारोंका होगया।

राय जयसिंह।

८ रज्जब (आश्विन सुदी ८) को राय जयसिंहका मनसब चार हजारी जाती और तीन हजार सवारोंका होगया। वह भी दक्षिण को सेनामें भरती हुआ।

शहरयार।

६ रज्जब (आश्विन सुदी १०) गुरुवारको शाहज़ादा शहरयार गुजरातसे हुजूरमें आया।

परवेजका दक्षिण जाना।

१४ (आश्विन सुदी १५) मंगलवारको बादशाहने परवेजको खासा खिलअत, घोडा, खासा हाथी, जडाऊ पेटी और तलवार देकर दक्षिण जीतनेको भेजा। जो अमीर और सरदार उसको सेवामें नियत किये गये थे उनको भी घोडे सिरोपाव जड़ाऊ पेटियां और तलवारें मिलीं। एक हजार अहदी भी शाहजादेके साथ भेजे गये।

रानाकी लड़ाई।

अबदुल्लहखांकी अर्जी आई कि मैंने विकट घाटियोंमें रानाका

पीछा किया। कई हाथी और उसका असबाब हाथ आया। राना रातको भागकर निकल गया परन्तु शीघ्रही पकड़ा जायगा या मारा जायगा। बादशाहने प्रसन्न होकर उसका मनसब पूरा पांच हजारी कर दिया।

परवेज।

बादशाहने दस हजार रुपयेकी एक मोतियोंकी माला परवेजको दी। खानदेश और बरार तो पहिलेसे उसको दिये जाचुके थे अब आसेरका किला भी दिया गया और तीन सौ घोड़े भी मिले कि अहदियों और मनसबदारोंमेंसे जिसको योग्य समझे दिये जायें।

भङ्ग गांजेका निषेध।

२२ (अगहन बदी ८) शुक्रवारको बादशाहने हुक्म दिया कि भङ्गगांजा जो झगड़ेकी जड़ हैं बाजारमें न बेचें और जुएके अड्डे भी उठा देवें।

वृश्चिक संक्रांतिका दान।

बादशाहने वृश्चिक(१) संक्रांतिके दिन एक हजार तोले सोने चान्दी और एक हजार रुपये अपने ऊपर वार कर दान किये।

दक्षिण पर सेना।

बादशाहने एक और नई फौज जिसमें १६२ मनसबदार और ४६ अहदी बरकन्दाज थे परवेजके पास दक्षिणको बिदा की और पचास घोड़े भी भेजे।

खुर्रमकी सगाई।

१५ (पौष बदी ३) रविवारको बादशाहने पचास हजार रुपये खुर्रमकी सगाईकी रस्मके मिरजा मुजफ्फरहुसैनके घर भेजे। उसकी लड़कीसे खुर्रमका व्याह ठहरा था। यह बहराम मिरजाका पोता और ईरानके शाह इसमाईल सफवीका पड़पोता था।

---

(१) यह वृश्चिक संक्रान्ति अगहन बदी १० बुधवार सं० १६६५ को १८ घड़ी ५२ पल पर लगी थी।

दक्षिणका युद्ध।

बादशाहने आगरेके कानूंगो बिहारीचन्दके भतीजेको आगरेके किसानोंमेंसे भरती किये हुए एक हजार पैदलों सहित परवेजके पास भेजा। पांच लाख रुपये और उसको पास खर्चके लिये भेजे।

४ शव्वाल (पौष सुदी ५) गुरुवारको बादशाहने रुपये बांटे। उनमेंसे एक हजार रुपये पठान (१) मिश्रको मिले।

नक्कारा देनेका प्रबन्ध।

बादशाहने हुक्म दिया कि नक्कारा उन लोगोंको दिया जावे जिनका मनसब तीन हजारी या तीन हजारीके ऊपर हो।

चन्द्रग्रहण।

पौष सुदी १५ को चार घडी दिन रहे चन्द्रग्रहण लगा। गहते गहते सब चांद गह गया। पांच घडी रात गये तक गहाही रहा। बादशाहने उसके दोष निवारणके लिये सोने चान्दी कपडे और धानका तुलादान किया। घोडोंका दान भी किया। सब मिला कर १५ हजारका माल दानपात्रोंको बांटा गया।

२५ (माघ बदी १२) को बादशाहने रामचन्द्र बुन्देलेकी बेटी उसके बापकी प्रार्थनासे अपनी सेवाके वास्ते ली।

बिहारीचन्द।

१ जीकाद (माघ सुदी ३) गुरुवारको बिहारीचन्दको पांच सदी जाती और तीन सौ सवारोंका मनसब मिला।

दक्षिण।

बादशाहने मुल्लाहयातीको खानखानांके पास भेजकर बहुतसी कृपासे भरी हुई बातें कहला भेजीं थीं। मुल्ला वहां होकर लौट आया। खानखानांके भेजे एक मोती और दो लाल लाया। उनका मूल्य बीस हजार कूता गया।

---

(१) यह नाम फारसी लिपिमें भ्रमयुक्त होनेसे नहीं पढा गया।

(१) चण्डू पंचांगमें पौष सुदी १५ शनिवारको २५ घ० ४७ प० पर चन्द्र ग्रहण लिखा है।

६ जीकाद (माघ सुदी ८) को परवेजके दक्षिण पहुंचनेसे पहले खानखानां और दूसरे अमीरोंकी यह अर्जी दक्षिणसे पहुंची कि दक्षिणी लोग फसाद किया चाहते हैं। बादशाहने परवेज और दूसरी सेनाओंके भेजे जाने पर भी अधिक सहायताकी आवश्यकता समझकर स्वयं दक्षिणकी तरफ जानेका विचार किया। आसिफ खांकी अर्जी आई कि बादशाहका इधर पधारना बहुत आवश्यक है। बीजापुरके आदिलखांकी भी अर्जी पहुंची कि राजसभाके विश्वासपात्रोंमेंसे कोई आवे तो उससे अपने मनोरथ कहूं और वह लौटकर बादशाहसे कहे तो दासोंका कल्याण हो।

बादशाहने सचिवों और शुभचिन्तकोंसे सलाह पूछी और प्रत्येककी सम्मति ली। खानजहांने कहा कि जब इतने बड़े बड़े सुभट दक्षिण जीतनेको जाचुके हैं तो हजरतका पधारना आवश्यक नहीं है। यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और इस कामको पूरा करूं।

बादशाहको उसका वियोग स्वीकार न था और युद्ध भी बड़ा था इस लिये शुभचिन्तकोंकी सम्मति स्वीकार करके उसको फरमाया कि फतहपुर होतेही लौट आना एक वर्षसे अधिक वहां न रहना। १७ फागुन सुदी ५) शुक्रवारको उसके जानेका मुहूर्त्त था। उस दिन बादशाहने उसको जरीका खासा खिलअत खासा घोड़ा जड़ाऊ जीनका जड़ाऊ परतला, खासा हाथी, तूमान और तोग देकर विदा किया। फिदाईखांको घोड़ा खिलअत और खर्च देकर खानजहांके साथ भेजा और उससे कह दिया कि जो किसी को आदिलखांके पास उसकी प्रार्थनाके अनुसार भेजनेकी आवश्यकता हो तो इसको भेजें। लक्षू पण्डितको भी जो अकबरके समय में आदिलखांकी भेट लेकर आया था घोड़ा सिरोपाव और रुपये देकर खानजहांके साथ कर दिया।

अबदुल्लहखांके पास जो अमीर राणाकी लड़ाईके वास्ते थे उनमें से राजा नरसिंह देव बुन्देला और राजा विक्रमाजीत आदिको

चार पांच हज़ार सवारोंसहित बादशाहने खानजहांको सहायतापर नियत किया। मोतमिदखांको उनके पास भेजा कि साथ जाकर उनको उज्जैनमें खानजहांके पास पहुँचा दे।

दरीखाने अर्थात दरबारमें रहनेवालोंमेंसे सैफखां आदि छः सात हज़ार सवारोंकी नौकरी भी खानजहांके साथ बोली गई। उनको भी मनसबकी वृद्धि मदद खर्च और सिरोपावसे सन्तुष्ट किया गया।

मुहम्मदी वेग इस लशकरका बखशी नियत हुआ और १० लाख रुपये उसको खर्चके वास्ते दिये गये।

शिकार।

बादशाह लशकरको बिदा करके शिकार खेलनेके वास्ते शहरसे निकला। रबीकी फसल उस समय पक गई थी। इस लिये बादशाहने उसकी रक्षाके हेतु 'कोरियसावल(१)' को तो बहुतसे अहदियोंके साथ पहलेही भेज दिया था। अब कई मनुष्योंको हुक्म दिया कि हर कूचमें जितनी फसलकी हानि हो उसका अन्दाजा करके प्रजाको मूल्य देदिया जावे।

२२ (फागुन बदी ८) को जब कि बादशाह एक नीलगायको गोली मारना चाहता था अचानक एक जिलोदार (अर्दली) और दो कहार आगये। नीलगाय भडककर भाग गई। बादशाहने क्रोधमें आकर हुक्म दिया कि जिलोदारको इसी जगह मार डालें और कहारोंके पांव कटवाकर उनको गधे पर चढावें और लशकरके आसपास फिरावें जिससे फिर कोई ऐसा साहस न करे।

पांचवा नौरोज।

१४ जिलहज्ज (फागुन बदी ११) रविवारको दो पहर तीनघडी दिन चढे सूर्यदेवताका रथ मेख राशि पर आया। बादशाह गांव वाकमल परगने बाडीमें पिताकी प्रथाके अनुसार सिंहासनपर बैठा। दूसरे दिन नौरोज था और पांचवें सनके फरवरदीन महीनेकी पहली तारीख थी। बादशाहने सवेरेही आमदरबार करके सब अमीरों और कर्मचारियोंका सलाम लिया। बाजे अमीरोंकी

(१) बादशाही हथियार रखनेवाला चोबदार।

भेट भी हुई। खानआजमने चार हजार रुपयेका एक मोती नजर किया। महाबतखांने भेटमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक सन्दूक दिया जिसके आसपास बिल्लौरके तख्ते लगे हुए थे। उनमेंसे भीतर की वस्तु दिखाई देती थी।

फतहउल्लह शरबतचीका बेटा नसरुल्लह भेटका भाण्डारी नियत हुआ।

सारंगदेव जो दक्षिणके लश्करसें आज्ञापत्र पहुँचानेके लिये नियत हुआ था बादशाहने उसके हाथ परवेज और हरेक अमीर के वास्ते कुछ कुछ निजकी चीजे भेजीं।

दूसरे दिन बादशाहने सवारी करके दो सिंह और सिंहनोका शिकार किया। अहदियोंको जो बहादुरी करके सिंहसे जा लिपटे थे इनाम दिया और उनके वेतन बढाये।

२६ (चैत बदी १३) को बादशाह रूपवास(१) में आकर कई दिन तक वहां हरनोंका शिकार खेलता रहा।

---

(१) रूपवास यह परगना भरतपुर राज्यमें है।

छठा वर्ष।

सन १०१९।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६७ से चैत्र सुदी २ संवत् १६६८ तक।

---

१ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) शनिवारको रूपखवासने जिसका बसाया हुआ रूपवास था भेटकी सामग्री सजाकर बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसमेंसे कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर शेष उसीको देदी। सोमवारके दिन बादशाह मंडाकरके बागमें आगया जो आगरेके पास है।

बादशाहका आगरेमें आना।

मंगलवारको एक पहर दो घडी दिन चढ़े शहरमें प्रवेश होनेका मुहूर्त था। बादशाह बस्तीके प्रारम्भ होने तक घोड़े पर गया आगे इस अभिप्रायसे हाथी पर बैठकर चला कि जिसमें पास और दूरकी सब प्रजा देख सके। मार्गमें रुपये लुटाता चला। दोपहर बाद ज्योतिषियोंके नियत किये हुए समय पर सानन्द राजभवनमें सुशोभित हुआ जो नौरोजके निर्दिष्ट नियमोंके अनुसार अति सुन्दर और सुहावनी विधिसे सजाया गया था। बड़े बड़े भड़कीले दल बादल डेरे और तम्बू ताने गये थे। बादशाहने सब सजावट देखकर ख्वाजिजहांकी भेटमेंसे जवाहिर और दूसरे पदार्थ स्वीकार किये शेष उसीको बख्श दिये।

शिकारकी संख्या।

बादशाहने मृगयाके कर्मचारियोंको हुक्म दिया था कि जानेके दिनसे लौटनेकी तिथि तक जितने पशु शिकार हुए हों उनकी संख्या बतावें। उन्होंने बताया कि पांच महीने छः दिनमें तेरहसौ बासठ पशु पक्षी और हिंसक जन्तु मारे गये है—

सिंह	७
नीलगाय	७०

है आया और वहांवालोंसे जो पक्के दंगई हैं मेलमिलाप करके बोला कि मैं खुसरो हूं बन्दीखानेसे भागकर आया हूं। जो तुम मुझे सहायता दोगे तो कार्य्यसिद्ध होनेके पीछे तुम्ही मेरे प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहोगे।

उसने अपने खुसरो होनेका निश्चय करानेके लिये उन्हे अपनी आंखके पास घावका एक चिन्ह दिखाया। कहा कि कारागारमें मेरी आंख पर एक कटोरी बांधी गई थी उसका यह चिन्ह है। इस छलसे बहुतसे पेदल और सवार उसके पास जुड गये और अफजलखांके पटनेमें न होनेको अपना अहोभाग्य समझकर चढ दौडे और गत रविवारको २।३ घडी दिन चढे पटनेमें जा पहुंचे। किसी बातका विचार न करके सीधे किलेको गये। शेख बनारसी घबरा कर द्वार पर आया। परन्तु किवाड बन्द करनेका अवकाश न पाकर दीवान गयास सहित खिडकीसे बाहर निकला और नावमें बैठकर अफजलखांको समाचार देनेको गया।

उन दुराचारियोंने किलेमें घुसकर अफजलखांका धनमाल बादशाही खजाने सहित लूट लिया। शहरके भीतरी और बाहरी बदमाश सब उससे आमिले।

अफजलखांको गोरखपुरमें यह खबर लगतेही बनारसी और गयास भी जलमार्गसे वहां पहुचे। शहरसे लिखा आया कि यह खुसरो नहीं है। तब अफजलखां रामभरोसे शत्रुसे लडनेको चल कर पांचवें दिन पटनेके पास पहुचा। यह सुनकर कुतुबने भी उसने एक विश्वासपात्रको किलेमें छोडा और चार कोस सामने आकर पुनपुन नदीके ऊपर अफजलखांसे लडाई की और थोडेही भागकर किलेमें घुस गया। पर अफजलखांके पीछे लगे चले आने से किवाड मूंदनेका औसान न पाकर उसीकी हवेलीमें जा बैठा और दोपहर तक लडता रहा। तीन आदमी तीरोंसे मारे। फिर जब उसके साथी मारे गये तो शरण लेकर अफजलखांके पास चला आया। अफजलखांने उपद्रव मिटानेके लिये उसको उसी दिन मार डाला और उसके साथियोंको पकड लिया।

बादशाहने जब यह समाचार सुने तो बनारसी गयास और दूसरे मनसबदारोंको जिन्होंने किलेकी रखवाली नहीं की थी बुलवाया उनके सिर और मूछें मुंडवाकर ओढ़नी उढवाई और गधे पर बैठाकर आगरेके बाहर और बाजारोंमें फिरवाया जिससे दूसरे लोगोंको डर हो।

दक्षिण।

१६ सफर (जेठ बदी ३) को बादशाहने परवेज और शुभचिन्तक अमीरोंके लिखनेसे मीर जमालुद्दीन हुसैन अनजूको आदिल खां और दूसरे दक्षिणी जमींदारोंके मनका सन्देह दूर करने और उनको बादशाही सेवामें लगानेके लिये दस हजार रुपये देकर दक्षिणको भेजा।

बांधों पर सेना।

बांधोंके जमींदार विक्रमाजीतको दण्ड देनेके लिये जिसने अधीनता छोड़ दी थी बादशाहनें राजा मानसिंहके पोते महासिंह को भेजा और यह हुक्म दिया कि उधरके दुराचारियोंको विध्वन्स करके राजाकी जागीर पर अपना दखल करलें।

राणाको मुहिम।

२८ (जेठ बदी ३०) को अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अरजी कई साहसी सरदारोंकी सफारिशमें पहुंची। उन्होंने राणाकी लड़ाईमें अच्छे काम किये थे। बादशाहने उनमेंसे गजनीखां जालोरीकी सेवा सबसे अधिक देखकर उसके मनसब पर जो डेढ़ हजारी जात और तीनसौ सवारोंका था पांच सदी जात और चारसौ सवार और बढ़ा दिये। ऐसेही औरोंके भी मनसब बढ़ाये।

काले पत्थरका सिंहासन।

४ महर चन्द्रवार(१) (आश्विन सुदी १०) को दौलतखां इलाहा-

---

(१) तुजुक जहांगीरी (पृष्ठ ८५) में ४ महर बुधको लिखो है सो अशुद्ध है चन्द्रवारको चाहिये क्योंकि आगे १० आजर शुक्रकी रातको ठीक लिखी है दिनको गुरु और रातको शुक्र मुसलमानी हिसाबसे होजाता है।

बादसे काले पत्थरका सिंहासन लाया उसे बादशाहने मंगवाया था। यह दो गिरह कम ४ गज लम्बा, अढ़ाई गज और तीन तसू चौडा और ३ तसू मोटा बहुत काला और चमकदार था। बादशाहने उसकी कोरों पर कुछ कविता खुदवाकर पाये भी वैसेही पत्थरके लगवा दिये। बादशाह कभी कभी उस पर बैठा करता था।

दक्षिण।

१२ महर (कार्तिक बदी ३) को खानजहांकी अरजी पहुंची कि खानखानां, आज्ञानुसार महाबतखांके साथ दरबारको रवाने होगया और मीर जमालुद्दीनको आदिलखांके वकीलों सहित बीजापुरको भिजवा दिया है।

सूबेदारोंकी बदली।

२१ महर (कार्तिक बदी १३) मुरतिजाखां पंजाबकी सूबेदारी पर और ताजखां मुलतानसे काबुलकी सूबेदारी पर भेजा गया मुरतिजाखांको खासेका दुशाला मिला और ताजखांके मनसबमें पांच सौ सवार और बढ़कर तीन हजारी और दोहजार सवारोंका मनसब होगया।

राणा सगर।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गके प्रार्थना करनेसे राणा सगरके बेटेका भी मनसब बढ़ गया।

खानखानां।

१२ आबान (अगहन बदी ३।४)(१) को खानखानांने जिसे लेने महाबतखां गया था बुरहानपुरसे आकर मुजरा किया। बादशाह लिखता है—"उसके विषयमें बहुधा शुभचिन्तकोंने यथार्थ और अयथार्थ बातें अपनी समझसे कही थीं और मेरा दिल उससे फिर गया था। इसलिये जो छापा मैं सदासे उसपर करता था या अपने बापको करते देखता था वह इस समय नहीं की। ऐसा करनेमें मैं सच्चा था क्योंकि वह इससे पहिले दक्षिण देशके माफ करनेको

(१) इस दिन तिथि छेद था अर्थात् दोनों तिथियां एक दिन थीं।

अवधि नियत करके प्रतिज्ञापत्र दे चुका था और सुलतान परवेजकी सेवामें दूसरे अमीरों सहित उस बड़े काम पर गया था। परन्तु बुरहानपुरमें पहुंचे पीछे समयानुसार रसद और दूसरी आवश्यक वस्तुओंका प्रबन्ध न किया। जब सुलतान परवेज घाटके ऊपर फौजें लेकर गया और सरदारोंकी फूटसे काम बिगड़ा तो अनाज का मिलना ऐसा कठिन हुआ कि एक मन बहुतसे रुपयोंमें नहीं मिलता था। घोड़े ऊंट और दूसरे पशु मर गये। सुलतान परवेजने देशकाल देखकर शत्रुओंसे सन्धि की और लशकरको बुर-हानपुरमें लौटा लाया। इस दुर्घटनाका कारण सब शुभचिन्तकोंने खानखानांका विरोध और कुप्रबन्ध जानकर दरबारमें अर्जियां लिखीं। उन पर विश्वास तो न हुआ परन्तु दिलमें खटका पड़ गया। अन्तमें खानजहांकी अर्जी पहुंची कि यह सब खराबी खानखानांके अन्तरद्रोहसे हुई है। अब इस काम पर या तो उसी को स्वतन्त्रतासे रखना चाहिये या उसको दरगाहमें बुलाकर मुझ कृपापात्रको यह सेवा सौंपनी चाहिये और तीस हजार सवारोंकी सहायता भी देनी चाहिये। दो सालमें वह सब बादशाही मुल्क जो गनीमने लेलिया है छुड़ाकर कन्धार(१)का किला सीमाप्रान्तके दूसरे किलों सहित जीत लूंगा। बीजापुरका देश भी बादशाही राज्यमें मिला दूंगा। यह सब काम ऊपर कही अवधिमें न कर डालूं तो दरबारमें मुंह न दिखाऊंगा।

"जब सरदारोंमें और खानखानांमें यहांतक खिंच गई तो मैंने उसका वहां रहना उचित न देखकर खानजहांको सेनापति किया और खानखानांको दरगाहमें बुला लिया। अभी तो यह कारण क्यों नहीं होनेका है आगे जैसा कुछ प्रगट होगा वैसाही बरताव होगा।"

खानखानांके बेटे दाराबखांको हजारी जात और पांच सौ सवारकी नौकरी और गाजीपुरकी सरकार जागीरमें दीगई।

(१) मुसलमानी हिसाबसे शुक्रकी रात।

१७ आज़ान (अगहन बदी८) मङ्गलवारको खुर्रमका व्याह मिरजा मुजफ्फरहुसैन सफवीकी बेटीसे हुआ। बादशाह खुर्रमके घर गया। रातको वहीं रहा। बहुतसे अमीरोंको सिरोपाव मिले और कुछ कैदी भी गवालियरके किलेसे छोडे गये। कुछ चांदी सोना और अन्न आगरेके फकीरोंको बांटा गया।

दक्षिण।

इसी दिन खानजहांकी अर्जी पहुंची कि खानखानांके बेटे एरज को शाहजादेकी आज्ञा लेकर दरबारमें भेजा है। अबुलफतह बीजापुरीके भेजनेका भी हुक्म था परन्तु वह कामका आदमी है और अभी उसके भेजनेसे दक्षिणी सरदारोंकी आशा भङ्ग होती है जिनको बचनपत्र दिये गये हैं, इसलिये रख लिया है। राय कल्ला के बेटे केशवदास मारूके वास्ते हुक्म हुआ कि उसके भेजनेमें ढील भी हो तोभी जैसे बने वैसे भेजदो। शाहजादेने यह बात जानते ही उसे छुट्टी देदी और कहा कि मेरी तरफसे अर्जीमें लिखना कि जब मैं अपना जीना पूज्यपिताकी सेवाहीके लिये चाहता हूं तोकेशव-दासका होना न होनाही क्या जो उसे भेजनेमें ढील करूं? पर मेरे विश्वासपात्र नौकरोंके किसी न किसी प्रसङ्गसे बुला लेनेसे दूसरे आदमी निराश और हताश होते हैं। इससे सीमाप्रान्तमें आपकी अप्रसन्नताका भ्रम फैलता है। आगे आपकी इच्छा।

अहमदनगरका छूटना।

जिस दिनसे अहमदनगर शाहजादे दानियालने लिया था अब तक ख्वाजाबेगमिरजा सफवीके संरक्षणमें था। यह मिरजा ईरानके शाहतुहमास्प सफवीके भाई बन्दोंमेंसे था। अब दक्षिणियोंने आकर उस किलेको घेरा तो मिरजाने उसके बचानेमें कोताही न की। खानखानां और दूसरे अमीर जो बुरहानपुरमें इकट्ठे हुए थे परवेज के साथ दक्षिणियोंसे लडनेको गये परन्तु आपसके विरोधसे उस भारी लशकरको जो बडे बडे काम करनेको समर्थ था धान चारेका प्रबन्ध किये बिना औघट घाटों और विकट पहाडोंमेंसे लेगये। इससे थोड़ेही दिनोंमें यह दशा होगई कि लोग रोटीके वास्ते जान

देने लगे। तब लाचार होकर रास्तेमेंसेही लौट आये और किले वाले जो इनके आनेका रास्ता देख रहे थे यह समाचार सुनतेही घबराकर निकलने लगे। ख्वाजाबेगमिरजाने उनको बहुत रोका। जब नहीं रुके तो निदान सन्धि करके अपनी सेना सहित निकला और बुरहानपुरमें शाहजादेके पास आगया। बादशाहको जब इस हालकी अर्जी पहुंची तो उन्होंने ख्वाजाबेगका कुछ कसूर न देखकर उसका मनसब जो पांच हजारी जात और सवारका था बना रक्खा और उसके वास्ते जागीर देनेका भी हुक्म चढ़ा दिया।

बीजापुर।

८ रमजान (अगहन सुदी ११) को दक्षिणसे कई अमीरोंकी अर्जी पहुंची कि मीर जमालुद्दीन २२ शाबान (अगहन बदी ८) को बीजापुर पहुंचा। आदिलखांने अपने वकीलको २० कोस अगवानीमें भेजा था तीन कोस तक आप भी आकर मीरको अपने स्थान पर लेगया।

शिकार।

१५ (पौष बदी २) गुरुवारकी रात(१)को एक पहर छः घडी रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्तमें बादशाहने आगरेसे शिकारके वास्ते प्रयाण करके दहराबागमें डेरा किया। खेतीका बिगाड न होनेके अभिप्रायसे हुक्म दिया कि आवश्यक सेवकों और निज अनुचरोंके अतिरिक्त और सब लोग नगरमें रहें। नगरकी रक्षा ख्वाजेजहांको सौंपी।

२८ आजर २१ रमजान (पौष बदी ८) को ४४ हाथी जो कासिमखांके बेटे हाशिमखांने उडीसेसे भेटके लिये भेजे थे, पहुंचे। उनमेंसे एक हाथी बादशाहको बहुत पसन्द आया। वह खासेके हाथियोंमें बांधा गया।

सूरज गहन।

२८ रमजान (पौष बदी ३०) को सूरजगहन(१) हुआ।

---

(१) मुसलमानी हिसाबसे शुक्रकी रात।

(१) चण्डू पञ्चांगमें यह गहन धन राशि पर १५ बिस्वा लिखा है।

बादशाहने उसका भार निवारण करनेके वास्ते अपनेको सोने चांदी में तौला। अठारहसौ तोले सोना और उननचास सौ रुपये चढ़े। यह धन अनेक प्रकारके धान्य और हाथी घोड़े गाय आदि सहित आगरे तथा अन्य नगरोंमें भेजकर गरीबोंको बंटवा दिया।

दक्षिण और खानआजम।

दक्षिणमें परवेजके सेनापति, खानखानांके मुखिया, राजा मानसिंह, खानजहां, आसिफखां, अमीरुलउमरा जैसे बडे बडे अमीरों तथा दूसरे सरदारों और मनसबदारोंके सहायक होनेसे भी कुछ काम नहीं निकला था बल्कि यह लोग अहमदनगर जाते हुए आधे रास्तेसे लौट आये थे जिसके विषयमें भरोसेके मनुष्यों और सच्चे खबरनवीसोंने बादशाहको अर्जियां लिखी थीं कि इस लशकरके तितर बितर होनेके और भी कई कारण है। परन्तु उनमें मुख्य अमीरोंकी फूट और विशेष करके खानखानांकी अन्तरदुष्टता है। इसपर बादशाहने उस गडबडकी शान्तिके लिये खानआजमको नई सेनाके साथ भेजना स्थिर करके ११ दे (माघ बदी ३) को यह सेवा उसे सौंपी और दीवानोंसे शीघ्रही उसके जानेका प्रबन्ध कराके एक हजार मनसबदार सवारों दोहजार अहदियों और खानआलम आदि अमीरोंके साथ उसको बिदा किया। कई हाथी और तीस लाख रुपये दिये। भारी सिरोपाव जडाऊ तलवार जडाऊ जीनका घोडा और खासा हाथी देकर पांच लाख रुपये मददखर्चके लिये दिलाये जिनके वास्ते दीवानोंको उसकी जागीरसे भर लेनेका हुक्म हुआ। उसके साथके अमीरोंको भी घोडे और सिरोपाव मिले। महाबतखांके मनसबके चार हजारी जात और तीन हजार सवारों पर पांचसौ सवार और बढ़ाकर हुक्म दिया कि खानआजम और इस लशकरको बुरहानपुरमें पहुंचाकर खानआजमकी सरदारीका हुक्म वहांके सब अमीरोंको सुना दे और पहले भेजे हुए लशकर में जो गडबड़ हुई है उसका निर्णय करके खानखानांको अपने साथ ले आवे।

अनूपरायका सिंहदलन होना।

४ शव्वाल (पौष सुदी ४) रविवारको बादशाह चीतेके शिकार में लगा हुआ था कि एक सिंह उठा और अनूपराय उससे लड़ा। इसका वृत्तान्त बादशाह यों लिखता है—"मैंने यह बात ठहराई है कि रविवार और गुरुवारको कोई जीव नहीं मारा जावे और मै भी इन दोनो दिनोंमें मांस नहीं खाता हूं।"

"रविवारको तो इस हेतु कि मेरे पिता उस दिनको पवित्र जानकर मांस नहीं खाते थे। पशुहिंसाका भी निषेध था क्योंकि उस दिन रातको उनका जन्म हुआ था। वह फरमाया करते थे कि इस दिन उत्तम बात यही है कि जीव जन्तु कसाइयोंकेसे स्वभाववाले मनुष्योंको दुष्टतासे बचे रहे।

गुरुवार मेरे राज्याभिषेकका दिन है। इस दिन मैंने भी जीवों के नहीं मारनेका हुक्म देरखा है। दोनों दिन शिकार भी मैं तीर और बन्दूकसे नहीं मारता हूं।

जब चीतेका शिकार होरहा था तो अनूपराय जो निज सेवकों मेंसे है, कई लोगोंको जो शिकारमें साथ रहते हैं मुझसे कुछ दूर छोडकर आता था। एक वृक्ष पर कई चीलें बैठी देख कमान और कई तुक्के लेकर उधर गया तो एक अधखाई गाय पडी देखी और साथही एक बडा भयङ्कर सिंह झाडों मेंसे निकल कर चला। उससमय दो घडीसे अधिक दिन नहीं था तोभी उसने उस सिंहको घेर कर मेरे पास आदमी भेजा। क्योंकि वह खूब जानता था कि मेरी रुचि सिंहके शिकार में कितनी अधिक है।

मेरे पास यह खबर पहुँची तो मैं तत्काल व्याकुलतासे घोड़ा दौडाता हुआ गया। बाबा खुर्रम, रामदास, एतमादराय, हयात-खां तथा एक दो और मेरे साथ हुए। वहां पहुँचतेही मैने देखा कि सिंह एक वृक्षकी छायामें बैठा है। मैने चाहा कि घोडे पर चढ़े ही चढे बन्दूक मारूं परन्तु घोडा एक जगह नहीं ठहरता था इस लिये मै पैदल होगया और बन्दूक सीधी करके छोड़ी। सिंहके

लगी या नहीं इसका कुछ पता न लगा। क्योंकि मैं ऊंचे पर था और सिंह नीचे। क्षणभर पीछे मैंने घबराहटमें दूसरी बन्दूक चलाई। शायद यह गोली उसको लगी। वह उठा और दौड़ा। एक मीर शिकारी शाहीनको हाथ पर लिये उसके सामने पड़ा। वह उसको घायल करके अपनी जगह जा बैठा। मैंने दूसरी बन्दूक तिपाये पर रखकर तोली। अनूपराय तिपायेको पकड़े खड़ा था एक तलवार उसकी कमरमें थी और लाठी हाथमें। बाबा खुर्रम बाईं ओर कुछ फासिलेसे था और रामदास तथा दूसरे नौकर उसके पीछे थे। कमाल किरावल (शिकारी) ने बन्दूक भर कर मेरे हाथमें दी। मैं चलायाही चाहता था कि इतनेमें शेर गरजता हुआ हमारे ऊपर झपटा। मैंने बन्दूक मारी। गोली उसके मुंह और दांतोंमें होकर निकल गई। बन्दूककी कड़कसे वह और बिफरा। बहुतसे सेवक जो वहां आ भरे थे डरकर एक दूसरे पर गिर गये। मैं उनके धक्केसे दो एक कदम पीछे जापड़ा। यह मुझे निश्चय है कि दो तीन आदमी मेरी छाती पर पांव रख कर मेरे ऊपरसे निकल गये। मैं एतमादराय और कमाल किरावल के सहारेसे खड़ा हुआ इस समय सिंह उन लोगों पर गया जो बाईं तरफ खड़े थे। अनूपराय तिपायेको हाथसे छोड़कर सिंहके सामने हुआ। सिंह जिस फुरतीसे आरहा था उसी फुरतीसे उसकी ओर लौटा। उस पुरुष सिंहने भी वीरतासे सम्मुख जाकर वही लाठी दोनों हाथोंसे दो बार उसके सिर पर मारी। सिंहने मुंह फाड़कर अनूपरायके दोनो हाथ चबाडाले। परन्तु उस लाठी और कई अंगूठियोंसे जो हाथमें थीं बड़ा सहारा मिला और हाथ बेकार न हुए। अनूपराय सिंहके धक्केसे उसके दोनो हाथोंके बीचमें चित गिर गया। उसका मुंह सिंहकी छातीके नीचे था। बाबा खुर्रम और रामदास अनूपरायकी सहायताको बढ़े। खुर्रम ने एक तलवार सिंहकी कमर पर मारी रामदासने दो मारीं। जिनमेंसे एक उसके कन्धे पर पूरी बैठी हयातखांके हाथमें

लाठी थी वही उसने कई बार उसके मस्तक पर दी। अनूपरायने बल करके अपने हाथ सिंहके मुंहसे छुडा लिये और दो तीन घूंसे जबडे पर मारे और करवट लेकर घुटनेके बल उठ खडा हुआ। सिंहके दांत उसके हाथोंमें पार होगये थे इसलिये उसके मुंहसे हाथ खेंचे तो उस जगहसे फट गये और सिंहके नाखून भी उसके कान्धे से निकल गये थे।

अनूपरायके खडे होतेही शेर भी खडा होगया और उसकी छाती पर नाखून और पंजे मारने लगा। जिनके घावोंने कई दिन तक उसको व्याकुल रखा। फिर वह दोनो दो मल्लोंके समान एक दूसरेसे लिपटकर उस ऊंची नीची धरतीमें लुढ़क गये। मैं जहां खड़ा था वह भूमि समान थी। अनूपराय कहता था कि परमेश्वरने मुझे इतना औसान दिया कि सिंहको मैं उधर लेगया और मुझे कुछ खबर नहीं है।

अब सिंह उसको छोडकर चल देता है। अनूपराय उसी बेहोशी में तलवार सूंतकर उसके पीछे जाता है और उसके सिर पर मारता है। सिंह जो पीछेको मुंह फेरता है तो दूसरा हाथ फिर उस पर झाडता है जिससे दोनो आंखें उसकी कट जाती हैं और भंवोका मांस कटकर आंखों पर आजाता है। उसी अवसर पर सालह नाम चरागची (नाई) घबराया हुआ आता है क्योंकि दीपक का समय होगया था सिंह एक ही तमांचेमें उसको गिरा देता है। गिरना और मरना एक था। दूसरे आदमियोंने पहुंचकर सिंहको मार डाला।

अनूपरायसे इस प्रकारजो सेवा बन आई और उसका ऐसा जान लडाना देखा गया। घाव भर जानेके पीछे अच्छा होकर जब वह मुजरा करनेको आया तो मैंने उसको अनीराय सिंहदलनका खिताब दिया और कुछ उसका मनसब भी बढ़ाया। अनीराय हिन्दी भाषामें फौजके सरदारको कहते हैं और सिंहदलनका अर्थ शेर मारनेवाला है।

शिकार।

२३ जीकाद (फागुन वदी ८) रविवार (१) को बादशाहने ७६६ मछलियां पकड़कर अपने सन्मुख अमीरों और दूसरे नौकरोंको बांटीं।

एक ऊंट जिस पर ५ नीलगायें ४२ मनकी लादी गई थीं उठ कर खड़ा होगया था। यह ऊंट शिकारकी घरमें उत्पन्न हुए ऊंटोंमेंसे था।

मुल्ला नजीरी जो फारसी भाषाका अच्छा कवि था गुजरातमें व्यापार करता था। बादशाहने प्रशंसा सुन कर उसे बुलाया। उसने आकर एक कविता सुनाई। बादशाहने एक हजार रुपये घोडा और सिरोपाव उसको दिया।

सुरतिजाखांने हकीम हमीद गुजरातीकी बहुत प्रशंसा की थी बादशाहने उसको बुलाया और हकीमोंसे अधिक उसमें सज्जनता देखी। परन्तु यह भी सुना कि गुजरातमें उसके सिवा कोई हकीम नहीं है और वह भी जाना चाहता था इसलिये एक हजार रुपये बाई शाल दुशाले और एक गांव देकर बिदा किया।

बकरईद।

१० जिलहज्ज (फागुन सुदी १२) गुरुवारको पशुवध बन्द हो चुका था इसवास्ते बादशाहने शुक्रवारको ईदका बलिदान करनेकी आज्ञादी और तीन बकरियां अपने हाथसे वध कीं। फिर शिकार को गया एक नीलगायने बहुत थकाया जो कईबार गोली खाकर

(१) तुजुक जहांगीरीमें तारीख २ जीकाद रविवारको लिखी है वह पंचांगसे नहीं मिलती जिसके हिसाबसे तारीख २ मंगलको होती है यह तारीख २ मूलमें २३ होगी। लेखककी भूलसे २ लिखी रह गई। २३ को चण्डू पचांगसे तो चन्द्रवार होता है पर बादशाही पंचांगमें रविवार होगा और शव्वालका महीना २८ दिनका माना गया होगा जो चण्डू पंचांगके हिसाबसे ३० दिनका होता है।

चली गई थी और अब भी तीन गोलियां खाचुकी थी। बादशाह उसके पीछे पीछे फिरता रहा। निदान यह संकल्प किया कि जो यह नीलगाय गिरेगी तो इसका मांस ख़्वाजे मुईनुद्दीनके अर्पण कर के फकीरोंको बांट दूंगा एक मोहर एक रूपया अपने बापके भी भेट करूंगा।

ऐसा कहतेही वह नीलगाय थककर गिरी और बादशाहने उस का मांस तथा मोहर और रुपयेका शीरा पकवाकर अपने सामने भूखों और फकीरोंको खिला दिया।

दो तीन दिन पीछे फिर एक नीलगायके पीछे बादशाह कंधे पर बन्दूक रखे हुए शाम तक फिरता रहा परन्तु वह एक जगह नहीं ठहरती थी दिन छिपने पर उसके मारने से निराश होकर फिर बादशाहने कहा कि ख़्वाजा यह नीली भी तुम्हारे नजर है यह कहना था कि वह बैठ गई और बादशाहने उसको बन्दूकसे मार कर उसका मांस भी उसी भांति फकीरों को खिला दिया।

चैत बदी ७ शनिवारको २२० मछलियोंका शिकार हुआ।

१८ शनि (चैत बदी ३०) को रातको बादशाह रूपवासमें आगया। जो उसकी निज शिकारगाह थी और जिसके आसपास भी किसीको शिकार मारनेकी आज्ञा न थी। इससे वहां असख्य हरन भर गये थे वह बस्ती में चले आते थे और सब प्रकारकी हानि से बचे रहते थे। बादशाहने दो तीन दिन वहां शिकार खेलकर बहुतसे हरन बन्दूकसे मारे और चीतोंसे मरवाये।

सातवां वर्ष।

सन् १०२०।

चैत्र सुदी ३ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६६८ तक।

राजधानीमें प्रवेशका मुहूर्त्त समीप आजानेसे बादशाह २ मुहर्रम (चैत्र सुदी ३) गुरुवारको अबदर्रज्जाक मामूरीके बागमें आया। ख्वाजाजहां वगैरह आगरेसे वहां आगये। खानखानांके बेटे एरजने भी जो दच्छिणसे बुलाया गया था वहीं उपस्थित होकर मुजरा किया।

शुक्रको भी बादशाह उसी बागमें रहा। अबदुर्रज्जाकने अपनी भेंट दिखाई।

शिकारकी संख्या।

तीन महीने बीस दिनमें १४१४ पशु पच्छी शिकार हुए थे—

सिंह	१२	खरगोश	६
गैंडा	१	नीलगाय	१०८
चिकारे	४४	मछलियां	१०८६
चीतापाचा	१	उकाब	१
हरनके बच्चे	२	तगदरी	१
काले हरन	६८	मोर	५
हरनी	३१	करवानक	५
लोमड़ी	४	तीतर	५
कोराहरन	८	सुरखाब	१
पातल	१	सारस	५
रीछ	५	ढींक	१
जरख	३	कुल	१४१४

आगरेमें प्रवेश।

४ मुहर्रम २८ असफंदार (चैत्र सुदी ५ संवत् १६६८) शनिवार

को बादशाह हाथीपर सवार हो अबदुर्रज्जाकके बागसे किलेके दौल-तखाने तक जिसका फासिला एक कोस और २० डोरी था पन्द्रहसौ रुपये लुटाता गया और ज्योतिषियोंके दिये हुए मुहूर्त्तमें नये राज-भवनमें पहुंचा जिसके बनानेका हुक्म शिकारको जाते हुए देगया था। उस राजभवनको ख्वाजेजहांने इतनी थोडी अवधिमें,अति परिश्र-मसे बनवाकर और रंग भरवाकर तैयार कर छोडा था और अपनी भेट भी उसीमें सजा रखी थी जिसमेंसे बादशाहने कुछ लेकर शेष उसको बख्श दी और भवनको पसन्द करके उसकी कार्य्यदाक्षीकी प्रशंसा की।

बाजार भी नौरोजके प्रसंगसे सजाये गये थे।

छठा नौरोज।

६ मुहर्रम (चैत सुदी ७) चन्द्रवारको दो घडी ४० पल दिन चढ़े सूरज भगवान अपने उच्चभवन मेख राशिमें आये। बादशाह के राज्याभिषेकका छठा नौरोज हुआ जिसकी मजलिसें जुडीं। बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और सब चाकरोंने मुजरा किया, बधाई दी। मीरान सदरजहां, अबदुल्लहखां, फीरोजजंग और जहांगीरकुलीखांकी भेट स्वीकार हुई।

८ (चैत सुदी १०) बुधको राजा कल्याणकी भेट जो बंगालसे आई थी दृष्टिगोचर हुई।

९ (चैत सुदी ११) गुरुवारको शुजाअतखां और कई मनसबदार जो दक्खिणसे बुलाये गये थे हाजिर आये।

मुरतिजाखांकी भेटमें बहुत तरहके बहुतसे पदार्थ थे। बाद-शाहने सबको देखकर कुछ जवाहिर उत्तम कपडे और हाथी घोडे लेलिये बाकी उसीको देदिये।

शुजाअतखां बङ्गालमें इसलामखांके पास कायममुकामीका काम करनेको भेजा गया। ख्वाजाजहां आदि कई अमीरोंके मनसब बढे कईको सिरोपाव मिले। खुर्रमको आठ हजारी जात और पांच हजार सवारोंके मनसब पर दो हजारी जातकी वृद्धि हुई।

ईरानका एलची।

१८(१) फरवरदीन (बैशाख बदी १०) की संक्रांति(२)का उत्सव हुआ। ईरानके शाह अब्बासके एलची यादगारअलीने हाजिर होकर मुजरा किया। शाहका पत्र दिया सौगातें जो लाया था दिखाईं। उनमें अच्छे अच्छे घोड़े और कपड़ोंके थान थे। बादशाहने उसको भारी खिलअत और तीस हजार रुपये दिये। पत्रमें अकबर बादशाहके मरनेका शोक और जहांगीरके गद्दी पर बैठने का हर्ष था।

खानखानांके बेटे एरजको शाहनवाजखांका खिताब मिला।

मोहरों और रुपयोंका तौल।

बादशाहने तख्त पर बैठतेही बाट और गज बढा दिये थे। रुपये और मोहरका तौल तीन रत्ती अधिक कर दिया था। परन्तु अब यह बात जानकर कि प्रजाका हित मोहर और रुपयेका पुराना तौल रहनेहीमें है अपने तमाम देशोंमें हुक्म भेज दिया कि ११ उर्दीबहिश्त (जेठ बदी ४) से टकसालोंमें रुपये और मोहरें जैसे पहिले बनती थीं वैसीही बना करें।

२ सफर १०२० (बैशाख सुदी ४) शनिवारको अहदाद यह सुनकर कि काबुलमें कोई बडा सरदार नहीं है खानदौरां बाहर गया हुआ है केवल मुअज्जुलमुल्क थोडेसे आदमियोंसे है, बहुतसे सवार और पैदल लेकर काबुलपर चढ आया। उसके पठान अलग अलग टोलियां बांधकर शहरके बाजारों और कूचोंमें घुस गये। परन्तु मुअज्जुलमुल्क और पुरवासी काबुलियों और कजलबाशोंने लडकर उनको भगा दिया और उनके मुखियाको जिसका नाम सकी था मार डाला। अहदाद यह दशा देखकर भाग गया उसके ८० आदमी मारे और २५० घोड़े पकडे गये।

---

(१) तुजुकमें इस दिन २४ मुहर्रम लिखी है, २३ चाहिये क्योंकि १ फरवरदीन ६ मुहर्रमको थी।

(२) चण्डू पञ्चाङ्गमें भी मेख संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

बादशाहने यह समाचार सुनकर मुअज्जुलमुल्क और नादअली के मनसब बढ़ाये और अहदादके दमन करनेमें खानदौरां और काबुलियोंकी सुस्ती देखकर बेटों सहित खानखानांके भेजनेका विचार किया जो दरबारमें बेकार बैठा था। इतनेमेंही कुलीचखां जो पञ्जाबसे बुलाया गया था आगया और खानखानांके नियत होनेसे दिलमें दुखी हुआ। निदान जब उसने इस कामका स्पष्ट वचन दिया तो बादशाहने पञ्जाबका सूबा तो मुरतिजाखांको दिया और कुलीचखांको छः हजारी जात और पांच हजार सवारों का मनसब देकर काबुलके संरक्षण तथा अहदाद और पहाड़ी चोरों के शासन पर नियत किया। खानखानांसे कहा कि सूबे आगरेसे सरकार कन्नौज और कालपीको जागीरकी तनखाहमें लेकर उस देशके दुष्टोंका दमन करे। बिदा करते समय प्रत्येकको खासे खिलअत हाथी और घोड़े दिये।

महाबतखां जो दक्षिण सेनाके अमीरोंको आपसमें मेल मिलाप रखनेका हुक्म सुनानेके लिये गया था २१ रबीउस्सानी (द्वितीय अषाढ बदी ८) को दक्षिणसे लौट आया।

इसलामखांके लिखनेसे इनायतखांका मनसब पांच सदी जात बढकर दो हजारी होगया और राजा कल्याण पांच सदी जात और तीन सौ सवार बढ़नेसे डेढ़ हजारी जात और आठ सौ सवारोंके मनसबको पहुंचा।

हाशिमखांको जो उड़ीसेमें था कशमीरकी सूबेदारी दीगई। इसके वहां पहुंचने तक काम करनेके लिये इसका चचा ख्वाजगी मुहम्मदहुसैन कशमीरमें भेजा गया। हाशिमखांके बाप मुहम्मद कासिमने अकबर बादशाहके समयमें कशमीरको जीता था।

कुलीचखांके बेटे चीनकुलीचको खान पदवी मिली। उसके बापकी प्रार्थना तथा तिराहदेशके प्रबन्धकी प्रतिज्ञा करने पर उसे पांच सदी जात और तीन सौ सवारोंकी तरक्की मिली।

१४ अमरदाद (सावन बदी १३) को एतमादुद्दौलाने पुराना

और स्वामिभक्त नौकर होनेसे समग्र राज्यकी दीवानीका महत् पद पाया।

गुजरात।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गने गुजरातकी ओरसे दक्षिण पर जाने का वचन दिया। इसलिये बादशाहने उसको राणाकी लड़ाईसे बदलकर गुजरातका सूबेदार कर दिया और राजा बासूको पांच सौ सवार बढ़ाकर उसकी जगह राणाकी मुहिम पर भेजा।

मालवा।

खान आजमको गुजरातके बदले मालवेका सूबा दिया गया।

दक्षिण।

अबदुल्लहखांके साथ दक्षिणको एक लशकर नासिकके मार्गसे भेजना ठहरा था उसके खर्चके वास्ते चार लाख रुपये भेजे गये।

विचित्र चित्र।

एक बादशाही गुलामने जो हाथीदांतके कारखानेमें काम करता था फिन्दकके छिलके पर हाथीकी हड्डीसे काटे हुए चित्र जोड़कर चार विचित्र चित्र बनाये। पहिला चित्र मल्लोंका अखाड़ा था दो मल्ल कुश्ती लड़ रहे थे। एक हाथमें बरछा लिये खड़ा था दूसरेके हाथमें एक बड़ा पत्थर था एक और जमीन पर हाथ टेके बैठा था एक लड़का एक धनुष और एक बरतन आगे रखे था।

दूसरे चित्रमें एक सिंहासन बना था ऊपर शामियाना तना था। उस सिंहासन पर एक भाग्यवान पुरुष पांव पर पांव रखे बैठा था तकिया पीठसे लगा था पांच सेवक आगे पीछे खड़े थे और एक वृक्षकी शाखा उस सिंहासन पर छाया किये हुई थी।

तीसरे चित्रमें नटोंका नाटक होरहा था एक लकड़ी खड़ी थी तीन रस्से उससे बंधे थे एक नट उस पर दाहिने पांवको पीठके पीछे बायें हाथसे पकड़े खड़ा था और एक बकरा भी उस लकड़ी पर था। एक आदमी गलेमें ढोल डाले बजाता था दूसरा हाथ ऊंचा किये रस्सोंको तक रहा था। पांच आदमी और खड़े थे जिनमेंसे एकके हाथमें लाठी थी।

चौथे चित्रमें एक वृक्ष था उसके नीचे पैगम्बर थे। एक मनुष्य उनके पांव पर सिर रखे हुए था। एक बूढ़ा उनसे बातें कर रहा था चार आदमी और खड़े थे।

बादशाह लिखता है—"ऐसी कारीगरी अबतक मैंने न देखी थी न सुनी इस वास्ते उसको इनाम दिया और वेतन बढाया।"

३० शहरेवर (भादों सुदी १५) को मिरजा सुलतान दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। सफदरखांको मनसब बढ़ाकर उस सेनाकी सहायताके वास्ते भेजा जो रानाके ऊपर गई थी।

रामदास कछवाहा।

अबदुल्लहखां बहादुर फीरोजजंगने यह इरादा किया था कि नासिकके मार्गसे दक्षिणमें जावे। बादशाह लिखता है—मेरे मनमें यह आया कि रामदास कछवाहेको जो मेरे बापके स्वामिभक्त सेवकोंमेंसे है उसके साथ करूं। वह सब जगह उसकी हिफाजत रखे। अनुचित साहस और जल्दी न करने दे। इसके लिये मैंने उस पर बड़ी कृपा की। उसे राजाकी उपाधि दी जिसका उसे ध्यान भी न था। उसे नक्कारा दिया और रणथम्भोरका प्रसिद्ध किला दिया। उत्तम खिलत और हाथी घोड़े देकर बिदा किया।

राजा कल्याण।

बादशाहने बंगालके सूबेदार इसलामखांके लिखनेसे सरकार उड़ीसाकी सरदारी राजा कल्याणको दी। दो सदी जात और दो हजार सवार भी उसके मनसबमें बढ़ाये।

तूरान।

तूरानमें गडबड़ होनेसे बहुतसे उजबक सरदार और सिपाही बादशाहकी सेवामें आये बादशाहने सबको सिरोपाव घोड़े मनसब रुपये और जागीर देकर नौकर रख लिया।

दक्षिणकी लड़ाई।

२ आजर (अगहन बदी ५) को पांच लाख रुपये रूपखवास और शेख अंबियाके हाथ अहमदाबादकी उस सेनाकी सहायताके वास्ते

भेजे गये जो अबदुल्लहखां फीरोजजंगकी अफसरीमें दक्षिण जानेको नियत हुई थी।

शिकार ।

१ दे (पौष बदी ३) को बादशाह ससू नगरमें शिकार खेलने गया। दो दिन दो रात वहां रहकर रविवारको रातको शहरमें आगया।

बादशाहकी कविता ।

बादशाहने फारसी भाषाका एक शेर बनाया और दराग-चियों तथा कहानी कहनेवालोंको याद कराकर फरमाया कि सलाम करने तथा कहानी कहते समय इसको पढ़ा करें। जिससे वह शेर बहुत प्रसिद्ध होगया। उसका यह आशय था—

जब तक आकाशमें सूरज चमकता है।
उसका प्रतिबिम्ब बादशाहके छत्रसे दूर न हो।

२ दे (पौष बदी ५) शनिवारको खानआजमकी अर्जीमें लिखा आया कि बीजापुरवाला आदिलखां अपने अपराधोंसे पछताकर पहलेसे अधिक आज्ञाकारी और शुभचिन्तक होगया है।

बादशाहकी धर्मनिष्ठा ।

बादशाहने हुक्मदिया कि बादशाही शिकारके हरनोंके चमडेकी जानमाजें(१) बनाकर दीवान खास और आममें रख छोड़ें उन पर लोग नमाज पढा करें। मीरअदल और काजीसे जो धर्माधिकारी थे धर्मकी प्रतिष्ठाके लिये फरमाया कि जमीन चूमकर मुजरा न किया करें। क्योंकि वह एक प्रकारकी दण्डवत है (२)।

शिकार ।

मसूनगरमें बहुतसे हरन इकट्ठे होगयेथे इससे बादशाहने ख्वाजेजहां

(१) जिसको बिछाकर नमाज पढ़ते हैं।

(२) मुसलमानी मतमें परमेश्वरके सिवा और किसीको दण्डवत करना मना है।

को हांकेका प्रबंध करनेके लिये भेजा था। उसने डेढ़ कोसमें कानातें और गुलालबारें(१) लगाकर हरनोंको हर तरफसे उनमें घेरा और बादशाहको खबर दी बादशाह २२ दे (पौष सुदी ९) गुरुवारको समूनगर गया शुक्रवारसे शिकार शुरू हुआ। नित्य बेगमों सहित उन कनातोंमें जाकर मनमाने हरन तीर और बंदूकसे मारता। रविवार और गुरुवारको बंदूक नहीं चलाता था। जाल डालकर जीते हरन पकडता था। शुक्रवारसे गुरुवार तक ७ दिन में ९१७ हरनी और हरन शिकार हुए। उनमें ६४१ जीते पकडे थे। जीतोंमेंसे ४०४ तो फतहपुर भेजकर वहांके रमनोंमें छुडवा दिये। ८४ की नाकमें चांदीकी नथें पहनाकर उसीजगह छोड दिया। २७६ जो तीर बंदूक और चीतोंसे मारे गये थे नित्य बेगमों, महल की टहलनियों, अमीरों और ड्योढ़ीके चाकरोंको बांटे जाते थे। जब बादशाह बहुत शिकार करके उकता गया तो अमीरोंको हुक्म दे दिया कि जो बच गये हैं उन्हें वह मारलें और आप शहरमें आगया

पुण्यशालाएं।

१ बहमन (माघ बदी ३।४) को बादशाहने हुक्म दिया कि बादशाही देशोंके बडे बडे शहरोंमें अहमदाबाद, इलाहाबाद, लाहौर, आगरा और दिल्ली आदिके समान खैरातखाने बनावें। छः नगरोंमें पहलेसे थे। २४ नगरोंमें और नियत हुए।

राजा बरसिंहदेव।

४ (माघ बदी ६) को राजा बरसिंहदेवका मनसब बढकर चार हजारी जात और दो हजार सवारका होगया। बादशाहने उसको जडाऊ तलवार भी दी। दूसरी खासेकी तलवार जिसका नाम शेरबचा था शाहनवाजखांको इनायत की।

---

(१) गुलालबार लाल रंगकी बादशाही किनातोंके घेरेका नाम था।

आठवां वर्ष।

सन् १०२१।

फागुन सुदी २ संवत् १६६८ से फागुन सुदी २ संवत् १६६९ तक।
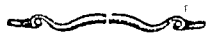
राणाकी लड़ाई।

फागुन सुदी २ को मिरजा शाहरुखका बेटा बदीउज्जमान राणाके लशकरमें नियत किया गया और उसके हाथ एक तलवार राजा बासूके वास्ते भेजी गई।

जहांगीरी आईन।

बादशाहको सुनाया गया था कि सीमाप्रांतके अमीर कुछ अयोग्य बर्ताव करते हैं उनके तौरे(१) तथा जाबतेका ध्यान नहीं रखते। बादशाहने बख्शियोंको हुक्म दिया कि सीमाप्रान्तके अमीरोंको लिख देवें कि अबसे फिर यह बातें जो विशेष करके बादशाहोंके करनेकी है न किया करें।

१ झरोखेमें न बैठें।

२ अपने सहायक सरदारों और अमीरोंको सलाम करने और चौकी देनेकी तकलीफ न दें।

३ हाथी न लड़ावें।

४ दण्ड देनेमें किसीको अन्धा न करें नाक कान न काटें।

५ किसी पर मुसलमान होनेके वास्ते दबाव न डालें।

६ अपने नौकरोंको खिताब न देवें।

७ बादशाही नौकरोंको कोरनिश(२) और तसलीम(३) करनेको न कहें।

---

(१) चङ्गेजखांके बांधे हुए प्रबन्धोंको तौरा कहते हैं।

(२) झुककर सलाम करना।

(३) गरदन आगे रखकर मुजरा करना।

८ गवैयोंको दरबारके ढङ्ग पर चौकी देनेका कष्ट न देवें।

९ बाहर नक्कारा न बजावें।

१० घोड़ा हाथी चाहे बादशाही नौकरोंको देवें चाहे अपने चाकरोंको, पर बाग और अंकुश उसके कंधे पर रखाकर तसलीम न करावें।

११ सवारीमें बादशाही नौकरोंको अपनी अरदलीमें पैदल न ले जावें और जो कुछ उनको लिखें तो उस पर मोहर न करें।

यह जाबते जहांगीरी आईनके नामसे प्रचलित होगये थे।

सातवां नौरोज।

१६ मुहर्रम (चैत्र बदी ४) मंगलवारको सातवें नौरोजका आगरेमें उत्सव हुआ। बादशाह चैत्र बदी ६ गुरुवारको ४ घड़ी रात गये ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्त्तमें सिंहासन पर बैठा। अफजलखांकी भेट विहारसे पहुंची। तीस हाथी १८ गोट(१) बंगालके कुछ कपड़े अगर चन्दनके लट्ठे, कस्तूरीके नाफे तथा अन्यान्य बहुतसी चीजें थीं।

खानदौरांकी भेटमें ४५ घोड़े ऊंट दो कतार, चीनी खताई बरतन, समूरके चमड़े और वह पदार्थ जो काबुल मण्डलमें मिल सकते थे आये।

ऐसेही और अमीरोंकी भेटें भी विधिपूर्वक उत्सवके दिनोंमें होती रहीं।

बङ्गालमें फतह।

१३ फरवरदीन (चैत्र बदी ३०) को इसलामखांकी अर्जी बंगाल से पहुंची उसमें उसमान पठानके मारे जानेका हाल लिखा था। पहिले बंगालमें पठानोंका राज्य था। वह अकबर बादशाहने छीन लिया था। केवल यह उसमान एक कोनेमें स्वतन्त्र रह गया था। इसलामखांने ढाकेसे शुजाअतखांको फौज देकर उसके ऊपर भेजा। जब यह उसमानके किलेके पास पहुंचा तो दूत भेजकर उसको

(१) एक जातिके घोड़े।

बादशाहके अधीन होजानेके वास्ते कहलाया परन्तु उसने नहीं माना। लडाईकी तैयारी की। ९(१) मुहर्रम रविवार (फागुन सुदी ११) को लडाई हुई उसमान बडी वीरतासे लडा। उसने बादशाही सेनाके हिरावल और दोनों भुजाओंको विध्वन्स कर डाला। तीनों फौजोंके सरदार मारे गये। फिर बीचकी अनी पर भी धावा किया और गजपति नाम लडाईके हाथीको शुजाअत-खां पर छोड़ा। शुजाअतखां भी उस हाथीसे खूब लडा और कई घाव बरछे और तलवारके लगाकर उसको भगाया तब उसमानने दूसरा हाथी बादशाही झण्डे पर दौडाया जिसने झंडेके घोड़ेको गिरा दिया। शुजाअतखांने पहुंचकर झंडेवालेको बचाया और उसको दूसरा घोडा देकर फिर झंडा खडा कराया। इतनेमें एक गोली न जाने किसके हाथकी उसमानके ललाटमें आकर लगी जिससे वह शिथिल तो होगया परन्तु दोपहर तक फिर भी अपने आदमियोंको लडाता रहा। अन्तको भाग निकला। उसके भाई वली और बेटे ममरेजने अपने डेरों पर बादशाही फौजका जो उसमानके पीछे गई थी तीरों और बंदूकोंसे ऐसा सामना किया कि वह अन्दर न घुस सकी। आधीरात बीतनेपर उसमान मर गया। वह लोग उसकी लाश लेकर और माल असबाब वहीं छोड़कर अपने किलेमें आगये।

---

(१) तारीख ९ मुहर्रमको रविवार नहीं मंगलवार था रविवार को तो ७, १४, २१ और २८ थी इसमें दो दिनकी भूल है आगे ८ सफर चन्द्रवारको सही है पर इसमें यह शंका होती है कि बाद-शाहके पास १३ फरवरदीनको जिस दिन कि २८ मुहर्रम थी और बादशाह न मालूम क्योंकर २९ लिखता है ६ सफर २१ फरवरदीन चैत सुदी ८।९ तकको खबरें पहिलेही कैसे आगई थी जो उसने १३ फरवरदीनके हत्तान्तमें लिखी है यह तो २१ फरवरदीनके पीछे की तारीखोंमें लिखी जाना चाहिये थीं।

दूसरे दिन चन्द्रवारको शुजाअतखांने यह समाचार किरावलों से सुनकर पीछा किया। वलीने अब अधीन होजानाही उचित जानकर सन्धिका सन्देसा भेजा। शुजाअतखांने भी अपने साथियों को सम्मतिसे स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन वली और उसमानके भाई बेटे आकर मिले और ४९ हाथी भेटको लाये। शुजाअतखां कुछ लोगोंको अधार नाम उनके राज्य स्थानमें छोडकर ६ सफर चन्द्रवार (चैत सुदी ८) को जहांगीरनगरमें इसलामखांके पास आगया और वली आदि पठानों को भी लेआया।

बादशाह इस विजयसे बहुत प्रसन्न हुआ विशेषकर इसलिये कि बंगालका सूबा निष्कण्टक होगया। बारम्बार परमात्माका धन्यवाद करके इसलामखांका मनसब बढ़ाकर छः हजारी करदिया और शुजाअतखांको रुस्तमजमांका खिताब देकर हजारी जात और हजार सवार उसके भी अधिक कर दिये। इसी तरह दूसरे अमीरों का भी जो इस लडाईमें थे यथायोग्य मनसब बढाया और उन्हें दूसरी कृपाओंसे सन्तुष्ट किया।

फरंगदेशके पदार्थ।

चैत सुदी ३ को मुकर्रबखां खंभात बन्दरसे आया। वह बादशाहकी आज्ञासे गोवा बन्दरमें जाकर वहां फरंगियोंसे बहुमूल्य पदार्थ मुंहमांगे दामों पर खरीद लाया था। बादशाह उनको देख कर आह्लादित हुआ। उसने कई विचित्र पक्षियोंके चित्र चितेरों से जहांगीरनामे(१) में खिंचवाये और तुजुकमें लिखा कि बाबर बादशाहने कई जानवरोंकी सूरत शकल तो अपने ग्रन्थमें लिखी परन्तु चित्रकारोंको उनकी तसवीर बनानेका हुक्म नहीं दिया।

(१) जहांगीरनामा अभी हमारे देखनेमें नहीं आया है जो लखनऊमें मुंशी नवलकिशोरप्रेससे छापा है वह जहांगीरनामा नहीं है इकबालनामे जहांगीरीका तीसरा भाग है इकबालनामा भी वहीं छपा है फिर न जाने यह कैसे भूल होगई है।

उसने एक पत्नीका (जिसे अब पीरू कहते हैं) और एक बन्दर का विशेष करके वर्णन किया है चकोरोंके वास्ते लिखा है कि मेरे पिताने इनके बच्चे लेनेका बहुत परिश्रम किया पर उस वक्त तो नहीं हुए। अब मेरे समयमें इनके अंडे लिये और मुर्गियोंके नीचे रखे गये तो दो वर्षमें ६०।७० बच्चे निकले ५०।६० बड़े भी होगये जो सुनता है इसका बडा अचम्भा करता है।

इन दिनोंमें महावतखां, एतमादुद्दौला, एतकादखां आदि अमीरोंके मनसब बढे। महासिंहका मनसब पांच सदी जात और पांच सौ सवारोंके बढ़नेसे तीन हजारी और दो हजार सवारोंका होगया।

१९ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को मेख(१) संक्रांतिका उत्सव हुआ खुर्रमका मनसब दस हजारीसे बारह हजारी होगया। ऐसेही और भी कई अमीरोंके मनसब नौरोजके प्रसंगसे बढे।

दलपत(२)।

इसी दिन दलपत दक्षिणसे आया उसका बाप रायसिंह मर चुका था इसलिये बादशाहने उसको राय पदवी देकर खिलअत पहनाया। रायसिंहके एक बेटा और भी सूरजसिंह नामका था जिसकी मासे रायसिंहको अधिक प्रेम था। दलपत टीकाई था तोभी वह सूरजसिंहको अपनी जगह बैठाना चाहता था। बादशाह लिखता है—"जिन दिनोंमें रायसिंहके मरनेकी बात चल रही थी सूरजसिंहने अल्पबुद्धि और अल्पावस्था होनेसे प्रार्थना की कि. बापने मुझे अपनी जगह बिठाकर टीका दिया है। यह बात मुझको नहीं भाई। मैंने कहा कि जो बापने तुझे टीका दिया है तो हम दलपतको टीका देते हैं।" बादशाहने अपने हाथ से दलपतको टीका देकर उसके पिताकी जागीर और वतन उसको दे दिया।

---

(१) चण्डू पञ्चाङ्गमें भी मेख संक्रान्ति इसी दिन लिखी है।

(२) बीकानेरका राव।

एतमादुद्दौला।

एतमादुद्दौलाको जड़ाऊ कलम दावात बादशाहने दी।

गांव।

कमाऊंका राजा लखमीचन्द पहाडके मुख्य राजोंमेंसे था। उसका बाप राजा रुद्र भी अकबर बादशाहकी सेवामें आया था। आनेसे पहिले अर्ज कराई थी कि राजा टोडरमलका बेटा मेरा हाथ पकडकर सेवामें लेजावे। बादशाहने वैसाही किया। इसी प्रकार लखमीचन्दने भी अर्ज कराई कि एतमादुद्दौलाका बेटा आकर मुझे दरबारमें लेजावे। बादशाहने शापूरको भेजा। राजा उसके साथ आया। गोट जातिके उत्तम घोड़े शिकारी पक्षी बाज जुर्रे शाहीन कुतास(१) कस्तूरीके नाफे कस्तूरी हरनके चमड़े जिसमें नाफे भी लगे थे तलवारें और खञ्जर जिनको वह लोग खांड़े और काटार कहते हैं और अनेक प्रकारकी चीजें भेटको लाया। पहाडी राजोंमें यह राजा इस बातके लिये अति प्रसिद्ध था कि इसके पास सोना बहुत है। लोग इसके देशमें सोनेकी खान बताते थे।

दक्षिणमें हार।

दक्षिणके काम खानआजमकी वेपरवाईसे नहीं सुधरे। अबदुल्लहखांकी हार हुई। बादशाहने इन बातोंका निरूपण करनेके लिये अबुलहसनको बुलाया था। बहुतसी पूछ ताछ करने पर विदित हुआ कि अबदुल्लहखां बारहकी हार तो उसीके घमण्ड दौड धूप और किसीकी बात नहीं सुननेसे हुई पर इसमें अमीरोंकी ईर्षा और फूटका भी अंश मिला हुआ था। बात यह ठहरी थी कि इधर अबदुल्लहखां गुजरातके लश्कर और उन अमीरोंके साथ जो उसकी सहायता पर नियत हुए थे नासिक त्रिम्बकके रास्तेसे दक्षिणको जावे। यह लश्कर राजा रामदास खानआलम सैफखां अली मरदान बहादुर तथा दूसरे नामी और साहसी सरदारोंसे

(१) सुरागायकी पंछके बाल।

सजा हुआ था इसकी संख्या भी दस हजारसे बढ़कर चौदह हजार तक पहुंची थी।

उधर बरासे राजा मानसिंह खानजहां अमीरुलउमरा और दूसरे अमीर चलें। दोनो दल एक दूसरेके कूच मुकामकी खबर रखें और एक दिन नियतकर गनीमको दोनो ओरसे जाघेरें। जो उस नियत दिनका ध्यान रहता, सबके दिल एक होते और आपाधापी न होती तो आशा थी कि परमात्मा जय देता। अबदुल्लहखां जब घाटियोंसे उतर कर गनीमके देशमें गया तो उसने न तो हरकारोंको भेजकर उस फौजकी खबर ली न ठहरावके अनुसार अपने कूचको उनके कूचसे मिलाया और न एकही दिन और समयमें मिलकर गनीमको मारनेका प्रबन्ध किया। वरञ्च उसने अपनेही बल और बूतेका विश्वास करके यह विचारा कि जो मुझहीसे फतह होजावे तो बहुत अच्छा हो। रामदासने बहुत चाहा कि वह धैर्य्यसे बढ़े और जल्दी न करे परन्तु कुछ फल न हुआ। गनीमने जो उससे डर रहा था बहुतसे सरदार और बरगी(१) भेज दिये थे जो दिनको तो लडते थे और रातको बाण तथा दूसरे अग्न्यस्त्र फेंका करते थे। यहां तक कि गनीमके पास तो पहुंच गये पर उस सेनाके कुछ समाचार नहीं पहुंचे। अम्बर चम्पूने जो दौलताबादमें बडे जमावसे निजामुल्‌मुल्कके घरानेके एक लडकेको लिये बैठा था बारी बारीसे फौजें भेजीं। इस तरह दक्षिणियोंका बल बढ गया उन्होंने बाणों और दूसरे यन्त्रोंसे आग बरसाकर अबदुल्लहखां की नाकमें दम करदिया। राजहितैषियोंने यह दशा देखकर कहा कि उस फौजसे तो कुछ भी सहायता नहीं पहुंची और दक्षिणी सब हमारेही ऊपर चढे चले आते हैं इसलिये उचित यही है कि अभी तो लौट चलें फिर देख लेंगे। यह बात सबने स्वीकार की। तडके ही कूच कर दिया। दक्षिणी अपनी सीमा तक पीछा करते चले आये। रोज लडाई होती थी। कई कामके आदमी काम आये।

(१) लुटेरे।

अली मरदानखां बहादुर बहादुरीसे लड़ा और घायल होकर पकडा गया। जब राजा सुरजी(१)के राज्यमें पहुंचे जो बादशाहकी अधीनतामें था तो गनीम लौट गया। और अबदुल्लहखां गुजरातमें आया।

अबदुल्लहखांके लौटनेकी खबर सुनतेही राजा मानसिंह वगैरह भी रास्तेसे लौटकर परवेजके कम्पमें चले आये जो बुरहानपुरके पास आदिलाबादमें था।

बादशाह लिखता है—जब यह समाचार आगरेमें मेरे पास पहुंचे तो मेरा चित्त बहुत विक्षिप्त होगया। मैंने यह विचार किया कि आप जाकर इन खुदाके मारे हुए नौकरोंका पाप काट दूं। परन्तु शुभचिन्तक लोग सहमत न हुए और ख्वाजा अबुलहसनने प्रार्थना की कि उधरके कामोंको जैसा कुछ खानखानांने समझा है और दूसरा कोई नहीं समझा सकता। उसीको भेजना चाहिये। इस बिगडी हुई बाजीको सम्भाल कर गनीमसे समयके अनुसार सन्धि करले। फिर जो यथार्थ करना है करे यह बात और हितैषियोंको भी जची और सबने यही सलाह दी कि खानखानांको भेजना चाहिये और अबुलहसन भी साथ जावे। निदान यह बात ठहर गई और दीवानोंने तय्यारी कर दी। खानखानां १७ उर्दीबिहिश्त रविवार (बैसाख सुदी ६) को बिदा हुआ शाहनवाजखां अबुलहसन और कई सरदार उसके साथ गये। बादशाहने खानखानांका मनसब छः हजारी, शाहनवाजखांका तीन हजारी और दाराखांका दो हजारी कर दिया। छोटे बेटे रहमानदादको भी उसके योग्य मनसब मिल गया। खानखानांको सुन्दर सिरोपाव जड़ाऊ कटार खासा हाथी तलापर(२) सहित और इराकी घोडा मिला। उसके बेटों और साथियोंने भी यथायोग्य खिलअत और घोड़े पाये।

(१) यह बगलानेका राजा था।
(२) हाथीका गहना।

शुजाअतखांकी विचित्र मृत्यु।

शुजाअतखांको उसमान पर जीत पानेके पीछे इसलामखांने उडीसे जानेकी आज्ञा दी थी। वह एक रात चौखण्डीदार हथनी पर सवार हुआ और एक बालक नाजिरको पीछे बैठा लिया जब अपने डेरेसे निकला तो रास्तेमें एक मस्त हाथी बंधा था वह घोडोंको टापोंसे भडककर सांकलें तुडाने लगा जिससे बडा कोलाहल मचा। शुजाअतखां उस समय या तो नींदमें था या शराबके नशेमें अचेत था नाजिरने घबराकर उसको जगाया और कहा कि मस्त हाथी खुल गया है इधर आता है। शुजाअतखां व्याकुल होकर चौखण्डीमेंसे कूदा पांवकी उंगली एक पत्थर पर लग कर फट गई बस इसी चोटसे दो तीन दिनमें वह मर गया।

बादशाहको सुनकर बडा आश्चर्य हुआ कि ऐसा पुरुष सिंह जो जंगी हाथियोंसे लड चुका था एक बालककी बातसे घबराकर हाथी परसे कूद पडा।

हाथी।

इसलामखांने बंगालसे १६० हाथी भेजे थे वह खासेके हाथियों में दाखिल किये गये।

कमाऊंका राजा।

कमाऊंके राजा टेकचन्दने विदा चाही। उसके बापको अकबर बादशाहके समय एक सौ घोडे दिये गये थे उसी मर्य्यादामें बादशाहनेभी उसे घोडे दिये एक हाथीभी दिया। जबतक यहां रहा सिरोपाव पाये जडाऊ कटार भी मिला। उसके भाइयोंको भी खिलअत और घोडे मिले। उसका देश उसीके पास रहा और वह सब प्रकारसे प्रसन्न और पूर्णकाम होकर गया।

अबुलफतह दक्खिनी।

१० अमरदाद (सावन सुदी ५) को अबुलफतह दक्खिनी जो आदिलखांके मुख्य सरदारोंमेंसे था बादशाहकी सेवामें उपस्थित

हुआ यह दो वर्ष पहले भी आया था बादशाहने खिलअत शाही घोड़ा और खांडा दिया।

ठट्ठा।

२ शहरेवर (भादों सुदी १३) को बादशाहने मिरजा रुस्तम सफवीको खासेका हाथी जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ तलवार भारी सिरोपाव और पांच हजारी मनसब देकर ठट्ठे (१) की सूबेदारी पर भेजा और उसके बेटे भतीजोंको भी मनसब बढ़ाकर और हाथी घोड़े खिलअत देकर उसके साथ किया।

राय दलपत।

राय दलपतको बादशाहने मिरजा रुस्तमके सहायकोंमें इस हेतुसे नियत किया कि इसका देश उसी दिशामें है अच्छी सेना सेवाके वास्ते देगा। दलपतका मनसब पांच सदी जात और पांचसौ सवारोंके बढ़नेसे दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

नागपुर।

अबुलफतह दक्षिणीको नागपुरमें जागीर मिली।

तुलादान।

१७(२) रज्जब २२ शहरेवर (आश्विन बदी ३) बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान मरयमसकानीके महलमें हुआ।

उसमान पठानके भाई बन्द।

बंगालका दीवान मोतिकिदखां पदच्युत होकर आया। उसके साथ इसलामखांने उसमानके भाई बेटों और कुछ सेवकोंको भेजा था बादशाहने एक पठानको अपने एक विश्वासपात्र चाकरकी चौकसीमें रख दिया।

---

(१) छापेकी तुजुक जहांगीरीमें ठट्ठेकी जगह भूलसे पटना छप गया है।

(२) पञ्चांगकी गणितसे १६।

मोतकिदखां।

मोतकिदखांने बादशाहको भेट दी जिसमे २५ हाथी दो लाल जडाऊ फूल कटारे विश्वास योग्य नाजिर और बंगाली कपडोंके थान थे।

११ सहर (आश्विन सुदी ८) को बादशाहने उसको बखशीका उच्च पद दिया उसका मनसब हजारी जात और तीनसौ सवारका नियत हुआ।

राय मनोहर।

बादशाहने खानखानांके लिखनेसे राय मनोहरका मनसब हजारी जात और आठसौ सवारोंका कर दिया।

राजा बरसिंहदेव।

राजा बरसिंह देवका मनसब भी खानखानांकी सिफारिशसे ४ हजारी जात और बाइस सौ सवारोंका होगया।

भारत बुंदेला।

रामचन्द्र बुंदेलेके मरनेसे बादशाहने उसके पोते भारतको राजाका खिताब दिया।

अमीरुलउमराकी मृत्यु।

६ आजर ३ शव्वाल (अगहन सुदी ५) को बुरहानपुरमे खबर आई कि अमीरुलउमरा २७ आबान (अगहन बदी १०।११) को परगने निहालपुरमें मर गया उसके कोई बेटा न था।

बिहार।

बादशाहने जफरखां कोकाको बिहारकी सूबेदारी दी और उसका मनसब बढाकर तीन हजारी जात और दो हजार सवारका करदिया।

शिकार।

२ जीकाद ४ दे मंगल (पौष सुदी ३) को बादशाह शिकारके वास्ते आगरेसे कूच करके चार दिन तक दहराबागमें रहा।

सलीमा सुलतानकी मृत्यु।

१० (पौष सुदी ११) को सलीमा सुलतान बेगम मरगई बाबरकी

खबर आई यह बाबर बादशाहकी नवासी गुलरुख बेगमकी बेटी थी। बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। हुमायूं बादशाहने अपनी यह भानजी अति कृपासे बैरामखांको दी थी बैरामखांके मारे जाने पर अकबर बादशाहने सलीमा सुलतानसे निकाह कर लिया था।

बादशाह लिखता है—"जितने अच्छे गुण और लक्षण इसमें थे उतने सब स्त्रियोंमें नहीं होते हैं।"

बादशाह एतमादुद्दौलाको उसके उठाने और उसीके बनाये मण्डाकरबागमें उसको रखनेका हुक्म देकर दहराबागसे कूच कर गया बेगमकी अवस्था ६० वर्षकी थी।

काबुल।

७ दे (पौष सुदी ५) को ख्वाजाजहांने काबुलसे आकर १२ मोहरें और १२ रुपये नजर किये। बादशाहने कुलीचखां सूबेदार काबुल और खानआलमके परस्पर मेल न होनेके समाचार सुनकर इसको इस बातका निर्णय करनेके लिये कि किसका कसूर है भेजा था काबुल जाने और आनेमें इसको ३ महीने ११ दिन लगे थे।

राजा रामदास।

इसी दिन राजा रामदासने दक्षिणसे आकर १०१ मोहरे भेट कीं। बादशाहने इसको घोड़ा खिलअत और तीस हजार रुपये देकर कुलीचखां और दूसरे अमीरोंके समझानेके वास्ते भेजा जिनमें अनबन होगई थी।

दक्षिण।

१५ बहमन (माघ सुदी १३) को शाहनवाजखां दक्षिणसे खानखानांका भेजा हुआ आया एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये।

जब दक्षिणके मामले अबदुल्लहखांकी भागदौड़ और अमीरों की फूटसे ठीक नहीं हुए तो दक्षिणियोंने अवसर पाकर अमीरोंसे सन्धिकी बात छेड़ी और आदिलखांने कहलाया कि जो यह काम मेरे ऊपर छोड़ाजावे तो ऐसा करूं कि जो देश बादशाही अधीनता

से निकल गये हैं फिर अधीन होजावें। शुभचिन्तकोंने समयका रंग ढङ्ग देखकर इस बातकी अर्जी भेजी एक प्रकारकी संधि होगई और खानखानांने वहांके कामोंको ठीक करदेनेका जिम्मा कर लिया तो बादशाहने खानआजमको जो पुण्य(१) की प्राप्तिके लिये सदा राणासे लडनेको जानेकी प्रार्थना किया करता था हुक्म भेजा कि अपनी जागीर मालवेमें जाकर बाद तैयारीके राणाके ऊपर जावे।

---

(१) कट्टर मुसलमान हिन्दुओंसे लड़ने उनको मारने या उनके हाथसे मरनेको पुण्य समझते हैं।

नवां वर्ष।

सन् १०२२।

फागुन सुदी ३ संवत् १६६९ से फागुन सुदी २ संवत् १६७० तक।

बादशाह आगरेमें।

बादशाह दो महीने बीस दिन शिकारमें रहकर नौरोजके समीप आजानेसे २४ असफंदार (चैत बदी ११) को बागदहरेमें लौट आया और २७ (चैत बदी १४) को आगरेमें आया।

इस बार इतना शिकार हुआ था—

हरन आदि	२२३	करवानक आदि पक्षी	३६
नीलगाय	९५	मछलियां	४५७
सूअर	२		

आठवां नौरोज।

२७ मुहर्रम १ फरवरदीन (चैत बदी ३०) गुरुवारको साढ़े तीन घड़ी रात गये सूर्य्य भगवान मीनसे मेख राशिमें पधारे। दूसरे दिन आठवें नौरोजका उत्सव हुआ पिछले दिनसे बादशाह तख्त पर बैठा। अमीरों और वजीरोंने नजर और न्योछावर की।

बादशाह रोज आमदरबार करता था लोगोंकी अर्ज सुनता था और चाकरोंकी भेट लेता था।

४ फरवरदीन (चैत सुदी ८) शुक्रवारको अफजलखांने बिहारसे आकर एक सौ मोहरें और एक सौ रुपये नजर किये इस दिन एक और चौथे दिन १० हाथी उसके हाथियोंमेंसे भेट हुए।

मोतकिदखां एक जगह मोल लेकर कई दिन उसमें रहा तो उस पर लगातार कई दुःख और कष्ट आपड़े। यहां बादशाह लिखता है—"हमने सुना है कि १ स्त्री २ गुलाम ३ घर और ४ घोड़ेमें शुभाशुभ कहा जाता है। घरके शुभाशुभ देखनेकी यह विधि है जो मिलती भी है कि थोड़ी धरतीको खोदकर मट्टी

निकालें और उस मट्टीको उसमें भरें जो बराबर होजावे तो सम, घटे तो नष्ट और बढ़े तो श्रेष्ठ ”

मग जातिके लोग।

इसलामखांका बेटा होशंग बङ्गालसे आया। मग(१) जातिके लोगोंको भी साथ लाया था उनका देश(२) पेगू, दारजीलिङ्गके पास है बल्कि इन दिनों यह प्रदेश भी उनके अधिकारमें था।

बादशाह लिखता है कि इनके धर्मपन्थकी बातें निर्णय कीगईं। सारांश यह है कि यह मनुष्य आकृतिके पशु है। जल और स्थल के सब जीवोंको भक्षण करते है। कोई वस्तु इनके धर्म्म निषिद्ध नहीं है। प्रत्येक मनुष्यके साथ खालेते हैं अपनी सौतेली बहनको ग्रहण करलेते हैं इनकी शकलें किराकअलसाक(३) जातिके तुर्कोंसे मिलती हुई हैं परन्तु बोली तिब्बतकी है जो तुरकीसे कुछ भी नहीं मिलती है। यहां एक पहाड है जिसका एक सिरा तो काशगरसे जामिला है दूसरा पेगूमें है। इनका कोई ठीक मत नहीं है कि जिसकी किसी मतसे तुलना कर सकें। मुसलमानी मतसे भी दूर हैं और हिन्दूधर्म्मसे भी विमुख।

बादशाह खुर्रमके घर।

मेख संक्रान्तिके दो तीन दिन रहे थे कि बादशाह खुर्रमकी प्रार्थनासे उसके घर चला गया। एक दिन एक रात रहा वहीं नौरोजकी भेटें होती रहीं। खुर्रमने भी भेट की जिसमेंसे कुछ बादशाहने चुनकर ले ली।

मेख संक्रान्ति।

१४ फरवरदीन (वैशाख वदी ४)(४) चन्द्रवारको मेख संक्रान्ति

---

(१) ब्रह्माके लोग मग कहलाते हैं।

(२) यह वृत्तान्त ब्रह्मदेशका है जो आजकल ब्रटिश गवर्नमेंट के अधिकारमें है।

(३) तुर्कोंकी एक जाति।

(४) चण्डूपञ्चाङ्गमें मेष संक्रान्ति वैशाख वदी ३ को लिखी है।

को बडा भारी उत्सव हुआ बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। सब प्रकारके मादक पदार्थ मंगाये और सब लोगोंको अपनी अपनी रुचिके अनुसार खाने पीनेको आज्ञा दीगई। प्रायः सब लोगोंने शराब कबाबका सेवन किया। ईरानके दूत यादगारअलीको सौ तोलेकी एक मोहर जिसका नाम कोकबेताला था दीगई। मजलिसका रंग खूब जमा। उठते समय बादशाहने हुक्म दिया कि सब सामग्री और सजावट लाद लावें।

मुकर्रबखांकी भेटमें बारह इराकी और अरबी घोडे थे जो जहाजमें आये थे और फरंगियोंका बनाया हुआ एक जडाऊ जीन था।

सोमयाई।

बादशाहने मुहम्मदहुसैन चिलप्रीको जो जवाहिर खरीदने और अनोखे पदार्थोंके ढूंढ निकालने में प्रवीण था कुछ रुपये देकर ईरानके मार्गसे अस्तंबोलके उत्तम द्रव्य खरीद लानेके वास्ते भेजा था और उसको मार्गमें ईरानके शाह अब्बाससे मिलना पडता इस लिये एक पत्र उसके नाम भी लिखदिया था। वह मशहदमें पास शाहसे मिला। शाहने पूछा कि किन किन वस्तुओंके खरीदनेका हुक्म है उसने बहुत आग्रहसे सूची दिखाई। शाहने उसमें फिरोजे और सोमयाईका नाम देखकर कहा कि यह चीजें मोल नहीं मिलती हैं मैं उनके वास्ते भेजता हूं। यह कहकर छः थैलियां जिनमें तीस सेर फिरोजोंकी मट्टी थी चौदह तोले मोमयाई और चार घोड़े इराकी जिनमें एक अबलक था उसको सौंपे और एक पत्र भी लिखदिया जिसमें मट्टीके तुच्छहोने और मोमयाईके कम होनेकी क्षमा मांगी थी।

जब यह चीजें बादशाहके पास पहुंचीं तो बहुत निकम्मी निकलीं बेगड़ियों और नग बनानेवालोंने बहुत छान बीन की पर एक फीरोजा भी अंगूठीके लायक नहीं निकला जैसे फिरोजे शाह तुहमास्पके समयमें निकले थे वैसे खानमें नहीं रहे थे यही शाहने भी अपने पत्रमें लिखा था।

मोमयाईके गुणकी बाबत बादशाह लिखता है कि जो बातें मैंने हकीमोंसे सुनी थीं जब परीक्षा की गई तो कुछ भी प्रकट नहीं हुई मै नहीं जानता कि हकीमोंने मोमयाईके विषयमें अत्युक्ति की हैं या पुरानी होजानेसे वह गुणही नहीं रहा है।

मैंने हकीमोंके ठहराये हुए सिद्धान्तोंके अनुसार मुर्गेकी टांग तोडकर उसको उनकी कही हुई मात्रासे अधिक मोमयाई खिलाई और टांग पर भी लगाई तथा तीन दिन तक रखवाली कराई। वह तो प्रातःकालसे सायंकाल तकहीका समय बहुत बताते थे यहां तीन दिन पीछे देखा तो कुछ चिन्ह उस गुणका नजर नहीं आया टांग वैसीही टूटी हुई थी।

सलामुल्लह अरब।

शाह ईराननें सलामुल्लह अरबकी सुफारिश की थी बादशाहने उसी क्षण उसका मनसब और वेतन बढा दिया।

अबदुल्लहखां।

अबदुल्लहखांके वास्ते बादशाहने एक खासा हाथी तलवार सहित भेजा और उसकी बिरादरीके बारह हजार सवारोंको दुअस्पे और तिअस्पेके जाबतेसे तनखाह देनेका हुक्म दिया।

सौम सालगिरह।

२७ उर्दीबहिश्त २६ रबीउलअव्वल (जेठ बदी १२) गुरुवारको बादशाहकी सौम वर्षगांठका तुलादान उसकी माताके भवनमें हुआ। जिसमेंसे कुछ रुपये उन दीन स्त्रियोंको बांटे गये जो वहां जुड गई थीं।

मुरतिजाखांका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारका होगया।

चीते और सिंहके बच्चे।

अकबर बादशाहने एक हजार तक चीते पाले थे और बहुत चाहता था कि उनकी वंशवृद्धि हो परन्तु यह बात नहीं हुई। फिर कईबार उनके जोड़े भी पट्टे खोल खोलकर बागमें छोड़े तो यहां

वह अलग अलग ही रहे। पर इन दिनोंमें एक चीता पट्टा तुडा कर मादा पर जापडा। अढ़ाई महीने पीछे तीन बच्चे जन्मे और बडे हुए।

इसी प्रकार एक सिंहनी भी गर्भवती हुई और तीन महीने पीछे बच्चा जना। बादशाह लिखता है कि मेरे समयमें पशुओंकी चमक निकल गई है सिंह ऐसे हिल गये हैं कि झुण्डके झुण्ड लोगोंमें खुले फिरते हैं और किसीको नहीं सताते। यह कभी नहीं हुआ था कि जङ्गली शेर पकडे जानेके पीछे सिंहनीसे संग करे और बच्चे हों। हकीमोंसे सुना गया था कि सिंहनीका दूध आंखोंकी ज्योति के वास्ते बहुत गुण करता है मैंने बहुत परिश्रम किया कि उस ब्याई हुई सिंहनीका दूध हाथ लगे पर उसके बच्चे को पकड़वाकर थनोंमें हाथ डाला तो क्रोधसे उसका दूध सूख गया।

बादशाह खरबूजोंकी बाडीमें।

ख़्वाजाजहांने शहरके पास खरबूजे बोये थे। बादशाह १० ख़ुरदाद (जेठ सुदी ११) गुरुवारको नावमें बैठकर वहां गया महल के लोग भी साथ थे। दो तीन घडी रात गये वहां पहुंचा। रात बडी भयङ्कर थी। आंधी आई डेरे तम्बू उड गये बादशाहने नाव में रात बिताई। शुक्रवारको खरबूजे खाकर शहरमें आगया।

अफ़जलखांकी मृत्यु।

अफ़ंजलखां जो बहुत दिनोंसे फोड़े फुंसियोंका कष्ट भोग रहा था मर गया।

राजा जगमन।

राजा जगमनसे दक्षिणकी नौकरीमें कुछ चूक होगई थी इस लिये बादशाहने उसकी जागीर छीनकर महाबतखांको देदी।

दीवानखानेके कटहरे।

दीवादखाने खास और आममें दो कटहरे लकडीके लगाये जाते थे। पहले कटहरेमें तो अमीर, एलची और आबरूवाले लोग रहते थे इसमें विना आज्ञा कोई नहीं जासकता था। दूसरा

पहिलेसे अधिक चौड़ा था उसमें तमाम नौकर और वह लोग जिन पर नौकरीका नाम लगा हुआ था जगह पाते थे। इस कटहरेके बाहर अमीरों और सब लोगोंके नौकर जो दीवानखानेमें आते थे खड़े रहते थे।

पहिले और दूसरे कटहरेमें कोई विशेषता नहीं थी इसलिये बादशाहने पहिले कटहरेको और उस नालको जो इस कटहरेसे झरोखे पर लगाई गई थी और उन दोनों हाथियोंको जो झरोखे की बैठकके दोनों ओर कारीगरोंने बनाये थे चान्दीसे मढ़ देनेका हुक्म दिया। जब यह काम बन चुका तो बादशाहको सुनाया गया कि इसमें १२५ मन चान्दी लगी है। बादशाह लिखता है कि इससे बड़ी शोभा होगई और ऐसाही होना भी चाहता था।

पागल कुत्ता।

एक शाही हाथी और एक हथनीको पागल कुत्तेने काटा। कुत्ते को हाथीने मारडाला था तोभी एक महीने पांच दिन पीछे हथनी बादलकी गर्ज सुनकर चिल्लाई कांपी गिरी फिर खड़ी हुई। सात दिनतक उसके मुंहसे पानी बहता रहा। आठवें दिन मरगई। कोई दवा नही लगी। इससे एक महीने पीछे हाथीको पानीके किनारे जंगलमें लेजाते थे कि इतनेमें बादल उमड़ा और गरजने लगा हाथी उस समय मस्तीमें था तोभी कांपकर बैठ गया महावत लोग बड़ी कठिनतासे उठाकर स्थान पर लाये ७ दिन पीछे यह भी उसी प्रकारसे मर गया।

बादशाह बड़े अचम्भेसे लिखता है कि इतने बड़े डीलडौलका जन्तु इतने छोटे जीवके काटनेसे मर गया।

दक्षिण।

खानखानाने शाहनवाजखांको बुलाया था इसलिये बादशाहने सावन सुदी ११ को उसे दक्षिण जानेकी आज्ञा दी।

वर्ण।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंमें चार वर्ण ठहराये गये हैं

और हरेक निजधर्म पर चलता है । हरेक सालमें एक दिन अपना त्यौहार मनाता है । पहला ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मको जाननेवाला उसके छः कर्म हैं—

१ विद्या पढ़ना २ दूसरोंको पढ़ाना
३ आग पूजना ४ दूसरोंसे पुजाना
५ दान लेना ६ दान देना

इनका त्यौहार सावनके अन्तमें होता है जो बरसातका दूस महीना है। इस दिनको पवित्र समझकर पुजारी लोग नदियों तालावों पर चले जाते हैं और मन्त्र पढ़कर डोरों और रंगदार तागों पर फूंकते हैं । दूसरे दिन जो नये साल(१) का पहिला होता है उन डोरोंको राजों और बड़े लोगोंके हाथोंमें ब और शकुन समझते हैं । इस डोरेको राखी यानी रक्षा कह यह दिन तीरके महीनेमें आताहै। जब सूर्य्य कर्कराशिपर होता है।

दूसरा क्षत्रिय वर्ण है जो खत्री भी कहलाता है। क्षत्रिय वह है जो अन्याय करने वालोंसे दीनोंकी रक्षा करे। इसके तीन धर्म हैं।—

१ आप पढ़े दूसरोंको न पढ़ावे
२ आप आग पूजे दूसरेको न पुजवावे ।
३ आप दान दे दूसरेका दान न ले ।

इसका त्यौहार विजयादशमी है इस दिन सवारी करना और शत्रु पर चढ़कर जाना इसकी समझमें शुभ होता है। रामचन्द्रने जिसको यह लोग पूजते हैं इसी दिन चढ़ाई करके अपने बैरीको जीता था। इस दिनको उत्तम समझते हैं हाथी घोड़ोंको सजाकर पूजते हैं ।

यह दशहरेका दिन शहरेवरके महीनेमें आता है जब सूर्य्य

(१) इस लेखसे जाना जाता है कि ढूंढार और मेवाड़की भांति आगरेमें भी उस समय लौकिक संवत्सर भादों बदी १ से बदला जाता था।

कन्या राशि पर होता है। हाथी घोड़ोंके रक्षकोंको पारितोषिक देते है।

तीसरा वैश्य वर्ण है यह ऊपर लिखे दोनों वर्णोंकी सेवा करता है। खेती लेन देन व्याज और सौदा इनका कर्तव्य है। इनका भी एक त्यौहार है उसको दीवाली कहते है यह दिन महर महीनेमें आता है, जब सूर्य्य तुला राशि पर होता है। इस दिनकी रातको दीपमाला कहते है। मित्र और बांधव एक दूसरेके को जुडकर जुआ खेलते है। इन लोगोंका धन्धा व्याज और लेन देना है इसलिये इस दिन हारने जीतनेको शकुन जानते है।

चौथा शूद्र वर्ण है। यह हिन्दुओंका सबसे नीचा जथा है। यह सबकी सेवा करताहै। जो ऊपरके वर्णोंके अधिकार है उससे इसको प्रयोजन नहीं हैं। इसका त्यौहार होली है जो इसके निश्चय में वर्षका अन्तिम दिन है। यह दिन असफन्दार महीनेमें आता है जब सूर्य्य मीन राशिमें होता है। इस दिनकी रातको रास्तों और गलियोंमें आग जलाते है जब दिन निकलता है तो पहर भर तक एक दूसरे पर राख डालते हैं। फिर नहाकर कपड़े पहिनते है बागों और जङ्गलोंमें विचरनेको चले जाते हैं।

हिन्दुओंमें मुर्दा जलानेकी रीति है इसलिये इस रातको आग जलानेसे यह अभिप्राय है कि पिछला वर्ष जो मरेके समान होगया है उसे जलाते है।

मेरे पिताके समयमें हिन्दू अमीरों और दूसरे लोगोंने ब्राह्मणों की देखादेखी राखीकी रीति इतनी फैलादी थी कि रत्न मोतियों और जड़ाऊ फूलोंको डोरोंमें पिरोकर उनके हाथमें बांधा करते थे। कई वर्ष तक ऐसा होता रहा। फिर जब यह आडम्बर बहुतही बढ गया तो उन्होंने उसको बन्द कर दिया। ब्राह्मण अपने डोरों और रेशमके धागोंको निज नियमानुसार शकुनके वास्ते बांधते रहे। मैंने भी इस वर्ष उन्हींके शिष्टाचरणका बरताव करके हुक्म दिया कि हिन्दू अमीर और हिन्दुओंके मुखिया मेरे हाथमें

राखी न बांधें। परन्तु राखीके दिन जो ८वीं(१) अमरदादको था फिर वही दङ्गल हुआ दूसरे लोगोंने वह देखादेखीकी बात हठसे नहीं छोडी। तब मैंने इसी वर्षके लिये स्वीकार करके कहा कि ब्राह्मण लोग उसी प्राचीन रीतिसे डोरे और रेशम बांधा करें।"

इसी दिन अकबर बादशाहका उर्स(२) था बादशाहने खुर्रमको उसके रौजे पर उर्स करनेको भेजा और दस हज़ार रुपये अपने दस विश्वासपात्रोंको फकीरोंके लिये दिये।

इसलामकी भेट।

१४ अमरदाद (भादों बदी ७) को इसलामखांकी भेट बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुई उसने बङ्गालसे २८ हाथी ४० टांगन ५० नाजिर और पांच सौ उत्तम वस्त्र सितारगांवके भेजे थे।

समाचारपत्र।

यह प्रबन्ध किया गया था कि सब सूबों और विशेषकरके सीमा प्रान्तके समाचार कर्णगोचर होते रहें और इस काम पर दरबारसे वाकआनवीस (समाचार लिखनेवाले) भेजे जाते थे। बादशाह लिखता है कि यह जाबता मेरे बापका बांधा हुआ है। मैं भी

---

(१) ८ अमरदादको भादों बदी १-थी।

(२) हिन्दुस्थानके मुसलमानोंमें यह रीति है कि जिस दिन कोई बड़ा या प्यारा पुरुष मरता है तो सालभरके बाद उसी दिन मौलवियों और दूसरे लोगोंको बुलाकर खाना खिलाते हैं। सुगन्ध लगाते हैं गानाबजाना करते हैं खैरात बांटते हैं इसीको उर्स कहते हैं। कहीं कहीं एक सप्ताह तक भी उर्सकी मजलिसे होती रहती हैं। परन्तु ८ अमरदादको अकबर बादशाहका उर्स कैसे हुआ? वह तो ३ आबानकी रातको मरा था यह कुछ समझमें नहीं आता। हां १८ अमरदादको १३ जमदिउस्सानी थी और उसके देहान्तके दिन भी यही तारीख थी इसलिये इस साल ८ अमरदादको हुआ होगा।

उसीका अनुसरण करता हूं। इससे बहुतसे लाभ देखे जाते हैं। संसारके और मनुष्योंके वृत्तान्त विदित होते हैं। जो इसके गुण सविस्तर लिखे जावें तो बात बढ़ती है। उन दिनोंमें लाहोरके विकायानवीसने लिखा था कि तीर(१) महीनेके अन्तमें दस आदमी शहरसे असनाबादको गये जो १२ कोस है। जब लू चलने लगी तो एक वृक्षकी छायामें ठहर गये। फिर ऐसी हवा चली कि उसके लगतेही कांपकर नौ तो वहीं मर गये और दसवां बहुत दिनों तक कष्ट पाकर अच्छा हुआ। पक्षी जो उस वृक्ष पर बैठे थे सब गिरकर मर गये। उस प्रान्तमें इस वायुसे ऐसी हानि हुई कि जंगलके जन्तु खेतोंमें आकर घास पर लोटे और मर गये।

शिकार।

३१ अमरदाद गुरुवार (भादों सुदी ७) को बादशाह नावमें बैठकर समूनगर गया।

३ शहरेवर (भादों सुदी ११) को खानआलमने दक्षिणसे आकर एक सौ मोहरें नजर कीं। बादशाहने इसको ईरान भेजनेके लिये बुलाया था।

समूनगर महावतखांकी जागीरमें था और उसने नदीके तट पर एक सुरम्य स्थान बनाया था, वह बादशाहको प्रिय लगा। महावतखांने एक हाथी और एक पन्नेकी अंगूठी भेट की।

६ (भादों सुदी १४) तक बादशाहने शिकार किया। ४७ हरन आदि पशु मारे।

सौर तुलादान।

२० (आश्विन बदी १३) गुरुवारको मरयमसकानीके महलमें बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान हुआ। वह लिखता है कि इस बरस मेरा ४४वां सौरवर्ष पूरा हुआ।

ईरानकी दूतकी बिदाई।

इसी दिन शाह ईरानका एलची यादगारअली और खानआलम

(१) यह महीना सावन सुदी ६ को समाप्त हुआ था।

ईरानको बिदा हुआ। बादशाहने उसे जड़ाऊ जीनका घोड़ा जड़ाऊ परतला चार कुब्ब सुनहरी कलंगी पर तथा जीगे सहित और तीस हजार रुपये दिये। सब माल चालीस हजार रुपयेका होगा। खानआलमको जड़ाऊ खपवा फूल कटारे सहित जिसमें मोतियोंकी लड़ी लगी थी मिला।

पितृदर्शन।

२२ (आश्विन बदी ३०)को बादशाह पांच हजार रुपये लुटाता हुआ हाथी पर सवार हो अपने पिताके दर्शनको बहिश्ताबाद(१)में गया और पांच हजार रुपये ख़्वाजाजहांको फकीरोंको बांटनेके लिये दिये। एतमादुद्दौलाके घर रहा जो जमनाके तट पर था। दूसरे दिन एतकादखांके नये बनाये मकानमें बेगमों सहित ठहरा। उसने जवाहिर और दूसरी उत्तम चीजें भेट कीं जिनमेंसे बादशाह कुछ अपनी रुचिके अनुसार लेकर सायंकालको राजमन्दिरमें आगया।

अजमेरको कूच।

२(२) शाबान २४ शहरेवर (आश्विन सुदी २) चन्द्रवारको सात घड़ी रात गया बादशाहने आगरेसे अजमेरको कूच किया। वह लिखता है कि इस यात्रासे मेरे दो मनोरथ थे—एक ख़्वाजामुईनुद्दीन चिश्तीके दर्शन करना जिनकी आत्माके प्रतापसे इस घरानेका बहुत कल्याण हुआ है, और मैं तख़्त पर बैठनेके पीछे यह पुण्य प्राप्त न कर सका था, दूसरे राणा अमरसिंहका सर करना, जो हिन्दुस्थानके मुख्य राजोंमेंसे है और जिसकी सरदारी और बड़ाईको इस विलायतके राजा और राव सब मानते हैं। बहुत दिनसे राज्य और ऐश्वर्य्य इसके घरानेमें चला आता है। पहले पूर्व दिशामें

(१) सिकन्दरा जहां अकबरकी समाधि है।

(२) चण्डूपञ्चांगकी गणितसे १ शाबान, मगर मुसलमानी मत से रातको २ ही थी।

इनका राज्य था और राजा कहलाते थे फिर दक्षिणको चले गये और वहांकी अधिक भूमिको जीतकर राजाके बदले रावल कहलाने लगे। वहांसे मेवात(१)के पहाडोंमें आये और होते होते चित्तौडगढ़के मालिक होगये। उस दिनसे आजतक (आठवां साल मेरे राज्य पर बैठनेका है) १४७१ वर्ष होते हैं। इस वंशके २६ पुरुष जिनका राज्य १०१० वर्ष रहा रावल कहलाते रहे। रावल(२) से जो पहिला पुरुष इस पदवीका हुआ है राना अमरसिंह तक जो आज राना है—२६ राना ४६१ वर्षमें हुए हैं और इतने लम्बे समयमें हिन्दुस्थानके किसी बादशाहके आगे नही झुके हैं, बल्कि बहुधा सिर उठाते और सामना करते रहे है बाबर बादशाहके समय से राणा सांगाने इस देशके सब राजा राव और जमीन्दारोंको एकत्र करके एक लाख अस्सी हजार सवारों और कई लाख पैदलों से बयानेके पास मैदानकी लडाई कीथी। ईश्वरकी कृपा और भाग्य के बलसे मुसलमानोंको काफिरों पर जीत हुई जिसका वृत्तान्त तवारीखके विश्वासी ग्रन्थों और विशेष करके बाबर बादशाहके वाकेआतमें जो उन्हींके लिखे हुए हैं सविस्तर लिखा है। मेरे पूज्य पिताने इन दंगई लोगोंके दबानेमें पूरा परिश्रम किया और कई बार इनके ऊपर सेना भेजी अपने राज्यशासनके बारहवें वर्षमें आप चित्तौडगढ़ जीतनेको गये जो दुनियाभरके सुदृढ़ दुर्गोंमेंसे है और ४ महीने एक दिन तक उसको घेरे रहे। फिर उसको राणा अमरसिंहके पिता(३) के मनुष्योंसे बल पूर्वक छीनकर और नष्टभ्रष्ट करके चले आये। जब जब बादशाही फौजें उसको(४) घेरकर ऐसा कर देती थीं कि या तो पकडा जाय या मारा जाय तबही कोई ऐसी बात होजाती थी कि जिससे यह यत्न सफल नहीं होने पाता था। निदान अपने राज्यके पिछले समयमें आप तो

(१) मेवाड चाहिये। (२) महाराना चाहिये।

(३) पिता नहीं दादा।

(४) राणा प्रतापसिंह अमरसिंहके पिताको।

दक्षिण जीतनेको गये और उसी मुहूर्त्तमें मुझे भी विशाल सेना और मुख्य मुख्य अमीरोंके साथ राणाके ऊपर भेजा। दैवयोगसे यह दोनो काम नहीं बने यहांतक कि मेरा समय आया और यह लडाई मेरीही अधूरी छोडी हुई थी इसलिये मैंने अपने पहिले वर्ष में जो सेना अपने राज्यकी सीमा पर भेजी वह वही थी जिस पर परवेजको सेनापति किया था। बडे बडे अमीरोंको जो राजधानीमें उपस्थित थे उसमें नियत करके प्रचुरद्रव्य और तोपखाना साथ दिया। परन्तु प्रत्येक कार्यके सिद्ध होनेका एक समय होता है उसी अवसर पर दुर्बुद्धि खुसरोका उपद्रव उठ खडा हुआ और मुझे उसके पीछे पंजाबको जाना पडा। राज्य और राजधानीके सूने रहनेसे मैने परवेजकोलिखा कि कुछ अमीरों सहित लौट आवे और आगरेकी रखवाली करे। सारांश यह है कि उस समयभी राना का झगडा जैसा चाहिये था वैसानहीं निबडा। जब खुसरोके बखेडे से चित्तको शांति हुई और मैं उर्दू सहित आगरेमें आया तो महाबत खां, अबदुल्लह खां और दूसरे सरदारोंके साथ फिर फौजें भेजीं। उस तिथिसे मेरे अजमेरको प्रस्थान करनेके वक्त तक उसके देश तो लशकरोंके पैरोंमें रौंदे गये पर लडाईका रूप मेरी पसन्दके योग्य नहीं बंधा। मैंने सोचा कि आगरेमें कोई काम नहीं है और यह भी मुझको निश्चय होही गया था कि जबतक मैं आप नहीं जाऊं इस लडाईमें सफलता नहीं होती इसलिये निर्दिष्ट समयमें आगरेके किलेसे निकलकर दहराबागमें मुकाम किया।

दूसरे(१) दिन दशहरेका उत्सव था बादशाहने नियमानुसार हाथी घोडोंको सजवाकर देखा।

खुसरोका छूटना।

खुसरोकी मा बहनें बादशाहसे कहा करती थीं और बादशाह को भी पुत्रमोहसे करुणा आई तो खुसरोको बुलाया और कहा कि सलाम करनेको आया करे।

---

(१) आश्विन सुदी ३ को दशहरेका उत्सव न जाने कैसे हुआ!

राजा रामदासकी मृत्यु।

२८ (आश्विन सुदी ७) को खबर आई कि राजा रामदास जो बंगश और काबुलकी सीमामें कुलीचखांके साथ था मर गया।

दहरेबागसे कूच।

१ महर (आश्विन सुदी ११) को दहरेबागसे कूच हुआ खान-जहांको आगरेकी, महलोंकी और खजानोंकी रखवाली पर छोड़ा गया।

राजा बासूकी मृत्यु।

२ (आश्विन सुदी १३) को खबर पहुंची कि राजा बासू थाने शाहबादमें जो अमरराणाकी विलायतकी सीमा पर था मर गया।

रूपवास।

१० (कातिक बदी ४) को रूपवासमें जिसका नाम अब अमनाबाद होगया था डेरे हुए। पहिले रूपवास रूपखवासकी जागीर में था फिर बादशाहने सलाबतखांके बेटे अमानुल्लहकी जागीरमें देकर फरमा दिया था कि अब इसको अमनाबादके नामसे पुकारा करें। यहां ११ दिन डेरे रहे यह शिकारकी जगह थी इसलिये बादशाह रोज शिकार खेलनेको जाया करता था। १५८ हरन और दूसरे पशु शिकार हुए।

अमनाबादसे कूच।

२५ (कातिक सुदी ५) को अमनाबादसे कूच हुआ।

३१ महर ८ रमजान (कार्त्तिक सुदी १०) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिणसे बुलाया हुआ आया। ५० मोहरें १५ जड़ाऊ पदार्थ और एक हाथी नजर किया।

कुलीचखांकी मृत्यु।

२ आबान १० रमजान (कातिक सुदी १२) को कुलीचखांके मरनेकी खबर पहुंची। यह पुराना नौकर था ८० वर्षका होकर पेशावर(१)में मरा जहां पठानोंके प्रबन्धके वास्ते ठहरा हुआ था। उसका मनसब छः हजारी जात और पांच हजार सवारोंका था।

---

(१) पेशावर।

मुरतिजाखां दक्खिणी।

बादशाहने मुरतिजाखां दक्खिनीको जिससे वर्षों तक उन्होंने पटेबाजी सीखी थी वरजिशखांका खिताब दिया।

पालन।

दीन दरिद्र और पालन करनेके योग्य लोग बादशाहकी आज्ञानुसार रात्रिमें उनके सम्मुख लाये जाते थे और वह प्रत्येककी दशा देखकर जमीन रुपये और कपडे देता था।

अजमेरमें प्रवेश।

५ शव्वाल २६ आबान (अगहन सुदी ७) चन्द्रवारको अजमेरमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त था इसलिये बादशाह इस दिन तडकेही सवार हुआ। जब किला और ख्वाजाजीका रौजा नजर आनेलगा तो एक कोससे पैदल चलने लगा विश्वासपात्र नौकर आज्ञानुसार दोनों ओरसे मांगनेवालोंको रुपये देते जाते थे। चारघड़ी दिन चढे शहरमें पहुंचा और पांचवीं घड़ीमें जियारत करके दौलतखानेको लौट आया।

दूसरे दिन हुक्म दिया कि इस पुण्यस्थानके सब रहनेवालों और रास्ते चलनेवालोंको लावें और हरेककी योग्यताके अनुसार दान दिया जावे।

पुष्कर।

७ आजर (पौष बदी २) को बादशाह हिन्दुओंके तीर्थ पुष्करके देखनेको जो अजमेरसे तीन कोस है गया और जलमुरगियां मारीं। तालाबके तट पर नये पुराने मन्दिर भी देखे जिनमें अमरराणाके चचा राणा सगरने जो बादशाही दरबारका बड़ा अमीर था लाख रुपये लगाकर एक भड़कीला मन्दिर बनवाया था। बादशाह उसमें गया और वहां बाराह अवतारकी मूर्त्ति देखकर हुक्म दिया कि इसको तोडकर तालाबमें डाल देवें। फिर एक पहाडीपर सफेद बुर्ज और उसमें हर तरफसे आदमियोंको लाते हुए देखकर हाल पूछा तो लोगोंने कहा कि वहां एक योगी रहता है, जो मूर्ख

लोग उसके पास जाते हैं उनके हाथमें मुट्ठीभर आटा देकर उस जानवरकी बोली बोलनेको कहता है जिसको उसने कभी सताया हो। ऐसा करनेसे पापकी निवृत्ति होजाती है।

बादशाहने उस स्थानको गिरवाकर योगीको निकलवा दिया और मूर्त्ति जो वहां थी तुडवा डाली। फिर यह सुनकर कि तालाब की गहराईका पता नहीं है निर्णय किया तो कहीं भी बारह गज से अधिक गहरा नहीं निकला। उसके घेरेको भी नपवाया तो डेढ कोसका हुआ।

शिकार।

१६ (पौष वदी १२) को खबर पहुंची कि शिकारियोंने एक सिंहनीको घेर रखा है। बादशाह गया और उसको बन्दूकसे मार कर आगया।

फरंगियोंका अत्याचार।

इस महीनेमें खबर पहुंची कि गोवा बन्दरके फरंगियोंने वचन छोडकर सूरत बन्दरके आनेवाले जहाजोंमेंसे चार परदेशी जहाजों को लूटा और बहुतसे मुसलमानोंको पकडकर उनके जहाजोंका सब मालभी लेलिया। यह बात बादशाहको बुरी लगी। १६ आजर (पौष वदी १४) को उसने लुटेरोंको दण्ड देनेके लिये मुकर्रबखांको हाथी घोड़ा और सिरोपाव देकर बिदा किया।

खुर्रमका राना पर जाना।

बादशाहका मूल अभिप्राय इस यात्रासे राणाको अधीन करने का था इस लिये आप तो अजमेरमें ठहर गया। और खुर्रमको आगे भेजनेका विचार करके ६ दे (पौष सुदी १५) का मुहूर्त निकलवाया। उस दिन उसको जरीकी सिली हुई चहारकब फूलोंकी कबा(१) जिन फूलोंकी कोरों पर मोती टंके हुए थे, जरीका चीरा मोतियोंकी लड़ियोंदार जरीका पटका मोतियोंकी झालरका, फतहगज नाम खासेका हाथी तलायर सहित,

(१) अचकन।

खासेका घोडा, जड़ाऊ तलवार, जडाऊ खपवा, फूल कटारे सहित देकर विदा किया अगले सिपाहियोंके सिवा जो पहलेसे खानआजमकी सरदारीमें इस मुहिम पर लगे हुए थे बारह हजार सवार और दिये। उनके अफसरोंको खासेके घोडे खासेके हाथी और श्रेष्ठ सिरोपावोंसे सुशोभित करके उसके साथ दिया। फिदाईखां इस लशकरका बखशी नियत हुआ।

काश्मीर।

उसी मुहूर्त्तमें सफदरखांको हाशिमखांकी जगह काश्मीरकी की मूबेदारी पर घोडा खिलअत देकर भेजा।

बखशीकुल।

११ दे (माघ बदी ५।६) बुधवारको ख्वाजा अबुलहसन बखशीकुल अर्थात् मीरबखशी हुआ।

देग।

बादशाहने ख्वाजाजीको दरगाहके वास्ते एक बडी देग(१) आगरेमें बनवाई थी। वह इन दिनोंमें आई तो उसमें खाना पकवाकर पांच हजार फकीरोंको अपने सामने खिलाया और सबको रुपये भी दिये।

---

(१) यह देग अबतक मौजूद है इसमें कई मन चावल खांड और घी डालकर रातको पकाते है और तडकेही लुटा देते है। साल भरमें दोचार देगे चढा करती है। उर्सके मेलेमें बड़े आदमी अपने नामके वास्ते देग चढ़ाते और लुटाते है।

दशवां वर्ष।

सन् १०२३

फागुन सुदी २ संवत् १६७० से माघ सुदी १ सवंत् १६७१ तक।

---

१ असफंदार १०(१) मुहर्रम (फागुन सुदी १०) को बादशाह अजमेरसे नीलगायोंके शिकारको गया। नवे दिन लौट आया। फिर हाफिज जमालके चश्मे पर गया जो शहर से दो कोस है जुमेको रातको वहां रहा।

इसलामखांकी मृत्यु।

२ (फागुन सुदी १२)को इसलामखांके मरनेकी खबर आई कि वह ५रज्जब (गुरुवार भादों(२) सुदी७)को मरगया। बंगालमें इसने बादशाही राज्यको खूब बढ़ाया था इसका मनसब भी छः हजारी जात और छः हजार सवारका था।

खानआजम पर कोप।

बादशाहने खानआजमको शाहजादेसे अनबन सुनकर इब्राहीम हुसैनको उसके समझानेके वास्ते भेजा और कहलाया कि जब तू बुरहानपुरमें था तो तूने मुझसे यह काम मांगा था। तू इसमें अपना कल्याण समझता था और लोगोंमें बैठकर कहा करता था कि जो इस लड़ाईमें मारा जाऊंगा तो शहीद हूंगा और जीतूंगा तो गाजी कहलाऊंगा। फिर तूने लिखा कि बादशाही सवारीके आये बिना यह फतह होनी मुशकिल है और तेरी सलाहसे हमारा अजमेरमें आना हुआ। अब तूने शाहजादेको बुलाया। मैंने बाबा खुर्रमको जिसे कभी अलग नहीं किया था, तेरे भरोसे पर भेजा। यह सब काम तेरीही सलाहसे हुए है।

---

(१) पञ्चाङ्गके गणितसे ८।

(२) यह खबर न जाने क्यों छः महीने पीछे आई थी।

फिर क्या सबब है कि तू अब इस लडाईसे अपना पांव खेंचता है। चाहिये कि शुभचिन्तक और स्वामिभक्त रहकर शाहजादेकी रात दिन सेवा करता रहे अगर इसके विरुद्ध किया तो याद रख कि अपना बिगाड तू आपही करेगा।

इब्राहीमने जाकर यह सब बातें खानआजमसे कहीं परन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह अपनी हठसे नहीं हटा। तब खुर्रमने उसको पहरेमें रखकर बादशाहसे अर्ज कराई कि इसका यहां रहना अच्छा नहीं है। क्योंकि यह खुसरोके संबंधसे काम बिगाड़नेकी चेष्टामें है। बादशाहने महाबतखांको हुक्म दिया कि जाकर उदयपुरसे उसको लेआवे और उसके बालबच्चोंको मंदसोरसे अजमेरमें लानेके लिये बयूतात(१) के दीवान मुहम्मद तकीको भेजा।

दलपतरायका मारा जाना।

११ (चैत्र बदी ६) को पहले खबर पहुंची कि रायसिंहका बेटा दलपत जो दुष्ट स्वभाव था अपने भाई सूरजसिंहसे जिसे बादशाहने उसके ऊपर भेजा था लडाई हारकर सरकार हिसारके एक किलेमें घिरा हुआ है और इसके साथही वहांके फौजदार हाशिम और उस जिलेके जागीरदारोंने दलपतको पकडकर भेज दिया। बादशाहने उसको मरवा(२) डाला क्योंकि उसने कई बार बुराई की थी। इस कामके इनाममें सूरजसिंहके मनसबमें पांच सदी जात और दो हजार सवारकी वृद्धि हुई।

आलमकमान हाथी।

१४ (चैत्र बदी ८) को खुर्रमकी अर्जी पहुँची कि आलमकमान हाथी जिस पर रानाको बड़ा घमण्ड था सतरह दूसरे हाथियों

---

(१) कारखानों।

(२) दलपतसे क्या क्या अपराध हुए थे इसका कुछ ब्योरा ऊपर नहीं आया है और न इस बातका कुछ उल्लेख है कि सूरजसिंह दलपतके ऊपर कब और क्यों भेजा गया था।

सहित फौजमें पकड़ा आया है और उसका स्वामी भी शीघ्रही पकड़ा जायगा।

नवां नौरोज।

९ सफर (चैत्र सुदी १०) गुरुवारको दोपहर एक घडी रात जाने पर सूर्य्य मेख राशि पर आया। दूसरे दिन नवां नौरोज हुआ। अजमेरमें सभा जुडी। राजभवन दिव्य वस्त्रों रत्नों और जडाऊ पदार्थोंसे सजाया गया। बादशाह राजसिंहासन पर बैठा। उसीसमय खुर्रम बाबाके भेजे हुए आलमकमान हाथी और सतरह दूसरे हाथी हथनियोंके आनेसे सभाकी शोभा बढ़ गई। बडा आनन्दमंगल हुआ।

दूसरे दिन बादशाहने शुभशकुन समझकर उस हाथी पर सवारी की। उस समय बहुतसे रुपये न्यौछावर हुए।

तीसरे दिन एतकादखांका मनसब दोहजारीसे तीनहजारी हो गया और उसको आसिफखांका खिताब मिला जो पहले भी उसके घरानेके दो पुरुषोंको मिल चुका था। उसके बाप एतमादुद्दौलाका भी मनसब बढकर पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

खुर्रमके लिखनेसे सैफखांके बारह और दिलावरखांके पांच पांच सदी जात तथा दो दो सौ सवार और किशनसिंहके पांचसौ सवार बढे।

इसी तरह और अमीरोंके मनसबोंमें भी वृद्धि हुई।

१५ फरवरदीन (बैसाख वदी ११) को महाबतखां खानआजम और उसके बेटे अबदुल्लहको लेकर आगया। बादशाहने खानआजमको, यह सोचकर कि कहीं खुसरोके पक्षपातसे रानाकी फतहमें विघ्न न डाले आसिफखांके हवाले किया और कहा कि गवालियरके किलेमें आरामसे नजरबन्द रखे।

खुसरो।

१८ उर्दी बहिश्त (प्रथम जेठ वदी ३०) को खुसरोकी छोड़ी

अन्द होगई क्योंकि वह दरबारमें तो आता था परन्तु उदास रहा करता था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम(१) सफवीके अन्यायसे ठट्ठेकी प्रजाने पुकार की। बादशाहने उसे बुलाया वह २६ उर्दीबहिश्त (प्रथम जेठ सुदी ७) को आया तो वह अनीराय सिंहदलनको सौंप दिया गया कि निर्णय होने तक कुछ दुःख पावे और दूसरे लोग भी सहम जावें।

अहदादकी हार।

मोतकिदखां पोलमकी घाटीमें जो परशावरके पास है और खानदौरां काबुलके पास अहदादका रास्ता रोके हुए थे। इतनेमें अहदाद बहुतसे सवारों और पैदलोंके साथ जलालाबादसे आठ कोस कोटतिराहमें आकर ठहरा और वहांके जो लोग अधीन होगये थे उनमेंसे कुछको मार और कुछको पकड़कर जलालाबाद और पेशबुलागके ऊपर आनेका विचार करने लगा।

मोतकिदखांने यह सुनकर ६ फरवरदीन (बैसाख बदी १) बुधवारको उसपर चढाई की। वह खानदौरांके सिवा और किसी सेनाके उस प्रान्तमें विद्यमान होनेकी सूचना न होनेसे निश्चिन्त बैठा था; तो भी खूब लड़ा। अन्तको बन्दूकोंकी मारसे घबराकर भाग निकला। मोतकिदखांने तीन चार कोस तक पीछा करके उसके पन्द्रह सौ आदमी मारे। शेष हथियार डालकर भाग गये। मोतकिदखां रातको तो रणभूमिमें रहा और तड़के छः सौ सिर पठानोंके लेकर परशावरमें आया और वहां उनका बुर्ज(२) कोट बनवाया। पांचसौ गाय बैल बकरी घोड़े और बहुतसा धन माल

(१) यह ईरानके शाह तुहमास्प सफवीके भतीजे सुलतान हुसैन मिरजाका बेटा था इसका बाप कन्धार और जमीनदावरका हाकिम था मगर तूरानके बादशाह अबदुल्लहखां उजबकके डरसे अपना मुल्क अकबर बादशाहको देकर हिन्दुस्थानमें आगया था।

(२) बैरियोंके मस्तकोंका स्तम्भ।

हाथ आया। तिराहकी जो बन्दी थे वह भी छूट गये। इधरसे कोई बडा आदमी नहीं मरा। बादशाहने मोतकिदखांको लश-करखांका खिताब दिया।

शिकार।

१ खुरदाद (प्रथम जेठ सुदी १४) गुरुवारकी रातको बादशाह शिकारके वास्ते पुष्करको गया और शुक्रवारको दो शेर बन्दूकसे मारे।

नकीबखांकी मृत्यु।

इसी दिन नकीबखांके मरनेकी अर्जी हुई। उसकी स्त्री दो महीने पहले मर गई थी दोनों मियां बीबीमें बड़ा प्यार था। इस लिये बादशाहने इसको भी बीबीके पास ख्वाजाजीकी दरगाहमें गाड़नेका हुक्म दिया।

रानाकी लडाई।

बादशाहने दियानतखांको उदयपुरमें खुर्रमके पास हुक्म पहुंचाने के वास्ते भेजा था उसने आकर खुर्रमके साहस और प्रबन्धकी बडी तारीफ की।

फिदाईखांकी मृत्यु।

फिदाईखां जो खुर्रमके लशकरका बखशी था १२ (द्वितीय जेठ बदी १०) को मर गया। यह बादशाहका लडकपनका नौकर था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर पछताने लगा था इसलिये बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके उसको सम्मुख बुलाकर खिलअत पहनाया और दरबारमें आनेकी आज्ञा दी।

हथनीका बच्चा देना।

११ तीर (आषाढ बदी ३०) रविवारको रातको शाही हथनीने बादशाहके सम्मुख बच्चा दिया। बादशाहने गर्भकी अवधि निर्णय की तो विदित हुआ कि जो बच्चा नर हो तो डेढ सालमें और मादा हो तो उन्नीस महीनेमें जनती है। आदमीका बच्चा तो

विशेष बारकी सिरकी ओरसे जन्मता है और हथनीका टांगोंकी ओरसे।

बच्चे के जन्मतेही हथनी उस पर धूल डालकर प्यार करने लगी और बच्चा भी चण भर पीछे उठकर दूध पीने लगा।

राजा मानसिंहकी मृत्यु।

५ अमरदाद (सावन बदी ७) को दक्षिणसे राजा मानसिंहके मरनेकी खबर आई। बादशाहने भावसिंहको जो उसके बेटोंमेंसे बहुत सुशील था बुलाया। राज्यका अधिकारी तो हिन्दुओंकी रीति और इस घरानेकी मर्थ्यादासे राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगत सिंहका बेटा महासिंह था क्योंकि जगतसिंह बापके जीतेजी मर चुका था। परन्तु भावसिंह बादशाहकी सेवामें लड़कपनसे बहुत रहा था इसलिये बादशाहने उसको चार हज़ारी जात तीन हजार सवारका मनसब मिरजा राजाका खिताब और अजमेरका राज्य दिया। इसके बदलेमें महासिंहको गढ़ेका राज देकर पांच सदी मनसब भी उसका बढ़ाया घोड़ा सिरोपाव और जड़ाऊ कमरपट्टा भी उसके लिये भेजा।

बादशाहकी बीमारी।

८ अमरदाद (सावन बदी १०) को बादशाहकी तबीयत खराब हुई। माथा दुखने और ज्वर आने लगा। परन्तु राज्यमें विघ्न पड़नेकी आशंकासे नूरजहां(१) बेगमके सिवा और किसीको अपनी दशा नहीं कही। खुराक घट गई थी तो भी नित्य नियमानुसार खास, आम, दीवानखाने, झरोखे और गुसलखानेमें जाता आता रहा। निदान जब थक गया तो हकीमोंसे कहा और ख्वाजाजी की दरगाहमें जाकर परमेश्वरसे अपने अच्छे होनेकी प्रार्थना की। प्रसाद और मन्नत मानी तब आराम हुआ। सिरका कुछ दर्द बाकी था वह हकीम अबदुलशकूरकी दवासे जाता रहा।

(१) बादशाहने नूरजहांका नाम पहले पहल यहां लिखा है महलमें तो वह तीन वर्ष पहलेही आगई थी।

हाथ आया। तिराहके जो बन्दी थे वह भी छूट गये। इधरसे कोई बडा आदमी नहीं मरा। बादशाहने मोतकिदखांको लश-करखांका खिताब दिया।

शिकार।

१ खुरदाद (प्रथम जेठ सुदी १४) गुरुवारकी रातको बादशाह शिकारके वास्ते पुष्करको गया और शुक्रवारको दो शेर बन्दूकसे मारे।

नकीबखांकी मृत्यु।

इसी दिन नकीबखांके मरनेकी अर्जी हुई। उसकी स्त्री दो महीने पहले मर गई थी दोनों मियां बीबीमें बडा प्यार था। इस लिये बादशाहने इसको भी बीबीके पास ख्वाजाजीकी दरगाहमें गाड़नेका हुक्म दिया।

रानाकी लडाई।

बादशाहने दियानतखांको उदयपुरमें खुर्रमके पास हुक्म पहुंचाने के वास्ते भेजा था उसने आकर खुर्रमके साहस और प्रबन्धकी बडी तारीफ की।

फिदाईखांकी मृत्यु।

फिदाईखां जो खुर्रमके लशकरका बखशी था १२ (द्वितीय जेठ बदी १०) को मर गया। यह बादशाहका लडकपनका नौकर था।

मिरजा रुस्तम।

मिरजा रुस्तम अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर पछताने लगा था इसलिये बादशाहने उसका अपराध क्षमा करके उसको सम्मुख बुलाकर खिलअत पहनाया और दरबारमें आनेकी आज्ञा दी।

हथनीका बच्चा देना।

११ तीर (आषाढ बदी ३०) रविवारकी रातको शाही हथनीने बादशाहके सम्मुख बच्चा दिया। बादशाहने गर्भकी अवधि निर्णय की तो विदित हुआ कि जो बच्चा नर हो तो डेढ सालमें और मादा हो तो उन्नीस महीनेमें जनती है। आदमीका बच्चा तो

विशेष करके सिरकी ओरसे जन्मता है और हथनीका टांगोंकी ओरसे।

बच्चेके जन्मतेही हथनी उस पर धूल डालकर प्यार करने लगी और बच्चा भी क्षण भर पीछे उठकर दूध पीने लगा।

राजा मानसिंहकी मृत्यु।

५ अमरदाद (सावन बदी ७) को दक्षिणसे राजा मानसिंहके मरनेकी खबर आई। बादशाहने भावसिंहको जो उसके बेटोंमेंसे बहुत सुशील था बुलाया। राज्यका अधिकारी तो हिन्दुओंकी रीति और इस घरानेकी मर्य्यादासे राजा मानसिंहके बड़े बेटे जगतसिंहका बेटा महासिंह था क्योंकि जगतसिंह बापके जीतेजी मर चुका था। परन्तु भावसिंह बादशाहकी सेवामें लड़कपनसे बहुत रहा था इसलिये बादशाहने उसको चार हजारी जात तीन हजार सवारका मनसब मिरज़ा राजाका खिताब और अजमेरका राज्य दिया। इसके बदलेमें महासिंहको गढ़ेका राज देकर पांच सदी मनसब भी उसका बढ़ाया घोड़ा सिरोपाव और जड़ाऊ कमरपट्टा भी उसके लिये भेजा।

बादशाहकी बीमारी।

८ अमरदाद (सावन बदी १०) को बादशाहकी तबीयत खराब हुई। माथा दुखने और ज्वर आने लगा। परन्तु राज्यमें विघ्न पड़नेकी आशंकासे नूरजहां(१) बेगमके सिवा और किसीको अपनी दशा नहीं कही। खुराक घट गई थी तो भी नित्य नियमानुसार खास आम, दीवानखाने, झरोखे और गुसलखानेमें जाता आता रहा। निदान जब थक गया तो हकीमोंसे कहा और ख्वाजाजीकी दरगाहमें जाकर परमेश्वरसे अपने अच्छे होनेकी प्रार्थना की। प्रसाद और मन्नत मानी तब आराम हुआ। सिरका कुछ दर्द बाकी था वह हकीम अबदुलशकूरकी दवासे जाता रहा।

---

(१) बादशाहने नूरजहांका नाम पहले पहल यहां लिखा है महलमें तो वह तीन वर्ष पहलेही आगई थी।

बादशाह लिखता है कि नौकर चाकर क्या प्रजाने भी इस प्रसन्नतामें दान पुण्यके लिये बहुतसा द्रव्य देना चाहा परन्तु मैंने किसीका कुछ नहीं लिया। सबसे कह दिया कि अपने अपने घरों में जो चाहें फकीरोंको बांटें।

कर्ण छेदन।

१२ शहरेवर २८(१) रज्जब (भादों बदी ३०) गुरुवारको बादशाहने दोनो कान छिदवाकर मोती पहने। क्योंकि बीमारीमें यह मन्नत मानी थी कि जो ख्वाजाजीके प्रभावसे अच्छा होजाऊंगा तो जैसे अन्तःकरणसे उनकी भक्ति करूंगा वैसेही प्रत्यक्षमें कान छिदवा कर उनके दासोंमें मिल जाऊंगा।

बादशाहको कान छिदाते देख कर बहुत लोगोंने भी क्या दूर क्या हजूरमें अपने कान छिदवा लिये। बादशाहने भी अपने रत्न-भाण्डारसे उनको मोती दिये। होते होते सर्वसाधारणमें भी कान छिदवानेकी चाल चल पडी।

२२ गुरुवार १० शाबान (भादों सुदी ११) को बादशाहकी सौर वर्षगांठका तुलादान हुआ। इसी दिन मिरजा राजा भावसिंह कृतार्थ और पूर्णकाम होकर अपने देशको गया। दो तीन महीने से अधिक न ठहरनेकी प्रतिज्ञा करने पर उसको छुट्टी मिली थी।

६ आबान (कार्त्तिक बदी ११) को किरावलोंने छः कोस पर तीन सिंहोंकी खबर दी। बादशाह दोपहर ढलतेही गया और तीनोंको बन्दूकसे मार लाया।

८ (कार्त्तिक बदी १३) को दिवालीका द्वन्द मचा। दरबारी लोग बादशाहकी आज्ञासे उनके समक्ष दो तीन रात जुआ खेलते रहे। खूब हार जीत हुई।

---

(१) चंडूपञ्चाङ्गकी गणित से २७।

२) तु० ज० पृ० १३१ में २२ शहरेवर १० शाबान गुरुवारको तुलादान होना लिखा है इसमें इतनी भूल है कि २२ शहरेवर तो गुरुवारको नहीं रविवारको थी और शाबानकी ९वीं तारीख थी।

१८ (कार्त्तिक सुदी ११) को सिकन्दर मकीन किरावलकी लाश उदयपुरसे जहां खुर्रमके डेरे थे अजमेरमें आई। यह पुराना नौकर था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सब किरावल साथ जाकर आना सागर(१)के तट पर गाड देवें।

१२ आजर (अगहन सुदी ३) को २ लडकियां (जो इसलामखां ने कोचके जमींदारोंसे, जिनकी विलायत पूर्वके अन्तिम सीमा पर है ली थीं) और ८४ हाथी भेट हुए और उसके वेटे होशंगने दो हाथी सौ मोहर और एक सौ रुपये नजर किये।

सपना।

बादशाहने एक रात अपने पिताको सपनेमें यह कहते हुए देखा कि बाबा खानआजम अजीजखांके गुनाह मेरी खातिरसे बख्श दे।

नूर चश्मा।

अजमेरकी तलहटीमें हाफिज जमालके नामसे एक दरा और चश्मा प्रसिद्ध है बादशाहने उस सुरम्य स्थानको पसन्द करके वहांके योग्य राजभवन बनानेका हुक्म दिया था। एक वर्षमें ऐसा उत्तम भवन बना कि पृथ्वी पर्य्यटन करनेवाले उसके समान कोई स्थान नहीं बताते थे। वहां ४० गज लम्बा और उतनाही चौडा एक झालरा निर्माण हुआ था जिसमें चश्मेका पानी फव्वारेसे डाला गया था। इसका पानी १०।१२ गज ऊंचा उछलकर गिरता था। झालरेके ऊपर बैठकें बनी थीं। ऐसेही ऊपरके खण्डमें भी जहां तालाब और चश्मा था मनोहर मन्दिर सुखद सदन और ऊंचे झरोखे झुके थे कईएकमें तो चतुर चित्रकारोंने विचित्र चित्रकारी की थी। बादशाहने उस स्थानका नाम नूरचश्मा रखा जो उसके नाम नूरुद्दीनसे मिलता हुआ था। वह लिखता है—"इसमें यही दोष है कि किसी वडे नगरमें या ऐसी जगह पर न हुआ

---

(१) आना सागरका नाम राना शंकर तु० ज० में लेखकके दोषसे लिखा गया है।

जहां बहुत लोग आते जाते। बन जानेके पीछे मैं गुरुवार और शुक्रवारको बहुधा वहीं रहता हूं। मैंने कवियोंको प्रशस्ति लिखनेकी आज्ञा की तो भूषणागारके कर्मचारी सईदाय गीलानीने जो प्रशस्ति भेट की वही मैंने पत्थर पर खुदवाकर नीचेके भवन पर लगवादी।(१)

अनार और खरबूजे।

माघ महीनेके लगतेही विलायतके व्यापारी आये और यज्द(२) के अनार और कारेज(३) के खरबूजे लाये जो खुरासानके देशमें सर्वोत्तम होते हैं। बादशाह लिखता है—"दरगाहके सब बन्दों और सीमा प्रान्तके असीरोंने इस मेवेका हिस्सा पाकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। अबतक मुझको उत्तम अनार और खरबूजे नहीं मिले थे। यों तो वर्षभर बदखशांसे खरबूजे और काबुलसे अनार आया करते हैं पर वह यज्दके अनार और कारेजके खरबूजोंके समान नहीं होते। मेरे पिताको मेवेको बहुत रुचि थी मुझे बडा अफसोस हुआ कि यह मेवे उनके समयमें नहीं आये। आते तो वह बहुत प्रसन्न होते।

जहांगीरी अतर।

ऐसाही अफसोस मुझे अतर जहांगीरीका भी है कि जो उनके सूंघनेमें नहीं आया। यह अतर मेरे राज्यमें नूरजहां बेगमकी साके

(१) यह स्थान प्रशस्ति सहित नूरचश्मेमें अब भी है। झालरा और फव्वारा टूट गया है। तीस वर्ष पहले अंगरेजी सरकारसे कुछ मरम्मत हुई थी पर न अब वैसी छटा है न वह पानी है। न फव्वारा चलता है न चादर गिरती है। सब मकान सूने और उजडे पडे हैं। नूरचश्मेकी जामनें मशहूर थीं अब कई वर्षसे अच्छी वर्षा न होनेसे वह भी वैसी नहीं होतीं।

(२) 'यज्द' ईरानमें एक पुराना प्रदेश है।

(३) कारेज, हिरातमें खरबूजोंके खेत है हिरात अब काबुलके राज्यमें है।

परिश्रमसे नया निकाला है। जब गुलाबका जल निकालते हैं तो उसके ऊपर कुछ चिकनाई आजाती है। उसको थोड़ा थोड़ा लेकर यह अतर बनाया गया है इसमें इतनी अधिक सुगन्ध होती है कि एक बूंद हथेलीमें मल लीजाय तो मजलिसभर महकउठती है और ऐसा मालूम होता है कि बहुतसे गुलाबके फूल खिलगये हैं। इसका तीव्र सौरभ ऐसा सुन्दर और सुरम्य होता है कि जिससे मुरझाया हुआ हृदय कमलसा प्रफुलित होजाता है। मैंने इस अतरके इनाममें एक माला मोतियोंकी उसको इनायत की। सलीमा सुलतान बेगम उस समय जीती थी उसने इस तेलका नाम जहांगीरी अतर रखा।

हिन्दुस्थानकी विचित्रता।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानकी हवामें बहुत विचित्रता देखी जाती है लाहोर जो हिन्दुस्थान और विलायतके बीचमें है वहां इस ऋतुमें तूत बहुत फला। और वैसाही मीठा और रसीला हुआ जैसा कि अपनी ऋतु गरमी में होता है।

कई दिन लोग उनके खानेसे प्रसन्न रहे। यह बात वहांके अखबार लिखनेवालोंने लिखी थी।

बखतरखां कलावंत।

बखतरखां कलावंत जिसको आदिलखांने अपनी बेटी ब्याही थी और जो ध्रुपद गानेमें उसका मुख्य शिष्य था फकीरी भेषमें प्रगट हुआ। बादशाहने उसको बुलाकर हाल पूछा। बहुत आदर किया। दस हजार रुपये सब प्रकारके ५० पदार्थ और एक मोतियोंकी माला देकर आसिफखांके घरमें ठहराया। बादशाहकी समझमें यह आदिलका भेजा हुआ भेद लेनेको आया था और इस बातको पुष्टि मीर जमालुद्दीनकी अर्जीसे भी हुई जो आदिलखांके पास गया हुआ था। उसने अर्जीमें लिखा था कि आदिलखाने कहा है कि जो कुछ मान मर्य्यादा बखतरखांकी हुई है वह मेरीही हुई हैं। यह जानकर बादशाहने और भी उस पर कृपा की। वह

रातोंको सेवामें रहता था और आदिलखांके बनाये हुए ध्रुपद जिनका नाम उसने नवरस* रखा था सुनाया करता था।

एक विचित्र पच्ची।

इन दिनोंमें जेरबाद देशसे एक पच्ची बादशाहके पास लाया गया जिसका रंग लोतिकासा था परन्तु आकारमें उससे छोटा था। उसमें विशेष बात यह थी कि जिस लकडी या वृत्तकी शाखा पर उसे बैठाते उसको वह एक पांवसे पकडकर औंधा लटक जाता और सारी रात गाया करता। जब दिन निकलता तो फिर उस शाखा पर जा बैठता। बादशाह लिखता है कि लोग पशु पच्चियोंकी भी एक तपस्या बताते हैं। पर इसका यह काम स्वाभाविक जाना जाता है।

वह पच्ची पानी नहीं पीता था जो और सब जीवोंके वास्ते जीवनका मूल है वह इसके लिये विष था।

राणाका अधीन होना।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको लगातार कई बधाइयां पहुंचीं जिनमें मुख्य राणा अमरसिंहके अधीन होजानेकी थी। खुर्रमने जगह जगह और विशेष करके उन कई स्थानोंमें जहां जल वायुके विकार और विकट घाटियोंकी कठिनतासे लोग थानोंका बैठना संभव नहीं समझते थे थाने बैठाने शिशिर ग्रीष्म और पावस ऋतुमें भी सेनाके पीछे सेना दौड़ाने तथा वहांकी अधिक प्रजाके बालबच्चे पकड लेनेसे रानाको ऐसा कायर कर दिया था कि उसको यह निश्चय होगया कि जो इस दशामें कुछ दिन और बीतेंगे तो या तो मैं अपने देशसे निकाला जाऊंगा या पकडा जाऊंगा।

---

* नवरस इब्राहीम आदिलखांके ग्रन्थका नाम है जिसमें संगीत का विषय है। जहूरी नाम मुसलमान कविने इसकी व्याख्यामें एक काव्य फारसी भाषाका रचा है आदिलखां गानविद्यामें निपुण था।

उसने और कुछ उपाय न देखकर अधीन होनाही स्वीकार करके अपने मामा शुभकरणको हरदास झालाके साथ जो उसका एक बुद्धिमान सचिव था खुर्रमके पास भेजा और यह कहलाया कि जो आप बादशाहसे प्रार्थना करके मेरे अपराध क्षमा कर देवे और मेरे चित्तकी शान्तिके लिये बादशाहके पंजेकी छाप मंगवा देवें तो मैं आपके पास आऊं और टीकाई बेटे कर्णको बादशाहकी सेवामें भेजूं वह दूसरे सब राजोंकी रीतिके अनुसार सेवा किया करेगा। मुझे बुढ़ापेके कारण दरगाहकी हाजिरीसे माफी दीजावे।

खुर्रमने उनको अपने दीवान शुक्रुल्लह और मीर सामानसुन्दर के साथ बादशाहके पास भेजा। बादशाह लिखता है कि मेरी नियत शुरूसे यथासाध्य पुराने घरानोंके बिगाडनेकी नहीं रही है मुख्य मन्तव्य यही था कि राणा अमरसिंह और उसके बाप दादोंने अपने विकट पहाड़ों और सुदृढ स्थानोंके घमण्डसे न तो हिन्दुस्थानके किसी बादशाहको देखा है और न सेवा की है। मेरे राज्यमें उनकी वह बात न रहे। मैंने लडकेकी प्रार्थनासे राणाके अपराध क्षमा करदिये। उसकी शांतिके लिये प्रसादपत्र और अपनी हथेलीकी छाप भी भेजी और खुर्रमको लिखा कि तुम ऐसा करो जो यह काम बन जावे। जिससे यह प्रगट हो कि तुमने मेरे एक मनचाहे कामको पूरा किया।

खुर्रमने भी उनको मुल्ला शुक्रुल्लह और सुन्दरदासके साथ राणाके पास भेजा। उसने उसको बादशाही दयापात्र करके वह कृपापत्र और पंजेका चिन्ह दिया और यह बात ठहराई कि २६ बहमन (फागुन बदी २) रविवारको राणा अपने बेटों सहित आकर खुर्रमसे भेट करे।

बहादुरका मरना।

दूसरी बधाई यह थी कि बहादुर जो गुजरातके अगले बादशाहोंके वंशमें था और वहां उपद्रव किया करता था मरगया।

शाहोंकी सेवामें टीकाई बेटा बापके साथ नहीं आता है उसीके अनुसार राना भी अपने बड़े बेटे कर्णको साथ नहीं लाया था परन्तु खुर्रमके कूच कर जानेका मुहूर्त उसीदिन सायंकालको था इससे उसने रानाको कर्णके भेजनेके लिये शीघ्रही बिदा करदिया।

रानाके जानेके बाद कर्णने मुजरा किया। उसको भी खुर्रम ने उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार, कटार, सोनेकी जीनका घोड़ा और खासेका हाथी दिया और उसीदिन उसको साथ लेकर अजमेरको प्रस्थान किया।

शिकार।

३ असफंदार (फागुन बदी ८) को बादशाह शिकारसे लौटकर अजमेरमें आया। १७ बहमन माघ सुदी ८ को गया था। १६ दिन मे एकसिंहनी तीन बच्चों सहित और तेरह नीलगायका शिकार हुआ।

खुर्रमका सम्मान।

१० (फागुन सुदी १) शनिवारको खुर्रमके डेरे देवरानीगांव* में हुए जो अजमेरके पास है। बादशाह ने हुक्म दिया कि सब अमीर अगवानीको जावें और यथायोग्य शाहजादेको भेट दें।

खुर्रमका दरबारमें आना।

११ (फागुन सुदी २ रविवार) दूसरे दिन खुर्रमने बड़े दबदबे से सब सेनाओंके साथ खासोआम दौलतखाने में प्रवेश किया। दो पहर पर दो घड़ी दिन आये उसके मुजरा करनेका मुहूर्त था। उसने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर बार बार सिजदे किये। १०००) और १००० मोहरें नजर तथा इतनेही रुपये और मोहरें न्योछावर कीं।

बादशाहने उसको पास बुलाकर छातीसे लगाया। उसका सिर और मुंह चूमा। उसने प्रार्थना की कि हुक्म हो तो कर्ण मुजरा करनेको आवे। बादशाहने फरमाया कि हां उसको लावें। बख्शियोंने नियमानुसार लाकर उसको खड़ा किया। उसने मुजरा

करके सिर झुकाया। खुर्रमकी अर्जसे हुक्म हुआ कि उसको दहने हाथकी श्रेणीमें सबके ऊपर खड़ा करें।

फिर बादशाहने खुर्रमसे फरमाया कि जाकर अपनी माताओंसे मिलो। खिलअत खासा जो चार जड़ाऊ कुब्बका था, जरीकी बनी हुई कबा और एक मोतियोंकी माला उसको इनायत हुई। खिलअतका मुजरा करनेके पीछे खासेका घोड़ा जड़ाऊ जीनका, और खासेका हाथी उसको दिया। कर्णको भी उत्तम खिलअत और जड़ाऊ तलवार मिली।

जो अमीर साथ गये थे उनपर भी यथायोग्य कृपा हुई।

कर्ण पर कृपा।

बादशाह लिखता है कि कर्णका मन लगाना जरूर था वह पशु प्रकृति था कभी सभा नहीं देखी थी और पहाड़ोंमें रहा आया था इसलिये मै नित्य नई कृपा उसके ऊपर करता था। मुजरा करनेके दूसरे दिन जड़ाऊ कटार और तीसरे दिन जड़ाऊ जीनका खासा इराकी घोड़ा उसको दिया। इसी दिन वह जनानी ड्योढ़ी पर गया तो नूरजहां बेगमकी ओरसे भी उत्तम सिरोपाव जड़ाऊ तलवार घोड़ा और हाथी उसे मिले। फिर मैंने बहुमूल्य मोतियोंकी माला दी। दूसरे दिन खासेका हाथी तलायर सहित दिया। मै चाहता था कि उसको अनेक प्रकारके पदार्थ दिये जावें। इस लिये तीन बाज तीन जुर्रे एक शाही तलवार इक्कीस बखतर एक शाही कवच एक अंगूठी लालकी और एक पन्नेकी उसे दी। महीने के अन्तमें मैंने सब भांतिके कपड़े कालीन नमद तकिये सब जाति की सुगन्ध सोनेके बर्तन २ गुजराती बहल मगाये। इन सब पदार्थों को अहदी लोग सौ थालोंमें सिरों और कान्धों पर उठाकर दीवान-खाने खासोआममें लाये और मैंने सब कर्णको बख्श दिये।"

बादशाहका दान।

बादशाहने यह नियम बांधा था कि जो लोग कुछ मांगनेको दरबारमें आते थे उनको दोपहर रात व्यतीत होने पर बादशाहको

सेवामें लेजाते थे। इस वर्ष ऐसे लोगोंको बादशाहने नीचे लिखे अनुसार दान दिये थे।

नकद ५५०००)	खेत २६ हल
जमीन १९०००० बीघे	धान ११००० गोन
पूरे गांव १४	मोती ७३२ नग ३६०००) के कान छिदानेवालोंको।

पोता।

इन्ही दिनोंमें बधाई आई कि ११ असफन्दार (फागुन सुदी २) रविवारको बुरहानपुरमें शाह मुरादकी बेटीसे परवेजको ईश्वरने बेटा दिया है। बादशाहने उसका नाम सुलतान दूरन्देश रखा।

दसवां नौरोज।

१ फरवरदीन २० सफर (चैत बदी ७) को ५५ घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य मीन राशिसे मेखमें आया। बादशाह तीन घड़ी रात गये नौरोजकी सभामें सिंहासन पर बैठा। सब लोगोंने मुजरा किया। एतमादुद्दौलाके पांच हजारी जात और दो हजार सवारोंके मनसब पर हजारी जात और एक हजार सवार बढ़े। कुंवर कर्ण, जहांगीर कुलीखां और राजा बरसिंह देवको शाही घोड़े मिले।

आसिफखांकी भेट रत्नों और रत्नजड़ित सोनेके पदार्थोंकी थी। दूसरे दिन बादशाहने उसमें पचासी हजारकी चीजें पसन्द करके ले लीं। इसी दिन जड़ाऊ तलवार परतले सहित कर्णको दी।

माण्डो (मंडू)।

बादशाहका विचार दक्षिण जानेका था इसलिये अबदुलकरीम मामूरीको हुक्म हुआ कि माण्डोमें जाकर नया राजभवन बनावें और अगले बादशाहोंके स्थानोंका भी जीर्णोद्धार करें।

तीसरे दिन राजा बरसिंह देवको भेट हुई। बादशाहने उसमेंसे एक लाल कई मोती और एक हाथी लेलिया।

चौथे दिन मुरतिजाखांका मनसब पांच सदी जात और दो सौ सवारोंके बढ़ानेसे दो हजारी जात और अढ़ाईसौ सवारोंका

होगया। पांचवें दिन एतमादुद्दौलाको नक्कारा और झण्डा मिला साथही नक्कारा बजानेकी आज्ञा होगई।

आसिफखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और दो हजार सवारोंका होगया।

राजा वरसिंहदेवके सात सौ सवार बढ़े और घर जानेकी छुट्टी नियत समय पर उपस्थित होजानेके इकरार पर मिली।

उसी दिन इब्राहीमखांकी भेट हुई।

किशनचन्दको जो नगरकोटके राजोंकी सन्तानमें था राजाकी पदवी दी गई।

छठे दिन गुरुवारको एतमादुद्दौलाकी भेट नूरचश्मेमें हुई। बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर और जड़ाऊ पदार्थ लेकर शेष उसके वास्ते छोड़ दिये। इस दिन बड़ा उत्सव हुआ था।

सातवें दिन किशनसिंहका मनसब हजारी जात बढ़कर तीन हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका होगया। इसी दिन नूरचश्मेकी तलहटीमें एक सिंह शिकार हुआ।

आठवें दिन (चैत बदी १४) को बादशाहने कर्णको पांचहजारी जात और पांच हजार सवारोंका मनसब देकर हीरों और मोतियोंकी एक छोटी माला दी जिसमें मोतियोंकी सुमरनी लगी थी।

राजा श्यामसिंहका मनसब पांच सदी जातके बढ़नेसे अढ़ाई हजारी जात और चौदहसौ सवारोंका होगया।

सूर्यग्रहण।

दसवें दिन (चैत बदी ३०) रविवारको १२ घड़ी दिन बीतने पर पश्चिमसे सूर्य ग्रहण लगा। पांच भागमेंसे चार भागका ग्रास हुआ। आठघड़ीमें मोक्ष हुआ। बादशाहने नाना प्रकारके दान दिये।

इसी दिन राजा सूरजसिंहकी भेट हुई। उसमेंसे जो माल बादशाहने लिया वह तैतालिस हजार रुपयेका था।

चौदह हजार रुपयेकी भेट कन्धारके हाकिम बहादुरखांकी भी पहुंची।

दाराशिकोहका जन्म।

१४ सफर (चैत्र सुदी १) चन्द्रवार संवत् १६७२ को आधीरात गये धन लग्नमें खुर्रमके घरमें आसिफखांकी बेटीसे पुत्र जन्मा। बादशाहने उसका नाम दाराशिकोह रखा।

इसी दिन एतबारखांकी भेंटमेंसे चालीस हजार रुपयेका माल लिया गया।

ग्यारहवें दिन मुरतिजाखांकी भेटसे सात लाल एक मोतियोंकी माला और २७० मोती एक लाख ४५ हजार रुपयेके स्वीकृत हुए।

बारहवें दिन मिरजा राजा भाऊसिंह और रावतशंकर (राना* सगर) की भेट हुई।

तेरहवें दिन ख्वाजा अबुलहसनने बत्तीस सौ रुपयेके रत्न भेट किये।

चौदहवें दिन अबुलहसनका मनसब चार हजारी जात और बारहसौ सवारोंका होगया।

ईरानका दूत।

इसी दिन ईरानका वकील मुस्तफा बेग आया। उसको शाहने गुर्जिस्तान फतह करके भेजा था। कई घोडे ऊंट और कुछ हलब देशके कपड़े जो रूमसे शाहके वास्ते आये थे और नौ बड़े फरंगी कुत्ते फाडनेवाले (जो मंगाये गये थे) उसके हाथ पहुंचे।

कांगडे पर सेना।

इसीदिन (चैत सुदी ५ शुक्रवार)को मुरतिजाखां किले कांगडेको फतह करनेके लिये बिदा हुआ। उक्त किला संसारके सुदृढ दुर्गों मेंसे था और मुसलमानी राज्य होनेके समयसे अबतक किसी बादशाहने उसको नहीं जीता था। एक बार अकबर बादशाहके हुक्म से पञ्जाबकी सेनाने उसको घेरा भी था परन्तु फतह न हुआ।

मुरतिजाखांको जाते समय हाथी तलापर समेत मिला और

---

* यह वही सगर है जिसको पहले रानाकी पदवी मिली पर रानासे सन्धि होजाने पर यह रावतही रह गया।

राजा वासूका बेटा सूरजमल भी जिसका देश इस किलेसे मिला हुआ था वहां भेजा गया। उसके मनसबमें पांच सदी जात और पांचसौ सवार बढ़ाये गये।

राय सूरजसिंहने अपनी जगह और जागीर* से आकर सौ मोहरें भेट कीं।

सतरहवें दिन मिरजा रुस्तमने अपनी भेंट दिखाई उसमेंसे पन्द्रह हजार रुपयेका और एतकादखांकी भेटमेंसे अठारह हजार रुपयेका माल बादशाहने लिया।

अठारवें दिन पन्द्रह हजार रुपयेका माल जहांगीरकुलीखांकी भेटमेंसे पसन्द हुआ।

बीसवें दिन चैत सुदी ११ गुरुवारको दोपहर साढे चार घडी दिन बीतने पर मेख संक्रान्ति† लगी। बादशाहने दरबार किया। जब पहर भर दिन रहा तो नूरचश्मेको चला गया। महाबत खांकी भेट वहां हुई जो बडी कीमती थी। बादशाहने एक लाख अडतालिस हजार रुपयेका माल उसमें लेलिया एक लाख रुपयेका तो एक जडाऊ खपवाह्नी था जिसे उसकी प्रार्थनासे सरकारी सुनारोंने बनाया था।

ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दस हजार रुपये और बीस हजार दरब दिये गये।

२१ (चैत सुदी १२) को अबदुलगफूरके हाथ दक्षिणके पन्द्रह अमीरोंको सिरोपाव भेजे गये।

राजा विक्रमाजीत अपनी जागीरको विदा हुआ परम नरम खासा उसको मिला।

२३ (चैत सुदी १४) को इब्राहीमखां बिहारका सूबेदार हुआ। जफारखांको दरबारमें आनेका हुक्म गया।

---

* जोधपुर।

† चण्डू पञ्चांगमें मेख संक्रान्ति चैत सुदी ८ को ४६ घड़ी ३४ पल पर लिखी है।

खुर्रमकी भेट।

बैशाख बदी ३ गुरुवारको पिछले दिनसे बादशाह खुर्रमके घर गया। उसने दूसरी भेट फिर दिखाई। पहले जब उसने मेवाड से आकर मुजरा किया था तो एक प्रसिद्ध माणिक्य जो रानाने मुजरा करते समय उसको भेटमें दिया था बादशाहको नजर किया उसका मूल्य जौहरियोंने साठ हजार बताया था परन्तु जैसी उसकी तारीफ होती थी वैसा नहीं था। तौलमें ८ टंक था। यह लाल पहले राव मालदेवके पास था जो राठौडके कौमका सरदार और हिन्दुस्थानके बडे राजोंमेंसे था। उससे उसके बेटे चन्द्रसेनको मिला। चन्द्रसेनने विपदमें राना उदयसिंहको बेच दिया। उससे राना प्रताप ने पाया। प्रतापसे राना अमरसिंहको मिला था। इसके घरमें इससे बढ़कर कोई पदार्थ नहीं था। इसलिये इसने जब राना खुर्रमसे मेल किया तो इस माणिक्यको अपने सारे हाथियों समेत खेचार* (भेट)में दिया था। बादशाहने उस पर यह लेख खुदवाया "सुलतान खुर्रमको रानाने भेट किया।"

उसी दिन और पदार्थ भी खुर्रमकी भेटमेंसे बादशाहने लिये थे। उनमें फरंगियोंका बनाया हुआ एक बहुत सुन्दर बिल्लौरी सन्दूकचा, कई पन्ने, तीन अंगूठियां, चार इराकी घोडे और दूसरी फुटकर चीजें अस्सी हजार रुपयेकी थीं।

इस दिन बादशाह उसके घर गया तो उसने बहुत बडी भेट चार पांच लाख रुपयेकी सजाई थी। जिसमेंसे बादशाहने एक लाख रुपयेके पदार्थ उठा लिये।

कुंवर कर्ण।

बादशाह लिखता है—"कुंवर कर्णके बिदा होनेका मुहूर्त्त समीप आगया था और मैं चाहता था कि उसको अपने बन्दूक लगानेमें भी कुछ परिचित करूं। इतनेहीमें शिकारी लोग एक सिंहनीकी खबर लाये। मेरा यह नियम है कि शेरके सिवा औरको नहीं

* यह शब्द योंही लिखा है।

मारता हूं तोभी इस विचारसे कि कदाचित कुंवरके जाने तक सिंह न मिले, उसी सिंहनीके ऊपर गया। कर्ण भी साथ था। उससे कहा कि जिस जगह तू कहे मैं उसी जगह उसके गोली मारूं। उसने आंख पर मारनेको कहा। जहां वह सिंहनी घेरी हुई थी वहां पहुंचे तो पवन प्रचण्ड वेगसे चलने लगा और मेरी हथिनी भी सिंहनीके भयसे एक जगह नहीं ठहरती थी। इन दोनों बडी बाधाओंके होते हुए भी मैंने उसकी आंखको ताककर बंदूक चलाई। परमेश्वरने अपनी कृपासे मुझे उस राजकुमारके सामने लज्जित नहीं किया क्योंकि मैंने उसकी आंखमें गोली मारकर गिरा दिया।

कर्णने इसी दिन खासेकी बंदूक मांगी तो मैंने अपनी रूमी बंदूक उसको इनायत की।"

८ उर्दवहिश्त (वैशाख सुदी १) को बादशाहका सौम तुलादान हुआ।

९ (वैशाख सुदी २) को खानआजम बादशाहके हुक्मसे आगरेसे (जहां वह गवालियरसे छूटकर आगया था) दरबारमें लाया गया। उसने कई अपराध किये थे तोभी बादशाह ही उसको देखकर लज्जित हुआ। उसने अपनी शाल उसको ओढादी और उसके सब अपराध क्षमा कर दिये।

कर्णको एक लाख दरब इनायत हुए।

इसी दिन राजा सूरजसिंहने रणरावत नामक एक बडा हाथी जो उसके नामी हाथियोंमेंसे था लाकर नजर किया। बादशाहने उसको बडा अनोखा देखकर अपने निजके हाथियोंमें रखवा लिया।

१२ (वैशाख सुदी ४) को राजा सूरजसिंहने फिर सात हाथी भेट किये। वह भी शाही हाथियोंमें शामिल किये गये।

बखतरखां चार महीने तक बादशाहकी सेवामें रहकर विदा हुआ। बादशाहने आदिलखांको कहनेके लिये उससे बहुतसी

बातें मित्रताके लाभ और शत्रुताको हानिकी कहीं और इस समय भी उसको बहुत कुछ माल दिया। उसको बादशाह, शाहजादों और अमीरोंकी सरकारोंसे जिन्होंने आज्ञानुसार उसकी मनुहार की थीं सब मिलाकर एक लाख रुपया मिला था।

१४ (बैशाख सुदी ६) को खुर्रमके मनसब और इनामका निरूपण हुआ। उसका मनसब १२ हजारी जात और छः हजार सवार का और परवेजका १५ हजारी जात और आठ हजार सवारका था। बादशाहने खुर्रमका मनसब भी परवेजके बराबर कर दिया। उस पर भी एक सवाई इनामकी बढाई। पंछीगज नामक खासेका हाथी उसको दिया जो सामान सहित बारह हजार रुपयेका था।

१७ (बैशाख सुदी ८) को राजा सूरजसिंहका मनसब जो चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका था एक हजारी जातके बढनेसे पांच हजारी होगया।

खानआजमका बेटा अबदुल्लह जो रणथम्भोरके किलेमें कैद था खानआजमकी प्रार्थनासे बुलाया गया और पांवकी बेडी कटवाकर बापके घर भेजा गया।

२४ (जेठ बदी १२) को राजा सूरजसिंहने फिर एक हाथी फौज सिंगार नामक बादशाहके भेट किया। वह शाही हाथियों में बंध गया परन्तु अगले हाथीके समान न था। मूल्य बीस हजार कूता गया।

काजलबाशखां जिसकी नौकरी गुजरातमें थी सूबेदार की आज्ञा बिनाही वह दरबारमें आगया। बादशाहने अहदी को हुक्म दिया कि उसको पकडकर फिर सूबेदारके पास पहुंचादे।

२८ (जेठ बदी ७) को बादशाहने एक लाख रुपये खानआजम को दिलाये और डासना तथा कासनाके परगने जिनकी जमा पांच हजारी मनसबके बराबर थी उसकी जागीरमें लगा दिये।

३१ (जेठ बदी ८) को बीस घोडे परम नरम खासेको कना बारह हरन और दस ताजी कुत्ते बादशाहने कर्णको दिये।

१ खुरदाद (जेठ बदी १०) को ४०, जेठ बदी ११ को ४१ और १२ को २० कुल १०१ घोडे तीन दिनमें कर्णको फिर मिले।

बादशाहने फौजसिंगार हाथीके बदलेमें दस हजार रुपयेकी कीमतका एक शाही हाथी राजा सूरजसिंहको दिया।

५ (जेठ बदी १४) को १० चीरे १० कबा और १० कमरबन्द कर्णको इनायत हुए। जेठ सुदी १० को एक और हाथी उसको मिला।

करमसेनका मनसब दो सदी जात और पचास सवारोंकी वृद्धि से एक हजारी जात और तीनसौ सवारोंका होगया।

१२ (जेठ सुदी ६) को कलगी जो दो हजार रुपयेकी थी कर्ण को इनायत हुई।

१४ (जेठ सुदी ८) को बादशाहने सरबुलन्दरायको खिलअत देकर दक्षिणको बिदा किया।

गोयन्दास और किशनसिंहका मारा जाना।

बादशाह लिखता है—"१५ (जेठ सुदी ९) शुक्रवारकी रातको एक अजीब बात हुई। मै उस रात दैवसंयोगसे पुष्करः में था। राजा सूरजसिंहका सगा भाई किशनसिंह राजाके वकील गोयन्दास पर अपने जवान भतीजे गोपालदासके मारे जानेसे बहुत नाराज था। गोपालदास मुद्दत पहले गोयन्दासके हाथसे मारा गया था। इस झगडेकी कथा बहुत लम्बी है। किशनसिंहको यह भरोसा था कि गोपालदास राजाका भी भतीजा लगता है इस लिये वह गोयन्दासको उसके बैरमें मार डालेगा। राजा गोयन्दासकी कार्य्यकुशलता और योग्यतासे भतीजेका बदला लेनेमें टालटूल करता था। किशनसिंहने जब राजाकी ओर से आनाकानी देखी तो अपने दिलमें यह ठानी कि मैही भतीजेका बदला लूंगा और इस खूनको योंही नहीं जाने दूंगा। यह विचार बहुत दिनोंसे उसके दिलमें था निदान इस रातमें अपने भाइयो सहायकों और नौकरोंको एकत्र करके कहा कि आज गोयन्दासको

मारने चलें चाहे जो हो। उसका यह मनोरथ न था कि राजाको कुछ हानि पहुंचे। उधर राजा भी इस घटनासे अज्ञात था। किशनसिंह बड़े तड़केही अपने भतीजे कर्ण और दूसरे साथियोंको लेकर चला जब राजाकी हवेलीके दरवाजे पर पहुंचा तो अपने कई अनुचरोंको घोड़ोंसे उतारकर गोयन्दासके घर भेजा। जो राजाके घरके पास था। वह आप वैसाही घोड़े पर चढ़ा हुआ ड्योढ़ीमें खड़ा रहा। वह प्यादे गोयन्दासके घरमे घुसकर पहरेवालों पर तलवार चलाने लगे। गोयन्दास इस मारा मारीसे जाग उठा और तलवार लेकर घबराया हुआ घरके एक कोनेसे बाहर निकला। प्यादे जब उन पहरेवालोंको मार चुके तो गोयन्दासको ढूढ़ने लगे। सामने पाकर उसका काम पूरा कर दिया। किशनसिंह गोयन्दासके मारे जानेका निश्चय होनेके पहले ही घबराहटमें घोड़ेसे उतरकर हवेलीके भीतर गया। उसके साथियोंने बहुतेरा कहा कि इस समय पैदल होना ठीक नहीं है परन्तु उसने कुछ नहीं सुना। यदि कुछ देर ठहरता और शत्रुके मारे जानेके समाचार पहुच जाते तो सम्भव था कि वैसाही घोड़े पर सवार अपना काम करके कुशलपूर्वक लौट जाता परन्तु भाग्यमें कुछ औरही लिखा था। उसके पैदल होकर अन्दर जातेही राजा जो अपने महलमे था बाहरवालोंके कोलाहलसे जाग गया और नंगी तलवार हाथमे लेकर अपने घरके दरवाजे पर आया। लोग हर तरफसे सावधान होकर उन पैदलोंके ऊपर दौड़े। पैदल थोड़ेसे थे और राजाके आदमियोंकी कुछ गिनती न थी। किशनसिंहके एक एक आदमीके सम्मुख दस दस आगये। जब कर्ण और किशनसिंह राजाके घर पहुचे तो उसके आदमियोंने उनको घेरकर मार डाला। किशनसिंहके ७ और कर्णसिंहके ८ घाव लगे थे। इस बखेड़ेमें ६६ आदमी दोनों पक्षके मारे गये। राजाके तीस और किशनसिंहके छत्तीस मरे। जब दिन निकला तो इस झगड़े

* पुष्कर।

का पता लगा। राजाने अपने भाई भतीजे और प्रिय पारिषदों को मरा देखा। बाकी लोग बिखरकर अपनी .अपनी जगह पर चले गये थे।

यह खबर पहोकरमें मेरे पास पहुंची तो मैंने हुक्म दिया कि जो लोग मारे गये हैं उनको उनकी रीतिके अनुसार जला देवे और इस झगडेका पूरा पूरा निर्णय करें। पीछे प्रगट हुआ कि बात वही थी जो लिखी गई।

राय सूरजसिंह।

२०* (जेठ सुदी १४) को राय सूरजसिंह दक्षिणको बिदा हुआ। बादशाहने उसको कानोंके वास्ते एक जोडी मोतियोंकी और एक परम नरम खासा इनायत किया। खानजहांके .वास्ते भी एक जोड़ी मोतियोंकी उसके हाथ भेजी।

कर्णकी बिदाई।

२५ (आषाढ वदी ४।५) को कर्ण अपनी जागीरको बिदा हुआ। बादशाहने शाही हाथी घोडे पचास हजार रुपयेकी मोतियोंकी कण्ठी और दो हजार रुपयेकी जडाऊ कटार उसको बिदाईमें दी। मुजरा करनेके दिनसे बिदा होने तक जो कुछ नकद माल जवाहिर और जडाऊ पदार्थ बादशाहने उसको दिये थे वह सब इस प्रकार थे

रुपये २ लाख, हाथी ५ और घोडे ११०।

खुर्रमने जो कुछ दिया था वह इससे अलग था।

बादशाहने मुबारकखां सजावलको हाथी घोडा देकर उसके साथ किया और कुछ बातें राणाको भी कहला भेजीं।

राजा सूरजसिंहको छुट्टी।

राजा सूरजसिंहने भी घरजानेके वास्ते दो महीनेकी छुट्टी ली।

शाह ईरानका अपने बेटेको मारना।

बादशाहको यह खबर सुनकर बडा विस्मय हुआ कि ईरानके

---

* असल पोथीमें लेखकके दोषसे ८ लिखी है।

शाहने अपने बड़े बेटे सफी मिरजाको मरवा डाला है। वह ८ मुहर्रम सन् १०२४ (पौष सुदी १२ संवत् १६७१) को हम्मामसे निकलते समय बहबूद नामके एक दासके हाथसे मारा गया। बादशाहने ईरानके आनेवालोंसे इसका कारण बहुत पूछा परन्तु किसी ने कोई सन्तोषदायक बात नहीं कही।

३ तीर (आषाढ़ सुदी ८) को पानी छिडकनेका त्यौहार हुआ। बादशाही सेवकोंने एक दूसरे पर गुलाबजल डालकर खुशी मनाई।

१८ (आषाढ़ सुदी १५) को खानखानां और शाह नवाजखांकी भेट बादशाहके पास पहुंची। खानखानांकी भेटमें इतने पदार्थ थे—

लाल ३, मोती १०३, याकूत १०२, जडाऊ कटार २, कलगी जडाऊ याकूत और मोतियोंकी १, जडाऊ सुराही १, जडाऊ तलवार १, तरकश मखमलका मढ़ा हुआ १, कङ्गन जडाऊ १, अंगूठी हीरेकी १।

यह सब एक लाख रुपयेके हुए। इनके सिवा यह चीजे भी थीं—

दक्षिणी कपडे सादे और जरीके कर्नाटकके कपडे सादे और जरीके, ५ हाथी और एक घोडा जिसकी गरदनके बाल जमीन तक पहुंचते थे।

शाह नवाजखांकी भेटमें ५ हाथी और ३०० थान नाना प्रकार के कपड़ोंके थे।

राजा रोजअफजूं।

राजा संग्राम बादशाही असीरोंसे लडकर मारा गया था। उसका बेटा बचपनसे बादशाहके पास रहता था। बादशाहने उसको मुसलमान करके राजा रोजअफजूंकी पदवी दी। उसके बापका राज्य भी उसको देदिया और एक हाथी इनायत करके घर जानेकी छुट्टी दी।

जगतसिंहका आना।

२४ (सावन सुदी ६) को कुंवर कर्णके बेटे जगतसिंहने जो १२

वर्षका था आकर बादशाहसे मुजरा किया। अपने पिता और दादा राणा अमरसिंहकी अर्जी पेश की। बादशाह लिखता है कि कुलीनता और बड़े घरमें जन्मनेके चिन्ह उसके चेहरेसे पाये जाते हैं। मैंने सिरोपाव और मधुर वाक्योंसे उसका चित्त प्रसन्न किया।

राजा नथमल।

५ अमरदाद (सावन सुदी ३) को राजा नथमलके मनसब पर जो डेढ़ हजारी जात और ग्यारह सौ सवारोंका था पांच सदी जात और एक सौ सवार बढ़ाये गये।

केशव मारू।

७ (सावन सुदी ५) को केशव मारूने आकर मुजरा किया। ४ हाथी नजर किये। इसको सरकार उड़ीसेमें जागीर दीगई थी परन्तु वहांके सूबेदारने शिकायत लिखी थी इसलिये बादशाहने उसे बुला लिया।

खानजहां लोदी।

८ (सावन सुदी ६) शुक्रवार*को खानजहां लोदीने दक्षिणसे उपस्थित होकर एक हजार मोहर एक हजार रुपये नजर और चार लाल, एक पन्ना जड़ाऊ फूल कटारा और २० मोती भेट किये। यह सब चीजें पचास हजार रुपयेकी थीं।

सावन सुदी ८ रविवारको रातको बादशाह ख्वाजाजीके उर्समें गया। आधीरात तक रहा। छः हजार रुपये कुछ कुरते मोती मूंगे और कहरुबा‡की ७० मालायें अपने हाथसे मुजावरोंको दे आया।

---

* असल पोथीके पृष्ठ १४५ में मंगल ८ तिथिको गलत लिखा है शुक्र चाहिये। क्योंकि आगे उर्स रविवार (६ रज्जब) को लिखा है वह सही है।

‡ एक प्रकारकी मणि।

महासिंहको राजाकी पदवी।

राजा मानसिंहके पोते महासिंहको बादशाहने राजाका खिताब नक्कारा और झण्डा दिया।

केशव मारू।

२० (भादों बदी ४) को केशवमारूके मनसब पर जो दोहजारी जात और एक हजार सवारका था दो सौ सवार बढ़े और खिल-अत भो मिला।

मिरजा राजा भावसिंह।

२२ (भादों बदी ६) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने घर आमेर जानेकी छुट्टी ली। बादशाहने पहुप¹ काश्मीरीका शाही जामा इनायत किया।

गिरधर।

१ शहरेवर (भादों बदी ३०) को दक्षिण जानेवाले अमीरोंके मनसब बादशाहने बढ़ाये। उनमें राय साल दरबारीके बेटे गिरिधरका मनसब आठ सदी जात और सवारोंका होगया।

इतनाही मनसब अलफखां क्यामखानीका भी हुआ।

नूरजहानी मोहर।

८ (भादों सुदी ७) को नूरजहानी मोहर जो ६४०० रुपये की थी बादशाहने ईरानके दूत मुस्तफा बेगको दी।

शबरातकी दीपमालिका।

आश्विन बदी १ को रातको शबरातका त्योहार था। बादशाहके हुक्मसे आनासागरके किनारों और उसके आसपासके पहाड़ों पर दीपमालिका की गई। बादशाह भी देखनेको गया था और बड़ी रात तक बेगमों सहित आनासागरके तट पर रहा। चिरागों का प्रतिबिम्ब पानीमें पडकर अनोखो शोभा दिखाता था।

आदिलखांकी भेंट।

१७ (आश्विन बदी २) को मिरजा जमालुद्दीन हुसैनने जो

¹ एक प्रकारका कपड़ा।

वकील होकर बीजापुरको गया था वहांसे आकर तीन जडाऊ अंगूठियां नजर कीं। एकमें बहुत बढिया अकीक, यमन देशको खानका जडा था। आदिलखांने भी सैयद कबीर नामके एक मनुष्यको अपनी तरफसे भेंट सहित भेजा था।

२४ (आश्विन बदी ८) को आदिलखांकी भेंट बादशाहके दृष्टिगत हुई। चांदी सोनेकी सोंजके हाथी, इराकी घोडे, जवाहिर, जडाऊ पदार्थ और अनेक प्रकारके कपड़े थे जो उस देशमें होते हैं।

इसी दिन बादशाहने सौरपक्षकी वर्षगांठका तुलादान किया।

ईरानके दूतकी बिदाई।

१६ (आश्विन बदी ११) को ईरानका दूत मुस्तफाबेग बिदा हुआ। बादशाहने उसको बीस हजार रुपये और सिरोपाव देकर शाह ईरानके प्रेमपत्रका उत्तर प्रीतिपूर्वक लिख दिया।

दक्षिण पर सेना।

५ महर (आश्विन सुदी ६) को महाबतखां और १० (आश्विन सुदी ११) को खानजहां दक्षिणको बिदा हुआ। बादशाहने दोनोको हाथी घोडे हथियार और खिरोपाव दिये। महाबतखांके सतरहसौ सवारोंको दुअस्पा और तिअस्पाकी तनखाह देनेकी आज्ञा दी।

इसबार इतनी सेना दक्षिणको और भेजी गई—

मनसबदार ३३० अहदी २००० उबेसाक* ७०० सवार दिलाजाक पठान ३०० सवार तोपखान जंगीहाथी और ३० लाख रुपये।

सरबुलन्दराय।

सरबुलन्दराय†का मनसब पाच सदी जात और २६० सवारोंके बढनेसे दो हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका होगया।

राजा किशनदासके मनसबमें पांच सदी जातकी वृद्धि हुई।

---

* एक जातिके तुर्क।

† राव रतन हाडा।

राजा सूरजसिंह।

१९ (कार्तिक बदी ६) को राजा सूरजसिंहने जो अपने पुत्र गजसिंह सहित घरको गया था वापस आकर मुजरा किया। सौ मोहर और एक हजार रुपये नजर किये।

आदिलखांके वकील सैयद कबीरको एक नूरजहानी मोहर पांचसौ तोले सोनेकी इनायत हुई।

२३ (कार्तिक बदी ९) को नव्वे हाथी कासिमखांके भेजे हुए पहुंचे जो उसने कोच और मगके देशोंको जीतकर तथा उडीसेके जमीदारोंसे लेकर भेजे थे।

बीजापुर।

२६ (कार्तिक बदी १२) को सैयद कबीर हाथी घोडा और सिरोपाव पाकर बीजापुरको विदा हुआ यह आदिलखांका भेजा हुआ दक्षिणके दुनियादारों*के अपराध क्षमा कराने और किले अहमदनगर और दूसरे बादशाही मुल्कोंके छुडा देनेकी प्रतिज्ञा करनेको आया था जो बादशाही अधिकारसे निकल गये थे।

रामदास कछवाहा।

उसी दिन राजा राजसिंह कछवाहा (जो दक्षिणमें मारा गया था) के बेटे रामदासको बादशाहने एक हजारी जात और चार हजार सवारका मनसब दिया।

राजा मान।

४ आबान (कार्तिक सुदी ५) को राजा मान जो गवालियरके किलेमें कैद था मुरतिजाखांकी जमानत पर छोडा गया। वह अपने मनसब पर बहाल होकर मुरतिजाखांके पास कांगडेकी लडाईमें भेजा गया।

राजा सूरजसिंह।

१६ (अगहन बदी ३) को राजा सूरजसिंह भी दक्षिणकी मुहिम पर भेजा गया। उसका मनसब तीनसौ सवारके बढनेसे पांच

* दक्षिणके बादशाहोंको दिल्लीके बादशाह दुनियादार कहते थे।

हजारी जात और तेतीससौ सवारोंका होगया। घोडा और सिरो-पाव भी मिला।

राजा सारंगदेव।

अगहन सुदी ७ को दाराबखांको जडाऊ खञ्जर इनायत हुआ और राजा सारंगदेवके हाथ दक्षिणके अमीरोंको खिलअत भेजेगये।

काश्मीर।

बादशाहने सफदरखांकी ऐसी कुछ बातें सुनीं थीं कि जिससे उसको कश्मीरकी सूबेदारीसे हटाकर अहमदबेगखांको उसकी जगह पर भेजा।

बङ्गाल।

बङ्गालेके सूबेदार कासिमखां और वहांके अमीरोंके वास्ते एह-तमामखांके हाथ जड़ावल* भेजी गई।

सूअरका शिकार।

७ दे (पौष सुदी ९) को पोहकरसे अजमेरको आते हुए बादशाह ने रास्तेमें बयालीस सूअर मारे।

खुर्रमको मद्य पिलाना।

२५ (माघ बदी ११) शुक्रवारको खुर्रमका तुलादान हुआ। बादशाह लिखता है कि २४ वर्षका होगया है कई विवाह होगये हैं बच्चे भी जन्म गये हैं तोभी अबतक इसने कभी मद्यपान नहीं किया था। इस तुलादानकी सभामें मैंने इससे कहा कि बाबा तू बेटोंका बाप होगया है बादशाह और शाहजादे शराब पीते रहे हैं, आज तेरे तुलादानका उत्सव है मैं तुझे शराब पिलाता हूं और आज्ञा देता हूं कि उत्सवके दिन नौरोजके उत्सवों और बड़े बडे त्यौहारोंमें तू शराब पिया कर। परन्तु कम पीनेका ध्यान रखना। बुद्धिमानोंने इतनी पीनेकी आज्ञा नहीं दी है कि जो बुद्धिको भ्रष्ट करदे। इसके पीनेसे गुण और लाभकी इच्छा रखना चाहिये। बूअलीसीनाने जो एक बडा भारी हकीम होगया है कहा है—

---

* जाड़ेमें पहननेकी पोशाकें।

"मद्य मतवालेका तो शत्रु है और सावधानका मित्र है। थोडा तो औषधि है और ज्यादा सांपका विष। बहुत पीनेमें थोडी हानि नहीं है और थोडेमें बहुत लाभ है।"

निदान बहुत हठसे उसको शराब दीगई।

जहांगीरके शराबीपनकी कहानी।

इतना लिखनेके पश्चात् बादशाह अपने शराबी होनेकी कहानी इस प्रकार लिखता है—

"मैंने १५ वर्षकी अवस्था होजाने तक शराब नहीं पी थी परन्तु बचपनमें दो तीन बार मेरी मा और दाइयोंने दूसरे बच्चोंको देनेके बहाने मेरे पितासे अर्क मंगवाकर उसमेंसे एक तोला गुलाबजलमें मिलाकर और खांसीकी दवा कहकर मुझे पिलाया था। जब मेरे बापका उर्दू यूसुफजई पठानोंका दंगा दबानेके लिये नीलाब नदीके तट पर अटकके किलेमें था। तब एक दिन मैं शिकारको गया। श्रम बहुत करना पडा था इससे बडी थकावट आगई थी। उस्ताद शाहकुली नामक तोपचीने जो मेरे चचा मिरजा हकीमके तोपचियों का नायक था मुझसे कहा कि आप एक प्याला शराब पीलें यह थकावट जाती रहेगी।

वह जवानीके दिन थे और चित्तमें ऐसी बातोंका चाव था। मैंने महमूद आबदारसे कहा कि हकीमअलीके घर जाकर नशेका शरबत लेआ।

हकीमने पीले रङ्गकी डेढ प्याला मीठी शराब छोटे शीशेमें भेजी। मैंने उसको पी लिया। उसका नशा सुहावना लगा। फिर तो मैं शराब पीने लगा। यहांतक कि अंगूरी शराबका नशा नहीं आने लगा तब अर्क पीना शुरू किया। नौ वर्षमें यह भी इतना बढ गया कि बीस प्याले तक दुआतिशा अर्कके पीजाता था। चौदह प्याले दिनमें और ६ रात्रिमें पीता था जिनमें हिन्दुस्थानकी तौलसे ६ सेर और ईरानकी तौलसे डेढ मन शराब समाती थी। मैं उन दिनोंमें एक मुर्गेका मांस रोटी और मूलीके साथ खालेता था।

किसीको मना करनेकी सामर्थ्य नहीं थी। मेरी यह दशा होगई थी कि जब नशा उतरता तो बदन कांपने लगता। हाथमें प्याला नहीं ठहर सकता था। दूसरे लोग मुझको अपने हाथसे पिलाते थे। निदान मैंने पिताके मन्त्री हकीम अबुलफतहके भाई हकीम हमामको बुलाकर अपना हाल कहा। उसने अत्यन्त करुणा और भक्तिभावसे स्पष्ट कह दिया कि साहिबेआलम*। इस प्रकार जो आपको शराब पीते हुए ६ महीने और निकले तो फिर यह रोग असाध्य होजावेगा। यह बात उसने हितकी कही और जान प्यारी होती है इस वास्ते मैंने मान ली। उस दिनसे मैं अर्क घटाने और फलोनिया‡ खाने लगा। जितनी शराब घटाता था उतनीही फलोनिया बढती जाती थी। तब मैंने कहा कि अर्कको अंगूरी शराबमें मिला दिया करें। दो भाग तो शराब हो और एक भाग अर्क रहे। मैं इसीको पीता था और कुछ कुछ घटाता भी जाता था। सात वर्षमें ६ प्याले पर आरहा। एक प्यालेमें १८। मिसकाल† शराब होती है अब पन्द्रह वर्ष होगये इसी ढंगसे शराब पीता हूं न कम होती है न अधिक। रातको पीता हूं परन्तु गुरुवारके दिन जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है पिछले पहरसे पी लेता हूं, रातको नहीं पीता। क्योंकि यह रात जो सप्ताह भरकी रातोंमें पवित्र है और एक पवित्र दिन (शुक्र) की लानेवाली है, मैं नहीं चाहता कि मतवालेपनमें व्यतीत हो और सुख सम्पत्ति देनेवाले प्रभुके भजन और स्मरणमें चूक पड जावे।

मैं गुरुवार और रविवारको मांस भी नहीं खाता। गुरुवार तो

---

* जैसे बादशाहोंको जहांपनाह कहते थे वैसेही शाहजादोंको साहिबे आलम कहते थे।

‡ फलोनिया भंग और अफीमसे बनी हुई माजून।

† एक मिसकाल ४॥ माशेका होता है १८ मिसकालके ६ तोले ९ माशे होते हैं ६ प्यालेके ४०॥ तोले हुए।

मेरे राज्यतिलकका और रविवार मेरे पिताका जन्मदिन है। यह उनको बहुत प्रिय था वह इसको पर्वके समान मानते थे।

कुछ दिनों पीछे मैंने फलोनियाको अफीमसे बदल दिया। अब मेरी आयु मौर पचसे ४६ वर्ष ४ महीनेकी और सौम पचसे ४७ वर्ष ८ मासकी होगई है। आठ रत्ती अफीम पांच घडी दिन चढ़े और छ: रत्ती एक पहर रात गये खाता हूं।

बारहवां वर्ष।

सन् १०२५।

माघ सुदी ३ सं० १६७२ ता० ११ जनवरी १६१६ से

पौष सुदी १ सं० १६७३ ता० २९ दिसम्बर सन् १६१६ तक।

ईरानकी सौगात।

९ बहमन (माघ सुदी ११) को ईरानके बादशाहको भेजी हुई एक अकीककी माला और कारबन्दीकी† की एक रकेबी जो बहुत सुन्दर और उत्तम थी ख्वाजा अबदुलकरीम व्यापारीके हाथ बादशाहके पास पहुंची।

भंवर जगतसिंहकी बिदा।

१० बहमन (फागुन सुदी ११) को कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह अपने घरको बिदा हुआ। बादशाहने बीस हजार रुपये एक घोडा एक हाथी खिलअत और शाही दुशाला उसको दिया और उसके रक्षक हरदास झालाको भी पांच हजार रुपये घोडा और सिरोपाव इनायत किया। उसके हाथ सोनेकी छः परी¶ रानाके वास्ते भेजीं।

राजा सूरजमल।

२० (चैत बदी ६) को राजा बासूका बेटा सूरजमल बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ। इसका राज्य कांगडेके पडौसमें था इस लिये मुरतिजाखांके साथ कांगडा फतह करनेको भेजा गया था परन्तु मुरतिजाखांको इससे कुछ सन्देह होगया था और उसने इसके वहां रहनेमें हानि देखकर बादशाहको कई अर्जियां भेजी थी इससे बादशाहने इसे बुलाया था।

---

† एक प्रकारका जडावका काम।

¶ इस वस्तुका कुछ ब्योरा नहीं मिला।

अहदाद पठानकी हार।

अकबर बादशाहके समयसे अबतक अहदादका उपद्रव काबुल के पहाडोंमें चला जाता था। दस वर्षसे लगातार फौजें उसके ऊपर जारही थीं जिनसे वह लड लडकर अन्तको जरखी नामक एक पहाडोंमें जा बैठा था। उसको भी खानदौरांने घेर रखा था। अहदाद रातको अनाज और चारा लानेके वास्ते निकला करता था। कभी कभी उसके साथी मवेशी चरानेको पहाडोंसे उतरते थे। एक रात जरखीकी तराईमें अहदादसे और खानदौरांसे मुठभेड होगई। अहदाद दोपहर तक लडकर भागा। परन्तु जरखीमें जानेका अवसर न पाकर कन्धारकी ओर निकल गया। बादशाही फौजने जरखीमें प्रवेश करके उसके घर जला दिये तीनसौ पठान मारे गये और एकसौ कैद हुए।

अम्बरकी हार।

बहुतसे बरगी जो दक्षिणमें उपयुक्त और मजबूत लोग हैं अंबर से रूठकर बालापुरमें शाह नवाजखांके पास चले आये थे। शाह नवाजखांने आदमखां, याकूतखां जादूराय बापूकाटिया आदि उनके सरदारोंकों हाथी घोडे रुपये और सिरोपाव देकर शाही नौकरीमें लगा लिया और फिर इनको साथ लेकर अंबरके ऊपर कूच किया। उधरसे दक्षिणी सरदार महलदार, दानिश, दिलावर, बिजली और फीरोज सेना लेकर आये। परन्तु लडाई में परास्त होकर अंबरके पास लौट गये। अंबरने बडे अभिमान से लडनेका उद्योग करके बादशाही छावनी पर चढाई की। कुतुबुलमुल्क और आदिलखांकी सेनाएं भी एक तरल तोपखाने सहित उसके साथ थीं। २५ बहमन (फागुन बदी १२) रविवारको पिछले दिनसे अन्धेरे और उजालेके दो दलोंमें दंगल हुआ। पहले आग और गोले चले। फिर दाराबखाने जो अगली सेनाका अफसर था राजा बरसिंहदेव रायचन्द अलीखां तातारी और जहांगीरकुली आदि सरदारोंके साथ तलवारें सूतकर शत्रुकी अगली सेनापर धावा

किया और उसको हराकर गोल अर्थात् बीचकी सेनाको जा दबाया। वहां दो घडी तक ऐसा घमासानका युद्ध हुआ कि देखने वाले दङ्ग होगये। लाशोंके ढेर लग गये अंबर सम्मुख ठहर न सका भागा। जो अन्धेरी रात उसके बचानेको बीचमें न आजाती तो वह और उसके साथियोंमेंसे कोई न बचता। बादशाही सवार दोतीन कोसतक तो पीछे गये फिर घोड़ोंके थक जानेसे आगे न जा सके। शत्रुका पूरा तोपखाना तीनसौ ऊंटबानोंसे भरे हुए जंगी हाथी ताजी घोडे और बहुतसे हथियार हाथ आये। बहुतसे सरदार पकड़े गये। जो कटकर या घायल होकर पडे थे उनकी कुछ गिनती न थी। फिर बादशाही सेना करकी पर गई जहां शत्रुकी छावनी थी। परन्तु वहां किसीको न देखा क्योंकि सब लोग खबर पाकर भाग गये थे। सेना कई दिन करकीमें रही और शत्रुओंके घर जलाकर रोहनखंडेकी घाटीसे उतर आई।

बादशाहने इस सेवाके बदलेमें अपने नौकरोंके मनसब बढ़ाये।

खोखरा और हीरेकी खान।

तीसरी बधाई बादशाहको यह पहुंची कि खोखरेकी विलायत और हीरेकी खान इब्राहीमखांके परिश्रमसे फतह हुई। बादशाह लिखता है—"यह विलायत तथा खान बिहार और पटनेके अन्तर्गत है। वहां एक नदी बहती है। जब उसका पानी कम होता है तो उसमें खड्डे और गढ़े निकल आते हैं उनमेंसे जिसके नीचे हीरे होते हैं उस पर बहुतसे झींगे उड़ा करते हैं। इस पहचानसे वह लोग जो इस कामको जानते हैं नदी तक उन गढोंके किनारो में पत्थर चुन देते हैं और फिर उनको कुदाल फावडोंसे दो डेढ़ गज गहरा खोदते हैं और वहां जो रेत और कांकर निकलते है उसमें ढूंढ़कर छोटे बड़े हीरे निकालते है। कभी कभी ऐसे हीरे भी निकलते हैं जिसका मूल्य एक लाख रुपये तक होता है।

यह भूमि और खान दुर्जनसाल नामका एक हिन्दूके अधिकार में थी। बिहारके हाकिम उसके ऊपर बहुत सेना भेजते थे और आप

भी जाते थे परन्तु रास्ता विकट था जंगल बहुत पडते थे। इस लिये दो तीन हीरोंके लेने पर सन्तोष करके चले आते थे। जब यह सूबा जाफरखांसे उतरकर इब्राहीमखांको मिला तो मैंने बिदा करते समय उससे कहा कि उस विलायत पर जाकर उसको उस अधम पुरुषसे छीन ले। इब्राहीमखां बिहारमें पहुंचतेही सेना सजकर उस जमीन्दारके ऊपर गया और उसने पूर्ववत् अपने आदमी भेजकर कई हीरों और हाथियोंके देनेकी प्रार्थना की। पर खानने स्वीकार न करके शीघ्रतासे उसके देशमें प्रवेश किया और उसकी सेनाके तय्यार होनेसे पहलेही धावा किया। उसको समाचार पहुँचते पहुंचते उस घाटीमें जा पहुँचा जहां उसका घर था। घाटीको घेरकर उसकी खोजमें आदमी भेजे वह एक गुफामें छिपा हुआ मिला और अपनी सगी तथा सौतेली दो माता और एक भाईके साथ पकडा गया। जो हीरे उसके पास थे वह सब लेलिये गये। २३ हाथी हथिनी भी हाथ आये।

इस सेवाके बदलेमें इब्राहीमखांका मनसब बढ़कर चार हजारी जात और सवारोंका होगया और उसको फतहजंगकी पदवी मिली। जो लोग साथ थे उनको भी वृद्धि हुई। अब वह विलायत राज पारिषदोंके अधीन है। लोग उस नदीमें काम करते हैं। जितने हीरे निकलते हैं दरगाह में आते है। इन्हीं दिनोंमें एक बडा हीरा पचास हजार रुपयेका मिला था। जब कुछ और काम होगा तो आशा है कि अच्छे अच्छे हीरे मेरे निजके रत्न भाण्डारमें आने लगेंगे।

ग्यारहवां नौरोज।

१ रबीउलअव्वल (चैत सुदी ३) रविवार संवत् १६७२ को सूर्य्य मीनसे मेख राशिमें आया। दीवानखाने खासोआमका आंगन बहुमूल्य डेरों तम्बुओं और फरंगी परदों तथा जरीके दिव्य वस्त्रोंसे सजाया गया था बादशाह वहीं राज्यसिंहासन पर बैठा। शाहजादों अमीरों सर्दारों और सब नौकरोंने झुककर सलाम किया और बधाई दी।

हाफिज नादअली कलावत पुराने सेवकोंमेंसे था इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि सोमवारको जो भेट आवे वह सब इसको दीजावे।

चौथे दिन खानजहांकी भेट आगरेसे आई उसमें हीरे मोती एक हाथी और कुछ जडाऊ पदार्थ पचास हजार रुपयेके थे।

पांचवें दिन कुंवर कर्णने अपने देशसे आकर मुजरा किया। एक सौ मुहरें और एक हजार रुपये नजर तथा एक हाथी सौंज सहित और चार घोडे भेट किये।

सातवें दिन आसिफखांके मनसब पर जो चार हजारी जात और दो हजार सवारका था हजारी जात और दो हजार सवार और बढाये गये। उसको नक्कारा और झण्डा भी इनायत हुआ।

इसी दिन मीर जमालुद्दीनकी भेंट हुई वह सबही बादशाहको पसन्द आगई। उसमें एक खञ्जरकी जडाऊ मूठ पचास हजार रुपये की थी जिसमें हीरे मोतियोंके सिवा पीलेरङ्गका एक बडा अपूर्व याकूत* जडा हुआ था वह मुर्गीके अंडेके बराबर था। बादशाहने उसके मनसब पर एक हजार सवार बढा दिये जो पांचहजारी जात और साढे तीन हजार सवारोंका होगया।

नवें दिन अबुलहसनकी भेटमें चालीस हजार रुपयेके जवाहिर जडाऊ चीजें और उत्तम कपडे लिये गये।

तातारखां बकावलबेगी (बावरचीखानेके दारोगा) की भेट हुई उसमें लाल, याकूत, एक जडाऊ तख्ती और कपड़े थे।

दसवें दिन दक्षिणसे तीन हाथी राजा महासिंहके और लाहौर से एक सौ कई जरीके थान मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुंचे।

दियानतखांने भी दो मोतियोंकी माला दो लाल छः बड़े मोती और सोनेका थाल भेट किया। सब २८ हजार रुपयेके थे।

११ फरवरदीन (चैत्र सुदी १२) गुरुवारको पिछले दिनमें बाद-

* याकूत एक प्रकारका रत्न है जिसका रङ्ग पीला नीला और सफेद होता है।

शाह एतमादुद्दौलाके घर गया और उसकी भेटका एक एक पदार्थ देखकर दो मोती तीस हजार रुपयेके एक लाल बाइस हजार रुपये का तथा और भी कई लाल और मोती एक लाख दस हजार रुपये के और पन्द्रह हजार रुपयेके कपडे पसन्द करके लेलिये। भेंट लेनेके पीछे बादशाह पहर रात गये तक वहां बैठा। सुन्दर सभा जुडी थी जो अमीर और अनुचर सेवामें थे उनको प्याले देनेका हुक्म हुआ। महलके लोग भी साथ थे।

सभा विसर्जन होने पर बादशाह एतमादुद्दौलासे बिदा होकर राजभवनमें आगया।

नूरमहलसे नूरजहां बेगम।

इन्हीं दिनोंमें बादशाहने हुक्म दिया कि नूरमहल बेगमको नूरजहां बेगम कहा करें।

१२ (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट हुई उसमेंसे बादशाहने छप्पन हजार रुपयेके ज्वाहिर और जडाऊ पदार्थ लिये। जिनमें मछलीके आकारका एक जडाऊ बर्तन बहुत सुन्दर और सुडौल बादशाहके नित्यप्रति पीनेकी मदिराके अन्दाजका था।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांके भेजे हुए सात इराकी घोड़ और नौ थान कपडोंके पहुंचे।

१३ (चैत्र सुदी १४) को इरादतखां और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी भेंट आई।

१५ (बैशाख बदी २) को ठट्ठेकी सूबेदारी शमशेरखांसे उतरकर मुजफ्फरखांको मिली।

१६ (बैशाख बदी ३) को एतमादुद्दौलाके बेटे एतकादखांको भेट बादशाहको दिखाई गई उसमेंसे बत्तीस हजार रुपयेकी चीजें बादशाहने उठाईं।

१७ (बैशाख बदी ४।५) को तरबीयतखांकी भेट बादशाहने देखी। उसमेंसे सतरह हजार रुपयेके जवाहिर और कपड़े पसन्द किये।

१८ (बैशाख बदी ६) को बादशाह आसिफखांके घर गया जो दौलतखानेसे एक कोस था। आसिफखांने आधे रास्तेमें सादे और जरीके मखमल बिछा दिये थे जिनका मूल्य दस हजार रुपये बादशाहको सुनाया गया। बादशाह उस दिन आधीरात तक बेगमों सहित वहां रहा। उसने जो भेंट सजाई थी वह सब अच्छी तरह बादशाहने देखी। एक लाख चौदह हजार रुपयेके जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ, कपडे, एक ऊंट और चार घोडे पसन्द करके लिये।

मेख संक्रान्ति।

१९ (बैशाख बदी ७) को सूर्य्यकी मेख संक्रान्ति*का उत्सव था। दौलतखानेमें बडी भारी मजलिस जुडी। बादशाह मुहूर्त्तके अनुसार अढाई घडी पिछले दिनसे सिंहासन पर बैठा। उसी समय बाबा खुर्रमने ८००००) का एक लाल भेंट किया। बादशाहने भी उसका मनसब बढाकर बीस हजारी जात और दस हजार सवारोंका कर दिया।

इसी दिन बादशाहके सौर जन्मदिवसका तुलादान¶ हुआ।

एतमादुद्दौलाकी पदवृद्धि।

उसी दिन बादशाहने एतमादुद्दौलाका मनसब सात हजारी जात और पांच हजार सवारोंका करके उसको तुमन और तोग भी इनायत किया और यह हुक्म दिया कि खुर्रमके नक्कारेके पीछे उसका नक्कारा बजे।

पोता।

२१ (बैशाख बदी ९) को महतर फाजिल रकाबदारके बेटे मुकीमकी बेटीसे खुसरोके घरमें पुत्र जन्मा।

अलहदाद पठानका अधीन होना।

अलहदाद पठान अहदादसे फटकर दरबारमें आया। बाद-

---

* चंडूपञ्चाङ्गमें यह मेख संक्रान्ति बैशाख बदी ६ को लिखी है।

¶ यह तुलादान १७ रबीउलअव्वल अर्थात् बैशाख बदी ३ को होना चाहिये था सप्तमीको मुहूर्त्तसे हुआ होगा।

शाहने २००००) दरब उसको इनायत किये और कुछ दिन पीछे एक जड़ाऊ खपवा भी दिया।

रायमनोहरकी मृत्यु।

२५ (बैशाख बदी १२) को दक्षिणसे राय मनोहरकी मृत्युका समाचार पहुंचा। बादशाहने उसके बेटेको पांच सदी जात और तीनसौ सवारोंका मनसब देकर बापकी जागीर भी देदी।

काबुलमें उपद्रव।

कादम नाम अफरीदी पठान खैबरके घाटेका मार्गरक्षक था। उसने थोड़ेसे सन्देहमें सेवा छोड़कर सिर उठाया और अपने आदमी प्रत्येक थाने पर भेज दिये जिन्होंने थानेवालोंको मारकर लूट मार मचा दी। नये सिरसे काबुलके पहाड़ोंमें अशान्ति फैल गई। जब यह समाचार बादशाहको सुनाया गया तो उसने कादमके भाई हारून और बेटे जलालको जो दरबारमें हाजिर थे पकड़वाकर ग्वालियरके किलेमें कैद रखनेके लिये आसिफखांको सौंपा।

भुजबन्ध।

खुर्रमने ६००००) का एक लाल राणाका दिया हुआ बादशाह को भेंट किया था। बादशाह उसको अपने हाथमें बांधना चाहता था परन्तु उसके आसपास पिरोनेके लिये वैसेही उत्तम मोतियोंकी जोड़ी भी दरकार थी। एक मोती तो मुकर्रबखांने बीस हजार रुपयेमें लेकर नौरोजकी भेंटमें अर्पण कर दिया था उसीके समान एक और मोतीकी आवश्यकता थी। खुर्रम जो बचपनमें रातदिन अकबर बादशाहके पास रहता था उसने उतनीही तौल और आकृति का मोती पुराने सरपेचमें बताया। बादशाहने सरपेच मंगाया तो वैसाही मोती निकल आया। मानो दोनों एकही सांचेमें ढाले हुए थे। इससे सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाहने इस बातको ईश्वरकी कृपा समझकर बहुत धन्यवाद किया और

उन मोतियोंको उस लालके दोनो ओर पिरोकर प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथमें बांधा।

देशान्तरकी सौगातें।

५ उर्दीबहिश्त (वैशाख सुदी ८) को तीस इराकी और तुर्की घोडे लाहोरसे मुरतिजाखांके भेजे हुए पहुँचे।

खानदौरांने जो काबुलसे भेंट भेजी थी उसमेंसे तिरसठ घोडे पन्द्रह ऊंट ऊंटनी, कलगीके परोंका एक दस्ता आकरी* ९, चीनी खताई† ९, मछलीके दांत जौहरदार ९ और तीन बन्दूकें बादशाह को पसन्द आईं।

एक छोटा हाथी जो हबश देशसे जहाजमें आया था मुकर्रबखां ने भेटमें भेजा। हिन्दुस्थानके हाथियोंसे उसके कान बड़े थे सूंड और पूंछ भी लम्बी थी।

अकबर बादशाहके समयमें एतमादखांने गुजरातसे हाथीका एक बच्चा भेजा था। वह जब बडा हुआ तो बहुत क्रूर और बदमाश निकला।

पठानोंका उपद्रव।

पगानी और बंकाना जातिके अफरीदी पठानोंने जो दङ्गा मचाया था उसमें खानआजमका भाई अबदुल सुबहान जो एक थाने पर था वीरता पूर्वक उन लोगोंसे लडकर मारा गया। खानआलम ईरानमें गया हुआ था। इसलिये बादशाहने वहीं उसके वास्ते शोकनिवारक पत्र और सिरोपाव भेजा।

अलहदाद पठान।

२१ (जेठ बदी १०) को अलहदाद पठान खानका खिताब मिलनेसे अलहदादखां होगया और उसका मनसब भी बढकर दो हजारी जात और एक हजार सवारों तक पहुंचा।

---

* आकरीका अर्थ कोशमें नहीं मिला।

† चीनकी मट्टीके उत्तम पात्र।

खानदौरां।

खानदौरांने पठानोंका बलवा मिटानेमें बड़ा परिश्रम किया था इसलिये उसको लाहोरके खजानेसे तीन लाख रुपये इनाम और मदद खर्चके दिलाये गये।

कुंवर कर्णकी बिदाई।

२८ (जेठ सुदी २) को कुंवर कर्ण अपना विवाह करनेके वास्ते बिदा हुआ। बादशाहने खिलअत खासा, इराकी घोड़ा जीन सहित, हाथी और जड़ाऊ परतला तलवारका उसको दिया।

मुरतिजाखां और सैफखांकी मृत्यु।

३ खुरदाद (जेठ सुदी ७) को मुरतिजाखांके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह सुनकर दुःखी हुआ क्योंकि वह अकबर बादशाहके समयका नौकर था। खुसरोके पकड़नेका बड़ा काम इसीने किया था। छः हजारी जात और पांच हजार सवारके मनसब को पहुंचा था। इन दिनोंमें किले कांगड़ेके फतह करनेमें लगा हुआ था।

७ (जेठ सुदी ११) को सैफखां बारहके भी मरनेकी खबर दक्षिणसे पहुंची, वह हैजेसे मरा था। उसने भी खुसरोंके पकड़नेमें परिश्रम करके तरक्की पाई थी। बादशाहने उसके बेटे अलीमुहम्मद और बहादुरको मनसब दिया और भतीजे सय्यदअलीका मनसब बढ़ाया।

शहबाजखां कम्बोके बेटे खूबउल्लहको रणबाजका खिताब मिला।

राजा विक्रमाजीत।

८ (जेठ सुदी १२) को बांधोंगढ़के राजा विक्रमाजीतने खुर्रमके वसीलेसे दरबारमें आकर मुजरा किया। बादशाहने इसके अपराध क्षमा कर दिये। इसके बाप दादे हिन्दुस्थानके नामी राजाओंमेंसे थे।

कल्याण जैसलमेरी।

९ (जेठ सुदी १३) को कल्याण जैसलमेरीने जिसके लानेके लिये

राजा किशनदास गया था आकर सुजरा किया। एक हजार मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। उसका बडा भाई राव भीम था। जब वह मरा तो उसका लडका दो महीनेका बालक था। वह भी ज्यादा न जिया। बादशाहने पिछली पीढियोंके संबंधसे इसको बुलाकर राजतिलक और रावलका खिताब दिया।

राजामान।

बादशाहको खबर पहुंची कि सुरतिजाखांके मरने पर राजा मानने कांगडेके किलेवालोंको ढारस देकर वहांके राजकुमारको जो २९ वर्षका था दरबारमें लेआनेकी बात ठहराई है।

बादशाहने इस उत्साहके बदलेमें उसका मनसब जो हजारी जात और आठ सौ सवारोंका था बढ़ाकर डेढ़ हजारी जात और एक हजार सवारोंका कर दिया।

पोतीकी मृत्यु।

बादशाह लिखता है कि इस¶ तारीखको एक दैवघटना हुई। उसके लिखनेको मैंने बहुत चाहा परन्तु हाथ और हृदयने साथ नहीं दिया। जब लेखनी पकड़ता था औरही दशा होजाती थी। विवश होकर एतमादुद्दौलाको लिखनेका हुक्म दिया।

एतमादुद्दौलाका लेख।

बूढा भक्त गुलाम एतमादुद्दौला हुक्मसे इस तेजमय ग्रन्थमें लिखता है कि ११ तारीख खुरदाद (जेठ सुदी १४) को श्रीमान् शाह खुर्रमकी श्रीमती राजकुमारीको जिसे बादशाह बहुत प्यार करते थे बुखार चढ़ा। तीन दिन पीछे छाले निकल आये और २६ बुधवार २९ जमादिउलअव्वल (आश्विन सुदी १) को उसका प्राणपक्षी पचभूतके पींजरेसे स्वर्गको उड गया। इसलिये हुक्म हुआ कि अब चारशंबे (बुधवार) को कमशंबा लिखा करें। मैं क्या लिखूं कि इस हृदयदाहक दुर्घटनासे हजरतको कितना दुःख हुआ।

¶ तारीखका अङ्क नहीं दिया है।

दूसरे लोगोंके शोकका तो कहनाही क्या है जिनके प्राण श्रीमान को पवित्रात्मासे बंधे हुए हैं। दो दिन तक किसीका मुजरा न हुआ। जिस घरमें राजकुमारीका उठना-बैठना था- उसके आगे दीवार उठा देनेका हुक्म हुआ-जिससे दिखाई न दे। तीसरे दिन बादशाह बड़ी व्याकुलतासे शाहजादेके घर पधारे। वहां सब बन्दे मुजरा करके निहाल हुए। रास्तेमें हजरतने अपनेको बहुत रोका तोभी आंसू आंखोंसे चले आते थे और बहुत दिनों तक यही दशा रही कि जब कोई दुःखसूचक-अक्षर सुननेमें आता तो अधीर होजाते थे।

शाहजादेके घर कई दिन रहे। फिर सोमवार (६) तीर* को आसिफखांके‡ घर पधारे। वहांसे लौटकर नूरचश्मेमें गये। दो तीन दिन वहां दिल बहलाया। परन्तु-जबतक अजमेरमें डेरे रहे अपनेको सम्हाल न सके। जब कभी राजकुमारीके नामको श्रवणक कानमें पड़ती तो सहसा आंसू टपकने लगते थे और राजभक्तोंका कलेजा-टुकड़े टुकड़े होजाता था। जब दक्षिणको कूच हुआ तो कुछ शान्ति हुई।

राय पृथ्वीचन्द।

इसी† तारीखमें राय मनोहरके बेटे पृथ्वीचन्दको राय पदवी, पांच सदी जात चार सौ सवारका मनसब और जागीर वेतनमें मिली।

---

* मूलमें तारीखका अङ्क नहीं लिखा है पर सोमवार ६ तीरको था इसलिये हमने कोष्टमें ६ बना दिया है।

‡ वह लड़की आसिफखांकी दोहिती और एतमादुद्दौलाकी परदोहिती थी।

† मूलमें तारीखका अङ्क नहीं है यहांसे तु० जहांगीरीमें फिर बादशाहका लेख है।

सावन बदी ३ शनिवारको बादशाह नूरचश्मेसे अजमेरके राज-भवनमें आया।

मुजाका जन्म।

१२ तीर (सावन बदी ७) रविवारको ३७ पल रात गये जबकि हिन्दू ज्योतिषियोंके मतसे धन लग्न २७ अंश और यूनानियोंके मत से मकर लग्न १५ अंश था आसिफखांकी बेटीसे खुर्रमके घर फिर एक लड़का हुआ। बादशाहने सोच विचार कर उसका नाम शाह शुजा रखा इसके जन्मसे सबलोग हर्षित हुए।

रावल कल्याण।

इसी दिन बादशाहने रावे कल्याणको जड़ाऊ मूठकी एक तलवार और एक हाथी दिया।

राय कुंवर।

गुजरातके दीवान राय कुंवरको हाथी दिया गया।

राजा महासिंह।

२२ (सावन बदी ३०) को राजा महासिंहका मनसब पांच सदी जातकी वृद्धि होनेसे चार हजारी जात और तीन हजार सवारोंका होगया।

सोनेका कटहरा।

बादशाहने कई मनोरथोंकी सिद्धिके लिये ख्वाजाजीकी कबर पर सोनेका कटहरा चढ़ानेका संकल्प किया था। वह एक लाख दस हजार रुपयेमें बनकर तय्यार हुआ और सावन सुदी ४ को बादशाहके हुक्मसे वहां लेजाकर लगाया गया।

परवेजका बुलाया जाना।

परवेजसे दक्षिणकी मुहिम बादशाहके मन मुआफिक नहीं सुधरी थी। बादशाहने खुर्रमका उत्साह देखकर उसको वहां भेजने और पीछेसे आप भी कूच करनेका विचार करके परवेजको इलाहाबाद जानेका हुक्म इस आशयसे लिखा था कि जबतक हम सफरमें रहे वहांकी रक्षा करे। २९ तीर (सावन सुदी ६) को

बिहारीदास वाकआनवीसकी अर्जी बुरहानपुरसे आई जिसमें लिखा था कि शाहजादेने २० तीर (सावन बदी १३*) को यहांसे इलाहाबादको कूच कर दिया है।

राजा भावसिंह।

१ अमरदाद (सावन सुदी ८) को बादशाहने राजा भावसिंह को जड़ाऊ तुर्रा दिया।

कन्नौज और सम्भल।

खवासखांके मरनेसे कन्नौजकी हुकूमत सम्भलके फौजदार सय्यद अबदुल वहाबको मिली थी। अब मीर मुगल उसकी जगह सम्भलका फौजदार नियत हुआ और फौजदार रहने तक उसका मनसब पांच सदी जात और सवारका होगया।

रावल कल्याण।

२१ (भादों बदी ३०) को रावल कल्याणने बादशाहको तीन सौ मोहरें ८ घोड़े २५ ऊंट और १ हाथी भेंट किया।

महामारी।

इस साल हिन्दुस्थानके शहरोंमें महामारी फैल रही थी जो पिछले वर्ष पंजाबके परगनोंमें प्रगट हुई थी। बढते बढते लाहौर में जा पहुंची। जिसमें बहुतसे हिन्दू मुसलमान मर गये। फिर सरहिन्द होकर दिल्ली तक फैल गई और उसकी तलहटीमें बहुतसे गांव और परगने उजड गये। बडी उमरके आदमियों और पुरानी तवारीखोंसे विदित हुआ कि यह रोग इस देशमें कभी नहीं आया था। उसका कारण हकीमों और विद्वानोंसे पूछा गया तो किसी किसीने कहा कि दो वर्ष लगातार सूखे निकले और मेह कम बरसा। कोई बोला कि सूखा पडने और बरसात कम होनेसे हवा

---

* यह खबर १० दिनमें आई थी शायद पहिले ही आगई हो। बादशाहके पास कागज पेश होनेमें भी कुछ देर लगतीही रही होगी।

बिगड़कर यह रोग फैला है। कुछ लोगोंने और और बातें कहीं। पूरा ज्ञान परमेश्वरको है।

शाह ईरानकी बेटी।

५ शहरेवर (भादों सुदी १५ तथा आश्विन बदी १) को पांच हजार रुपये मीरमीरांकी माके वास्ते जो ईरानके शाह दूसरे इसमाईलकी बेटी थी व्यापारियोंके हाथ ईरानमें भेजे गये।

अबदुल्लहखां पर कोप।

६ (आश्विन बदी २) को अहमदाबादके बखशी और वाकआ नवीसकी अर्जी आई। उसमें लिखा था कि अबदुल्लहखां फीरोज जङ्गकी इच्छाके विरुद्ध मैंने कई समाचार, समाचारपत्रमें लिख दिये थे इस पर उसने मुझसे बुरा मानकर कुछ सिपाही मेरे ऊपर भेजे और अपने घर बुलाकर मेरा अपमान किया।

बादशाहने पहले क्रोधमें आकर उसको मरवा डालना चाहा परन्तु फिर दियानतखांको अहमदाबाद भेजा और उससे कहा कि वहांके निष्पक्ष पुरुषोंसे निर्णय करे। जो सच्ची बात हो तो अबदुल्लहखांको अपने साथ ले आवे और अहमदाबादका शासन उसके भाई सरदारखांके अधिकारमें रहे।

दियानतखांके जानेके पहलेही यह समाचार अबदुल्लहखांको पहुंच गये और वह डरके मारे अपनेको अपराधी ठहराकर पैदल ही राजद्वारको चल दिया। दियानतखां मार्गमें उसको मिला और उसकी यह अद्भुत दशा देखकर सवार होनेकी आज्ञा दी क्योंकि पैदल चलनेसे उसके पांव घायल होगये थे।

मुकर्रबखांको गुजरात।

मुकर्रबखां पुराना सेवक था और बादशाहकी युवराजावस्थासे ही गुजरात देशके लिये प्रार्थना किया करता था। अब जो अबदुल्लहखांसे ऐसा अपराध बन आया तो बादशाहने अपने पुराने सेवककी आशा पूरी करके उसको गुजरातकी सूबेदारी देदी।

आनन्दखां तम्बूरची।

शौकी तम्बूरा बजानेवालेको बादशाहने आनन्दखांकी उपाधि दी। बादशाह लिखता है—यह तम्बूरा बजानेमें अजीब है और हिन्दी फारसी गतोंको ऐसा बजाता है कि दिलोंके दुःख दूर कर देता है। इस लिये मैंने इसको आनन्दखांका खिताब दिया। हिन्दी भाषामें आनन्दका अर्थ खुशी है और खुशीके दिन हिन्दुस्थान में तीर महीने (वैशाख, जेठ) से आगे नहीं होते।

राना और कर्णकी मूर्ति।

बादशाहने राना और उसके बेटे कर्णकी सर्वाङ्ग मूर्त्तियां सफेद पत्थरों से गढनेकी सिलावटोंको आज्ञा दी थी। वह तैयार होकर १०(प्र० आश्विन वदी ४) को बादशाहके पास आईं। बादशाहने देखकर हुक्म दिया कि आगरे में लेजाकर दर्शनके झरोखेके नीचे बाग में खडी कर देवें *।

तुलादान।

२६ (प्रथम आश्विन सुदी ६)को बादशाहके सौर पचीय जन्म दिवसका पहिला तुलादान सोनेका दूसरा पारेका तीसरा रेशमका चौथा अम्बर कस्तूरी चन्दन और लोबान आदि सुगन्धित द्रव्यका हुआ। इसी प्रकार १२ तुलादान बहुमूल्य पदार्थोंके होते थे जिन का मूल्य एक लाख रुपयेसे कम नहीं होता था। इसके सिवा बादशाह बकरे और मुर्गे अपनी उमरके वर्षोंके बराबर छू छू कर फकीरोंको देता।

महावतखांकी भेंट।

उसी दिन महावतखांने एक लाल जो ६५,०००) में अबदुल्लह खांसे बुरहानपुरमें खरीदा था बादशाहको भेंट किया।

खानआजम और दियानतखां।

खानआजमका मनसब सात हजारी हुआ और उसके अनुसार

* आगरेमें अब यह मूर्त्तियां नहीं हैं होतीं तो चीजें बहुत अनोखी थीं।

जागीर देनेका हुक्म दीवानोंको दिया गया। दियानतखांका मनसब पिछली बदचलनियोंसे घट गया था। एतमादुद्दौलाके कहने से पूरा होगया।

रावल कल्याण जैसलमेरी।

रावल कल्याणका मनसब दो हजारी जात और दो हजार सवारोंका हुआ। उसका वेतन भी उसीके देशमें लगाया गया। उसकी बिदाका मुहूर्त्त भी उसी दिन था इसलिये हाथी, घोडा, जडाऊ खपवा, परम नरम खासा और खिलअत उसको मिला और राजी खुशी अपने देशको गया।

मुकर्रबखां।

३१ (प्रथम आश्विनसुदी १२) को मुकर्रबखां पांच हजारी जात पांच हजार सवारका मनसब, खासा खिलअत, नादरी और मोती के तुकमें सहित एक खासेके हाथी और खासेका घोड़ा पाकर आनन्दपूर्वक अहमदाबादको बिदा हुआ।

जगतसिंह।

द्वितीय आश्विन बदी ८ को कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह स्वदेशसे आया।

कुतुबुलमुल्ककी भेंट।

११ महर (द्वितीय आश्विन सुदी ३) को गोलकुंडेके शाह कुतुबुलमुल्ककी भेट बादशाहके सामने पेश हुई।

मिरजा अलीबेग अकबरशाही।

मिरजा अलीबेग अपनी जागीरसे जो अवधमें थी १६ (द्वितीय आश्विन बदी १३) को आया उसने एक हाथी जिसे वह शाही आज्ञानुसार वहांके किसी जागीरदारसे लाया था भेंट किया। उसकी उमर ७५ वर्षकी थी और अच्छे काम करनेसे चार हजारी मनसबको पहुंचा था। २२ (द्वितीय आश्विन सुदी ४) शुक्रवार की रातको वह ख्वाजा साहिबकी जियारतको गया था। वहीं मर गया और वहीं बादशाहके हुक्मसे गाड़ा गया।

पहलवान "पाये तख्त"।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंको बिदा करते समय कहा था कि तुम्हारे यहां कोई नामी पहलवान या खांडित हो तो आदिलखांसे कहकर हमारे वास्ते भिजवाना। बहुत दिन पीछे दूत फिरकर आये तो शेरअली पहलवान और कई खांडितोंको साथ लाये। खांडित तो कुछ योंहीसे निकले पर शेरअलीने कुश्तीमें बादशाही पहलवानोंको पछाड दिया। बादशाहने उसको एक हजार रुपये सिरोपाव, हाथी, मनसब जागीर सहित देकर अपने पास रखलिया और पहलवान "पाये तख्त" का खिताब दिया।

दियानतखां।

२४ (द्वितीय आश्विन सुदी ६) को दियानतखां अबदुल्लहखां को लेकर आया और एकसौ मोहरें भेंट कीं।

रामदास।

इसी दिन राजा राजसिंहके बेटे रामदासको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला।

अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग।

२६ (द्वितीय आश्विन सुदी ८) को बाबा खुर्रमकी सिफारिशसे अबदुल्लहखांका मुजरा हुआ। बहुत सङ्कोच और पछतावेके साथ उसने एकसौ मोहरें और एक हजार रुपये भेंट किये।

बीजापुरके दूत।

बादशाहने बीजापुरके दूतोंके पहुँचनेसे पहले निश्चय कर लिया था कि खुर्रमको आगे भेजकर आप भी दक्षिणको प्रयाण करें और बिगडे हुए कामको सम्हालें। यह भी हुक्म दे रखा था कि दक्षिणके दुनियादारोंकी बात खुर्रमके सिवा और कोई न करे। इसलिये शाहजादा खुर्रम उस दिन बीजापुरके दूतोंको हुजूरमें लेगया। वह लोग जो प्रार्थनापत्र लाये थे वह भी बादशाहको दिखाये।

राजा मान और कांगडेकी मुहिम।

मुरतिजाखांके मरे पीछे राजा मान और दूसरे सहायक सरदार

दरगाहमें आगये थे। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे राजा मानको कांगडा जीतनेके वास्ते भेजा और उन सब सहायकोंको उसके साथ कर दिया। सबको यथायोग्य हाथी, घोड़े, सिरोपाव और रुपये दिये।

अबदुल्लहखां।

बादशाहने खुर्रमकी प्रार्थनासे अबदुल्लहखांको फिर अगला मनसब देकर शाहजादेके साथ दक्षिण जानेवाली सेनामें भरती कर दिया।

खुसरो।

खुसरो अनीराय सिंहदलनके पहरेमें था उसे ४ आबान (कार्त्तिक बदी २) को बादशाहने किसी कारण विशेषसे आसिफखां को सौपा और एक खासेका शाल भी दिया।

ईरानका दूत।

१ आबान १७ शव्वाल (द्वितीय आश्विन सुदी ५) को ईरानका दूत मुहम्मद रजा अपने बादशाहका प्रेमपत्र घोड़े और दूसरे पदार्थ लेकर आया। बादशाहने उसको जडाऊ मुकुट और सिरोपाव प्रदान किया। उस पत्रमें ईरानके शाहने बहुत कुछ प्रीति और एकता दरसाई थी इसलिये बादशाहने उसको अपनी 'तुजुक' में लिख लिया। उसके सुललित पदोंमेंसे एक पद यह भी था— हम तुम ऐसे एक होगये हैं कि मुझे यह सुध नहीं रही है कि तुम हो सो मैं हूं या मैं हूं सो तुम हो—दोनोमें कुछ भेद भाव इस लोकमें क्या परलोकमें भी नहीं रहा है।

खुर्रमका दक्षिण जाना।

१८ शव्वाल २० आबान (कार्त्तिक बदी ६) रविवारको बाबा खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिण भेजनेके वास्ते बाहर निकाला गया।

(कार्त्तिक बदी ७) सोमवारको २ घडी दिन चढे बादशाहका दौलतखाना (कपड़ोंका राजभवन) भी उसी दिशाको रवाने हुआ।

१६१८ (कार्त्तिक बदी ८) को राजा सूरजमलका मनसब दो हजारी जात और दोसौ सवारोंका होगया। वह शाहजादेके साथ भेजा गया था।

उल्लूका शिकार।

१६ आबान (कार्त्तिक सुदी १) को छः घडी रात गये एक उल्लू महलकी ऊंची छत पर आकार बैठा जो बहुत कम दिखाई देता था। बादशाहने बन्दूक मंगाकर जिधर लोग उसको बताते थे छोडी। उल्लूके टुकडे टुकडे उड गये। इस पर सब लोगोंने जिनमें ईरानका दूत रजाबेग भी था बडा आनन्द-घोष किया।

शाह ईरानका बेटेको मारनेका कारण।

इसी रातको बादशाहने बातोंही बातोंमें सफीमिरजाके मारनेका कारण पूछा तो रजाबेगने कहा कि वह बापके मारनेके विचारमे था। उन दिनोंमें वह न मारा जाता तो शाहको मार डालता। यही जानकर शाहने उसको मरवा डाला।

२० शुक्रवार (कार्त्तिक सुदी २) को खुर्रमके बिदा होनेका मुहूर्त्त था इस लिये वह अपने सजे हुए सेवकोंको लेकर राजभवन में मुजरा करने आया। बादशाहने अति अनुग्रहसे उसको इतनी चीजें दीं—

१—शाह सुलतान खुर्रमका खिताब।

२—खिलअत जडाऊ चार कुब्बका जिसके दामन और गिरेबान में मोती टंके हुए थे।

३—एक इराकी घोडा जीन सहित।

४—एक तुरकी घोडा।

५—खासेका बंसीबदन नामक एक हाथी।

६—रथ अङ्गरेजी चालका बैठकर चलनेके लिये।

७—जडाऊ तलवार खासेके परतले सहित जो अहमदनगरकी पहली जीतमें हाथ आई थी और जिसका परतला बहुत उमदा और नामी था।

८—जडाऊ कटार ।

इस प्रकार खुर्रमने बडी धूमसे दक्षिणके देशोंके जीतनेको प्रयाण किया ।

उसके साथियोंको भी यथायोग्य घोडे और सिरोपाव मिले । अबदुल्लह फीरोजजङ्गको बादशाहने अपनी कमरसे तलवार खोल कर इनायत की ।

चोरोंको दण्ड और नवलका हाथीसे लडना ।

कई धाडी कोटवालीके चबूतरे पर धाडा डालकर बादशाही खजाना लूट लेगये थे उनमेंसे सात आदमी कुछ रुपयों सहित पकडे आये । बादशाहने सबको तरह तरहका दण्ड दिया । जब उनके सरदार नवलको हाथीके पांवोंमें डालने लगे तो उसने अर्ज की कि हुक्म हो तो मैं हाथीसे लडूं । बादशाहने कहा ठीक है । एक मस्त हाथी मंगाकर नवलके हाथमें कटार दिया और हाथीके सामने किया । हाथीने कई बार उसको गिराया तो भी वह निडर वीर अपने साथियोंको भांति भांतिके कष्टोंसे मरते देखकर भी पांव रोपकर दृढतासे मरदाना हाथीके सूंड पर कटारें मारता रहा । हाथीको ऐसा बेबस कर दिया कि वह उसपर हमला करनेसे रुककर खडा होगया । बादशाहने उसको बहादुरी और मरदानगी देखकर पहरेमें रखनेका हुक्म दिया । परन्तु थोडेही दिनों में वह दुष्टतासे अपने घरको भाग गया । बादशाहने इस बातसे अप्रसन्न होकर उधरके जागीरदारोंको उसे ढूंढकर पकडनेका हुक्म लिखा । दैवयोगसे वह फिर पकड़ा आया । बादशाहने उसका सिर उड़वा दिया ।

बादशाहका अजमेरसे कूच ।

१ जीकाद २१ आबान (कार्त्तिक सुदी ३) शनिवार[१] को दो पहर पर ५ घडी दिन आये बादशाहने चार घोडोंके फारंगी रथ

[१] तुजुक पृष्ठ १६८ में भूलसे मंगल लिखा है ।

(बग्घी) में बैठकर अजमेरसे प्रस्थान किया। अमीरोंको भी रथोंमें बैठकर साथ आनेका हुक्म दिया।

पौने दो कोस चलकर शामको गांव दोराईमें मुकाम हुआ।

बादशाह लिखता है—"हिन्दुस्थानियोंने ऐसा स्थिर कर रखा है कि जो राजा और बादशाह पूर्वको ओर जावें तो दन्तीले हाथी पर सवार हों। पश्चिमको जावें तो इकरंगे घोडे पर बैठें, उत्तरको जावें तो पालकी या सिंहासन पर और दक्षिणको जावें तो रथ पर सवारी करें।

अजमेर।

बादशाह पांच दिन कम तीन वर्ष अजमेरमें रहा। अजमेरके वास्ते लिखा है कि "यहां ख्वाजा मुईनुद्दीनकी पवित्र समाधि है यह दूसरी इकलीम*में गिना जाता है। हवा यहांकी समभावकी है। पूर्वमें आगरा, उत्तरमें दिल्लीके परगने, दक्षिणमें गुजरात और पश्चिममें मुलतान तथा देपालपुर है। यह सूबा तमाम रेतीला है। खेती बरसातके पानीसे होती है। जाडा समभावका और गरमी आगरेसे कम है। ८६००० सवार और ३०४००० पैदल राजपूत लडाईके समय इस सूबेसे निकलते हैं। इस बस्ती में दो बड़े तालाब हैं, एक बीसल ताल और दूसरा आनासागर। बीसल ताल सूखा है और उसका बान्ध टूट गया है। मैंने बांधनेका हुक्म दिया है आनासागर जिस पर इतने दिनों तक रहना हुआ था हमेशा पानीसे भरा रहा, यह डेढ़ कोस और पांच डोरीका है।

अजमेर ठहरनेके दिनोंमें ९ बार ख्वाजाजीकी जियारतको गया और १५ बार पुष्कर देखने। ३८ बार नूरचश्मेमें जाना हुआ। ५० बार शिकारको गया। १५ सिंह १ चीता १ स्याहगोश ५३ नील गायें ३२ गेडे ९० हरन ३४० मुरगाबी और ८० सूअर शिकार हुए।"

---

* दुनियाकी बस्तीका सातवां टुकडा।

दोराई ।

दोराईमें सात दिन डेरा रहा। २९ (कार्त्तिक सुदी १२) को दोराईसे कूच होकर सवा दो कोसपर गांव दामावलीमें डेरा हुआ।

३ आजर (अगहन बदी १) को फिर सवा दो कोस पर गांव मावलमें मुकाम हुआ।

रामसर।

४ आजर (अगहन बदी २) को डेढ कोस चलकर बादशाह रामसरमें आठ दिन रहा। उक्त गांव नूरजहांबेगमको जागीरमें था। छठे दिन कुंवर कर्णका बेटा जगतसिंह हाथी और घोडा पाकर अपने घरको बिदा हुआ। केशव मारूको भी घोडा इनायत हुआ।

इन्ही दिनोंमें राजा श्यामसिंहके मरनेकी खबर सुनी गई जो बंगशके लश्करमें तेनात था।

आतिथ्यसत्कार।

गुरुवारको नूरजहां बेगमने बादशाहका आतिथ्यसत्कार किया। रत्नों, जडाऊ आभूषणों, दिव्य वस्त्रोंसे सिले हुए जोड़ों और नाना प्रकारके पदार्थोंसे सजी हुई भेंट दी। रातको वहांके विशाल तालाब पर रोशनी हुई बहुत अच्छी मजलिस जुडी थी। बादशाह ने अमीरोंको बुलाकर प्याले दिये।

बादशाहके साथ खुश्कीमें भी कई नावें रहा करती थीं जिनको मल्लाह लोग गाडियों पर लादे चलते थे। शुक्रवारको बादशाह उन्हीं नावों पर बैठकर रामसरके तालाबमें मछलियां पकड़ने गया और एकही जालमें २०८ मछलियां पकड लाया। उनमें आधी रोहू मछलियां थीं। वह सब रातको अपने सामने नौकरोंको बांट दीं।

१३ (अगहन बदी ११) रामसरसे कूच होकर चार कोस पर गांव बलोदेमें और १६ (अगहन बदी १४) को सवा तीन कोस चल कर गांव निहालमें डेरे हुए। १८ (अगहन सुदी १) को सवादो कोस पर गांव जोंसेमें मुकाम हुआ। वहां बादशाहने ईरानके दूतको एक हाथी दिया।

सारसोंकी पुकार।

२७ (अगहन सुदी २) को बादशाह शिकार खेलता सवा तीन कोस चलकर देवगांवमें उतरा। यहां यह विचित्र बात उसके देखनेमें आई कि सवारी आनेसे पहले एक खोजा तालावसे दो बच्चे सारसके पकड़ लाया था। रातको दो सारस गुसलखानेके पास जो उसी बड़े तालाब पर लगाया गया था चिल्लाते हुए आये और निर्भय होकर फरयादीकी भांति पुकारने लगे। बादशाहने अपने दिलमें कहा कि अवश्य इनके ऊपर अन्याय हुआ है। शायद कोई इनके बच्चे पकड लाया होगा। जब इस बातकी खोज की गई तो उस खोजेने वह दोनो बच्चे लाकर भेंट किये। ज्योंही सारसोंने बच्चोंकी बोली सुनी दौडकर उनके ऊपर आगिरे और भूखा समझकर अपनी चोंचसे चुग्गा उनके मुंहमें देने लगे। फिर उनको बीचमें लेकर पर फटकारते हुए प्रसन्नतापूर्वक चले गये।

२३ (अगहन सुदी ६) को देवगांवसे कूच होकर सवातीन कोस पर गाव भालूमें दो दिन तक सवारी ठहरी।

२६ (अगहन सुदी १०) को दो ही कोसकी मञ्जिल हुई बादशाह दो दिन गांव काकलमें ठहरा।

२८ (अगहन सुदी १२) को (उस दिन त्रयोदशी भी थी) पौने तीन कोस सवारी चली और गांव लासेमें पड़ाव हुआ। इसी दिन बकराईद भी थी।

३० (अगहन सुदी १४) को "आजर"का महीना पूरा हुआ। बादशाहने अजमेर छोडनेके पीछे इस महीनेमें ६७ नील गायें तथा हरन और २७ मुर्गाबियां और जलकव्वे मारे थे।

२६ (पौष बदी १) को लासेसे डेरे उखड़े। तीन कोस दस जरीब पर गांव कानड़ेमें लगे।

४ (दूसरी तीज) को कूच होकर सवा तीन कोस गांव सूरठमें मुकाम हुआ। चौथ को साढ़े चार कोस पर गांव बरदड़ामें सवारी उतरी।

रानाकी हाजिरी।

पौष वदी ५ को मोतमिदखांको अर्जी आई जिसमें लिखा था कि जब शाह खुर्रम राणाकी विलायतके पास पहुंचा और उधरका कुछ उद्योग नहीं था तोभी राणा बादशाही सेनाकी धाकसे उदयपुरमें आकर पूरा पूरा आदाब बजा लाया।

शाहखुर्रमने भी उसका पूरा सत्कार किया। खिलअत, चारकुब्ब जडाऊ तलवार, जडाऊ खपवा, तुरकी और इराकी घोड़े तथा हाथी देकर बड़े मानसे बिदा किया। उसके बेटे और पास वालों को भी सिरोपाव दिये। राणाने जो पांचे हाथी २४ घोडे जवाहिर और जडाऊ पदार्थ एक थालमें भरकर भेट किये थे उसमेंसे केवल तीन घोड़े लेकर बाकी उसीको देदिये और यह बात ठहरी कि उसका बेटा पन्द्रह सौ सवारोंसे इस दिग्विजयमें साथ रहे।

राजा महासिंहके बेटे।

१० (पौष बदी ८) को राजा महासिंहके बेटोंने अपने वतनसे आकर रणथम्भोरके पास बादशाहको सुजरा किया। तीन हाथी और ८ घोड़े भेट किये। बादशाहने उनको यथायोग्य मनसब दिये।

बादशाह रणथम्भोरमें।

जब बादशाह रणथम्भोरमें पहुंचा तो उस किलेके बहुतसे कैदी छुड़वा दिये। यहां दो दिन डेरे रहे। बादशाह रोज शिकारको जाता था ३८ सुर्गाबियां और जलकव्वे शिकार हुए।

१२ (पौष बदी १०) को चार कोस चलकर गांव कोयलेमें सवारी ठहरी १४ (१२) को सवा तीन कोस पर गांव एकटोरेमें मुकाम हुआ। यहांका तालाव जिस पर बादशाही दौलतखाना खडा हुआ था बादशाहके पसन्द आगया। इससे दो दिन मुकाम रहा। रणथम्भोर महावतखांकी जागीरमें था उसका बेटा वहरेवर किलेमें रहता था। उसने आकर दो हाथी भेट किये दोनोंही खासेके हाथियोंमें रखे गये।

१७ (पौष बदी ३०) को बादशाह साढे चार कोस चलकर गांव लसायेमें और सुदी २ को सवा दोकोसकी मंज़िल करके गांव कोरांमें चम्बल नदीके ऊपर उतरा। यह रमणीक स्थान भी बादशाहको पसन्द आगया था इसलिये तीन दिन वहां ठहरा। रोज़ नावोंमें बैठकर शिकार और जलविहार करनेको जाया करता। २२ (पौष सुदी ६) को वहांसे प्रयाण करके साढ़े चार कोस तक शिकार खेलता गया और सुलतानपुर और चौलामोलामें उतरा। २५ (पौष सुदी ८) को साढे तीन कोस पर गांव मानपुरमें ठहरा। यहांसे मर्य्यादा पूर्वक एक दिन मुकाम और दूसरे दिन कूच करना निश्चय हुआ।

तेरहवां वर्ष।

सन् १०२६ हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७३ से पौष सुदी २ सं० १६७४ तक।

ता० ३ दिसम्बर सन् १६१६ से ता० १९ नवम्बर १६१७ तक।

---

२० (पौष सुदी ११) को सवा चार कोस चलकर गांव वरधामें दो मुकाम हुए पौष सुदी १३ को दे का महीना पूरा हुआ। इस महीनेमें ४१६ पशु पक्षी शिकार हुए थे।

तीतर	८७	सारस	१
जल कव्वे	१९२	कारवानक	७
सुरगाबी	११८	खरगोश	१

१२ मुहर्रम १ बहमन (पौष सुदी १४) को बादशाह बेगमों सहित नावोंमें बैठकर एक घडी दिन रहे गांव रूपहेडेमें उतरा। चार कोस पन्द्रह डोरी चला था। यह भी बहुत रोचक और सुरम्य स्थान था।

इन दिनोंमें बादशाहने "कौजगना" नाम सेवकके हाथ दक्षिण में २१ अमीरोंको जडावल भेजी और उसकी बधाईमें उनसे दो हजार रुपये लेनेकी आज्ञा हुई।

३ (माघ बदी १) को फिर बादशाह नावोंमें बैठकर सवा दो कोस पर गांव काखावासमें उतरा। यहां एक विचित्र घटना देखनेमें आई। बादशाहने रास्तेमें एक तीतरके पकडनेका हुक्म दिया था और दूसरा तीतर बाज द्वारा पकडवाया था। जब डेरे पर पहुंचा तो पहला तीतर भी पकडा आया। उसको देखकर फरमाया कि इसे तो बाजको खिलादो और दूसरेको रहने दो क्योंकि वह जवान है। परन्तु इस हुक्मके पहुंचनेसे पहलेही वह तीतर बाजको खिला दिया गया था। तब इस तीतरके लिये घडी भर पीछेही शिकारीने अर्ज की कि जो इसे मैं नहीं मारूंगा तो यह

आप मर जावेगा। बादशाहने कहा कि जो ऐसाही है तो जिबहकर डालो। पर जब उसके गले पर छुरी रखी गई तो वह फरसे उड गया। फिर जब बादशाह नावसे उतरकर घोडे पर बैठा तो एक चिडिया हवाके झोंकेसे एक शिकारीके बरछे पर गिरी और उसकी भालमें छिद कर मर गई। बादशाहने दैवगतिकी इस विचित्रता से अति आश्चर्य करके कहा "वहां तो मृत्युविहीन तीतरको थोड़े ही समयमें वैसे तीन संकटोंसे बचाया और यहां मृत्युवश चिडियाको इस प्रकार भालेमें पिरोकर मारा।" जलवायु और स्थलकी उत्तमता देखकर यहां भी दो दिन बादशाहने विश्राम किया।

रावत सगरके मनसब पर इब्राहीमखां फीरोजजंगकी प्रार्थनासे पांच सदी जात और एक हजार सवारकी वृद्धि हुई।

६ (माघ बदी ४) को कूच हुआ। बादशाह डेढ़ पाव चार कोस चलकर चांदाके घाटेसे गांव अमजारमें पहुंचा। यह घाटा हरे भरे वृक्षोंसे बहुत शोभायमान था। वहां तक अजमेरकी सीमा ८४ कोस थी। अब इस गांवसे मालवेका सूबा लगता था। यहां नूरजहांने एक कुरीशा (पक्षी) बन्दूकसे मारा था। अबतक वैसा बडा और सुरंग कुरीशा बादशाहने नहीं देखा था तुलवाया तो १९ तोले ५ माशेका उतरा

सूबा मालवा।

बादशाह लिखता है—"मालवा दूसरी इकलीममें है इसकी लम्बाई विलायत "कारने" (गढे)के नीचेसे बांसवाडेकी विलायत तक २४५ कोस और चौड़ाई चंदेरीसे नंदरबार परगनेतक २३० कोसकी है। इसके पूर्वमें बांधोंकी विलायत उत्तरमें नरवरका किला दक्षिणमें बगलाना और पश्चिममें गुजरात तथा अजमेरके सूबे हैं। यह बहुत सजल विलायत है जलवायु अच्छा है नहरों नदियो और झरनोंके सिवा इसमें पांच बडे दरिया बहते हैं—१ गोदावरी २ भीमा ३ कालीसिन्ध ४ नीरा (बेतवा) ५ नर्वदा। यहां वायु समभाव रहता है भूमि

पास पड़ोससे कुछ ऊंची है। दाखकी बेलें एक वर्षमें दोबार फलती है—एक बार मीनकी संक्रान्ति लगनेके समय और दूसरे सिंह संक्रान्तिके प्रारम्भमें। परन्तु पहली ऋतुका अंगूर अधिक मीठा है। मालवेकी जमा चौबीस करोड सात लाख दामकी है और काम पडने पर नौ हजार तीन सौ कई सवार चार लाख सत्तर हजार तीन सौ पैदल और एक सौ हाथी इस सूबेसे निकलते हैं।

८ (माघ बदी ५) को ४ कोस अढाई पाव रास्ता काटकर बादशाह गांव खेराबादके पास उतरा। फिर तीन कोसतक शिकार खेलता हुआ गांव सिधारेमे पहुंचा और माघ बदी ८ को वहीं रहा।

१२ (माघ बदी ९) को गांव बछ्याडोमें ठहरा। यहां राना अमरसिंहके भेजे हुए कई टोकरे अंजीर पहुचे। बादशाह लिखता है—"सच तो यह है कि अच्छा मेवा है। अबतक मैने हिन्दुस्थानके अंजीर ऐसे सरस नहीं देखे थे परन्तु थोड़े खाने चाहियें बहुत खानेमें हानि है।"

१४ (माघ बदी ११) को कूच हुआ। डेढ़पाव चार कोस चलकर गांव बलवलीमें पडाव पडा। राजाने जो उसप्रान्तके बडे जमीन्दारोंमेंसे था दो हाथी बादशाहके नजरको भेजे थे वह यहां देखे गये और यहीं हिरातके खरबूजे भी आये। पचास ऊंट भरकर खान-आलमने भी भेजे थे। पिछले वर्षोंमें कभी इतने अधिक खरबूजे नहीं आये थे। एक थालमें कई प्रकारके मेवे लगकर आये जैसे—

हिरात बदखशां और काबुलके खरबूजे।

समरकन्द और बदखशांके अंगूर।

समरकन्द, बदखशां, कशमीर, काबुल और जलालाबादके सेब।

अनन्नास जो फरङ्गदेशके टापुओंका मेवा है और आगरेमें उसकी पौद लगाई गई थी। हरसाल कई हजार वहांके सरकारी बागोंमें फलता है।

कोला जो नारङ्गीसे छोटा, बहुत मीठा और बङ्गालमें अच्छा होता है।"

बादशाह लिखता है—"इन न्यामतोंका शुक्र मै किस जबानसे अदा करूं। मेरे बापको मेवेका बहुत शौक था खासकरके खरबूजे अनार और अंगूरका। उनके समयमें हिरातके उत्तम खरबूजे यज्दके अनार, जो जगत प्रसिद्ध हैं और समरकन्दके अंगूर हिन्दुस्थानमें नहीं आये थे। यह मेवे देखकर अफसोस होता है कि उस समयमें आते तो वह भी इनका स्वाद लेते।"

१६ (माघ बदी १३।१४) को कूच होकर डेढ पाव चार कोस पर गांव गिरीमें बादशाहको सवारी ठहरी। यहां बादशाहने बंदूकसे एक शेरबबर मारा। इस सिंहको वीरता बहुत मानी जाती है इसलिये बादशाहने उसका पेट चिरवाकर देखा। और सब पशुओंका पित्ता तो कलेजेके बाहर होता है पर इसका कलेजेके भीतर था इससे उसने अनुमान किया कि इसकी वीरता इसी कारणसे होती है।

१८ (माघ सुदी १) को २॥ कोस पर गांव असरियामें डेरा हुआ दूसरे दिन बादशाह शिकारको गया तो दो कोस पर एक गांव बहुत सुन्दर और सुथरा मिला। एक बागमें आमके एक सौ पेड इतने बडे और डहडहे थे कि वैसे कम देखे गये थे उसी बागमें एक बड भी बहुतही बडा था। बादशाहने उसको नपवाया तो वह जमीनसे ७४ गज ऊंचा और १७५॥ गज चौडा निकला। तनेकी गोलाई ४४॥ गजकी थी।

एतमादुद्दौलासे परदा न करनेका हुक्म।

२० (माघ सुदी ३) को कूच और ४ को मुकाम हुआ। एतमादुद्दौलाके घरमें ख्वाजा खिजरका उत्सव था। बादशाह भी वहां गया और खाना खाकर एक पहर रात गये लौट आया। एतमादुद्दौलासे कुछ भेद भाव नहीं रहा था। इसलिये बादशाहने बेगमों को उनसे मुंह न छिपानेकी आज्ञा देकर उसकी और प्रतिष्ठा बढ़ाई।

दुधारिया।

२२ (माघ सुदी ५) को तीन कोस आध पाव चलकर बादशाह नवलखेडेमें ठहरा। २३(७) को पांच कोस चलकर कासिमखेडेमें उतरा। एक सफेद जानवर मारा जिसके सिर पर चार सींग थे। दो तो आंखोंके पिछले कोयोंके पास दो दो उङ्गल ऊंचे थे। बाकी दो जो पहलेसे चार उङ्गल पीछेको थे चार चार उङ्गल ऊंचे थे। हिन्दुस्थानी इसको दुधारिया कहते हैं। नरके चार सींग होते हैं मादाके सींग नहीं होते।

लोग कहते थे कि इसके पित्ता नहीं होता। बादशाहने चिरवा कर देखा तो पित्ता था। लोगोंका कहना झूठ निकला।

कुलीचखां।

२५ (माघ सुदी ८) को बादशाहने कुलीचखांके भतीजे सालजू को दो हजारी जात दो हजार सवारका मनसब और कुलीचखां का खिताब देकर अवधसे जहां उसकी जागीर थी बङ्गालमें भेज दिया।

२६ (माघ सुदी ९) को सवारी ४॥। कोस चलकर काजियोंके गांवमें उतरी जो उज्जैनके पास था। यहां बहुतसे वृक्ष आमोंके बौराये हुए थे और डेरा नदीके तट पर बहुत सुन्दरतासे लगाया गया था।

पहाड जालौरीको प्राणदण्ड।

गजनीखांका बेटा पहाड इस स्थान पर मारा गया। बादशाह लिखता है—"इस कुपात्रको मैंने उसके बापके मरे पीछे कृपाकरके जालौरका किला और इलाका जो इसके बाप दादाका संस्थान था इनायत किया था। यह बालक था। इसकी माता इसे कई बुराइयोंसे बचानेकी चेष्टा करती थी। इससे इस कलङ्कीने एक रात कई नौकरोंके साथ अपनी जननीके घरमें जाकर उसे अपने हाथसे मारा। यह खबर जब मुझे मिली तो मैंने उसे बुलाया और अपराध साबित होने पर प्राणदण्डका हुक्म दिया।"

खजूरका पेड।

यहां बादशाहने एक विचित्र खजूरका पेड देखा। जडमें उसका तना एक था। ६ गज ऊपर जाकर वह दोहरा होगया था। एक तरफ दस गज़ ऊंचा था दूसरी तरफ ९॥ गज। बीचमें ४॥ गजका अन्तर था। जमीनसे फल पत्ती तक एक तनेकी ऊंचाई १६ गज और दूसरेकी १५॥ गज थी। पत्तोंसे चोटी तक अढाई गज ऊंचाई थी। गोलाई पौने तीन गज थी। बादशाहने उसके नीचे तीन गज ऊंचा एक चबूतरा बनवाकर चित्रकारोंको आज्ञा दी कि जहांगीरनामेमें उसका चित्र खेंचलें।

२७ (माघ सुदी १०) को कूच होकर आधपाव दो कोस पर गांव हिन्दुवालमें सवारी ठहरी।

२८ (माघ सुदी ११) को बादशाह दो कोस चलकर कालिया-दहमें ठहरा।

कालियादह।

कालियादह एक राजभवन है जो मालवेके सुलतान महमूद खिलजीके पोते सुलतान गयासुद्दीनके बेटे सुलतान नासिरुद्दीनने उज्जैनमें बनवाया था। कहते हैं कि गरमी उसके मिजाजमें बहुत बढ गई थी। इससे पानीमें रहा करता था और इस भवनको नदीमें बनवाकर पानीकी नहरें हर तरफसे अन्दर लाया था। उचित स्थानों पर छोटे छोटे हौज बनवाये थे उनमें वह नहरें गिरती थीं।

बादशाह लिखता है—"यह बहुत मनोहर और आनन्दप्रद विलासस्थान है। हिन्दुस्थानके उत्तमोत्तम विशाल भवनोंमेंसे एक भवन यह भी है। मैंने अपने आनेसे पहिले सिलावटोंको भेजकर इस स्थानको सुधरवा दिया था। मैं इसकी शोभा पर मोहित होकर तीन दिन तक वहां ठहरा रहा।"

उज्जैन।

उज्जैनके विषयमें बादशाह लिखता है—"उज्जैन पुराने शहरों

मेंसे है हिन्दुओंके पूज्य स्थानोंमेंसे एक यह भी है। राजा विक्रमाजीत जिसने खगोलका शोधन कराया था इसी नगर और देशमें हुआ है। उस समयसे अबतक कि हिजरी सन् १०२६ है और ११ वर्ष मेरे राज्याभिषेकको हुए हैं १६७५ वर्ष बीते हैं। हिन्दुस्थानके ज्योतिषियोंका आधार उसी शोधन पर है।

सपरा नदी।

यह नगर सपरा नदी पर बसा है हिन्दुओंका ऐसा विश्वास है कि साल भरमें एक बार जिसका कोई दिन निश्चित नहीं है इस नदीका पानी दूध होजाता है। मेरे पिताके समयमें शेख अबुलफजल मेरे भाई शाहमुरादको सम्हालके वास्ते यहां भेजा गया था। तब उसने इस शहरसे अर्जी लिखी थी कि बहुतसे हिन्दू मुसलमानों ने साखी दी है कि मेरे आनेसे पहिले एक रातको यह पानी दूध होगया था। उस रात्रिमें जिन लोगोंने उस पानीको भरा था तडके उनके घडोंमें दूध था, परन्तु मेरी बुद्धि इस बातको नहीं मानती है।"

जदरूप सन्यासी।

बादशाह लिखता है—"२२ असफन्दार (माघ सुदी १५) को नावमें बैठकर मैंने कालियादहसे प्रयाण किया। यह बात अनेक बार सुनाई गई थी कि जदरूप नाम एक तपस्वी सन्यासी कई वर्षों से उज्जैनसे कुछ दूर जङ्गलमें भगवत् भजन करता है। मुझे उसके सत्सङ्गकी बडी इच्छा थी। जब मैं आगरेमें था तो चाहता था कि उसको बुलाकर मिलूं परन्तु उसकी तकलीफका विचार करके नहीं बुलाया था। अब उज्जैन पहुंचकर नावसे उतरकर आधपाव कोस पैदल उसके देखनेको गया। वह एक गुफामें रहता है जो एक गज लम्बी दस गज चौडी एक टेकरीमें खुदी हुई है। पहला द्वार उसमें जानेको महराबके आकारका है। यहांसे उस गढे तक कि जिसमें वह बैठता है दो गज पांच गिरह लम्बाई और सवा ग्यारह गिरह चौडाई है और ऊंचाई धरतीसे छत तक एक गज

तीन गिरह है। जो सुरङ्ग उस खोहमें जाती है वह साढे पांच गिरह लम्बी और साढे तीन गिरह चौडी है। उसमें एक दुबला पतला पुरुष भी बड़े परिश्रमसे प्रवेश कर सकता है और उसकी लम्बाई चौड़ाई भी इसी प्रमाणकी होगी। न उसमें चटाई है न कोई घासका बिछौना है। वह अकेला उसी अन्धेरे गढेमें रहता है। निपट नङ्गा होकर भी जाड़े और शीतल वायुमें कभी सिवा एक लंगोटीके और कोई कपडा नहीं रखता। न आग जलाता है जैसा कि मौलवी रूमने किसी एक तपस्वीका वाक्य लिखा है—

'हमारा वस्त्र दिनमें धूप है, रात्रि बिछौना और चान्दनी ओढना है।'

वही गति इसकी भी हैं। इस विश्रामस्थानके पासही पानी बहता है, वह उसमें नित्य दोबार जाकर नहाता है और एकबार बस्तीमें आकर सात ब्राह्मणोंके घरोंमेंसे जो उसने अङ्गीकार कर रखे हैं तीन घरोंसे पांच ग्रास भोजनके (जो उन्होंने अपने वास्ते बनाया हो) हथेलीपर लेकर बिना चबाये और स्वाद लियेही निगल जाता है। यह ब्राह्मण भी गृहस्थ हैं और उसके भक्त हैं पर इसके साथ यह कई नियम भी हैं कि उन तीन घरोंमें शोक और सूतक न लगा हो न कोई स्त्री रजस्वला हुई हो। उसकी यही जीवनवृत्ति है। वह लोगोंसे नहीं मिलना चाहता है परन्तु बहुत विख्यात होजानेसे लोग आपही उसके दर्शनको आते हैं। बुद्धिसे शून्य नहीं है वेदान्तविद्यामें निपुण है। मै छः घडी तक उसके पास रहा उसने अच्छी अच्छी बाते कहीं जिनका मुझ पर बडा प्रभाव हुआ और उसको भी मेरा मिलना अच्छा लगा। मेरे पिता भी जबकि वह आसेरगढ़ और खानदेश जीतकर आगरेको लौटे थे उससे इसी जगह पर मिले थे और उसे सदा याद किया करते थे।"

ब्राह्मणोंकी वर्णव्यवस्था।

हिन्दुस्थानके विद्वानोंने हिन्दुओंमें उत्तम वर्ण ब्राह्मणके जीवन के चार आश्रम नियत किये हैं। ब्राह्मणोंके घरमें जो बालक जन्म

लेता है उसको सात वर्ष तक ब्राह्मण नहीं कहते न कोई बन्धन उसके वास्ते है। जब आठवां वर्ष लगता है तो एक सभा रचकर ब्राह्मणोंको बुलाते हैं जो मन्त्र पढ़कर मूंजकी सवादो गज लम्बी एक रस्सीमें तीन गांठें अपने पूज्य तीन देवताओंके नामकी लगाते हैं और उस लडकेको कटिमें बांधते हैं। फिर कच्चे सूतका जनेऊ बटकर उसके दहने कन्धेमें बद्धीकी भांति डालते है और एक गजसे कुछ अधिक लम्बी लकडी और एक कमण्डल आत्मरक्षा और पानी पीनेके लिये उसके हाथमें देकर उसे किसी विद्वान ब्राह्मणको सौंप देते है। वह बारह वर्ष तक उसके घरमें रहकर वेद पढता है। उस दिनसे वह ब्राह्मण कहलाता है उसका यह कर्तव्य है कि भूलकर भी विषयवासनामें न पडे। जब आधा दिन बीत जावे तो किसी दूसरे ब्राह्मणके घरमें जाकर जो कुछ भिक्षा मिले गुरुके पास ले आवे और उसकी आज्ञासे (आप भी) भक्षण करे और सिवा एक लङ्गोटी और दो तीन गज गजीके और कुछ कपडा अपने पास न रखे। इस अवस्थाको ब्रह्मचर्य्य अर्थात् वेदपाठ कहते है। इसके पीछे गुरु और पिताकी आज्ञासे विवाह करे और जबतक पुत्र न हो पांचों इन्द्रियोंका सुख भोगे। पुत्र न होनेकी दशामें ४८ वर्ष की उमर तक पांचो इन्द्रियोंके सुख भोगनेका निषेध नहीं है। इस दशाको गृहस्थाश्रम कहते हैं। इसके पीछे भाई बन्धु इष्ट मित्र तथा भोग बिलासको छोडकर घरसे निकल जाना और जङ्गलमें रहना पडता है इसका नाम वाणप्रस्थ है। हिन्दुओंमें यह भी विधान है कि धर्मका कोई काम बिना स्त्रीके जिसको अर्द्धांगिनी बोलते है सिद्ध नहीं होता है और वाणप्रस्थाश्रममें भी कई कृत्य करने पडते है इसलिये स्त्रीको साथ लेजाना आवश्यक हैं। पर वह गर्भवती हो तो घर रहे। जब बालक जन्मे और पांच वर्षका होजावे तो उसे बडे पुत्र या कुटम्बियोंको सौंपकर सपत्नीक वाणप्रस्थमें होजावे और ऐसाही स्त्रीके रजस्वला होनेपरभी करे जब तक कि वह पवित्र न होजावे। वाणप्रस्थ हुए पीछे स्त्रीका सङ्ग न

करे और रातको अलग सोवे इस प्रकार बारह वर्ष जंगलमें रहे और कन्द मूल खाकर उदर पूर्ण करे। जनेऊ पहने रहे और अग्निहोत्र भी करे, नख और दाढी मूछ तथा मस्तक के बाल लेनेमें वृथा समय न खोवे। जब इस आश्रमकी भी अवधि ऊपर लिखे विधानसे पूरी होजावे तो फिर अपने घरमें आवे और स्त्रीको बेटों वा भाई बन्धुओंके पास छोडकर सतगुरुकी सेवामें जावे और उसके आगे जनेऊ और जटा आदिको आगमें जलाकर कहे कि मैंने सब बंधन और जप तप अपने मनसे अलग कर दिये। ऐसा करके फिर कोई वासना चित्तमें न रखे सदा परमेश्वरके ध्यानमें लगा रहे और जो किसी विद्याकी भी बात करे तो वह भी वेदान्तविद्याकीही हो जिसका तात्पर्य्य "बाबा फुगानी" ने इस प्रकार कहा है।

'इस घरमें एकही दीपक है कि जिसके प्रकाशसे जिधर देखता हूं उधरही एक समाज बनाया हुआ है।'

और इस दशाको सर्वविनाश और उसके स्वामीको सर्वविनाशी कहते हैं।

जदरूपके मिलापके पीछे मैं हाथी पर चढकर उज्जैनके बीचमें से निकला और साढे तीन हजार रुपये दायें बायें लुटाये। फिर सवा कोस चलकर दाऊदखेडेमें जहां लशकर पडा था उतरा।

३ (फागुन बदी १) को मुकामका दिन था। फिर जदरूपसे मिलनेकी इच्छा हुई। दोपहर पीछे उसके दर्शनको गया और ६ घडी तक उसके सत्संगसे अपने चित्तको प्रसन्न करता रहा। इस दिन भी अच्छी अच्छी बातें हुई। संध्या समय राजभवनमें लौट आया।

आगेको कूच।

फागुन बदी ३ को बादशाह सवातीन कोस चलकर गांव जराव के पास बाग परानियामें पहुंचा। यह पड़ाव भी बहुत सुरम्य और हरा भरा था।"

फागुन बदी ३ को साढ़े तीन कोस पर देपालपुरमें भेरिये तालाब पर डेरे हुए। यह सजल और सरस स्थान था इसलिये बादशाह चार दिन तक यहां रहकर जलजन्तुओंका शिकार खेलता रहा। यहां अहमदनगरके बढिया अंगूर आये जो बडाईमें तो काबुलके बढ़िया अंगूरोंको नहीं पहुंचते थे परन्तु रसमें उनसे कम न थे।

एक बडा बटवृक्ष।

११ (फागुन बदी १०) को कूच होकर सवातीन कोस पर दौलताबादके परगनेमें डेरे हुए। ११ को मुकाम रहा। बादशाह शिकारको गया। गांव शेखोपुरेकी सीमामें उसने एक बटवृक्ष देखा जो बहुतही बड़ा था। मोटाई १८॥ गज और ऊंचाई जडसे डालियोंकी चोटी तक १२८। गजकी थी। शाखाएं जो उसमें फूटी थीं उनका फैलाव २०३॥ गजमें था। उनमेंसे एक शाखा जो हाथी दांतके आकारमें थी चालीस गज लम्बी थी। अकबर बादशाह जब इधर होकर निकला था तो उसने एक जडके डालेमें सवा तीन गजके ऊपर अपना पञ्जा स्मृतिके वास्ते खुदवा दिया था। अब इस बादशाहने भी दूसरी जडकी शाखामें ८ गजके ऊपर अपनी हथेली का चिन्ह खुदवा दिया और चिरस्थायी रहनेके लिये दोनों पञ्जोंको सकराने पर भी खुदवाकर उस बडकी जडमें लगा देनेका हुक्म फरमाया। फिर उसके नीचे एक सुन्दर चबूतरा बना देनेका हुक्म दिया। बादशाह जब युवराज था तो मीर जियाउद्दीन काजवीनी (मुस्तफाखां) से मालदह*का परगना देनेको प्रतिज्ञा की थी अब इस स्थान पर उसका आलतमगा‡ कर दिया।

केशव मारू कमालपुरा।

यहांसे लशकर तो १२ (फागुन बदी ११) को बालकमें गया और बादशाह कुछ बेगमों, पारिषदों और निज सेवको सहित बन

---

* मालदह एक प्रसिद्ध परगना बंगालमें है जहांके आम बहुत विख्यात हैं।

‡ लाल मोहरका पट्टा।

विहार और शिकारके लिये हासिलपुरको कूच करके गांव सांगोर में पहुंचा। वहांकी हरियाली और आमोंकी छटाने उसको ऐसा मोहित किया कि तीन दिन तक वहीं रह गया। यह गांव केशो मारूसे छीनकर कमालखां किरावलको देदिया और फरमाया कि आजसे इसको कमालपुरा कहा करें।

शिवरात्रि।

यहीं शिवरात्रि हुई। बहुतसे योगी जमा होगये थे। बादशाहने इस रात्रिका विधान और विद्वान योगियोंका सत्संग किया।

राजा मानका मारा जाना।

राजा मानको बादशाहने कांगड़े पर भेजा था। जब लाहोरमें पहुचा तो सुना कि संग्राम जो पञ्जाबके पहाडी राजोंमेंसे था उसके राज्यमें आकर कुछ विभाग उसका दबा बैठा है।

राजा मान पहिले संग्राम पर चढकर गया। संग्राममें उससे लडनेकी शक्ति न थी। इसलिये उसके परगनोंको छोडकर विकट पहाडोंमें जाछिपा। मान अभिमानसे आगे पीछेका विचार न करके उसकी तलाशमें गया और थोडेसे सैनिकोंसे उस पर जापहुंचा। वह भी बच निकलनेका मार्ग न पाकर लड़नेको आया। दैवसंयोग से एक पत्थर राजा मानके लगा जिससे उसके प्राण निकल गये। उसके साथी बहुतसे तो मारे गये और जो बाकी बचे वह घोडे और हथियार छोड़कर बडे कष्टसे निकल भागे।

बादशाहका कूच।

१७ (फागुन बदी ३०)को बादशाह सांगोरसे तीन कोस चलकर हासिलपुरमें पहुंचा जो मालवेका प्रसिद्ध परगना है। वहां अंगूर और आमके वृक्षोंकी सीमा न थी। नदियां बह रही थीं अंगूर विलायतकी ऋतुसे विरुद्ध इस ऋतुमें भी यहां इतने आए हुए थे कि एक "पाजी" भी जितने चाहता उतने मोल ले सकता था। अफीमकी क्यारियां भी खूब खिली हुई थीं। जिन में रंग

रंगके फूल देखकर बादशाह प्रसन्न होगया। अपने रोजनामचे में यह बात लिखे बिना न रहा कि ऐसी शोभाका गांव कम होता है।

२१ (फागुन सुदी ४।५)को बादशाह हासिलपुरसे चलकर दो कूचमें बड़े उर्दू (लशकर) से जामिला।

सिंहका शिकार।

२२ (फागुन सुदी ६) रविवारको बादशाह लालचेसे कूच करके मांडोगढके नीचे एक तालाबके ऊपर ठहरा। शिकारियों ने आकर तीन कोस पर एक सिंहके होनेकी खबर दी। बादशाह लिखता है कि मैं रविवार और गुरुवारको बन्दूकका शिकार नहीं करता हूं तो भी यह सोचकर कि सिंह हिंसक जन्तु है मारनाही चाहिये, उसके ऊपर गया। वह एक वृक्षकी छायामें बैठा था। मैंने हाथी पर से उसके अधखुले मुंहको ताककर बन्दूक मारी। गोली उसके मुंहमें लगकर जबडे और सिरमें बैठ गई और उसका काम तमाम होगया। जो आदमी साथ थे उन्होंने इसबातकी बहुतही खोज की कि गोली कहां लगी। परन्तु कुछ पता न लगा. क्योंकि उसके अङ्ग प्रत्यंङ्ग पर कहीं भी गोली लगनेका चिन्ह न था। तब मैंने कहा कि इसके मुंहमें देखो। मुंह देखा तो गोली मुंहमें लगी थी और उसीसे वह मरा।"

भेड़ियेका पित्ता।

इतने मे मिरजा रुस्तम एक भेडियेको मारकर लाया। बादशाह यह देखना चाहता था कि उसका पित्ता भी सिंहकी भांति कलेजेके भितर होता है या बाहर जैसा कि और पशुओंका होता है। देखने से पाया गया कि उसका पित्ता भी कलेजेके अन्दरही होता है।

मांडोंगढमें प्रवेश।

२३(फागुन सुदी ७) सोमवारको शुभ घडीमें बादशाह मांडोमें

प्रवेश करनेको हाथी पर सवार हुआ और एक पहर २ घडी दिन चढे वहां पहुंचकर उस राजभवन में उतरा जो उसके वास्ते बना था। डेढ़ हजार रुपये रास्ते में लुटाये। मांडों अजमेरसे १५८ कोस है बादशाह चार महीने दो दिनमें ४६ कूच और ७८ विश्राम करके वहां पहुंचा था। इन ४६ कूचोंमें डेरा भी दैवयोग से सुरम्य स्थानों तालावों नदियों और बडी बडी नहरोंके तट पर होता था जहां हरेभरे वृक्ष, लहलहाते खेत और अफीमकी फूलीहुई क्यारियां मिलती थीं। कोई दिन शिकारसे खाली नहीं गया। बादशाह लिखता है कि मैं तमाम रास्ते हाथी और घोडे पर बैठा बनविहार करता और शिकार खेलताहुआ आता था। यात्रामें कुछ कष्ट नहीं मालूम हुआ मानो एक बागसे दूसरे बागमें बदली होती थी। इन शिकारोंमें आसिफखां, मिरजा रुस्तम, मीरमीरां, अनीराय, हिदायतउल्लह, राजा सारंगदेव, सय्यद कासू और खवासखां हमेशा मेरी अर्दलीमें रहते थे।

मांडोंके राजभवन।

बादशाहने अजमेरसे अबदुलकरीम मामूरीको मांडोंमें अगले हाकिमोंकी इमारतोंके सुधारके वास्ते भेजा था। उसने बादशाह के अजमेरमें रहने तक कई पुराने मकानोंकी मरम्मत कराटी थी और कई स्थान नये बनवाये थे। बादशाह लिखता है—"उस ने ऐसा निवासस्थान प्रस्तुत करदिया था कि उस समय किसी जगह वैसा सुन्दर और सुरम्य भवन न था। तीनलाख रुपये इसमें लगे थे। ऐसी विशाल इमारत उन बडे शहरोंमें होना चाहिये थी जो हमारे निवास करनेकी योग्यता रखते हैं।"

मांडोंगढका विवरण।

बादशाह लिखता है—"यह गढ़ एक पहाडके ऊपर बना है। इसका घेरा दस कोस नापा गया। बरसातके दिनोंमें इस गढ़ के समान कोई स्थान स्वच्छवायु और सुन्दरतासे पूर्ण नहीं होता। यहां सिंह संक्रान्तिमें रातको ऐसी ठण्ड पड़ती है कि रजाई ओढे

बिना निर्वाह नहीं होता। दिनको पंखेकी आवश्यकता नहीं पडती।"

कहते हैं कि राजा विक्रमाजीतसे पहिले जयसिंहदेव नामक एक राजा था उसके समयमें एक मनुष्य घास काटनेको जङ्गलमें गया। दैवसंयोगसे उसका हंसवा सुनहरा होगया उसने सांडन नाम लुहारको दिखाया। लुहारने पहिलेसे सुन रखा था कि इसदेशमें पारस पत्थर है जिसके छूजानेसे लोहा और तांबा सोना होजाता है। इसलिये वह उस घसियारेके साथ उस जगह गया और उस पारसको ढूंढकर राजाके पास लाया। राजाने उससे बहुतसा सोना पैदा करके किला बनवाया और उस लुहारकी प्रार्थनासे बहुतसे पत्थर अहरनके आकारके तरशवाकर कोटमें लगाये। अन्तावस्थामें संसारको त्यागकर नर्मदाके निकट एक बडी सभा की और ब्राह्मणोंको बुलाकर धनमाल दिया। पारस पत्थर अपने पुराने पुरोहितको दिया परन्तु उसने अज्ञतासे तडककर नदीमें फेंक दिया। पर जब यथार्थ बात जानी तो उमरभर पछताता और ढूंढता रहा पर वह कहीं न मिला।

यह कथा लिखी नहीं है जबानी सुनी गई है मेरी बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती मेरी समझमें यह गप्प जान पडती है।

मालवेकी बडी सरकारोंमेंसे एक सरकार मांडोंकी है। इसकी जमा १ करोड ३९ लाखकी है। यह बहुत वर्षों तक इस देशके बादशाहोंका राजस्थान रहा है जिनकी बहुतसी इमारतें और निशानियां यहां हैं। उनमें कुछ टूटा फूटा नहीं है।

२४ असफंदार (फागुन सुदी ८) को मैं पिछले बादशाहोंके स्थान देखनेको सवार हुआ। पहिले सुलतान होशंग गोरीको बनाई हुई 'जामेमसजिद' में गया जिसकी इमारत बहुत बडी है। इसको बने हुए १८० वर्ष बीत गये हैं तोभी ऐसा मालूम होता है कि मानो आजही मेमार काम करके गये हैं।

फिर मैं खिलजी हाकिमोंकी कबरें देखने गया। इस लोक

और परलोकमें जिसका काला मुंह हुआ ऐसे नसीरुद्दीनकी कबर भी वहीं थी। यह प्रसिद्ध है कि इस कपूतने अपने ८० वर्षके बूढ़े बाप सुलतान गयासुद्दीनको दोबार विष दिया जो उसने अपने भुजबन्दके जहरमोहरेसे मार दिया। तीसरी बार फिर उसने शरबतमें जहर मिलाकर अपने हाथसे बापको दिया कि इसको पी जाना चाहिये। बापने जब उसका यह आग्रह उस काममें देखा तो जहरमोहरा भुजासे खोलकर उसके आगे डाल दिया और परमेश्वरको दण्डवत करके कहा, कि हे प्रभो! मैं ८० वर्षका होगया हूं मैंने अपनी अवस्थाको बड़े ऐश्वर्य्य और सुखचैनमें बिताया है वैसा सुख किसी बादशाहको प्राप्त नहीं हुआ। अब मेरा अन्तिम समय आ पहुंचा है इसलिये यह प्रार्थना करता हूं कि नसीरको मेरे खूनमें न पकड़ना और मेरी मृत्युको स्वाभाविक मानकर उसको दण्ड न देना। यह कहकर उसने वह विष मिश्रित शरबत पीलिया और प्राण देदिया।

इस बातके कहनेसे, कि मैंने अपने राजत्वकालको ऐसे सुख और विलासमें व्यतीत किया है जो किसी बादशाहके भाग्यमें नहीं था उसका यह अभिप्राय था कि जब वह ४८ वर्षकी अवस्थामें सिंहासनारूढ़ हुआ तो अपने मित्रोंसे कहा कि मैंने बापके राज्यमें तीस वर्ष खूब लड़ाइयां की हैं और परिश्रम करनेमें कुछ कसर नहीं रखी है। अब मुझे राज्य मिला है मेरा विचार किसी मुल्कके लेनेका नहीं है। मैं चाहता हूं कि शेषावस्था सुख चैनमें व्यतीत करूं।

कहते हैं कि उसने पन्द्रह हजार स्त्रियां अपने रनवासमें भरती करके उनका एक गांव बसा दिया था। उसमें हाकिम पशकार काजी कोतवाल आदि कर्म्मचारी जो एक नगरीके प्रबन्धके लिये आवश्यक होते हैं सब स्त्रियोंमेंसेही नियत किये थे। वह जहां कहीं सुन्दरदासी सुनता जबतक उसको हस्तगत न कर लेता निश्चिन्त न बैठता। उसने नानाप्रकारकी विद्या और कलाएं उन दासियोंको

सिखादी थीं। उसको शिकारकी बडी लत थी। एक शिकारखाना बनवाया था जिसमें अनेक प्रकारके पशु एकत्र किये थे। वह बहुधा स्त्रियों सहित वहां जाकर शिकार खेलता था। उसने जैसा स्थिर किया था उसीके अनुसार अपने राज्यशासनके ३२ वर्षोंमें कभी किसी शत्रुके ऊपर चढाई नहीं की और अपने समयको बडी मौज सें बिताया। वैसेही और कोई शत्रु भी उसके ऊपर चढ़कर नहीं आया।

लोग कहते हैं कि जब शेरखां पठान अपने समयमें नसीरुद्दीन की कबर पर पहुंचा था तो स्वयं पशुप्रकृति होने पर भी उसने नसीरको बुरी करनीके वास्ते अपने साथियोंको हुक्म दिया कि इस कबरको लकडियोंसे पीटो।

मैने भी उसकी कबरपर पहुंच कर कई लातें मारीं और मेरे सेवकोंने भी मेरी आज्ञासे लातें लगाईं। तोभी मुझे सन्तोष न हुआ और कहा कि कबरको खोदकर उसमें जो अपवित्र हड्डियां हों उनको आगमें जलादें। फिर यह विचारा कि आग तो परमेश्वरका रूप है उसके मलिन शरीरके जलानेसे यह दिव्य पदार्थ अपवित्र हो तो बडे खेदकी बात है और ऐसा न हो कि कहीं इस जलानेसे उसके परलोकके सन्तापमें कमी हो जावे। इसलिये मैंने यह हुक्म दिया कि इसकी गलीज अस्थियों और मट्टीसें, मिले हुए अवयवोंको नर्मदा नदीमें डालदे।

यह प्रसिद्ध है कि नसीरुद्दीनकी प्रकृतिमें गर्मी बहुत भरी हुई थी इसलिये वह हमेशा पानीमें रहा करता था। कहते हैं कि एक बार वह उन्मत्ततासे कालियादहके टांकेमे जो बहुत गहरा था कूद पडा था। अन्तःपुरके सेवकोंने बडे परिश्रमसे उसके बाल पकड़े और बाहर निकाला। जब कुछ सुध आई और लोगोंने कहा कि ऐसी घटना हुई थी तो बाल पकडकर निकाले जानेका नाम सुनतेही ऐसा क्रोधित हुआ कि उन सेवकोंके हाथ कटवा डाले जिसने बाल पकडे थे।

राजा भावसिंहका मनसब पांच हजारी और तीन हजार सवारोंका होगया।

अनीरायके मनसबमें भी पांच सदी जात और एक सौ सवार बढ़े जिससे वह डेढ़ हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसबदार होगया।

१८ (चैत्र सुदी ३) शनिवारको तीन घड़ी दिन रहे मेख संक्रांति लगी। बादशाहने फिर राजसिंहासन पर सुशोभित होकर उत्सव किया।

कैदीका भागना।

जब शाह नवाजखांने अंबरको लड़ाईमें हराया तो उसकी सेनाके बाईस सिपाही पकड़ आये थे। उनमेंसे एक जो एतकादखां को सौंपा गया था पहरेवालोंकी गफलतसे भाग गया। बादशाहने जमादारको सजा देकर तीन महीनेसे एतकादखांकी ड्यौढी बन्द कर रखी थी। अब वह एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे मुजरा करनेको आने पाया।

सूबेदारोंकी बदली।

बंगालेका हाल और कासिमखांका चलन ठीक नहीं सुना गया था और बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने अच्छा प्रबन्ध करके हीरेकी खान भी बादशाही अधिकारमें करदी थी इस लिये बादशाहने जहांगीरकुलीको उसकी जागीर सूबे इलाहाबादसे बिहारमें और इब्राहीमखांके बिहारसे बङ्गालमें जाने और कासिमखांके दरबारमें आनेके हुक्म लिखकर मजावलोंके हाथ भेज दिये।

२१ (चैत्र सुदी ५) को ईरानका एलची मुहम्मदरज्जाक विदा हुआ। उसको साठ हजार दरब * जो तीस हजार रुपयेके थे मिले। एक लाख रुपयेकी सौगात जो दक्षिणके दुनियादारोंके भेजे हुए जड़ाऊ पदार्थों और उत्तम वस्त्रोंसे सज्जित कीगई थी उसके साथ शाह अब्बासके वास्ते भेजी गई।

---

* अठन्नीका नाम दरब था।

पहले शाहने एक बिल्लौरी प्याला इस अभिप्रायसे भिजवाया था कि मेरे भाई इसमें शराब पीकर उसे लौटादें तो बड़ी कृपा हो। बादशाहने दूतके सामने कई बार उसमें शराब पीकर उसको भी रकाबी और ढकने सहित सौगातमें रख दिया था। यह दोनों चीजें नई बनी थीं। ढकनेके ऊपर मीनाका काम हुआ था।

२१ (चैत्र सुदी ६) को बादशाहने एक सिंह बन्दूकसे मारा।

२५ (चैत्र सुदी ८) को एतमादुद्दौलाकी फौजकी हाजिरी दर्शनके झरोखेके मैदानमें हुई। दो हजार अच्छे घुड़सवार जिनमें बहुधा मुगल थे पांच सौ तीरन्दाज तोपची और चौदह हाथी थे। बखशियोंने गिनती करके बादशाहसे कहा कि सब सेना ठीक सजी हुई है।

चैत्र सुदी १५ गुरुवारको मुकर्रबखांका भेजा हुआ एक हीरा जो २३ रत्ती था जौहरियोंने तीस हजार रुपयेका कूता। बादशाहने पसन्द करके अंगूठीमें जड़वाया।

नूरजहांका चार शेर मारना।

१ उर्दीबहिश्त (बैशाख बदी ६) को किरावलोंने अर्ज कराई कि हमने चार शेर घेर रखे हैं। बादशाह दो पहर तीन घड़ी दिन चढ़े राजमहिषियों सहित शिकार खेलने गया। जब शेर दिखाई दिये तो नूरजहां बेगमने बादशाहसे अर्ज की कि आज्ञा हो तो मैं इन शेरोंको बन्दूकसे मारूं। बादशाहने कह दिया कि मारो। बेगमने दोको बन्दूकसे और दोको दो दो तीरोंसे मारकर गिरा दिया। बादशाह लिखता है—"अबतक ऐसी निशानेबाजी नहीं देखी गई थी कि हाथीके ऊपर अम्मारीमेंसे छः तीर मारे जावें जिनमेसे एक भी खाली न जावे और ४ सिंह हिलने चलने और उछलनेका अवकाश भी न पावें। मैंने इससे प्रसन्न होकर एक हजार मोहरें नूरजहांके ऊपरसे न्यौछावर कीं और एक लाख रुपयेके हीरोंकी पहुंचियां उसे दीं।

५ खुरदाद (जेठ बदी ५) को मिरजाहुसैन, केशवकी जगह गुजरातका दीवान हुआ।

नाई गवैया।

उस्ताद मुहम्मद नाई गवैयेको सुलतान खुर्रमने बादशाहके पास भेजा था बादशाहने कई मजलिसोंमें उसके बाजे सुने। उसने बादशाहकी नामकी रागनियां गजलमें बनाई थीं। वह भी गाईं। १२ (जेठ बदी १३) को बादशाहने उसे रुपयोंमें तुलवाया। पैंसठसौ रुपये और हौदे सहित हाथी देकर फरमाया कि हाथी पर बैठकर रुपये दायें बायें रखले और लुटाता हुआ अपने डेरेको चला जा।

मुल्ला असद कहानी क़हनेवाला।

मुल्ला असद कहानी कहनेवाला जो मिरजागाजीके नौकरोंमें से था इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेसे बादशाहके पास आया। उसकी मीठी कहानियों और मीठी बातोंमें बादशाहका मन लग गया। इसलिये उसे महफूजखांका खिताब देकर एक हजार रुपये हाथी घोडा पालकी और सिरोपाव दिया। कईदिन पीछे उसे रुपयोंमें तोलकर दो सदी जात और बीस सवारका मनसब भी बखशा और फरमाया कि हमेशा "गप"की मजलिसमें हाजिर रहा करे। वह तोलमें चार हजार चार सौ रुपये भरका हुआ।

महासिंहकी मृत्यु।

२४ (जेठ सुदी १०) को खबर पहुंची कि राजा मानसिंहका पोता महासिंह जो बड़े अमीरोंमेंसे था बालापुर बराडमें शराब ज्यादा पीनेसे मर गया। उसका बाप भी ३२ वर्षकी अवस्थाहीमें अधिक मद्य पान करनेसे मरा था।

आमोंकी परीक्षा।

इन दिनोंमें बहुतसे आम दक्षिण गुजरात बुरहानपुर और मालवेसे बादशाही मेवेखानेमें आये थे। बादशाह लिखता है— "ये सब देश अच्छे आमोंके वास्ते प्रसिद्ध हैं मिठास, बडापन और रेशा कम निकलनेमें थोड़े ही स्थानोंके आम इन देशोंके आमोंको

तुलना कर सकते हैं। कई बार मैंने अपने सामने यहांके आम तुलवाये तो सवा सवा सेरसे अधिक हुए। पर सच यह है कि रस स्वाद मिठास और कम गुठियल होनेमें कृपरामऊ जिले आगरेके आम यहांके और हिन्दुस्थानके दूसरे स्थानोंके आमोंसे बढ़कर हैं।

नादिरी (सदरी)।

२८ (जेठ सुदी १३) को खासेकी नादिरी जिसके समान जरीकी दूसरी नादिरी बादशाही सरकारमें नहीं मिली थी बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजी और लेजानेवालेको जबानी कहलाया कि इस नादिरीमें यह विशेषता है कि मैं दक्षिणदेश जीतनेके विचारमें अजमेरसे कूच करनेके दिन इसको पहिने हुए था।

इसी दिन बादशाहने अपनी पगडी वैसीकी वैसी बंधी हुई एत-मादुद्दौलाको पहिनाकर भारी इज्जत दी।

तीन पन्ने, एक जडाऊ उर्बसी और एक अंगूठी याकूती महा-बतखांकी भेजी हुई बादशाहकी नजर हुई। यह सब माल सात हजार रुपयेका था।

इसी दिन वर्षा हुई। मांडोंमें जल कम होजानेसे प्रजा दुःखित थी। बादशाहने ईश्वरसे प्रार्थना की। उसकी कृपासे इतना जल बरसा कि नदी नाले तालाब सब भर गये।

१ तीर (आषाढ बदी ४) को राणाके भेजे हुए दो घोडे गुज-राती कपडे और कई घड़े अचार तथा मुरब्बेके बादशाहकी सेवा में पहुंचे।

२ (आषाढ़ बदी ६) को अबदुल्लतीफके पकडे जानेकी खबर आई जो गुजरातके पिछले हाकिमोंकी सन्तानमेंसे था और वहां सदा उपद्रव करता रहता था। बादशाहने उसके पकडे जानेसे प्रजाको सुखी होता देखकर परमेश्वरका धन्यवाद करके मुकर्रबखां को लिखा कि उसको किसी मनसबदारके साथ राजद्वारमें भेजदे।

मांडोंकी तलहटीके बहुधा भूपति भेंटें लेकर आये।

८ (आषाढ़ बदी ११) को बादशाहने राजा राजसिंह कछवाहे के बेटे रामदासको राजतिलक देकर राजाकी पदवी दी।

कन्धारके हाकिम बहादुरखांने नौ घोड़े, नौ थान कपड़ोंके और दो चमड़े काली लोमड़ियोंके भेटमें भेजे।

इसी दिन गढ़के राजा पेमनारायणने आकर सात हाथी भेट किये।

१३ (आषाढ़ सुदी २) को गुलाब छिड़कनेका त्यौहार हुआ।

१४ (आषाढ़ सुदी ३) को बांसवाड़ेके रावल उदयसिंहके बेटे रावल समरसिंहने आकर तीस हजार रुपये तीन हाथी एक जड़ाऊ पानदान और एक जड़ाऊ कमरपट्टा भेट किया।

१५ (आषाढ़ सुदी ४) को बिहारके सूबेदार इब्राहीमखां फतहजंगने ९ हीरे वहांकी खानसे निकले हुए तथा वहांके जमीन्दार के संग्रह किये हुए भेजे। उनमें एक हीरा १४॥ टांकका था वह एक लाख रुपयेका आंका गया।

दक्षिणमें सफलता।

२९ (सावन बदी २) गुरुवारको बारहका सैयद अबदुल्लह सुलतान खुर्रमकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि दक्षिणके सब दुनियादार अधीन होगये। अहमदनगर आदि किलोंकी कुञ्जियां आगईं। बादशाहने खुदाका शुक्र करके टोडेका परगना जिसकी उपज दो लाख रुपयेकी थी नूरजहां बेगमको दिया। क्योंकि यह बधाई उसके द्वारा उसके पास पहुंची थी। इससे २५ दिन पहले एक रातको बादशाहने दीवानेहाफिजमें फाल देखी थी तो काम बन जानेकी बात निकली थी। बादशाह लिखता है— "मैंने बहुत कामोंमें दीवानेहाफिजको देखा है। जो उसमें निकला वही हुआ।

दोपहर बाद बादशाह बेगमों सहित "हफ्तमंजर" महलको देखने गया संध्याको लौट आया। यह सतखण्डा प्रासाद सुलतान महमूद खिलजीका बनाया हुआ है। प्रत्येक खण्डमें चार चार

झरोखे हैं। ५४॥ गज ऊंचा और ५० गज चौडा है। नीचेसे सातवें खण्ड तक १७१ सीढ़ियां हैं। बादशाहने आनेजानेमें चौदह सौ रुपये लुटाये।

३१ (सावन बदी ४।५) को बादशाहने तीस हजार रुपयेका एक लाल जो अपने सिर पर बांधा करता था सुलतान खुर्रमके वास्ते भेजा।

५* अमरदाद (सावन बदी १०) गुरुवारको बादशाह रनवास सहित नीलकुंडके देखनेको गया जो मांडोगढमें एक सुरम्य स्थान है। अकबर बादशाहके समयमें शाह बदाकखांने जब कि यह प्रान्त उसकी जागीरमें था यहां एक मनोहर महल बनाया था बादशाह दो तीन घडी रात तक वहां ठहर कर राजभवनमें आगया।

राणा अमरसिंहको हाथी।

७ (सावन बदी १२) को आदिलखांके भेजे हुए हाथियोंमेंसे एक मस्त हाथी बादशाहने राणा अमरसिंहके वास्ते भेजा।

शिकार।

११ (सावन सुदी १) को बादशाह शिकारके वास्ते किलेसे उतरा था। परन्तु मेह और कीचडसे रास्ता बन्द था इसलिये आदमियों और जानवरोंके सुखके विचारसे गुरुवारको बाहर रहकर शुक्रकी रातको लौट आया।

अति वर्षा।

इस बरसातमें इतना पानी बरसा कि बूढ़े बूढोंने वैसी वर्षा न देखी थी। ४० दिन बादल घिरे रहे। सूर्य्य कभी कभी दिखाई दिया। आंधी पानीके जोरसे बहुतसे नये पुराने मकान गिर गये। पहली रातको वर्षा होते समय बिजली ऐसी कडककर गिरी कि बीस स्त्री पुरुष मरे। कई दृढ मकान टूट गये। आधे सावन तक जल वायुका जोर रहा। फिर धीरे धीरे कम होगया।

---

* असलमें तारीख रह गई है परन्तु गुरुवार लिखा है। गुरुवारको ५ तारीख थी।

मेवे गजक* के वास्ते रख दिये जावें। रात होतेही तालावों और मकानों पर चिराग और फानूस लगा दिये गये थे। बडी सुन्दर दीपमालिका होगई थी। बादशाह लिखता है—"जबसे यह चाल चली है कहीं ऐसी दीपमालिका नहीं हुई होगी। सब चिरागों और फानूसोंका प्रतिबिम्ब पानीमें पडनेसे ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सारा तालाव अग्निका एक आंगन बन गया है। मजलिस खूब खिली हुई थी। प्याले पीनेवालोंने अपनी रुचिसे अधिक प्याले पिये। तीन चार घडी रात जाने पर मैंने सब लोगोंको बिदा करके रनवासको बुलाया और एक पहर रात तक इस सरस स्थानमें मौज उडाई।"

गुरुवार और बुधवारके शुभाशुभ नाम।

इस गुरुवारको कई विशेष बाते एकत्र होगई थीं जैसे कि—

एक तो मेरे राज्यसिंहासनारूढ़ होनेका दिन था। दूसरे शब-बरात थी। तीसरे राखी थी।

इसलिये मैंने इसका नाम मुबारकशंबा रखा और जैसा गुरुवार मेरे वास्ते शुभ हुआ वैसेही बुधवार अशुभ हुआ इसमे उसका नाम कमशंबा रख दिया जिससे उक्त बार पृथिवीमें न्यून रहे।

महासिंहके बेटे जयसिंहका आना।

बादशाहने महासिंहके बेटे जयसिंहको बुलाया था वह इन्हीं दिनोंमें आया और हाथी नजर किया। यह बीस वर्षकी अवस्था में था।

नीलकुण्डकी शोभा।

२ शहरेवर गुरुवार (भादों वदी ८।९) को बादशाह एक पहर तीन घडी दिनसे नीलकुंडको गया वहांसे ईदगाहके टीलेपर आया। चम्पा और दूसरे जङ्गली फूल खूब खिले हुए थे जिधर नजर पडती थी उधरही हरियाली और फुलवार दिखाई देती थी। एक पहर रात गये राजभवनमें आगया।

---

* मद्यपानके साथ साथ खानेकी चटपटी चीजें।

केलेकी मिठाई।

बादशाह सुना करता था कि जङ्गली केलेसे एक प्रकारकी मिठाई निकलती है जिसको साधु और गरीब लोग खाया करते है। बादशाहने उसकी खोज़ की तो पता लगा कि जहांसे केला निकलता है वहां एक कडी गांठ बंधी हुई होती है जिसका स्वाद फालूदेके समान फीका होता है लोग उसे खाकर उसके स्वाद से सन्तुष्ट होते हैं।

पत्र पहुंचानेवाले कबूतर।

बादशाह लिखता है—"पत्र पहुंचानेवाले कबूतरोंके विषयमें भी बहुत कुछ सुना गया था। अब्बासी खलीफाओंके समयमें बगदादी कबूतरोंको जो नामाबर कहलाते थे और जङ्गली कबूतरोंसे छोटे होते थे यह काम सिखाया जाता था। मैंने कबूतरबाजोंसे कहा कि इन जङ्गली कबूतरोंको भी सिखावें। उन्होंने कई जोड़ोंको ऐसी शिक्षादी कि जब हम उनको मांडोंसे उडाते थे तो बरसातमें दोपहरमें बुरहानपुर पहुंचते थे और जो बादल नहीं होते तो बहुधा कबूतर एक पहर और कोई कोई तो चार घड़ीहीमें पहुँच जाते थे।*

आदिलखांको पुत्र पदवी।

३ (भादों बदी १०) को शाह खुर्रमकी अर्जी पहुँची कि अफजलखां रायरायां और आदिलखांके दूत आये रत्नोंके जडाऊ पदार्थों और हाथियोंकी भेट लाये। वसी भेट भी नहीं आई थी। आदिलखांने अच्छी सेवाकी और अपने बचनको पूरा किया अब उसके लिये पुत्र पदवी और वह कृपा होनी चाहिये जो अबतक नहीं हुई थी। बादशाहने शाह खुर्रमकी बात मान कर मुंशियोंको आदिलखांका अलकाव

* सुना है कि जोधपुर और नागोरमें भी महाराजा बख्तसिंह जी और विजयसिंहजीके हुक्मसे उपाध्या जातिके पुष्करना ब्राह्मण कबूतरोंसे यह काम लेते थे।

सवाया करके पुत्रको उपमासे फरमान लिखनेको आज्ञा दी और उसके सिरे पर अपनी लेखनीसे लिखा—"तू शाह खुर्रमकी प्रार्थना से हमारा पुत्र होकर जगतमें विख्यात हुआ।

४ (भादों बदी ११) को यह फरमान लिखाकर नकल सहित खुर्रमके पास भेजा गया कि वह नकल देखकर असल आदिलखांके पास भेज दे।

आसिफखांके डेरे पर जाना।

८ गुरुवार (भादों बदी ३०) को बादशाह बेगमों सहित आसिफ खांके डेरे पर गया जो एक स्वच्छ और सुहानी घाटीमें था। उसके पास और भी कई घाटियां थीं जहां पानीके झरने थे और आम आदि हरे भरे वृक्षोंकी छाया थी। दो तीन सौ केवडे भी एक घाटीमें फूले हुए थे। यह दिन बडी प्रफुल्लतामें निकला। मद्य-पानकी मजलिस भी जडी। बादशाहने अमीरों और मुसाहिबों को प्याले दिये। आसिफखांने भेट दिखाई। उसमेंसे कुछ चीजें बादशाहने पसन्द करके लेलीं शेष फेर दीं।

राजा पेमनारायणको मनसब।

गढेके जमींदार राजा पेमनारायणको हजारी जात और पांच सौ सवारोंका मनसब मिला। और जागीरकी तनखाह भी उसीके वतनमें लगाई गई।

राजा सूरजमलकी प्रतिज्ञा।

१२ (भादों सुदी ३) को खुर्रमकी अर्जी पहुंची कि राजा बासू का बेटा सूरजमल जिसका राज्य कांगडेके पास है प्रतिज्ञा करता है कि मैं एक वर्षके अन्दर कांगडेका किला बादशाही अधिकारमें करा दूंगा। शाहजादेने उसका प्रतिज्ञापत्र भी लिखाकर भेज दिया था। बादशाहने जवाबमें लिखा कि उसकी बातोंको समझकर उसे यहां भेज दो। वह अपने मनोरथोंका साधन करके उस काम पर चला जावे।

रौशनआरा ।

इसी दिन रमजानकी पहली ¶ तारीख और रविवार था। चार घड़ी ७ पल दिन चढ़े आसिफखांकी पुत्रीसे खुर्रमके एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम रौशनआरा रखा गया।

जमींदार जैतपुर पर चढ़ाई।

जैतपुरका जमींदार मांडोंके पास रहने पर भी बादशाहकी सेवामें नहीं आया था इसलिये बादशाहने फिदाईखांको कई मनसबदारों और चार पांच सौ बन्दूकचियों सहित उसके देश पर धावा करनेकी आज्ञा दी।

जयसिंहको मनसब।

१६ (भादों सुदी ७) को राजा महासिंहके बेटे जयसिंहको जो १२ वर्ष✻ की अवस्थामें था हजारी जात और पांचसौ सवारोंका मनसब मिला।

भोज भदौरिया।

राजा विक्रमाजीत भदौरियाके बेटे भोजने बापके मरे पीछे दक्षिणसे आकर मुजरा किया और एकसौ मोहरें भेट कीं।

राजा कल्याण।

भादों सुदी ८ को अर्ज हुई कि राजा कल्याण उड़ीसासे आकर मुजरा करनेके विचारमें है। परन्तु उसकी कुछ बुरी बातें बादशाहके सुननेमें आई थीं इसलिये वह पुत्रसहित आसिफखांको उन बातोंका निर्णय करादेनेके लिये सौंपा गया।

¶ चण्डू पञ्चाङ्गके अनुसार १ रमजान शनिको थी।

✻ तुजुकके पृष्ठ १८१ में जयसिंहकी उमर बीस वर्षकी और यहां १२ वर्षकी लिखी है दोनोंमें कौन सही है इसका निर्णय प्राचीन जन्मपत्रियोंके संग्रहमें किया गया तो जयसिंहका जन्म आषाढ़ बदी १ सं० १६६१ को होना पाया गया। इस लेखसे उसकी अवस्था बारह वर्षकी ही थी। बीस वर्ष लिखना भूल है।

जयसिंहको हाथी।

१९ (भादों सुदी १०) को बादशाहने जयसिंहको हाथी दिया।

केशव मारू।

२० (भादों सुदी ११) को केशव मारूका मनसब बढ़कर दो हजारी जात और बारह सौ सवारोंका होगया।

अहदाद पठान।

२३ (भादों सुदी १४) को बादशाहने अहदाद पठानको रशीद-खांका खिताब और खासा परम नरम दिया।

राजा कल्याणको हाथी।

राजा कल्याणसिंहकी ओरसे १८ हाथी नजर हुए जिनमेंसे सोलह तो बादशाहने निज गजशालामें भेजे और दो उसीको लौटा दिये।

जैतपुर पर चढ़ाई।

२५ (आश्विन बदी २) को फिदाईखां सिरोपाव पाकर अपने भाई रुहुल्लह और दूसरे मनसबदारोंके साथ जैतपुरके जमीन्दारको दण्ड देनेको बिदा हुआ।

नर्मदाको जाना।

२८ (आश्विन बदी ५) को बादशाह बेगमों सहित किलेसे उतर कर नर्मदाको देखने और शिकार खेलनेको गया। दो मञ्जिलोंमें वहां पहुंचा। परन्तु मच्छरों और खटमलोंके मारे एक रातसे अधिक न रह सका। दूसरे दिन तारापुरमें आगया और आश्विन बदी ८ शुक्रवारको लौट आया।

राणा कल्याणकी भेट।

राजा कल्याण आसिफखांकी तहकीकातमें निर्दोष निकला इसलिये २ मह्र (आश्विन बदी १०) को उसका मुजरा हुआ उसने इन्ने पदार्थ भेट किये।—

१ मोतियोंकी एक लड़ जिसमें ८० मोती थे।

२ लाल दो।

३ एक लाल और दो मोतियोंकी पहुंची ।

४ जवाहिरातका एक जडाऊ घोडा ।

जैतपुरमें जीत ।

फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि जैतपुरका जमींदार बादशाही फौजके सामने न ठहर सका भाग गया । उसकी विलायत लुट गई । अब वह अपने कियेको पछताकर सेवामें उपस्थित हुआ चाहता है । रूहुल्लह उसके पीछे गया है । या तो उसको पकड़ कर दरगाहमें ले आवेगा या नष्ट करदेगा । उसकी स्त्रियां जो पड़ौसके जमींदारोंके यहां चली गई थीं पकडी जाचुकी हैं ।

मोखा बन्दरके अनार ।

८ (आश्विन सुदी १) को ख्वाजा निजाम १४ अनार मोखाबंदर के लाया जो चौदह दिनमें सूरत पहुंचे थे और आठ दिनमें वहांसे मांडोमें आये थे । बादशाह लिखता है—"यह अनार ठट्ठेके अनारों से बडे है ठट्ठेके अनारोमें गुठली नहीं होती इनमें है । कोमल है रस ठट्ठेके अनारोंसे अधिक है ।"

जैतपुर ।

९ (आश्विन सुदी २) को समाचार मिला कि रूहुल्लह एक गांव में पहुंचकर और यह सुनकर कि जैतपुरवालोंकी स्त्रियां और कुछ संबंधी यहां हैं वहां ठहर गया और गांव वालोंको बुलाया । वह हथियार खोलकर कुछ लोगों सहित एक गलीचे पर बैठा था कि एक घातकने उसके पीछे आकर बरछा मारा जो उसकी छातीके पार होगया । बरछेके खेंचतेही रूहुल्लहकी रूह भी खिंच गई जो लोग वहां थे उन्होंने उस घातकको भी मार डाला । फिर सब हथियार बांधकर उस गांवमें गये और शत्रुओंको रखनेके अपराधमें सबको घडी भरमें काट छांटकर स्त्रियों तथा लडकियोंको पकड़ लाये । गांवमें आग लगादी जिससे राखकी ढेरीके सिवा और कुछ न रहा । फिर रूहुल्लहकी लाश लेकर फिदाईखांके पास आये । रूहुल्लहकी वीरतामें तो कुछ कसर न थी पर गफलतसे मारा गया ।

जब उस विलायतमें कुछ बस्ती न रही तो वहांका जमीन्दार पहाड़ों और जंगलोंमें जाछिपा और दूत भेजकर फिदाईखांसे अपराध क्षमा करा देनेको कहलाया। बादशाहने हुक्म दिया कि उसको बचन देकर दरगाहमें ले आवें।

हरभान जमीन्दार चन्द्रकोटा।

मुरव्वतखांने चन्द्रकोटेके जमीन्दार हरभानको नष्ट करनेकी प्रतिज्ञा की जो मुसाफिरोंको सताया करता था। इस पर उसका मनसब दो हजारी जात और पन्द्रह सौ सवारोंका होगया।

राजा सूरजमल।

१३ (आश्विन सुदी ५) को राजा सूरजमलने खुर्रमके बख्शी तकीके साथ उपस्थित होकर अपने मनोरथ निवेदन किये उनका साधन उस सेवाके वास्ते जो उसने स्वीकार की थी अच्छी तरहसे होगया और खुर्रमकी प्रार्थनाके अनुसार उसको झण्डा और नक्कारा दिया गया। तकीको भी जो उसके साथ जानेके लिये नियत हुआ था जड़ाऊ खपवा मिला। हुक्म हुआ कि अपने काम का प्रबन्ध करके शीघ्रही कूच कर जावे।

सूरजमलका कांगड़े जाना।

१७ (आश्विन सुदी १०) को बादशाहने राजा सूरजमलको हाथी सिरोपाव जड़ाऊ खपवा और तकीको सिरोपाव देकर कांगड़ेको बिदा किया।

खुर्रमका दक्षिणसे कूच।

शाह खुर्रमके दूत आदिलखांके वकीलों और उसकी भेजी हुई भेटको लेकर बुरहानपुरमें आये और उसका चित्त दक्षिणके कामों से निश्चिन्त होगया तो उसने बराड, खानदेश और अहमदनगरकी सूबेदारी सेनापति खानखानांके वास्ते बादशाहसे मांगकर उसके बेटे शाहनवाजखांको जो जवान खानखाना था बारह हजार सवारोंसे नये जीते हुए देशोंकी रक्षाके लिये भेजा। प्रत्येक ठौर और स्थानोंको विश्वासपात्र पुरुषोंको जागीरमें देकर वहांका प्रबन्ध

जैसा उचित था कर दिया। जो सेना उसके साथ थी उसमेंसे तीस हजार सवारों और सात हजार बन्दूकची पदातियोंको वहां छोड कर शेष पचीस हजार सवारों और दो हजार तोपचियोंके साथ पिताको सेवामें उपस्थित होनेके लिये कूच किया।

खुर्रमका दक्षिण विजय करके आना।

बादशाह लिखता है—"मेरे राज्यशासनके बारहवें वर्ष २० महर गुरुवार ११ शव्वाल सन १०२६ हिजरी (आश्विन सुदी १३ संवत् १६७४) को तीन पहर एक घडी दिन व्यतीत होने पर मांडोंके किलेमें खुर्रम कुशल और विजय पूर्वक पन्द्रह महीने ग्यारह दिन का वियोग रहनेके पीछे सेवामें उपस्थित हुआ। जब "कोरनिश" और "जमींबोस" विधि पूर्वक कर चुका तो मैंने उसको झरोके पर बुलाया। अति स्नेह और अनुराग वश अपनी जगहसे उठकर छातीसे लगाया। वह जितना कुछ विनय और नम्रतामें अग्रह करता था उतनाहीसे कृपा और अनुग्रहमें बढ़ता जाता था। मैंने उसको अपने पास बैठनेका हुक्म दिया। उसने एक हजार मोहरें और १०००) रुपये नजर तथा एक हजार मोहरें और १०००) रुपये न्योछावर किये। उस समय इतना अवकाश न था कि वह अपनी सारी भेंट दिखाता। इसलिये "सर-नाक" नामक हाथी जो आदिलखांकी भेटके हाथियोंसे शिरोमणि था, उत्तम रत्नोंकी पेटीके साथ भेट किया। फिर बखशियोंको हुक्म हुआ कि जो अमीर उसके साथ आये हैं वह मनसबोंके क्रमसे सेवामें आवें। पहले खानजहां उपस्थित हुआ। मैंने उसको ऊपर बुलाकर पद्मकमलोंके चूमनेका मान प्रदान किया। उसने एक हजार मोहरें २०००) रुपये रत्नों और जडाऊ पदार्थोंकी पेटी सहित भेट किये। उसमेंसे जो मैंने स्वीकार किये उनका मूल्य ४५०००) था।"

फिर अबदुल्लहखांने चौखट चूमकर एक हजार मोहरें नजर कीं उसके पीछे महाबतखांने जमीन चूमकर एक सौ मोहरें एक हजार रुपये और एक गठडी रत्नों तथा जड़ाऊ पदार्थोंकी भेट की। वह

बहुमूल्य सिरोपाव नादिरो सहित जिसमें रत्नों और मोतियोंके फूल टके थे, रत्नोंका जडाऊ सरपेच मोतियोंके तुर्रेको पगडी मोती की लडियोंका पटका, तलवार जडाऊ परतलेकी फूलकटारे सहित, दो घोडे जिनमेंसे एक जडाऊ जीनका था एक खासा हाथी दो हथनियां, इसीप्रकार बहुतसे सुनहरी सजावटोंके जोडे और कपडे उसको स्त्रियोंको भी दिये। भडकोले वस्त्र और रत्न जडित शस्त्र इसके प्रधान पारिषदोंको प्रदान किये। इस महोत्सवमें सब मिला कर ३ लाख रुपये लगे थे।

महाबतखांको काबुल।

खांनदौरां बहुत बूढा हो गया था इस लिये बादशाहने इसको ठट्ठेमें बदल कर महाबतखांको काबुल और बंगशकी सूबेदारी दी। वहां सदा पठानोंका उपद्रव रहनेसे बराबर दौड़ धूप करना पडती थी।

४८ हाथियोंकी भेट।

इब्राहीमखां फतहजंगने बिहारसे ४८ हाथी भेजे थे वह भेट हुए।

सोनकेले।

बादशाह लिखता है—"इन दिनों सोनकेले मेरे वास्ते आये जो आज तक मैंने कभी नहीं खाये थे। लंबाईमें एक उंगलके गलभग हैं कुछ मीठे और मजेदार हैं। अन्य प्रकारके केलोंसे इनकी कुछ तुलना नहीं है पर बादी है। मैंने दो खाये थे पेटमें बोझ मालूम हुआ। लोग तो कहते हैं कि ७।८-तक खाना चाहिये। वास्तवमें केला खाने योग्य नहीं है, परन्तु उसकी अनेक जातियोंमेंसे अगर कुछ खाने लायक है तो यही सोनकेला है।

गुजरातके आम।

मुकर्रबखां गुजरातके आम २३ महर (कार्ति वदी १) तक डाकचौकीमें भेजता रहा।

ऊदाराम दक्षिणी।

२१* आबान (कार्तिक बदी १२) गुरुवारको बादशाहने ऊदारामको तीन हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका मनसब दिया। यह ब्राह्मण अंबरके पास बड़ी इज्जतसे रहता था। जब शाहनवाजखांने अंबर पर चढ़ाईकी तो आदमखां हबशी, जादूराय, बाबू राय कायस्थ, और ऊदाराम आदि निजामुलमुल्कके कई सरदार अंबरको छोड़ कर शाहनवाजखांके पास चले आये थे। अंबरकी हार होने पर यह लोग आदिलखांके कहने और अंबरके धोखेमें आकर बादशाही नौकरी छोड बैठे। अंबरने आदमखांको तो कुरानकी कसम खाकर बुलाया और छलसे पकड कर मारडाला। बाबू राय और ऊदाराम निकल कर आदिलखांकी सीमामें आये पर उसने आने न दिया। बाबू राय कायस्थ तो उन्हीं दिनोंमें अपने एक मित्रके धोखेसे मारा गया। ऊदाराम पर अंबरने सेना भेजी जिसको वह हरा कर बादशाही सीमामें आ गया और बचन लेकर अपने बालबच्चों भाई बन्दोंको भी ले आया। शाहजहां उस को ३ हजारी जात और हजार सवारके मनसब दिलानेकी प्रतिज्ञाकर अपने साथ लेआया। बादशाहने ५०० सवार अधिक दिये।

शाहजहांकी भेट।

१० (कार्तिक सुदी ४) बृहस्पतिवारको शाहजहांने अपनी भेट बदशाहको दिखाई। जवाहिरात, जड़ाऊ चीजें और सब बहुमूल्य द्रव्य झरोखेके चौकमें सजाये गये थे। हाथी और घोडे सोने चांदीके साजोंसे सजे हुए बराबर बराबर खडे थे।

बादशाह लिखता है कि "मैने शाहजहांका मन प्रसन्न करनेके लिये झरोखेसे उतर कर सब चीजें ब्यौरेवार देखीं। उनमें एक सुन्दर लाल है जो शाहजहांके लिये गोवा बंदरमें २ लाखको मोल

---

* तुजुक जहांगीरीमें इस दिन १३ आबान गलत लिखी है २ चाहिये।

लिया गया था। तौलमें १८ टांक २। रती है। मेरी सरकारमें कोई लाल १२ टांकसे अधिक न था। जौहरियोंने उसका वही मूल्य स्वीकार किया।

(२) एक नीलम आदिलखांकी भेटमेंसे ६ टांक ७ रतीका है अब तक इतना बडा और ऐसे रंग रूपका नीलम नहीं देखा गया था।

(३) चमकोडा हीरा आदिलखांकी भेटमेंसे १ टांक ६ रतीका है। इसका मोल ४० हजार बताया गया है। दक्षिणमें चमकोडा एक सागका नाम है। जब मुरतिजा निजामशाहने बरारका देश जीता था तो एक दिन स्त्रियों सहित बागमें गया। वहां एक युवतीने चमकोडेके सागमें इस हीरेको पडापाया। उस दिनसे इसका नाम चमकोडा हुआ। अहमदनगरका राज छिन्न भिन्न होने पर इब्राहीम आदिलखांके* हाथ आया।

(४) एक पन्ना अदिलखांकी भेटमेंसे है जोनिकला तो नई खांनमेंसे है पर इतना सुरङ्ग और स्वच्छ है कि वैसा अब तक देखनेमें नहीं आया था।

(५) दो मोती एक तो ६४ रत्ती भरका है पचीस हजार रुपये उसका मोल ठहरा और दूसरा १६ रती भरका बहुत चमकीला और उज्वल है इसका मोल बारह हजार रुपये हुआ।

(६) कुतुबुलमुल्ककी भेटमेंसे एक हीरा एक टांक भरका जो पचीस हजार रुपयेका आंका गया।

(७) १५० हाथी जिनमें ३ के साज तो सांकलों तक सोनेके और ८ के चांदीके थे। उनमेंसे २० हाथी लिये गये जिनमें ५ बहुत बडे और विख्यात हैं।

नूरवखत् कि जिसको शाहजहांने पहिले दिन भेट किया था लखा लाखका आंका गया।

---

* वीजापुरपति।

महीपति – आदिलखांका भेजा हुआ जिसका मोल मैंने १ लाख रुपये नियत करके दुर्जनसाल नाम रखा।

बखत्बलन्द—यह भी आदिलखांकी ही भेटमेंका है एक लाख रुपयेका आंका गया। मैंने इसका नाम "गरांबार" रखा।

चौथे और पांचवें हाथीका नाम कदूसखां और इमामरज़ा था।

(८) एक सौ अर्बी और इराकी घोड़े जिनमें ३ जड़ाऊ साजदार हैं।

शाहजहांने जो भेट अपनी, और दक्षिणके दुनियादारोंसे ली हुई बादशाहको दिखाई थी बहुत बड़ी थी। उसमेंसे जो बादशाहने छांट करली वह २० लाख रुपयेकी थी। २ लाख रुपये की भेट उसने अपनी मा नूरजहांको दी। ६००००) की भेट दूसरी मताओं और बेगमोंको दी। सबका मूल्य २२ लाख ६० हज़ार रुपये हुआ। बादशाह लिखता है कि ऐसी भेट कभी इस राज्यमें नहीं देखी गई थी।

गुजरातको कूच।

१२ (कार्तिक सुदी ५) शुक्रवारको बादशाहने अपनी माता और बेगमोंको तो सब कारखानोंके साथ आगरे भेजा और आप रातको अहमदाबाद और समुद्रकी शोभा देखने तथा लौटते हुए हाथियोंका शिकार खेलनेके विचारसे गुजरातको रवाना हुआ माडोसे उतर कर नालछेमें ठहरा।

महाबतखां।

शनिवारको रातको महाबतखांको काबुल जानेकी आज्ञा हुई घोड़ा और खासा हाथी चलते समय मिला।

कल्याण टोडरमलका बेटा।

राजा टोडरमलका बेटा कल्याण, उड़ीसेसे आकर कई दिनों तक दरबारमें आनेसे विमुख रहा था क्योंकि उस पर कई दोष लगाये गये थे। परन्तु निर्णय होने पर निर्दोष निकला। बादशाह ने घोड़ा और खिलअत देकर उसे महाबतखांके साथ बंगशमें भेजा।

आदिलखांके वकील।

सोमवारको आदिलखांके वकीलोंको जडाऊ तुर्रे दक्षिणी चाल के मिले। एक पांच हजार और दूसरा चार हजारका था।

रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी।

दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बादशाहने शाहजहांके वकील अफजलखां और रायरायांके मनसब बढाये। रायरायांको विक्रमाजीतकी पदवी दी। बादशाह लिखता है—"हिन्दुओंमें यह उत्तम पदवी है और रायरायां अच्छा बन्दा कदर करनेके योग्य है।"

इसी दिन बादशाह ४॥ कोस चलकर गांव केदहसनमें ठहरा। १५ (कार्त्तिक सुदी ८) मङ्गलको बादशाहने १२ मनकी एक नील गाय मारी। दूसरे दिन डेरोंके पास पहाडकी घाटीमें एक नदी पर जो बीस गजकी ऊंचाईसे गिरती थी जाकर दारू पी और रातको लश्करमें आगया।

जैतपुरका जमींदार।

शाहजहांकी प्रार्थनासे जैतपुरके जमींदारके अपराध क्षमा किये गये थे। वह बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ।

हासिलपुरमें जाना।

बादशाह तीन कोस पर हासिलपुरमें शिकारकी बहुतायत सुन कर बडे लश्करको वहीं छोडकर २० (कार्त्तिक सुदी १५) उधर गया।

काबुलके अंगूर।

हुसैनी नामके बिना गुठलीके अंगूर काबुलसे आये। खूब ताजा थे। बादशाह लिखता है कि मेरी जीभ परमेश्वरका गुणानुवाद करनेमें असमर्थ है कि ३ महीनेका रास्ता होने पर भी काबुलके ताजा अंगूर दक्षिणमें पहुंचते हैं।

प्याले।

२४ (अगहन बदी ४) वृहस्पतिवारको हासिलपुरके तालाब पर

बादशाहने सभा सजाकर शाहजहां और बडे बडे अमीरोंको प्याले दिये। यूसुफखांका मनसब तीन हजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका करके उसको गोंडवानेकी फौजदारी पर भेजा।

राय बिहारीदास।

दक्षिणके सूबेका दीवान बिहारीदास दरबारमें आया।

बाईस गज पर गोली।

बादशाहने कुरीशा नामक पक्षीको वृक्ष पर बैठा देखकर बंदूक मारी। गोली बाईस गज पर लगी पक्षीको केवल कुछ छाती दिखती थी।

कमालपुर।

२६ (अगहन बदी ६) शनिवारको बादशाह दो कोस चलकर कमालपुरमें उतरा।

गोंडोंकी भेंठ।

शाहजहांका नौकर रुस्तमखां बुरहानपुरसे गोंडवानेके जमींदारों पर भेजा गया था। वह ११० हाथी और एक लाख बीस हजार रुपये लेकर दरबारमें उपस्थित हुआ।

दांतवाली दो जुडी लडकियां।

१ आजर (अगहन बदी १०) बुधवारको काशमीरके समाचार पत्रसे विदित हुआ कि एक रेशम बेचनेवालेके घरमें दो लडकियां जन्मीं जिनके मुंहमें दांत थे पीठसे कमर तक जुडी हुई थीं। परन्तु सिर हाथ और पांव दोनोंके अलग अलग थे कुछ समय तक जीती रहकर मर गईं।

गुरुवारको एक तालाब पर डेरे होकर प्यालोंकी मजलिस जुडी। आदिलखांके वकीलोंको पांचसौ तोलेकी एक मुहर दी गई। शुक्रवारको साढे चार कोस चलकर परगने दकनासें डेरे लगे। शनिवारको भी इतनाही कूच होकर धारमें मुकाम हुआ।

धार।

बादशाह लिखता है—"धार पुराने शहरोंमेंसे है। सुप्रसिद्ध

राजा भोज यहीं रहता था। उसके समयसे एक हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं। मालवेके बादशाह भी बहुत वर्षोंतक धारमें रहे। सुलतान मुहम्मद तुगलक जब दक्षिण विजय करनेको जाता था तो उसने यहां छिले हुए पत्थरोंका किला एक टीलेपर बनाया जो बाहरसे तो बहुत सुन्दर है परन्तु भीतर सूना है। मैंने लम्बाई चौडाई मापनेका हुक्म दिया तो किला भीतरसे लंबा १२ जरीब ७ गज और चौडा ७ जरीब १३ गज हुआ। कोटकी चौडाई १८। गज और ऊंचाई कंगूरे तक १७॥ गज, निकली। किलेके बाहरका भाग पचास जरीबका था।

अमीदशाह गौरी जिसका दिलावरखां खिताब था दिल्लीके बादशाह सुलतान फीरोजके बेटे सुलतान मुहम्मदके समयमें मालवे का स्वतन्त्र सूबेदार था। उसने किलेके बाहरकी बस्तीमें जामा मसजिद बनाई थी जिसके सामने लोहेकी एक लाठ गाडी थी। जब सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवेको अपने अधीन किया तो इस लाठको गुजरातमें लेजाना चाहा। पर कर्मचारियोंने उखाडते समय सावधानी नहीं रखी जिससे जमीन पर गिरकर उसके ७॥ गज और ४। गजके दो टुकडे होगये। गोलाई सवा गजकी है यह टुकडे वहां योंही पडे थे इस लिये मैंने हुक्म दिया कि बडे टुकडेको आगरेमें लेजाकर स्वर्गवासी श्रीमानके रौजेमें खडा करदें और रातको दीपक उस पर जला करे।†

इस मसजिदके दो दहलीजें हैं। एकके ऊपर यह लेख खुदा है कि अमीदशाह गौरीने सन् ८७० में यह मसजिद बनाई और दूसरीके ऊपर कवितामें भी यही वर्ष खुदा हुआ है।

जब दिलावरखां मरा तो उस समय हिन्दुस्तानमें कोई प्रबल

---

† अब यह लोहेकी लाठ अकबर बादशाहके रौजेमें नहीं है जो आगरेके पास सिकन्दरेमें है। उसके दोनों टुकडे धारमेंही हैं बडा तो अपनी जगहही पडा है और दूसरा एजेण्टकी कोठीमें खडा है धारके लोग इसको तेलीकी लाठ कहते हैं।

बादशाह न था और अफरातफरीके दिन थे। इसलिये दिलावर खांका बेटा होशंग जो योग्य और साहसी था अवसर पाकर मालवे के सिंहासन पर बैठ गया। उसके मरने पर यह राज्य उसके वजीर "खानजहां" के बेटे महमूद खिलजीके हाथमें चला गया। उससे उसके बेटे गयासुद्दीनको मिला। उसको विष देकर उसका बेटा नासिरुद्दीन गद्दी पर बैठा। उसके पीछे उसका बेटा महमूद उत्तराधिकारी हुआ। उससे सुलतान बहादुर गुजरातीने मालवा छीन लिया और मालवेके बादशाहोंकी परम्परा नष्ट होगई।

ऊदाराम।

६ (अगहन बदी १४) सोमवारको बादशाहने जड़ाऊ तलवार, एक सौ तोलेकी मोहर और बीस हजार दरब ऊदारामको दिये।

सादलपुर।

बादशाह ४॥ कोस चलकर सादलपुरमें ठहरा। इस गांव में एक नदी है जिसपर नासिरुद्दीन खिलजीने पुल बांधकर कालियादहके समान विलासभवन बनाये थे। बादशाहने रातको उस नदी और उसके कुण्डों पर दीपमालिका कराई।

शाहजहांको लाल और मोती।

८ (अगहन सुदी २) गुरुवारको प्यालोंकी मजलिस हुई। बादशाहने एक लाल और दो मोती शाहजहांको दिये। लाल पच्चीस हजार रुपयेका ८ टांक और ५ रत्ती भरका था। बादशाह लिखता है—"यह लाल मेरे जन्मकालमें मेरी दादीने मेरी मुंह दिखाईमें दिया था। वर्षों तक मेरे पिताके सरपेचमें रहा। उनके पीछे मैंने भी सरपेचहीमें रखा था। बहुमूल्य और सुन्दर होनेके सिवा यह इस राज्यके वास्ते शुभ भी रहता आया है इसीलिये शाहजहांको दिया गया।"

ऊदाराम दक्षिणमें।

इसी दिन बादशाहने खिलअत हाथी और इराकी घोड़े देकर

ऊदाराम को दक्षिण में नियत किया और उसके हाथ एक खास सुन-हरी कटार खानखानांके वास्ते भी भेजा।

केशव मारू।

११ (अगहन सुदी ४) शनिवारको ४। कोसका कूच होकर गांव जलोतमें और दूसरे दिन पांच कोस पर मदलोरमें डेरे हुए। बाद-शाह लिखता है—"यह परगना मेरे पिताके समयसे केशवदास मारूकी जागीरमें है और उसके वतनके समान होगया है उसने बाग और भवन बनाये हैं। उनमेंसे एक बावली जो रास्ते पर है बहुत सुन्दर और सजीली बनी है। मेरी समझमें अगर कहीं कोई बावली रास्ते पर बनाई जावे तो चाहिये कि इसी ढङ्गकी बनावे पर इससे दूनी हो।"

हाथीको गर्म्म पानी।

जबसे नूरबख्त हाथी आया था खासोआम दौलतखानेमें बांधा जाता था। हाथी जाडेमें भी पानीसे प्रसन्न होता है इसलिये जहां कहीं नदी तालाब नहीं मिलता तो नूरबख्त मशकमेंसे पानी लेकर अपने शरीर पर डालता। जाड़ेमें पानी ठण्डा होता है इसलिये बादशाहने अपने मनमें ठण्डका बिचार करके गुनगुना पानी उसकी सूंडमें डलवाया। और दिनों तो ठण्डे पानीसे कांपने लगता था अब जो गर्म्म पानी मिला तो स्वस्थ और प्रसन्न हुआ। बादशाह लिखता है—"यह मेरीही उपजाई हुई बात है।"

सबलगढ़।

१४ (अगहन सुदी ७) मङ्गलवारको ६ कोस चलकर सबलगढ़में और ८ बुधको सही नदीसे उतरकर रायगढ़में डेरे हुए यह भी ६ कोसका पड़ाव था।

राजा पेमनारायण।

१६ (अगहन सुदी १०) गुरुवारको गढ़ेका राजा पेमनारायण जिसका एक हजारी मनसब था अपनी जागीरको बिदा हुआ।

राजा भरजीव।

बगलाणेके राजा भरजीवको बादशाहने चार हजारी मनसब

देकर विदा किया और यह हुक्म दिया कि जब अपने देशमें पहुंचे तो बड़े बेटेको दरगाहमें भेजदे कि वह हुजूरमें रहा करे।

धावला।

१७ (अगहन बदी ११) शुक्रवारको बादशाह पांच कोस चल कर गांव धावलेमें ठहरा।

बकरईद।

१८ (अगहन सुदी १२) शनिवारको बकरईद थी। बादशाह उसका कृत्य करके ३। कोस चला और गांव नागोरमें तालाबके तट पर उतरा।

गांव समरिया।

१९ (अगहन सुदी १३) रविवारको ५ कोस चलकर गांव समरियाके तालाब पर डेरे हुए।

दोहद।

२० (अगहन सुदी १४) सोमवारको ४। कोस पर परगने दोहद में पडाव हुआ। यह परगना गुजरात और मालवेका सिवाना है। जबसे बादशाहने बदनोर छोड़ा था सारे रास्तेमें जंगल और पहाड आये थे।

रेनाव।

११ (पौष बदी १) बुधवारको ५। कोस चलकर गांव रेनावमें मंजिल हुई। दूसरे दिन मुकाम हुआ।

जालोत।

२४ (पौष सुदी ३) शुक्रवारको अढाई कोस कूच हुआ गांव जालोतमें डेरा लगा। यहां करनाटकके बाजीगरोंने पहुंचकर बादशाहको अपने खेल दिखाये। एक बाजीगर ५॥ गज लम्बी और एक सेर दो दाम वजनकी जञ्जीरको मुंहमें रखकर धीरे धीरे पानी के घूटोंसे निगल गया। घडी भर तक पेटमें रखकर फिर बाहर लेआया।

नीमदह।

२६ (पौष बदी ५) रविवारको बादशाह पांच कोसका सफर करके गांव नीमदहमें ठहरा। सोमवारको भी पांचही कोस चला। और एक तालाबके निकट उतरा।

सहरा।

मंगलको पौने चार कोसकी ही यात्रा हुई। गांव सहराके पास एक सरोवरके किनारे तम्बू तने।

कुसुदिनी और कमला।

बादशाह लिखता है—कुसुदिनी तीन रंगकी होती है सफेद नीली और लाल। हमने सफेद और नीली तो देखी थी लाल नहीं देखी थी। इस तालमें लाल फूलोंकी खिली कुमुदिनी देखनेमें आई। बहुतही कोमल और मंजुल फूल थे। कमलका फूल कुमुदिनीसे बड़ा होता है। उसका चेहरा लाल होता है। मैंने काश्मीरमें सौ सौ पंखड़ियोंके भी कमल बहुत देखे हैं। यह बंधी हुई बात है कि कमल दिनको फूलता है और रातको बन्द हो जाता है। कुमुदिनी दिनको बन्द होजाती है और रातको खिलती है। भौंरा सदा इन फूलों पर बैठता है और इनके भीतर जो मिठास होता है उसके चूसनेके लिये इनकी नालियोंमें भी घुस जाता है। बहुधा ऐसा होता है कि कमल मुंद जाता है और भौंरा सारी रात उसीमें बैठा रहता है। इसी तरह कुमुदिनीमेंभी। उनके खिलने पर भौंरा निकलकर उड़ जाता है।

इसी वास्ते हिन्दुस्थानके कवीश्वरोंने बुलबलके समान उसको फूलका प्रेमी मानकर अपनी कवितामें उत्तम उक्तियोंसे उसका वर्णन किया है।

तानसेन कलावत मेरे बापकी सेवामें रहता था वह अपने समय में अद्वितीयही नहीं था बरञ्च किसी समयमें भी उसके तुल्य गवैया नहीं हुआ है। उसने अपने ध्रुपदमें नायिकाके मुखको सूर्यकी, उसके आंख खोलनेको कमलके खिलने और उसमेंसे भौंरेके उड़नेकी

उपमा दी है। दूसरी जगह कनखियोंसे देखनेको भौंरेके बैठनेसे कमलका हिलना कहा है।

अंजीर।

यहां अहमदाबादके अंजीर आये। बादशाह लिखता है कि बुरहानपुरके अंजीर भी मीठे और बडे होते हैं। परन्तु यह अंजीर उनसे कम दानेदार और अधिक मीठे हैं स्वादमें अच्छे हैं।

बुध और बृहस्पतिवारको भी वहीं पडाव रहा।

सरफराजखांकी भेट।

सरफराजखांने गुजरातसे आकर भेट दिखाई। उसमेंसे बादशाहने मोतियोंकी एक माला जो ११ हजार रुपयेमें खरीदी गई थी, दो हाथी, दो घोडे, ७ बैल, बहल और कई थान गुजराती कपडोंके अंगीकार किये। शेष पदार्थ उसीको लौटा दिये। यह तीन पीढ़ीका नौकर था।

रोहू मछली।

१ दे. (पौष बदी १०) शुक्रवारको बादशाह सवा चार कोस चलकर गांव भसोदके तालाब पर उतरा। यहां खिदमतिये प्यादों का सरदार राय मान रोहू मछली पकडकर लाया जो बादशाह को बहुत रुचिकर थी। बादशाह सब प्रकारकी हिन्दुस्थानी मछलियोंमें रोहूको उत्तम समझता है और इधर ११ महीनेसे बहुत खोजने परभी नहीं मिली थीं। इसलिये उसको देखकर अति प्रसन्न हुआ और राय मानको एक घोडा दिया।

अहमदाबाद गर्दाबाद।

बादशाह लिखता है कि दोहदका परगना गुजरातमें है यहां से सब वस्तुओंमें भिन्नता विदित होती है। जंगल और भूमि और तरहकी, मनुष्य भी पृथक प्रकृतिके तथा बोलियां औरही तौरकी है। बन जो इस मार्गमें देखे गये उनमें आम खिरनी और इमली आदि फलोंके वृक्ष थे। खेतोंकी रक्षा थूहरके झाडोंसे कीजाती है। किसानोंने खेतियोंके चारों ओर थूहरकी वाड़ लगाकर अपनी

जाता है। जहाज जोरमें नहीं आता। बन्दर गोगेमें ठहरता है जो खंभातके अन्तर्गत और समुद्रके निकट है। वहांसे माल गिरावों (नावों) में लादकर खंभातमें लाते हैं। और जब जहाजोंको भरते हैं तो उसी तरह यहांका माल लेजाकर उनमें डालते हैं। मेरे आनेसे पहले कई गिराब फरङ्गदेशके बन्दरोंसे खंभातमें आये थे और लौट जानेके विचारमें थे। १० (पौष सुदी ४) रविवारको उन्हें सजाकर मेरे देखनेके लिये लाये और आज्ञा लेकर अपने जानेके स्थानको गये। सोमवारको मैं भी गिराबमें बैठकर एक कोस तक पानी पर फिरा मङ्गलको शिकारके वास्ते जाकर चीतेसे दो हरन पकडवाये।"

१३ (पौष सुदी ७) बुधको नारङ्गसर तालावके देखनेको बाज़ार में होकर गया और ५०००) न्यौछावर किये।

स्वर्गवासी श्रीमान्‌के समयमें इस बन्दरके कर्मचारी कल्याणराय ने उनकी आज्ञासे इस नगरका पक्का कोट ईंट और चूनेका चुनवाया है और बहुतसे व्यापारी देशान्तरसे आकर यहां बसे हैं जो सुरम्य स्थान और सुन्दर हर्म्य बनाकर सुख सम्पत्ति भोगते हैं। 'बाजार छोटा तो है पर स्वच्छ और खूब बसा हुआ है।' गुजराती बादशाहोंके समयमें इस बन्दरकी जकातके बहुत रुपये थे। अब इस राज्यमें यह हुक्म है कि चालीसमें १) से अधिक न लें*। दूसरे बन्दरोंमें 'अशूर' के नामसे† १०) में १) और ८‡ में भी १) लेते हैं और नाना प्रकारका कष्ट व्यापारियों तथा यात्रियों को देते हैं। जद्दे में जो मक्केका बन्दर है ४)§ में १) लेते हैं, वरन इससे भी अधिक। इससे जान लेना चाहिये कि गुजरातके बन्दरों का तमगा‖ अगले हाकिमोंके समयमें कितना था। भगवत कृपासे मैंने अपने सब देशोंमें तमगा जो बहुत अधिक था छोड दिया है। मेरे राज्यसे तमगेका नामही उठ गया है।

---

* २।) सैकडा। † १०) सैकड़ा। ‡ १२॥) सैकडा।
§ २५) सैकडा। ‖ दरियाका महसूल।

चान्दी सोनेके टके ।

यहां बादशाहने चान्दी सोनेके टके चलाये। जिनका तोल मामूली रुपयों और मोहरोंसे दूना था। सोनेके टकेमें एक ओर जहांगीरशाही, सन १०२७ और दूसरी ओर जर्बखंभात सन १२ जिलूस खुदा था। चांदीके टकेमें एक तरफ जहांगीरशाही, सन १०२७ और उसके ऊपर गोलाकार एक पद्य खुदा था जिसका यह अर्थ था—

विजय प्रकाशक जहांगीरने चांदीके ऊपर यह छाप मारी।

और दूसरी तरफ बीचमें जर्बखंभात सन १२ जिलूस और उसके ऊपर गोलाईमें यह दूसरा पद्य था—

जबकि दक्षिण जीतकर मंडूसे गुजरातमें आया।

बादशाह लिखता है—"मेरे सिवा किसी समयमें भी टके पर सिक्का नहीं लगा था चांदी और सोनेका टका मेराही निकाला हुआ है।"

भेट।

१४ गुरुवार (पौष सुदी ८) को बन्दर खंभातके कर्मचारी अमानतखांकी भेट हुई। उसका मनसब कुछ बढकर डेढ़ हजारी जात और चारसौ सवारोंका होगया।

हाथीकी दौड़।

१५ शुक्रवार (पौष सुदी ९) को बादशाहने सवार होकर नूर-बख्त हाथीको घोडेके पीछे दौडाया। बहुत अच्छा दौडा। जब ठहराया तो झट खडा होगया। बादशाह लिखता है—मेरी यह सवारी तीसरी बार थी।

रामदास।

१६ शनिवार (पौष सुदी १०) को जयसिंहके बेटे रामदास *

* रामसिंह आमेरके राजा जयसिंहका बेटा था मगर वह तो सवत् १६९२ में पैदा हुआथा। यह रामदास राजा राजसिंहका बेटा होगा यहां गलतीसे राजसिंहकी जगह जयसिंह लिखा गया है ऐसा जाना जाता है।

का मनसब कुछ बढ़कर डेढ़ हजारी जात और सात सौ सवारोंका होगया।

खंभातसे प्रयाण।

बादशाह समुद्र और ज्वार भाटा देखनेको १० दिन खंभातमें रहा और वहांके रहने वाले व्यापारियों, कारीगरों और पालने योग्य प्रजाको खिलअत, घोडे, खर्च और जीविका देकर १९ (पौष सुदी १४) मङ्गलके दिन अहमदाबादको गया।

अरबी मछली।

बादशाह लिखता है—"उत्तम जातिकी मछली खम्भातमें अरबी नामकी है जिसको मछवे अनेक बार पकडकर मेरे वास्ते लाये। वह स्वाद भी बहुत होती है पर रोहूको नहीं पहुंचती।

बाजरेकी खिचडी।

गुजरातवालोंके निज भोजनोंमेंसे बाजरेकी खिचडी है जिसको लजीजा भी कहते हैं। बाजरा मोटा अनाज है। हिन्दुस्थानके सिवा दूसरी विलायतमें नहीं होता। हिन्दुस्थानके सब प्रान्तोंसे अधिक गुजरातमें होता है और सब अनाजोंसे सस्ता रहता है। बाजरेकी खिचडी मैंने कभी नहीं खाई थी अब हुक्म दिया तो पका कर लाये। वेस्वाद नहीं थी मुझे तो अच्छी लगी। मैंने कह दिया कि सूफियानाॱ दिनोंमें जबकि पशु संबंधी भोजन छोडे हुए हों और बिना मांसके खाना खाता हूं तब यह खिचडी विशेष करके लाया करें।"

बादशाह मङ्गलको ६। कोस चलकर कोसालेमें और बुधको परगने बावरेमें होकर समुद्रके किनारे उतरा। यह मंजिल भी ६ कोसकी थी। गुरुवारको वहीं रहकर प्यालेकी सभा सजाई

ॱ मुसलमानोंके भक्त सूफी कहलाते हैं वह जब कोई अनुष्ठान करते है तो मांस क्या घी, दूध और दही तक नहीं खाते हैं इसको भी एक प्रकारकी पशुहिंसा समझते है।

और बहुतसी मछलियां शिकार कीं और सब सभासदोंको बांटो गई।

रास्तेमें दीवार।

शुक्रवारको चार कोसका कूच और गांव बाडीचेमें मुकाम हुआ रास्तेमें बादशाहने कई जगह दीवारें देखीं जो दो दो गज तक ऊंची थीं। पूछा तो मालूम हुआ कि यह दीवारें लोगोंने पुण्यार्थ बनाई हैं कि जो कोई बोझ लेजाने वाला थक जावे तो अपना बोझ इन पर रखकर सुस्ता ले और फिर बिना किसीके सहारेही उठाकर अपना रस्ता ले। यह बात बादशाहको बहुत पसन्द आई। उसने हुक्म दिया कि सब बड़े बड़े शहरोंमें इसी प्रकार दीवारें बादशाही व्ययसे बनवा दें।

कांकरिया ताल।

२३ (माघ बदी ३) शनिवारको पौने पांच कोस चलकर कांकरियाताल पर डेरा हुआ जो अहमदाबादके बसानेवाले सुलतान अहमदके पोते कुतुबुद्दीनका बनाया हुआ है। उसका घाट पत्थर और चूनेसे पक्का बंधा है। तालके बीचमें छोटासा बागीचा और एक भवन है। तालके किनारेसे वहांतक जानेके लिये पुल बना है। बहुत वर्षोंसे यह स्थान टूट फूट गया था और कोई ठौर बादशाहके रहनेके योग्य नहीं रही थी इसलिये गुजरातके बख्शी सफोखांने सरकारसे जीर्णोद्धार करके बागीचा भी सजवा दिया था और एक नया झरोखा भी ताल और बागीचेके ऊपर झुका दिया था। वह बादशाहको बहुत पसन्द आया।

पुलके पासही निजामुद्दीनने जो अकबर बादशाहके राज्यमें कुछ समय तक यहां बख्शो रहा था एक बाग लगाया था।

अबदुल्लहखांको दण्ड।

बादशाहसे अर्ज हुई कि निजामुद्दीनके बेटे आबिदसे और अबदुल्लहखांसे बिगाड है। इससे अबदुल्लहने इस बागके पेड़ कटवा डाले हैं। यह भी सुना गया कि जब अबदुल्लहखां यहांका हाकिम

था तो एक दिन शराबकी मजलिसमें एक गरीब आदमीको जो कुछ ठठोल भी था, बेसमझीसे हंसी की कोई बात कहने पर उसी जगह मरवा डाला था। इन दोनों बातोंके सुननेसे बादशाह ने कोप करके बख्शियोंको हुक्म दिया कि उसके १००० दुअस्पे और तिअस्पे सवारोंको इकअस्पे रखकर ७० लाख दाम जो बढ़े वह जागीरमेंसे काटलें।†

शाहआलमका मकबरा।

इसी जगह कुतुबआलमके बेटे शाहआलमका मकबरा भी है जिसको सुलतान महमूद बेगड़ेके पोते सुलतान मुजफ्फरके अमीर ताजखां नामीने एक लाख रुपये लगाकर बनाया था। शाहआलम सुलतान महमूदके समयमें सन ८८० (संवत् १५३२) में मरा था गुजरातियोंका उस पर बडा प्रेम था और वह कहते थे कि शाहआलम मुर्दोंको जिला दिया करता था। उसके बापने मना कर दिया था तोभी एक सेवकके मृतपुत्रको अपने पुत्रके प्राण देकर जिला दिया। उसका पुत्र उसी समय मर गया और सेवकका पुत्र जी उठा। बादशाह लिखता है—"मैंने यह बात उसके गद्दीनशीन सैयद महमूदसे पूछी थी। उसने कहा कि मैं अपने बाप दादोंसे ऐसाही सुनता आया हूं। आगे ईश्वर जाने। यह बात अकलसे दूर तो है पर लोगोंमें बहुत विख्यात है इसलिये अद्भुत समझकर लिखी गई।"

मुहूर्त्त।

बादशाहके अहमदाबादमें प्रवेश करनेका मुहूर्त्त सोमवारको था इस लिये रविवारको भी बादशाह कांकरिया तालही पर ठहरा रहा।

---

† हजार सवार दुअस्पा और तिअस्पाकी तनखाहके ७० लाख दाम अर्थात् पौने दो लाख रुपये होते थे वह जागीरमेंसे काटे गये एक सवारका १७५) सालाना और १४।/)४ पाई महीना हुआ।

कारेजके खरबूजे।

हिरातमें "कारेज" एक स्थान है जहांके खरबूजोंके बराबर सारे खुरासानमें कहीं अच्छे खरबूजे नहीं होते हैं। वहांके खरबूजे १४०० कोससे पांच महीनेमें आने पर भी तर ताजा आये। आये भी इतनी बहुतायतसे कि सब नौकरोंको दिये जासके।

बंगालका केला।

ऐसेही बंगालके केले भी एक हजार कोस चलकर ताजा पहुंचे। बादशाह लिखता है—यह फल बहुत कोमल होता है इससे मेरे निजके खाने लायक प्यादोंकी डाकसे हाथों हाथ पहुँचता है।

हाथीके दांत।

इसी दिन अमानतखांने दो हाथी दांत भेंट किये जो बहुत बडे थे। एक ३ गज ८ तसू लम्बा और १६ तसू मोटा था। तौलमें ३ मन २ सेर निकला।

अहमदाबादमें प्रवेश।

२५ (माघ बदी ५) चन्द्रवारको छः घडी दिन चढे पीछे बादशाह अपने सुन्दर और सुशील हाथी सूरत गज पर सवार होकर अहमदाबादमें दाखिल हुआ। लिखता है—"यह हाथी उस समय मस्त होरहा था तो भी उसके सरल स्वभावका विश्वास था। बहुत से स्त्री पुरुष, गलियों बाजारोंमें, छतों और दीवारों पर बैठे बाट देख रहे थे। अहमदाबादकी जैसी प्रशंसा सुनी थी वैसा न निकला। बाजार चौड़ा लम्बा है परन्तु दुकानें बाजारकी चौडाईके तुल्य नहीं है। सब घर लकडीके है, दुकानोंके खम्बे पतले और भद्दे हैं। बाजार और गलियोंमें धूल उडती है। मैं कांकरिया तालसे किले तक जिसको भद्र कहते हैं रुपये लुटाता हुआ गया। भद्रका अर्थ शुभ है। गुजराती बादशाहोंके भवन जो भद्रमें थे वह सब इन ५६[1] वर्षोंमें गिर गये हैं। वर्त्तमान मकान हमारे नौकरोंने बनाये हैं जो

[1] अर्थात् जबसे कि उनका राज्य नष्ट हुआ है।

इस देशमें शासन करनेको आते रहे हैं। अब जो मैं मडूसे अहमदाबादको चला तो मुकर्रबखांने पुराने स्थानोंको नये सिरसे ठीक किया और जरूरी नये मकान भी बनवाये जैसे झरोखा आमखास आदि।"

आज शाहजहांके तुलादानका शुभदिन था। मैंने नियमानुसार सुवर्ण और दूसरे पदार्थोंमें उसको तोला। उसे अबसे २७ वां वर्ष लगा है। आजही गुजरातका देश भी उसको जागीरमें दिया गया।

मांडूके किलेसे बन्दर खम्भात जिस रास्तेमें आया था १२४ कोस था २८ कूच और ३० मुकाम हुए थे खम्भातमें दस दिन रहा था – वहांसे अहमदाबाद २१ कोस था जो ५ कूच और दो मुकाम में काटे गये। इस तरह पर हम मांडूसे खम्भात होकर १४५ कोस २ महीने १५ दिनमें आये। सब मिलाकर ३३ कूच और ४२ मुकाम हुए।

जामा मसजिद।

२६ (माघ सुदी ८) मंगलको बादशाह जामा मसजिद देखनेको गया जो अहमदाबादके बाज़ारमें है। वहांके फकीरोंको पांच सौ रुपये दिये।

वह लिखता है—यह मसजिद सुलतान अहमदकी बनाई हुई है उसीने अहमदाबाद बसाया है। इसके तीन दरवाजे हैं और तीनोंके आगे बाजार हैं। जो दरवाजा पूर्वको है उसके सामने उक्त सुलतानका कबरस्तान है जिसमें वह, उसका बेटा मुहम्मद और पोता क़ुतुबुद्दीन सोये हुए हैं। मसजिदके चौककी लम्बाई कोठड़ियोंको छोड़कर १०३ और चौड़ाई ८९ गज है। फिर ४॥ गज चौड़े दालान हैं। चौकमें छिली हुई ईंटोंका फर्श है। दालानों के खम्बे लाल पत्थरके हैं और कोठड़ियोंके खम्बे ३५४ हैं। खम्बोंके ऊपर गुम्बद बने हैं। कोठड़ियोंकी लम्बाई ७५ गज है और चौड़ाई

३७ गज है। कोठड़ियोंका फर्श, महराब और मिम्बर, सरसर* पत्थरके हैं। आगेको दो मीनार तीनतीन खण्डके हैं उनके पाषाणों में वेलबूटे बड़ी कारीगरीके बने हैं। मिम्बरकी दहनी भुजामें कोठड़ीके कोनेसे मिली हुई एक बैठक छांट दी है जो खम्भोंके बीच पत्थरके तख्तोंसे ढकी हुई है और उसके गिर्द छत तक पत्थरका कटहरा लगा हुआ है। तात्पर्य्य यह है कि जब बादशाह जुमे या ईदकी नमाजके वास्ते आवे तो अपने सभासदों सहित उसपर जा कर नमाज पढ़े। उसको यहांवाले अपनी बोलीमें मलूकखाना (राजभवन) कहते हैं। भीड़से बचनेके लिये ऐसी युक्ति की गई है सच यह है कि यह बहुत बड़ी मसजिद है।

शेख वजीहकी खानकाह।

२७ (माघ सुदी १०) बुधवारको बादशाह शेख वजीहुद्दीनकी खानकाहको देखने गया, जो राजभवनके समीपही थी। उसके चौकमें उसकी कबर पर फातहा पढ़ा। यह खानकाह सादिक खांने जो अकबर बादशाहके बड़े अमीरोंमेंसे था बनवाई थी। शेख ३० वर्ष पहले मरा था। वह शेख मुहम्मदगौसके खलीफोंमें से था। शेखके बेटे तथा पोते अबदुल्लह और असदुल्लह भी मरचुके थे। असदुल्लहका भाई शेख हैदर दादाकी गद्दीपर था। बादशाह ने उसको पन्द्रहसौ रुपये मृत शेखका उर्स करनेको दिये जो उन्हीं दिनोंमें होनेवाला था और उतनेही रुपये वहांके फकीरोंको अपने हाथसे खैरात किये। पांच सौ रुपये शेख हैदरके भाई वजीहुद्दीन को दिये। ऐसेही उसके दूसरे सम्बन्धियोंको रुपये और भूमि दी। शेख हैदरसे कहा कि जिन फकीरों और गरीबोंको वह जानता हो हुजूरमें लाकर खर्च और जमीन दिलानेकी प्रार्थना करे।

रुस्तम वाड़ी।

२८ (माघ सुदी ११) गुरुवारको बादशाह रुस्तमवाड़ीमें गया। पन्द्रहसौ रुपये मार्गमें लुटाये। यह बाग बादशाहके भाई शाह

---

* मकरानेकी रंगतके श्वेत पाषाणको मरमर कहते हैं।

मुरादने अपने बेटे रुस्तमके नामसे बनाया था और गुरुवारका उत्सव वहीं करके कई निज सेवकोंको प्याले दिये।

दिनढले शेख सिकन्दरकी हवेलीके बागीचेमें गया जो रुस्तम बाग के पडोसमें था। उसमें अञ्जीर खूब पके हुए थे। बादशाह लिखता है कि अपने हाथसे मेवा तोडनेमें बडा मजा आता है। मैंने आज तक हाथसे अञ्जीर नहीं तोड़े थे और इस प्रसंगसे शेख सिकन्दरका मान बढ़ाना भी अभीष्ट था इसलिये सीधा चला गया। शेख सिकन्दर गुजराती है और सज्जनतासे शून्य नहीं है। गुजरातके बादशाहोंका वृत्तान्त* खूब जानता है। ८ वर्षसे मेरे बन्दोंमें नौकर है।

रुस्तमखांको रुस्तमबाडी।

बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थनासे रुस्तमबाडी उसके नौकर रुस्तमखांको देदी। वह अहमदाबादका हाकिम बनाया गया था।

ईडरका राजा कल्याण।

इसी दिन ईडरके राजा कल्याणने उपस्थित होकर एक हाथी और ८ घोडे भेट किये। बादशाहने हाथी उसीको बखश दिया। वह लिखता है—"यह गुजरातके सीमाप्रान्तका मोतबिर जमींदार है। इसका राज्य रानाके पहाड़ोंसे मिला हुआ है। गुजरातके बादशाह सदा उस पर चढाई करते रहे हैं। यद्यपि किसी किसीने कुछ अधीनताभी स्वीकार की और भेटभी भेजी पर आप कभी किसी के मिलनेको नहीं गया। जब स्वर्गवासी श्रीमानने गुजरात विजय की तो राना पर भी सेना भेजी थी। जब उसने अधीन होनेके सिवा अपना बचाव न देखा तो सेवा स्वीकार करके चौखट चूमने को आया। उस दिनसे अबतक सेवकोंमें शामिल है और जो कोई अहमदाबादके शासन पर नियत होता है और जब काम पड़ता है तो सेना सहित उपस्थित होजाता है।

---

* इसने मिरआत सिकन्दरी नामक एक अच्छी तवारीख गुजरात की बनाई है।

चन्द्रसेन ।

१ बहमन (माघ बदी ६) शनिवारको चन्द्रसेन[†]ने जो इस देश के मुख्य जमींदारोंमेंसे था चौखट चूमकर ६ घोडे भेट किये ।

राजा कल्याणको हाथी ।

२ (माघ बदी १०) रविवारको बादशाहने ईडरके राजा कल्याण और सय्यद मुस्तफा तथा मीरफाजिलको हाथी दिये ।

शेख अहमद खट्टूकी जियारत ।

३ (माघ बदी ११) चन्द्रवारको बादशाह बाज और जुर्रोंके शिकारको निकला । रास्तेमें पांचसौ रुपये न्यौछावर किये । उधर ही शेख अहमद खट्टूकी जियारत थी । बादशाहने वहां जाकर फातहा पढ़ा ।

यह शेख गांव खट्टू परगने नागोरमें पैदा हुआ । अहमदाबाद का बसानेवाला सुलतान अहमद इसका भक्त था । यहांके लोगोंकी इसमें बडी श्रद्धा है । शुक्रवारको रातको बहुतसे छोटे बड़े मनुष्य जियारत करने आते हैं ।

सुलतान अहमदका बेटा सुलतान मुहम्मद उसकी कबर पर एक बडा मठ बनाने लगा था जो उसके बेटे सुलतान कुतुबुद्दीनके समयमें पूरा हुआ । यहां दक्षिण दिशामें एक बडा पक्का तालाव उसीका बनाया हुआ है । गुजराती बादशाहोंकी कबरे इसी तालाव पर है जिनमें सुलतान महमूद बेगडा, उसका बेटा मुजफ्फर, मुजफ्फरका पोता महमूदशहीद जो गुजरातका अन्तिम बादशाह था सोये हुए है । महमूदकी मूंछें मोटी और मुडी हुई थीं जिससे उसको बेगडा कहते थे । इन कबरोंके पासही इनके सरदारोंकी भी कबरें है ।

बादशाह लिखता है—"शेखका मकबरा अति विशाल और विमल है ५ लाख रुपये इसमें लगे होंगे ।"

[†] यह हलवदका झाला राजा था ।

फतहबाड़ी।

जियारत करके बादशाह फतहबागमें गया। यह उस जगह पर है जहां खानखानाने नन्हूसे जो अपनेको सुलतान मुजफ्फर कहलाता था युद्ध करके जीत पाई थी। गुजरातवाले इसको फतहबाड़ी कहते हैं।

नन्हू।

एतमादखां गुजरातीने अकबर बादशाहसे कहा था कि यह नन्हू बहलवानका बेटा था। जब सुलतान महमूद तथा गुजरातके और किसी बादशाहकी सन्तान न रही थी तो हमने इसको सुलतान महमूदका बेटा बनाकर सिंहासन पर बिठा दिया क्योंकि वह समय ऐसाही था।

इस प्रसङ्गसे बादशाहने सविस्तर वृत्तान्त खानखानांके गुजरात विजय करनेका लिखा है परन्तु वह अकबरनामेमें लिखा जाचुका है इसलिये यहां अनावश्यक समझकर छोड दिया गया।

खानखानांने विजय प्राप्त होनेके पश्चात् साबरमती नदीके तट पर यह बाग १२० डोरी भूमिमें लगाया था। इसके आसपास पक्का कोट बना है। बादशाह लिखता है—"अति उत्तम विहारस्थान है दो लाख रुपये इसमें लगे होंगे। मुझको बहुत पसन्द आया। यह कहना चाहिये कि गुजरात भरमें कोई बाग इसके समान न होगा। मैंने यहां गुरुवारका उत्सव करके निज पारिषदोंको प्याले दिये और रातको वहीं रहकर शुक्रको पिछले दिन से शहरमें आया। १०००) रास्तेमें लुटाये।"

उस समय बागवानने प्रार्थना की कि कई चम्पाके झाड जो नदी पर बने हुए चबूतरेमें लगे थे मुकर्रबखांके नौकरने काट डाले हैं। बादशाहको यह बात बहुत बुरी लगी और स्वयं निर्णय करके साबित होने पर उसकी दो उङ्गलियां काटनेका हुक्म दिया जिससे दूसरोंको भय हो। बादशाह लिखता है—"मुकर्रबखां को खबर नहीं हुई होगी नहीं तो वह उसी समय दण्ड देदेता।"

११ (माघ वदी १२) मंगलके दिन कोतवाल एक चोरको पकड़ कर लाया जो पहले कईबार चोरियां करचुका था और प्रति चोरी में उसका एक एक अंग काटा गया था। पहली बार दहना हाथ दूसरी बार बाईं उङ्गली, तीसरी बार बायां कान और चौथी बार दोनों पावोंकी फीचें काटी गई थीं। तोभी उसने अपनी आदत नहीं छोड़ी थी। रातको एक घसियारेके घरमें घुसा था उसने जागकर पकड़ लिया पर इसने उसे छुरियोंसे मार डाला। इस पर बड़ा कोलाहल हुआ और घसियारेके भाईबन्दोंने आ पकड़ा। बादशाह ने उन्हींको सौंपकर दण्ड देनेकी आज्ञा देदी।

१२ (माघ वदी १३) बुधको बादशाहने तीन हजार रुपये अजमतखां और मोतकिदखांको दिये कि अलग अलग शेख खट्टूकी कबर पर जाकर वहांके मुजावरों और गरीबोंको बांटदें।

१३ (माघ वदी ४) गुरुवारको बादशाहने शाहजहांके डेरे पर जाकर गुरुवारका उत्सव किया और मुख्य मुख्य सेवकोंको प्याले दिये। शाहजहां सुन्दर मथन हाथीको मांगा करता था जिसे अकबर बादशाह बहुत प्यार करता था और जो घोडेके साथ खूब दौडता था। अब बादशाह वह हाथी सोनेके गहनों, सांकलों और एक हथनी सहित उसको देआया।

खुर्दा।

इन दिनोंमें समाचार मिला कि मुअज्जमखांके बेटे मुकर्रमखां उड़ीसाके सूबेदारने खुर्दाकी विलायत जीत ली और वहांका राजा भागकर राजमहेन्द्रीमें चला गया। बादशाहने मुकर्रमखांका मनसब बढाकर तीन हजारी और दो हजार सवारोंका कर दिया। घोडा सिरोपाव और नक्कारा भी बखशा। बादशाह लिखता है कि उड़ीसा और गोलकुंडेके बीचमें दो जमींदारोंकी आड थी एक खुर्देका दूसरा राजमहेन्द्रीका। सो खुर्दा तो बादशाही बन्दोंके अधीन होगया है अब दूसरेकी बारी है।

कुतुबुलमुल्ककी अर्जी।

इन्हीं दिनोंमें कुतुबुलमुल्ककी अर्जी शाहजहांके नाम पहुंची। जिसमें लिखा था कि अब मेरा राज्य बादशाही सीमाके निकटवर्त्ती होगया है और मैं बादशाही बन्दा हूं इसलिये मुकर्रमखांको, मेरे राज्यमें हस्तक्षेप न करनेका हुक्म होजावे।

बादशाह लिखता है कि यह दृष्टान्त उसी मुकर्रमखांके बल वीर्य्यका है कि जिससे कुतुबुलमुल्क जैसा पड़ोसी घबड़ा गया।

हलवदका चन्द्रसेन।

हलवदके जमींदार चन्द्रसेनको घोडा सिरोपाव और हाथी मिला।

मुजफ्फर।

ठट्ठेके अगले बादशाह मिरजा बाकीतरखांका बेटा मुजफ्फर जो मिरजा बाकीके मरने पर उस राज्य पर मिरजा जानीका अधिकार होजानेसे अपने नाना कच्छके राव भाराके पास रहा करता था बादशाहका पधारना सुनकर सेवामें उपस्थित हुआ। अमीर तैमूरके समयसे उसके पूर्वज अधीन रहते आये थे। इसलिये बादशाहने उसका पालन करना उचित समझकर खर्चके वास्ते दो हजार रुपये खिलअत सहित दिये।

फतहबागके अञ्जीर।

(माघ सुदी १४) गुरुवारको बादशाह फतहबागमें गुलाबकी बहार देखनेको गया जो एक क्यारीमें खूब फूला हुआ था। बादशाह लिखता है कि "गुलाब इस मुल्कमें कम होता है अञ्जीर भी पके हुए थे कई अपने हाथसे तोड़े। उनमेंसे एक बड़ा था वह तोलमें ७॥ तोलेका हुआ।"

कारिजके खरबूजे।

इसी दिन खाने आजमके भेजे कारिजके १५०० खरबूजे बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने १००० तो उन सेवकोंको दिये जो सेवामें उपस्थित थे और ५०० अन्तःपुरमें भेजे।

बादशाह चार दिन भोग विलासमें व्यतीत करके २४ (फागुन

वदी ३) चन्द्रवारको रात्रिको नगरमें आया और कारिजके कुछ खरबूजे अहमदाबादके बडे बूढोंको दिये। वह उनको खाकर अचम्भेमें रह गये कि दुनियामें ऐसी न्यामत भी होती है। क्योंकि बादशाहके कथनानुसार गुजरातमें खरबूजे बहुत खराब होते हैं।

गुजरातके अंगूर।

२७ (फागुन वदी ६) गुरुवारको बकीना नामक बागीचेमें बादशाहने प्यालेकी मजलिस जोडी, और निजसेवकोंको प्याले भर भर कर दिये। यह बागीचा राजभवनमें ही किसी गुजराती बादशाहका लगाया हुआ था और इस समय एक क्यारीमें पके हुए दाख देखकर बादशाहने कह दिया कि जिन बन्दोंने प्याले पिये हैं वह अपने हाथसे तोड तोडकर दाखोंका भी स्वाद लें।

अहमदाबादसे मालवेको लौटना।

१ असफन्दार (फागुन वदी ८) चन्द्रवारको अहमदाबादसे मालवे को कूच हुआ। बादशाह रुपये लुटाता हुआ कांकरिया ताल तक गया जहां डेरे लगे थे। वहां तीन दिन तक रहा।

मुकर्रबखांकी भेट।

४ (फागुन वदी १२) बृहस्पतिवारको मुकर्रबखांकी भेट हुई। बादशाह लिखता है कि कोई उत्तम पदार्थ न था जिसके लेनेकी रुचि मनमें होती। उसने इसी संकोचसे यह भेट अपने बेटोंको दी थी कि अन्तःपुरमें पहुंचा दें। मैंने एक लाख रुपयेके रत्न और रत्नजडित आभूषण लेकर शेष उसीको फेर दिये। कच्छी घोडोंमेंसे १०० लिये परन्तु कोई घोडा ऐसा न था कि जिसकी प्रशंसा की जावे।

रुस्तमखांको झंडा और नक्कारा।

५ असफन्दार शुक्रवार (फागुन सुदी १३) को ५ कोस चलकर अहमदाबादकी नदी पर डेरे हुए। बादशाहने रुस्तमखांको शाह-जहांकी प्रार्थनाके अनुसार जो उसने उसे गुजरातकी सूबेदारी पर छोड़ते समय की थी झण्डा नक्कारा सिरोपाव और जड़ाऊ खञ्जर

इनायत किया। रुस्तमखां शाहजहांके मुख्य सेवकोंमेंसे था। बादशाह लिखता है कि इस राज्यमें यह प्रथा नहीं थी कि शाह-जादोंके सेवकोंको झण्डा और नक्कारा दिया जावे। मेरे पिताकी मुझ पर बहुत क्रपा थी तो भी उन्होंने मेरे अनुचरोंके वास्ते कभी पदवी नक्कारे और झण्डे देनेकी चेष्टा नहीं की। परन्तु मुझे शाह-जहांसे इतना अधिक स्नेह है कि मैं लेशमात्र भी कभी उसकी मनोकामना पूर्ण करनेसे विमख नहीं रहता हूं। वास्तवमें वह मेरा सपूत बेटा है और सम्पूर्ण क्रपाओंका पात्र है। युवावस्था और राजलक्ष्मी प्राप्त होनेके पीछे जिधर उसने चढ़ाई की है उधर मेरी इच्छाके अनुसार लड़ाई जीती है।

इसी दिन मुकर्रबखांको घर जानेकी आज्ञा हुई।

बादशाहने क़ुतुबआलमकी क़बर पर जाकर वहांके मुजावरोंको पांच सौ रुपये दिये।

६ असफन्दार शनिवार (फागुन बदी १४ तथा अमावस) को बादशाहने महमूदाबादकी नदीमें नाव पर जाकर मछलीका शिकार किया।

सैयद मुबारकका मकबरा।

इसी नदीके तट पर सैयद मुबारकका मकबरा उसके बेटे सैयद मीरांने दो लाख रुपयेसे अधिक लगाकर बहुत पक्का और ऊंचा बनाया था। बादशाह उसके विषयमें लिखता है कि गुजराती बादशाहोंके मकबरे जो देखे गये तो उनमें कोई इसका दशमांश भी नहीं है अथच वह देशाधिपति थे और यह नौकर था। श्रद्धा और साहस परमेश्वरका दिया हुआ होता है। सहस्रों धन्यवाद हैं ऐसे पुत्रको जिसने अपने पिताका ऐसा मकबरा बनाया है।

मछलीमें मछली।

रविवार (फागुन सुदी १) को भी वहीं डेरे रहे। चारसौ मछ-लियां शिकार हुईं। एक बिना छिलके की थी जिसे संगमाही कहते हैं। बादशाहने उसका पेट बहुत बड़ा देखकर चिरवाया

तो उसमेंसे एक छिलकेदार मछली निकली जो तुरन्त निगली हुई थी। संगमाही तौलमें ६॥ सेरकी और दूसरी २ सेरकी हुई।

गुजरातकी वर्षा।

८ सोमवार (फागुन सुदी २) को बादशाह डेढ़ पाव चार कोस चलकर गांव मोदेके पास ठहरा। लोग गुजरातकी बरसातकी बहुत तारीफ करते थे पिछली रातसे दोपहर दिन तक कुछ मेह बरसा—धूल बैठ गई और बादशाहने यहांकी वर्षा भी देख ली।

मंगलवारको ५॥ कोस कूच होकर जरीसरा गांवके पास डेरे लगे। यहां मानसिंह सेवड़ाके मरनेका समाचार मिला।

मानसिंह सेवडा।

बादशाह लिखता है कि सेवड़े हिन्दू नास्तिकोंमेंसे हैं जो सदैव नंगे सिर और नंगे पांव रहते हैं। उनमें कोई तो सिर और डाढ़ी मूछके बाल उखाड़ते हैं और कोई मुंडाते है। सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनते। उनके धर्मका मूलमन्त्र यह है कि किसी जीवको दुःख न दिया जावे। बनिये लोग इनको अपना गुरु मानते हैं दण्डवत करते हैं और पूजते हैं। इन सेवड़ोंके दो पन्थ हैं। एक तपा दूसरा करतल (खरतर)। मानसिंह करतलवालों का सरदार था और बालचन्द तपाका। दोनों सदा स्वर्गवासी श्रीमानकी सेवामें रहते थे। जब श्रीमानके स्वर्गारोहण पर खुसरो भागा और मैं उसके पीछे दौड़ा तो उस समय बीकानेरका जमीं-दार रायसिंह भुरटिया जो उक्त श्रीमानके प्रतापसे अमीरोंके पदको पहुंचा था मानसिंहसे मेरे राज्यकी अवधि और दिन दशा पूछता है और वह कलजीभा जो अपनेको ज्योतिषविद्या और मोहन मारण वशीकरणादिमें निपुण कहा करता था उससे कहता है कि इसके राज्यकी अवधि दो वर्षकी है। वह तुच्छ जीव उसकी बात का विश्वास करके बिना छुट्टीही अपने देशको चला गया। फिर जब पवित्र परमात्मा प्रभुने मुझे निज भक्तको अपनी दयासे सुशोभित किया और मैं विजयी होकर राजधानी आगरेमें उपस्थित हुआ तो

लज्जित होकर सिर नीचा किये हुए दरबारमें आया। शेष वृत्तान्त उसका अपनी जगह पर लिखा जाचुका है। और मानसिंह उन्हीं तीन चार महीनेमें कोढ़ी होगया। उसके अंग प्रत्यङ्ग गिरने लगे वह अबतक अपना जीवन बीकानेरमें ऐसी दुर्दशासे व्यतीत कर रहा था कि जिससे मृत्यु कई अंशोंमें उत्तम थी। इन दिनों में जो मुझको उसकी याद आई तो उसके बुलानेका हुक्म दिया उसको दरगाहमें लाते थे पर वह डरके मारे रास्तेमेंही जहर खाकर नरकगामी होगया।

अब मुझ भगवद्भक्तकी इच्छा न्याय और नीतिमें लीन हो तो जो कोई मेरा बुरा चेतेगा वह अपनी इच्छाके अनुसारही फल पावेगा।

सेवड़े हिन्दुस्थानके बहुधा नगरोंमें रहते हैं। गुजरात देशमें व्यापार और लेनदेनका आधार बनियों पर है इस लिये सेवड़े यहां अधिकतर हैं।

मन्दिरोंके सिवा इनके रहने और तपस्या करनेके लिये स्थान बने हुए हैं जो वास्तवमें दुराचारके आगार हैं। बनिये अपनी स्त्रियों और बेटियोंको सेवडोंके पास भेजते हैं लज्जा और शील-वृत्ति बिलकुल नहीं है। नाना प्रकारकी अनीति और निर्लज्जता इनसे होती है। इस लिये मैंने सेवड़ोंके निकालनेका हुक्म देदिया है और सब जगह आज्ञापत्र भेजे गये हैं कि जहां कहीं सेवड़ा हो मेरे राज्यमेंसे निकाल दिया जावे।

कच्छी घोड़ा।

१० बुधवार (फागुन सुदी ४) को दिलावरखांके बेटेने अपने बापकी जागीर पट्टनसे आकर एक सुन्दर कच्छी घोड़ा भेट किया। बादशाह लिखता है कि जबसे मैं गुजरातसे आया हूं ऐसा अच्छा घोड़ा कोई मनुष्य भेटमें नहीं लाया था एक हजार रुपयेका था।

सेवकों पर कृपा।

११ गुरुवार (फागुन सुदी ५) को उसी तालाबके तट पर प्यालों की मजलिस जुड़ी। बादशाहने शुजाअतखां, सफीखां आदि कई

सेवकोंको जो इस सूबेके कामों पर नियत थे घोड़े सिरोपाव और नक्कारा देकर बिदा किया। कईके मनसब भी बढ़ाये गये।

कुतुबुलमुल्कके वकीलको जो उसको भेट लेकर आया था तीस हजार दरब मिले।

अनार और बिही।

इसी दिन शाहजहांने बिही और अनार जो फराह[1]से उसके वास्ते लाये गये थे भेट किये। बादशाह लिखता है कि अबतक इतने बडे अनार नहीं देखे थे बिही तो तौलमें २९ तोला ९ माशा और अनार ४०॥ तोलेके हुए।

शेखोंको उपहार।

१६ सोमवार (फागुन सुदी ९) को बादशाहने गुजरातके शेखों को जो पहुंचाने आये थे फिर सिरोपाव खर्च और भूमि देकर बिदा किया और हरेकको एक एक धर्मपुस्तक भी निज पुस्तकालयसे दी जिनकी पीठ पर अपने गुजरातमें आने और पुस्तक देनेकी मिती लिखदी।

बादशाह लिखता है—"इस समय जबतक अहमदाबाद मेरी सवारीके उतरनेसे शोभायमान रहा दिन रात मेरा यही काम था कि सुपात्रोंको अपनी आंखोंसे देखकर धन और पृथिवी प्रदान करूं। शेख अहमद सदर (दानाध्यक्ष) और दूसरे कई मिजाजदां सेवक नियत कर दिये गये थे कि फकीरों और हकदारोंको मेरी सेवामें लाते रहें। तोभी शेख मुहम्मदगौसके बेटों, शेख वजीहुद्दीनके पोते और दूसरे मशायख को भी हुक्म देदिया था कि उनके जाननेमें जहां कहीं कोई हकदार हो उसको खिदमतमें हाजिर करें। ऐसेही महलमें कई स्त्रियां इसी काम पर लगाई हुई थीं कि दीन और दरिद्री अबलाओंको मेरे पास लाया करें। क्योंकि यह उद्देश्य संपूर्ण रूपसे था कि जब बहुत वर्षोंके पीछे मुझ जैसा बादशाह इस देशके गरीबोंके भाग्यसे

[1] खुरासानका एक नगर।

कूचका राजा।

२६ शुक्रवार (चैत्र बदी ५) को ५॥ कोस पर गांव जालोदमें डेरे हुए। बादशाहने कूचनरेशके चचा लक्ष्मीनारायणको जिसे अब गुजरातका मुल्क दिया गया था घोड़ा दिया।

लंगूरका बच्चा और बकरी।

२८ रविवार (चैत्र बदी ७) को बादशाह पांच कोस चलकर कसबे दोहदमें ठहरा जो गुजरात और मालवेकी सीमा पर है। यहां पहलवान बहाउद्दीन बरकन्दाजने एक लंगूरका बच्चा बकरीके साथ लाकर प्रार्थना की कि रास्तेमें मेरे एक निर्दयी तोपचीने किसी वृक्ष पर लंगूरनीको गोदमें बच्चा लिये देखकर बन्दूक मारी। लंगूरनी गोली लगतेही बच्चेको एक डाली पर छोड़कर गिर पड़ी और मर गई। मैं उस बच्चेको उतारकर इस बकरीके पास लेगया। परमेश्वरने बकरीके दिलमें दया उपजाई वह उसको चाटने लगी और विभिन्न जाति होने पर भी इसको लंगूरके बच्चेसे ऐसा मोह होगया है कि जैसे पेटका बच्चा हो।

बादशाह लिखता है—"मैंने बच्चेको बकरीसे अलग कराया तो वह व्याकुल होकर चिल्लाने लगी। उधर बच्चा भी बहुत घबराया। लंगूरके बच्चेका मोह तो जो दूध पीनेसे है उतना अधिक विस्मय-जनक नहीं है जितना बकरीका मोह लंगूरके बच्चेके साथ होनेसे होता है और इसी आश्चर्यसे यह बात लिखी गई है।"

२९ सोम और ३० मंगल (चैत्र बदी ८ और ९) को भी वहीं डेरे रहे।

इति प्रथम भाग समाप्त।

बादशाहकी आज्ञा।

"मैंने आज्ञा की कि इस बारह वर्षके वृत्तान्तका एक ग्रन्थ बनाकर कई प्रतियां तैयार करें जिन्हें मैं निज सेवकोंको दूं और समग्र देशोंमें भेजूं और राजवर्गीय तथा विद्वान लोग इसको अपने कामोंका पथदर्शक बनावें।"

चौथा वर्ष (संवत् १६६५—६६)

१०४ जलाल मसऊद और उसकी माकी विचित्र मृत्यु।

१०५ मानसिंहको इराकी घोड़ा देना।

१०६ जहांगीरकुलीकी मृत्यु, करनाटकके वाजीगर, देवनक पशु, फरंगी परदा, नजीबुन्निसा बेगमकी मृत्यु।

१०७ रूमका कृत्रिम दूत ; बादशाहका विवाह ; महाबतखांका राणा पर भेजा जाना।

१०८ बुरहानपुरके आम ; संगीयशमका प्याला ; संग्रामका देश फिर एक सालके लिये बिहारके सूबेदारको इनाममें दिया जाना ; महाबतखांका राणाके ऊपर बिदा होना और साथी अमीरोंके नाम।

१०६ खानखानांका आना ; बङ्गालेके दीवानका हाथी भेजना ; आसफखांकी भेट ; दलपतके कसूर बखशे जाना ; खानखानांके बेटोंकी नजर।

११० तुलादान ; दूध देनेवाली हरनी ; राजा मानसिंहका आमेर जाना ; खुसरोकी बेटोको ३ वर्ष पीछे देखना, खानखानां की प्रतिज्ञा दक्षिण जीतनेकी ; पेशरोखां और लालखां कलावतका मरना ; ख्वाजासरा बनानेकी मनाही।

११२ खानखानांको घोड़े हाथी देना, किशनसिंहका राणाकी लड़ाईमें जखमी होना ; मिरजा गाजीको कन्दहार जाने का हुक्म होना।

११३ अकबर बादशाहका रौजा (कबरस्थान) १५ लाखमें तय्यार होना ; हकीमअलीके अद्भुत हौजमें जाना ; खानखानांका दक्षिणको कूच करना।

११४ गुजरातका सूबा आजमखांको देना ; खुसरोके बेटे बलन्द-अखतरका पैदा होना ; अमीर तैमूरकी तसवीर।

चौथा नौरोज।

पांचवां वर्ष (संवत् १६६६—६७)

११५ हकीम अलीका मरना; बरखुरदारको खानआलमका खिताब; ३३॥ सेरका एक तरबूज; सौमतुलादान; परवेजका दक्षिण भेजना।

११६ राणाकी लड़ाई पर अबदुल्लहखांका भेजा जाना; दूध देने वाला बकरा; सूरको हुकूमत; राजा मानसिंहके वास्ते तलवार भेजना; दक्षिण पर लशकर भेजना।

११७ राणाकी लड़ाईमें उदयपुरके लशकरकी सहायता; परवेज और खुर्रमको लाल तथा मोती देना; राजा जगन्नाथको ५ और जयसिंहको ४ हजारी मनसब; शहरयारका गुजरातसे आना; परवेजका दक्षिण जाना; राणाका बिकट घाटियोंसे लड़कर निकल भागना।

११८ परवेजको खानदेश बरार और आसेरका किला दिया जाना; भांग गांजेका निषेध; वृश्चिक संक्रान्तिका दान; दक्षिण पर नई सेना; खुर्रमकी सगाई।

११९ दक्षिणके युद्धको फिर एक फौज; नक्कारा देनेका प्रबन्ध; चन्द्रग्रहण; रामचन्द्र बुन्देला; दक्षिणसे मुल्ला हयातीका खानखानांकी भेट लेकर आना।

१२० खानजहांको भी दक्षिणमें नौकरी बोली जाना; मेवाड़में जो फौज थी उसमेंसे राजा बरसिंहदेव वगैरहको दक्षिण जानेका हुक्म होना।

१२१ शिकारमें नीलगायके भड़ककर भाग जाने पर एक जलोदर (अरदली) को मरवाना और कहारोंके पांव कटवाना।

पांचवां नौरोज।

नौरोजका दरबार; अमीरोंकी भेट।

१२२ सारंगदेवका दक्षिण भेजना; परगने बाड़ीसे शिकार खेल कर रूपवासमें आना।

छठा वर्ष (संवत् १६६७—६८)

सातवां वर्ष (संवत् १६६८)

छठा नौरोज।

आठवां वर्ष (संवत् १६६८—६९)

सातवां नौरोज।

१५५ खानखानांका फिर दक्षिणमें भेजा जाना।

१५६ श्यामसिंह और धर्म्माङ्गद भदोरियेके मनसब बढ़ना; आसफ खां वजीर और मिरजा गाजीका मरना; रूप खवासको खवासखांकी पदवी और सरकार कन्नौजकी फौजदारी पाना; खुर्रमका दूसरा विवाह।

१५७ अबदुर्रज्जाक वखशीका सूबे ठट्ठाकी रक्षा पर नियत होना और इसातरखांका मनसब बढाना; फसद खुलवाना; किशनदासको राजाकी पदवी; ताजखांकी पदवृद्धि।

१५८ शुजाअतखांकी विचित्र मृत्यु; बंगालेके १६० हाथी, कमाऊंके राजा टिकचन्दको बिदा; अबुलफतह दक्षिणीका बीजापुरसे आना।

१५९ मिरजा रुस्तम सफवीको सूबे ठट्ठेकी हुकूमत मिलना; राय दलपदका मिरजा रुस्तमके साथ नियत होना; अबुलफतह को नागपुरमें जागीर मिलना; तुलादान; उसमान पठान के भाईबन्दोंका बंगालेमें आना।

१६० मोतमिदखांकी भेट; राय मनोहर और बरसिंहदेवके मनसब बढ़ना; भारत बुन्देला और अमीरुलउमराकी मृत्यु; जफरखांकी बिहारकी सूबेदारी; शिकार; सलीमासुलतान की मृत्यु।

१६१ काबुल; राजा रामदासकी भेट; दक्षिणका हाल; खान-आजमकी राणा पर जानेका हुक्म।

नवां वर्ष (संवत् १६६९—७०)

१६२ बादशाह आगरेमें; शिकारकी संख्या।

आठवां नौरोज।

१६३ नौरोजका उत्सव; मोतमिदखांको एक नये मकानमें रहने में कष्ट होना; मकानके शुभाशुभ देखनेका नियम।

१६४ मग जातिके लोगोंका हाल जो पेगूसे आये थे; बादशाहका खुर्रमके घर जाना; मेख संक्रान्तिका उत्सव; मोमयाईकी आंच।

ग्यारहवां वर्ष (सं० १६७१—७२)

ग्यारहवां वर्ष (सं० १६७१—७२)

दसवां नौरोज।

मंडूमें नये भवनका हुक्म ; अमीरोंकी भेट।

१९७ सूर्य्यग्रहण और भेट।

१९८ दाराशिकोहका जन्म ; ईरानका दूत ; कांगड़े पर सेना।

१९९ मेख संक्रान्तिका उत्सव।

२०० खुर्रमकी भेट ; कुंवर करणकी बिदाका मुहूर्त।

२०१ खानआजमका दरबारमें आना ; राजा सूरजसिंहका अनोखा हाथी ; बखतरखांकी बिदा।

२०२ खुर्रम और राजा सूरजसिंहके मनसब बढ़ना ; कुंवर करण को घोडे वगैरह।

२०३ राजा सूरजको दस हजार रुपयेका हाथी देना ; करमसेन का मनसब बढ़ना ; गोयनदास और राजा किशनसिंहका मारा जाना।

२०४ राजा सूरजसिंहका दक्षिण और कुंवर करणका उदयपुर बिदा होना ; शाह ईरानका अपने बेटेको मारना।

२०६ खानखानांकी भेट, राजा रोजअफजूंका मुसलमान होना और अपने बाप राजा संग्रामका राज्य पाना ; कुंवर करण के बेटे जगतसिंहका आना।

२०७ राजा नथमलका मनसब बढना ; केशव मारूका उडीसेसे आना ; खानजहां लोदीकी भेट ; बादशाहका ख्वाजाजीकी दरगाहमें दान।

२०८ राजा महासिंह ; केशवमारू, मिरजा राजा भावसिंह ; गिरधर ; नूरजहानी मोहर ; शबेरातकी दीपमालिका ; आदिलखांकी भेट।

२०९ ईरानके दूतकी बिदा ; दक्षिण पर सेना ; सरबुलन्दराय और राजा किशनसिंहके मनसब बढना।

२१० राजा सूरजसिंह और गजसिंहका देशसे आना ; बीजापुरके वकीलका बिदा होना ; रामदास कछवाहा ; राजा मान, राजा सूरजसिंह।

तेरहवां वर्ष (संवत् १६७३—७४)

२६६ रामदासको राजतिलक और राजाकी पदवी ; बिहारकी खानोंके निकले हुए हीरे ; दक्षिणमें सफलता ; मांडोके महलोंको देखना।

२६७ राणा अमरसिंहकी हाथी ; शिकार ; अतिवृष्टि।

२६८ मांडोंकी हरियाली और फुलवार , एतमादुद्दौलाको हाथी; बादशाहके पहननेके कपडे।

२६९ महाबतखांसे सवारोंकी तनखाह काटनेका हुक्म ; उत्सव और दीपमालिका।

२७० गुरुवार और बुधवारके शुभाशुभ नाम , महासिंहके बेटे जयसिंहका आना , नीलकुण्डकी शोभा।

२७१ केलेकी मिठाई ; पत्र पहुंचानेवाले कबूतर , आदिलखांको पुत्रकी पदवी।

२७२ आसिफखांके डेरे पर जाना , राजा पेमनारायणको मनसब ; राजासूरजमलकी प्रतिज्ञा कांगड़ा फतह करादेनेकी।

२७३ रोशनआरा बेगमका पैदा होना . जैतपुरके जमींदार पर चढाई , जयसिंहके मनसब ; भोज भदेरिया , राजा कल्याण का उड़ीसेसे आना।

२७४ राजा जयसिंह , केशवमारू ; अहदाद पठान; राजा कल्याण जैतपुरपर चढाई , नर्मदाको जाना ; राजा कल्याणकी भेट।

२७५ जैतपुरमें जीत ; मोखा बन्दरके अनार ; रूहुल्लहका जैतपुर में मारा जाना।

२७६ हरभान जमींदार चन्द्रकोटा ; सूरजमलका कांगडे जाना ; सुलतान खुर्रमका दक्षिणसे कूच।

२७७ सुलतान खुर्रमका दक्षिण विजय करके आना ; उसकी और उसके अमीरोंकी बढिया भेंटे।

२७९ बगलाणेके भरजीप्रतापका आना, नूरजहांका उत्सव करना।

२८० महाबतखांका ठट्ठेसे काबुलमे बदल जाना , हाथियोंकी भेट सौन केले ; गुजरातके आम।

चौदहवां वर्ष (संवत् १६७४—७५)

॥ श्री: ॥

सूचीपत्र ।

(दूसरे भागका)

पृष्ठ — आशय

चौदहवें वर्षका शेष भाग ।

तेरहवां नौरोज ।

पन्द्रहवां वर्ष (सं० १६७५—७६)

३८८ अबलकदांतकी मूठ ; उस्ताद काल्याणकी पदवी ; अलहदाद की हार।

३८९ राजा सूरजसिंहका मरना और राजसिंहका राज्य पाना ; राव मालदेवके बखान जो एक लडाईमें राणा सांगासे जीत गया था ; आसफखांके घर जाना ; आगरेसे बंगाले और लाहोर तक मीनारे।

३९० दसहरा ; मोतमिदखांकी भेट ; कशमीरकी कूच , बंगशके सेव।

३९१ अकबर बादशाहके रौजेपर भेट, ईरानके एलचीको बिदा ; इसलामखांका बादशाह पर सदके होना।

३९२ मथुरा ; वृन्दावन ; आसेर ; जदरूप सन्यासीसे मिलना।

३९३ शेरका शिकार ; जदरूपसे फिर मिलना और बिदा होना।

३९४ परवेजकी बिदा ; खुसरोको छोडना ; शनकार पची ; सेर की तोल।

३९५ राजा भावसिंह ; दिल्लीमें पहुंचना ; हुमायूंके मकबरेमें भेट करना ; चीतेके घायल किये हुए हरनोंका बावले होकर मरना।

३९६ शाह परवेजके बड़े बेटेका मरना , आगा मांको दिल्लीमें छोडना ; राजा किशनदास और मिरजावालोके सनसब बढना।

३९७ शेख अबदुलहक ग्रन्थकार पर कृपा।

सोलहवां वर्ष (संवत् १६७६—७७)

३९८ मुकर्रबखांका बाग , शाहजादे उम्मेदबख्शका पैदा होना , शिकार।

३९९ अकबरपुरमें नावोंसे उतरना ; सरहिन्दका बाग ; शाहजहां के घर जाना।

४०० जङ्गके वच्चे ; व्यास नदी पर डेरे ; विक्रमाजीतका कांगडेसे आना , लाहोर पहुंचना ; राजा विक्रमाजीतको विदा .

४४० पपीहा ; औरंगजेबका दूत ; रावत सगरके बेटे मानसिंहका मनसब बढ़ना ; काबरे दांत ; पहाड़में हार ; सूरजमलका मरना ।

४४१ भटनदीके तटपर दीपमालिका ; तुलादान ; आसफखांके घर ; मुर्गाबी ।

४४२ कश्मीरके पशुपक्षियोंके नाम ; शफतालू ; वेरनाग और किश्तवारमें हानि ।

४४३ काकापुर ; पंचहजारा ; खानदौरांकी मृत्यु ; अनचका झरना ।

४४४ अछोलका झरना ; वेरनाग और वहांके बाग ।

४४५ लोकाभवन ; अन्धनाग ; मच्छीभवन ।

४४६ श्रीनगर ; जम्मूका जमींदार संग्राम ; दशहरा , बादशाह को खांसीका रोग ; पतझड़की शोभा ; मिरजा रहमान-दादकी मृत्यु ।

४४७ कश्मीरसे कूच ; केसरके खेत ; भाव ।

४४८ कलगीके पर ; शिकारी जानवर ; ईरानका दूत ; महल और मकान ; कमलपुरका जलाशय ।

४४९ बाडी घरारी घाटी ; पौशाना ; बीरमकला ; रास्तेके दो जमींदार ।

४५० शेख इब्नअमीनका मरना ; घोलीका फर्क ; राजोरमें जीती स्त्रियां मुर्दोंके साथ गाडी जाती थीं उनके विषयमें निषेध ।

४५१ विषैला पानी ; नौशहरा वगैरह रास्तेके गांव ; सारंगदेवका मनसब बढना ।

४५२ जहांगीराबाद ; मोमिनका बाग ।

सतरहवां वर्ष (सं० १६७७—७८)

४५३ बादशाह लाहोरमें ; कांगडेकी फतहका वृत्तान्त ।

४५४ खुर्रमके नये भवन ; कांगडेके कर्मचारी; चन्द्रग्रहण ; ईरान का दूत ।

४५६ आगरेकी पेशखीमा ; ईरानकी सौगात ; राजा रूपचन्द गुलेरीको इनाम ; शहरयारकी सगाई ; एतमादुद्दौलाकी जियाफत ।

४५७ दक्षिणमें दंगा और बादशाही फौजकी हार ।

४५८ खुर्रमकी फिर दक्षिण पर चढ़ाई ।

४५९ आगरेकी कूच , राणा करणके बेटे जगतसिंहका आना, राजा टोडरमलका तालाब ; हृदयनारायण हाडा ; कमाऊं के राजा लक्ष्मीचन्दकी भेट ; जगतसिंहका दक्षिणको बिदा होना ; मुलतानकी सूबेदारी ; भवालको तोपखानेकी मुशरफी और राय पदवी ; सोमतुला ; कन्दहारकी सूबेदारी ।

४६० नूरसराय ; कांगडेमें कासिमखां और जम्मूका राजा संग्राम; सरहिन्द ; मुस्तफाबाद ।

४६१ दिल्ली पहुंचना ; पालम ; जुलकरनैन अरमनी ; सलीमगढ ।

४६२ दिल्लीकी हुकूमत ; एक प्राचीन लाल ; हुमायूँ बादशाहके मकबरेमें जाना ; अमीर तैमूरके मुजावरों वगैरहके लिये रुपये भेजना ।

४६३ वृन्दावन; नूरअफशांबाग; आगरेमें प्रवेश; ईरानकी सौगात ।

४६४ साल भरकी खैरात ।

सोलहवां नौरोज ।

नौरोजका उत्सव ; बाकरखांकी सेनाकी हाजिरी ।

४६५ बिहारकी सूबेदारी ; अजदुद्दौलाको पेन्शन ; ईरानके वकीलोंकी भेट ; आसफखांके घर जाना ; विचित्र गोरखर ।

४६६ मेख संक्रान्ति ; दो सौ तोलेकी मुहर ; श्रीनगरका राजा श्यामसिंह ; यूसुफखांकी अद्भुत मृत्यु ।

४६७ शहरयारका विवाह ; शाह शुजाकी बीमारी और जोतकराय ज्योतिषीको इनाम ।

४६८ हुरमज और होशंग ; बिजलीके लोहेके हथियार ।

४६९ सारंगदेवका शाहपरवेजकी अरजी लाना ; दक्षिणमें विजय,

इमामकुलीकी मा ; जंगका बच्चा ; खुर्रमको अर्जी ।

४७१ बादशाहकी बखशिशें ; ऊदाराम दक्षिणी ; दिल्लीकी सूबे-दारी ; गजरत्न हाथी ।

४७२ रूपरत्न घोडा ; किश्तवार ; उड़ीसा ; काजीनसीर ; अमीरोंके इजाफे ; कन्दहार ।

४७३ जम्बील बेगको बखशिश ; इनसाफ ; आसफखांके घरजाना; कल्याणलुहारका बादशाहके कहनेसे छतसे कूदकर मरना ।

४७४ बादशाहको दमकी बीमारी और हकीमोंकी शिकायत ।

४७५ सौरपचीय तुलादान और नूरजहांका उत्सव करना ।

४७६ जोतकरायको रुपयों और मोहरोंमें तोलना ; भेट ; बादशाहका बोझ ; शाह परवेजका आना ।

४७७ खुर्रमको २० लाख रुपये भेजना ; नूरजहां बेगमकी माका मरना ।

४७८ अबदुल्लहखांको बिना छुट्टी आनेका दण्ड ; हकीमको बिदा, उत्तरकी यात्रा ; अवधकी सूबेदारी ।

अठारहां वर्ष (संवत् १६७८—७९)

४७९ शाह परवेजका-बिहारको जाना ; बादशाह दिल्लीमें ; जादूरायके लिये नारायणदास राठौड़के हाथ खिलअत भेजना ; बादशाह हरिद्वारमें ।

४८० राजा भावसिंहका देहान्त ; आलूतवा ।

४८१ उकाबका मांस ; सरहिन्द ; इलाहावास ; व्यास नदी ; बलवाडेका जमींदार बासू ; फूलपकार पची ।

४८२ मुर्ग जरींन ; चन्द्र तुलादान ; एतमादुद्दौलाकी मृत्यु ।

४८३ कांगड़ेको कूच ; चम्बेके राजाकी भेट ।

४८४ कांगडेके किलेमें प्रवेश ; कांगड़ेकी कथा ; भवन ।

४८५ मदारकी पहाडी ; कांगडेसे कूच ।

४८६ नूरपुर ; जंगली मुर्ग ; राजा वासूका ; धमरीका नाम नूरपुर रखना ; एक मौनीको शराब पिलाना ।

४८७ एतेमादुद्दौलाका लश्कर नूरजहांको दिया जाना ; खुसरो का मरना ; राजा किशनदासका मनसब बढना।

सतरहवां नौरोज।

४८८ शाह ईरानका विचार कन्दहार लेनेका ; बादशाह हसन अबदालमें ; ख़्वाजा अबुलहसनके लशकरकी हाजिरी , शिकार।

४८९ हकीम मोमिना ; महाबतखां काबुलको और एतबारखां आगरेकी सूबेदारी-पर ; बादशाह काश्मीरमें ; फौजदारीके करकी माफी ; अमीरोंके मनसब बढना।

४९० शाह ईरानका कन्दहारका लेलेना ; ईरान पर चढ़ाईकी तैयारी।

४९१ कश्मीरके फकीरोंके वास्ते गांव ; किश्तवारके जमींदारोंका बदल जाना ; खुर्रमकी अरजीसे नाराजी , कन्दहारके वास्ते लश्करको तैयारी ; किश्तवार।

४९२ ज्योतिष और रमलका चमत्कार ; जोतकराय सादिकखां और रम्माल स्त्रीको इनाम ; दक्षिणीसेना ; खुर्रमके कौतुक।

४९३ खुर्रमका दक्षिणसे आकर मंडूमें ठहरना ; राजा बरसिंहदेवको बुलाना, प्रणभंग और फिर बन्दूकसे शिकार खेलना।

४९४ कश्मीरसे कूच ; शहरयारको कन्दहार जानेका हुक्म ; कीमती मोती, फसद ; सौरतुलादान, गङ्गाजलकी परीक्षा।

४९५ हीरापुर ; कुंवरसिंह किश्तवारका राजा , हैदर मलिक ; भंवर ; खुर्रम।

४९६ बादशाह लाहोरमें।

उन्नीसवां वर्ष (संवत् १६७९—८०)

४९७ शाह ईरानके वकीलोंका आना ; राजा बरसिंहदेवके लाने को सारंगदेवका आना ; ईरानके एलचियोंकी विदा ; ईरानके बादशाहका पत्र।

४९९ पत्रोत्तर।

५०१ कन्दहार; आगरेके खजाने; शाह परवेज।

५०२ मोतमिदखांके लिये मसविदे; खुर्रमकी कृपात्रता; चन्द्र-
तुलादान; खुर्रमका मंडूसे कूच करना।

५०३ बादशाहका कूच खुर्रम पर; राजा बरसिंहदेवका आना,
खुर्रमका बेदौलत कहलाना।

५०४ खलील वगैरहका पकड़ा जाना।

५०५ राजा रोजअफजूं, खानखानांका नमकहराम होना।

५०६ लुधियाने पहुंचना, राजा भारत बुन्देला; राजा सारंगदेव,
आसफखां; फौजोंका जमा होना।

५०७ यमुना पर डेरे।

अठारहवां नौरोज।

५०८ खुर्रम मथुरामें, राजा जयसिंहका राजी होना, बेदौलतका
आना।

५०९ लड़ाईका आरम्भ, सुन्दर ब्राह्मणका आगे बढ़ना।

५१० बेदौलतकी हार और सुन्दरका मारा जाना।

५११ अमीरोंके मनसब बढ़ना, सरबुलन्दरायका हाजिर होना।

४१२ बागी अमीरोंका हाजिर होजाना, मीर अजदुद्दौलाका
क्रोध, राजा जयसिंह, अमीरोंको खिताब।

५१३ मनसूर फरंगी, परवेजका आना, बेदौलतका लौटते हुए
आमेरको लुटवाना, शाह परवेजका ४० हजारी होना।

५१४ राजा जगतसिंहका पंजाबमें जाकर फतूर करना, सादिक-
खांका उस पर जाना, मिरजा बदीउज्जमांका मारा जाना,
राजा गजसिंहका आना, बेदौलत पर परवेज।

५१५ महावतखां वगैरह परवेजके साथ जानेवाले अमीरोंको
खिलअत, बंगाल और उड़ीसेकी सूबेदारी, बादशाह अज-
मेरमें।

५१६ राजा गजसिंहका ५ हजारी होना, बादशाहकी मा मरयम

४० डूबी वस्तुका मिलना।

४१ नर और मादा तीतरकी पहचान; पक्षियोंकी शारीरिक दशा; मछलियोंकी जातियां।

उन्नीसवां नौरोज।

४२ सवारीके समय काने कोढ़ी नकटे और कनकटे आदमियों के सामने आनेका निषेध; वेदौलत पर परवेज; खानजहां आगरेमें; परवेजका विवाह।

४३ जादूराय और ऊदारामका बुरहानपुरके किलेसे वेदौलतके हाथी लेकर परवेजके पास आना; दक्षिणियोंकी ताबेदारी; आदिलखांका ५००० सवार भेजना स्वीकार करना; परवेजका दक्षिणसे कूच।

४४ आदिलखांका बरताव; सांपके मुंहमें सांप; वेदौलतका उड़ीसे पहुंचना और उसका हुक्म इब्राहीमखां सूबेदार बंगालेके नाम।

४५ यहां तक मोतमिदखांका लिखा है आगे मुहम्मद हादीने लिखकर किताब पूरी की है।

४६ इब्राहीमखांका जवाब; शाहजहां वर्दवान और अकबरनगर में, इब्राहीमखांका ढाकेमें अधीन होजाना; शाहजहांका दाराबखांको बंगालेकी हुकूमत देकर आगे बढना।

४८ शाहजहां बिहारमें; राणाके बेटे भीमका पटनेमें अमल करना, शाहजहांका राजा भीम और अबदुल्लहखांको इलाहाबाद पर भेजना; दक्षिणका हाल।

५१ बादशाह कश्मीरमें; अबदुलअजीजखांका शाह ईरानको कन्दहार सौंपनेके कुसूरमें माराजाना, आरामबानू बेगमका मरना; उजबकोंका काबुलकी सरहदमें आकर लड़ना; हारना।

५२ दक्षिणका हाल; खानखानांका जो परवेजके पास आगया था कैद किया जाना और उसके गुलाम फहीमका मारा

जाना ; शाहजहां और परवेजकी लड़ाई ; राजा भीमके काम आने पर शाहजहांका दक्षिणको लौटना।

५५७ महाबतखांको खानखानांका खिताब और ७ हजारी मनसब ; दक्षिणका हाल , मलिक अम्बरका कुतुबुल्मुल्क और आदिलखांको दबाना ; सरबुलन्दरायका आदिलखांको मदद करना ; आदिलखांकी हार ; बादशाही अमीरोंका लौट आना ; ऊदाजीराम और जादूरायका भाग जाना , अम्बरका अहमदनगरके किलेको घेरना।

५६० बलखसे नजर मुहम्मदखांका खत आने पर काबुलके सूबेदारको बदल देना ; दक्षिणका हाल सुनकर कशमीरसे लौटना ; परवेज बिहारमें और शाहजहां दक्षिणमें।

इक्कीसवां वर्ष (संवत् १६८१—८२)

५६१ शाहजहांका दाराबखांको बंगालेमें छोड़ना ; दाराबखांका खानजादखां बंगालेमें परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म ; आगरेकी सूबेदारी ; दक्षिणकी हकीकत सरबुलन्दरायका इरादा दक्षिणियोंसे लडनेका।

५६२ कशमीरको कूच ; शाहजहां दक्षिणमें ; सरबुलन्दरायका मुकाबिला ; शाहजहांका बालाघाटको लौट जाना।

५६३ खानआजमका मरना।

५६४ खानजहां गुजरातकी सूबेदारी पर।

बीसवां नौरोज।

बादशाह भंवरमें ; आसफखांका बेटा लाहोरकी हुकूमत पर , बादशाह नूराबादमें; मंजिल दरमंजिल मकान बनानेका हुक्म।

५६५ सुन्दर झरने और फूल ; कशमीर पहुंचना ; केसरके गुणोंकी परीक्षा ; कांगड़ेमें अनीराय।

बाईसवां वर्ष (संवत् १६८२—८३)

५६६ सरदारखां और मुस्तफाखांका मरना ; शाहजहांका टवन्त गांवमें पहुंचना ; दक्षिणियोंका बुरहानपुर घेरना और उठ

जाना ; सरबुलन्दरायको ५ हजारी मनसब और रायराज का खिताब ; शाहजहांका माफी मांगना ; अपने बेटोंको और १० लाख रुपयोंकी भेट बापकी सेवामें भेजना।

५६७ सुलतान होशंग और खानखानांका बादशाहके पास आना, महाबतखांको बंगाले जानेका हुक्म।

तेईसवां वर्ष (संवत् १६८३—८४)

५६८ कशमीरसे कूच, हुमा पचीकी जांच।

५७० बादशाह लाहोरमें, ईरानका एलची, शेर और बकरीकी मुहब्बत, दक्षिणका दीवान, महाबतखांसे तकरार।

५७१ महाबतखांका बंगालेजाना, तहमुर्स और होशंगका विवाह, मोतमिदखांका बखशी होना, बादशाहका काबुल जाना, अहदादका सिर।

५७२ बादशाहकी बड़ी माकी मृत्यु, खानखानां पर मेहरबानी, महाबतखां पर कोप।

इक्कीसवां नौरोज।

५७३ महाबतखांका आना।

५७४ महाबतखांके राजपूतोंका भटनदीपर बादशाहको घेरलेना।

५७६ महाबतखांका बादशाहको अपने डेरे पर लेआना।

५७७ नूरजहां बेगमका लड़नेको आना।

५८० बलखका एलची, आसफखांका कैद होजाना।

५८१ काफिरोंका हाल।

५८२ जगतसिंहका भागना, बादशाहका काबुलमें पहुंचना, बाबर बादशाह मिरजा हिन्दाल और मिरजामुहम्मद हकीमकी कबरों पर जाना, महाबतखांके राजपूतोंकी हार।

५८३ अम्बर हबशीका मरना—अबदुर्रहीम खानखानाका लाहोर मे आना।

५८४ दाराशिकोह और औरंगजेबका आना, शिकारके वास्ते रस्सा, शाहजहाका ठट्टे जाना, महाराजा भीमके बेटे कृष्ण-सिंहका अजमेरमें मर जाना।

जाना ; शाहजहां और परवेजकी लडाई ; राजा भीमके काम आने पर शाहजहांका दक्षिणको लौटना।

५५७ महाबतखांको खानखानांका खिताब और ७ हजारी मनसब ; दक्षिणका हाल, मलिक अम्बरका कुतुबुल्मुल्क और आदिलखांको दबाना ; सरबुलन्दरायका आदिलखांके मदद करना ; आदिलखांकी हार ; बादशाही अमीरोंका लौट आना ; ऊदाजीराम और जादूरायका भाग जाना अम्बरका अहमदनगरके किलेको घेरना।

५६० बलखसे नजर मुहम्मदखांका खत आने पर काबुलके सूबेदारको बदल देना ; दक्षिणका हाल सुनकर कश्मीरसे लौटना ; परवेज बिहारमें और शाहजहां दक्षिणमें।

इक्कीसवां वर्ष (संवत् १६८१—८२)

५६१ शाहजहांका दाराबखांको बंगालेमें छोडना ; दाराबखांका खानजादखां बंगालेमें परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म ; आगरेकी सूबेदारी ; दक्षिणकी हकीकत सरबुलन्दरायका इरादा दक्षिणियोंसे लडनेका।

५६२ कश्मीरको कूच ; शाहजहां दक्षिणमें ; सरबुलन्दरायका मुकाबिला ; शाहजहांका बालाघाटको लौट जाना।

५६३ खानआजमका मरना।

५६४ खानजहां गुजरातकी सूबेदारी पर।

बीसवां नौरोज।

बादशाह भंवरमें ; आसफखांका बेटा लाहोरकी हुकूमत पर ; बादशाह नूराबादमें; मंजिल दरमंजिल मकान बनानेका हुक्म।

५६५ सुन्दर झरने और फूल ; कश्मीर पहुंचना ; केसरके गुणोंकी परीक्षा ; कांगडेमें अनीराय।

बाईसवां वर्ष (संवत् १६८२—८३)

५६६ सरदारखां और मुस्तफाखांका मरना ; शाहजहांका देवलगांवमें पहुंचना ; दक्षिणियोंका बुरहानपुर घेरना और उठ

जाना ; सरबुलन्दरायको ५ हजारी मनसब और रायराज का खिताब ; शाहजहांका माफी मांगना ; अपने बेटोंको और १० लाख रुपयोंकी भेट बापकी सेवामें भेजना।

५६७ सुलतान होशंग और खानखानांका बादशाहके पास आना, महाबतखांको बंगाले जानेका हुक्म।

तेईसवां वर्ष (संवत् १६८३—८४)

५६९ काश्मीरसे कूच, हुमा पचीकी जांच।

५७० बादशाह लाहोरमें, ईरानका एलची, शेर और बकरीकी मुहब्बत, दक्षिणका दीवान, महाबतखांसे तकरार।

५७१ महाबतखांका बंगालेजाना, तह्मुर्स और होशंगका विवाह, मोतमिदखांका बख्शी होना, बादशाहका काबुल जाना, अहदादका सिर।

५७२ बादशाहकी बडी माकी मृत्यु, खानखानां पर मेहरबानी, महाबतखां पर कोप।

इक्कीसवां नौरोज।

५७३ महाबतखांका आना।

५७४ महाबतखांके राजपूतोंका भटनदीपर बादशाहको घेरलेना।

५७६ महाबतखांका बादशाहको अपने डेरे पर लेआना।

५७७ नूरजहां बेगमका लड़नेको आना।

५८० बलखका एलची, आसफखांका कैद होजाना।

५८१ काफिरोंका हाल।

५८२ जगतसिंहका भागना, बादशाहका काबुलमें पहुंचना, बाबर बादशाह मिरजा हिन्दाल और मिरजामुहम्मद हकीमकी कबरों पर जाना, महाबतखांके राजपूतोंकी हार।

५८३ अम्बर हबशीका मरना—अबदुर्रहीम खानखानाका लाहोर में आना।

५८४ दाराशिकोह और औरंगजेबका आना, शिकारके वास्ते रस्सा, शाहजहांका ठट्ठे जाना, महाराजा भीमके बेटे कृष्ण-सिंहका अजमेरमें मर जाना।

५८५ काबुलसे कूच, परवेजकी बीमारी, दाराशिकोह और औरंगजेबका १० लाखकी भेट लेकर दादाकी सेवामें पहुंचना—सुलतान दानियालके बेटे बायसंकरका शाहजहांको छोड़ कर मारवाड़में आना।

५८६ महाबतखांका निकाला जाना।

५८८ भटसे उतरना, लाहोर पहुंचना, महाबतखांका खजाना जब्त होना।

५८९ खानखानां महाबतखां पर, मुकर्रबखांको बंगालेका सूबा, शाहजादे परवेजका मरना, बलखके वकीलोंकी बिदा।

५९० अबूतालिबको शाइस्ताखांका खिताब, दक्खिणियोंकी तावेदारी शाहजहांका ठट्ठेमें मुकाबिला।

५९१ शाहजहांका ईरान जाना मौकूफ रखकर दक्खिणको लौटना जुनेरमें आकर रहना, आसफखांका मनसब।

५९२ दक्खिणियोंका फसाद, मीर मोमिनको सजा, खानजहांका निजामुल्मुल्कको बालाघाटका मुल्क देदेना।

५९३ हमीदखां हबशी और उसकी मरदानी औरतका आदिलखां पर फतह पाना।

५९४ तूरानके वकीलका आना, मुकर्रमखांका डूबना, खानखाना का मरना और उसके बडे बडे काम।

५९५ बाधोंके राजा अमरसिंहका आना।

५९६ महाबतखांका शाहजहांके पास पहुंचना, खानजहांका सिपहसालार होना और उसका अबदुल्लहखांको कैद करना, बादशाहका कशमीर जाना।

बाईसवां नौरोज।

५९७ फिदाईखांको बंगालेकी अबूसईदको पटनेकी और बहादुर खांको इलाहाबादकी सूबेदारी, बादशाहकी बीमारी, शहरयारका बीमार होना।

चौबीसवां वर्ष (संवत् १६८४)

५९८ लाहोरको लौटना, जहांगीरकी मृत्यु, दावरबख्शको तख्त पर बिठाना।

मनसबदारोंकी सूची।

मुसलमान।

अ।

अब्बाखां काश्मीरी	१ हजारी ३०० सवार
अकबरकुली जलालका बेटा	१ हजारी १००
अकीदतखां	१२ सदी ३००
अजीजुल्लह यूसुफखांका बेटा	१ हजारी ५००
अबुल कासिम तिमकीन	१ हजारी
अबुलफतह हकीम	१ हजारी ३००
अबुलहसन सुलतान दानियालका दीवान	१॥ हजारी ५००
ख्वाजा अबुलहसन मीर बख्शी	५ हजारी ५,०००
अबूसईद, एतमादुद्दौलाका पोता	१ हजारी ५००
अबदुलकरीम मामूरखां	२ हजारी २०००
अबदुलखां कांगडेका फौजदार	२ हजारी ५००
अबदुलअजीजखां नक्शबन्दी हाकिम कन्दहार	३ हजारी २०००
अबदुर्रज्जाक मामूरी	१८ सदी ३००
अबदुर्रहीम खरयुजनाशी	२॥ हजारी १५००
मिरजा अबदुर्रहीमखां खानखानां सिपहसालार	७हजारी ७०००
अबदुर्रहीम अहदियोंका बख्शी	७ सदी २००
शेख अबदुर्रहमान फाजिलखां शेख अबुल-फजलका बेटा	२हजारी २०००
ख्वाजा अबदुललतीफ कोरबेगी	१ हजारी ४००
सैयद अबदुल वारिस	५ सदी ५००
अबदुल्लहखां फीरोजजङ्ग	५ हजारी २५००

अबदुल्लह खानआजमका बेटा	१ हजारी ३००
अबदुल्लह हकीम	५ सदी
अमानुल्लह महाबतखांका बेटा	२ हजारी ८००
अमानतखां मुतसद्दी, सूरत बन्दर	२ हजारी ४००
अमीरखां, इज्जतखांका भाई	१ हजारी १०००
अमीरुलउमरा शरीफखां	५ हजारी ५०००
अलिफखां कयामखानी	२ हजारी १५००
अलहदाद पठान	२॥ हजारी १२००
अलह्यार	१ हजारी ५००
अली, सैफखां बारहका बेटा	६ सदी ४००
हकीम अली	२ हजारी
अली, अकबर शाही	४ हजारी
अलीकुलीबेग दरमन	१॥ हजारी
अलीखां तातारी, खिताब नुसरतखां	२ हजारी ५००
सैयद, अली बारहा	२॥ हजारी १०००
ख्वाजा अलीबेग	४ हजारी
ख्वाजा अली मिरजा किलेदार अहमदनगर	५ हजारी ५०००
मुल्ला असद	२ हजारी २००
असदबेग खानदौरांका तीसरा बेटा	१ हजारी १ हजार
असदुल्लह मीर सैयद हाजी	५ सदी एक सौ
असालतखां खानजहांका बेटा	२ हजारी १ हजार
अहतमामखां मीरबहर	२ हजारी १५ सौ
अहमदबेगखां हाकिम कशमीर	२॥ हजारी
अहमदबेगखां, इब्राहीमखां फतहजंगकाभतीजा	२ हजारी ५००
अहमद बेग	२॥ हजारी १५००
अहसनुल्लह अबुलहसनका बेटा	१॥ हजारी ८००

आ ।

ख्वाजा, आकिल	१॥ हजारी ८५०

आकिलखां	१ हजारी ८००
आबिदखां दीवान सूबे दक्षिण	१ हजारी ४००
आबिद उजबक	१ हजारी १०००
आसफखां दीवान	५ हजारी ५०००
आसफखां एतमादुद्दौलाका बेटा	७ हजारी ७०००

इ।

इकरामखां इसलामखांका बेटा फौजदार मेवात	२ हजारी १५००
इनायतखां	२ हजारी
इफतिखारखां	२ हजारी
इब्राहीमखां बखशी दरीखाना	१॥ हजारी ६००
इब्राहीमखां फतहजंग सूबेदार उड़ीसा	४ हजारी ४०००
इब्राहीमखां बखशी सूबे दक्षिण	१ हजारी २००
इब्राहीमखां काशगरी	२ हजारी ९००
इरादतखां मीर सामान	२ हजारी १५००
इरादतखां आसफखांका भाई	१ हजारी ५००
इसकन्दर अमीन	३ सदी ५०
इसलामखां नाम शेख अलाउद्दीन, शेख सलीम चिश्तीका बेटा सूबेदार बंगाला	६ हजारी ५०००

ई।

ईवल बेग	१॥ हजारी
मिरजा ईसा	१॥ हजारी ८००
मिरजा ईसातरखां	१२ सदी ५००

ए।

एतकादखां सूबेदार कशमीर	४ हजारी ३०००
एतबारखां (मुमताजखां)	६ हजारी ५०००
एतमादुद्दौला गयास बेग	७ हजारी ७०००

क।

कजलबाशखां	१॥ हजारी १२००

कारमुल्लह अलीमरदानखां बहादुरखांकाबेटा	६ सदी ३००
कराखां तुर्कमान	२ हजारी
कामगार सरदारखांका बेटा	४ सदी ५००
कासिमखां इसलामखांका भाई	४ हजारी २०००
सैयद कासिम सैयद दिलावरखांका बेटा	८ सदी ४००
ख्वाजा कासिम	१४ सदी
मीरकासिमखां अहदियोंका बखशी	१हजारी ४००
किफायतखां दीवान गुजरात	१२ सदी ३००
किशवरखां शेख इब्राहीम, कुतुबुद्दीनखां कोका का बेटा	१ हजारी ३००
कुतुबुद्दीनखां कोका	५ हजारी ५०००
कुलीचखां सूबेदार काबुल	६ हजारी ५०००
कायमखां	१ हजारी १०००

ख।

खंजरखां अबदुल्लहखां फीरोजजङ्गका भाई किलेदार अहमदनगर	१ हजारी २००
खवासखां फौजदार कन्नौज	१ हजारी ३००
मीर खलीलुल्लह	१ हजारी २००
खलील मीर अबदुल्लहका बेटा	६ सदी २५०
खानआलम	५ हजारी ३०००
खानआजम	७ हजारी ७०००
खानजहां लोदी (नाम पीरखां फिर सलाबतखां)	६हजारी ६०००
खानजमां	
खानाजादखां (अमानुल्लह महाबतखांका बेटा)	५ हजारी ५०००
खानदौरां सूबेदार पटना	६ हजारी ५०००
खिदमतगारखां	५॥ सदी १३०
सुलतान खुर्रम शाहजहां	३० हजारी २००००
खुर्रम, खानआजमका बेटा हाकिमजूनागढ	२ हजारी १५०

खुसरोबेग उजबक (फौजदार सरकार मेवात) १ हजारी ८००
ख़ाजाजहां ५ हजारी ३०००
ख़ाजाबेग मफवी ५ हजारी ५०००
ख़ाजगी ताहिर ८ सदी ३००

ग।

गजनीनखां जालौरी २ हजारी ७००
गयासखां २ हजारी ८००
गाजीखां मिरजा जानीका बेटा ५ हजारी ५०००
गैरतखां या इज्जतखां ८ सदी ७००

च।

चीन कुलीचखां, कुलीचखांका बेटा सूबेदार भक्कर २ हजारी ८००

ज।

जफरखां सूबेदार बिहार ३॥ हजारी २५००
जबरदस्तखां मीरतुजुक १ हजारी ५००
जमालुद्दीन ५ हजारी ३५००
मीर जमालुद्दीन अंजू अजदुद्दौला १ हजारी ४००
मीर जमील वजीर २ हजारी
जहांगीरकुलीखां, शमसुद्दीन खानआजमका बड़ा बेटा, सूबेदार बिहार ५ हजारी ५०००
मीर जहीरुद्दीन १ हजारी ४००
जासूसखां २ हजारी २००
जाहिदखां (सादिकखां) १ हजारी
जाहिदखां १॥ हजारी ४००
सैयद जाहिद, शुजाअतखांका बेटा १ हजारी ४००
जाहिदखां १॥ हजारी ७००
मीर जियाउद्दीन कजवीनी १ हजारी
जुलफिकारखां १ हजारी ५००
जनुद्दीन ७ सदी ३००

त।

तख्तावेग	३ हजारी
तरबीयतखां	३॥ हजारी १५००
तरसून बहादुर	१२ सदी ४२०
ताजखां	३॥ हजारी २५००
तातारखां	२ हजारी ५००
तुगरल अबदुर्रहीम खानखानांका पोता	१ हजारी ५००
तुहमतनवेग, कासिम कोका का वेटा	५ सदी ३००

द।

दयानतखां	५ सदी २००
मिरजा दखिनी मिरजा रुस्तमका वेटा	५ सदी २००
दाराबखां, खानखानां अबदुर्रहीमका वेटा	५ हजारी ५०००
शाहजादा दावरबख्श सुलतान खुसरोका वेटा	८ हजारी ३०००
दिलावरखां पठान काकड	४ हजारी ३०००
सैयद दिलेरखां (अबदुल वहाब)	१ हजारी ८००
दौलतखां सूबेदार इलाहाबाद	१॥ हजारी
दोस्तवेग तोलकखांका वेटा	८ सदी ४००

न।

ख्वाजा नकी	१ हजारी १८०
नकीबखां	१॥ हजारी
नवाजिशखां	४ हजारी ३०००
नसरुल्लहखां	७ सदी ४००
नसरुल्लह फतहुल्लहका वेटा किलेदार आसेर	१॥ हजारी ४००
नसरुल्लह अरब	५ सदी ५२
नादअली	१॥ हजारी १०००
नानूखां	१॥ हजारी १२००
नाहरखां (शेरखां)	३ हजारी १५००
निजामुद्दीनखां	७ सदी ३००

निजाम ९ सदी ६५०
नूरुद्दीनअलीखां ३ हजारी ६००
नौबतखां (अलीखां करोड़ा) नौबतखानेका दारोगा २ हजारी १०००

प

परवरिशखां १ हजारी ५००
सुलतान परवेज ४० हजारी ३००००
पायंदाखां मुगल २ हजारी ४५०

फ

शेख फरीद बखशी ५ हजारी ५०००
शेख फरीद कुतुबखां कोकाका बेटा १ हजारी ४००
फरेदूं बरलास २॥ हजारी २०००
फाजिलखां २ हजारी ७५०
फिदाईखां ५ हजारी ५०००
फीरोजखां ख्वाजासरा ६ सदी १००

ब

बदीउज्जमा मिरजा शाहरुखका बेटा १॥ हजारी १०००
बहलोलखां १ हजारी ५००
सैयद बहवा २ हजारी १०००
बहादुरुलमुल्क ३ हजारी २३००
बहादुरखां ३ सदी ३००
बहादुरखां १॥ हजारी ८००
बहादुरखां (अबदुलनबी बेग उजबक हाकिम कंधार) ५ हजारी ४०००
बहादुर सैफखांका बेटा ४ सदी २००
बहादुर धनतूरी २ सदी १००
बाकरखां ३ हजारी १५००
बाकीखां २॥ हजारी २०००

ख्वाजा बाकीखां फौजदार बराड़	१॥ हजारी १०००
बाजबहादुर कलमाक	१ हजारी १०००
ख्वाजा बाबाखां	१ हजारी ५५०
शेख बायजीद शेख सलीमचिश्तीका पोता	३ हजारी
बायजीद बुखारी सूबेदार ठट्ठा	२ हजारी १५००
बिशोतन शेख अबुलफजलका पोता	७ सदी ३५०
बेजन नादअलीका बेटा	१ हजारी ५००
बैरम खानआजमका बेटा	२॥ हजारी

म

मकतूबखां कुतुबखानेका दारोगा	१॥ हजारी
मकसूद कासिमखांका भाई	५ सदी ३००
मकसूदखां	१ हजारी १३०
मनूचिहर खानखानांका पोता	३ हजारी २०००
मनसूरखां फिरङ्गी	३ हजारी २०००
मसऊदबेग बखशी गुजरात	३ सदी १५०
मसीहुज्जमां हकीम सदरा	५ सदी ३०
मह्रअली फरेदूं बरलासका बेटा	१ हजारी १०००
महाबतखां(१) खानखानां सिपहसालार नामजमानाबेग गैयूरबेग काबुलीका बेटा	७ हजारी ७०००
मोहतशिमखां शेख अबुलकासिम सूबेदार इलाहाबाद	५ हजारी
मालजू कुलीचखांका भतीजा	२ हजारी
मीरखा अबुलकासिम तमकीनका बेटा	१॥ हजारी ८००
मीरजुमला ईरानी	३ हजारी ३०००
मीरन	७ सदी ५००
मीरमीरां	२॥ हजारी १४००
मुकर्रबखां सूबेदार गुजरात	५ हजारी ५०००

---

(१) करनल टाडने इसको गलतीसे राजपूत लिखा है।

मुबारिमखां	३ हजारी २०००
मुखलिसखां	२ हजारी ७००
मुखलिसुल्लह	५ सदी २५०
मुजफ्फर वहादुरुल्मुल्कका वेटा	१ हजारी ५००
मुजफ्फरखां	२ हजारी १०००
हकीम मुजफ्फर	३ हजारी १०००
मुजफ्फर वजीरखांका बेटा	५ सदी ३००
मुबारकखां रुहतासका किलेदार	५ सदी २००
मुबारकखां	४ सदी २००
मुबारकखां शिर वानी	१ हजारी ५००
मुबारजखां	२ हजारी १७००
मुरतिजाखां	६ हजारी ५०००
मुरव्वतखां	२ हजारी ५००
मुलतफितखां मिरजा रुस्तमका बेटा	१॥ हजारी ३००
आका मुल्लाई, आसफखांका भाई	१ हजारी ३०००
मुस्तफाखां	२ हजारी २५०
मूनिसखां, मह्तरखांका बेटा किलेदार कालंजर	५ सदी १५०
मूसवीखां	१ हजारी ३००
शेख मूसा कासिमका जमाई	८ सदी ४००
मुअज्जुलमुल्क	१८ सदी
मुअज्जमखां	४ हजारी २०००
मोतकिदखां	२॥ हजारी २५०
मोतमिदखां बखशी	२ हजारी १५००
हकीम मोमिना	१ हजारी
मुहम्मद मुराद ख्वाजा मोहसिन	१ हजारी ५००
मुहम्मद कफी बखशी पंजाब	५ सदी ३००
मुहम्मद सईद, अहमदवेगका वेटा	१ हजारी ३००
मुहम्मद हुसैन ख्वाजाजहांका भाई	८ सदी ८००

मंगलीखां १॥ हजारी

य

याकूबखां, खानदौरांका दूसरा बेटा ८ सदी ४००
याकूबखां २ हजारी १५ सौ
सैयद याकूबखां कमालबुखारीका बेटा ८ सदी ५ सौ
यादगार कौरची ५ सदी ३ सौ
यारबेग अहमद कासिमका भतीजा ६ सदी अढ़ाईसौ
यूसुफ १ हजारी ५ सौ
यूसुफखां हुसैनखांका बेटा फौजदार गोंडवाणा २ हजारी १५ सौ

र

रणबाजखां शाहबाजखां कम्बूका बेटा ८ सदी ४ सौ
रजवीखां अबूसालह रजवी २ हजारी १ हजार
रहमानदाद, अबदुर्रहीम खानखानांका पोता १ हजारी ८ सौ
रुस्तमखां मिरजा रुस्तम ५ हजारी १५ सौ
रुस्तमखां ५ हजारी ४ हजार
रुस्तमजमां शुजाअतखां २॥ हजारी २५ सौ

व

वजीरखां २॥ हजारी २ हजार
वजीर जमील २ हजारी
वजीरुल्मुल्क १३ सदी ५॥ सौ
वफादारखां २ हजारी १२ सौ
मिरजावाली बादशाहकी फूफीका बेटा २॥ हजारी १ हजार

श

मीर शरीफ दीवान ब्यूतात १ हजारी
शरीफ आमिली २॥ हजारी
शरीफखां नूरुद्दीन किरावल ६ सदी १००
शरीफखां अमीरुलउमरा ५ हजारी ५ सौ
मीर शरफुद्दीन काशगरी १॥ हजारी १ हजार

शाहबाजखां लोदी फौजदार सरकार सारंगपुर २ हजारी २ हजार
शाहजादा शहरयार ८ हजारी ४ हजार
शादमाखां खानआजमका बेटा ७ सदी ५ सौ
शाहनवाजखां खानखानां अबदुर्रहीमखांकाबेटा ५ हजारी ३ हजार
शाहबेगखां सूबेदार कन्दहार ५ हजारी
शाह मुहम्मदखां खानदौरांका बेटा १ हजारी ६ सौ
शिरजाखां २॥ हजारी १२ सौ
मिरजा शाहरुख मिरजा सुलेमानका बेटा ७ हजारी ७ हजार
शुजाअतखां २॥ हजारी १५ सौ
शुजाअतखां अरब ३ हजारी २५ सौ
शेरखां पठान ३॥ हजारी

स

सआदतउमेद जैनखां कोकाका पोता ८ सदी ४ सौ
मीरान ; सदरजहां ५ हजारी ५ हजार
सदरजहां सुरतिजाखांका जमाई फौजदार सम्भल ७ सदी ६ सौ
सफदरखां डेढ हजारी ७ सौ
सफी अमानतखांका बेटा
सफीखां (सैफखां) ३ हजारी २ हजार
सरदारखां ३ हजारी पच्चीस सौ
सरफराजखां २ हजारी १४ सौ
सरबुलन्दखां बहलोल पठान २॥ हजारी २२ सौ
सरबराहखां ८ सदी २॥ सौ
सलासुलह अरब १॥ हजारी ११ सौ
सादातखां १ हजारी ६ सौ
सादिकखां मीरबखशी २ हजारी २ हजार
सादिकखां ४ सदी ४ सौ
सादुल्लहखां २ हजारी २ हजार
सिकन्दर जौहरी १ हजारी ३ सौ

१४—राजा चन्द्रसेन ; झाला , हलवद ।

१५—राजा जगतसिंह ; बापका नाम राजा बासू ; पठानिया(तुंवर) नूरपुर कांगड़ा ; १ हजारी ५ सौ ।

१६—राजा जगन्नाथ ; बापका नाम राजा भारमल ; कछवाहा ; आमेर (जयपुर) ; ५ हजारी ३ हजार ।

१७—राजा जगमाल ; बापका नाम राजा कृष्णसिंह ; राठौड़ ; कृष्णगढ़ ; ५ सदी २॥ सौ ।

१८—राजा जयसिंह ; बापका नाम राजा महासिंह ; काछवाहा ; आमेर (जयपुर) २ हजारी एक हजार ।

१९—राजा जूझारसिंह (जुगराज) ; बापका नाम वरसिंहदेव ; बुन्देला ; उर्छा बुन्देलखण्ड ; २ हजारी एक हजार ।

२०—राय दलपत ; बापका नाम रायसिंह ; राठौड़ ; बीकानेर ; २ हजारी १ हजार ।

२१—राय दुर्गा ; सीसोदिया ; रामपुरा ; ४ हजारी ।

२२—देवीचन्द ; गुलेर (पंजाब) ; डेढ़हजारी ५ सौ ।

२३—राजा धीरधर ।

२४—राजा नथमल ; मझौली (विहार) ; २ हजारी ११ सौ ।

२५—नथमल ; बापका नाम राजा कृष्णगढ़ ; राठौड़ , कृष्णगढ़ ; ५ सदी २३५ ।

२६—रायरायां पितरदास, राजा विक्रमाजीत दीवान ।

२७—राजा पेमनारायण ; गौड ; गढा (नागपुर) , १ हजारी ।

२८—पृथ्वीचन्द ; राय मनोहर ; काछवाहा शेखावत , शेखावाटी , ७ सदी ४५० ।

२९—राय वनमालीदास मुशरिफ फीलखाना ; ६ सदी १२० ।

३०—राजा वरसिंहदेव ; बुन्देला ; उर्छा ; ५ हजारी ५ हजार ।

३१ राजा बासू ; पठानिया ; पठानकोठ (पंजाब) ; ३॥ हजारी पांच सौ ।

३२—बिहारीचन्द कानूनगो आगरा ।

३३—बिहारीदास वाकयानवीस बुरहानपुर।

३४—बिहारीदास दीवान दक्षिण।

३५—भरजी (राजा) ; राठौड़ ; बगलाना ; ४ हजारी।

३६ राजा भारत ; राजा रामचन्द्रका पोता; बुन्देला ; बुन्देलखण्ड डेढ़ हजारी एक हजार।

३७—मिरजा राजा भावसिंह ; राजा मानसिंहका बेटा ; कछवाहा आमेर ; ५ हजारी ५ हजार।

३८—महाराजा भीम ; बापका नाम राना अमरसिंह ; सीसोदिया; उदयपुर।

३९—भोज ; बापका नाम राजा विक्रमाजीत ; चौहान भदोरिया ; भदावर।

४०—राय मनोहर ; कछवाहा ; शेखावाटी ; १ हजारी आठसौ।

४१—राजा महासिंह ; बापका नाम कुंवर जगतसिंह ; कछवाहा ; आमेर (जयपुर) ; ४ हजारी ३ हजार।

४२—राय माईदास मुशरिफ महल ; ६ सदी १ सौ।

४३—माधवसिंह ; बापका नाम राजा भगवन्तदास ; कछवाहा ; आमेर ; ३ हजारी।

४४ राजा मानसिंह ; राजा भगवन्तदासका बेटा, कछवाहा ;

४५—राजा मान पंजाबी ; पंजाब ; डेढ़ हजारी १ हजार।

४६—राव मानसिंह ; राना सगर, सीसोदिया ; उदयपुर ; दो हजारी ६ सौ।

४७—राय मोहनदास दीवान गुजरात ; ८ सदी ५ सौ।

४८—राय संगत ; चौहान भदोरिया ; भदावर।

४९—राजा रामदास ; कछवाहा ; आमेर, ३ हजारी।

५०—राजा रामदास ; पिताका नाम राजसिंह ; कछवाहा ; वाना-वर-गवालियर ; डेढ़ हजारी ७॥ सौ।

५१—राय कुंवर दीवान गुजरात।

५२—रायसाल दरबारी ; कछवाहा ; शेखावाटी, ३ हजारी।

५३—रायसाल खिदमतिये प्यादोंका सरदार।

५४—रायसिंह ; बापका नाम कल्याणमल ; राठौड़ ; बीकानेर ; ५ हजारी।

५५—रूपखवास ; १ हजारी ५ सौ।

५६—राजा लक्ष्मीचन्द ; पिताका नाम राजा रुद्र ; कमाऊं।

५७—सगर (राणा फिर रावत) ; बापका नाम राणा उदयसिंह ; सीसोदिया ; उदयपुर ; २ हजारी।

५८—संग्राम ; बिहार।

५९—संग्राम ; जम्मू।

६०—सरबुलन्दराय (रावरतन हाडा) ; बापका नाम राव भोज ; हाडा ; बून्दी ; ५ हजारी।

६१—राजा सारंगदेव ; १॥ हजारी।

६२—राजा सूरजमल ; बापका नाम बासू ; पठानिया ; पठानकोट ; २ हजारी एक हजार।

६३—राजा सूरजसिंह , बापका नाम उदयसिंह मोटा राजा , राठौड ; जोधपुर , ५ हजारी ३३ सौ।

६४—सूरजसिंह ; बापका नाम राय रामसिंह , राठौड , बीकानेर , २ हजारी दो हजार।

६५—राजा श्यामसिंह ; २॥ हजारी १४ सौ।

६६—हृदयनारायण ; हाडा , ८ सदी ६ सौ।
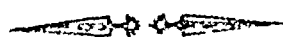
इस पुस्तकके फारसी तुर्की और अरबी शब्दोंके अर्थ।

अ

अकलीम—भूखण्ड, देश
अकीक—लालमणि
अबरशा—एक प्रकारका घोड़ा
अरगली—एक पशु
अर्गवां—एक लाल फूल
अर्जबेगी—ड्योढ़ीदार
अलतमश—फौजका अगला दल
अशकन—एक फल
अस्प—घोड़ा

आ

आबदार—जल रखनेवाला
आलतमगा—लालछाप
आलूबालू—एक मेवा

इ

इकबाल—भाग
इमामिया—शीआ जातिके मुसलमान

उ

उकाब—एक प्रबल पक्षी
उजबक—एक जातिके मुगल
उरबसी—कंठी, माला
ऊदबिलाव—एक जानवर

क

कजलबाश—लालटोपीवाले ईरानी
कबा—अचकन
कब्ब—बूंटा
कमरगा—बड़ा शिकार
करावल—बन्दूकची, लशकरोंमें आगे चलनेवाला, शिकारी
करदी—जाकट
करोड़ी—तहसीलदार
कर्रानी—पठानोंकी एक जाति
कहरुबा—एक दवा
काकड़—पठानोंकी एक जाति
काज—राजहंस
कारलग—गक्कड़ोंकी एक जाति
कारबंदीक—पच्चीकारी
कारस्तानी—युक्ति
कालीन—गलीचा
कुफ्र—अधर्म्म
कुरीशा—एक पक्षी
कुलंग—कौंच पक्षी
कोतापाचा—एक पशु
कोरनिश—झुककर सलामकरना
कोलकची—खिदमतगार
कोल—बीचकी फौज
कोर—हथियार
कोरची—सिपाही

कौरचीबाशी—सिपाहियोंका जमादार या हथियारोंका दारोगा
कौशबेगी—शिकारखानेका दारोगा
कौशची—मीरशिकार

ख

खताई—चीनीलोग, या चीनकी वस्तु
खपवा—एक शस्त्र
खाका—मसौदा
खातिमबन्दी—हाथीदांतका काम
खुतबा—नमाजके पीछे बादशाहका नाम लेना
खुशामदरामद—लल्लोपत्तो
ख्वाजासरा—जनानी ड्योढ़ीका नाजिर, हीजड़ा
ख्वारी—खराबी

ग

गनीमत—लूट
गुजरानी—आगे रखी
गुमराही—अनीति
गुलअफशां—एक बागका नाम
गुलग्हतमी—एक फूलका नाम
गुलजाफरी—एक फूलका नाम
गुललाला—एक फूलका नाम
गुगला—एक पक्षी
गैब—परोक्ष
गोरखर—एक जातिका बड़ा गधा
गोल—बीचकी फौज

च

चरज—एक पक्षी
चरन—चौथाई मोहर
चन्दावल—पिछली फौज
चपावल—पीछेकी फौज
चिनार—एक वृक्ष
चीतल—एक पशु
चुगद—एक जातिका उल्लू
चौखण्डी—चौबुरजी
चौगाशी—एक फूल

ज

जकात—महसूल
जमधर—कटार
जरज—एक पक्षी
जरनगार—बायें हाथकी फौज
जर्दालू—एक फल
जर्दतिलक—एक पक्षी
जलवानी—हाथी घोड़ेका इनाम
जाला—घडनाव
जिरगा—बिरादरी, पंचायत
जीगा—किरीट कलगी
जुरअत—साहस
जुर्रा—नर बाज

त

तकला—एक पक्षी

तगदरी—एक पक्षी
तगदाग—एक पक्षी
तरह—सहायक सेना
तबीब—वैद्य
तवाची—चोबदार
तवेगून—एक जातिका बाज
तसलीम—झुककर सलाम करना
तुकमा—घुंडी
तुगाई—मामा
तुमन—एक प्रकारकातमगा फौजका एक झुण्ड
तुहफा—सौगात
तोग—झंडे परकी एक धज्जी
तौरा—तुर्कोंका कानून

द

दरब—आधी मोहर
दाम—रुपयेका ४०वां भाग
दुआतशा—दोबार खिंची हुई शराब
दौलतखुाह—शुभचिन्तक

न

नक्शबन्दी—एक जातिके फकीर
नमद—नमदा, ऊनी गलीचा, तकिया,
नरगिस—एक फूल
नादिरी—सदरी
नादिरुलअस्र—अपने समयका एक अनोखा

नौरोज—नया दिन

प

परमनरम—कश्मीरी शाल
पेशखाना—आगे चलनेवालाडेरा

फ

फरजी—जाकट
फलोनिया—एक दवा
फुन्दुक—एक लाल रंगका मेवा
फैज—लाभ, उपकार
फौत हुआ—मर गया

व

बनफशा—एक फूल और पौदा
बरबरी—बडे बडे बालों वाली बकरी
बरामदा—कमरेके आगेका भाग
बलूत—एक वृक्ष
बिही—एक फल
बुका—एक पक्षी
बुरुनगार—बायें हाथकी फौज
बुर्दबारी—सहनशीलता
बोजा—एक मादक वस्तु

म

मशायख—शेख, मौलवी
मेहमानदारी—अतिथिसत्कार
महरम—तुर्कों की एक जाति
मारखोर—एक पहाडी बकरा
मीर आतिश—तोपखानेका अफसर

मीरबहरी—दरयाई महसूल
मुजन्नस—घोडेकी एक जाति
मुफ़ती—व्यवस्था देनेवाला
मुरगाबी—जल कूकडी
मुश्क—कस्तूरी
मुहाल—परगना
मुहिम—लडाई
मूसयाई—एक दवा

य

यमानी—यमन देशका
याकूत—लाल, माणिक्य, एक लेखकका नाम
याकूती—एक दवा

ल

लगलग—एक पक्षी
लगड झगड—एक पक्षी

व

वक़ायानवीश—समाचार लिखनेवाला

श

शफतालू—आडू
शरीअत—मुसलमानी धर्मशास्त्र
शागिर्द पेशा—सेवक लोग
शाली—धान, चावल
शाहआलू—एक मेवा
शाहीन—एक पक्षी
शीआ—मुसलमानोंका एक पंथ

स

सज़ावल—सिपाही
सनोबर—एक वृक्ष
सफवी—ईरानके बादशाहोंकी ज़ाति
सफ़दार—एक वृक्ष
समर—एक पक्षीके बाल तथा बालों समेत खाल
सरफ़राज—सम्मानित
सर्व—एक वृक्ष
सलाहदौलत—राजाका हित
साहिबकिरां—अमीर तैमूरका एक नाम
सिजदा—दण्डवत
सिपहसालार—सेनापति
सियागोश—एक पशु
सुन्नी—मुसलमानोंका एक पन्थ
सुरख़ाब—एक पक्षी
सूफी—मुसलमान वेदान्ती
सेहत—आराम
सौसन—एक फूल

ह

हज़ारा—एक जाति
हमदानी—हमदानका रहनेवाला
हरजमरज—हानि
हरम—महल
हलका—हाथियोंका झुण्ड
हवासिल—एक पक्षी
हिरात—ख़ुरासानका एक शहर
हुमा—हुमा एक पक्षी

जहांगीरके समयके राजपूत राजा और सरदार जिनका वृत्तान्त जहांगीर नामेमें आया है।

(१) अनूपशहर—अनूपसिंह बडगूजर (अनीराय सिंहदलन)।

(२) अमझेरा (मालवा)—केशवदास मारू राठौड़।

(३) आमेर (जयपुर)—राजा भारमल कछवाहा २ भगवन्तदास ३ मानसिंह ४ जगतसिंह ५ महासिंह ६ जयसिंह। मिरजा राजा भावसिंह मानसिंहका बेटा, राजा जगन्नाथ राजा भारमलका बेटा, अखैराज कछवाहा राजा मानसिंहका चचा। अखैराजके बेटे अभयराम विजयराम श्यामराम रामदास कछवाहा।

(४) ईडर (गुजरात)—राजा कल्याण राठौड़।

(५) उर्छा—राजा वरसिंह देव बुन्देला।

(६) उदयपुर (मेवाड)—राना सांगा, उदयसिंह, प्रतापसिंह, अमरसिंह, कुंवर करण, जगतसिंह, राना (करनावत) सगर, राना अमरसिंहका चचा, सगर(१)का बेटा मानसिंह, महाराजा भीम(२) राना अमरसिंहका दूसरा बेटा किशनसिंह।

(७) कच्छ (काठियावाड)—राव भारा।

(८) कमाऊं (गढवाल)—राजा रुद्र, राजा लक्ष्मीचन्द, राजा टेकचन्द।

(९) कृष्णगढ (राजपूताना)—राजा कृष्णसिंह राठौड, नहमल

(१०) किश्तवार (कश्मीर)—राजा कुवरसिंह।

---

(१) सगरकी औलादमें अब ऊमरी इलाके गवालियरके राजा दलीपसिंह है।

(२) भीमके दूसरे बेटे रायसिंहको शाहजहां बादशाहने टोंक और टोडेका राज्य दियाथा परन्तु अब उसकी औलाद मेवाड़में है।

(११) कूचबिहार (बंगाल)—राजा लक्ष्मीनारायण।

(१२) खानदेश—पंजू जमींदार।

(१३) गढा (गोंडवाना)—राजा पेमनारायण।

(१४) गुलेर (पंजाब)—राजा मान गुलेरी, देवीचन्द गुलेरी, रूपचन्द गुलेरी।

(१५) चन्द्रकोटा—हरभान।

(१६) जम्मू (पंजाब)—राजा संगराम।

(१७) जामनगर (गुजरात)—जाम जस्सा जाड़ेचा।

(१८) जैसलमेर—रावल कल्याण।

(१९) जोधपुर (मारवाड)—राव मालदेव २ मोटा राजा उदयसिंह ३ राजा सूरजसिंह ४ राजा गजसिंह, नारायणदास राठौड. भाटी गोयनदास सूरजसिंहका प्रधान।

(२०) नरवर (गवालियर)—राजा राजसिंह कछवाहा, राजा रामदास।

(२१) नूरपुर (कांगडा)—राजा वासू २ राजासूरजमल ३ राजा जगतसिंह ४ राजा माधवसिंह।

(२२) वगलाणा (गुजरात)—प्रतापभरजी राठौड।

(२३) वलवाडा (पंजाब)—वासू जमींदार।

(२४) वांधोगढ (रीवां)—राजा विक्रमाजीत २ राजा अमरसिंह

(२५) विहार—राजा संग्राम उसका वेटा राजा रोजअफजूं (मुसलमान)

(२६) वीकानेर—राय रायसिंह २ राय दलपतसिंह ३ सूरज- (सूर) सिंह।

(२७) बुन्देलखण्ड—राजा रामचन्द्र, राजा भारत बुन्देला (सर-बुलन्दराय रायराज)

(२८) बूंदी (राजपूताना)—रावरतन हाडा, हृदयनारायण हाडा।

(२९) भदावर—मुकुंद, भोजभदोरिया।

(३०) मंझौली (बिहार) राजा नथमल।

(३१) रतनपुर—राजा कल्याण।

(३२) रामपुरा (मालवा)—राय दुर्गा सिसोदिया।

(३३) शेखावाटी (जयपुर)—राय मनोहर और उसका बेटा राय पृथ्वीचन्द रायसाल दरबारी और उसका राजा गिरधर।

(३४) श्रीनगर—राजा श्यामसिंह।

(३५) हलवद (गुजरात)—राजा चन्द्रसेन झाला।

मरहठे।

[१] दक्षिण—ऊदाराम पंडित दक्षिणी।

[२] " —जादूराय (सेवाजीका नाना)।

बादशाही ओहदेदार।

[१] राजा कल्याण राजा टोडरमलका बेटा।

[२] राजा विक्रमाजी (सुन्दर ब्राह्मण)।

[३] राजा विक्रमाजी रायरायां पतरदास।

[४] राय घनसूर दीवान।

[५] कल्याण विक्रमाजीतका बेटा।

[६] राय बिहारीदास।

[७] राजा सारङ्गदेव।

[८] राजा किशनदास।

[९] रायकंवर दीवान।

[१०] राय भवाल (भवानीदास) मुशरिफ तोपखाना।

फुटकर।

[१] गुरु अर्जुन (गुरु नानक साहिबके उत्तराधिकारी)।

[२] जदरूप सन्यासी (चिद्रूप)।

[३] मानसिंह सेवड़ा।

[४] सुखराय भाट।

[५] जोतकराय ज्योतिषी।

[६] भट्टाचार्य्य ।

[७] उस्ताद पूर्ण कारीगर ।

[८] कल्याण कारीगर ।

[९] कल्याण लुहार ।

[१०] बिशनदास मुसव्विर (चितेरा) ।
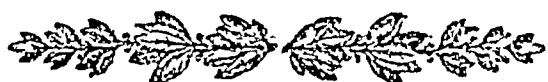
दूसरा भाग ।

चौदहवें वर्ष (सन १०२७) का शेषभाग १३वां नौरोज

फरवरदीन महीना ।

२३ रबीउल अव्वल सन १०२७ चैत्र वदी १० संवत् १६७४ बुधवारको १४॥ घड़ी रात जाने पर सूर्य मेष राससें आया। इस नये दिन तक बादशाहकी राजतिलकसे लेकर १२ वर्ष कुशलसे बीते और शुभ घडी शुभ मुहूर्त्तमें नयावर्ष लगा।

वर्षगांठके उत्सवमें दान—२ फरवरदीन गुरुवार (चैत्र वदी ११) को ५१वां वर्ष लगनेका तुलादान हुआ इस उत्सवमें बादशाहने निज सेवकोंको प्याले देकर प्रसन्न किया।

आसिफखांके ५ हजारीजात और ३ हजार सवारोंके मनसब पर १००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा बढ़ाये गये।

साबितखांको अर्ज मुकर्रर और मोतमिदखांको तोपखानेका काम मिला।

दिलावरखांके बेटेका भेट किया हुआ कच्छी घोड़ा जिसके समान गुजरातमें और घोड़ा न था बादशाहने मिरजा रुस्तमकी खातिर और प्रार्थनासे उसको देदिया।

जामको हीरे, लाल, पन्ने और नीलमकी चार अंगूठियां, दो कांगल और राजा लक्ष्मीनारायणको भी वैसीही ४ अंगूठियां मिलीं।

मुरव्वतखांने तीन हाथी बङ्गालेसे भेजे थे, उनमेंसे दो खासे बनाये गये।

शुक्रकी रातको तालाब पर दीपमालिका बहुत अच्छी हुई।

रविवारको हाजी रफीक, शाह अव्वासका पत्र, पंचाक जातिके घोडे और दिव्य वस्त्रोंके थान लेकर ईरानसे आया। बादशाहने कई घोडे खासे तवेलेमें भेजे और उसे मलिकुलतुज्जार (व्यापारियोंके राजा) की पदवी दी।

सोमवारको बादशाहने खासी तलवार जड़ाऊ माला और ४ मोती कुंडलोंके वास्ते राजा लक्ष्मीनारायणको दिये।

मिरजा रुस्तम ५ हजारी, ऐतकादखां चारहजारी, और सरफराजखां अढ़ाई हजारी हुआ।

अनीराय सिंहदलन और फिदाईखांको सौ सौ मोहरोंके घोड़े मिले।

पंजाब का सूबा एतमादुद्दौलाको दे रखा था उसकी प्रार्थनासे बादशाहने अहदियोंके बखशी मीरकासिमको हजारीजात ४०० सवारोंका मनसब और कासिमखांका खिताब देकर वहां शासन करनेको भेजा।

राजा लक्ष्मीनारायणको बादशाहने पहिले इराकीघोडा दिया था। इस दिन हाथी और तुरकी घोडा देकर बङ्गाले जानेकी आज्ञा दी।

जामको भी घरजानेकी विदाईमें, जडाऊ कमरपेटी जडाऊ माला २ तुरकी और इराकी घोडे सिरोपाव सहित मिले। इसी मितीको मीरजुमलाने इराकसे आकर चौखट चूमी।

मीरजुमला—यह इसफहानके प्रतिष्ठित सैयदोंमेंसे था। पहले १० साल तक गोलकुंडेके मुहम्मदकुली कुतबुलमुल्कका मन्त्री था। नाम था मुहम्मदअमीन। कुतबुलमुल्कने उसे मीरजुमलाकी पदवी दी। १४ साल गोलकुंडेमें रहकर ईरानमें शाह अव्वासके पास चला गया था। उसका भतीजा मीर रजी, शाहका

दानाध्यक्ष था। शाहने अपनी बेटी उससे व्याही थी। बादशाहने मीरजुमलाका विचार अपने दरबारमें नौकरी करनेका सुनकर उसे बुलाया था। वह १२ घोड़े ९ थान कपडों के और २ अंगूठियां भेट लेकर आया। बादशाहने २०००० दरब सिरोपाव सहित उसे दिये।

११ शनिवार (चैत्र सुदी ५-६ संवत् १६७५) को बादशाह हाथी का शिकार खेलनेके लिये चलकर गांव कडेबाड़ेमें और १२ को गांव सजारामें ठहरा। यहांसे दोहद (१) ८ कोस और शिकार का स्थान १॥ कोस था।

हाथीका शिकार—१३ सोमवार (चैत सुदी ८) सवेरे बादशाह बहुत से निज सेवकों सहित हाथी के शिकारको गया। पहिलेसे बहुतसे सवारों और पंदलोंने जाकर पहाडोंको घेरलियाथा। बादशाहके बैठनेको १ वृक्षपर सिंहासन बनाया गयाथा। उसके आसपास अमीरोंकी बैठकें वृक्षों पर बनीथीं। २०० हाथी बहुतसी हथनियां और सुदृढ़ नागपाशों समेत वहां लाये गये थे। एक एक हाथी पर दो दो महावत "जरगा" जातिके जिनका कामही हाथीका शिकार है बैठे थे। यह बात ठहरी थी कि जङ्गली हाथी चौतरफसे घेरकर बादशाहके सम्मुख शिकारका कौतुक दिखानेके लिये लाये जावें। परन्तु लोग जब जङ्गलमें आये तो घने वृक्षों और ऊंची नीची भूमिके होनेसे शिकारका प्रबन्ध टूट गया। जङ्गली हाथी घबराकर हर तरफको चलेगये। केवल १२ हथनियां और हाथी इधर आये उनके भी निकल जानेका भय था इसलिये पलेहुए हाथियोंको आगे करके जहां मिले वहीं उनको बांधा। यद्यपि बहुत हाथी हाथ नआये तथापि दो उत्तम हाथी पकडे गये। बादशाह लिखता है—"जिस जङ्गलमें यह हाथी रहते हैं वहां एक पहाड़ है। उसको राक्षस पहाडी कहते हैं। इसी प्रसंगसे मैंने उन दोनों हाथियोंके नाम भी राक्षसोंके नामपर रावनसर और पावनसर रखे।

(१) अब दोहद पंचमहाल जिले गुजरातमें है।

बादशाह १४ मङ्गल और १५ बुधको भी वहीं रहा। १६ बृहस्पतिवार (चैतसुदी ११) की रातको कूच करके "काडे बारह" में आगया। तीन हजार रुपये पंजाबके पहाडी राजा संग्रामको इनायत हुए। गर्मी बहुत पडती थी दिनको चलना कठिनथा इस लिये रातका कूच ठहरा।

१८ शनिवारको दोहदमें डेरे हुए।

१९ रविवार (चैतसुदी १४) को मेष संक्रांति थी(१) बादशाह फिरे दरबार करके सिंहासन पर बैठा। शाहनवाजखांके मनसब ५ हजारीजातमें २००० सवार दुअस्पा और तिअस्पा हुए। ख्वाजा-अबुलहसन मीर बख्शीका मनसब वढकर ४ हजारीजात और २००० सवारोंका होगया।

काशमीरकी सूबेदारी—अहमदबेगखां काबुली, काशमीरके हाकिमने यह प्रतिज्ञा की थी कि दो वर्षमें तिब्बत और किश्तवार को जीत लूंगा परन्तु यह काम उससे न बना। इस लिये बाद-शाहने उसे पदच्युत करके दिलावरखां काकडको काशमीरकी सूबेदारी दी और हाथी सिरोपाव प्रदान करके बिदा किया। उसने भी दो वर्षमें तिब्बत और किश्तवार फतह करदेनेका प्रतिज्ञा पत्र लिख दिया।

मिर्जा शाहरुखका बेटा "बदीउज्जमां" अपनी जागीर सुलतान पुरसे आया।

पंजाबकी सूबेदारी—बादशाहने कासिमखांको जड़ाऊ खंजर और हाथी देकर पञ्जाबकी सूबेदारी पर भेजा।

अहमदाबादको लौटना—२१ मङ्गलवार (बैशाखबदी १) की रातको बादशाहने अहमदाबादकी ओर बाग फेरी। गर्मीकी तेजी और हवाके बिगड जानेसे लोगोंको बहुत कष्ट होने लगा था इस लिये राजधानीको जानेका विचार छोडकर अहमदाबादमें रहना

(१) चंडूपञ्चाङ्गमें मेष संक्रांति पहले दिन लिखी है।

स्थिर किया। क्योंकि गुजरातकी बरसातकी बहुत प्रशंसा सुनीथी। अहमदाबादकी भी बहुत बडाई होतीथी।

आगरेमें मरी—उसी समय यह भी खबर आई कि आगरे में फिर मरी फैलगई है, बहुतसे आदमी मरते हैं। इससे आगरे न जानेका विचार और भी स्थिर होगया।

२३ (बैशाख बदी २) को गुरवारका उत्सव गांव जालोदमें हुआ।

सिक्केमें राशि—पहिले सिक्केमें १ ओर बादशाहका नाम और दूसरी ओर स्थानका नाम महीना और सन जुलूसी होता था। अब बादशाहने महीनेकी जगह उस महीनेकी राशिका चित्र खुदवाया जैसे फरवरदीनमें मेष, उरदीबहिश्तमें वृष। राशिके चित्रमें उदय होता सूर्य्य बनाया गया। बादशाह लिखता है यह बात मैंने निकाली पहले न थी।

कोयल—२७ चन्द्रवार(१) (बैशाख बदी ६) को रातको गांव बदरवाले परगने सहरामें डेरे हुए। यहां बादशाहने कोयलकी बोली सुनी। बादशाह लिखता है—"कोयल एक चिडिया कव्वेकी किसम से है, पर उससे छोटी। कव्वेकी दोनों आंखें काली होतीहैं और कोयलकी लाल—नर काला होता है और मादाके बदन पर सफेद तिल होते हैं। नरकी बोली बहुत प्यारी होती है मादाकी बोली वैसी नहीं होती। कोयल हिन्दुस्तानकी बुलबुल है। जैसे बुलबुल बहारमें मस्त होती है वैसेही कोयलभी बरसातमें मस्त होजाती है। उसकी कूक बहुत सुहावनी और मनभावनी होती है। यह बहुधा आमके वृक्षपर बैठती है और आमोंके रंग और सौरभसे मुदित रहती है। अजब बात यह है कि कोयल अपने अंडोंको आप नहीं सेती जहां कहीं कव्वेका घोंसला देखती है उसमें से उसके अंडे तो चोंचसे तोड़कर फेंक देती है और अपना अंडा उसकी जगह रख आती है। कव्वा उसको अपनाही अंडा समझ कर सेता है और बच्चा निकालकर पालता है। यह बात मैंने अपनी आंखोंसे देखी है।

२८ बुध (बैशाखबदी ८) को महीनदीके तटपर डेरे हुए। यहां

(१) मूलमें लेखक दोषसे शनिवार लिखा है।

गुरवारके उत्सवकी सभा हुई। वहीं २ झरने भी थे जिनका पानी ऐसा निर्मल था कि जो उसमें खशखाशका १ दाना भी पडजाता तो पूरा देखाई देता। बादशाह दिनभर बेगमों सहित वहीं रहा और दोनों झरनों पर चबूतरे बना देनेका हुक्म दिया।

शुक्रवारको महीनदीमें मछलियों का शिकार हुआ। बडी बडी छिलकेदार मछलियां जालमें फंसीं। बादशाहने पहिले शाहजहांको और फिर अमीरोंको हुक्म दिया कि अपनी अपनी कमरमें बंधी हुई तलवारें इन पर मारें। शाहजहांकी तलवारने सबसे अच्छा काट किया। मछलियां उपस्थित सेवकोंको बांटदी गईं।

उर्दीबहिश्त—१ शनिवार (वैशाखबदी ११) की रातको बादशाहने वहांसे कूच करके यसावलों(१) और तवाचियोंको हुक्म दिया कि रास्तेके और आसपासके गांवोंमेंसे विधवाओं और अपाहजों को इकट्ठा करके मेरे सामने लाओ। मैं अपने हाथसे उन्हें दान दूंगा। इससे मेरे लिये एक काम होगा और उनको लाभ पहुंचेगा इससे अच्छा काम क्या होगा"।

३ सोमवार (वैशाखसुदी १३—१४) को शुजाअतखां अरब, और हिम्मतखां, आदिने जो गुजरात और दक्षिण में नियत थे आकर चौखट चूमी। मशायख और काजी मुफती जो अहमदाबादमें रहते थे वह भी हाजिर हुए।

४ मङ्गलवार (वैशाखसुदी ३०) महमूदाबादकी नदी पर डेरे हुए। रुस्तमखांने जिसको शाहजहांने गुजरातके शासन पर छोडा था, चौखट चूमनेका मान पाया।

शाह ईरानकी सौगात—६ गुरवार (वैशाखसुदी २) को गुरवार का उत्सव कांकरियाताल पर हुआ। नाहरखांने आज्ञानुसार दक्षिणसे आकर सिर झुकाया।

बादशाहने कुतुबुल्मुल्ककी भेजी हुई १ सहस्र स्वर्ण मुद्राकी हीरेकी अंगूठी शाहजहांको दी। उसपर तीन लकीरें तो बराबर और एक टेढी लकीर नीचे थी जिससे अल्लाहके नामके से अक्षर

(१) नकीब चोबदार।

बन गये थे। यही अनोखापन देखकर कुतुबुल्मुल्कने वह भेजी थी। जवाहिरों में लकीर होना दोष है तोभी यह हीरा देखनेमें अच्छा था। पर किसी उत्तम खानिका न था। बादशाह लिखता है "शाहजहां चाहता था कि दक्षिण की फतहके माल में से कोई निशानी मेरे भाई शाह अब्बासकके वास्ते भेजे इस लिये उसने इस हीरेको दूसरी सौगातोंके साथ ईरानको भेज दिया।

वृषराय भाट—इसी दिन बादशाहने वृखरायको एक हजार रुपये इनामके दिये। बादशाह लिखताहै "यह गुजराती है और इस देशकी बातें खूब जानता है। इसका नाम बूटा था मेरे जीमें आया कि बूढ़े आदमीको बूटा कहना बेमेल बात है और विशेष कर उस दशामें जबकि मेरी कृपावृष्टिसे हरा होकर फूलफलसे लद गया हो। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि इसे वृषराय कहा करें वृष (वृक्ष) हिन्दीमें दरख्तको कहते हैं"।

नगर में प्रवेश—७ शुक्रवार १ जमादिउलअव्वल (वैशाख सुदी ३) को बादशाह शुभ मुहूर्त्त में कल्याण विजय पूर्वक अहमदाबाद में प्रविष्ट हुआ। सवारीके समय शाहजहां पांचहजार रुपयेके बीसहजार चरण लायाथा। बादशाह उन्हें लुटाता राजभवन तक गया। वहां उतरतेही शाहजहांने एक तुर्रा २५०००) का भेट किया। उसके नौकर भी जो इस सूबेमें रखे गये थे अपनी अपनी भेंट लाये। वह सब मिलकर चालीस हजार रुपयेकी थी।

अहमदनगर—ख्वाजाबेग मिरजा मफवी अहमदनगरमें मर गया था। इस लिये बादशाहने उसके गोद लिये हुए सपूत लड़के खंजरखां को दो हजारीजात और सवारका मनसब देकर अहमदनगरकी किलेदारी पर नियत किया।

बीमारी—बादशाह लिखते है कि इन दिनों गर्मी बहुत पडने और हवाके बिगड जानेसे लोग रोगग्रस्त होगये। शहर और उर्दूमें कम ही कोई रहा होगा जो बीमार न हुआ हो दारुण ज्वर चढ़ता है या हाथ पांव टूटते हैं दो तीन दिन बहुत

कष्ट रहता है फिर अच्छे होजाने पर भी बहुत दिनों तक निर्बलता और शिथिलता रहती है परिणाम कुशल है। मौत इसरोगसे बहुतही कम होती है। इसप्रांतके पुराने पुरुषों से सुना गया कि कि ३० वर्ष पहिले भी इसी प्रकार का ज्वर फैला था और कुशल रही थी। कुछ हो गुजारातका जल वायु बिगड चला है मै यहां आकर बहुत पछताता हूं। परमात्मा कृपा करके यह चिन्ता दूर करें।

पट्टनकी फौजदारी—१३ गुरुवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने मिर्जा शाहरुखके बेटे, वदीउज्जमां को डेढ हजारीजात और सवारका मनसब तथा झण्डा देकर पट्टनकी फौजदारी पर नियत किया—इसी प्रकार और भी कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये।

बाज—कासिम, दहबन्दीने, तूरानसे "तवेगूं" जातिके ५ बाज अपने एक सजातिके हाथ भेजेथे, उनमेंसे एक तो रास्ते में मरगया। बाकी चार उज्जैनमें पहुंचे। बादशाहने १०००) लानेवालेको दिलाये और ५०००) उसे इस वास्ते दिये थे कि जिस प्रकारका माल ख़्वाजा की पसन्दका समझे मोल लेजावे और अब खानआलमने जो शाह ईरानके पास गया हुआ था एक बाज "आशयानी" (१) जिसको फारसी भाषा में "अकना" बोलते हैं भेजा था वह भी भेट हुआ। बादशाह लिखता है—यों तो इसमें और "दामी" (२) बाज में कोई भेद नहीं दिखाई देता, किन्तु उड़ानेपर अन्तर प्रगट होता है।

२० गुरु (जेठ बदी १) को मिरजा यूसुफखांके जमाई अबूसालहने आज्ञानुसार दक्षिण से आकर चौखट चूमी। एक हजार स्वर्ण मुद्रा और एक कलगी भेट की। यूसुफखां मशहदके सैयदों मे से था। खुरासानमें इस घरानेकी बडी प्रतिष्ठा थी। ईरानके बादशाह अब्बासने अपनी बेटी मीर अबूसालहके भाई को दी थी। मिरजा यूसूफखां को अकबर बादशाहने बढाकर पांच हजारी कर-

(१) घोंसले में रहने वाला।

(२) जाल में पकड़ा हुआ।

दिया था वह अच्छा अमीर था। अपने नौकरोंको बड़े प्रबन्धसे रखता था। वह दक्षिणमें मरा उसके बहुत बेटे थे। बादशाहने पुराना हक देखकर सबका पालन किया और बड़े बेटेको थोड़ेही दिनों में अमीरीके पद पर पहुंचा दिया।

हकीमों को पारितोषक—२७ गुरुवार (जेठ बदी ८) को बादशाहने हकीम मसीहुज्जमांको बीस हजार द्रव्य और हकीम रूहुल्लाहको १०० मुहरें और एक हजार रुपये दिये। यह बादशाह की प्रकृति को खूब पहचान गया था। उसने गुजरातकी आबहवा बादशाहसे सधते न देखकर कहा कि आप शराब और अफीम कुछ कम करदें तो बहुत लाभ हो। बादशाहने ऐसा किया तो एकही दिन में बहुत लाभ हुआ।

खुरदाद

हाथियोंका शिकार—३ गुरुवार (जेठ बदी ३०) को गजशाला के अध्यक्ष गजपतिखां और किरावल बेगी (शिकारके कर्म्मचारी) बलोचखां की अर्जीसे जाना गया कि ६९ हाथी हथनियां पकड़ी गई हैं। बादशाहने उस अर्जी पर हुक्म चढाया कि बूढ़े और बच्चों को छोडकर बाकी सब हाथी हथनियां पकड़ी जायें। बलोचखां को एक हजार रुपये इनाम भी दिये।

वरसिंहदेव को घोडा—१४ चन्द्रवार (जेठ सुदी १२) को जाम के भेट किये हुए उत्तम घोडोंमेंसे १ खासा कच्छी घोडा बादशाहने राजा वरसिंहदेव को प्रदान किया।

बादशाहका अस्वस्थ होना—१५ मङ्गल (जेठ सुदी दूसरी १२) से बादशाहके सिरमें पीडा होकर ज्वर चढ गया। रातको शराबके प्याले भी न पिये। दूसरेदिन थोडा ज्वर उतरा तो हकीमोंके कहने से प्यालों की तिहाई माला ली। खानेके वास्ते उडदकी दालका पानी और चावल बताये गये थे। बादशाहने यह पथ्य नहीं। वह लिखता है—"जबसे मैंने होश सम्हाला है याद नहीं कि कभी उडद की दालका जूस खायाहो"। एक रातदिन मैंने बादशाह

ऐसा निर्ब्बल होगया मानो बहुत दिनका बीमार है। भूख बन्द होगई खाने की रुचि न रही। तीन दिन और दो रात लंघन किया।

अहमदाबादकी निन्दा—बादशाह लिखता है—"मुझे आश्चर्य है कि इस नगरके बसाने वालेने क्या शोभा और सुन्दरता देखकर ऐसी रूखी सूखी भूमिमें नगर बसाया। उसके पीछे दूसरोंने भी अपनी प्यारी जानें इसी धूल में मिलादीं। यहां की हवा जहरीली भूमि निर्जल धूल अपार पानी खराब बदमजा, नदी जो नगरके निकट है सिवा बरसातके सदा सूखी पड़ी रहती है। कूपोंका जल बहुधा खारा है। बस्तीके आसपासके तालाबोंका जल धोबियोंके साबुन से छाछके समान बना हुआ है। धनियोंने अपने घरों में टांके बनये है उनमें वर्षा का जल भरते हैं और अगली बरसात तक पिया करते है। जिस पानी पर हवा न लगे और जिससे भाप न उठे वह बिकारयुक्त होगा यह स्पष्टही है। नगरके बाहर हर-यालो और बागोंकी जगह थोहर है। उनमें होकर जो हवा निकले उसका कहनाही क्या। मैंने अहमदाबादको गर्दाबाद कहा है। अब नहीं जानता कि इसका नाम लूओंका स्थान रखूं या रोगका घर, थोहर नगर कहूं या एकदम दोजख, जो सब कष्टोंका आगार है। यदि वर्षा कालसे रुकावट न होती तो एक दिन भी इस क्लेश भरे स्थानमें न ठहरता। सुलेमानकी भांति हवाके तख्त पर बैठकर उड़जाता। और ईश्वर की प्रजा को इस कष्टसे छुड़ाता। (१)

बादशाह की न्याय नीति—बादशाह लिखता है—"इस नगरके मनुष्य बड़े दीनहीन है। मैं इस बिचारसे कि कहीं फौजवाले जबरदस्ती किसीके घरमें न घुसजायें या किसी दुर्ब्बलको तंग न करें काजी और मीर अदल उनके भयसे कुछ बोल न सकें और उन

(१) अफसोस है कि उस समय रेल न थी। होती तो बिलासी बादशाह को इतना दुःख न देखना पड़ता।

अत्याचारियों को दबा न सकें, इन लू और तपतके दिनोंमें भी नित्य दोपहरको इबादतके बाद उस झरोकेमें बैठता हूं जो नदी की तरफ है। वहां न कुछ रोकटोक है न कोई चोबदार। दो दो तीन तीन घण्टे वहां बैठा रहताहूं। जो फरयादी आता है उसकी पुकार सुनकर दुराचारियों को दण्ड देताहूं। बडी कमजोरी तकलीफ और बीमारीके दिनों में भी नियम पूर्वक झरोके में बैठता हूं। शरीर को सुख देना बुरा समझता हूं।

ईश्वरकी कृपासे ऐसी प्रकृति होगई है कि रात दिनमें दो तीन घण्टेसे अधिक नहीं सोता हूं। इसमें दो स्वार्थ हैं एक तो देश की व्यवस्थासे सचेत रहना दूसरे भगवत स्मरणमें जागना। बडे खेद की बात है जो यह थोड़ेसे दिनकी आयु प्रमादमें वृथा जाय। जब आगे एक गहरी निद्रा आने वाली है तो फिर इस जाग्रत अवस्था को-जिसे पुन: स्वप्न में भी नहीं देखूंगा दुर्लभ समझ कर पलभर भी भगवत स्मरणसे असावधान नहीं रहना चाहिये।

शाहजहांका रोगग्रस्त होना—जिस दिन बादशाह को ज्वर आयाथा उसी दिन शाहजहां को भी आने लगा था। उससे पीडित होकर वह १० दिन तक दण्डवत करने न आसका था। २४ गुरुवार (अषाढ बदी ६) को आया तो इतना दुर्बल होगया था कि मानो महीनेसे बीमार है।

३१ गुरुवार (अषाढ बदी १४) को बादशाहने मीर जुमला को डेढ हजारी और २०० सवारोंका मनसब दिया।

दान—इसी दिन बादशाहने कष्ट निवारणके लिये एक हाथी एक घोडा अनेक पशु चांदी सोना और दूसरे पदार्थ दान किये। बहुधा सेवक भी अपनी अपनी शक्तिके अनुसार दानको चीजें लाये। बादशाहने कहा सबेजोंसे यह दानकी चीजें लायेहो तो हमें बेदिखाये ही दान करदी होतीं। सामने लानेकी क्या जरूरत है।

तीर महीना।

अमीरोंके मनसब बढाना—गुरुवार (अषाढ सुदी ६) को बाद-

शाहने बखशी सादिकखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये झंडे और हाथी भी दिये।

काशमीरके सूबेदारके बेटोंको मनसब—इसी दिन काशमीरके सूबेदार अहमदबेगखांके मरने की खबर आई। बादशाहने उसके बेटों को मनसब देकर बंगश और काबुलके सूबेमें नियत कर दिया उसका मनसब तो अढ़ाई हजारीही था पर उसके बड़े बेटे को २ हजारी और ३ छोटों को नौ नौसदी मनसब दिये।

१४ गुरुवार (अषाढ सुदी १३) को राय मनसूर जो पहिले सूबे गुजरात का दीवान था मालवे का दीवान हुआ।

सारसका मैथुन और उसका प्रेम—यह बात लोगों में प्रसिद्ध थी कि कभी किसीने सारस को मैथुन करते नहीं देखा है। बादशाहके यहां एक जोडा सारस का था जिस का उसने "लैलामजनूं" नाम रखा था। एक दिन एक नाजिरने उसे मैथुन करते देखा। और बादशाह को भी दिखाया। बादशाह उसका वर्णन करके लिखता है—"सारसके स्नेहकी विचित्र विचित्र बातें सुनी है। उनमें से एक यह है जो कयामखांने कही थी—"एक दिन मैं शिकार को गया था। एक सारस बैठा देखा। उसके पास गया तो वह उठकर चल दिया पर उसकी चालसे कुछ पीडा पाई जाती थी। फिर वह ठौर देखी तो वहां कुछ पंख और अस्थियां पडी थीं उन्हीं पर वह बैठा था। मैंवहां जाल लगाकर दूर बैठगया वह फिर वहीं आया और जाल में फंस गया। पकडा तो बहुत हलका था उसकी छाती और पेटके पर उडगये थे। चमडा भी गलगया था और कीडे पड गये थे मांस सब सूख गया था मुट्ठीभर पर रह गये थे। अन्त में विदित हुआ कि इस की जोडी का सारस मरगया था जिसके वियोग में इसकी यह दुर्दशा होगई थी।"

फिर हिम्मतखांने जो विश्वासी आदमी था कहा कि दोहदके परगने में एक तालकी पाल पर सारसका एक जोडा नजर आया। मेरे बन्दूकचियोंमेंसे एकने बन्दूकसे एक सारसको मारा फिर

शाहने बखशी सादिकखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़ाये झंडे और हाथी भी दिये।

काश्मीरके सूबेदारके बेटोंको मनसब—इसी दिन काश्मीरके सूबेदार अहमदवेगखांके मरने की खबर आई। बादशाहने उसके बेटों को मनसब देकर बंगश और काबुलके सूबेमें नियत कर दिया उसका मनसब तो अढ़ाई हजारीही था पर उसके बड़े बेटे को २ हजारी और २ छोटों को नौ नौसदी मनसब दिये।

१४ गुरुवार (अषाढ सुदी १२) को राय मनसूर जो पहिले सूबे गुजरात का दीवान था मालवे का दीवान हुआ।

सारसका मैथुन और उसका प्रेम—यह बात लोगों में प्रसिद्ध थी कि कभी किसीने सारस को मैथुन करते नहीं देखा है। बादशाहके यहां एक जोडा सारस का था जिस का उसने "लैलामजनूं" नाम रखा था। एक दिन एक नाजिरने उसे मैथुन करते देखा। और बादशाह को भी दिखाया। बादशाह उसका वर्णन करके लिखता है—"सारसके स्नेहकी विचित्र विचित्र बातें सुनी है। उनमें से एक यह है जो कयामखांने कही थी—"एक दिन मैं शिकार को गया था। एक सारस बेठा देखा। उसके पास गया तो वह उठकर चल दिया पर उसकी चालसे कुछ पीडा पाई जाती थी। फिर वह ठौर देखी तो वहां कुछ पंख और अस्थिया पडी थीं उन्हीं पर वह बैठा था। मैंवहां जाल लगाकर दूर बैठगया वह फिर वहीं आया और जाल में फस गया। पकडा तो बहुत हलका था उसकी छाती और पेटके पर उडगये थे। चमडा भी गलगया था और कीडे पड गये थे मांस सब सूख गया था मुट्ठीभर पर रह गये थे। अन्त मे विदित हुआ कि इस की जोडी का सारस मरगया था जिसके वियोग में इसकी यह दुर्दशा होगई थी।"

फिर हिम्मतखांने जो विश्वासी आदमी था कहा कि दोहदके परगने में एक तालकी पाल पर सारसका एक जोडा नजर आया। मेरे बन्दूकचियोंमेंसे एकने बन्दूकसे एक सारसको मार। फिर

वहीं दो दिन रहना भी होगया तो देखा कि दूसरा सारस आसपास फिरता और पुकारता है । उसको व्याकुल देखकर मेरा दिल बहुतही दुखता था पर पछतानेके सिवा और उपाय न था २०।२५ दिन पीछे फिर उधर जाना हुआ । वहां वालोंसे उस सारस का परिणाम पूछा तो उन्होंने कहा कि वह तो तबही मर गया । उसके पर और अस्थियां अभी वहीं पड़ी है । मैंने जाकर देखा तो बात ठीक थी । इस प्रकार बहुत सी बातें लोगों में सारसकी प्रसिद्ध हैं"।

रावत शंकर की मृत्यु—शनिवार (आषाढ सुदी १५) को रावत शंकरके मरजाने की खबर लगी । वह सूबे बिहार में नौकरी पर था । बादशाहने उसके बड़े बेटे मानसिंहको दोहजारी जात और ६०० सवारों का मनसब दिया । दूसरे बेटों तथा उसके सजातियोंके भी मनसब बढाये और उन्हें उसके अधीन रहने की आज्ञा दी ।

हाथी बावनसर—२१ गुरुवार (सावन बदी ५) को बावनसर हाथी जो हिलाये जानेके लिये परगने दोहद में छोड़ा गया था दरगाहमें पहुंचा । बादशाहने फरमाया कि झरोकेके पास नदीके निकट इसे बांधें जिससे हमेशा आंखोके आगे रहे । बादशाह लिखता है —"स्वर्ग वासी श्रीमानके फीलखाने में दुर्जनसाल हाथी से बडा कोई हाथी मेरे देखने में नहीं आया था । वह सब हाथियों में प्रधान था उसकी ऊंचाई आधपाव कम पांचगजकी अकबरी गजसे थी जो ४० उंगल का होता है । अब मेरी सरकारके हाथियों में सबसे बडा हाथी "गजराज पहलवानेआलम" है यह पौने पांच गज ऊंचा है"

ठट्ठेका सूबेदार—इसी दिन मुजफ्फरखांने जो ठट्ठेकी सूबेदारी पर नियत हुआ था चौखट चूमकर १०० मुहरें एक हजार रुपये और एक लाख रुपयेके जवाहिर और जडाऊ पदार्थ भेट किये ।

रायभारा—२४ रविवार (सावन वदी ८) को रायभाराने चौखट

चूमनेकी इज्जत पाई। बादशाह लिखता है—"गुजरात देशमें इससे बड़ा कोई जमींदार नहीं है। इसका राज्य समुद्रसे मिला हुआ है। भारा और जाम एक दादाके पोते हैं। १० पीढ़ियोंमें मिलते हैं। राज्य और सेनामें भारा जामसे भारी है। कहते हैं कि वह गुजरातके किसी बादशाहके देखनेको नहीं गया। सुलतान महमूदने इस पर सेना भेजी थी। यह मैदानकी लड़ाई लड़ा और इसने उस सेनाको हराया। फिर जब खानेआजम जूनागढ़ और सोरठ पर चढ़ा तो नन्नू जो सुलतान मुजफ्फर कहलाता था और जमींदारोंके पास भागा भागा फिरता था जामके पास गया। जाम सामने आकर खानेआजमसे लड़ा और हारा। तब नन्नूने जाकर रायभाराकी शरणली। खानआजमने उसको मांगा तो इसने बादशाही लशकरसे लड़नेकी सामर्थ्य अपनेमें न देखकर नन्नूको खानके हवाले किया। इस सेवासे उसने अपना राज्य बचालिया। पहले जब अहमदाबादमें सवारी आई और जल्दही कूच होगया तो यह हाजिर न होसका था। इसका देश दूर था और तब इस पर सेना भेजनेका भी अवकाश न था। अब जो दैवयोगसे फिर इधर आना हुआ तो शाहजहांने राजा विक्रमाजीतको कुछ बादशाही कर्मचारियोंके साथ इस पर भेजा। इसने आनेहीमें अपनी रक्षा देखकर चौखट चूमी। दोसौ मोहरें हजार रुपये और सौ घोड़े भेंट किये। घोड़ा एक भी ऐसा नहीं जो काम आवे। इसकी उमर ८० सालसे अधिक जान पड़ती है। यह ६० साल बताता है। इसकी शक्ति और इन्द्रियोंमें कुछ निर्बलता नहीं जान पड़ती। इसका साथी एक बूढ़ा देखा गया, जिसकी डाढी मोंछें भवें सब सफेद हैं। उसने कहा मेरा लडकपन भाराको याद है। मैं उसके सामने बूढा हुआ हूं।"

अबुलहसन चित्रकार—इसी दिन बादशाहने अबुलहसन चित्रकारको "नादिरुज्जमां"की उपाधि दी। बादशाह लिखता है—"इसने मेरे दरबारका चित्र जहांगीरनामेके मंगलाचरणमें खेंचकर

दिखाया जो सराहने योग्य था और जिससे उस पर बड़ी कृपा हुई। इसका चित्र दुनिया भरमें प्रसिद्ध होगया। वह लासानी है। यदि आज उस्ताद अबदुलहई और बहजाद जीतेरहते तो इसके कामको सराहते। इसका पिता आकारजाई मेरी युवराजावस्थामें आकर नौकर हुआ था। इससे यह इस दरगाहका खानाजाद चाकर हैं। मै बचपनसे अबतक निरन्तर इसका लालन पालन करता रहा हूं जिससे यह इस पदको पहुंचा है। ऐसेही उस्ताद मनसूर नक्काश भी जिसे 'नादिरुल असू' का खिताब मिलाहुआ है। नकशे बनानेके काममें अपने समयका एकही है। मेरे और मेरे पिताके साम्राज्य में यह दो आदमी अपना सानी नहीं रखते।"

"मेरी चित्रकी रुचि और पहचान यहांतक बढ़गई है कि प्राचीन और नवीन उस्तादोंमेंसे जिस किसीका काम मेरे देखनेमें आता है मैं उसका नाम सुने बिनाही झट उसे पहचान लेता हूं कि असुक उस्तादका बनाया है। यदि एक चित्रमें कई चेहरे हों और हरेक चेहरा अलग अलग चित्रकारका बनाया हुआ हो तो मैं जान सकता हूं कि कौन चेहरा किसने बनाया है। और यदि एकही चेहरेमें आंखे किसीकी और भवें किसीकी बनाई हुई हों तो भी मैं पहचान लूंगा कि बनानेवाले कौन हैं।"

वर्षा—२१ रविवार (सावन सुदी १) की रातको वर्षा आरम्भ हुई।

अमरदाद।

वर्षा और साबरमती नदी—१ मंगलवार (सावन सुदी ३) तक मेह बहुत बरसा और फिर १६ दिन तक बरसता रहा। बहुतसे मकान, रेतमें जड पक्की न होनेसे गिरपडे। कुछ लोग भी मर गये। बादशाह लिखताहै—"नगरनिवासियोंसे सुनागया कि जैसा मेह इस वर्ष बरसा है हमें स्मरण नहीं है कि वैसा पहले कभी बरसा हो। साबरमती भरी दिखाई देती है तथापि कई जगह पायाब है। हाथी तो सदा नदीसे आते जाते हैं। जिस दिन वर्षा नहीं होती

उस दिन घोड़े और आदमी भी पार होने लगते है। इस नदीका निकास रानाके पहाडोंसे है। कोकरेके घाटेसे निकलती है। जब डेढ कोस बहकर सेरपुरमें आती है तो इसे बागल कहते हैं। पीछे तीन कोस चलकर सांभरमती कहलाती है।

राव भारा—१० गुरुवारको बादशाहने हाथी, हथनी, जडाऊ खञ्जर और ४ अंगूठियां लाल, पीलेयाकूत नीलम पन्नेकी राव भाराको दीं।

हीरेकी खान—इससे पहले खानखानांने खानदेशके जमींदार पनजूसे हीरेकी खान लेनेके लिये अपने बेटे अमरुल्लहको बादशाह के हुक्म सहित भेजा था। इस दिन उसकी अर्जी पहुंची कि उस जमींदारने बादशाही सेनासे लड़ना अपने बूतेके बाहर देखकर वह खान भेट कर दी और बादशाही दारोगा उस पर बैठ गया। वहांके हीरे असली और उत्तम होनेके कारण सब हीरोंसे बढ चढ कर है। जौहरी उन पर बड़ा विश्वास रखते हैं। सब सुडौल और बढिया होते हैं। दूसरी गोकड़ेवाली हीरोंकी खान बिहारमें है। पर वहां खानसे हीरे नहीं निकलते। बर्षाकालमें पहाडसे पानीका रेला आता है। उसके आगे बांध बांधते हैं। जब रेला उस बांध परसे निकल जाता है तो जाननेवाले लोग वहां जाकर हीरे निकालते है। तीन सालसे वह देश बादशाही कर्मचारियोंके अधिकार मे है। वहांका जमींदार कैद है। जल वहांका विषैला है। बाहरका आदमी वहां नहीं रह सकता।

तीसरी खान करनाटकमें कुतुबुलमुल्ककी सीमाके पास है। यहां पचास कोसके बीचमें खाने है यह जमींदारोंके पास है इन खानों का हीरा पक्का होता है।

दीपमालिका—१४ शाबान चन्द्रवार (सावन सुदी १५) को शबबरात थी। बादशाहके हुक्मसे कांकरिया ताल और उसके बीचके मकानों पर बडी भारी दीपमाला हुई और आतिशबाजी छोडी गई। उस समय मेह खुल गया था ऐसीही दीपमालिका शुक्रवार की रातको भी हुई तब भी बादल वर्षा न थी।

इसी दिन एतमादुद्दौलाने एक उत्तम नीलमणि और एक हाथी बिना दांतका चांदीके साज सहित भेट किया। हाथी सुन्दर और सुडौल था इस लिये बादशाहने निजके हाथियोंमें लेलिया।

सन्यासी—बादशाह लिखता है—"कांकरिया तालके ऊपर एक कुटीमें एक संन्यासी रहता था। मेरा चित्त हमेशा ज्ञानी पुरुषोंके सत्सङ्गमें लगा रहता है इस लिये मैं सीधा उससे मिलने गया और बहुत देर तक उसका सत्सङ्ग करता रहा। वह ज्ञान और बुद्धिसे शून्य नहीं है। वेदान्तका पूरा ज्ञाता है पूरा त्यागी और आशा तृष्णासे रहित है। यह कह सकते हैं कि संन्यासियोंमें इससे बढ़ कर कोई नहीं देखा गया।

सारसके अन्डे—चन्द्रवार, २१ अमरदाद (भादों बदी ८) को उस सारसने जिसके गर्भधारणका वर्णन पहले लिखा जाचुका है बगीचे में घास फूस इकट्ठा करके पहले एक अडा और तीसरे दिन दूसरा अडा दिया। मादा रातको अकेली अंडे पर बैठती है और नर उसके पास खडा होकर पहरा देता है। ऐसा चौकस रहता है कि किसी जानवरको वहां फटकनेकी मजाल नहीं। एकबार एक बड़ा नेवला उधर आनिकला। सारस उस पर वेगसे झपटा। जबतक उसे उसके बिलमें न घुसा दिया तबतक उसका पीछा न छोड़ा। जब सूर्य्य चमकता है तो नर मादाके पास जाकर चोंचसे उसकी पीठ खुजाता है। इसी प्रकार मादा भी नरको उठा कर आप बैठती है। सारांश यह है कि रातको मादा अकेली अंडे पर बैठी रहती है और दिनको बारी बारीसे बैठते हैं। उठते बैठते बडी सावधानीसे है कि जिससें कहीं अडेको ठेस न लग जावे।

शिकारके हाथी—इसी दिन गजपतिखां, बहोचखां और शाहजहांके शिकारी जिन्हें बादशाह हाथी पकडनेके लिये छोड आया था सेवामें उपस्थित हुए। सब मिलाकर ७३ हाथी ११२ हथनिया पकडी गई। इन १८५ मेंसे ४७ हाथी और ७५ हथनिया बादशाहके महावतोंने और २६ हाथी और ३७ हथिनियां शाहजहांके शिकारियोंने पकड़ी थीं।

फतहबाग—२४ गुरुवार (भादों बदी ११) को बादशाह फतह-बागमें जाकर दो दिन सुख पूर्वक रहा। शनिको पिछले दिनसे राजभवनमें आगया।

आसफखांके बगीचेमें जाना—आसफखांने प्रार्थना की थी कि उसकी हवेलीके बगीचेमें नाना प्रकारके फूल फूलने लगे हैं इस लिये बादशाह गुरुवार (भादों सुदी ३) को उसके घर गया और उस खिलेहुए बगीचेको देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। उसने ३५०००)के जवाहिर जड़ाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र भेट किये।

ठट्ठेकी सूबेदारी—बादशाहने मुजफ्फरखांको हाथी सिरोपाव देकर फिर ठट्ठेकी सूबेदारी पर भेजा।

ईरानके बादशाहको पत्र—ईरानका व्यापारी ख्वाजा अबदुल-करीम गीलानी, ईरानके शाह अब्बासका पत्र और थोडीसी सौगात लाया था। इस दिन बादशाहने उसको भी हाथी सिरोपाव देकर विदा किया और शाहके लिये भी कुछ उपहार पत्रोत्तर सहित उसको दिये। खानआलमके लिये भी प्रसादपत्र और अपने पहननेके वस्त्र भेजे।

शहरेवर।

सारसके अंडे—शुक्रवार (भादों सुदी ४) को शहरेवर महीना लगा। ३ रविवारसे गुरुवारकी रात तक मेह बरसता रहा। बाद-शाह लिखता है—"विचित्र बात यह है कि और दिनों तो सारस ५।६ बेर बारी बारीसे अंडोंपर बैठा करते थे। परन्तु इन दिनोंमें मेह निरन्तर बरसता रहा था और पवन भी ठण्डी होगई थी, अण्डोंको गर्म रखनेके लिये प्रातःकालसे दोपहर तक नर बराबर बैठा करता था। आजसे मादाही अगले प्रभात तक बैठने लगी है कि कहीं बहुत उठने बैठनेसे अंडोंको ठण्ड न लग जावे। मनुष्य जो काम अपनी समझसे करता है पशु वही प्रकृतिके सिखानेसे कर-ने लगता है। यह विचित्रबात है कि पहले तो सारस अंडोंको बहुत पास अपनी छातीके नीचे रखते थे। पर जब १४।१५ दिन होगये

तो उनको कुछ अलग रखने लगी कहीं पास रहनेसे बहुत गर्मी पाकर सड़ गल न जावें ।

आगरेको कूच—७ गुरुवार (भादों सुदी १०) को आगे जाने वाले डेरे आगरेकी ओर लगाये गये। इससे पहले भी ज्योतिषियों ने मुहूर्त्त निकालाथा, परन्तु जब मेह बहुत बरसा और महमूदाबाद की नदी तथा महानदीसे लशकरका उतरना कठिन प्रतीत हुआ तो रुक गये। अब इस दिन डेरे बाहर निकाले गये।

२१ (आश्विन बदी १०) गुरुवारको बादशाहके प्रयाणका मुहूर्त निश्चय हुआ।

कांगडेका किला और राजा विक्रमाजीत—बादशाह लिखता है—शाहजहांने कांगड़ा जीत लेनेकी प्रतिज्ञा करके जिसके कंगूरे तक किसी बादशाहका हाथ नहीं पहुंचा था अपने विश्वासियोंमेंसे राजा बासूके बेटे सूरजमल और तकीको वहां भेजा था पर अब जाना गया कि उस दुर्गम दुर्गका विजय करना उन लोगोंसे सम्भव नहीं है। इस लिये उसने राजा विक्रमाजीतको जो उसके प्रतिष्ठित पारिषदोंमेंसे है अपने पासके दो हजार सवारों और जहांगीरी बन्दोंमेंसे शाहबाजखां लोदी, हृदयनारायण हाडा, राय पृथ्वीचन्द, रामचन्द्रके पुत्रों, २०० बर्कन्दाज सवारों, ५०० तोपची प्यादों सहित भेजना ठहरायाथा। उसके जानेका मुहूर्त आजका था, इसलिये उसने १००००) का कण्ठा पन्नोंका भेट करके तलवार और सिरोपाव पाया और उस काम पर बिदा हुआ। उस सूबेमें उसकी जागीर नहीं थी सो पुत्र शाहजहांने बढानेका परगना जो २२ लाख दाम का था उसकी जागीरमें देनेके लिये अपने इनाममें मांग लिया।

कारखानोंका दीवान ख्वाजा तकी मोतमिदखांका खिताब और खिलअत पाकर दक्षिणके सूबेका दीवान हुआ और हिम्मतखां खासा परम नरम पाकर सरकार भरूंचकी फौजदारी पर गया।

राय पृथ्वीचन्द—राय पृथ्वीचन्दको कांगडे जाते समय सात सदी जात और साढे चारसौ सवारोंका मनसब मिला।

जहांगीरनामा—बादशाह लिखता है, "जहांगीरनामेमेंसे १२ वर्षका वृत्तान्त पुस्तकाकार तय्यार होगया। मैंने निज पुस्तकालय के कार्मचारियोंको हुक्म दिया था कि इस बारह सालके वृत्तान्तको एक पुस्तक बनाकर उसकी कई नकलें की जावें। वह मैं सेवकों को दूंगा और सब देशोंमें भेजूंगा। राजकर्म्मचारी और विद्वान उसे अपना पथप्रदर्शक बनावें। अब ८ शुक्रवार (भादों सुदी ११) को उसकी एक जिल्द नकल होकर और बंधकर आई। वह पहली पुस्तक मैंने पुत्र शाहजहांको दी। उसे मै सब बातोंमें सब पुत्रोंसे श्रेष्ठ जानता हूं। अपने हाथसे मैंने उक्त पुस्तक पर लिख दिया कि अमुक तिथिको अमुक स्थानमें यह पुस्तक पुत्र शाह-जहांको दीगई। आशा है कि उसे ईश्वरकी प्रसन्नता और प्रजाका आशीर्वाद प्राप्त करनेकी श्रद्धा होगी।

सुबहान कुली किरावलको प्राणदण्ड—सुबहान कुली हाजी जमाल बलोचका बेटा था। वह अकबर बादशाहके अच्छे किरा-वलोंमेंसे था। उनके स्वर्गलाभके पीछे सुबहानकुली बंगालेमें इस-लामखांके पास चला गया। इसलामखां उसे बादशाही खानाजाद जानकर उसका आदर और विश्वास करता था। परन्तु वह उसमान पठानके लालच देनेसे इसलामखांको मार डालनेके विचारमें था कि इसलामखांने भेद पाकर उसको तुरन्त पकड लिया और कारागारमें डाल दिया। इसलामखांके मरे पीछे वह फिर आकर बादशाही किरावलोंमें भरती होगया। इसलामखांके बेटेने बादशाहसे अर्ज की कि यह पास रहनेके योग्य नहीं है। बादशाहके कारण पूछने पर उसने वह सब वृत्तान्त कह दिया। इस पर बादशाह उसे दण्ड देना चाहता था। परन्तु उसके भाई बन्दोंने जो सब किरावल थे प्रार्थना की कि उस पर वृथा दोष लगाया गया है। बलोचखां किरावलबेगी (किरावलोंका नायक) उसका जामिन होगया। बादशाहने क्षमा करके कह दिया कि बलोचखांके साथ रहकर काम किया करे। इस पर भी वह विना प्रयोजन भागकर आगरेको

चला गया। बादशाहने बलोचखांपर उसके हाजिर करनेकी ताकीद की। उसने अपने आदमी ढूंढनेको भेजे। बलोचखांके भाईको वह झडा नामक गांवमें मिला, जहां फसादी लोग रहते थे। वह उसका पक्ष करके लडनेको उद्यत हुए। तब उसने आगरेमें जाकर ख्वाजा जहांसे हाल कहा। उसने कुछ फौज भेजी तो गांववालोंने डरकर उसको पकडवाया। वह इस दिन जंजीरोंसे जकडा हुआ दरगाहमें लाया गया। बादशाहने उसके मार डालनेका हुक्म देदिया, "मीर गजब" तुरन्त उसको दण्डस्थानमें लेगया। थोडी देर पीछे बादशाहने एक पारिषदके निवेदन पर उसकी जान बख्श दी पर उसका एक पांव काटनेकी आज्ञा दी। इस आज्ञाके पहुचनेसे पहलेही वह मारा जाचुका था। बादशाहने पछताकर यह स्थिर किया कि अब जो हुक्म किसीको वध करनेका दिया जाय तो उसमें चाहे कितनीही ताकीद और जल्दी की जाय तथापि दिन छिपे तक उसे न मारें। यदि उस समय भी कोई हुक्म उसके छोड़ देनेको न पहुचे तो फिर प्राणदण्ड देदें।

महीनदीका चढाव—रविवारको मही नदी बहुत जोरसे चढी। दिन चढेसे चढने लगी थी अगले दिन उतर गई। वहांके वृद्ध लोगोने बादशाहसे कहा कि हमने केवल एक बेर सुरतिजाखांकी हाकिमीमें इस नदीका इतना चढाव देखा था।

कविता पर इनाम—पूर्वकालमें मगरबी नाम एक शाइर था उसने खुरासानके बादशाह सुलतान सजरको प्रशंसामें कविता लिखी थी। उसका एक शेर सुलताननें बहुत पसन्द किया था। बादशाने सुना तो बहुत सराहा। इसपर सईदायजवाहरबाशी (आभूषणागारके अध्यक्ष) ने बादशाहको प्रशंसामें कविता बनाकर सुनाई। उस पर प्रसन्न होकर बादशाहने १४ गुरुवार (आश्विन बदी २) को हुक्म दिया कि सईदायके बराबर सोना तोल दे।

दिन ढले बादशाह रुस्तमवाडीमें हवा खाने गया जो खिली हुई थी।

मुल्ला अमीरी—१५ शुक्र (आश्विन बदी ३) को मुल्ला अमीराने जो अबदुल्लहखां उजबकके पास रहा करता था तूरानसे आकर चौखट चूमी। उसको बादशाहने एक हजार रुपये और शाहजहां ने पांच सौ रुपये सिरोपाव सहित दिये।

मौलसिरीके वृक्ष पर लेख—शाहजहांके भवनमें कुण्डके पास चबूतरेपर एकमौलसिरीका वृक्ष पीठलगाकर बैठनेके योग्य था, परन्तु एक ओरसे ३ गज तक खोखल होजानेसे बुरा लगता था। बादशाह ने उसे देखकर आज्ञादी कि वहां सङ्गमर्मरका एकटुकड़ा ऐसा जोड दे कि जिससे पीठ लगाकर बैठ सकें। बादशाहने तुरन्तही एक शेर भी कह कर सिलावटोंको उस शिला पर खोद देनेके वास्ते दिया। उस दोहेका मतलब यह है—"यह बैठक सात विलायतोंके स्वामी सम्राट अकबरके बेटे जहांगीरकी है।"

खास दौलतखानेमें बाजार—१९ मंगलवार (आश्विन बदी ७।८) को रातको दौलतखाने खासमें बाजार सजाया गया। बादशाह लिखता है—"पहले ऐसी प्रथा थी कि कभी कभी शहरके कारीगर और बाजारवाले आज्ञा पाकर राजभवनके राय-आंगनमें दुकाने लगाते थे। जवाहिर, जडाऊ गहने और नाना प्रकारके पदार्थ सजाकर दिखाते थे। मैने सोचा कि जो यह बाजार रातको लगाया जावे और दुकानोंके आगे बहुतसे फानूस रखे जावें तो और ही शोभा होगी। ऐसाही हुआ। मैने सब दुकानोंमें फिरकर जवाहिर जडाऊ गहने और जो जो चीजे पसन्द आईं खरीदीं। हर दुकान से कुछ कुछ अनोखे पदार्थ मुल्ला अमीरीको लेदिये। वह इतने अधिक थे कि वह सम्हाल न सकता था।

आगरेको कूच—२१ शहरेवर गुरु सन१३ ता० २२ रमजान १० ७ २॥ घटे दिन चढे बादशाहने आगरेको कूच किया। दौलतखानेसे कांकरिया ताल तक सोना उछालते गये। इसी दिन सौर पच्चीय तुलादानका उत्सव भी हुआ। बादशाहको ५०वां सौर वर्ष लगा। उसने नियमानुसार सोने और दूसरे पदार्थोंमें तुलकर

मोती और सोनेके फूल लुटाये। रातको दीपमालिकाकी रात अन्तःपुरमें सुखपूर्वक बिताई।

रोजा खोलना और ईश्वर स्तुति—२२ शुक्रवार (आश्विन बदी ११) को बादशाहने आज्ञा दी कि इस शहरमें जितने मौलवी मुल्ला और शेख रहते हैं वह सब बुलाये जायं। वह सब मेरे साथ रोजा खोलें। बादशाह लिखता है—तीन रातें इसी प्रकारसे व्यतीत हुईं। मैं प्रत्येक रात्रिमें सभा विसर्जन होने तक खड़ा रहता था और यह स्तुति पढ़ा करता था—

"हे परमात्मा सम्बिधान तूही है, तूही समर्थ है तूही दीनपालक है। मैं न तो दिग्विजयी हूं और न शासक हूं। तेरे द्वारके भिक्षुकोंमेंसे एक भिक्षुक हूं। तूही मुझको भलाई और सुकृति करनेकी सामर्थ्य देता है, नहीं तो मुझसे किसीके वास्ते क्या भलाई होसकती है। मै दासोंका स्वामी तो हूं पर अपने स्वामीका कृतघ्न दास हूं।"

"बहुतसे दीन दरिद्री जो सेवामें नहीं पहुचे थे और जीविका की अभिलाषा रखते थे मैंने उन सबकी योग्यतानुसार भूमि और खर्च दिलाकर सबकी मनोकामना पूर्ण करदी।"

सारसके बच्चे—२१ गुरुवार (आश्विन बदी १०) को सारसने एक बच्चा निकाला फिर सोमवारकी रातको दूसरा। पहला बच्चा ३४ दिन और दूसरा ३६ दिन पीछे हुआ। यह राजहंसके बच्चोंसे सवाये थे। या मोरके एक महीनेके बच्चेके बराबर थे। इनके रूयें नीले रंगके थे। पहले दिन उसने कुछ नहीं खाया। दूसरे दिन उसकी मा छोटी छोटी टीड़ियां चोंचमें लेकर कभी तो कबूतर के समान खिलाती थी और कभी मुर्गीकी भांति बच्चोंके आगे डाल देती थी कि स्वयं चुग लें। छोटी टीडी तो समूचीही बच्चोंके मुंह मे डाल देती थी और बड़ोंके दो तीन टुकडे करदेती थी जिसमें बच्चे सुगमतासे खालें। बादशाह लिखता है—"मुझे उनके देखनेकी अत्यन्त लालसा थी। इस लिये आज्ञा दी कि बहुतही सावधानीसे

लावें जिससे उन्हें कुछ सदमा न पहुंचे। देखकर फिर आज्ञा दी कि दौलतखानेके अन्दर उसी बागीचेमें लेजाकर बड़ी सम्भालसे रखें। जब चलने फिरने लगें तब मेरे पास फिर लावें ।” इसी दिन हकीम रूहुल्लहको एक हजार रुपये इनाम मिले।

२६ मंगलवार (आश्विन वदी ३०) को बादशाहने कांकरिया तालसे चलकर गांव खंजमें विश्राम किया।

जलवायुकी परीक्षा—२७ बुधवार (आश्विन सुदी १) को महमूदाबादकी नदी पर जिसका नाम एजक है डेरे हुए। बादशाह लिखता है—अहमदाबादका जलवायु बहुत बुरा था इस लिये महमूद वेगड़ेने हकीमोंकी सम्मतिसे यह शहर बसाया था। फिर जब उसने चांपानेर जीता तो यहां राजधानी बनाई। महमूद शहीद तक गुजरातके हाकिम बहुधा यहीं रहा करते थे और इस महमूद ने तो जो अन्तिम बादशाह गुजरातका था महमूदाबादको अपना वासस्थानही ठहरा दिया था। निस्सन्देह महमूदाबादके जलवायु को अहमदाबादसे कुछ लगाव नहीं है। मैंने परीक्षाके वास्ते फरमाया कि एक बकरीको उसका चमड़ा उधेड़कर कांकरिया तालमें लटकावें और दूसरीको महमूदाबादमें, जिससे वायुका अन्तर जाना जावे। कांकरिया तालमें सात घड़ी दिन चढ़े बकरी लटकाई गई थी। जब तीनघड़ी पिछला दिन रहा तो वह ऐसी सड़गई थी, कि दुर्गन्धके मारे उसके पाससे निकलना दुस्तर होगया था और महमूदाबादमें तड़केसे सन्ध्या तक तो बकरीका कुछ नहीं बिगड़ा डेढ़ पहर रात जाने पर उसमेंसे दुर्गंधि आने लगी। इसका तात्पर्य्य यह है कि अहमदाबादके पास तो ८ घण्टेमें बकरी सड़ी और महमूदाबादमें १४ घण्टे पीछे।

अमीरोंकी बिदा—२८ गुरुवार (आश्विन सुदी २) कोही बादशाहने शाहजहांके नियत किये हुए गुर्जराधीश रुस्तमखांको हाथी घोड़ा और परम नरम खासा देकर बिदा किया और जहांगीरी बन्दोंको जो इस सूबेमें रखे गये थे यथायोग्य घोड़े और सिरोपाव दिये।

रावभाराकी बिदा—२८ शहरेवर १ शव्वाल (आश्विन सुदी ३) को राव भारा खिलअत जड़ाऊ तलवार और खासा घोडा पाकर अपने देशको बिदा हुआ। उसके बेटोंको भी घोड़े और सिरोपाव मिले।

कुरानका अनुवाद—शनिवारको बादशाहने शाह आलमके पोते सैयद महमूदको कुरानकी सौगन्द देकर कहा कि जो तू चाहता हो बेधडक मांगले। उसने कहा कि जब मुझे कुरानकी कसम दिलाई जाती है तो मैं एक ऐसा कुरान मांगता हूं जिसको सदैव अपने पास रखूं और उसके पाठ करनेका पुण्य हजरतको मिले। इसपर बादशाहने छोटेआकारका एककुरान याकूतका लिखाहुआ जो जगत के अपूर्व पदार्थोंमेंसे था उसको इनायत किया और उसकी जिल्द पर अपने हाथसे लिख दिया कि असुक मितीको असुक स्थान पर सैयद महमूदको दिया गया। बादशाह उसकी विद्वता और सज्जनताकी प्रशंसा करके लिखता है—"मैंने उससे कहा कि कुरानका पूरा अनुवाद जिसमें मूलसे एक अक्षर भी घटाया बढ़ाया न जावे सीधी और सरल फारसी भाषामें करके अपने सुयोग्य पुत्र सैयद जमालके हाथ मेरे पास भेजदे।

शेखोंकी बिदा—गुजरातके शेखोंको बादशाहने कई बार धन दिया था। अब फिर उनमेंसे हरेकको रुपये और कपडे देकर बिदा किया।

शराब—बादशाह लिखता है, गुजरातकी जलवायु मुझे नहीं रुचा था। इससे हकीमोंने मुझे शराब कम करनेकी सलाह दी। मैं उनकी सलाहसे शराब छोडने लगा। एक महीनेमें एक प्याला कम करदिया। पहले साढ़े सात सात तोलेके छः प्याले एक रातमें पीता था अब सवा छ, छः तोलेके छः प्याले। सोलह सतरह साल पहले इलाहाबादमें मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जब मेरी उमर पचास सालकी होजायगी तो तीर बन्दूकका शिकार छोडकर जीव जन्तु का अपने हाथसे मारना बन्द कर दूंगा। आज मुझे पचासवां साल

लगा। एक दिन धुएं और तपकी अधिकतासे मेरा सांस रुकने लगा था। बडा कष्ट होता था। उस दशामें ईश्वरकी प्रेरणासे वह प्रतिज्ञा याद आगई। पुराना सङ्कल्प दृढ़ होगया। मैंने जीमें निश्चय किया कि पचासवां साल उतरने पर जब सङ्कल्पकी अवधि पूरी होगी तो जिसदिन स्वर्गीय श्रीमानके दर्शनको जाऊंगा उसदिन उनकी पवित्र आत्मासे इस काममें सहायता लूंगा और इसे छोड दूंगा। यह कल्पना करतेही मेरा कष्ट छूट गया। मैंने प्रसन्न होकर परमेश्वरका धन्यवाद किया। फिरदौसी(१)ने क्या अच्छा कहा है कि चींटीको भी मत सता कि उसके जान है और जान सबको प्यारी है।

मेहर महीना।

४ गुरुवार (आश्विन सुदी ८) को आदिलखांके वकील सैयद कबीर और बखतरखां जो भेट लेकर आये थे बिदा हुए। बादशाह ने सैयद कबीरको खिलअत, जडाऊ खञ्जर, घोडा दिया और बखतरखांको घोडा, सिरोपाव और जडाऊ उर्वसी जिसे उस देशके मनुष्य गलेमें लटकाते हैं दी। ६००० दरब खर्चके वास्ते दोनोंको दिये। आदिलखांने कई बेर शाहजहां द्वारा बादशाहकी तसवीर मांगी थी। इस लिये अपना एक बहुमूल्य चित्र, एक लाल और एक खासा हाथी उसके वास्ते भेजा। पत्रमें लिखा कि निजामुल्मुल्क और कुतुबुल्मुल्ककी विलायतमेंसे जितना कुछ लेसकेगा वह उसके इनाममें दिया जावेगा। जब कभी वह सहायता चाहेगा तो शाहनवाजखां एक सजी हुई फौज उसके पास भेज देगा। बादशाह लिखता है—"पिछले समयमें जब कि निजामुल्मुल्क दक्षिण के हाकिमोंमें बडा था तो सब उसको बडा मानते थे और बडा भाई जानते थे। अब जो आदिलखांने अच्छी सेवा की तो वह पुत्रकी पदवीसे सम्मानित हुआ और मैंने सारी दक्षिणकी सरदारी उसीको दी और तसवीर पर यह छन्द अपने हाथसे लिख दिया—

(१) शाहनामेके कर्त्ता फारसीका कवि।

"तेरी ओर हमारी कृपादृष्टि है, तू हमारी छत्रछायामें सुखसे बैठा रह, हमने तेरे वास्ते अपना चित्र भेजा है जिससे तू हमारा स्वरूप देखकर हमारा अन्तःकरण पहचाने।"

शाहजहांने हकीम हमामके बेटे हकीम खुशहालको जो बचपनमें उसके पास रहता था ऊपर कहे वकीलोंके साथ बादशाही कृपाकी बधाई देनेके वास्ते भेजा।

जहांगीरनामा—इन दिनों जहांगीरनामेकी दो नकलें फिर तय्यार होकर आई थीं। बादशाहने एक एतमादुद्दौलाको दी और दूसरी उसके पुत्र आसफखांको।

बिहारकी सूबेदारी—५ शुक्रवार (आश्विन सुदी ८) को जहांगीरकुलीखांके बेटे बहरामने सूबे बिहारसे आकर कोकरेकी खानसे निकले हुए कई हीरे भेट किये।

जहांगीरकुलीसे उस सूबेमें अच्छी सेवा नहीं बनी थी और बादशाहसे अनेक बार अर्ज हुई थी कि उसके भाई बन्द उस देशमें अन्याय करके प्रजाको सताते हैं और उनमेंसे हरेक अपनेको हाकिम ठहराकर जहांगीरकुलीखांको कुछ माल नहीं समझता है। इस लिये बादशाहने पुराने सेवक मुकर्रबखांको बिहारकी सूबेदारी पर नियत करके अपने हाथसे हुक्म लिखा कि झट बिहारको चढ जावे।

कोकरेकी खानके हीरे—कोकरेकी खानको जीते पीछे इब्राहीमखां फतहजंगने वहांके कुछ हीरे भेजे थे। उनमेंसे कुछ बादशाहने कारीगरोंको जिला करनेको दिये थे। अब जो बहराम आगरेसे पहुंचकर दरगाहमें आने लगा तो जो हीरे उनमेंसे तय्यार होगये थे वह ख्वाजाजहाने उसके हाथ भेज दिये। उनमेंसे एक ऊदे रंगका था। देखनेमें नीलमसे भिन्न नहीं लगता था। बादशाह लिखता है—इस रंगका हीरा देखनेमें न आया था। तोलमें कई रत्ती है। जौहरियोंने तीन हजारका कूता। कहा कि यदि सफेद और सुडौल होता तो बीस हजारका होता।

आम और नीबू—बादशाह लिखता है—इस वर्ष ६ महर (आश्विन सुदी १०) तक आम खाये गये। इसदेशमें नीबू बहुत है और बड़े भी होते हैं। काकर नामका एक हिन्दूके बागसे कई नीबू आये थे जो खूब नर्म और बडे थे। सबमें बडेको मैंने तुलवाया तो ७ तोलेका निकला।

दशहरा—६ शनिवार (विजयादशमी) को दशहरेका उत्सव हुआ। पहले खासेके घोड़े सजाकर लाये गये फिर खासेके हाथी।

महीनदीका चढाव—मही नदी अभी तक लशकरके उतरने योग्य पायाब नहीं हुई थी और महमूदाबादके जलवायुको दूसरे स्थानोंके जलवायुसे कुछ लगाव न था, इसलिये दो दिन फिर वहां बादशाहका पडाव रहा।

महीनदी पर पुल—८ चन्द्रवारको वहांसे कूच होकर गांव मोदे में डेरे हुए। बादशाहने ख्वाजा अबुलहसन बखशीको बहुतसे सेवकों और मल्लाहोंके साथ मही नदी पर पुल बांधनेके लिये भेजा। जिससे सेना पार होजावे और नदीके पायब होनेकी प्रतीक्षा न करना पडे।

९ मंगलको वहां मुकाम रहा और १० बुधवारको एना नामक स्थानमें डेरे हुए।

सारस—पहले सारस बच्चोंके पांव चोंचमें पकड़कर उन्हें औधा कर देता था। उससे यह शङ्का होती थी कि कहीं वह उन्हें मार न डाले। इसलिये बादशाहने नरको बच्चोंसे न्यारा रखनेका हुक्म दिया था। अब फिर इस बातकी जांचके लिये कि सारसको अपने बच्चोंसे मोह है या नहीं उसे बच्चोंके पास छोडा। देखा गया कि नर सारसका स्नेह बच्चोंके साथ मादा सारससे कम नहीं है। वह बच्चोंको प्यारसे औधा किया करता था।

११ गुरुवार (आश्विन सुदी १४) को मुकाम रहा। पिछले दिन ३ काले हरन ४ हरनियां और चिकारे चीतेसे पकडवाये गये।

१४ रविवारको भी चीते द्वारा शिकार हुआ। १५ हरनियां और हरन पकडवाये गये। मिरजा रुस्तम और मुहरावखां दोनों

बाप बेटे बादशाहके कहनेसे सात नील गायें शिकार करके लाये।

शेरका शिकार—बादशाहने यह सुनकर कि इस प्रान्तमें मनुष्य के मांस पर हिला हुआ एक सिंह प्रजाको पीड़ित कर रहा है शाहजहांको उसके मारनेकी आज्ञा दी। वह उस शेरको मारकर रातको ले आया। बादशाहने अपने सामने उसकी खाल उधड़वाई। यह बादशाहके मारे हुए शेरोंसे तोलमें कम निकला।

१५ चन्द्रवार और १६ मंगलवारको बादशाहने शिकारको जा कर दो नील गायें बन्दूकसे मारीं।

कंवल—१८ बृहस्पतिवार (कार्तिक बदी ८) को एक तालके तट पर तंबू तने। प्यालोंकी सभा जुडी। पानी पर कंवलके फूल खिले हुए थे। बादशाहने अपने नौकरोंको प्याले दिये।

हाथियोंकी भेट—जहांगीर कुलीखांने बिहारसे २० और सुरव्वतखांने बंगालेसे ८ हाथी भेजे थे। उनमेंसे बादशाहने एक एक हाथी खासे हाथियोंमें लेकर शेष बांट दिये और कई अमीरोंके मनसब भी बढ़ाये।

शिकार—१९ शुक्रवार (कार्तिक बदी ९) को बादशाहने शिकार मे एक नील गाय मारी। वह लिखता है—मुझे स्मरण नहीं कि मैंने उमर भरमें कभी नर नीलगायके शरीरको छेदकर गोली पार निकलते देखी हो। हां मादाके शरीरसे निकल जाती है। आज २५ पावड़ेकी दूरी थी तो भी गोली नर नीलगायके दो[illegible] पसलीसे पार निकल गई। शिकारी लोग आगे पीछेके पांवोंके फासलेको पावडा कहते हैं।

शिकार—२१ रविवार (कार्तिक वदी ११) को बादशाह रूपं तो बाज जुर्रोंके शिकारको गया और मिरजा, रुस्तम, दाराबखां और मीरमीरां आदि अनुचरोंको कहाया कि नीलगायोंका शिकार करो और जितने चाहो बन्दूकसे मारो। वह १९ नर मादा मार कर लाये। सबने दस दस हरन भी चीतोंसे पकडवाये।

सूबे दक्षिणके बखशी इब्राहीमखांका मनसब खानजमांकी

प्रार्थनासे हजारी जात और दोसौ सवारोंका होगया।

महीनदीका पुल और अकबर बादशाहका एक चरित्र—२२ चन्द्र और २३ भौमवारको लगातार कूच हुआ। रास्तेमें बादशाहने एक सिंहनीको तीन बच्चों सहित बन्दूकसे मारा। आगे जाकर मही नदीके पुलसे उतरा जो १४० गज लम्बा और १४ गज चौडा था। उसे ख्वाजा अबुलहसन मीरबखशीने अति परिश्रमसे ऐसा सुदृढ़ बंधवाया था कि बादशाहने जब अपने सबसे प्रचण्डहाथी गुणसुन्दरको तीन हथनियों सहित परीक्षाके लिये उसके ऊपरसे उतारा तो वह हिला तक नहीं। बादशाह लिखता है—मैंने स्वर्गवासी श्रीमानसे सुना। वह कहते थे कि मैं जवानीमें एक दिन दो तीन प्याले पीकर एक मस्त हाथी पर चढ़ा। मुझे नशा न था और न हाथी मस्त था वरंच वह मेरे काबूमें था। तोभी मै अपने को मतवाला और हाथीको मस्त जनाकर लोगों पर दौड़ाता था फिर दूसरा हाथी मंगवाकर लडाया। दोनो हाथी लड़ते लडते जमनाके पुल तक चले गये। वहां वह हाथी भागा पर राह न पाकर पुल पर गया। मै जिस हाथी पर बैठा था वह उसके पीछे दौडा। उसका ठहरा लेना मेरे हाथमे था। पर मैंने सोचा कि जो हाथीको पुलपर जानेसे रोकूंगा तो लोग समझेंगे कि यह सब कौतुक नशेके न थे बनावटी थे और यह बात स्पष्ट जानली जावेगी कि न मै मतवाला था न हाथी मस्त। बादशाहोंकी ऐसी पोल खुल जाना ठीक नहीं। इसलिये मैंने परमेश्वरकी सहायताका भरोसा करके अपने हाथीको उसके पीछे जाने दिया। दोनो पुल पर चले। पुल नावोंका बना था। जब हाथीके अगले पैर नाव पर पडते थे तो आधी नाव पानीमें डूब जाती थी और आधी ऊपर उठ आती थी। पद पद पर यह आशंका होती थी कि नावोंके रस्से टूट जावेंगे। उधर लोग यह हाल देखकर हाहाकार कर रहे थे। पर भगवानकी कृपासे जो सब जगह और सब दशाओंमें मेरी सहायता करता है दोनो हाथी कुशलपूर्वक पुलसे पार होगये।

२५ गुरुवार (कार्तिक बदी ३०) को मह्नीके तट पर प्यालेकी सभा हुई और कई निज पारिषदोंको जो ऐसी सभाओंमें आसकते थे बादशाहने प्यालोंसे छका दिया। और दो हेतुसे वहां चार मुकाम किये। एक तो स्थान सुरम्य था दूसरे यह कि लोग घब-राहटसे नदीमें न उतर पड़ें।

सारसोंकी लड़ाई—२८ रवि और २९सोमवारको दो कूच बरा-बर हुए। इस दिन बादशाहने एक अजब तमाशा देखा। सारस का जोडा बच्चों सहित गुरुवारको अहमदाबादसे लाया गया था। वह राजभवनके चौकमें जो एक तालके तट पर सजाया गया था फिर रहे थे। अचानक उनकी बोली सुनकर एक जङ्गली सारसोंका जोड़ा तालके उधर बोला और उडकर सीधा इधर आगया। नर नरसे लडने लगा और मादा मादासे लडने लगी। उस समय कई मनुष्य वहां खडे थे परन्तु उन्होंने किसीकी कुछ शंका न की। अन्तको रक्षक दौड़े। एकने नरको पकडा दूसरेने मादाको। नर बडे परिश्रमसे पकडा गया और मादा हाथसे निकल गई। बाद-शाहने नरके गले और पांवोंमें अपने हाथसे कडियां डालकर छोड दिया। दोनो अपने स्थानको चले गये। फिर जब जब यह घरेलू सारस बोलते थे तो वह जङ्गली भी हांक लगाते थे।

हरनोंकी लड़ाई—बादशाह लिखताहै—ऐसाही कौतुक जङ्गली हरनोंका देखा। मैं एक बार करनालके परगनेमें शिकार खेलने गया था। तीस शिकारी और खिदमतगार साथ थे। एक काला हरन कई हरनियों सहित दिखाई दिया। मैंने एक पाला हुआ हरन जो दूसरे हरनोंको पकडा करता था उससे लडनेके लिये छोडा। वह दो तीन बेर सींगोंसे लड़कर लौट आया। मैं उसके सींगोंमें फंदे बांधकर दूसरी बेर छोड़ाही चाहता था जिससे वह उसे फांस लावे। पर इतनेहीमें वह जङ्गली हरन अति क्रोधसे लोगोंकी शंका न करके दौडा आया और दौड़नेहीमें उस हरनसे दो चार टक्करें लड़ाके निकल गया।

इनायतखांकी मृत्यु—इसी दिन इनायतखांके मरनेकी खबर आई। यह निज सेवकोंमेंसे था अफीमी होकर भी मद्यप होगया था। पहले दस्त आने लगे थे फिर मृगीवालेके समान अचेत भी होजाता था। हकीम रुकना, बादशाहकी आज्ञासे उसका इलाज करता था पर रोगकी शान्ति न हुई। अन्तमें जलन्धर हो गया तब उसने आगरे जानेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने बिदा करनेको सामने बुलाया तो पालकीमें डालकर लाया गया। बादशाह लिखता है—"इतना दुबला और कमजोर होगया था कि मानो हड्डियों पर चमडा तना हुआ है। हड्डियां भी गल गई थीं। चित्रकार दुबली पतली तसवीरोंके बनानेमें बहुत दक्षता दिखाते हैं परन्तु कोई ऐसी या इसके जैसी तसवीर देखनेमें नहीं आई थी धन्य है परमेश्वर कि मनुष्य भी इस खाकेका होजाता है। उस्ताद के यह दो शेर यहां खूब घटते थे,—

"मेरी छाया जो मेरे पैर न पकडती, तो मैं प्रलय तक भी उनको न ठहरा सकता।

मेरी हाय पुकार मेरे हृदयकी क्षीणता देखकर कई जगह बैठती है तब होठों तक आती है।"

"अति आश्चर्य्यसे मैंने कहा कि चित्रकार इसका चित्र खेंचलें। उसका हाल बिगडा हुआ देखकर कहा कि ऐसी दशामें क्षण भर भी भगवत स्मरणको न भूले। अपने बालबच्चोंकी चिन्ता न करे। उनकी थोडीसी सेवा हम बहुत समझेंगे। खर्चके लिये दो हजार रुपये देकर उसे बिदा किया। वह दूसरेही दिन परलोकगामी हुआ।

३० मंगलवार (कार्तिक सुदी ५) को मानव नदीके ऊपर डेरे हुए।

आबान।

नये मनसब—१ आबान (कार्तिक सुदी ७) को गुरुवारका उत्सव हुआ जिसमें इतने लोगोंको मनसब मिले—

१ महाबतखांके बेटे अमानुल्लहको हजारी जात ३०० सवार।

२ गिरिधर, राव सालके बेटेको हजारी जात ८०० सवार।

३ खान आजमके बेटे अबदुल्लहको हजारी जात ३०० सवार।

४ दिलेरखांको जो गुजरातके जागीरदारोंमेंसे था हाथी और घोड़ा।

५ शहबाजखां कम्बोका बेटा रणबाजखां जो दक्षिणसे बुलाया गया था, ८ सदी जात और ४०० सवारोंका मनसब पाकर बंगालेकी बखशीगरी और वाकिआनवीसके काम पर नियत हुआ।

शाहजादा शुजा—३ शुक्रवार (कार्तिक सुदी ८) को कूच हुआ। शाहजहांका बेटा शाहजादा शुजा नूरजहां बेगमके पास पलता था। और बादशाहको उससे बहुत मोह था, हब्बे डब्बेके रोगमें ग्रस्त होकर अचेत होगया। जब बहुतसे उपचार करने पर भी चैतन्य न हुआ तो बादशाहने परमेश्वरसे उसके कष्ट निवारण करनेकी दुआ मांगी। ५० वर्षकी अवस्था होजाने पर जो तीर और बन्दूक से जीवोंके न मारनेकी कल्पना मनमें कर रखी थी उसकी प्रतिज्ञा विशुद्ध चित्तसे की कि अब फिर किसी जीव जन्तुको अपने हाथसे न मारूंगा। इस पर भगवत कृपा होकर उसका कष्ट निवृत्त होगया।

अकबर बादशाहका संकल्प—बादशाह लिखता है—"जब मैं माके पेटमें था तो एक दिन हलाचला नहीं। दासियोंने विह्वल होकर मेरे पिताके कान तक यह बात पहुंचाई। वह उन दिनों सदा चीतेका शिकार किया करते थे। उस दिन शुक्रवार था। उन्होंने मेरे आरोग्यके लिये यह सङ्कल्प किया कि जीवन भर शुक्रवारको चीतेका शिकार न करूंगा।" वह जब तक जिये अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहे और मैंने भी उनका अनुसरण करके अबतक कभी शुक्रके दिन चीतेका शिकार नहीं किया है।

शुजाकी निर्बलतासे तीन दिन तक वहीं निवास हुआ।

ऊटनीका दूध—७ मङ्गलवार (कार्तिक सुदी १२) को कूच

हुआ। एक दिन हकीम(१)का बेटा ऊटनीके दूधकी प्रशंसा करता था। आसफखांके पास एक विलायती ऊटनी दूधवाली थी। बादशाहने उसका कुछ दूध पिया तो मीठा और स्वादिष्ट प्रतीत हुआ। दूसरी ऊटनियोंके दूधकी भांति खारा न था। बादशाह महीने भर तक नित्य एक प्याला जो पानी पीनेके प्यालेसे आधा था उक्त दूध का पीता रहा। वह लिखता है—"इससे बहुत लाभ हुआ और प्यास जाती रही। अजब बात यह है कि दो वर्ष पहले जब आसफखांने यह ऊटनी मोल ली थी तो न इसके साथ बच्चा था न इसके दूध था। इन दिनोंमें अकस्मात दूध उसके थनोंसे उतरने लगा था। उसे नित्य ५ सेर गायका दूध ५ सेर गेहूं १ सेर गुड और १ सेर सौंफ खाने को दी जाती है। जिससे उसका दूध मीठा और गुणकारी हो। यह मुझे अच्छा लगता है। मैंने परीक्षाके लिये गाय और भैंसका दूध मंगाकर भी चखा तो मिठासमें ऊटनीके दूधसे उनके दूधका कुछ लगाव न था। तब हुक्म दिया कि कई दूसरी ऊटनियोंको भी इसी प्रकारकी खुराक दें। जिससे यह जाना जावे कि दूधका मिठास अच्छे रातबसे होता है या इस ऊटनीका दूध मूलमें ही मीठा है।"

कशमीरी नाव—८ बुधवार (कार्तिक सुदी १३) को कूच होकर ९ गुरुवार (कार्तिक सुदी १४) को डेरे एक बडे तालके ऊपर लगे। शाहजहांने एक कशमीरी नाव जिसमें चांदीकी बैठके बनी हुई थी भेट की। बादशाहने पिछले दिन उसमें बैठकर जलविहार किया।

१० शुक्रवारको कूच होकर ११ शनि (अगहन बदी १) को परगने दोहदमें निवास हुआ।

पोतेका जन्म—१२ आबान रविवार सन १३ जुलूस १५ जीकाद १०२७ हिजरी (अगहन बदी २) को तुला लग्नके १८ वें अंशमें आसफखांकी बेटीसे शाहजहांके बेटा हुआ। बादशाह इस प्रसंगसे तीन दिन वहां ठहरा।

(१) हकीमका नाम नहीं है।

१५ बुधवार(१) (अगहनबदी ५।६) को गांव समरनेमें डेरे हुए। पर वहां कोई सुरम्य स्थान गुरुवारके उत्सव होनेके योग्य न था। बादशाहने यह नियम कर रखा था कि उक्त उत्सव यथासाध्य किसी जलाशय या मजुल स्थानमें किया जावे। इस वास्ते १६ गुरुवार की आधीरात(२) को वहांसे कूच होकर दिन निकलतेही बाघोरके तालाब पर डेरे हुए। दिन ढलेसे प्यालोंकी मजलिस आरम्भ हुई।

केशव मारू—१७ शुक्रवार (अगहन बदी ८) को वहांसे प्रयाण हुआ। उस प्रान्तका जागीरदार केशवदास मारू, जो दक्षिणसे बुलाया गया सेवामें उपस्थित हुआ।

धूमकेतु—१८ शनिवार (अगहन बदी ९) को रामगढमें डेरे हुए। कई रातोंसे तीन घडीके तडके आकाशमें कुछ धुआं और भाप मिलकर एक स्तम्भ बनता जाता था। जब बन चुका तो एक शस्त्रसा दिखाई देने लगा। उसके दोनो सिरे महीन बीच मोटा और बांका धुरेके समान, पीठ दक्षिणमें थी और मुह उत्तरमें था। बादशाह लिखता है—"अब पहर रात रहे से उगने लगा है। ज्योतिषियोंने यन्त्रराजसे देखा तो जाना गया कि आकाशके २४वे अंशमें दिखता है और महत आकाशकी गतिके साथ इसकी भी गति है। उस गतिमें उसका चार भी प्रगट होता है जैसे पहले कर्कराशिमें था फिर उसको छोडकर तुलामें पहुचा है उसकी गति विशेषकर दक्षिण दिशाको है। ज्योतिर्विदोंने इस प्रकारके तारोंका नाम 'हरबा(३)' लिखा है और इसका निकलना अरब देशके अधिपतियोंकी निर्बलता और उन पर उनके बैरियोंके प्रबल होनेका कारण बताया है। इसके प्रादुर्भावकी १६ रातों के पीछे उसी दिशामें एक तारा चमकने लगा। जिसके मस्तकमें

(१) मूलमें लेखक दोषसे रवि लिखा है।

(२) तारीख आधीरातसे लगती थी।

(३) शस्त्र।

तो प्रकाश था पर पूंछमें कुछ भी न था। पूंछ दो तीन गज लम्बी दिखाई देती थी। इसको दिखते हुए आठ रातें हुई हैं। जब यह दिख चुकेगा तो जो कुछ इसका फल प्रगट होगा वह आगे लिखा जायगा।

१९ रविवारको बादशाह वहीं निवास करके २० सोमवार (अगहन बदी ११) को गांव सीतलखेडेमें उतरा। २१ मंगलको भी वहीं रहा। रशीदखां पठानके वास्ते हाथी और खिलअत रणवाज खांके हाथ भेजा गया।

२२ बुधवार (दूसरी द्वादशी) को मदनपुरमें सवारी ठहरी। २३ (अगहन बदी १३) गुरुवारको वहीं प्यालोंकी मजलिस हुई। दाराबखांको नादरीका सिरोपाव मिला।

२५ शनिवार (अगहन बदी अमावस) को नवाडीके परगनेमें डेरे हुए।

२६ रविवार (अगहन सुदी १) को चबल पर, २७ को खनर नदी पर और २८ मगल (अगहन सुदी ३) को उज्जैनकी तलहटीमें सवारी उतरी।

उज्जैन—बादशाह अहमदाबादसे उज्जैन तक ९८ कोस दो महीने नौ दिन २८ कूच और ४१ मुकाम करके पहुंचा था।

सन्यासी जदरूप—२९ बुधवार (अगहन सुदी ४) को बादशाह जदरूपसे मिलकर कालियादह देखनेको गया। वह लिखता है— उनका सत्सङ्ग बहुत गनीमत है।

चूहे—कन्धारके हाकिम बहादुरखांकी अरजीसे बादशाहको विदित हुआ कि गत वर्ष सन १०२६ हिजरीसे कन्धार और उसके आसपास इतने चूहे होगये हैं कि सब खेतो और वृक्षोंको खागये हैं। जब तक खेत न काटे थे तबतक चूहे बालियोंको खाते थे। जब किसानोंने खलियान लगाये तो आधा अन्न फिर खागये। सरकारी हासिल कोई चौथाई वसूल हुआ। चूहे खरबूजोंकी बेलों और बागोंको भी चाट गये। अब उनका जोर कुछ घटा है।

शाहजहांकी भेट—शाहजहांने अपने नवजात पुत्रका उत्सव अबतक नहीं किया था और उज्जैन उसकी जागीरमें था। इस लिये उसने बादशाहसे प्रार्थना की कि गुरुवारका उत्सव उसके यहां किया जावे। बादशाह ३० गुरुवार (अगहन सुदी ५) को उसके यहां गया। जो लोग ऐसी मजलिसोंमें जानेके अधिकारी थे उनको प्याले दिये। शाहजहांने उस बालकको बादशाहकी सेवामें लाकर एक थाल रत्नों और जड़ाऊ गहनोंसे भरा हुआ २० हथनियां और ३० हाथी भेट किये और उसके नाम रखनेकी बिनती की। बादशाहने उन हाथियोंमेंसे ७ तो निज हलकेमें रखनेके वास्ते लेलिये। शेष फौजदारों (महावतों) को देदिये। यह भेट दोलाखकी थी।

आजर महीना।

१ आजर शुक्रवार (अगहन सुदी ६) को बादशाह बाज जुर्रोंका शिकार खेलने गया। रास्तेमें जुवारका खेत पड़ा। जुवारकी एक डण्डीमें एकही भुट्टा निकलता है। पर वहां एक डंडीमें १२ भुट्टे देखे गये। इस पर बादशाहको एक बादशाह और एक मालीकी कहानी याद आई—

कथा बादशाह और मालीकी—"एक बादशाह गर्मियोमें किसी बागके पास पहुंचा। एक बूढा माली द्वार पर खडा था उससे पूछा कि क्या इस बागमें अनार है? उसने कहा हां है। कहा कि एक कटोरा उनके रसका भर ला। मालीने अपनी कन्यासे कहा। वह सुन्दरी तुरन्त कटोरा भर लाई। उसमें कुछ पत्ते भी पडे हुए थे। बादशाहने कटोरा उसके हाथसे लेकर पी लिया और उससे पूछा कि पत्ते क्यों डाले थे। उस प्रियवादिनीने कहा कि ऐसी तप्तवायु और पसीनेमें एक सांस पानी पीना वैद्यकके विरुद्ध है इसलिये मैं रसमें पत्ते डाल लाई कि आप जरा ठहर ठहरके पियें। उसकी यह चतुराई बादशाहके मनमें बहुत भाई और उसको अपने विलास-भवनमें सम्मिलित करनेकी चेष्टा करके मालीसे पूछने लगा कि बरस भरमें इस बागसे तुझको क्या प्राप्त होजाता है? उसने कहा कि

३०० दीनार (स्वर्ण सुद्रा)। फिर पूछा—इसकी मालगुजारी क्या देता है ? बोला—बादशाह वृक्षोंका कुछ नहीं लेता है। बादशाहने मनमें कहा कि मेरे राज्यमें बाग बहुत हैं। उनकी पैदावार का दसवां भाग भी लिया जाय तो बहुत रुपये आजावें और इसमें प्रजाको भी कुछ बड़ी हानि नहीं है। मैं अब कह दूंगा कि बागों की आय पर भी कर लिया करें। यह कल्पना करके फिर लडकीसे कहा कि कुछ रस अनारका और लेआ। वह गई और कुछ विलम्ब से कटोरा भरकर लाई। बादशाहने कहा कि पहली बार तो तू जल्दी आगई थी और रस भी बहुत लाई थी। इसबार तूने प्रतीक्षा भी बहुत कराई और रस भी थोड़ा लाई। कन्याने कहा कि जब तो एकही अनारसे कटोरा भर गया था और अब ५।६ अनार निचोड़े तो भी उतना रस नहीं निकला। बादशाह यह सुनकर चकित होगया। मालीने कहा कि उपजमें बरकत बादशाहकी नीयतसे होती है। मेरा अन्तःकरण कहता है कि तुम बादशाह हो बागकी उपजका वृत्तान्त सुनकर तुम्हारी नीयत बिगड गई होगी। जिससे फलोंकी बरकत जाती रही। इस बातसे बादशाह के मन पर चोट लगी। उसने वह खयाल जीसे हटाकर कहा कि एक कटोरा फिर भर ला। लड़की फिर गई और हसती हंसती झटपट कटोरा भरकर लौट आई।

बादशाहने मालीकी बुद्धिमानीको सराहकर अपना परिचय दिया और वह लडकी उससे मांगकर व्याह ली। उस बुद्धिमान बादशाहकी यह कीर्ति पृथ्वीमें अमर हुई।"

बादशाह लिखता है—बेशक ऐसी बातोंका होना न्याय और नीतिका फल है। जब न्यायवान बादशाहोंकी नीति सम्पूर्ण रीति से प्रजाके हितमें रत रहती है तो बागों और खेतोंमें ऐसी वृद्धि होना असम्भव नहीं है। ईश्वरकी कृपासे इस महत राज्यमें बाग और वाडियोंके कर लेनेकी रीति कभी न थी और न अब है! समस्त सूबोंमें इस विभागकी एक दमड़ी क्या एक कौड़ी भी खजाने

में नहीं पड़ती। बल्कि यह हुक्म है कि जो कोई अपने खेतमें बाग लगावे उसका हासिल माफ रहे। आशा है कि पवित्र परमात्मा मुझे सदैव इसी नीति पर स्थिर रखेगा।

जदरूप—२ शनिवार (अगहन सुदी ७) को फिर जदरूपसे मिलनेकी अभिलाषा बादशाहको हुई। दोपहरकी उपासनासे निबट कर नावमें बैठा और दिन ढले उसीकी कुटीमें जाकर मिला। खूब ज्ञानचर्चा हुई। बादशाह लिखता है—निस्सन्देह वेदान्तका रहस्य बहुत स्पष्ट रूपसे कहता है। इसके सत्सगसे अति आनन्द होता है। अवस्था ६० वर्षसे ऊपर है। जब २२ वर्षका था तो विरक्त होगया। ३८ वर्षसे परमहंस गतिमें रहता है। बिदा होते समय बोला कि मै परमात्माके इस अनुग्रहका धन्यवाद किस मुखसे करूं कि ऐसे न्यायवान बादशाहकी छत्रछायामें एकाग्रचित्तसे अपने इष्ट देवकी आराधनामें लगा हुआ हूं, किसी प्रकारसे कोई विघ्न मेरी तपस्यामे नहीं पड़ता है।

बाज और करवानक—३ रविवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह कालियादहसे चलकर कासिमखेड़ेमें ठहरा। रास्तेमें बाज और जुर्रेसे शिकार कराता आता था कि अकस्मात एक करवानक उड़ी। बादशाहने उसके ऊपर तवीगूं जातिका बाज छोड़ा। करवानक तो बाजके पंजेसे छूट गई पर बाज इतना ऊंचा चढ़ा कि दृष्टिसे अलोप होगया। किरावल और मीरशिकार उसके पीछे इधर उधर बहुत दौड़े पर कुछ पता न लगा और ऐसे जंगलमें उस का हाथ आना असम्भव होगया। इससे लशकरमीर कशमीरी जो कशमीरके मीर शिकारोंका मीर था बहुत घबराया क्योंकि वह बाज उसीको सौंपा हुआ था। वह जंगलमें बेपते दौडता फिरता था। अन्तको दूरसे एक वृक्ष देखा। जब पास गया तो बाजको उस पर बैठा पाया। तब एक पला मुर्गा दिखाकर तीन घडी बीतने से पहले उसे बादशाहके पास पकड़ लाया। यह बाज बादशाहको बहुत प्यारा था। उसके मिलनेकी आशा सबने त्याग दी थी। उसे

पाकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। लशकर मीरका मनसब बढ़ाया और उसे घोड़ा और सिरोपाव दिया।

४ चन्द्र ५ मंगल और ६ बुधवारको लगातार कूच हुआ। ७ गुरुवार (अगहन सुदी १२) को एक तालके तट पर तम्बू तने और उत्सव हुआ।

हकीम रूहुल्लहको तीन गांव—नूरजहां बेगमको एक बीमारी थी। बादशाहकी सेवामें रहनेवाले हिन्दू मुसलमान हकीम वैद्य सब उपचार कर हारे थे। अन्तको हकीम रूहुल्लहकी औषधसे शीघ्रही आराम होगया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको उचित मनसब और तीन गांव उसके देशमें दिये और उसके बराबर चांदी भी तोल दी।

८ शुक्रसे १३ बुधवार तक निरन्तर कूच होते रहे। नित्य मंजिल पर पहुंचने तक बाज और जुर्रोंसे शिकार कराया जाता था। बहुत से तीतर पकडवाये गये थे।

कंवर करन—पिछले रविवार (पौष बदी १) को राणा अमरसिंहके पुत्र करनने जमीन चूमनेकी प्रतिष्ठा प्राप्त करके दक्षिण दिग्विजयकी मुबारकबादी, १००० मुहरें, १००० रुपये नजर और २१००० के जड़ाऊ पदार्थ, कई हाथी तथा घोड़े पेश किये। हाथी घोड़े तो बादशाहने उसीको बख्श दिये शेष पदार्थ रख लिये।

दूसरे दिन बादशाहने उसको सिरोपाव दिया।

कुतुबुल्मुल्कके वकीलको हाथी—कुतुबुल्मुल्कके वकील मीर शरीफ और इरादतखां, मीर सामानको एक एक हाथी मिला।

हुजब्रखां सरकार मेवातकी फ़ौजदारी पर और सैयद मुबारक रोहतासगढकी किलेदारी पर नियत हुए। उनके मनसब भी बढे।

१४ रविवार (पौष बदी ५) को बादशाहने गांव मन्धारेके तालाब पर पहुंचकर प्यालोंकी मजलिस की। निज अनुचर प्याले देकर मतवाले किये।

शिकारी जानवर—शिकारी जानवर जो आगरेमें बंधे थे उनको

ख़्वाजा अबुललतीफ कोशवेगी इस दिन बादशाहकी सेवामें लाया। उनमेंसे निज सरकारमें रखने योग्य देखे वह बादशाहने छांट लिये शेष अमीरों और दूसरे सेवकोंको बख़्श दिये।

राजा सूरजमलका प्रतिकूल होना—इसी दिन राजा वासूके बेटे सूरजमलके बागी होनेका समाचार बादशाहको सुनाया गया बादशाह लिखता है—"राजा वासूके कई पुत्र थे। सूरजमल सबमें बड़ा था। परन्तु अशुभचिन्तक और दुराचारी होनेसे पिता सदैव उसको कारागारमें रखता था। जब वह उसी अप्रसन्नता और खिन्न दशामें मर गया तो बडा लडका यही था और दूसरा लडका योग्य न था। इस लिये मैंने राजा बासूकी सेवाका ध्यान करके जमींदारीके प्रबन्ध और वतन तथा देशकी रक्षाके लिये इस दुष्टको राजाकी उपाधि, दो हजारी मनसब और वह जागीर भी जो उसके बापने सेवा और स्वामिधर्मसे पाई थी और वह सब जमापूंजी जो वर्षोंकी जोडी हुई थी देदी। जिस समय मुर्तिजाखां कांगड़ा जीतनेके वास्ते भेजा गया था तब यह कुपात्र भी जो उन पहाडोंका मुख्य जमींदार था सेवा और शुभचिन्तकताकी प्रतिज्ञा करने पर उसकी सहायता पर नियत किया गया था। मुर्तिजाखांने वहां पहुंच कर किलेको घेरा और अन्दरवालोंको तंग किया तो वह दुष्ट यह देखकर कि अब शीघ्रही किला फतह होजावेगा बदल गया और खुल्लम खुल्ला प्रतिकूल होकर उसके आदमियोंसे शत्रुता करने लगा। मुरतिजाखांने उसकी यह दशा देखकर दरगाहमें अरजी लिखी और स्पष्ट रूपमें उसके बैरभाव और अहितकारी होनेका वृत्तान्त लिखा उस कुपात्रने भी मुर्तिजाखां जैसे सुभटके प्रबल सैन्य सहित उन पहाडोंमें होनेसे उपद्रव करनेका समय न पाकर शाहजहांकी सेवा में एक अर्जी भेजी कि मुर्तिजाखां स्वार्थी लोगोंके बहकानेमें असन्तुष्ट होकर मेरा अनर्थ करना चाहता है। राजविद्रोहका मुझ पर झूठा कलङ्क लगाता है। आप मेरी रक्षा करें और मुझे जीवनदान देकर दरगाहमें बुला लेवें! मुझे मुर्तिजाखांकी बातका पूरा

भरोसा था। तो भी उसको दरबारमें बुलाये जानेकी प्रार्थनासे मनमें शंका हुई कि कदाचित मुर्तिजाखांने दुर्जनोंकी प्रेरणासे क्रुद्ध होकर और विचार न करके उसको कलंकित किया हो। पुत्र शाहजहांकी सुफारिशसे उसके अपराध क्षमा करके उसे दरगाहमें बुला लिया। इतनेमें मुर्तिजाखां तो मर गया और कांगडेका फतह होना किसी दूसरे सरदारके भेजने तक रुक गया। जब वह दरगाहमें आया तो मैंने उसकी ऊपरी दशा पर दृष्टि देकर शीघ्रही कृपापूर्वक शाहजहांकी सेवामें दक्षिण जीतनेके वास्ते भेज दिया। जब वह देश राजकीय कर्मचारियोंके अधिकारमें आगया तो इसने शाहजहांकी सेवामें अपना पक्ष बढाकर कांगडा विजय कर देनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि इस कृतज्ञताविहीन पुरुषको उन पहाडोंमें भेजना सावधानीसे दूर था परन्तु इस कामको उस पुत्रने अपने जिम्मे ले रखा था इसलिये उसीके विचार और अधिकारमें इसे छोडना पडा। उस प्रतापी पुत्रने अपने अनुचरोंमेंसे तकी नामके एक सेवक तथा बादशाही मनसबदारों, अहदियों और बर्कन्दाजों की एक सुसज्जित सेना उसके साथ भेजी। उसका वृत्तान्त पिछले पन्नेमें लिखा जाचुका है। जब वह वहां पहुंचा तो तकीसे भी नटखटी और दुष्टप्रकृति प्रकट करने लगा। तकीने कई बार उसकी शिकायत लिखी और स्पष्ट कह दिया कि मेरी उसकी नहीं बनती है और यह काम उससे बन भी नहीं सकता है; दूसरा सरदार भेजें तो शीघ्रही यह किला फतह होजावे। शाहजहांने तकी को हजूरमें बुलाया और अपने प्रधान मन्त्रियोंमेंसे राजा विक्रमाजीत को एक प्रबल सेना सहित उसके साथ भेजा। तब इस कृपालने जाना कि अब विशेष छल छिद्र नहीं चलेगा। उसने विक्रमाजीत के पहुंचनेसे पहले बहुतसे बादशाही बन्दोंको यह कहकर बिदाकर दिया कि बहुत दिनों तक लडाईमें कष्ट उठानेसे शोभाविहीन हो गये हो सो अपनी अपनी जागीरोंमें जाकर राजा विक्रमाजीतके आने तक फिर तय्यारी करलो। जब इस भांति शुभचिन्तकोंका

दल टूट गया, बहुतसे अपनी जागीरोंमें चले गये और थोडेसे वहां रहे तो उसने अवसर पाकर उपद्रव उठाया। सैयद सफी बारह जो बडा वीर था अपने थोडेसे भाइयों और सम्बन्धियोंको लेकर उससे शूरता पूर्वक लड़ा और मारा गया। कुछ लोग घायल भी हुए जिन्हें वह दुष्ट रणस्थलसे पकडकर अपने स्थानमें लेगया। जो बाकी रहे वह भागकर बचे। उस अभागेने पहाडकी तलहटीके परगनोंको लूट लिया जो अधिक एतमादुद्दौलाकी जागीरमें थे। लूटमें कुछ बाकी न छोडा।”

१७ रविवार (पौष बदी ८) को बादशाह चांदाकी घाटीसे उतरा।

खानखानाका उपस्थित होना—१८ चन्द्रवार (पौष बदी ६) को खानखाना सेनापतिने चौखट चूमी। यह बहुत दिनोंसे दूर था। अब बादशाहकी सवारी खानदेश और बुरहानपुरकी सरकारमें हो कर निकली तो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते प्रार्थनापत्र भेजा। बादशाहका हुक्म हुआ कि जो सब प्रकारसे उसका चित्त निश्चिन्त हो तो छडा आकर शीघ्रही लौट जावे। इस पर वह इस तारीखको आया था। बादशाहने बादशाहोंकीसी कृपा करके उस का मान बढाया। उसने १००० मुहरें और १००० रुपये भेट किये।

घाटेसे उतरनेमें सेनाको बहुत कष्ट हुआ इस लिये बादशाहने सर्वसाधारणके सुखके लिये १६ मंगलवार (पौष बदी १०) को वहीं निवास किया।

खानखानाको घोडा—२० बुधवार (पौष बदी ११) को कूच और २१ गुरुको मुकाम हुआ। सिन्धु नदीके कूलमें प्यालों का कुतूहल हुआ। बादशाहने खानखानाको सुमेरु नाम घोडा दिया जिसने रंग और डीलडौलके कारण यह नाम पाया था।

निर्मल नाला—२२ शुक्र और २३ शनिवारको लगातार कूच होता रहा। इस दिन बादशाहने एक अद्भुत नाला निर्मल जल का देखा जो ऊंची टेकरीसे गिरता था। उसके आसपास कुदरती बैठकें बनी हुई थीं। उस प्रान्तमें ऐसी छबिका कोई झरना बाद-

शाहके देखनेमें न आया था। इससे कुछ देर उसे देखकर प्रमुदित हुआ ।

२४ रविवार (पौष बदी ३०) को मुकाम हुआ। डेरोंके आगे एक तालाब था बादशाहने नावमें बैठकर जलमुर्गियोंका शिकार किया ।

खानखानाको पोस्तीन और घोड़े—२५ सोम २६ मंगल और २७ बुधवारको लगातार कूच हुआ। खानखानाको खासा पोस्तीन जो बादशाह पहने हुए था और खासे तबेलेके ७ घोडे मिले जिन पर बादशाह सवारी कर चुका था।

पन्द्रहवां वर्ष ।

सन् १०२८ हिजरी ।

पौष सुदी २ संवत् १६७५ ता० ६ दिसम्बर सन् १६१८ से
मार्ग शीर्ष सुदी द्वितीय १ संवत् १६७६
ता० २८ नवम्बर सन् १६१९ तक ।

दे महीना ।

गढ़रणथम्भोर—२ रविवार (पौष सुदी५) को बादशाहने रणथ-म्भोरमें प्रवेश किया । बादशाह लिखता है कि यह किला हिन्दुओंके बड़े दुर्गोंमेंसे है । सुलतान अलाउद्दीन खिलजीके समयमें राय हमीरदेव(१) के पास था । सुलतानने वर्षों तक घेरा रखकर बड़े कष्ट और कठिन परिश्रमसे उसे विजय किया था । स्वर्गवासी श्रीमान के राज्यके प्रारम्भमें राय सुरजन हाडाके अधिकारमें था । ६।७ सहस्र सवार सदैव उसकी सेवामें रहते थे । स्वर्गवासी श्रीमानने पवित्र परमात्माकी सहायतासे एक महीने १० दिनमें लेलिया । राय सुरजन भाग्यकी अनुकूलतासे चौखट चूमनेका सौभाग्य पाकर शुभचिन्तकोंकी श्रेणीमें संकलित होगया और विश्वासपात्र सुभटोंमें गिना गया । उसके पीछे उसका पुत्र भोज भी बडे अमीरोंमें रहा । अब उसका पोता सरबलन्दराय, शिरोमणि सेवकोंमेंसे है ।

रणथम्भोरका विवरण—बादशाह लिखता है, "३ चन्द्रवार (पौष सुदी ४) को मै किले रणथम्भोरके देखनेको गया । दो पहाड बरा-बर बराबर है एकको रण और दुसरेको थम्भोर कहते है । किला थम्भोरके ऊपर बना है । इन दोनोको मिलाकर उसका रणथम्भोर नाम रखा है । किला यद्यपि अति दृढ है और पानी भी उसमें पुष्कल है तो भी रण स्वयं सुदृढ है और उसी पर इस किलेका

---

(१) मूलमें लेखक दोषसे पीतम्बर देव लिखा है ।

टूटना भी निर्भर है। मेरे पिताने हुक्म दिया था कि रणके ऊपर तोपें चढ़ाकर किलेके मकानोंपर गोले मारें। पहला गोला रायसुरजनकी चौखण्डी पर लगा। उसके गिरनेसे उसके साहसकी नीव हिल गई और उसका अन्तःकरण भयभीत होगया। उसने अपनी मुक्ति किलेके सौंप देनेमें देखकर क्षमाशील श्रीमानकी चौखट पर अपना मस्तक घिसा।" मैंने मनमें यह ठान ली थी कि रातको किले पर रहकर दूसरे दिन उर्दूमें जाऊंगा। परन्तु किलेके भवन और निवासस्थान हिन्दुआना ढंग पर बने हैं। घर खुले नहीं हैं। हवाका संचार कम है इसलिये वहां रहनेको जी न हुआ। वहां एक हम्माम देखनेमें आया जो रुस्तमखांके नौकरने किलेकी दीवार के पास बनाया है। वहीं एक बागीचा और एक बैठक जंगलके ऊपर बनी है। यहां हवा है और जगह भी खुली है। किले भरमें इससे अच्छी जगह नहीं है। रुस्तमखां स्वर्गवासी श्रीमानके सुभटोंमेंसे था। बचपनसे पास रहता था। उसका बड़ा विश्वास था इसीसे यह किला उसे सौंपा था।"

"किले और उसके मकानोंके देखनेके पीछे मैंने हुक्म दिया कि उन अपराधियोंको जो इस किलेमें कैद हैं मेरे पास लावें जिससे प्रत्येककी व्यवस्था समझकर न्यायपूर्वक हुक्म दियाजावे। सिवा खूनी कैदियोंके या ऐसे लोगोंके जिनके छोड़नेसे राज्यमें अशान्ति फैलने का भय था सब कैदी छोड़ दिये गये। सबको यथायोग्य खर्च और खिलअत दिये।"

४ मंगलवार(१) को एक पहर तीन घड़ी रात व्यतीत होने पर राजभवनको लौटा।

५ बुधवार(२) को पांच कोसके लगभग कूच होकर ६ गुरुवार

---

(१) ऐसा जाना जाता है कि यहां तारीख और वार संध्यासेही मुसलमानी प्रथासे बदला गया है।

(२) लेखक दोषसे मूलमें बुधको जगह रवि लिखा गया है।

(पौष सुदी १०) को मुकाम हुआ। यहां खानखानाने अपनी भेट अर्पण की। जवाहिर, जड़ाऊ पदार्थों, कपड़ों और हाथियोंसे जो बादशाहके पसन्द आये वह चुन लिये और शेष उसीको बखश दिये। सब मिलाकर डेढ़ लाखका माल पसन्द आया था।

७ शुक्रवार (पौष सुदी ११।१२) को ५ कोसका कूच हुआ।

दरनाका शिकार—बादशाह लिखता है—मैंने सारसको तो शाहीनसे पकड़वाया पर दरनाके शिकारका तमाशा अबतक न देखा था। पुत्र शाहजहांको शाहीनके शिकारका बहुत शौक है और उसके शाहीन भी अच्छे हैं। मै तड़केही उस पुत्रकी प्रार्थना से सवार हुआ। एक दरना तो मैंने अपने हाथसे पकड़वाया और दूसरा उस शाहीनने पकड़ा जो उस पुत्रके हाथमें था। यह शिकार खूब हुआ। मै अत्यन्त प्रमुदित हुआ। सारस बडा जानवर है पर उड़नेमें शिथिल और भद्दा है। दरनाके शिकारको उससे कुछ लगाव नहीं है। मै शाहीनके कलेजेकी तारीफ करता हूं कि ऐसे बड़े डीलडौलके पक्षियोंको पकड़कर साहस और पंजेके बलसे दबा लेता है। इस शिकारकी खुशीसे उस पुत्रके कौशची (मीर शिकार) हसनखांने हाथी घोड़ा और सिरोपाव पाया। उसके बेटेका भी घोड़े और खिलअतसे मान बढ़ाया।

खानखानाकी बिदा—८ शनि (पौष सुदी १३) को बादशाह सवा चार कोस चलकर ९ रविको फिर ठहर गया। इस दिन खानखाना सिपहसालारने खासा खिलअत जड़ाऊ कमरपेटी और खासा हाथी तलायर सहित पाया। वह नये सिरेसे दक्षिण और खानदेशकी सूबेदारीपर नियुक्त हुआ और उसका मनसब भी बढ़कर सात हजारी जात और सातहजार सवारोंका होगया। उससे और लशकरखांसे नहीं बनती थी इस लिये बादशाहने उसकी प्रार्थनासे कारखानोंके दीवान आबिदखांको दक्षिणका दीवान करके उधर भेजा। उसको हजारी जात चारसौ सवारोंका मनसब देकर हाथी घोड़ा और सिरोपाव दिया।

खानदौरांका आना—इसी दिन खानदौरांने भी काबुलके सूबेसे आकर जमीन चूमी। १००० मोहर १००० रुपये मोतियोंकी माला, ५० घोड़े, १० विलायती ऊंट ऊंटनियां, कई चीनी और खताई शिकारी जानवर भेट किये।

खानदौरांकी फौजकी हाजिरी—१० सोमवार (पौष सुदी १५) को ३। कोस और भौमको ५॥ कोसका कूच हुआ। इस दिन खान दौरांने अपने लोगोंको सजाकर दिखाया। १००० मुगल जिनमेंसे बहुधा तुरकी तुरंगों और कुछ इराकी और मुजन्नस घोड़ोंपर सवार थे गिने गये। उसकी सेना बहुत तो बिखर गई और कुछ महावत खांकी नौकर होकर उसी सूबेमें रह गई थी। कुछ लाहोरसे अलग होकर देश देशान्तरमें चली गई थी तो भी यह इतने अच्छे घोड़ोंके सवार गनीमत थे।

बादशाह लिखता है—निस्संदेह खानदौरां वीरता और सेना सजानेमें इस समयके अद्वितीय मनुष्योंमेंसे है परन्तु खेदकी बात है कि बहुत बूढ़ा होगया है। उसकी दृष्टि भी मन्द पड गई है। उसके दो जवान और सपूत बेटे हैं परन्तु खानदौरांके बराबर निकालना कठिन काम है। इस दिन खानदौरां और उसके बेटोंको खिलअत और तलवारें दीगईं।

मांडोंका ताल—१२ रविवार (माघ बदी २) को बादशाह ३॥ कोस चलकर मांडों(१) के ताल पर उतरा जिसमें एक बैठका बनी थी और उसके थम्भे पर किसीकी बनाई हुई फारसी कविता खुदी थी। उसे पढ़कर बादशाह विह्वल होगया। भावार्थ उसका यह था—

"हाय। सब साथी हाथसे निकल गये, वह एक एक कर‌के मृत्युसे पराजित होगये। वह आयु रूपी मजलिसमें मद्यसे शीघ्र अनुमत्त होनेवाले थे। सो हमसे एक क्षण पहलेही मत्तवाले हो गये।"

(१) शायद यह मांवड़ा हो।

बादशाहको ऐसी एक और कविता भी याद थी वह भी उसने वहां लिख दी। उसका अर्थ यह है—

"हाय ! विद्वान और बुद्धिमान लोग चले गये, पास रहनेवालों के चित्तसे उतर गये, जो सैकड़ों भाषाओंमें भाषण करते थे, उन्होंने न जाने क्या सुना कि चुप होगये।"

१४ शुक्रवार (माघ वदी ४) को ५ और १५ शनिवार (माघ वदी ५) को ३ कोसका कूच होकर बयानेके पास डेरे हुए। बादशाह बेगमों सहित किला देखनेको गया। यहां हुमायूं बादशाहके बखशी मुहम्मदने जो यहांका किलेदार था एक विशाल भवन बनवाया था। वह जंगलकी तरफ खुला हुआ था। शैख मुहम्मद गौसके बड़ेभाई शैख बहलोलकी कबर इस किलेमें है उसको हुमायूं बादशाहकी बहुत भक्ति थी। जब वह बंगाल विजय करने गया और बहुत दिनों तक वहीं रहा तब मिरजा हिन्दाल उसके हुक्मसे आगरेमें रह गया था। कुछ राजविद्रोही सिपाही बंगालेसे प्रतिकूल होकर मिरजाके पास आगये और मिरजा उनके बहकानेसे स्वयं बादशाह बन बैठा। हुमायूंने यह सुनकर शैख बहलोलको मिरजाके समझानेके लिये भेजा। परन्तु मिरजाने उन्हीं लोगोंकी प्रेरणासे चारबागमें जो बाबर बादशाहका बनाया हुआ कालिन्दीके कूलमें था शैखको मार डाला। मुहम्मद बखशीको भी शैख पर भक्ति थी इसवास्ते उसने शैखकी लाश बयानेके किलेमें लाकर गाड दी।

बादशाहकी माकी बावडी—१६ रविवार (माघ वदी ६) को बादशाह ४॥ कोस चलकर कारवरेमें उतरा। उसकी माने जोमतके परगनेमें रास्ते पर एक बावडी बाग सहित बनाई थी। बादशाह उसके देखनेको गया और पसन्द करके कर्मचारियोंसे पूछा तो विदित हुआ कि २०००) उसमें लगे हैं।

१७ सोमवार (माघ वदी ७) को बादशाह शिकारके वास्ते वहीं रहा।

१८ मंगलवार (माघ बदी ८) को डेढ़ पाव तीन कोसका कूच करके गांव डाबरमहमें ठहरा। १९ बुधवार (माघ बदी ९) को २॥ कोस परही फतहपुरके ताल पर डेरा हुआ। रणथम्भोरसे फतह-पुर तक २३४ कोस ६३ कूच और ५६ मुकाम अर्थात् ११९ दिनमें पूरे हुए। सौर पक्षसे इसके एक दिन कम चार महीने और चान्द्र माससे पूरे चार महीने हुए। जबसे बादशाह राना और दक्षिण देश जीतनेको चढ़ा तबसे राजधानीसे पहुंचने तक ५ वर्ष और चार महीने लगे।

आगरेमें प्रवेशका मुहूर्त—बादशाह लिखता है,—ज्योतिषियोंने २७(१) दे बुधवार सन् १३ तारीख ३० मुहर्रम सन् १०२८ (माघ सुदी२ स०१६७५) को राजधानीमें प्रवेश करनेका मुहूर्त निकालाथा।

ताऊन(२)—परन्तु इन दिनों शुभचिन्तकोंने अनेक बार प्रार्थना की थी कि ताऊनका रोग आगरेमें फैला हुआ है। एक दिनमें न्यूनाधिक १००मनुष्य, कांख तथा जांघकी जोड वा गलफडेमें गिलटी उठकर मरते हैं। यह तीसरा वर्ष है। जाडेमें यह रोग प्रबल होजाता है और गर्मीमें जाता रहता है। अजब बात यह है कि इन तीन वर्षोंमें आगरेके सब गांवों और कसबोंमें तो फैल चुका है परन्तु फतहपुरमें बिलकुल नहीं पहुंचा है। अमनाबादसे फतहपुर २॥ कोस है जहांके मनुष्य मरीके डरसे घरबार छोडकर दूसरे गांवोंमें चले गये हैं। इस लिये विचार पूर्वक यह बात ठह-राई गई कि इस मुहूर्त पर फतहपुरमें प्रवेश करूं और जब रोग धीमा पड जावे तब दूसरा मुहूर्त निकलवाकर आगरेमें जाऊं।

गुरुवार (माघ बदी १०) का उत्सव फतहपुरके ताल पर हुआ। और मुहूर्त आने तक बादशाह ८ दिन यहीं ठहरा। तालका घेरा

(१) मूलमें २८ गलत लिखी है।

(२) इस ताऊनके लक्षण प्लेगसे ठीक मिलते है जो आठ दस सालसे भारतमें फैला हुआ है।

नपवाया तो सात कोस निकला। यहां बादशाहको माके सिवा जो कुछ बीमार थी और सब बेगमें और नौकर चाकर अगवानी आये।

ताऊन चूहोंसे—मृत आसफखांकी बेटीने जो खानआजमके बेटे अबदुल्लहखांके घरमें है, बादशाहसे यह विचित्र चरित्र ताऊनके विषयमें कहा और उसके सत्य होने पर बहुत जोर दिया। इससे बादशाहने वह घटना तुजुकमें लिख ली।

उसने कहा था कि एक दिन घरके आंगनमें एक चूहा दिखाई दिया। वह मतवालोंकी भांति गिरता पड़ता इधर उधर दौड रहा था। उसे कुछ सुझाई न देता था। मैंने एक लौंडीसे इशारा किया। उसने उसको पूंछ पकडकर बिल्लीके आगे डालदिया। पहले तो बिल्लीने बड़े मोदसे उछलकर उसको मुंहमें पकड़ा किन्तु पीछे घिन करके तुरन्त छोड़ दिया। बिल्लीके चेहरे पर धीरे धीरे मांदगी के चिन्ह दिखाई देने लगे। दूसरे दिन वह मरणप्राय होगई। तब मेरे मनमें आया कि थोड़ासा तिरियाक फारूक (विष उतारनेवाली एक औषध) इसको देना चाहिये। जब उसका मुंह खोला गया तो देखा कि उसकी जीभ और तालू काला पड गया था। तीन दिन बुरा हाल रहा। चौथे दिन उसे कुछ सुध आई। फिर एक लौंडीको ताऊनकी गांठ निकली। उसकी जलन और पीड़ासे वह सुध भूल गई। रंग बदलकर पीला और काला होगया। प्रचण्ड ज्वर चढा। दूसरे दिन वह मर गई। इसी प्रकार सात आठ मनुष्य उस घरमें मरे और कई रोगग्रस्त हुए। तब मैं उस स्थानसे निकल कर बागमें चली गई। वहां फिर किसीके गांठ नहीं निकली पर जो पहलेके बीमार थे वह नहीं बचे। आठ नौ दिनमें १७ मनुष्य मर गये। उसने यह भी कहा कि जिनके गांठें निकली हुई थीं वह जो किसीसे पानी पीने या नहानेको मांगते थे तो उसको भी यह रोग लग जाता था। अन्तको ऐसा हुआ कि मारे डरके कोई उनके पास नहीं जाता था।

खानजहां—२२ शनि (माघबदी १२) को खानजहांने जो राज-

खानी आगरेकी रक्षा पर छोडा गया था चौखट चूमकर ५०० मोहरें भेट और चारसौ रुपये न्यौछावर किये। २४सोमवार (माघवदी १४) को बादशाहने उसे खासा खिलअत दिया।

फतहपुरमें प्रवेश—२७ गुरुवार (माघ सुदी २) को ४ घडी दिन चढे जो ज्योतिषकी दो घड़ीके लगभग होती हैं, बादशाह ने फतहपुर में प्रवेश किया इसी दिन शाहजहां के तुलादान का मुहूर्त था। बादशाहने उसको सोने और दूसरे पदार्थोंमें तोला। सौर-वर्षसे उसको २८ वां वर्ष लगा। इसी दिन बादशाह की माता मरयमजमानी भी आगरे से आई और बादशाह उसकी सेवा में उपस्थित हुआ।

अकबरबादशाहके राजभवन—उसीदिन बादशाहने अपने पिता के भवन एक एक करके देखे और शाहजहां को दिखाये। बादशाह लिखता है—राजभवन के बीचमें तराशेहुए पत्थरों का एक हौजकपूर तालाब नामक अति सुन्दर है। वह ३६ गज लम्बा और उतनाही चौड़ा चौकोर बना है। उसमें खजाने के कर्मचारियो ने रुपये पैसे भरदिये थे जिन का मूल्य ३४ करोड ४८ लाख ४६ हजार दामया १६७९४०० रुपये था। यह गरीबों को बटते रहे।

बहमन महीना।

१ रविबार (माघ सुदी ५) को १००० दरब हाफिज यादअली गवैये को और एक एक हजार रुपये मुहिबअली और अबुलकासिमखां गीलानी को मिले जिन्हें ईरान के बादशाह ने अन्धा करके जंगल में छुडवादिया था और वह इस दरबार की शरण लेकर सुखसे रहतेथे।

गुरुवारकी सभा—५ (माघ सुदी ९) को गुरुवारकी सभा फतहपुरके राजभवन में जुडी। निज सेवकों को प्याले मिले।

---

(१) यहां फिर मूलमें भूलसे २७ की जगह २८ लिखी है गुरुवार २७ को था २८ को नहीं था।

सुलतान परवेज को जहांगीरनामा—सुलतान परवेज ने नसरुल्लह के साथ एक बहुत बड़ा हाथी बादशाह के लिये भेजा था। बादशाहने उसके हाथ परवेजको वास्ते जहांगीरनामा और पनचाक जाति का एक घोड़ा भेजा।

कुंवरकरण—८ रविवार (माघ सुदी १२-१३) को बादशाह ने राना अमरसिंह के बेटे कुंवर करण को हाथी घोड़ा खिलअत जड़ाऊ खपवा फूल कटारे सहित देकर अपनी जागीर में जाने की आज्ञा दी और उसके हाथ एक घोड़ा राना के वास्ते भी भेजा।

शिकार—इसी दिन बादशाह शिकार के अभिप्रायसे अमनाबाद गया। वहां बादशाह ने हरनों के न मारने की आज्ञा दे रखी थी। इससे छः सालसे वहां बहुत हरन होगये थे और हिलमिल गये थे।

१२ गुरुवार (फाल्गुण सुदी २) को बादशाह राजभवन में आया। नियमानुसार प्यालों की मजलिस हुई।

शेख सलीम चिश्ती—१ शनिवार(१)की रातको बादशाहने शेख सलीमके रौजेमें जाकर फातिहा पढा। वह लिखता है—भगवत् भक्तोंको अपनी सिद्धि जतानेकी इच्छा तो नहीं होती है परन्तु कभी कभी उनकी बिना इच्छा भी किसीकी भलाईके वास्ते वह सिद्धि प्रकट होही जाती है। जैसे मेरे जन्मसे पहले इन्होंने मेरे और मेरे भाइयोंके पैदा होनेकी आशा स्वर्गवासी श्रीमानको बंधा दी थी। एक दिन श्रीमानने उनसे पूछा कि आपकी उमर कितनी है और कब आपकी मुक्ति होगी, तो जवाब दिया कि यह भेदकी बातें तो खुदाही जानता है। फिर इधरसे बहुत आग्रह होने पर मेरी तरफ इशारा करके कहा कि जब शाहजादा स्वयं पढकर या किसी दूसरेके पढानेसे कोई चीज याद करके पढने लगेगा तो वह हमारे अन्त समयकी सूचनाका चिन्ह होगा। इस पर श्रीमानोंने उन सब सेवकोंको जो मेरी सेवामें नियुक्त थे ताकीद करदी थी कि

(१) यहां रात से वार माना है क्योंकि १३ को गुरुवार था।

कोई कुछ गद्य तथा पद्य शाहजादेको न सिखावे। जब इस बातको दो वर्ष सात महीने व्यतीत होगये तो एक स्त्री जो उस मुहल्लेमें रहती थी और मुझे नजर नहीं लगनेके हेतुसे हमेशा स्पन्द (धूनी) जलाया करती थी और इस प्रसंगसे मेरे पास आया जाया करती। और कुछ दान लेजाया करती थी। उसने मुझको अकेला पाकर और उस बातको भूलकर एक दोहा मुझे सिखा दिया। मैंने जाकर शैखको सुनाया। वह उसी दम उठकर स्वर्गवासी श्रीमानके पास गये और इस व्यवस्थाकी उनको सूचना दी। उसी रातको उन्हें ज्वर होगया और दूसरे दिन श्रीमानके पास आदमी भेजकर तानसेनको जो अद्वितीय गवैयोंमेंसे था बुलाया। जब तानसेन उनकी सेवामें उपस्थित होकर गाने लगा तो श्रीमानके बुलानेको भी आदमी भेजा। श्रीमान पधारे तो कहा कि हमारा समय आगया है तुमसे विदा होते हैं। अपने मस्तकसे पगडी उठाकर मेरे मस्तक पर रखी और कहा—हमने सुलतान सलीमको अपना प्रतिनिधि किया और उसे रक्षा करने और विजय देनेवाले परमेश्वरको सौंपा। शैख की निर्बलता पल पल बढती जाती थी और निर्वाणके चिन्ह प्रबल होते जाते थे। अन्तको ईश्वरमें मिल गये।

स्वर्गीय पिताके शासनकालमें जो जो बडे काम हुए उनमेंसे एक यह मसजिद और रौजा (समाधिभवन) भी है। यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं कि इमारत बहुत बडी है। ऐसी मसजिद किसी शहरमें नहीं है। सब पत्थरकी है। पांच लाख रुपये खजानेसे लगे थे तब बनी थी। कुतुबुद्दीनखां कोकलताशने जो कटहरा, रौजेकी चारदीवारी, गुम्बदका फर्श और मसजिदका बरामदा मकरानेके पत्थरसे बनवाया वह उससे अलग है। इस मसजिदके दो दरवाजे हैं बडा तो दक्षिण को है जो बहुत ऊचा है जिसकी चौडाई १२ गज लम्बाई १६ गज और ऊंचाई ५२ गजकी है। ३२ सीढियों पर चढकर वहां तक पहुचते है। छोटा दरवाजा पूर्वको है। मसजिदकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको दीवारोंके आसार सहित २१२

गज और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको १७२ गज है। ऊपर ३ गुम्बद है बीचवाला बडा और आसपासवाले छोटे है। बडा गुम्बद लम्बा १५ और चौड़ा भी १५ही गजका है छोटोंकी लम्बाई चौड़ाई १०।१० गजकी है। चारों तरफ ८० दालान और ८४ हुजरे है। दालानोंकी चौडाई साढे सात सात गजकी है और हुजरोंकी लंबाई पांच पांच और चौड़ाई चार चार गजकी। मसजिदका चौक १६८ गज लम्बा और १४३ गज चौडा है। छतों पर छोटे छोटे गुम्बद है जिन पर उर्सकी रातों और दूसरे पुनीत दिनोंमें रंगीन कपडोंकि कन्दील जलते हैं। चौकके नीचे टांका है जिसको मेंहके पानीसे भर लेते है जो साल भर तक शेखके वंशजों और इस मसजिदमें रहनेवाले फकीरोंके काम आता है। क्योंकि फतहपुरमें पानीकी कमी है और वहांका पानी अच्छा भी नहीं होता।

बडे दरवाजेके सामने उत्तरको पूर्वमें झुकता हुआ शेखका रोजा है। गुम्बदका बीच ७ गजका है उसके गिर्द मकरानेके पत्थरके दालान है जिनके आगे भी उसी पत्थरके कटहरे बहुत कारीगरीसे बने है। इस रोजेके सामने पश्चिमको कुछ हटकर एक गुम्बद और है जिसमें शेखके बेटे और जमाई दफन हैं। जैसे कुतुबुद्दीनखां इसलामखां और मुअज्जमखां आदि जो सब इस(१) घरानेके प्रसंग मे अमीरीके दरजों और बडे बड़े ओहदों पर पहुंचे थे जिनका वृत्तान्त अपनी अपनी जगह पर आचुका है। अब इसलामखांका बेटा जिसका खिताब इकरामखां है यहांकी गद्दीका मालिक है और बहुत योग्य है मुझे उसका बहुत ध्यान है।

कांगडा—१८ गुरुवार (फाल्गुण वदी ६) को बादशाहने अबदुल अजीजखांको दो हजारी जात एक हजार सवारोंका मनसब हाथी घोडे और खिलअत देकर कांगड़ा फतह करने और सूरजमलको दण्ड देनेके वास्ते विदा किया। तरसूनखांको भी १२ सदी जात ५५० सवारोंका मनसब और घोडा देकर इसी काम पर भेजा।

(१) बादशाही घराने।

एतमादुद्दौलाके घर जाना—२६ गुरुवार (फाल्गुण बदी ३०) को बादशाह एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके मकान पर पधारा जो तालके तट पर बना था और बडा सुन्दर था। एतमादुद्दौलाने पायन्दाज और पेशकशकी रीति विधि पूर्वक की। बडी मजलिस लगी थी। बादशाह वहीं रातका खाना खाकर महलमें आगया।

असफन्दार महीना।

१२ शनिवारको बादशाह बेगमों सहित शिकार खेलनेको असनाबादमें गया। २७ रविवार (चैत्र सुदी १ सं० १६७६) तक वहीं रहा। मंगलके दिन शिकारमें मोतियोंकी एक माला नूरजहां बेगमके गलेसे टूट पडी। उसमेंसे एक मोती और एक लाल दस दस हजार रुपयेके खोगये। बुधके दिन किरावलोंने बहुत खोज की परन्तु कुछ पता न लगा। बादशाहने कहा कि जब इस दिन का नामही कमशम्बा(१) है तो इसमें उनका मिलना मुशकिल है और गुरुवार सदा मेरे वास्ते शुभ रहा है। उस दिन थोडे ढूंढनेसेही उस विशाल वनमें दोनो रत्न उन किरावलोंको मिल गये और वह मेरी सेवामें ले आये। और भी सुअवसर यह हुआ कि इसी दिन चान्द्र मासका तुलादान और वसन्तबाडीका उत्सव हुआ और दलमऊके किलेकी फतह तथा सूरजमलके पराजयकी बधाई भी आई।

दलमऊकी फतह और सूरजमलकी हार—राजा विक्रमाजीत जब उस प्रांतमें पहुंचा तो सूरजमलने चाहा कि कुछ बात बनाकर समय टाले परन्तु राजा बडा भेदी था उसके बाहनेमें न आकर आगे बढा। सूरजमल न मैदानकी लडाईलडा और न किला मजाकर बैठा। थोडी सी झडपमेंही बहुतसे मनुष्योंको कटाकर भाग गया। मऊका किला और नगर दोनो अनायासही फतह होगये। जो देश बाप दादोंसे उसके अधिकारमें चला आता था वह बादशाही लशकरके आक्रमण से छिन्न भिन्न होगया। वह स्वयं बुरे हालसे पहाडोंकी टेकरियोंमें

(१) बादशाहने बुधका नाम कमशम्बा रखा है।

जा छिपा। राजा विक्रमाजीतने उसके देशको तो पीछे छोड़ा और उसका पीछा करनेको अपनी सेना आगे बढ़ाई।

बादशाहने यह समाचार सुनकर राजा विक्रमाजीतको इस सेवा के बदलेमें नक्कारा दिया और यह हुक्म लिखा कि सूरजमलके किले और उसकी तथा उसके बापकी बनाई हुई इमारतोंको जड़से उखाडकर उनका चिन्ह तक मिटा दो।

जगतसिंह—बादशाह लिखता है, "अद्भुत लीला यह हुई कि सूरजमलका एक भाई जगतसिंह था। जब मैंने सूरजमलको राजा की पदवी देकर अमीरीके पद पर पहुंचा और राज्य तथा धन सम्पत्ति और सेनाका स्वामी अकेले उसीको बनाया तो उसकी खातिरसे जगतसिंहको जो उससे मेल नहीं रखता था थोडासा मनसब देकर बंगालेके सूबेमें भेज दिया। वहां वह विचारा अपने घरबारसे दूर पड़ा हुआ कष्ट भोग रहा था और किसी दैवी घटना की प्रतीक्षा करता था। उसके भाग्यसे ऐसा सुअवसर आगया। कुपात्र सूरजमलने अपने पांवोंमें अपने हाथसेही कुल्हाड़ा मारा। मैंने शीघ्रही जगतसिंहको बुलाकर राजाका खिताब हजारी जात ५०० सवारोंका मनसब, जडाऊ खपवा, हाथी, घोड़ा, खिलअत और २०००० दरब खजानेसे देकर राजा विक्रमाजीतके पास भेजा और राजाको यह हुक्म लिखा कि यदि वह भाग्यकी अनुकूलतासे अच्छा काम दे और राजभक्ति प्रकट करे तो उसका अधिकार उस देशमें स्थिर कर दे।

नूरमंजिल बाग—बादशाह नूरमंजिल बाग और वहांके नये बने हुए महलोंकी शोभा सुना करता था इस लिये सोमवारको सवार होकर 'बुस्तांसरा' नामक मनोहर बागमें ठहरा। मंगलका दिन उसी मनोरम उपवनमें बिताकर रातको नूरमंजिलमें पहुंचा। यह बाग ३३० जरीबमें था उसके चौतरफ ईंट और चूनेकी पक्की दीवार चौडी और ऊंची बनी थी बीचमें विशाल भवन, सुन्दर बैठकें और मंजुल जलाशय थे। दरवाजेके बाहर एक बड़ा कूआ तय्यार हुआ

था जिसका पानी बैलोंकी बत्तीस जोडियां बराबर खेंचती थीं। उसका नाला एक नदीके समान बागके हौजोंमें गिरता था। इसके सिवा कई कूए और भी थे जिनके पानीसे जलाशय भरते थे फव्वारे चलते थे। बागके बीचोंबीच एक तालाब भी था जो मेहके पानी से भरा रहता था जब कभी गरमीमें उसका पानी कम होजाता तो कूएके पानीसे मदद पहुंचाई जाती थी। जिससे सदा भरा रहता था। डेढ़ लाख रुपये तो इस बागमें लग चुके थे ५००००) और लगनेवाले थे।

२४ गुरुवार (चैत्र सुदी १३) को ख्वाजाजहांने अपनी भेट सजा कर पेश की। बादशाहने डेढ़ लाख रुपयेके जवाहिर जडाऊ आभूषण कपड़े और हाथी घोडे उसमेंसे छांट लिये। शनिवार तक बादशाह सुखपूर्वक उस बागमें रहा और २७ रविवार (चैत्र सुदी १) को रातको फतहपुरमें लौट आया। बडे अमीरोंके नियमानुसार नवरोजके वास्ते राजभवनके सजानेका हुक्म हुआ।

२८ सोमवार (चैत्र सुदी २) को बादशाहकी आंखोंमें रक्तविकारसे कुछ पीडा हुई तो उन्होंने अलीअकबर जर्राहसे कहकर तुरन्त फसद खुलवा ली। जिसका लाभ दूसरे दिनही प्रगट होगया। उसे १०००) मिल गये।

चौदहवां नौरोज।

गुरुवार ४ रबीउलअव्वल १०२८ (चैत्र सुदी ६ संवत् १६७६) को तडकेही सूर्य्य भगवानने मेषराशिमें प्रवेश किया। बादशाहके राज्यशासनका १४वां वर्ष प्रारम्भ हुआ। शाहजहांने नौरोजके उत्सवको बडी मजलिस रचाकर देश देशान्तरोंके चुने हुए पदार्थोंकी भेट बादशाहको दिखलाई जिसमें मुख्य पदार्थ इतने थे।

१—एक याकूत सुडौल और सुरंग २२ रत्तीका जिसका मोल जौहरियोंने ४० हजार रुपये कूता।

२—एक लाल कुतबी अति श्रेष्ठ ४० हजारका।

३—मोती ६ जिनमें एक नग एक टांक और ८ रत्तीका था।

यह शाहजादेके वकीलोंने गुजरातमें २५ हजार रुपयेको खरीदे थे।

४—५ मोती ३३ हजार रुपयेके।

५—एक हीरा अठारह हजार रुपयेका।

६—एक जडाऊ परदला तलवारकी मूठ सहित जो शाहजादेके जरगरखानेमें शाहजादेकी निकाली तरकीबसे नई चालका तय्यार हुआ था। जिसमें रत्न काट काटकर बैठाये गये थे। मोल ५०हजार रुपये।

७—चांदीका पूरा नक्कारखाना ढोल, नक्कारे, करना, शहनाई सहित जिसमे एक जोडी सोनेके नक्कारोंकी थी और जब बादशाह सिंहासन पर बिराजा तो बजाया गया था। मूल्य ६५ हजार रुपये।

८—सोनेका हौदा ३० हजार रुपयेका।

९—दो बड़े हाथी सोनेकी ५ तलायर सांकलों सहित कुतुबुल्मुल्क हाकिम गोलकुंडेके भेट किये हुए, इनमें एक हाथीका नाम दाद-इलाही था, बादशाहने उसका नाम नूरनौरोज रखा। उक्त हाथी बहुत विशाल और सुन्दर था। बादशाह पसन्द करके उस पर सवार हुआ दौलतखानेके चौकमें उसे फिराया। मूल्य ८० हजार कूतागया और छ: सोनेकी सांकलोंका २० हजार। नूरनौरोजके सोनेके साज और सांकल आदिका मूल्य ३०हजार। दूसरे हाथीका १०हजार।

१०—गुजरातके दिव्य वस्त्रोंके थान जो शाहजादेके कपडा बुनने-वालोंने बुनकर भेजे थे।

पूरी भेट साढे चार लाखकी थी।

२ शुक्रको शुजाअतखां अरब और नूरुद्दीनकुलीकी और ३ शनि को खानखानाके बेटे दाराबखांकी भेटें पेश हुई।

४ रविवारको खानजहांकी भेट एक लाख ३०हजारकी स्वीकृत हुई। उसमें एक मोती २० हजार रुपयेका था।

५ सोमवारको राजा किशनदास और हाकिमखांने, ६ मंगलको सरदारखांने, ७ बुधको मुस्तफाखां और अमानतखांने भेट पेश की। इसमेंसे बादशाहने कुछ कुछ लिया।

८ गुरुवारको एतमादुद्दौलाने एक बड़ी शाही मजलिस रचाकर बादशाहको बुलाया। उसने सभा और भेटके सजानेमें बडीचेष्टा की थी। तालके किनारों और गली कूचोंको जहांतक दृष्टि जाती थी रंग बरंगे चिरागों और फानूसोंसे चौचन्द कर दिया था। उसकी भेटमें एक सोने चांदीका सिंहासन था। उसके पाये सिंहके स्वरूपके थे। वह मानो सिंहासनको उठाये हुए थे। यह सिंहासन तीन वर्षमें ४ लाख ५० हजार रुपयेकी लागतसे बना था। इसको हुनरमन्द नाम एक फरंगीने बनाया था जो गहना घडने, नग जड़ने और दूसरी कारीगरीके कामोंमें अद्वितीय था। उसका यह नाम भी बादशाहने उसके इन्हीं गुणोंसे रखा था।

इस भेटके सिवा उसने एक लाख रुपयेकी भेट बेगमों और महलवालियोंको भी दी थी। बादशाह लिखता है—स्वर्गवासी श्रीमानके समयसे अबतक १४ वां वर्ष मुझ भगवत्भक्तके राज्याभिषेकका है। किसी बडेसे बड़े अमीरने भी ऐसी भारी भेट नहीं दी थी। सच तो यह है कि एतमादुद्दौलाकी दूसरोंसे बराबरीही क्या है।

इसी दिन इसलामखांके बेटे इकरामखांका मनसब दोहजारी और १००० सवारका और अनीराय सिंहदलनका दोहजारी १६०० सवारोंका होगया।

९ शुक्रवार (चैत्र सुदी १४) को एतबारखांकी भेट पेश हुई। खानदौरां घोडा और हाथी पाकर पटनेकी सूबेदारी पर विदा हुआ। उसका मनसब वही ६ हजारी ५००० सवारोंका रहा।

१० शनिवारको फाजिलखांने, ११ रविको मीरमीरांने, १२ सोमको एतकादखांने, १३मंगलको तातारखां और अनीराय सिंहदलनने, १४ बुध (वैशाख बदी ४) को मिरजा राजा भावसिंहने अपने अपने उपहार बादशाहके सम्मुख उपस्थित किये। उनमें जो नई तथा अनोखी वस्तु थी वह तो बादशाहने लेली शेष उन्हींको फेर दी।

१५ गुरुवार (वैशाख बदी ५) को आसफखांने अपने डेरे पर जो एक मंजुल मनोरमस्थानमें था बादशाहोंकीसी सभा सजवा-कर बादशाहसे वहां सुशोभित होनेकी प्रार्थना की। बादशाह बेगमों सहित वहां पधारा। आसफखांने इस आगमनको ईश्वरका अनुग्रह समझकर सभाकी शोभा और भेटकी सजावटमें अत्यन्त श्रम किया था। अमूल्यरत्न, स्वर्णमयवस्त्र और दूसरे अमूल्य पदार्थ, जो बादशाहने पसन्द करके लिये वह १ लाख ६७ हजार रुपयेके थे जिनमें एक लाल ही १२॥ टांकका १ लाख २५ हजार रुपयेका खरीदा हुआ था।

ख्वाजेजहांका मनसब ५ हजारी २५०० सवारोंका होगया।

लश्करखां दक्षिणसे आया। बादशाहका विचार बरसात पीछे कश्मीर जानेका था। इसलिये इसको ख्वाजाजहांकी जगह किले तथा शहर आगरेकी रक्षा और उस प्रांतकी फौजदारी पर छोड जानेके लिये बुलाया था। अमानतखां, दाग की दरोगाई और खुदमहले सवारों(१)को सेवामें उपस्थित करने पर नियुक्त हुआ।

१६ शुक्रको ख्वाजा अबुलहसन मीरबख्शी, और १७ शनिको सादिकखां बख्शी, १८ रविको इरादतखां मीरसामान, और १९ सोमवार (वैशाख बदी ९) को सूर्यके उच्च होने, अर्थात् मेष संक्रांति का दिन था, अजदुद्दौलाने, अपनी अपनी भेंट हुजूर उपस्थित की। उनमें जो वस्तु बादशाहको पसन्द आई वह लेलीं।

भेटोंका मूल्य—इस नौरोजमें बादशाहने जो भेंटें लीं उनका मूल्य २० लाख रुपये था।

सुलतान परवेजका मनसब२०हजारी १० हजार सवारका, एत-मादुद्दौलाका सात हजारी सात हजार सवारका होगया। अजदु-द्दौला, शाह शुजाकी अतालीकी पर नियत हुआ। कासिमखां और बाकरखांके भी मनसब बढ़े।

महावतखांकी प्रार्थना पर ५०० सवार सूबे बंगालके

(१) आपही अपने घोड़े देनेवाले सवार।

तोभी गली बनाकर हरनोंको उसमें हांकदे। इस युक्तिसे ८०० हरन फिर फतहपुर पहुंचाये गये। सब मिलकर १५०० होगये।

२८ बुधवारको बादशाह अमनाबादसे चलकर एक बागमें रहा। २९ गुरुवारको रातको नूरमंजिल बागमें ठहरा।

शाहजहांकी माकी मृत्यु—३० भृगुवारको शाहजहांकी मा मर गई। दूसरे दिन बादशाह शाहजहांके डेरेपर गया और बहुत तरहसे उसे संतोष देकर अपने साथ राजभवनमें लेआया।

उर्दी बहिश्त।

१ रविवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने ज्योतिषियोंके बताये हुए महूर्त्त में दिलेर नामके खासे हाथीपर सवार होकर राजधानीमें प्रवेश किया। गली कूचों बाजारों छतों और झरोखोंमें बहुत भीड स्त्री पुरुषोंकी लगी हुई थी। बादशाह अपनी प्रथाके अनुसार दौलतखाने तक रुपये बखेरता गया। ५ वर्ष ७ महीने ९ दिन पीछे सफरसे लौटा था।

सुलतान परवेजको बादशाहने बहुत बर्षोंसे नहीं देखा था इस लिये उसके नाम हाजिर होनेका हुक्म लिखा।

बादशाहकी उदारता—इस वर्ष बादशाहने दरिद्रों और हक-दारोंको निम्न लिखित दान दिया।

भूमि ४४७८६ बीघे। गांव २

काशमीरमें अन्न ३२० गोन। काबुलमें जमीन ७ हल।

अलहदादका बागी होना—जब महाबतखां बंगशके बन्दोबस्त करने और पठानोंकी जड उखाडनेके वास्ते. बिदा हुआ था तो जलाला पठानके बेटे अलहदादको साथ लेगया था कि शायद वह कुछ अच्छी सेवा करेगा। बादशाहने दूरदर्शितासे उसके भाई और बेटेको अपने पास ओलमें रहनेके वास्ते बुलवा लिया था और उनपर बहुत कुछ कृपाभी कीजाती थी। तोभी अलहदाद जिसदिन पहुंचा उसीदिनसे खिंचाहुआ सा था। महाबतखां काम सुधारनेको आनगारी उसका मन मनाता रहता था। इन दिनों उसने कुछ

तोभी गली बनाकर हरनोंको उसमें हांकदे। इस युक्तिसे ८०० हरन फिर फतहपुर पहुंचाये गये। सब मिलकर १५०० होगये।

२८ बुधवारको बादशाह अमनाबादसे चलकर एक बागमें रहा। २९ गुरुवारकी रातको नूरमंजिल बागमें ठहरा।

शाहजहांकी माकी मृत्यु—३० भृगुवारको शाहजहांकी मा मर गई। दूसरे दिन बादशाह शाहजहांके डेरेपर गया और बहुत तरहसे उसे संतोष देकर अपने साथ राजभवनमें लेआया।

उर्दी बहिश्त।

१ रविवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने ज्योतिषियोंके बताये हुए महूर्त्तमें दिलेर नामके खासे हाथीपर सवार होकर राजधानीमें प्रवेश किया। गली कूचों बाजारों छतों और झरोखोंमें बहुत भीड स्त्री पुरुषोंकी लगी हुई थी। बादशाह अपनी प्रथाके अनुसार दौलतखाने तक रुपये बखेरता गया। ५ वर्ष ७ महीने ९ दिन पीछे सफरसे लौटा था।

सुलतान परवेजको बादशाहने बहुत बर्षोंसे नहीं देखा था इस लिये उसके नाम हाजिर होनेका हुक्म लिखा।

बादशाहकी उदारता—इस वर्ष बादशाहने दरिद्रों और हकदारोंको निम्न लिखित दान दिया।

भूमि ४४७८६ बीघे। गांव २

काश्मीरमें अन्न ३२० गोन। काबुलमें जमीन ७ हल।

अलहदादका बागी होना—जब महाबतखां बंगशके बन्दोबस्त करने और पठानोंकी जड उखाडनेके वास्ते. विदा हुआ था तो जलाला पठानके बेटे अलहदादको साथ लेगया था कि शायद वह कुछ अच्छी सेवा करेगा। बादशाहने दूरदर्शितासे उसके भाई और बेटेको अपने पास ओलमें रहनेके वास्ते बुलवा लिया था और उनपर बहुत कुछ कृपाभी कीजाती थी। तोभी अलहदाद जिसदिन पहुंचा उसीदिनसे खिंचाहुआ सा था। महाबतखां काम सुधारनेको आलगारी उसका मन मनाता रहता था। इन दिनों उसने कुछ

और इज्जतखांको उस सूबेमें अच्छी सेवा करनेसे हाथी और जड़ाऊ खपवा मिला।

हुमायूं बादशाहकी हस्तलिखित पुस्तक—अबदुस्सत्तारने हुमायूं बादशाहके हाथका लिखा हुआ एक संग्रह ग्रन्थ बादशाहके भेट किया। उसमें कुछ बातें धर्मकी कुछ ज्योतिषकी कुछ तत की लिखी हुई थीं। उनमेंसे कई एक अनुभव की हुई थी। बादशाह लिखता है—"मुझे उनके अक्षर देखनेसे इतना हर्ष हुआ कि कभी कम हुआ होगा खुदाकी कसम है मैंने सब पदार्थों से उसे बढ़कर समझा। मैंने प्रसन्न होकर उसे यह पद दिया, जिस की उसे आशा भी न थी। साथही एक हजार रुपये इनाम दिये।"

हुनरमन्दफरंगी—हुनरमन्द फरंगीको जिसने रत्नजटित सिंहासन बनाया था बादशाहने तीन हजार दरब घोडा और हाथी दिया कई अमीरोंके मनसब बढ़े कईके नये हुए जैसे—

१—राजा सारङ्गदेव	७ सदी ३० सवार
२—राय कल्याणदास	६ सदी १२० सवार
३—फीलखानेका मुशरिफ, रामदास	६ सदी १०० सवार
४—विक्रमसिंहके बेटे नयमल	५ सदी २०० सवार
दूसरा बेटा जगमल	५ सदी २०० सवार

१५००जीते हरन—२१ बुधवार (बैसाखबदी ११) को बादशाह शिकारके वास्ते अमनाबादसे गया। ख्वाजाजहां और कयामखां किरावलबाशीने पहले से जाकर एक बड़े जंगलको कनातोंमें घेर लिया था। उसमें बहुतसे हरन घिर गये थे। परन्तु बादशाहने यह प्रण करलिया था कि अपने हाथसे किसी जीवको मारा न करेंगे इसलिये विचार किया कि यदि सबको जीता पकड़कर फतहपुरके चौगानमें छोड़ दिया जावे तो शिकारका मजा भी आजावे और उनका भी बाल बांका न हो। इस लिये १०० हरन पकड़कर फतहपुरमें भेज दिये और रायमान खिदमतियेको आज्ञा दी कि [illegible] जगहसे फतहपुरके मैदान तक रस्सेमें टांगे, और [illegible]

तोंकी गली बनाकर हरनोंको उसमें हांकदें। इस युक्तिसे ८०० हरन फिर फतहपुर पहुंचाये गये। सब मिलकर १५०० होगये।

२८ बुधवारको बादशाह अमनाबादसे चलकर एक बागमें रहा। २९ गुरुवारकी रातको नूरमंजिल बागमें ठहरा।

शाहजहांकी माकी मृत्यु—३० भृगुवारको शाहजहांकी मा मर गई। दूसरे दिन बादशाह शाहजहांके डेरेपर गया और बहुत तरहसे उसे संतोष देकर अपने साथ राजभवनमें लेआया।

उर्दी बहिश्त।

१ रविवार (वैशाख सुदी ८) को बादशाहने ज्योतिषियोंके बताये हुए मुहूर्त्तमें दिलेर नामके खासे हाथीपर सवार होकर राजधानीमे प्रवेश किया। गली कूचों बाजारों छतों और झरोखोंमें बहुत भीड स्त्री पुरुषोंकी लगी हुई थी। बादशाह अपनी प्रथाके अनुसार दौलतखाने तक रुपये बखेरता गया। ५ वर्ष ७ महीने ९ दिन पीछे सफरसे लौटा था।

सुलतान परवेजको बादशाहने बहुत बर्षोंसे नहीं देखा था इस लिये उसके नाम हाजिर होनेका हुक्म लिखा।

बादशाहकी उदारता—इस वर्ष बादशाहने दरिद्रों और हकदारोंको निम्न लिखित दान दिया।

भूमि ४४७८६ बीघे। गांव २

कशमीरमें अन्न ३२० गोन। काबुलमें जमीन ७ हल।

अलहदादका बागी होना—जब महाबतखां बंगशके बन्दोबस्त करने और पठानोंकी जड उखाडनेके वास्ते बिदा हुआ था तो जलाला पठानके बेटे अलहदादको साथ लेगया था कि शायद वह कुछ अच्छी सेवा करेगा। बादशाहने दूरदर्शितासे उसके भाई और बेटेको अपने पास औलमें रहनेके वास्ते बुलवा लिया था और उनपर बहुत कुछ कृपाभी कीजाती थी। तोभी अलहदाद जिसदिन पहुंचा उसीदिनसे खिंचाहुआ सा था। महाबतखां काम मुबारककी आज्ञाकारी उसका मन रमाता रहता था। इन दिनों उसने कुछ

सेना पठानोंकी एक टुकड़ी पर भेजी थी जिसके साथ उसको भी कर दिया था। जब सेना वहां पहुंची तो अलहदादके कपटसे वह काम न बना निष्फल लौटनापड़ा। अलहदादको भय हुआकि महाबतखां इस बातका निर्णय करेगा तो दण्ड देगा। इससे वह बागी होगया। महाबतखांने बादशाहसे रिपोर्ट की। बादशाहने उसके भाई और बेटेको पकड़कर गवालियारके किलेमें भेजदिया। इसका पिता भी बादशाहके बापसे इसीभांति प्रतिकूल होगया था।

मानसिंह—५ गुरुवारको बादशाहने रावतशकर(१) के बेटे मानसिंहका मनसब हजारी जात छःसौ सवारोंका कर दिया। वह सूबे बिहारके सहायकोंमें था।

बंगश—बादशाहने आकिलखांको हाथी देकर बंगशमें फौजकी हाजिरी और मनसबदारोंकी सेनाका निर्णय करनेके वास्ते भेजा।

सोमवारकी भेंट—सोमवारके दिनकी भेंट महमूद आबदारके लिये जो बचपनसे सेवा करता था नियत की गई।

तरबियतखांकी मृत्यु—तरबियतखां जो पीढ़ियोंका नौकर और अमीरोंकी श्रेणीमें था, मर गया। बादशाह लिखता है—मौजी आदमी था। अपनी सब आयु सुख पूर्वक बिताना चाहता था। हिन्दी रागोंका बड़ा रसिया था और समझता भी अच्छा था।

राजा सूरजसिंह—राजा सूरजसिंहका मनसब दोहजारी२००० सवारका होगया।

राय कुंवरचन्द—बादशाहने कई सरदारोंको हाथी दिये। एक हाथी राय कुंवरचन्द मुस्तौफी (दफ्तरके अध्यक्ष) को भी मिला।

शाहनवाजखांकी मृत्यु—इसी तारीखको सिपहसालार (सेनापति) खानखानाके बेटे शाहनवाजखांकी मृत्युकी खबर पहुंचनेसे बादशाहको उदासी हुई। बादशाह लिखता है—"जब वह अतालीक (खानखाना) मेरे पाससे बिदा होता था तो मैंने उसे ताकीदसे कह लाया कि हम सुनते हैं कि शाहनवाजखां शराबका व्यसनी होकर

(१) सही नाम शंकर।

बहुत पीने लगा है। यह बात सच है तो अफसोस होगा कि वह इस अवस्थामें अपनेको नष्ट करदे। उसको स्वतन्त्र मत रहने दो और पूरी तरहसे रोको। जो यह तुमसे न होसके तो साफ अर्ज करो हम उसको हजूरमें बुलाकर उसकी व्यवस्था ठीक करनेकी कृपा करेंगे। जब वह बुरहानपुर पहुंचा तो शाहनवाजखांको बहुत शिथिल और कृश पाकर यत्न करने लगा। परन्तु कुछही दिन पीछे वह खाटमें पड़ गया। हकीमोंने बहुतसी दवादारूकी कुछ लाभ न हुआ। ३३ वर्षकी जवान अवस्थामें बहुतसे अरमान मनमें लेकर परलोकको चल दिया। इस अशुभ समाचारको सुननेसे मैंने बहुत सोच किया। सच यह है कि वह पूरा खानाजाद था। चाहिये तो यह था कि इस राज्यकी अच्छी अच्छी सेवायें करता और बडा नाम और यश छोडता। यद्यपि यह मार्ग सभीके आगे है और मृत्युसे किसीको छुटकारा नहीं है परन्तु इस प्रकार मरना बुरा लगता है आशा है कि उसके अपराध क्षमा होंगे। राजा सारंगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकों और मिजाज जाननेवाले चाकरोंमेंसे है मैंने अपने उस अतालीकके पास भेजकर बहुतसी मेहरबानियों और बखशिशोंसे उसकी सहानुभूति की और शाहनवाजखांका मनसब जो ५ हजारी था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसब पर बढा दिया। उसके छोटे भाई दाराबखांका मनसब असल और इजाफ से ५ हजारी जात ५ हजार सवारका करके खिलअत घोड़ा और जड़ाऊ तलवार दी और उसको बापके पास शाहनवाजखांकी जगह बराड़ और अहमदनगरके सूबोंमें शासन करनेके वास्ते भेज दिया। उसके दूसरे भाई रहमानदादको दोहजारी जात और ७०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित किया। शाहनवाजखांके एक बेटे मनूचहरको २ हजारी जात १००० सवार और दूसरे बेटे तुगरलको हजारी जात और ५०० सवारका मनसब दिया।

भारत बुन्देला—१२ गुरुवार (ज्येष्ठ वदी ४) को बादशाहने कुछ अमीरों पर कृपा करके मनसब हाथी और घोड़े दिये उनमें

भारत बुंदेलेको भी ६ सदी जात और ४०० सवारोका मनसब मिला।

संग्राम—जमूके जमींदार संग्रामको हाथी दिया गया।

बक्का और बकरीकी औलाद—अहमदाबादमें बादशाहके पास २ बक्के(१) थे। पर उनकी मादा न थी। बादशाहने उनको सात बरबरी बकरियोंमें छोड दिया। उक्त बकरियां अरबसे जहाजोंमें लाई गई थीं। उनको उन बक्कोंसे गर्भ रहा। छः महीने पीछे उन्होंने फतहपुरमें एक एक बच्चा जना। उनसे तीन नर थे चार मादा। यह सब सुन्दर और सुडौल थे। उनमें जिनका रंग बक्कोंसे विशेष मिलता था वह पसन्द थे और लाल भी थे। काली लकीरें पीठ पर थीं। यह सब खूब कूदते फांदते और ऐसी चपलतासे पैतरे बदलते थे कि जिनको देखकर हंसी आती थी। बादशाह लिखता है—"लोगोंमें यह बात प्रसिद्ध थी कि चित्रकार बकरोंकी उछलकूदका चित्र नहीं खैंच सकता सो इन बच्चोंकी कूदफांद देखकर इसका पूरा विश्वास होगया। कदाचित वह बकरेकी एक चालकी कूद फांदका चित्र खैंचले। परन्तु नई नई गतें, नानाप्रकारकी दौड़धूप और चञ्चलताका चित्र खैंचनेमें निःसंदेह थक जायगा। एक महीना बरन बीस दिनकाही बच्चा ऊंचेऊंचे स्थानोंसे इसप्रकार कूदकर पृथ्वीपर आरहता है कि बकरेके सिवा और कोई जानवर कूदे तो एकभी अंग साबित न रहे। यह मुझे बहुत भले लगते हैं इस लिये हमेशा पास रखने को फरमा दिया है और सबके उचित नाम भी रखे गये हैं। मैं इनसे बहुत प्रसन्न हूं और साथ खानेवाले बकरे और अमील बकरियोंके एकत्र करनेका बहुत ध्यान रखता हूं। चाहता हूं कि इनका वंश बढ़े। लोगोंमें भी इसकी चाल फैले। इन बच्चोंको आपसमें

(१) पोचसोगरकोंका प्रान्तमें एक जातिका न्यारा बकरा होता है जिसे मारखोर भी कहते हैं। यह सांप खाता है। इसीका नाम [illegible] भी है।

मिलाया जायगा इनकी औलाद आशा है कि और भी अच्छी होगी। इनमें बकरोंसे यह विलक्षणता है कि बकरा तो जन्मते ही जबतक थन मुंहमें लेकर दूध न पीले चिल्लाता रहता है और यह बिलकुल नहीं बोलते चुप खडे रहते हैं।

खुरदाद।

बिहार—२ गुरुवार (ज्येष्ठ सुदी १०) को बादशाहने मुकर्रबखां को हाथी तलायर सहित और दो घोडे एक जडाऊ खपवा और ५० हजार रुपये खर्चके वास्ते देकर बिहारकी सूबेदारी पर जो पहले मिल चुकी थी बिदा किया। वह वहां जानेसे पहले सलाम करने को दरगाहमें उपस्थित हुआ था।

मुंगेर—इसी दिन सरदारखां हाथी घोडा और खिलअत पाकर सरकार मुंगेरकी जागीरदारी पर बिदा हुआ।

गोलकुण्डा—कुतुबुल्मुल्कका वकील मीर मुशरिफ भी बिदा हुआ। शाहजहांने अपने दीवान अफजलखांके भाईको उसके साथ भेजा। कुतुबुल्मुल्कने भक्ति प्रकाश करके कई वार बादशाहके चित्र की प्रार्थना की थी। इस लिये बादशाहने अपनी जडाऊ तसवीर खपवे और फूल कटारे सहित भेजी। और मीरको २४ हजार दरब जडाऊ खञ्जर घोडा और खिलअत दिया।

बंगाला—बादशाहने हसनअलीखां जागीरदार सरकार मुंगेरको अढाई हजारी जात और सवारका मनसब देकर बंगालेके सूबेदार इबराहीमखां फतहजंगकी मदद पर भेजा। इबराहीमखाने दो नावें जिनको बंगालेमें कोशा कहते हैं भेजी थी। एकमें सोनेकी और दूसरीमें चांदीकी बैठक बनी थी। बादशाहने पसन्द करके उनमेंसे एक शाहजहांको दी।

सुलतान परवेज—परवेजके वास्ते बादशाहने नादिरीका मनसब चीरा और पटका भेजा जो उसने सेवामें उपस्थित होनेके वास्ते मगाया था।

मिरजावाली—२३ गुरुवार (आषाढ़ सुदी १।२) को बादशाहको

फूफी, मिरजा मुहम्मद हकीमकी बहनके बेटे मिरजावालीने दक्षिण से आकर चौखट चूमी। बादशाहने इसको शाहजादे दानियालकी बेटी देनेके वास्ते बुलाया था।

सरबलन्दराय—इसी दिन सरबलन्दरायका मनसब अढ़ाईहजारी जात और पन्द्रहसौ सवारोंका होगया यह दक्षिणमें नौकरी पर था।

शैख अहमद धूर्त—शैख अहमद नामक एक धूर्तने सरहिन्दमें कपटका जाल फैलाकर बहुतसे चेले करके देश देशान्तरोंमें लोगोंके बहकानेके लिये भेज दिये थे और मकतूबात नामका एक ग्रन्थ भी अपने मतका बनाया था जिसमें बादशाहने बहुतसी बातें मुसलमानी मतके विरुद्ध देखकर उसको पकडवा मंगाया और गवालियरके किले में कैद रखनेके लिये अनीराय सिंहदलनको सौंप दिया।

सुलतान परवेजकी भेट—२५ खुरदाद शनिवार (आषाढ सुदी ४) को सुलतान परवेजने इलाहाबादसे आकर राजद्वारकी चौखट पर माथा टेका और फिर जमीन चूमी। बादशाहने बडी कृपा करके बैठनेका हुक्म दिया। उसने दो हजार मोहरें, दो हजाररुपये और एक हीरा भेट किया।

रतनपुरका राजा कल्याण—सुलतान परवेजके साथ रतनपुरके राजा कल्याणने भी चौखट चूमनेकी प्रतिष्ठा पाई। परवेजने इसके ऊपर फौज भेजी थी। ८० हाथी और एक लाख रुपयेकी भेट ले कर इसको साथ ले आया था।

परवेजके दीवान वजीरखांने २८ हथनियां और हाथी भेट किये जिनमेंसे ९ बादशाहने रख लिये।

तगा—सुरखतगा बंगालेकी अन्तिम सीमामें तगा जातिके लोगोंसे युद्ध करके काम आया था इसलिये बादशाहने उसको सरकार बनी रखनेके लिये उसके भाइयोंको मनसब देकर नौकर रख लिया।

तीर।

शिकार—३ सोमवार (अषाढ सुदी ७) को शहरके बाहर चार

काले हरन एक हरनी और एक हरनका बच्चा शिकार हुआ। बादशाह सुलतानपरवेजकी हवेलीके आगेसे निकलता था इसलिये उसने दो दन्तीले हाथी तलायर सहित भेट किये। दोनोंही खासे हाथियोंमे रखे गये।

ईरानका दूत—२२ गुरुवार (सावन बदी ७) को शाह अब्बास ईरानीका एलची सयद हसन एक प्रेमपत्र और बिल्लौरका आबखोरा जिसके ढकने पर एक लाल लगा हुआ था लेकर आया। शाहकी इस प्रीतिकी रीतिसे और भी प्रीति बढ़ी।

खानआलमकी ईरानसे अरजी—२० गुरुवार (सावन बदी ३०) को खान आलमका नौकर हाफिज हसन उसकी अरजी और शाह अब्बासका कृपापत्र लेकर राजद्वारमें उपस्थित हुआ। शाहने खान आलमको अबलक अर्थात् चितकबरे लहरदार मछलीके दांतकी बनीहुई तलवारकी मूठ दीथी। वह उसने अति अनोखी और सुन्दर होनेसे बादशाहकी सेवामें भेजी। बादशाह भी उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। क्योंकि अबतक उसने ऐसे रंगका दांत नहीं देखा था।

अमरदाद।

शबबरात—४ शनिवार १५ शाबान (द्वितीय सावन बदी १) को रातको शबबरात थी। जमनामें दीपमाला और आतिशबाजीसे नावें सजाकर बादशाहको दिखाई गईं। बादशाह बडी प्रसन्नतासे बहुत देर तक उनका तमाशा देखता रहा।

सम्मूगर—८ गुरुवार (सावन बदी ६) को बादशाह शिकारके वास्ते गांव सम्मूगरमें गया और सीम तक वनविहार करके मगलकी रातको राजभवनमें लौट आया

बिशोतनको मनसब—१६ गुरुवार (द्वितीय सावनबदी १४) को शेख अबुलफजलके पोते बिशोतनको सात सदी जात ३५० सवारोंका मनसब मिला।

गुलअफशां बाग—फिर बादशाह गुलअफशा बागमें गया।

रस्ते में पानी बरसा जिससे बागकी और शोभा बढगई थी। वह यमुनाके तटपर था। उसमें जो भवन बनेथे उनपरसे बादशाह दूरतक हरयालीका यौवन देखकर बहुत प्रफुल्लित हुआ। यह बाग ख्वाजाजहांके अधिकारमें था इस लिये उसने नईचालके जरी के बने हुए कुछ कपडे जो उसके वास्ते इराक देशसे आये थे बादशाहको भेट किये। बागको भी उसने सुन्दरतासे सजाया था। अनन्नास खूब पके हुए थे। बादशाहने उसका मनसब बढाकर ५ हजारी जात तीनसौ सवारोंका करदिया।

अबलकदान्त—बादशाहका मन खानआलमकी भेजीहुई मूठ को देखकर अबलक रंगके दान्तोंपर लोटपोट होरहा था और लोग उसको ढूंढते फिरते थे कि कहीं मिलजावे तो भेटकरके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करें। बादशाहने भी चतुर चाकरोंको ईरान और तूरानमें भेजाथा। दैवयोगसे आगरेमेंही एक अजनबी आदमीने वैसा दान्त थोडेही दामोंमें मोल लेलिया था और यह अनुमान करता था कि कभी आगमें पडजानेसे काला पडगया है। उसने एक दिन शाहजहांकी सरकारके एक बढईको दिखाकर कहा कि इसकी कालोंस उतार दीजिये। वह नहीं जानता था कि इस कालोंसनेही उसकी सफेदीको कीमत बढ़ा दी है। बढईने अपने दरोगाके पास जाकर बधाई दी कि जिस अलभ्य वस्तुके ढूंढनेको बहुतसे आदमी देशदेशान्तरमें भटक रहे हैं वह बहुत सस्ती एक अनाडीके हाथ लगगई है जो उसकी कदर और कीमत कुछ नहीं जानता है उससे थोडेसे मिलसकती है। वह दान्त लिया गया और दूसरे दिन शाहजहांको भेटकिया गया। शाहजहांने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर पहिले तो बहुत कुछ प्रसन्नता दिखाई और तब बादशाह [illegible] बादशाहकी बातोंमें लिप्त तो यह दान्त उनको दिखाया। बादशाह लिखता है—"मैंने अत्यन्त प्रफुल्लित होकर उसको इतने आशीर्वाद दिये कि यदि मैंने इसको [illegible] तो भी उसके [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] नाने [illegible]।"

आदिलखांका नौकर बहलोलखां—इसी दिन आदिलखांका उत्तम सेवक बहलोलखां नौकर होनेको आया। बादशाहने घोडा खिलअत तलवार और १० हजार दरब देकर हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित किया।

खानदौरां—खानदौरांकी अरजी पहुंची कि श्रीमानने कृपाकर के इस बूढ़े दासको ठट्ठेकी सूबेदारी दी पर बुढ़ापेसे लाचार होकर प्रार्थना करता हूं कि दासको पेन्शन मिले। इसपर बादशाहने खुशाबका रसल परगना जो बहुत बर्षोंसे उसकी जागीरमें था जिसकी उपज ३० लाख दाम की थी उसके नाम स्थिर रख दिया। उसके बड़े लडके शाहमुहम्मदको हजारी जात ६०० सवारका, मंझले बेटे याकूबबेगको ७ सदी ३५० सवारका, और छोटे असदबेग को ३ सदी ५० सवारका मनसब दिया।

शहरेवर।

१ शनिवार (द्वितीय सावन सुदी १४) को बादशाहने खानखानां और दूसरे बड़े बडे अमरोंके वास्ते जो दक्षिणमें थे बरसाती कपडे भेजे।

काश्मीर—बादशाहका विचार काश्मीर जानेका था इसलिये जहांगीरकुलीको विदा किया कि आगे जाकर पुंछके रस्तेको ऐसा साफ करे कि बोझ उठानेवाले जानवर वहांकी विकट घाटियोंमेंसे सुगमता पूर्वक निकल जावें और मनुष्योंको भी किसी प्रकारका कष्ट न भुगतना पडे। इस कामके वास्ते बहुतसे बढ़ई बेलदार और सिलावट उसके साथ भेजेगये। एक हाथी भी उसको दिया गया।

नूरमंजिल—१३ गुरुवार (भादो बदी १०) को बादशाह नूरमंजिल बागमें जाकर १६ रविवार तक वहां विहार करता रहा।

विक्रमाजीत बघेला—राजा विक्रमाजीत बघेलेने अपने वतन बांधोगढसे आकर एक हाथी और एक जडाऊ पालकी भेट की।

१५ वीं सालगिरह—२४ (भादो सुदी ८) को राजमाता

अरयमजसानीके भवनमें सौरपक्षीय वर्षगांठके तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाहको ५१वां वर्ष सौरपक्षसे लगा।

चांदनीका उत्सव—३० रविवार १४ शव्वाल (भादों सुदी १४) को रातको बादशाहने चांदनीरातका उत्सव यमुना तटस्थ बागके भवनमें किया।

अबलकदांतकी मूठ—शाहजहांने जो चितकबरा दांत नजर किया था बादशाहने उसे कटवाकर, दो तलवारकी मूठें बनानेका हुक्म दिया। यह दान्त भीतरसे बहुत सुथरा और सुरंग निकला। उस्ताद पूर्ण और कल्याणको जो खातिसबन्दीके काममें अद्वितीय थे हुक्म हुआ कि एक मूठ तो उसी कैंडेकी बनावें जो आजकल सर्वप्रिय होकर जहांगीरीकैंडेके नामसे प्रसिद्ध होचुका है। तेगा गिलाफगीरी और बन्दूबान बनानेका उन उस्तादोंको हुक्म हुआ जो इन कामोंमें दक्ष थे। बादशाह लिखता है—जैसी मनोवाञ्छा थी वैसाही काम बना। एक मूठ तो ऐसी चितकबरी है कि जिसके देखनेसे आश्चर्य मालूम होता है। इसमें सात रंग झलकते हैं। इसके कई फूल ऐसे दिखाईदेते हैं कि मानो शिल्पके सिरजनहारने स्वयं अपनी विचित्रलेखा लेखनीसे उन पर काली रेखाएं खैंची हैं। वास्तवमें यह इतनी अद्भुत है कि मैं इसे एक क्षण अलग करना नहीं चाहता। खजानेमें जितने अमूल्य रत्न हैं उन सबसे इसको अधिक सम्हाल रखताहूं। गुरुवारके दिन हर्ष और उत्साह पूर्वक मैंने उसको कमरमें बांधा और जिन चतुर कारीगरोंने उसके बनानेमें दिल लगाकर अपनी कारीगरी दिखाई थी उनको पुरस्कार दिया। उस्ताद पूर्णको हाथी सिरोपाव और सोनेके कड़े दिये।

कल्याणको "अजायबदस्त" की पदवी, सिरोपाव, और जड़ाऊ पहुंचियां दी। इसी तरह सबको उनकी कारीगरीके अनुसार इनाम दिया।

अहदादकी हार—मनायतखांके बेटे अमानुल्लाने अहदाद पठानसे युद्ध करके बहुतसे पठानोंको मारा था बादशाहने इसके इनाममें खासी तलवार उसके वास्ते भेजी।

सहर महीना ।

राजा सूरजसिंह-गजसिंह—५ शनिवार (आश्विन बदी ५) को दक्षिणसे राजा सूरजसिंहके मरनेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—यह मालदेवका पोता था। मालदेव हिन्दुस्थानके श्रेष्ठ जमींदारोंमेंसे था जो राणासे बराबरीका दम भरता था। यहां तक कि एक लड़ाईमें राणासे जीत भी गया था। उसका अहवाल अकबरनामेमे विस्तारपूर्वक लिखा है। राजा सूरजसिंह स्वर्गवासी श्रीमान और मुझ ईश्वरभक्तकी कृपासे उच्च पदको पहुचा था। उस का राज्य भी बाप और दादासे बढ गया था। उसके बेटेका नाम गजसिंह है। बापने जीते जीही राज्यका सारा काम उसके अधिकारमें कर दिया था। मैंने भी उसको शिक्षा और कृपाके योग्य पाकर तीन हजारी जात और दोहजार सवारका मनसब, झण्डा, राजाकी उपाधि और देश जागीरमें दिया। उसके छोटे भाईको पांच सदी जात और २५० सवारोंका मनसब बख्शा।

आसफखांके घर जाना—१० गुरुवार (आश्विन बदी ११) को बादशाह आसफखांकी प्रार्थना पर उसकी हवेलीमें गया जो उसने जमनापर नई बनवाई थी। उसमें एक हम्माम बहुत सुन्दर बना था। उसकी शोभा देखकर बादशाह बहुत मुदित हुआ। उसमें नहानेके पीछे वहीं प्यालोंकी मजलिस हुई। निज सेवकोंको प्याले दिये। तीस हजार रुपयेके पदार्थ आसफखांकी भेटमेंसे लिये।

आगरेसे बंगाले और लाहोरतक मीनारे—बादशाहकी आज्ञानुसार आगरेसे इधर अटक नदी और उधर बगाले तक रास्तेके दोनो ओर वृक्ष तो पहलेही लग कर उपवनसे बन गये थे। अब उसने हुक्म दिया कि आगरेसे लाहोर तक कोस कोस पर एक एक मीनारा(१) बनाया जाय और तीन तीन कोस पर एक एक कुआ।

---

(१) यह स्तम्भ अब तक कहीं टूटे और कही साबित खडे हैं। और कोसमीनारेके नामसे प्रसिद्ध है। पहला मीनारा दिल्लीके बाहर ही है जो एक चबूतरे पर बना है। उसका चित्र सन् १८६४ की छपी तुजुक जहांगीरीमें लगा है।

जिससे पथिक सुख पूर्वक आवें जावें। धूप प्यासका कष्ट न हो।

दशहरा—२४ गुरुवार (आश्विन सुदी ९*) को दशहरेका उत्सव हुआ। भारतवर्षकी प्रथानुसार घोड़े सिंगार कर बादशाहकी सेवा में लाये गये फिर कई हाथी लाये गये। बादशाहने उन्हें देखा।

मोतमिदखांकी भेट—मोतमिदखांकी भेट पिछले नौरोजमें नहीं हुई थी इसलिये उसने इस उत्सवमें सोनेका एक सिंहासन, याकूत और बुसद (मूंगे) की एक अंगूठी और ऐसेही और फुटकर पदार्थ भेट किये जो १६ हजार रुपयेके थे। सिंहासन सुन्दर बना था। बादशाह लिखता है—उसने यह भेट विशुद्ध भावसे की थी इसलिये स्वीकार की गई।

कशमीरको कूच।

कशमीर जानेका मुहूर्त दशहरेको निकला था इसलिये बादशाहने उसी दिन शामको नावमें बैठकर प्रस्थान किया। ८ दिन तक पहले पड़ावमें इस अभिप्रायसे ठहरा कि सब लोग सुगमतासे तय्यारी करके आजावें।

बंगशके मेवे—महाबतखांने बंगशके सेव डाकचौकीमें भेजे थे। वह ताजा ताजा बादशाहके पास पहुंचे। बादशाह लिखता है—मैं इनको खाकर बहुत खुश हुआ। काबुलके सेवोंसे जो वहीं खाये थे और समरकन्दके सेवोंसे जो हरसाल आते हैं इनकी कुछ तुलना नहीं होसकती। मिठास कोमलता और स्वादमें उनकी इन की कुछ बराबरी नहीं है। अबतक ऐसे कोमल और सरस सेव नहीं देखे थे। कहते हैं कि बंगशबाला(१)में नगपारईके पास सेजरा नाम एक गांव है उस देशमें तीनही दरख्त इन मेवोंके हैं। बहुत

* चंडूपञ्चांगमें तो इस दिन ९ है बादशाही पञ्चांगमें १० [illegible]।

(१) बंगश देशके दो विभाग हैं एक ऊंचा और दूसरा नीचा। ऊंचेको बंगशबाला और नीचेको बंगशपाईं कहते हैं। इनमें रहनेवाले पठान भी बंगशी कहलाते हैं।

परिश्रम किया गया पर दूसरी ठौर इस खूबीके सेब नहीं हुए। मैंने भाई शाह अब्बासके एलची सैयदहसनको इन सेबोंका कुछ उच्छिष्ट दिया और पूछा कि इराकमें इनसे उत्तम सेब होते हैं या नहीं? उसने विनय की कि ईरान भरमें इसफहानके सेब सबसे उत्तम होते हैं वह भी इनसे बढकर नहीं।

आबान महीना।

अकबर बादशाहका रौजा—१ आबान गुरुवार (कार्तिकबदी१) को बादशाहने अपने पिताकी कबर पर माथा टेककर १०० मोहरें चढ़ाईं। सब बेगमों और महलवालियोंने भी परिक्रमा देकर भेट पूजा की। शुक्रवारकी रातको बडी मजलिस जुडी। मौलवी मुल्ला, हाफिज, शेख, सूफी और गाने बजानेवाले बहुतसे आजुडे थे। बादशाहने सबको यथायोग्य खिलअत फरजी और शाल दिये। इस रौजेकी इमारत अति विशाल थी तो भी बादशाहने और बहुत बढा दी।

तीसरी रातको ४ घड़ी व्यतीत होने पर वहांसे कूच हुआ। बादशाह जलमार्गसे ५॥ कोस चलकर ४ घड़ी दिन चढे मंजिल पर पहुंचा। पानीसे निकलकर उसने सात तीतर शिकार किये।

ईरानके एलचीकी बिदा—तीसरे पहर बादशाहने ईरानके एलची सैयद हसनको २० हजार रुपये, सोनेका सिलाहुआ सिरोपाव, जडाऊ जीगे सहित, और हाथी देकर बिदा किया। शाह अब्बासके वास्ते मुर्गकी शक्लकी जड़ाऊ सुराही जिसमें बादशाहके पीनेके योग्य शराब समाती थी सौगातमें भेजी।

लशकरखां—लशकरखांको खिलअत हाथी घोडा नौकर और जडाऊ तलवार देकर राजधानीके शासन और रक्षापर भेजा।

इकरामखां चिश्ती—इकरामखांको जो इसलामखांका बेटा और शेख सलीम चिश्तीका पोता था दो हजारी जात और १५०० सवार का मनसब देकर मेवातकी फौजदारी पर बिदा किया।

इसलामखांका बादशाह पर सदके होना—बादशाह लिखता

है—"इन दिनों एक विश्वासयोग्य पुरुषसे सुनागया कि जब मैं अज-मेरमें बीमार होगया था तो अशुभ समाचार पहुंचनेसे पहिले एक दिन इसलामखां बङ्गालेमें अकेला बैठा था। अकस्मात् उसको मूर्च्छासी आगई। जब सुध आई तो अपने भेदी शेख भीकनसे कहा —मुझे ऐसा दृष्टान्त हुआ है कि हजरत शाहनशाहका शरीर कुछ अस्वस्थ है इसका उपाय यही है कि कोई बहुतही प्यारी वस्तु उनके ऊपर सदके कीजाय। पहले तो उसने अपने पुत्र होशङ्गका बलि-दान देना विचारा परन्तु फिर उसकी बाल्यावस्था पर दया करके अपनी आत्माकोही अपने स्वामीपर न्यौछावर करना स्थिर किया। यह संकल्प उसका सच्चे मनसे था, इसलिये परमेश्वरको भी स्वीकार हुआ। उसकी मनोकामना पूर्ण होगई। शीघ्रही वह रोगग्रस्त होकर परलोकको गया और मुझे ईश्वरने अच्छा करदिया। यद्यपि स्वर्गवासी श्रीमान शेखके बेटों पोतोंका बहुत ध्यान रखते थे और उन्होंने यथायोग्य सबका पालन पोषण किया था। परन्तु जबसे मैं बादशाह हुआहूं उस महात्माके ऋणसे उऋण होनेकेलिये इनलोगोंकी बड़ी खातिर कीजाती है। इनमेंसे बहुतसे अमीरी और सूबेदारीके दरजेको पहुंचे हैं।"

मथुरा—वहांसे ४ कूचमें बादशाह मथुरा पहुंचा।

वृन्दावन—८ गुरुवार (कार्तिकवदी ९) को बादशाह वृन्दावनके मन्दिर देखने गया। वह लिखता है—"स्वर्गवासी श्रीमानके राज्यमें राजपूत अमीरोंने अपने ढंगकी इमारतें बनाकर बाहरसे खूब टीप टाप की है। पर भीतर इतनी अधिक चमगादड़ों और अबाबीलों ने घोंसले बनारक्खे हैं कि उनकी दुर्गंधसे सांस बन्द होता है।"

आमेर—९ शुक्रवार (कार्तिक बदी १०) को किले आमेरकी युद्ध सामग्रीके लिये ६ लाख रुपये खानखानाके पास भेजे गये।

चिदरूप (जदरूप) गुसाईं—बादशाह लिखता है—"चिदरूप गुसाईं का वृत्तान्त जो उज्जैनमें तपस्या करता था पहिले लिखा जा-चुका है। अब वह उज्जैनसे मथुरामें जो हिन्दुओंका बहुत बड़ा तीर्थ

है आकर जमनाके तटपर भगवत स्मरणमें तत्पर है। उसके सत्संग की इच्छा मनमें सदा रहती है। मै उससे मिलने गया। बहुत कालतक एकान्तमें वार्तालाप करता रहा। सचतो यह है कि वह एक अच्छा साधु है। उसकी सभामें आनन्द मिलता है और तृप्ति होती है।"

शेरका शिकार—१० शनिवार (कार्तिक बदी ११) को किरावलोंने रिपोर्ट की कि इस प्रान्तमें एक सिंह है जिससे प्रजा और यात्री पीड़ित हैं। बादशाहने हुक्म दिया कि बहुतसे हाथी लेजाकर जंगल घेर लो। दिन ढले आप भी बेगमों सहित गया और नूरजहां बेगमको बन्दूक मारनेकी आज्ञा दी। क्योंकि बादशाह अपने हाथसे जीव-बध न करनेका प्रण कर चुका था। वह लिखता है—"हाथी शेरकी बूसे एक जगह नहीं ठहरता था। मेघाडम्बरमें से ठीक गोली मारना बहुत कठिन है। मिरजा रुस्तमने जो बन्दूक मारनेमें मेरे बाद अद्वितीय है कई बार हाथी परसे तीन तीन, चार चार गोलियां मारी हैं और नहीं लगी हैं। पर नूरजहांने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेरका ढेर होगया।

चिद्रूपसे फिर मिलना—१२ सोमवार (कार्तिक बदी १३) को बादशाहके मनमें फिर गुसाईं चिद्रूपसे मिलनेकी उत्कण्ठा हुई। वह तुरन्त उसकी कुटीमें चलागया। वह लिखता है—"सत्सङ्ग किया गया बड़ी बड़ी बातें हुईं। परमात्माने अजब श्रद्धा दी है, उग्र समझ, उच्च प्रकृति, तीक्ष्ण ज्ञानशक्ति, गम्भीर बुद्धि, मन सब बन्धनोंसे मुक्त, संसारकी बातों पर लात मारकर निश्चिन्त बैठा है। एक आध गज कपड़ेकी लंगोटी और एक ठीकरा पानीपीनेको है। जाड़े गर्मी बरसात सदा बिना वस्त्र रहता है। एक सकड़ी गुफा रहनेको है जिसमें बड़ी कठिनाईसे करवट ली जासकती है। भीतर जानेका मार्ग ऐसा है कि दूध पीते बालकको भी कठिनाईसे उसमें जासकें।

गुसाईंसे बिदा होना—१४ बुधवार (कार्तिकबदी अमावस) को बादशाह फिर गुसाईं चिद्रूपके पास जाकर उससे बिदा हुआ।

है—"इन दिनों एक विश्वास योग्य पुरुषसे सुनागया कि जब मैं अजमेरमें बीमार होगया था तो अशुभ समाचार पहुंचनेसे पहिले एक दिन इसलामखां बङ्गालेमें अकेला बैठा था। अकस्मात् उसको मूर्च्छासी आगई। जब सुध आई तो अपने भेदी शेख भीकनसे कहा—मुझे ऐसा दृष्टान्त हुआ है कि हजरत शाहनशाहका शरीर कुछ अस्वस्थ है इसका उपाय यही है कि कोई बहुतही प्यारी वस्तु उनके ऊपर सदके कीजाय। पहले तो उसने अपने पुत्र होशङ्गका बलिदान देना विचारा परन्तु फिर उसकी बाल्यावस्था पर दया करके अपनी आत्माकोही अपने स्वामीपर न्यौछावर करना स्थिर किया। यह संकल्प उसका सच्चे मनसे था, इसलिये परमेश्वरको भी स्वीकार हुआ। उसकी मनोकामना पूर्ण होगई। शीघ्रही वह रोगग्रस्त होकर परलोकको गया और मुझे ईश्वरने अच्छा करदिया। यद्यपि स्वर्गवासी श्रीमान शेखके बेटों पोतोंका बहुत ध्यान रखते थे और उन्होंने यथायोग्य सबका पालन पोषण किया था। परन्तु जबसे मैं बादशाह हुआहूं उस महात्माके ऋणसे उऋण होनेकेलिये इनलोगोंकी बड़ी खातिर कीजाती है। इनमेंसे बहुतसे अमीरी और सूबेदारीके दरजेको पहुचे हैं।"

मथुरा—वहांसे ४ कूचमें बादशाह मथुरा पहुंचा।

वृन्दावन—८ गुरुवार (कार्तिकबदी ९) को बादशाह वृन्दावनके मन्दिर देखने गया। वह लिखता है—"स्वर्गवासी श्रीमानके राज्यमें राजपूत अमीरोंने अपने ढंगकी इमारतें बनाकर बाहरसे खूब टीप टाप की है। पर भीतर इतनी अधिक चमगादड़ों और अबाबीलों ने घोंसले बनारखे हैं कि उनकी दुर्गंधसे सांस बन्द होता है।"

आसेर—९ शुक्रवार (कार्तिक वदी १०) को किले आसेरकी युद्ध सामग्रीके लिये ६ लाख रुपये खानखानांके पास भेजे गये।

चिदरूप (जदरूप) गुसाईं—बादशाह लिखता है—"चिदरूप गुसाईंका वृतान्त जो उज्जनमें तपस्या करता था पहले लिखा जाचुका है। अब वह उज्जनसे मथुरामें जो हिन्दुओंका बहुत बड़ा तीर्थ

है आकर जमनाके तटपर भगवत स्मरणमें तत्पर है। उसके सत्संग की इच्छा मनमें सदा रहती है। मैं उससे मिलने गया। बहुत कालतक एकान्तमें बार्तालाप करता रहा। सचतो यह है कि वह एक अच्छा साधु है। उसकी सभामें आनन्द मिलता है और तृप्ति होती है।"

शेरका शिकार—१० शनिवार (कार्तिक बदी ११) को किरावलोंने रिपोर्ट की कि इस प्रान्तमें एक सिंह है जिससे प्रजा और यात्री पीडित हैं। बादशाहने हुक्म दिया कि बहुतसे हाथी लेजाकर जंगल घेर लो। दिन ढले आप भी बेगमों सहित गया और नूरजहां बेगमको बन्दूक मारनेकी आज्ञा दी। क्योंकि बादशाह अपने हाथसे जीव-बध न करनेका प्रण कर चुका था। वह लिखता है—"हाथी शेरकी बूसे एक जगह नहीं ठहरता था। मेघाडम्बरमें से ठीक गोली मारना बहुत कठिन है। मिरजा रुस्तमने जो बन्दूक मारनेमें मेरे बाद अद्वितीय है कई बार हाथी परसे तीन तीन चार चार गोलियां मारी हैं और नहीं लगी हैं। पर नूरजहांने पहली ही गोली ऐसी मारी कि शेरका ढेर होगया।

चिद्रूपसे फिर मिलना—१२ सोमवार (कार्तिक बदी १३) को बादशाहके मनमें फिर गुसाईं चिद्रूपसे मिलनेकी उत्कण्ठा हुई। वह तुरन्त उसकी कुटीमें चलागया। वह लिखता है—"सत्सङ्ग किया गया बड़ी बडी बातें हुईं। परमात्माने अजब श्रद्धा दी है, उग्र समझ, उच्च प्रकृति, तीक्ष्ण ज्ञानशक्ति, गम्भीर बुद्धि, मन सब बन्धनोंसे मुक्त, संसारकी बातों पर लात मारकर निश्चिन्त बैठा है। एक आध गज कपड़ेकी लंगोटी और एक ठीकरा पानीपीनेको है। जाडे गर्मी बरसात सदा बिना वस्त्र रहता है। एक सकडी गुफा रहनेको है जिसमें बडी कठिनाईसे करवट ली जासकती है। भीतर जानेका मार्ग ऐसा है कि दूध पीते बालकको भी कठिनाईसे उसमें लासके।

गुसाईंसे बिदा होना—१४ बुधवार (कार्तिकबदी अमावस) को बादशाह फिर गुसाईं चिद्रूपके पास जाकर उससे बिदा हुआ।

दूसरे दिन उनकी दशा पलट गई मतवालोंकी भांति गिरने पड़ने और उठने बैठने लगी। बादशाहने "तिरयाक फारूकी" आदि बहुतसी उपयोगी औषधियां उन्हें दिलवाईं परन्तु कुछ न हुआ। एक पहर उसी दशामें रहकर मर गये।

इसी दिन शाह परवेजके बड़े बेटेके आगरेमें मर जानेका अशुभ समाचार आया। बादशाहने कृपापत्र भेजकर उसका शोक निवारण किया।

आगामां—१४ शुक्रवार (अगहनसुदी १) को बादशाह आगाई आगाम्रांकी प्रार्थनासे उसके घर गया। यह पीढ़ियोंसे इस घरानेकी सहचरी थी। बादशाह लिखता है—जब स्वर्गवासी श्रीमानने मेरा विवाह किया तो उसको मेरी बहन शाहजादा-खानमसे लेकर मेरे महलकी सेवाके लिये रखा था। तबसे अबतक ३२ वर्ष हुए यह मेरे पास रहती हैं और मैं इनका आदर बहुत रखता हूं। इन्होंने हमारे परिवारकी सेवा बड़ी भक्तिसे की है किसी सफर और सवारी में अपनी इच्छासे कभी बिलग नहीं रही हैं। अब बूढ़ी होगई थीं इस लिये यह चाहा था कि हुक्म हो तो दिल्लीमें बैठकर शेष आयु आशीर्वादमें बिताऊं क्योंकि अब मुझमें चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रही है। आने जानेमें कष्ट पाती हूं। उनका एक सौभाग्य यह भी है कि स्वर्गवासी श्रीमानसे उमरमें बराबर है। मैंने उनको सुख पूर्वक दिल्लीमें रहनेकी आज्ञा दी। वहां उन्होंने अपने वास्ते बाग सराय और मकबरा बनवाया है। बहुत दिनोंसे उसीके काममें लगी हुई है। अब मैं उनकी खातिरसे उनके घर गया। शहरके हाकिम सैयद भवासे कह दिया कि इनकी सेवा और सुश्रूषामें ऐसा तत्पर रहे कि किसी प्रकारसे इनका मनमैला न होने पावे।

राजा किशनदास—इसी दिन राजा कृष्णदासका मनसब बढ़कर दोहजारी जात और ३०० सवारोंका होगया।

मिरजावाली—१५ शनिवार (द्वितीय प्रतिपदा) को बादशाहने मिरजा वालीको दोहजारी जात और एक हजार सवारोंका मनसब

हाथी और झण्डा देकर दक्षिणको बिदा किया ।

शेख अबदुलहक—इसी दिन शेख अबदुलहक देहलवी बादशाह की सेवामें उपस्थित हुआ । यह बडा विद्वान था । इसने एक ग्रन्थ हिन्दुस्तानके औलियाओंके चरित्रोंका लिखा था वह बादशाहने देखा । वह लिखता है—"ग्रन्थ बनानेमें इसने बहुत परिश्रम किया है । दिल्लीमें सन्तोषपूर्वक आकाशी वृति पर बैठा है । वृद्ध है, इस का सत्संग नीरस नहीं है । मैंने बहुत भांतिकी कृपाओंसे प्रसन्न करके उसे बिदा किया ।"

सोलहवां वर्ष।

सन् १०२९ हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७६ ता० २८ नवम्बर सन् १६१९ अगहन सुदी १ संवत् १६७७ ता० १५ नवम्बर सन् १६२० तक।

मुकर्रबखांका बाग—१६ रविवार (अगहन सुदी २) को बादशाह दिल्लीसे कूच करके १२ शुक्रको किरानेके बागमें पहुंचा। यह मुकर्रबखांका वतन था। इसकी हवा अच्छी और भूमि सरस थी। मुकर्रबखांने वह बाग और मकान बनवाये थे। बादशाहने उसके बाग की तारीफ कई बार सुनी थी इस लिये उसके देखनेकी चाह हुई। २२ शनिवार (अगहन सुदी ८) को बेगमों सहित उसमें गया और देखकर मुदित हुआ। लिखता है—निस्संदेह बाग बडा उत्तम और मनोहर है। १४० बीघेमें एक पक्के कोटके अन्दर है। उसके बीचमें झालरा २२० गज लम्बा और २०० गज चौड़ा है। झालरेमें एक चौकोर चबूतरा २२ गज लम्बा और इतनाही चौडा चांदनीमें बैठनेका है। ऐसा कोई मेवा गर्म और ठंडे देशोंका नहीं है जो इस बागमें न हो। मेवेके वृक्ष जो विलायतमे होते हैं यहां तक कि पिस्तेके पौदे भी यहां लगे हुए हैं। सर्वके वृक्ष ऐसे सुडौल और सर्वाङ्ग सुन्दर देखे गये कि वैसे अबतक देखनेमें नहीं आये थे। मैंने उनकी गिनती करनेका हुक्म दिया। ३०० निकले। झालरे के ऊपर भी अच्छे भवन बने हैं।

शाहजादा उमीदबख्श—२६ बुधवार (अगहन सुदी १२) को आसफखांकी बेटीसे शाहजहांके लडका हुआ। बादशाहने उसका नाम उमीदबख्श रखा।

शिकार—२७ गुरुवार (अगहन सुदी १३) को भी वहीं मुकाम रहा। इन दिनों बादशाह जरज और तोगदरी पक्षियोंके शिकार

के आनन्दमें मग्न रहता था। जरजोंको तुलवाया तो बोरते रंग वाला सवा दो सेर जहांगीरी तोलसे हुआ और चितकबरा दो सेर आध पाव। बडी तोगदी बोरते जरजसे पाव भर अधिक उतरी।

दे महीना।

५ गुरुवार (पौष बदी ६) को बादशाहका लशकर अकबरपुरमें नावोंसे उतरकर स्थलमें उतरा। यह स्थान परगने बूडियासे दो कोस था। आगरेसे यहां तक जलमार्गसे १२३ कोस थे जो स्थलके ८१ कोसोंके बराबर थे। ३४ कूच और १७ मुकाममें कटे थे। एक सप्ताह शहर आगरेसे निकलनेके पीछे ठहरना पड़ा था और १२ दिन पालमकी शिकारमें लगे थे। सब ७० दिन लगे।

इसी दिन जहांगीरकुलीखांने बिहारसे आकर १०० मोहरें और १००) भेट किये।

गुरुवारसे ११ बुधवार (पौषबदी १२) तक लगातार कूच होता रहा।

सरहिन्दका बाग—१२ गुरुवार (पौष सुदी १३) को बादशाह सरहिन्दके बागकी बहार देखकर प्रसन्न हुआ। यह पुराना था। यहां सालके वृक्ष खूब थे। पर पहलेकीसी शोभा न थी। बादशाह ने ख्वाजा वैसीको जो खेती और इमारतके कामोंमें निपुण था इसी बागके सुधारनेके लिये सरहिन्दका 'करोडो' करके पहलेसे भेज दिया था। उसने कुछ दुरुस्ती और मरम्मत की थी। अब फिर नये सिरेसे उसे ताकीद कर दीगई कि पुराने अधसूखे वृक्षोंकी जगह नये पौदे लगावे और क्यारियां भी नई बनाकर पुराने मकानोंकी मरम्मत करावे और हम्माम आदि दूसरे मकान भी उचित स्थानमें बनावे।

शाहजहांके घर जाना—१९ गुरुवार (पौष सुदी ४) को बादशाह शाहजहांकी प्रार्थनासे उसके डेरे पर गया। उसने पुत्रोत्सवकी बड़ी भारी मजलिस रचाकर बादशाहको उत्तम भेट दिखाई। बादशाहने एक लाख तीस हजार रुपयेकी चीजें पसन्द करके लेलीं। उसमें एक नीमचा फरङ्गीकाटके नीलमोंसे जड़ा अति उत्तम था।

एक सुन्दर हाथी था जो बगलानेके राजाने बुरहानपुरमें शाह-जहांको भेट किया था। ४००००) की भेट उसने अपनी माताओं और बड़ी बूढ़ियोंको दी।

जंग—भक्करके फौजदार सैयद बायजीद बुखारीने एक जंगके बच्चेको पहाड़से लाकर घरमें पाला था। अब बड़ा होजाने पर वह बादशाहकी भेटमें भेजा गया। बादशाहको बहुत पसन्द आया। वह लिखता है—"मारखोर और पहाड़ी मेंढे तो घरमें पाले हुए बहुत देखे गये थें परन्तु जंग देखनेमें न आया था। उसके बच्चे पैदा कराने के लिये उसको बरबरी बकरीके साथ रखनेका हुक्म दिया। यह मारखोर और कचकारसे विलक्षण है।" सैयद बायजीदको हजारी जात और सातसौ सवारोंका मनसब दिया।

२८ रविवार (पौषसुदी १५) को शाहजहांकी वर्षगांठका उत्सव व्यास नदीके तट पर हुआ। इसी दिन राजा विक्रमाजीत जो कांगड़े के किलेको घेरे हुए था, कई कामोंकी प्रार्थना करनेके लिये बुलाया हुआ दरगाहमें आया।

लाहोरका दौलतखाना—३० सोमवार (माघ बदी १) को बादशाह १०दिनकी छुट्टी लेकर लाहोरके दौलतखानेको देखनेके लिये गया। वह फिरसे बना था।

राजा विक्रमाजीतकी बिदा—इसी दिन राजा विक्रमाजीत भी खञ्जर, खासा खिलअत और घोड़ा पाकर किले कांगडेके घेरे पर बिदा हुआ।

बहमन महीना।

कलानूरका बाग—२ बुधवार (माघ बदी ३) को बादशाहकी सवारीके उतरनेसे कलानूरके बागकी शोभा बढ़ी। बादशाह लिखता है—"इस भूमिमें स्वर्गवासी श्रीमान राजसिंहासन पर विराजमान हुए थे।"

खानआलमका ईरानसे लौटना—खानआलमके ईरानसे लौटने की खबर पहुचने पर बादशाह प्रतिदिन एक पारिषदको उसका

मान बढानेके लिये अगवानी भेजता था और नानाप्रकारकी कृपाओं से उसकी प्रतिष्ठा बढाता था। उसको जो प्रसादपत्र लिखे जाते थे उनके ऊपर उचित कविता लिखकर अनुग्रह दिखाया जाता था। एकबार जहांगीरी इत्र भेजा तो एक शेर लिखा जिसका अर्थ यह है—

"मैने अपनी सुगन्ध तेरी ओर भेजी है, कि शीघ्र तुझे अपनी ओर लाऊं।"

खानआलमके साथ ईरानके शाहका बर्ताव—३ गुरुवार (माघ बदी४) को खानआलमने कलानूरके बागमें राजद्वारको चूमकर१०० मोहरें और एक हजार रुपये भेट किये। बादशाह लिखता है— "मेरे भाई शाह अब्बास जो कृपा, खानआलम पर फरमाते थे यदि उसको विस्तारपूर्वक लिखा जावे तो अत्युक्तिका भ्रम होगा। सदैव खानआलम कहकर सम्भाषण करते थे और एक क्षण भी अपने पाससे पृथक नहीं रखते थे। कभी किसी दिन या रात्रिको वह अपने घरमें रहना चाहता तो साधारण रीतिसे उसके घर पर जा कर अधिक कृपा प्रगट करते थे। एक दिन फर्रुखाबादमें कमरगे के शिकारका बड़ा समारोह था। उसमें शाहने खानआलमको तीरन्दाजीका हुक्म दिया। उसने अदबसे एक कमान और दो तीर आगे किये। बादशाहने ५० तीर और उसे अपने तरकशमेंसे दिये। उनमेंसे ५० तीर तो शिकार पर पहुचे और २ ह्या गये। फिर शाहने उसके नौकरोंको भी जो राजसभाओं और मजलिसोंमें जाने पाते थे तीरन्दाजीकी आज्ञा दी। बहुतोंने अच्छे तीर लगाये। मुहम्मदयूसुफ किरावलने एक तीर ऐसा मारा कि दो सूअरोंको छेदता हुआ निकल गया। इस पर जो लोग शाहके पास खड़े थे धन्य धन्य करने लगे। शाहने विदा करते समय खानआलमको आलिंगन करके अपनी प्रीतिका परिचय दिया और जब वह शहर से बाहर निकला तब भी उसके डेरे पर पधारकर शिष्टाचार पूर्वक विदा किया। जो अपूर्व पदार्थ खानआलम लाया वह निस्सन्देह

भाग्यवलसेही उसे मिले थे। उनमें एक चित्र नकीमशखांके साथ साहिब किरांकी लड़ाईका था। उसमें उनकी और उनके कई बेटों तथा अमीरोंकी तसवीरें थीं जिनको उस संग्राममें साथ रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रत्येक चित्रके पास उसका नाम लिखा था। इस चित्रमें २४० स्वरूप थे चित्रकारने अपना नाम खलील मिरजा शाहरुखी लिखा था। उसका काम बहुत पक्का और बढ़िया है और उस्ताद बहजादके कामसे पूरा पूरा मिलता है। जो नाम नहीं लिखा होता तो यही अनुमान किया जाता कि यह बहजाद का काम है। सम्भव है कि बहजाद उसके शिष्योंमेंसे हो और उस के ढंग पर चला हो। यह अपूर्व पदार्थ स्वर्गवासी शाह इसमाईल वा तुहमास्पके पुस्तकालयसे मेरे भाई शाह अब्बासकी सरकारमें आया और सादकी नाम उनके पुस्तकाध्यक्षने चुराकर एक मनुष्य को बेच दिया। दैवसंयोगसे सफाहानमें खानआलमके हाथ लगा। यह खबर शाहको भी होगई कि ऐसी दिव्यवस्तु उसने प्राप्त की है। उसने देखनेके बहानेसे मांगा। खानआलमने सौठा बहाना करके बहुत टाला। पर अत्यन्त आग्रह होने पर उनकी सेवामें भेज देना पडा। उन्होंने देखतेही पहचान लिया और कई दिन तक अपने पास रखा। पर वह जानते थे कि हमारी रुचि ऐसी चीजोंमें कैसी है। यह भी जानते थे कि यहां मांगनेपर किसी छोटी या बड़ी वस्तु के दे डालनेमें सङ्कीर्णता नहीं हैं। इससे खानआलमसे असली बात कहकर चित्र उसीको दिया। मैंने जब खानआलमको ईरान भेजा तो विष्णुदास नाम चित्रकारको जो चित्र खेंचनेमें इस समय अद्वितीय है शाह और उनके प्रधान सभासदोंके चित्र उतार लानेके लिये उसके साथ भेजा था। वह बहुतोंकी छवि खेंचकर लाया। मेरे भाई शाहकी तो बहुतही सुन्दर खेंची। मैंने उनके जिस सेवकको दिखाई उसीने निवेदन किया कि ठीक खेंची है। विष्णुदासका मान हाथी देकर बढ़ाया गया।

एतमादुद्दौलाकी सेना—८(१) मंगलवार (माघ बदी ६) को परम प्रधान एतमादुद्दौलाने अपनी सेना सजाई। पंजाबके सूबेका प्रबन्ध उसके प्रतिनिधियोंको समर्पित था और भारतमें भी उसकी फुटकर जागीरें थीं तथापि ५००० सवार दिखा सका।

कशमीर—बादशाह लिखता है—कशमीरमें इतनी गुंजाइश नहीं है कि उसकी उपज उस भीडभाड़के लिये यथेष्ठ हो जो सदैव सवारीके साथ रहती है। फिर अब तो लशकरकी अवाईसे अनाज का भाव बहुत महंगा होगया था इसलिये सर्वसाधारणके हितार्थ हुक्म दिया कि जो अनुचर मेरी सवारीके साथ हैं वह थोड़ेसे जरूरी साथी साथ रखकर शेष सबको अपनी अपनी जागीरों पर भेजदें। इसी प्रकार जानवर और नौकर चाकर भी कम करदें।

शाहजहांका आना—१० गुरुवार (माघवदी १२) को शाहजहां लाहोरसे आगया और जहांगीरकुलीखां खिलअत घोड़ा और हाथी पाकर दक्षिणको बिदा हुआ।

तालिबआमिली—इसी दिन बादशाहने तालिबआमिलीको मलिकुश्शोरा (कविराजा) का खिताब और खिलअत दिया। यह आमिल नाम नगरका रहनेवाला था कुछ समयसे एतमादुद्दौलाके पास रहता था। जब उसकी कविता सब कवियोंसे बढ गई तो वह दरबारके कवियोंमें लेलिया गया।

कविता—१४ चन्द्रवार (माघ वदी ३०) को सुलतान किवामके बेटे हुसैनीने एक रुबाई (एक प्रकारकी चौपाई) कहकर बादशाह की नजर की। उसका यह आशय था—

तेरे पल्लेसे जो गर्द झडे, वह सुलेमानी सुरमेके मुंहकी आब उतार दे। तेरे द्वारकी धूलको जो परीक्षाके लिये निचोड़े, तो उस मेंसे बादशाहोंके ललाटका पसीना टपकने लगे।

मोतमिदखांने उसी समय एक रुबाई पढ़ी जो बादशाहको

(१) मूलमें मंगलको ६ लिखी है सो भूल है।

बहुतही भली लगी और उसने अपनी किताबमें लिखली। उसका भावार्थ यह था—

तू मुझको अपने वियोगका विष चखाता है और कहता है कि क्या हुआ? रक्त बहाता है और बांहें झाड़ता है कि क्या हुआ? हे इस बातको न जाननेवाले कि तेरे वियोगकी तलवारने क्या किया है, तू मेरी मट्टीको निचोड तो जानेगा कि क्या हुआ?

फिर लिखा है कि तालिबअस्फ़हानी है। जवानीके दिनों कशमीर पहुंचा। वृद्धावस्था धारण किये हुए वहांकी शोभा पर मोहित होकर वहीं रह गया और गृहस्थ भी होगया। कशमीर फतह होनेके पीछे स्वर्गवासी श्रीमानोंकी सेवामें उपस्थित होकर बादशाही बन्दोंमें नौकर रहा। इस समय सौ वर्षके लगभग होगया और कशमीरमें सकुटुम्ब सुख पूर्वक रहता है।

मियांमीर—लाहोरमें मियां शेख मुहम्मद मीर नाम एक शिष्ट पुरुष रहता था और किसीके पास आता जाता न था। बादशाह को ऐसे लोगोंसे मिलनेकी बहुत चाहना रहती थी और इस समय लाहोर जानेका अवसर नहीं था। इसलिये पत्र लिखकर उसीको बुलाया। वह आया। बादशाह अकेला उससे मिला और बहुत समय तक उसकी सारगर्भित बातें सुनता रहा। वह लिखता है—"मैंने बहुत चाहा कि कुछ भेट करूं परन्तु उनको बेपरवाईमें बढ़ा हुआ देखकर इस मनोरथके प्रगट करनेका साहस न हुआ। केवल एक श्वेत मृगछाला नमाजके समय बिछानेके लिये उनकी भेट की। वह उसी समय विदा होकर लाहोरको पधार गये।"

डाढ़ी मूंछवाली स्त्री—२२ बुधवार (माघ सुदी ८) को दौलता बादके पास डेरे हुए। यहां बादशाहने एक मालीकी लडकी देखी। उसके मूंछों और डाढीके बाल एक मुट्ठीमें आनेके योग्य थे। उसका आकार पुरुषों का सा था। उसकी छातीमें बाल निकल आये थे। उसके स्तन न थे। बादशाह लिखता है मैंने सोचा कि कहीं वह पुरुष न हो। उसने कहा मुझे अभी रजोदर्शन नहीं हुआ है।

तब मैने कई स्त्रियोंसे उसकी परीक्षा कराई कि कहीं वह नपुंसक न हो। स्त्रियोंने परीक्षा करके कहा कि इसमें और दूसरी स्त्रियोंमें और कुछ अन्तर नहीं है। विचित्र जानकर यह बात लिख लीगई।

अहदादतारी—जलालातारीका बेटा अहदाद अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर मुलतानके सूबेदार बाकरखां द्वारा एतमादुद्दौलासे अपराध क्षमा करादेनेका प्रार्थी हुआ। बादशाहने स्वीकार करके बाकरखांके साथ उपस्थित होने पर उसके अपराध क्षमा कर दिये।

जम्मूकाराजा—जम्मूके जमींदार संग्रामको राजाका पद, हजारी जात ५०० सवारका मनसब हाथी और सिरोपाव मिला।

मुलतानका सूबा—बाकरखां डेढ़ हजारी जात और ५०० सवारोंका मनसब पाकर फिर मुलतानकी सूबेदारी पर विदा हुआ।

२८ सोमवार (माघ सुदी १४) को बादशाह भट नदीके तटपर करोहीके परगनेमें पहुंचा। बादशाहके नियत किये मृगया स्थानों में यहांके पहाड़ भी थे। इसलिये किरावलोंने पहलेसे आकर उन को घेर रखा था।

असफंदार महीना।

शिकार—२ असफंदार गुरुवार (फाल्गुण बदी ३)को छः कोससे पशुओंको घेर कर दूसरे दिन शाखबंदमें लाये १०१ मेढे और चिकारे शिकार हुए।

महाबतखां—महाबतखांको बादशाहने हुक्म भेजा था कि यदि वहांका प्रबन्ध विश्वास योग्य होगया हो तो फौजोंको थानोंमें छोडकर अकेला आवे। इस पर उसने इसी दिन चौखट चूमकर १००० मोहरें समर्पण कीं।

खानआलम—खानआलमका मनसब ५ हजारी जात २००० सवारोंका होगया।

कशमीर—नूरुद्दीन कुलीकी अरजी पुणिचसे पहुंची। उसमें लिखा था कि जहां तक हो सका मैंने सब घाटियोंको सुधार कर

सम कर दिया था। परन्तु दैव गतिसे कई दिन तक निरंतर मेह बरसता रहा और पहाड़ पर २ गज तक बर्फ गिरी और अब भी गिर रही है। यदि पहाड़के उधर एक महीने तक सवारी ठहरी रहे तो इस मार्गसे जाना सम्भव है नहीं तो कठिन दिखाई देता है। बादशाहका मनोरथ काश्मीरकी बहार और फुलवार देखनेका था, ठहरनेमें उसका मजा जाता था इसलिये वह पगली और दन्तूरकी ओर मुड़कर २ गुरुवार (फाल्गुण बदी ३) को भटरी पार हुआ। उसका पानी तो कमर कमर तक ही था पर बहुत वेगसे बहता था। मनुष्योंको उतरनेमें बहुत कष्ट होता था इस वास्ते बादशाहने हुक्म दिया कि २०० हाथियोंको घाटों पर लेजाकर लोगोंका असबाब उतार दें और जो मनुष्य दुर्बल हों उनको भी सवार कराकर उतार दें जिससे किसी गरीबकी जान और माल की हानि न हो।

खानजहांकी मृत्यु—इसी दिन खानजहांकी मृत्युका समाचार पहुंचा। बादशाह लिखता है—"यह पुराना और मेरे बाल्यकाल का सेवक था। अन्तमें मेरी नौकरी छोड़कर थोड़े दिनोंके लिये स्वर्गवासी श्रीमानोंकी सेवामें चला गया था। चूंकि दूसरी जगह नहीं गया था इससे मुझे बुरा न लगा। मेरे राज्याभिषेकके पीछे जो कृपा उस पर हुई उसका कभी उसको ध्यान तक न था। यहां तक कि वह ५ हजारी जात और २००० सवारोंके पदको पहुंच गया था। उसका वृत्तान्त प्रसंगसे जहांतहां लिखा जाचुका है। उससे बड़े बड़े काम बने। काम करनेका उसमें अपूर्व साहस था। इसके सिवा और योग्यतासे कि जिससे मनुष्य जन्म सफल हो विमुख था। इस यात्रामें उसका हृदय क्षीण होगया था तोभी कई दिन तक सवारीके साथ रहा। पर जब रोग प्रबल होगया तो कलानूरसे छुट्टी लेकर लाहोर गया और वहीं शान्त हुआ।"

रोहतासगढ़—४ शनिवार (फाल्गुण बदी ५) को बादशाह रोहतासके किलेमें पहुंचा। यहांसे कासिमखांको घोड़ा सिरोपाव

और खासा परम नरम देकर लाहोरको बिदा किया। रास्ते पर एक बागीचा था। बादशाह उसके फूलोंकी शोभा देखकर प्रसन्न हुआ।

इस जगह तीहू पक्षीका शिकार मिला। बादशाह लिखता है—तीहूका मांस चकोरसे अधिक स्वादिष्ट होता है।

थलके फूल—५ रविवार (फाल्गुण बदी ६) को बादशाहने कुछ फूल ऐसे देखे जिनमें कुछ तो भीतरसे श्वेत और बाहर लाल थे और कुछ भीतरसे लाल और बाहर पीले थे। बादशाह लिखता है—इनको फारसीमें 'लालाबेगाना' और हिन्दीमें थल कहते हैं। क्योंकि जैसे कमल जलका फूल है वैसेही यह स्थलका कमल है।

किश्तवारकी विजय—८ गुरुवार (फाल्गुण बदी १०) को कश्मीरके सूबेदारकी अरजी पहुंची जिसमें किश्तवारके फतह होनेकी बधाई लिखी थी। बादशाहने उसको प्रसादपत्र, खासा खिलअत, और जड़ाऊ खञ्जर भेजकर किश्तवारकी एक सालकी उपज पुरस्कारमें दी।

हसन अब्दाल—१४ मंगलवार (फाल्गुण बदी १४) को बादशाह हसन अब्दालमें पहुंचा। उसने इस रास्तेका वर्णन काबुलकी यात्रा में सविस्तर पहले कर दिया था इसलिये यहां फिर नहीं लिखा। अकबरपुरसे हसन अब्दाल तक १७८ कोस ४८कूच और २१मुकाम अर्थात् ६९ दिनमें तय हुए। हसन अब्दालमें एक टांका एक झरना और एक झालरा बहुत सुन्दर था इसलिये बादशाह दो दिन तक वहां ठहरा।

१६ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को सौरपक्षीय तुलादानका उत्सव हुआ। इस पक्षसे बादशाहको ५३वां वर्ष लगा।

कश्मीरको कूच—यहांसे आगे ऊंचा नीचा रास्ता पहाड़ोंमें होकर था। इसलिये बादशाहने यह निश्चय किया कि औरतें मरयमजमानी दूसरी बेगमों सहित कुछ दिनों ठहरकर सुभीते से पधारें। मुख्य असात्य एतमादुद्दौला, सादिकखां मीरबख्शी

और इरादतखां मीरसामान भी कारखानों सहित धीरे धीरे आवें। ऐसेही मिरजा रुस्तम सफवी, खान आजम और दूसरे बन्दोंको पुणिचके मार्गसे जानेकी आज्ञा हुई। स्वयं बादशाह आवश्यक पर-गह और पारिषदोंके साथ १७ भृगुवार (फाल्गुण सुदी २) को ३॥ कोस चलकर सुलतानपुरमें उतरा। यहां समाचार मिला कि राणा अमरसिंह उदयपुरमें परलोकगामी हुआ। बादशाहने उसके पोते जगतसिंह और बेटे भीमसिंहको जो सेवामें रहते थे सिरोपाव दिये और राजा कृष्णदासको आज्ञा की कि प्रसादपत्न राणाकी पदवीका, सिरोपाव तथा घोड़ा और खांसा हाथी कंवर कर्णके वास्ते लेजाकर शोक और हर्षकी क्रिया सम्पादन(१) करे।

पहाड़ गर्ज—बादशाह लिखता है—"यहांके लोगोंसे सुना गया कि बरसात बादल और बिजली न होनेके दिनोंमें भी बादल की सी गर्ज इस पहाड़से सुनी जाती है। इसीलिये इस पहाड़को गर्ज कहते है। एक या दो वर्ष पीछे यह गर्ज होतीही है। यह बात मैंने स्वर्गवासी श्रीमानके सम्मुख भी कईबार सुनी थी। अनोखी जानकर लिख ली।

१८ शनिवार (फाल्गुण सुदी३) को साढ़ेचार कोस चलकर संजी में डेरे हुए। यह गांव 'हजाराकारलग'के परगनेका है।

१९ रविवार (फाल्गुण सुदी ४) को ३। कोस पर नौशहरेमें मुकाम हुआ। यह धन्तूर परगनेका गांव है। जहांतक देख पड़ता है स्थल कमलके फूल तरताजा खिले हुए दिखाई देते थे।

लाल फूल—२० सोमवार (फाल्गुण सुदी ५) को गांव सलहरमें डेरे हुए। महाबतखांने साठ हजार रुपयेके रत्न और जड़ाऊ पदार्थोंकी भेंट अर्पण की। यहां बादशाहको गुलखतमीके आकार का पर उससे कुछ छोटा लाल अङ्गारासा फूल दृष्टिगोचर हुआ। कई फूल पास पास खिले हुए थे। दूरसे ऐसा जान पड़ता था कि

(१) अर्थात् राणा अमरसिंहके मरनेका शोक प्रकट करे और करणसिंहके राज्याभिषेक पर बधाई दे।

एकही फूल है। इसका पौदा जर्दालूके बराबर था और इस पहाड की तलहटीमें जंगली फूल बहुत उगे हुए थे। उनकी सुगन्ध अति तीव्र थी और रंग बनफशाके फूलसे हल्का था।

२१ मंगलवार (फाल्गुण सुदी ६) को तीन कोस पर गांव मालकालीमें कैम्प लगा। यहांसे बादशाहने महाबतखांको घोडा, खासा हाथी और सिरोपाव पोस्तीन सहित देकर बंगशकी हुकूमत पर विदा किया। रास्ते भर बूंदें पडती रहीं। रातको मेह बरसा।

२२ बुधवार (फाल्गुणसुदी ७) को तडकेही हिम गिरकर रास्ते पर बिछ गया और मेहसे फिसलन होगई जिससे जो निर्बल पशु गिरा फिर न उठा। २५ सरकारी हाथी जानसे गये। बादशाह को वर्षाके मारे दो दिन ठहरना पडा।

पगलीका जमींदार—२३ गुरुवार (फाल्गुण सुदी ८।९) को पगलीके जमींदार सुलतान हुसैनने आकर जमीन चूमी। यहांसे पगलीका इलाका लगता था।

बर्फ—बादशाह लिखता है—यह अद्भुत संयोग है कि जब स्वर्गीय श्रीमान कशमीर पधारे थे तो उस समय भी बर्फ गिरी थी और अब भी गिरी है। बीचके वर्षोंमें बर्फ भी न गिरी थी और वर्षा भी कम हुई थी।

फूलों और वृक्षोंकी शोभा—२४ शुक्रवार (फाल्गुण सुदी १०) को सवारी ४ कोस चलकर गांव सवादनगरमें ठहरी। इस मार्गमें भी अचम्बा (१) बहुत था और जर्दालू और शफतालूके फूल जंगल भरमें फूले हुए थे सनोवर के वृक्ष भी सर्व के समान आंखोंको ताजा करते थे।

सुलतान हुसैनके घर जना—२५ शनिवार (फाल्गुण सुदी ११) को ३॥ कोस पर पगलीके पास पडाव हुआ। २६ रविवारको बादशाह चकोरोंके शिकारको गया। दिन ढले सुलतान हुसैनकी

१ (अचम्बा) मूलमें ऐसाही लिखा है किसी वृक्षका नाम है तु० पृ० २४।

प्रार्थना पर उसके घर पधारा। उसने घोड़ा, तलवार, बाज जुर्रे, भेट किये।

सरकार पगली—बादशाह लिखता है—"सरकार पगली २५ कोस लम्बी और २५ कोस चौड़ी है। पूर्व दिशामें कश्मीरके पहाड़ पश्चिममें अटक बनारस उत्तरमें गनोर और दक्षिणमें गक्कड़ हैं। जब अमीर तैमूर साहिबकिरां हिन्दुस्तानको जीतकर तूरान जाते थे तो इनलोगों (गक्कडों) को जो साथ थे यहां रहनेका हुक्म देकर छोड़ गये थे। ये कहते हैं कि हमारी जाति कारलग है। परंतु ठीक नहीं जानते कि उस समय इनमें सबसे बडा कौन था और उसका क्या नाम था। अब तो ये निरे लाहोरी है और बोली भी वैसीही बोलते है"।

धन्तोर—"यही हाल धन्तोर" के लोगोंका है स्वर्गवासी श्रीमान के समयमें धन्तोरका जमींदार शाहरुख था। अब उसका बेटा बहादुर है। यह पगली और धन्तोरवाले सम्बन्धी है तो भी इनमें सीमाओंका वही झगड़ा करता है जो जमींदारोंमें स्वभाविक होता है। पर दोनों सदासे शुभचिंतक रहते आये हैं। सुलतान हुसैनका बाप सुलतान महमूद और शाहरुख दोनों युवराजावस्थामें मेरे पास आये है। सुलतान हुसैन ७० वर्षका होगया है तो भी सवारी और सफरकी शक्ति जैसी चाहिये वैसी अब तक उसमें है"।

बोजा—इस देशमें रोटी और चावलका बोजा(१) बनाते हैं जिसको सर बोलते हैं यह बोजे से बहुत तीव्र और तरल होता है। यहांके लोग इसीका सेवन करते है यह जितना पुराना हो उतनाही उत्तम है। सर को घड़ेमें बन्दकरके दो तीन वर्ष तक घरसे रख छोड़ते हैं। फिर उसके ऊपरका पानी निथार लेते है। उसको आछी कहते हैं। आछी १० वर्षकी भी होती है। इनकी समझमें जितनी पुरानी उतनीही अच्छी। कमसे कम एक वर्षकी तो होतीही है। सुलतान महमूद तो 'सर' के प्याले पर

(१) एक एक प्रकारका मादकरस।

प्याले उडा जाता था। सुलतान हुसैन भी पीता है। मेरे लिये बहुत बढ़िया सर लाये थे मैंने एक वेर परीक्षाके लिये पी और इससे पहिले भी पी थी। इसका नशा भूख तो लाता है पर दारुण भी है। विदित हुआ है कि इसमें कुछ भंग भी मिलाते हैं। न दारुण हो तो भंग उसे दारुण कर देती है। मेवोंमें जर्दालू शफ्तालू और अमरूद होते हैं परन्तु सम्हाल नहीं करते जिससे जंगलीके समान खट्टे और बुरे होते है खैर उनको कलियोंको ही देखकर प्रसन्न हो सकते हैं। घर भी काश्मीरियोंकी भांति लकडीके बनाते हैं। शिकारी जनावर भी होते है घोड़े खच्चर, गायें, और भैंसें भी है बकरे और मुर्गे बहुत हैं। खच्चर छोटा होता है बहुत बोझके काम नहीं आता"।

कई मंजिल आगे लशकरके वास्ते पूरा अनाज न होनेकी अर्ज हुई थी। इसलिये बादशाहने हुक्म दिया कि थोडेसे जरूरी डेरे और कारखाने साथ लेकर हाथियोंको छोड दें और तीन चार दिनकी सामग्री लेलें। सवारीके नौकरोंमेंसे भी थोडेसेही साथ चलें बाकी ख्वाजा अबदुलहसन बखशीके साथ कई मंजिल पीछे आते रहे। इतनी कमी करने पर भी ७०० हाथी तो जरूरी डेरो और कारखानोके लिये लेजानेही पडे!

सुलतानहुसैनका मनसब ४ सदी ३०० सवारोंसे ६ सदी ३५० सवारोंका होकर खिलअत जडाऊ तलवार और हाथी भी उसको मिला।

बहादुर धन्तोरी, बंगशके लश्करमें नियुक्त था। उसका भी मनसब बढकर २ सदी जात और १०० सवारोंका होगया।

नैनसुख नदी—२८ बुधवार (फाल्गुण सुदी १५) को बादशाह ५॥ कोस चलकर नैनसुख नदीके पुलसे उतरा। यह नदी उत्तरसे दक्षिणको जाती है। दारो नामक पहाडसे निकली है जो तिब्बत और बदखशांके बीचमें है। यहांसे इसकी दो शाखायें होगई थीं इस लिये बादशाही लशकरके उतरनेको बादशाहके हुक्मसे दो पुल

लकडीके बनाये गये थे एक १८ और दूसरा १४ गज लम्बा था। चौडे दोनोही पांच पांच गज थे। बादशाह लिखता है—"इस देशमें पुल बनानेकी यह परिपाटी है कि वृक्षोंको शाखाओं सहित पानीमें डालकर उनके दोनो सिरे पत्थरोंसे बांधते हैं फिर उनपर लकडीके मोटे मोटे तख्ते बिछाकर मेखों और रस्सोंसे जकड़ देते है यह पुल थोडीसी मरम्मतसे बरसों तक बने रहते हैं।"

सवार और पैदल तो पुल परसे उतरे। हाथी नदीसे। इस नदीका नाम सुलतान महमूदने नैनसुख रखा था।

२० शुक्रवार (चैत्र सुदी १) को साढे तीन कोस चलकर क्षणगङ्गा पर डेरे लगे।

पेम द्रङ्ग—इस रास्तेमें डेढ कोस ऊंची और इतनीही नीची एक टेकरी है। यहां कशमीरके हाकिमोंने रूईका कर लेनेके लिये दरोगा बिठा रखा था। यहां कर लेनेमें बिलम्ब होजाता था इस लिये इसका नाम पेमद्रङ्ग होगया। पेम कशमीरी भाषामें रूईको द्रङ्ग बिलम्बको कहते हैं।

पुलके उतार पर एक स्वच्छ टांका पानीका था बादशाह उस पर वृक्षोंकी छायामें मामूली प्याले पीकर डेरेमें आगया।

क्षणगङ्गा—क्षणगङ्गा पर एक पुराना पुल २४ गज लम्बा और १॥ गज चौडा था जिसपरसे पैदल लोग उतरा करते थे। बादशाहके हुक्मसे दूसरा पुल उसके सामने ५३ गज लम्बा और ३ गज चौडा बन गया था। तो भी पानीके वेग और गहरेपनसे हाथी नंगे करके उतारे गये। घोड़े पैदल और सवार पुल परसे उतरे।

सराय—अकबर बादशाहके हुक्मसे वहां एक बड़ी पक्की सराय चूने और पत्थरकी एक टीले पर जो नदीके ऊपर था बनी थी। नौरोजमें एकही दिन बाकी रह गया था इसलिये बादशाहने मोतमिदखांको पहलेसे भेज दिया था कि नौरोजका सिंहासन और दरबार लगानेके लिये कोई अच्छी ऊंची ठौर देखकर तय्यारीकरे।

(१) फारसीमें दिरंग है।

वह जब पुलसे उतरा तो नदी परही एक हरा भरा चौकोर मैदान ५० गजका उसको मिल गया। मानो दैवने उसे इसी दिनके वास्ते बनाया था। उसने उसी पर सभा सजाई जो बादशाहको भी बहुत पसन्द आई। उसको खूब शाबाशी मिली।

कृष्णगङ्गा दक्षिणसे आती है और उत्तरको जाती है। भट नदी पूर्वसे आकर कृष्णगङ्गामें मिल जाती है।

पन्द्रहवां नौरोज।

१५ रबीउस्सानी शुक्रवार सन् १०२८ (चैत्र वदी २) को १२॥ घडी अर्थात् ५ घण्टे दिन व्यतीत होने पर सूर्य्य मेषराशिमें आया। जहांगीर बादशाहके राज्याभिषेकका पन्द्रहवां वर्ष आरम्भ हुआ।

फरवरदीन महीना।

२ शनिवार (चैत्र वदी ३) को साढ़े चार कोस कूच होकर गांव बकरमें डेरे लगे। इस रास्तेमें पहाड़ियां तो न थीं पर पत्थर बहुत थे। मोर, कालेतीतर और लंगूर भी थे। बादशाह लिखता है— "जो पशु पक्षी गर्म देशोंमें रहते है वह ठंडे देशोंमें भी रह सकते है। यहांसे कश्मीर तक जहां कहीं भट नदीके तटपर होकर रास्ता गया है उसके दोनो ओर पहाड़ हैं और पानी घाटेमें होकर अति वेगसे बहता है। हाथी चाहे कितनाही प्रचण्ड हो पांव नहीं जमा सकता। तुरन्त लुढ़ककर बह जाता है। पानीमें रहनेवाले कुत्ते भी यहां है।"

३ रविवार (चैत्र वदी ४) को बादशाह साढे चार कोस चलकर गांव मोसरांमें ठहरा। रातको बारामूलाके व्यापारियोंने आकर भेट की। बादशाहने बारामूलाकी व्युत्पत्ति पूछी तो अर्ज की गई कि हिन्दीभाषामें वाराह नाम सूअरका और मूला नाम स्थानका है अर्थात् वाराहका स्थान। हिन्दुओंके अवतारोंमेंसे एक अवतार वाराह भी हुआ है। वाराहमूलासे बारामूला बना।

४ सोमवार (चैत्र वदी ५) को २॥ कोस पर भोलवासमें मंजिल ठहरी। आगे पहाडी रास्ता बहुत सकरा बताया जाता था इस

लिये बादशाहने मोतमिदखांको हुक्म दिया कि आसफखां और कई सेवकोंके सिवा और किसीको सवारीमें मत आने दो और लश्करको भी एक मंजिल पीछे लाया करो।

मोतमिदखांके डेरेमें उतरना—बादशाह लिखता है—"मोतमिदखांने अपना डेरा इस हुक्मसे पहलेही आगे भेज दिया था और फिर अपने आदमियोंको लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा हुक्म है तुम जहां पहुंचे हो वहीं ठहर जाओ। यह चिट्ठी उसके भाइयोंको भोलवासकी पहाड़ीके नीचे मिली। उन्होंने वहीं अपना डेरा खड़ाकर दिया। जब बादशाही लश्कर उसकी मंजिल(१)के पास पहुंचा तो बर्फ और मेह बरसने लगा। अभी एक मैदान भर रास्ता भी न कटा था कि उसका डेरा दिखाई दिया। मैं इसको भगवत्कृपा समझकर बेगमों सहित उस डेरेमें उतर पड़ा। जाड़े बर्फ और मेह के कष्टसे बचा। मोतमिदखांके भाइयोंने मेरे हुक्मसे उसके बुलाने को आदमी दौड़ाये। जब यह बधाई उसे पहुंची उस समय हाथियों और डेरोंकी भीड़से घाटी पर रास्ता बन्द होरहा था। तोभी वह पदल दो घंटेमें २॥ कोस चलकर बड़े हर्ष और आल्हादसे सेवामें पहुंचा और जो कुछ उसके पास धन माल हाथी घोड़े आदि थे वह सब लिखकर 'पाअन्दाज'के तौर पर मेरे अर्पण किया। पर मैंने सब उसीको बख्श दिया और फरमाया—संसारी चीजोंका हमारे सन्निकट कुछ आदर नहीं। हम तो भक्तिके मंहगे मालके गाहक हैं। यह योग उसके सद्भाव और भाग्यसे बना है कि मुझसा बादशाह बेगमों सहित एक रात दिन सुखसे उसके घरमें रहे और उसे अपने सहयोगियोंमें यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

५ मंगलवार (चैत्र वदी ६) को बादशाह दो कोस चलकर गांव खाईमें ठहरा और जो वस्त्र पहने हुए था वह सब मोतमिदखांको प्रदान किये और उसका मनसब भी बढ़ाकर डेढ़ हजारी डेढ़ हजार सवारका कर दिया।

(१) डेरा, पड़ाव, उतारा।

कशमीरकी सीमा—भोलवासकी घाटीसे आगे कशमीर है। यहीं यूसुफखां कशमीरीका बेटा याकूब स्वर्गवासी श्रीमानकी विजयिनी सेनासे लड़ा था जिसका नायक राजा मानसिंहका बाप भगवान दास(१) था।

मिरजा रुस्तमका बेटा सुहराबखां तैराकीके घमण्डसे भट नदी में कूदकर डूब मरा। बापको बेटेसे बहुत मोह था इसलिये अति व्याकुल होकर सकुटुम्ब शोकसूचक वस्त्र पहने पुणिचके रास्तेसे बादशाहकी सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाह लिखता है—"उसकी माका भी बुरा हाल था। मिरजाके और बेटे हैं लेकिन इससे उस को हार्दिक प्रेम था। यह २६ वर्षका था। बन्दूक चलानेमें अपने बापका उत्तम शिष्य था। हाथीकी सवारी और सिपाहगरी खूब जानता था। गुजरातकी यात्रामें मेरे हाथीके आगे आगे चला करता था।

६ बुधवार (चैत्र बदी ७) को ३ कोस पर गांव बन्दमें डेरे हुए।

कारमती घाटी—७ गुरुवार (चैत्र बदी ८) को कारमती घाटी से उतरकर गांव बच्छमें सवारी ठहरी। यह मंजिल ४॥ कोसकी हुई। बादशाह लिखता है—"कारमती विकट घाटी है। इस मार्गकी अन्तिम घाटी यही है।

८ भृगुवार (चैत्र बदी ९) को ४ कोस पर गांव बलतारमें डेरे हुए।

विनोदघाटी—विनोदघाटी इस रास्तेमें कुछ चौड़ी थी जिसमें बादशाहने नरगिस बनफशा और दूसरे अद्भुतफूल जो कशमीरमेंही होते हैं बहुतसे खिले देखे। उनमें एकफूल विचित्र आकृतिका था। जिसमें ५।६ फूल नारंगी रंगके औंधे फूले हुए था और उन फूलोंमेंसे

(१) भगवन्तदास—बादशाहने भूलसे सब जगह भगवन्तदासको भगवानदास लिखा है। भगवानदास भगवन्तदासका छोटा भाई था। जयपुरकी तवारीख और अकबरनामेसे यह बात अच्छी तरह जानी जासकती है।

हरे पत्ते निकले हुए थे जैसे कि अनन्नासमें होते हैं। इस फूलका नाम बोलानेक है। दूसरा फूल पोईके समान था उसके आसपास छोटे छोटे सफेद, नीले और लाल फूल खिल रहे थे जिनमें पीले छींटे बहुत सुन्दर फबते थे। इसका नाम लदरपोश था। पीले रंग का अर्गवान भी इस रास्ते में बहुत था।

बादशाह लिखता है—"किस किसको लिखें और कहांतक लिखें। जिस फूलमें कुछ विशेषता होती है लिखी जाती है। इस रास्ते में मार्ग परही एक बड़ी चादर पानीकी ऊंचे स्थानसे गिरती है। ऐसी छटाकी चादर रास्ते भरमें और नहीं देखी गई। मैंने कुछ क्षण ठहरकर एक ऊंची जगहसे उसकी शोभा देखकर आंखों और हृदयको ठण्डा किया।"

बारामूला—८ शनिवार (चैत्र वदी १०) को ४। कोसका कूच होकर बारामूलामें सवारी ठहरी। बारामूला(१) कशमीरके प्रधान नगरोंमेंसे है। यहांसे शहर (श्रीनगर) १४ कोस है। यह भट नदीके ऊपर है। बहुतसे कशमीरी व्यापारियोंने इस नगरमें निवास करके नदीके ऊपर घर और मसजिदें बनाली हैं और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बादशाहके हुक्मसे बहुतसी नावें सजाकर यहां रखी गई थीं और बादशाहके प्रवेशका मुहूर्त सोमवारको था इसलिये वह १० रविवार (चैत्र सुदी ११) के दोपहरको शहाबुद्दीनपुरमें आकर ठहर गया। यहां कशमीरके हाकिम दिलावरखांने किश्तवारसे पहुंचकर चौखट चूमनेकी प्रतिष्ठा प्राप्त की और बादशाहकी विविध कृपाओंसे अलंकृत हुआ।

किश्तवारकी फतह—बादशाह लिखता है—"किश्तवार कशमीरके दक्षिणमें है। कशमीरकी बस्तीसे किश्तवारके मुख्य स्थान मलके तक जहां हाकिम रहता है ६० कोसकी दूरी निकली।"

---

(१) २१ नवम्बर १९०४ को इसी जगह पर लाट साहब और महाराजा कशमीरके मिलापकी खबर अखबारोंमें देखी गई।

१० शहरेवर सन् १४ (भादों वदी ८ सं० १६७६) को दिलावर खांने १०००० जंगी सवारों और पैदलोंसे किश्तवार जीतनेका विचार करके अपने बेटे हसन और गुर्दअली मीरबहरको शहर और सीमाओंकी रखवाली पर रखा। अपने भाई हैबतको कुछ सेना सहित कश्मीरके दावेदार(१) गौहरचक तथा ऐबाचककी देख भालके लिये जो किश्तवारमें थे पीरपंचाल घाटीके पास देसू नाम स्थानमें छोड़ा। वहीं सेनाओंके व्यूह रचकर आप तो कुछ कटक सहित संगीपुरके रास्तेसे रवाने हुआ और अपने सुपात्र पुत्र जलालको नसरुल्लह अरब, अलीमुल्क कश्मीरी, और दूसरे जहांगीरी सेवकोंके साथ अन्य मार्गसे भेजा। बड़े बेटे जमाल को कुछ वीरों सहित अपनी सेनाका हिरावल करके ऐसीही दो दूसरी फौजोंको अपनी दाईं और बाईं ओर चलनेका हुक्म दिया। आगे घोड़ोंका रास्ता नहीं था इसलिये अपने कई घोड़े रख लिये और सिपाहियोंके घोडे कश्मीरको लौटा दिये। फिर सब पहाड पर पैदल चढे और काफिरोंसे लड़ते भिड़ते नरकोट तक जापहुंचे। वह एक सुदृढ़ स्थान शत्रुका था। वहां जलाल और मालकी सेनाएं भी दूसरे रास्तोंसे चलकर आमिलीं। शत्रु सामनेसे भाग गये। बादशाही लोग ऊंचे नीचे रास्तोंको वीरतासे पार करके मर्व नदी पर पहुंचे। वहां पानी पर फिर लडाईकी आग भडकी और ऐबाचक बहुतसे शत्रुओंमें घिरके मारा गया। इसने राजा हिम्मत हारकर भागा और पुलसे उतर कर नदीके पार भिण्डरकोटमें ठहरा। बादशाही वीर भी पुलसे उतरने लगे। पुलपर बडी लडाई हुई और बहुत आदमी काम आये। बाकी सेना २० दिनतक निरन्तर नदीसे उतरनेका परिश्रम करती रही। परन्तु काफिर लोगोंने लडने और रोकनेमें तत्पर रहकर उसे उतरने न दिया। दिलावरखां थानोंको स्थिर और रसदका प्रबन्धकरके सेना से आमिला। तब राजाने छलसे दूत उसके पास भेजकर

(१) पहले कश्मीरमें शकजातिके बादशाहोंका राज्य था।

कहलाया कि मैं अपने भाईको भेट सहित दरगाहमें भेजता हूं। जब मेरे अपराध क्षमा होजायेंगे और मेरे मनका भय जाता रहेगा तो मैं भी वहां जाकर चौखट चूमूंगा। परन्तु दिलावरखांने दूतों की बात न सुनी। उस अवसरको वृथा न खोकर उन्हें तो लौटा दिया और नदीसे उतरनेका विचार किया। उसका बड़ा बेटा जमान कुछ सिपाहियोंके साथ तैर कर पार होगया। वहां शत्रुओं से दारुण समर हुआ। शत्रु अन्तमें हारकर भाग निकले और पुल को तोड़ गये। बादशाही बन्दोंने पुल फिर बनाकर बाकी लश्कर भी उतार लिया और भिंडरकोटमें जाकर छावनी डाली। इस नदीसे चिनाब नदी जहां शत्रुओंका अड्डा था दो तीरके फासिलेपर थी। वहां एक ऊंचा पहाड़ था जिसमें होकर जाना बहुत कठिन था। प्यादोंके आने जानेके लिये मोटे मोटे रस्से बंधे थे जिनमें हाथ हाथ भरकी लकड़ियां पास पास लगी हुई थीं। एक सिरा इन रस्सोंका पहाड़की चोटी पर और दूसरा नदीके तटपर गड़ा था। इन रस्सों पर गज भर ऊंचा एक रस्सा और था। प्यादे पांव तो उन लकड़ियों पर धरते थे और हाथसे ऊपरके रस्सेको पकड लेते थे। इस प्रकार पहाड़से नीचे उतर कर नदी के पार होते थे। पहाडी लोग इसको जम्पा कहते हैं। जहां कहीं जम्पा बांध सकनेका भय था वहां वह लोग बन्दूकची तीरन्दाज और करारे आदमी रखकर निश्चिन्त हो बैठे थे।

बहादुरखांने जाले (१) बनाकर एक रात ८० वीरोंको उनमें बिठाया और पानीसे उतरना चाहा। परन्तु पानी बड़े वेगसे बहता था इसलिये जाले बह गये। ६८ वीर डूब गये और १० तैर कर निकल आये। दो उधर जाकर शत्रुओंके हाथ पडगये। इस तरह दिलावरखां ४ महीने १० दिन तक भिंडरकोटमें जमकर नदीसे उतरनेका यत्न करता रहा परन्तु कुछ न हुआ। निदान एक जमींदारके रस्ता बतानेसे एक ऐसी जगह पर जम्पा बांधा

(१) नाव।

गया जहांका सन्देह शत्रुओंको न था और दिलावरखांका बेटा जलाल २०० पठानों और बादशाही बन्दोंको लेकर रातके समय नदीसे कुशलपूर्वक पार होगया। तडकेही राजाके सिर पर पहुंच कर रणसींगा बजाने लगा। राजाके नौकर जो कुछ सोते और कुछ जागते थे घबराकर निकले। उनमेंसे कुछ तो मारे गये और बाकी भाग निकले। उस गड़बड़में एक सिपाही राजा तक जापहुंचा और तलवार मारने लगा। राजा चिल्लाया कि मै राजा हूं मुझे जीता दिलावरखांके पास ले चल। यह सुनकर सिपाहियोंने राजा को बांध लिया। राजाके पकडे जातेही उसके भाई बन्धु सब इधर उधर छिप गये। दिलावरखां बिजय घोष सुनतेही ईश्वरका धन्यवाद करके नदीसे उतरा और उस मुल्ककी राजधानी मंडल बदर में जो नदीसे ३ कोस थी जापहुंचा।

जम्मूके राजा संग्राम और राजा बासूके बेटे सूरजमलकी बेटियां इस राजाको व्याही थीं संग्रामकी बेटीसे बेटे भी हुए थे। फतह होनेसे पहले उसने अपना कुटुम्ब जसवां(१)के राजा और दूसरे जमींदारोंके पास भेज दिया था।

दिलावरखां बदशाहकी सवारीके पास आपहुचने पर, बादशाहके हुक्मसे राजाको लेकर चौखट चूमनेको रवाना हुआ और नसरुल्लह अरबको बहुतसे सवार और पैदलों सहित उस देशके जाबते पर छोड गया।

किश्तवारका वृत्तान्त—बादशाह लिखता है—"किश्तवारमें गेहूं जव मसूर और उडद बहुत उपजते हैं। पर शाली (धान) काश्मीर से बहुत कम होता है। यहांकी केसर काश्मीरकी केसरसे उत्तम है और खरबूजा काश्मीर कासाही होता है। अंगूर शफ्तालू जरदालू और अमरूद खट्टे होते है। यदि उनकी सम्हालकी जाय तो शायद अच्छे होनेलगें"।

---

(१) जसवां एक छोटासा राज्य कांगडेके जिलेमें हैं।

काश्मीरके हाकिमोंके रुपयेका नाम सहंसी था। वह १॥ सहंसी यहां एक रुपयेमें लेते हैं। १५ सहंसी जो दस रुपयेकी होती हैं लेन देनमें बादशाही एक मोहरकी गिनी जाती हैं। हिन्दुस्तानके दो सेरको यहां एक मन कहते हैं। यहां यह रीति नहीं है कि राजा खेतीका कुछ करले। वह घर पीछे ६ सहंसियां लेता है जो ४) की होती हैं। कुल केसर बहुतसे राजपूतों और ७०० तोपचियोंकी तनखाहमें लगा रखी हैं जो पुराने नौकर हैं केसरकी बिक्री पर खरीदारसे एक मन (दोसेर) पीछे राजा ४) लेता है। राजाकी बडी आमदनी दंडसे होती है जो थोड़ेसे अप-राधपर भी बहुत सा लेलिया जाता है। जिस मनुष्यको धन सम्पत्ति से सम्पन्न देखते हैं किसी न किसी बहानेसे उसका सर्वस्व छीनलेते हैं। राजाकी आमदनी सब मिलाकर एक लाख रुपयेके लग-भग है। काम पड़नेपर ६।७ सहस्र पैदल इकट्ठे होजाते हैं घोडे बहुत कम हैं। राजा और उसके सरदारोंके पास कोई ५० घोड़े हों तो हों। एक वर्षकी उपज दिलावरखांको इनाममें दीगई है जो अटकलसे जहांगीरी जाबते (प्रबन्ध) के अनुसार हजारी जात हजार सवारकी जागीरके बराबर होगी। जब दीवानलोग निश्चय करके जागीरदारकी तनखाहमें जमा लगावेंगे तब यथार्थ रूपसे विदित होगा कि कितनी आमदनीकी जगह है।"

प्रवेश—११ चन्द्रवार (चैत्रबदी १२) को दोपहर दिन चढे बादशाहने आनन्द मंगल पूर्वक नये राजभवनमें प्रवेश किया जो तालके तटपर बना था। स्वर्गीय बादशाहके आदेशसे एक पक्का किला चूने पत्थरका बनाया गया था उसकी एक भुजा बननी बाकी थी। उसके विषयमें बादशाहने पीछेसे बनानेको लिखा है।

काश्मीरकी दूरी—हसन अब्दालसे काश्मीर इस रास्ते होकर ७५ कोस थी। २५ दिन अर्थात् १८ कूच और ६ विश्राममें यह सफर पूरा हुआ। आगरेसे यहां तक ३७६ कोस बादशाह १०२ कूच और ६६ मुकाम अर्थात् १६८ दिनोंमें पहुंचा था। साधारण स्थल मार्गसे

काश्मीर ३०४॥ कोस थी ।

किश्तवारका राज्य—१२ मंगलवार (चैत्रवदी १३) को दिलावरखांने बादशाहके हुक्मसे किश्तवारके कैदीराजाको लाकर राज द्वारकी भूमि चूमी। बादशाह लिखता है—"राजा कुरूप नहीं है। आदमी भी सभ्य जानपडता है। हिन्दुस्तानियों कैसे वस्त्र पहने है। हिन्दी और काश्मीरी बोलता है। मैंने कहा अपराधी होने पर भी जो तू अपने बालबच्चोंको सेवामें लेआवेगा तो कैदसे छूटकर इस विशालराज्यकी छत्रछायामें सुखसे रहेगा, नहीं तो हिन्दुस्थानके किसी किलेमें जिन्दगी भर कैद रहेगा। उसने विनयकी कि बाल बच्चोंको सेवामें लेआऊंगा और जैसी आज्ञा होगी पालन करूंगा।"

काश्मीरकी कथा—बादशाह लिखता है—कश्मीर चौथी इकलीममें है। इसकी चौड़ाई मध्यरेखासे ३५ और लम्बाई सफेदटापुओंसे १०५ अंश है। प्राचीन समयसे यह देश राजोंके अधिकार में था जिनका राज्य चार हजार वर्ष रहा। उनके नाम और वृत्तान्त राजतरंगिणीमें सविस्तर लिखे हैं। उसका उल्था स्वर्गवासी श्रीमानकी आज्ञानुसार हिन्दीसे फारसीमें होचुका है। सन ७१२ (१) मे मुसलमानी धर्मका प्रकाश हुआ। ३२ मुसलमानोंने १७२ वर्ष इसदेशको भोगा। फिर सन ९९४ (२) में स्वर्गवासी श्रीमानने इसको विजय किया। तबसे ३५ वर्ष हुए यह हमारे कर्मचारियोंके अधिकारमें चला आता है।

कश्मीर लम्बाईमें भोलवासकी घाटीसे फरोतर तक ५६ कोस जहांगीरी है और चौडाईमें २७ कोससे अधिक तथा १० से न्यून नहीं है। अबुलफजलने अकबरनामेमें अटकलसे लिखा है कि काश्मीरकी लम्बाई कम्बगगासे फरोतर तक १२० कोस है और चौडाई १० कोससे २५ तक। मैंने निश्चय करनेके लिये कई विश्वास योग्य कार्य कुशल मनुष्योंको कहा कि लम्बाई चौडाईको जरीबसे

(१) संवत् १३६९।

(२) संवत् १६४२+४३।

मापलें तो ठीक परिमाण लिखा जावे। शैखने जिसको १२० कोस लिखा था वह ६७ कोस निकला। हर देशकी सीमा वहीं होती है जहां तक उसकी बोली बोली जाय। इसलिये भोलवाससे जो कृष्णगंगासे ११ कोस इधर है काश्मीरकी सीमा ठहराई गई। इस लेखेसे उसकी लम्बाई ५६ कोस हुई। चौड़ाईमें २ कोससे अधिक अन्तर नहीं निकला। मेरे राज्यमें जो कोस प्रचलित है वह उसी मापका है जो स्वर्गीय श्रीमानने बांधा था। प्रत्येक कोस ५००० गजका है। यह गज मुसलमानी २ गजका है। मुसलमानी गज २४ अंगुलका होता है। जहां कहीं कोस या गजका नाम आवे वहां यही प्रचलित कोस और गज समझना चाहिये।

श्रीनगर—शहरका नाम श्रीनगर है। भट नदी उसकी बस्ती के बीचमें होकर बहती है। उसके निकासको वैरनाग कहते हैं। वैरनाग शहरसे १४ कोस दक्षिणमें है। मेरे हुक्मसे उसपर एक भवन बनायागया और एक बाग लगायागया है। शहरमें लकड़ी और पत्थरके बहुत पक्के ४ पुल बने हैं। उनपर होकर लोग आते जाते हैं। पुलको इस देशमें कदल कहते हैं। शहरमें एक बहुत बड़ी मसजिद सुलतान सिकन्दरकी बनाई हुई है, जो सन् ७९५ (१) में बनी थी। परन्तु बहुत वर्षों पीछे जलगई थी। सुलतान हुसैनने फिर बनवाई। अभी बनही रही थी कि सुलतानके शरीरका स्तम्भ गिरगया। निदान सन ९०९ (२) में उसके वजीर इब्राहीम बाकरीने पूरीकी उसे अबतक १२० वर्ष बीते वह अभी विद्यमान है। लम्बाई महराबसे पूर्वकी भीत तक १४५ और चौड़ाई १४४ गज है। ४ ताक हैं। दालानों और खम्भोंमें बढ़िया कारीगरीके बेल बूंटे काटे हुए हैं। सच यह कि काश्मीरके हाकिमोंकी कोई निशानी इससे बढ़कर नहीं रही है। मीरसैयदअली हमदानी कुछ दिनों यहां रहे थे उनकी भी

(१) संवत् १४४९—५० ।

(२) संवत् १५६०—६१ ।

खानकाह (मठ) है। शहरके पास २ ताल हैं जो सालभर पानीसे भरे रहते हैं। उनके जलका स्वाद नहीं बिगडता है। मनुष्योंका आना जाना तथा अनाज और ईंधनका लादना लेजाना नावों द्वारा होता है। शहर और परगनोंमें ५७०० नावें हैं ७४०० केवट गिननेमें आये हैं।"

कश्मीरमें ३० परगने हैं उसके२ विभाग माने हुए हैं। नदीके ऊपरवालेको मामराज और नीचेवालेको कामराज कहते हैं। जमीनकी जबती, और लेनदेनमें चांदी सोनेका व्यवहार नहीं है और जो है भी तो बहुत थोड़ा है। सब महसूलों और धनधान्यका हिसाब शालीकी खरवार (गौनों) से करते हैं। एक गौन ३ मन ८ सेरकी वर्त्तमान तोलसे होती है। कश्मीरी दोसेरको एक मन मानते हैं। ८ सेरके चार मनको एक तक कहते हैं। कश्मीरके देशकी जमा ३०६३०५० खरवार और ११ तर्क है जो नकादीके हिसाबसे ७४६७०००० (१) दामकी होती है जो इस समयकी जाबतेसे ८५०० सवारोंकी जगह है।"

कश्मीरमें पैठना कठिन है। उत्तम मार्ग वंभर और पगलीका है। यद्यपि वंभरका रास्ता पासका है परन्तु जो कोई कश्मीरकी बहार देखना चाहे तो पगलीके रास्तेसे देख सकता है। क्योंकि दूसरे रस्ते इस ऋतुमें वर्फसे पटजाते हैं।"

यदि कश्मीरकी प्रशंसाकी जाय तो बडे बडे ग्रन्थ लिखने पडें। इसलिये उसके स्वरूप और विशेषताका वर्णन थोडेमें किया जाता है।

कश्मीर एक सदा बहार बाग है या लोहेकी दीवारका एक किला है। बादशाहोंके वास्ते विलास बढानेवाला एक उपवन है और फकीरोंके लिये मनोहर कुंज। सुन्दर रमने और सुरम्य झरने यहां इतने हैं कि गिने नहीं जासकते। नहरों और नदियोंका पार

(१) १८६६७५०) रुपये।

नहीं है। जहांतक नजर जाती है हरियाली दिखाई देती है या बहता जल।

फूल—गुलाब, बनफशा, और नरगिस यहां आपही उगते हैं। जंगलोंमें नानाप्रकारके फूल और पौदे बेशुमार हैं। बहारके दिनोंमें पहाड़ और जंगल फूलोंसे लदजाते हैं। घरोंके द्वार, दीवारों आंगन, और छतोंमें भी फूल खिलते हैं। रमनों और वनोंका तो कहनाही क्या।"

उत्तम फूल बादाम और शफ्तालूके होते हैं। पहाड़ोंके बाहर तो पहली असफंदार (फाल्गुण) से ही फूल खिलने लगते हैं और कश्मीरमें फरवरदीनके लगनेही। शहरके बागोंमें उसमहीने की नवीं दसवींसे फूलोंका अन्त, नीली चमेलीके प्रारंभसे मिला हुआ होता है। मैंने पिताके साथ केसरकी क्यारियों और पतझड ऋतुकी शोभा देखी है। अभी बहारका यौवन है। पतझड़की छटा भी उसके अवसर पर देखी जायगी।

"कश्मीरमें घर सब लकड़ियोंके होते हैं। यह दो खंड३ खंड ४ खंडके बनते हैं। छतोंको मट्टीसे पाटकर चोगाशी जातिके लालाके पौदे उसपर लगाते हैं। यह बहारके मौसिममें फूला करते हैं और बहुत भले लगते हैं। यह कश्मीरियोंकीही कारीगरी है। अब की साल दौलतखानेके बगीचे और जुमामसजिदकी छतमें लाला खूब फूला था। नीली चमेली बागोंमें बहुत है। सफेद चमेलीके सिवा जिसमें सुगन्ध होती है चंदनियां रंगकी चमेली होती है। उसमें बड़ी सुगन्ध होती है। यह कश्मीरमेंही होती है। गुलाब कई जातिका देखागया। सबमें सुगन्ध होती है। फिर एक फूल चंदनके रंगका गुलाबकीही किस्मसे है जिसकी महक बहुत मीठी और भीनी होती है। उसका पौदा भी गुलाबसे मिलता हुआ होता है। सौसन दो प्रकारकी होती है। एक वह जो बागोंमें फूलती है। वह डहडही और हरेरंगकी होती है। दूसरी जंगली है। उसका रंग तो मंदा है परन्तु सुगंधित है। जाफरीका फूल

बडा और सौरभसम्पन्न होता है। उसका बूटा मनुष्यसे ऊंचा होजाता है। पर जब कभी वह बढ़कर फूलता है तो एक कीडा उत्पन्न होकर उसके फूलों पर मकडीका सा जाला तनता है और उसे नष्ट कर देता है। इस वर्ष भी ऐसाही हुआ।"

"फूल जो कश्मीरके इलाकोंमें देखे उनकी गिनती नहीं होसकती। उनमेंसे १०० से अधिक प्रकारके फूलोंका चित्र उस्ताद मनसूरने खेंचा।"

मेवे—"स्वर्गवासी श्रीमानके शासनसे पहले शाहआलू कश्मीर में नहीं होता था। मुहम्मदकुली अफशार(१) ने कावुलसे लाकर उसका पेवंद लगया। तबसे अबतक १०।१५ पौदे फले है। पेवंदी जर्दालूके भी पहले गिन्तीके वृक्ष थे। जबसे उसने पेवंद लगानेकी प्रथा इस प्रदेशमें चलाई तबसे बहुत होगये हैं। वास्तवमे कश्मीरका जर्दालू अच्छा होताहै। कावुलके वाग शहरआरामें मिरजाई नाम एक वृक्ष था जिसके फलसे बढकर कोई अच्छा जर्दालू नहीं खायागया था। कश्मीरके बागोंमें वैसे कई पेड है। यहां नाशपाती बहुत बढ़िया होती है, कावुल तथा बदखशांसे अच्छी और समरकदकी नाशपातीके बराबर। कश्मीरका सेव विख्यात है। अमरूद साधारण होता है अंगूर बहुत, पर बहुधा खट्टा और छोटा। अनार उतना नहीं है। तरबूज अति उत्तम होता है। खरबूजा बहुत मीठा और सरस। परन्तु बहुधा ऐसा होता है कि जब पकनेपर आता है तो उसमें कीडे पडजाते है और बिगाड देते है। यदि इस बाधासे बचजाय तो बहुतही श्रेष्ठ हो। शहतूत नहीं होता है। तूत सब जंगलोंमें फैला हुआ है। तूतकी जडसे अंगूरकी बेले निकलकर ऊपर चढजाती है। यह तूत खाने योग्य नहीं है। परन्तु उन कई वृक्षोंके तूत खानेके योग्य है जो बागोंमें है और जिनमें पेवन्द लगाया जाता है। तूतके पत्ते पीला(२) नामके

(१) मुगलोंकी एक जाति।

(२) रेशमका कीडा।

कीड़ोंके काम आते हैं। इन कीड़ोंके बीज (अंडे) कट और टीटके फूलोंमेंसे लाये जाते हैं।"

शराब और सिरका—"शराब और सिरका बहुत है परन्तु शराब खट्टी और बुरी। जब कई प्याले पिये जाते हैं तब कुछ गर्मी सिरमें आती है। सिरकेका अचार बनाते है। काश्मीरका लहसन अच्छा होता है इसलिये सब अचारोंमें लहसनका अचार अच्छा गिना जाता है।"

अनाज—"चनेके सिवा और सब अनाज होते हैं। जो चने बोयें भी तो पहले वर्ष होजाते हैं पर दूसरे वर्ष अच्छे नहीं होते। तीसरे वर्ष मूंगके समान छोटे होजाते हैं। चावल सबसे अधिक होते हैं ३ भाग चावल और एक भाग और सब अनाज होते होंगे। काश्मीरियोंकी खुराक चावलही है परन्तु चावल अच्छे नहीं होते। चावलका खुशका पकाते है ठंडाकरके खाते हैं उसको भत्त कहते है। गर्म खानेकी रीति नहीं है। टटपूंजिये आदमी तो रातके वक्त भी कुछ भत रख छोडते हैं और दूसरेदिन भी कुछ खातेहै। नमक हिन्दुस्तानसे लाते है। भत्तमें नमक डालनेकी प्रथा नहीं है। साग पानीमें उबालते हैं और स्वाद पलटनेके लिये उसमें कुछ नमक डालकर भत्तके साथ खाते है। जो लोग स्वादी होते है वह कुछ अखरोटका तेल सागमें डाल लेते हैं। अखरोटका तेल शीघ्रही कडवा और बेस्वाद होजाता है। गायका घी भी ताजा ताजा मक्खनसे निकालकर सागमें डालते हैं और उसको काश्मीरी भाषामें सदापाक कहते हैं। यहांकी हवा ठंडी और सीली है जिससे घी तीन चार दिन पीछेही विगड़ जाता है। यहां भैंस नहीं होती है, गाय भी छोटी और दुबली होती है। गेहूं छोटा और कम मैदेका होता है रोटी खानेकी रीति नहीं है।"

पशु पची—"बकरी बिना दुंबेकी पहाड़ी होती है हिन्दुस्तानी उसको हिन्दू कहते है। उसका मांस कोमल और स्वाद होता है। मुर्गी कुंज मुर्गाबी और सरिखे वगैरा बहुत होते हैं। मच्छी

सब प्रकारकी पोलकदार और बिना पोलककी होती है, परन्तु बुरी ।"

कपडे—"कपडे पशमीने अर्थात् ऊनके होते हैं। स्त्री पुरुष ऊनका कुरता पहनते हैं उसको पट्टू कहते हैं। उनका यह विश्वास है कि जो पट्टू नहीं पहने तो वायु लग जावे और उसके बिना भोजन पचना भी सम्भव नही है। कशमीरका शाल जिसका नाम स्वर्गवासी श्रीमानने परमनरम रखा है स्वयं इतना प्रसिद्ध होचुका है कि उसकी तारीफकी कुछ आवश्यकता नहीं है। दूसरे नम्बर पर थुरमा है जो शालसे मोटा और मुलायम होता है। फिर दरमा है, गधे और कुत्ते की झूल जैसा, उसको बिछौने पर डालते है। शालके सिवा और सब ऊनी कपड़े तिब्बतमे अच्छे होते हैं। शालकी ऊन भी तिब्बतसे आती है। परन्तु वहां उसको नहीं बनासकते है। शालकी ऊन जिस बकरेसे लीजाती है वह तिब्बतमेंही होते है। कशमीरमे शालकी ऊनसे पट्टू भी बुनते हैं। दोशालोंको तूमकर भी बनात जैसी बना लेते है। यह बरसाती कपडे बनानेके लिये बुरी नहीं है।"

मनुष्य—"कशमीरी सिर मुडाते है। साधारण स्त्रियोंमें अच्छे और धोये हुए कपडे पहननेकी रीति नहीं है। पट्टूका कुरता ३।४ वर्षतक पहना करती हैं। कोरे पट्टूको मसलकर कुरता सीती है फटजानेतक भी उसके पानी नहीं लगता। इजार नहीं पहनती। लम्बा और चौड़ा कुरता जो सिरसे लेकर पावों तक पडा रहता है पहना जाता है। बहुधा घर पानीके ऊपरही है तो भी पानीकी एक बून्द उनके बदनसे नहीं लगती। जैसी भीतरसे मैली है वैसीही बाहरसे भी है।"

कारीगरी—"मिरजा हैदरके समयमें कारीगर अच्छे हुए है संगीतकी भी शोभा बढी थी। कमानचा, बांसुरी, तम्बूर कानून, चंग, और डफका प्रचार हुआ। पहले कमानचे जैसा एक बाजा था राग काश्मीरी बोली और हिन्दी स्वरोंमें

गाये जाते थे, सो भी दो तीन स्वरोंमें ही। बहुधा तो एकही स्वर अलापते थे। सच यह है कि काश्मीरके सुधारमें मिरजा हैदरने बड़ा श्रम किया।"

सवारी—स्वर्गवासी श्रीमानका राज्य होनेसे पहले यहांके आदमी गौंट (टट्टू) परही चढ़ते थे, बड़े घोड़े नहीं होते थे। परन्तु बाहरसे इराकी और तुरकी घोड़े हाकिमोंके वास्ते सौगातमें लाते थे। गौंट ऐसा टट्टू होता है कि उसकी चारों कांखें धरतीसे कुछही ऊपर रहती हैं। हिन्दुस्थानके सब पहाड़ोंमें बहुत मिलता है। बहुधा अड़ियल और मट्ठा होता है। जब यह ईश्वर रचित उपबन उक्त श्रीमानकी राजलक्ष्मी और सुशिक्षासे शोभायमान हुआ तो बहुतसे घरानोंको इस सूबेमें जागीरें मिलीं। इराकी और तुरकी घोड़े और घोड़ियां बच्चे लेनेके लिये उन्हें सौंपी गई और सिपाहियोंने स्वयं प्रयत्न किया। थोड़ी ही अवधिमें घोड़े उत्पन्न होगये। अब काश्मीरी घोड़े २००) और ३००)तक बिकते हैं। कभी कोई १०००) का भी निकल आता है।"

धर्म—"इस देशमें जो व्यापारी और कारीगर हैं उनमें बहुधा सुन्नी मुसलमान हैं और सिपाही शीआ इमामिया हैं। कुछ लोग नूरबख्शी हैं कुछ फकीर हैं जिनको ऋषि कहते हैं। उनमें कुछ विद्या और ज्ञान तो नहीं परन्तु सीधे सादे हैं। किसीको बुरा नहीं कहते हैं न कुछ मांगते हैं न कहीं जाते हैं। मांस नहीं खाते व्याह नहीं करते, सदा जंगलमें मेवोंके वृक्ष इस अभिप्रायसे लगाया करते हैं कि लोगोंका उपकार हो। आप अपना कुछ स्वार्थ नहीं करते। यह २००० आदमी होंगे। ब्राह्मण बहुत हैं जो अनादिकालसे इस देशमें रहते आये हैं। काश्मीरी बोली बोलते हैं। देखनेमें तो मुसलमानोंसे अलग नहीं जाने जाते, लेकिन संस्कृत भाषाके ग्रन्थ रखते और पढ़ते हैं और मूर्त्ति पूजाकी जो विधि है उसका विधान करते हैं। संस्कृत एक भाषा है जिसमें हिन्दुस्तानके पण्डित ग्रन्थ रचते हैं और उसको बहुत आदर देते हैं।"

मन्दिर—"बड़े बडे मन्दिर जो मुसलमानी फैलनेसे पहले बने थे वैसेही खडे हैं। यह सब पत्थरके हैं नीवसे लेकर छततक छिले हुए बडे बडे पत्थर तीस तीस और चालीस चालीस मनके नीचे ऊपर रखे हुए हैं।"

पहाड—शहरके पासही एक पहाडी है। जिसको कोहेमारा और हरी पर्वत भी कहते हैं। उसके पूर्व जडल नाम पहाड़ है। उसका गिर्दाव कुछ ऊपर ६॥ कोसका नापागया है। वैकुंठवासी श्रीमानने हुक्म दिया था कि यहां एक सुदृढ दुर्ग चूने और पत्थर का बनाया जावे। वह अब मेरे राज्यमें सम्पूर्ण होनेवाला है। वह पहाडी उसके बीचमें आगई है। किलेका कोट उसके चौफेर फिर गया है। वह उस तलावसे भी जामिला है जिसपर दौलतखाने अर्थात् राजभवन बने है। दौलतखानेमें एक वागीचा है। उसके बीचमें छोटसा एक कमरा है जिसमें मेरे पूज्य पिता वहुधा बैठते थे। यह इस समय वहुत उदास और शोभाहीन देखनेमें आया। मुझे बहुत बुरा लगा। क्योंकि उनके विराजनेका स्थान मेरा परम पूज्य धाम है। मैंने हुक्म दिया कि वागीचेके सुधारने और मकानों के बनानेमें अति यत्न करें। थोडे दिनोंमें उसकी और ही शोभा निकल आई। वागीचेमें ३२ गज लम्बा चौडा एक चबूतरा ३ टुकडोंका तैयार होगया। मकान नये सिरेसे बनकर विचित्र चित्र-कारोंकी चित्रकारीसे चीनकी चित्रशालाको चकित करने लगे। मैंने इस वागीचेका नाम नूरअफजा रखा।"

तिब्बतके जमीन्दारोंकी भेट—१५ शुक्रवार (चैत्रसुदी १ संवत् १६७७) को तिब्बतके जमींदारकी भेटमें कुतास(१) जातिकी २ गाये देखकर वादशाह लिखता है "आकृतिमें भैंससे वहुत मिलती हैं। सब शरीर वालोंसे ढकाहुआ है। ठडे देशोंके पशु ऐसेही होते है। जंग जातिका वकरा जो भक्कर और गर्म पहाडोंसे लाया गया था वहुत सुन्दर था। उसके वाल भी थोडे थे। जो इन पहाडों

(१) सुरागाय।

में होते हैं। वह बर्फ और जाड़ा बहुत पहड़नेसे कुरूप और केशोंसे भरे हुए होते है। काश्मीरी जंगको कपिल कहते हैं और इन्ही दिनोंमें कस्तूरिया हरन भी लायागया था। मैंने उसका मांस नहीं खाया था, इसलिये पकवाया। बहुत बेस्वाद पाया। जंगली चौपायों में किसीका मांस ऐसा बुरा और बदमजा नहीं है। गीली कस्तूरीमें तो कुछ सुगन्ध नहीं होती है पर सूखे पीछे सुगंधित होजाती है।"

भाक और शालामार—"मै इन दो तीन दिनोंमें नावपर बैठकर भाक और शालामारके बागोंकी बहारसे मुदित होता रहा। भाक एक परगनेका नाम है जो डलके आसपास है। ऐसेही शालामार भी उसीके समीप है। यहां एक सुरम्य सरिता बहतीहै जो पहाडसे आकर डलके तालाबमें गिरती है। मैंने पुत्र खुर्रमसे कहकर यहां घाट बनवा दिये। अब वह एक ऐसा जलाशय बनगया जिसे देखकर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। यह स्थान काश्मीरके देखने योग्य स्थानोंमेंसे है।"

शाहजादे शुजाका गिरना—१७ रविवार (चैत्रसुदी २) को शाहजादा शुजा जो अभी ४ वर्षका था दौलतखानेके ७ गज ऊंचे दरवाजेसे नीचेको झांकता हुआ जमीन पर गिर पड़ा। पर नीचे टाटलपेटा हुआ रखा था और एक फर्राश भी बैठा था इससे बचाव होगया। चोट कुछ न आई। खिदमतिये प्यादोंका सरदार राय मान झरोकेके नीचे खडा था। उसने दौडकर गोदमें उठालिया और ऊपर लेगया। उस समय शाहजादेने इतना पूछा कि मुझे कहां लिये जाता है। रायमानने कहा हजरतकी खिदमतमें। फिर वह अचेत होगया। बादशाह उस समय सोता था। यह समाचार सुनतेही घबराकर बाहर आया। देरतक उसको गोदमें लिये रहा। उसके बच जाने पर परमेश्वरकी बहुत स्तुतिकी और दानपुण्य करके कहा कि इस शहरमें जो गरीब और फकीर रहते है उनको मेरे सामने लावें मै यथायोग्य सबकी जीविका कर दूं।

जोतकराय ज्योतिषी—बादशाह लिखता है—"इस दुर्घटनाके

३।४ महीने पहले जोतकरायने जो बड़ा निपुण ज्योतिषी है सुझसे प्रत्यक्ष कह दिया था, शाहज़ादेकी जन्मकुंडलीसे ऐसा जाननेमें आया है कि यह तीन चार महीने उनको भारी है। संभव है कि किसी ऊंची जगहसे गिरपड़ें। पर प्राणकी हानि न होगी। उसका कहना अनेकवार सही निकल चुका था। इस वास्ते इसकी आशंका निरन्तर चित्तमें बनी रहती थी। विकट रास्तों और दुर्गम घाटियोंमें पलभर भी मैं उससे गाफिल न रहता था। सदैव आंखोंके आगे रखता था। परन्तु यह तो होनेवाली बात थी उसकी धायें और खिलाने वालियां भी असावधान होगईं। पर ईश्वरकी कृपासे कुशल रही।

अलहदाद अफ़गान—२१ गुरुवार (चैत्रसुदी ७) को तारीकीका बेटा अलहदाद पठान अपने पिछले कामोंसे पछताकर दरगाहमें उपस्थित हुआ। बादशाहने एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके अपराध क्षमाकरके अगला मनसब अढ़ाई हजारी जात और १२०० सवारोंका बहाल करदिया।

लाला चौगासी—बादशाह चौगासी जातिके लालाको जुमा मसजिदकी छतपर खूब खिला हुआ सुनकर २३ (चैत्रसुदी ८) को उसकी बहार देखनेके लिये गया। लिखता है—"मसजिदके एक तरफ खूब फुलवारी फूल रही थी।"

जगतसिंहको मऊधमरीका परगना—मऊधमरीका परगना पहले राजा बासूको दियागया था उसके पीछे सूरजमल भोगता था। अब बादशाहने उसके भाई जगतसिंहको जिसे टीका नहीं मिला था इनायत कर दिया।

राजा संग्रामको जम्मूका परगना—जम्मूका परगना राजासंग्रामको इनायत हुआ।

छठींवहिश्त।

१ सोमवार (वैशाखवदी ४) को बादशाह खुर्रमके यहां जाकर

उसको हम्माममें नहाया। बाहर आनेपर उसने जो भेट धरी थी उसमें से थोड़ीसी उसका मन रखनेको लेली।

नूरपुर—७ रविवार (बैशाख बदी ९) को बादशाह चकोरोंका शिकार खेलने हैदर मलिकके गांव चारदरेमें गया। जहां पानी बह रहा था और चनारके बड़े बडे वृक्ष थे। बादशाहने प्रसन्न होकर उस गांवका नाम हैदरमलिककी प्रार्थनासे नूरपुर रखा।

हलथल—रास्तेमें बादशाहने हलथल नाम एक वृक्ष देखा जिस की एक शाखाके हिलानेसे सारा वृक्ष हिलने लगता था। लोगोंका विश्वास था कि यह गुण केवल उसीमें है। परन्तु बादशाहको उसी गांवमें वैसाही एक और वृक्ष भी मिलगया जो उसी प्रकारसे हिलता था। बादशाहने यह सिद्ध किया कि यह बात इस जातिके सब वृक्षोंमें है अकेले इसीमें नहीं है।

चनारका एक विचित्र वृक्ष—बादशाह लिखता है—"शहरसे २॥ कोस हिन्दुस्थानकी तर्फ गांव रावलपुरमें चनारका एक पोला वृक्ष ऐसा है कि २० वर्ष पहले मैं ५ कसे हुए घोड़ों और दो ख्वाजासराओं सहित उसके अन्दर घुस गया था। परन्तु जब यह बात किसी प्रसंगसे कही जाती थी तो लोग इसको असम्भव समझते थे। अब मैंने कुछ लोगोंको उसकी पोलमें दाखिल किया तो पिछली बातका प्रमाण मिलगया। अकबरनामेमें लिखा है कि स्वर्गवासी श्रीमानने ३४ मनुष्योंको उसके अन्दर लेजाकर पास पास बिठाया था।"

पृथ्वीचन्दकी मृत्यु—इसी दिन बादशाहसे अर्ज हुई कि राय मनोहरका बेटा पृथ्वीचन्द जो कांगड़ेकी सेनाके सहायकोंमें था निरर्थक युद्ध करके काम आया।

देवीचन्द गुलेरीकी पदवृद्धि—११ (बैशाख बदी १३) गुरुवारको बादशाहने कई अमीरोंके मनसब बढाये। उनमें देवीचन्द गुलेरी डेढ़ हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसब पर पहुंचा।

ठट्ठेकी सूबेदारी—२५ गुरुवार (बैशाख बदी १३) को बादशाह

ने भक्करके फौजदार सैयद वायजीद बुखारीको टट्टेकी सूबेदारी दी। उसका मनसब बढ़ाकर दोहजारी जात पन्द्रहसौ सवारोंका कर दिया और झण्डा भी दिया।

अनीराय सिंहदलन—महाबतखांकी प्रार्थनासे अनीराय सिंहदलन भी बंगशके सूबेमें भेजा गया।

अम्बरका उपद्रव—सेनापति खानखानां और दूसरे शुभचिन्तकोंकी विनयपत्रिकाओंसे बादशाहको विदित हुआ कि अम्बर बादशाही सवारीको दूर देखकर दुष्टतासे अपनी प्रतिज्ञा भूल गया है और बादशाही सीमामें हस्तक्षेप करने लगा है। उन्होंने खजाना भी मांगा था इसलिये बादशाहने बीस लाख रुपये खानखानांके पास भेज देनेका हुक्म राजधानी आगरेके कोशाध्यक्षोंको लिख दिया। इसके पीछे यह समाचार भी पहुंचे कि अमीर थानोंको छोड़कर दाराबखांके पास चले आये। बरगी लोग लशकरके आसपास सजे हुए फिरते हैं। खंजरखां अहमदनगरके किले में घिर गया है। अबतक दो तीन वार बादशाही बन्दे बैरियोंसे भिड चुके हैं। जो हार हार कर भागे हैं। निदान दाराबखां सरस सैंधवोंके सवारोंके साथ चढकर शत्रुओंकी स्कन्दावार पर गया जहां बड़ा भारी युद्ध हुआ। शत्रु हारकर भाग गये। उनकी छावनी लुट गई। विजयी सेना अपने लशकरको लौट आई। फिर अनाजके अभावसे असीर रोहनगढ़के घाटेसे उतर आये कि अनाज अनायासही पहुंचाता रहे और सिपाही सङ्कटमें न पडें। बालापुर में सेना सजाई गई दुशमन ढिठाई करके वहां भी दिखाई दिया। राजा बरसिंह देव कितनेही वीरोंसे आगे बढा और बहुतोंको मार कर मनसूर नाम हबशीको जीता पकड लाया। उसे हाथीके पैरों में डालनेकी बड़ी चेष्टा की गई, पर वह अपनी जगहसे हिला तक नहीं, वहीं जमा खडा रहा। तब राजाने उसका सिर उडा देनेका हुक्म देदिया।

मुखनाग—३०सगल (ज्येष्ठ बदी ३) को बादशाह मुखनाग देखने

को गया। यह एक बड़ा रमणीय स्थान एक घाटीमें था। पानी ऊपर से गिरता था। बर्फ पडी हुई थी। बादशाहने गुरुवारका उत्सव उसी फुलवारमें किया और मात्राके प्याले उस जलाशय पर पान किये। यहां पानीमें उसको साज जैसा एक जानवार दिखाई दिया जिसके विषयमें लिखता है—"साज तो काले रंगका होता है जिस पर सफेद तिल होते हैं। इसका रंग बुलबुलका सा है। सफेद छींटों वाला है। पानीमें डुबकी लगाता है और बहुत देर तक भीतर रह कर दूसरी जगह सिर जा निकालता है। मैंने दो तीनके पकडनेकी आज्ञा दी। मैं देखा चाहता था कि उनके पांव जलकूकडी के समान चमडेसे मढे है वा जङ्गली जन्तुओंकी भांति खुले हुए हैं। दो पकडकर लाये गये। एक तो तुरन्त मर गया। दूसरेके पंजे जलकूकड़ीकेसे न थे। मैंने नादिरुलअस्र उस्ताद मनसूर चित्रकारको फरमाया कि इसकी तसवीर खेंचले। कशमीरी इसको गलकर कहते है अर्थात् पानीका साज।

न्याय—इन दिनों काजी और मीरअदलने बादशाहसे प्रार्थना की कि हकीम अलीका बेटा अबदुलवहाव लाहोरके कई सैयदों पर अस्सी हजार रुपयेका दावा करता है और एक खत नूरुल्लह काजी की मोहरका दिखाकर कहता है कि यह रुपये मेरे पिताने इनके बाप सैयद वलीको अमानत सौंपे थे। सैयद नटते है। यदि आज्ञा हो तो हकीमका बेटा कुरान उठाकर ... रोहर उनसे लेले। बादशाहने कहा कि जैसा शरीअतर्क ... वैसा ... ।

मित्रोंको बीचमें डालकर सन्धिकी बात चलाई। कहा—यदि सैयद आसफखांके पास यह अभियोग न लेजावें तो मैं लिख दूंगा कि मुझे इनसे कुछ पाना नहीं है। आसफखां जब उसको बुलाता था कोई न कोई बहाना करके टाल जाता था क्योंकि चोर डरपोक भी होता है। निदान उसने लादावा लिखकर अपने एक स्नेहीको सौंप दिया। आसफखांको यह समाचार लगा तो उसने उसे जबर-दस्ती बुलाया। पूछताछ की तो उसे स्वीकार करना पडा कि यह खत मेरे एक सेवकने लिखा है वही साक्षी बना है और उसीने मुझे बहकाया है। यही उसने लिख भी दिया। आसफखांने सब व्यवस्था बादशाहसे निवेदन की। बादशाहने रूहोमकर्वटेकी जागीर उतारली और उसे भी चित्तसे उतार दिया। सैयदोंको प्रतिष्ठापूर्वक लाहोरकी ओर विदा किया।

खुरदाद महीना।

बरसिंह देवका पांच हजारी होना—८ गुरुवार (ज्येष्ठवदी ११) को बादशाहने राजा बरसिंह देव बुन्देलेको पांचहजारी जात पांच हजार सवारोंका उच्च पद दिया।

अशकान—बादशाह लिखता है—काश्मीरमें सबसे पहले आने वाला मेवा अशकान है। यह खट्टा मीठा होता है। आलूबालूसे छोटा रस और कोमलतामें बहुत बढिया शराबके नशेमें ३ या ४ से अधिक आलूबालू नहीं खासकते। पर यह रात दिनमें १०० तक चख सकते हैं विशेषकर पैवन्दी। मैंने हुक्म दिया है कि आजसे अशकानको खुशखुन (प्रसन्न करनेवाला) कहा करें। जो सब में बडा था वह तोलमें २। माशे हुआ।

शाह आलू—शाह आलू ४ उर्दी बहिश्त (बैशाख बदी ६) को चनेके बराबर निकला था २७ (बैशाख सुदी १५) को उसने रंग बदला। १५ खुरदाद (ज्येष्ठ सुदी ४) को पक गया और नया किया गया। शाह आलू मुझे बहुत अच्छा लगता है। ४ वृक्ष

नूर अफ़ज़ा बागमें फले थे। मैंने एकका शीरींवार(१) दूसरेका खुशंगवार(२), तीसरेका जिनमें सबसे अधिक फल लगेथे पुरवार(३) और चौथेका जो कम फला था कमबार(४) नाम रखा। एक वृक्ष खुर्रमके बागीचेमें फला था उसका नाम शाहवार(५) और एक नये पौदेका नाम जो इशरतअफ़ज़ा बागीचेमें था नौबार(६) नियत हुआ। नित्य इतनेही फल जो प्यालेको मजेदार करनेके लिये जरूरी होते अपने हाथसे तोड़ लेता था। यद्यपि काबुलसे भी डाकचौकीसे आते थे परन्तु अपने हाथसे घरके बागीचेके ताजा ताजा तोडनेमें औरही मजा था। कशमीरका शाहआलू काबुलवाले से कुछ कम नहीं होता वरन्च बढ़कर होता है। जो सबमें बडा था वह तोलमें एक टांक और पांच रत्ती हुआ।

बादशाहबानू बेगमकी मृत्यु—२१(७) मंगलवार (ज्येष्ठ सुदी ८।१०) को बादशाहबानू बेगमका देहान्त होगया। बादशाह लिखता है—"इस हृदयविदारक दुर्घटनाका दुःख मेरे दिलमें बहुत हुआ। परमेश्वर उसे शान्ति दे। जोतकरायने दो महीने पहले कई पासके सेवकोंसे कह दिया था कि बेगमोंमेंसे एक उच्चासनासीना का अभाव होजायगा। यह बात उसने मेरे जन्मपत्रसे जानी थी। सही हुई।"

बंगशमें हानि—जब महसूल उगाहनेका समय आया तो महाबतखांने सेनाको हुक्म दिया कि पहाडोंमें जाकर पठानोंकी खेती घोडोंका चरा दें और पठानोंके लूटने मारने और बांधनेमें कसर न रखें। पर जब सेना घाटेके नीचे पहुची तो पठानोंने चारों ओर से उमड़कर घाटेका मुंह बन्द कर दिया। तब जलालखांने जो भुक्तभोगी बूढा था, कहा कि दो तीन दिन ठहर जाओ, पठान जो

(१) मीठे फलवाला (२) सुस्वादु (३) फलसे भराहुआ (४) कम फलवाला (५) बादशाहके योग्य (६) नये फलवाला (७) मंगल को २१ नहीं २० थी २१ बुधको थी।

थोडासा आटा अपनी पीठ पर लादकर लाये है उसको खाकर आप ही चले जायंगे। तब हम लोग सहजमें इस बिकट घाटीसे उतर जायंगे। परन्तु इज्जतखांने चञ्चलतासे यह बात न मानी और बारहके कुछ सैयदोंको लेकर आगे बढ़ा। पठानोंने उसको घेर लिया। वह वीरता पूर्वक उनसे लड़कर मारा गया। उसके जाते ही जलालखां गक्कड़ मसऊद, बीजन आदि बादशाही बन्दे भी घाटी पर चढ़ने लगे थे, उनको पठानोंने ऊपरसे तीर और पत्थर फेंककर मार दिया। बादशाह लिखता है—"एक इज्जतखांकी चपलतासे सेनाको ऐसा धक्का लगा।"

महाबतखांने यह भयप्रद समाचार सुनकर नई सेना सहायता को भेजी और फिरसे थाने बिठाकर पठानोंको दण्ड देनेका प्रयत्न किया।

बादशाहने जलालखांके बेटे अकबरकुलीको कांगडेकी फौज मेंसे बुलाकर हजारी जात १००० सवारोंका मनसब तथा उसका मुल्क जागीरमें दिया और घोड़ा तथा सिरोपाव देकर लश्करकी सहायताको भेजा।

इज्जतखांका बेटा बहुत छोटा था। तोभी इज्जतखांकी सेवाके लिहाजसे उसका मनसब जागीर सहित उस लडकेके नाम करदिया। जिससे उसके पीछे रहे हुए लोग बिखरने न पावें और दूसरोंको भी आशा बढ़े।

शेख अहमदको छोडना—इसी दिन बादशाहने शेख अहमद सरहिन्दीको जो ढोंग फैलानेके दोषमें पकड़ा गया था छोडदिया। खिलअत और १०००) खर्च देकर कहा कि चाहे रहे चाहे जावे। उसने प्रार्थना की कि यह सजा मेरे वास्ते एक शिक्षा थी। मेरा कल्याण सेवामें रहनेसेही है।

चित्रशाला—बागमें एक चित्रशाला थी बादशाहने उसके बनाने का हुक्म दिया था। वह इन दिनों विचित्र चित्रकारोंके चित्रोंसे भूषित होकर प्रस्तुत हुई। बादशाह लिखता है—"ऊपरकी श्रेणी

में जन्नतमकानी(१), अर्श आशियानी(२) का, उनके सामने मेरा और मेरे भाई शाह अब्बास सफवीका चित्र है। फिर मिरजा कामरां, मिरजा मुहम्मद हकीम, शाह मुराद और सुलतान दानियालके चित्र हैं। दूसरी श्रेणीमें अमीरों और निज सेवकोंकी तसवीरें हैं। चित्रशालाके बाहर कशमीरके रास्तेकी उन मंजिलोंका नकशा उसी क्रमसे है जिस क्रमसे मैं आया हूं।

तीर महीना।

बोरियाकोबीका उत्सव—४ गुरुवार (अषाढ़ बदी १०) को बोरियाकोबी (बोरिया कूटने) का उत्सव हुआ। इस दिन कशमीर के शाह आलू होचुके थे। नूरअफजा बागीचेके ४ वृक्षोंसे १५०० शाह आलू तोड़े गये। बादशाहने कशमीरके कर्मचारियोंको बागों में शाह आलू लगानेकी ताकीद की।

भीमको राजाकी पदवी—बादशाहने राणा अमरसिंहके बेटे भीमको राजाकी पदवी प्रदान की।

उड़ीसेकी सूबेदारी—१४ रविवार (अषाढ़ सुदी ६) को उड़ीसे की सूबेदारी हसनअलीखां तुर्कमानको ३ हजारी २ हजार सवारके मनसब सहित मिली।

कन्दहारके हाकिमकी भेंट—इसी दिन बहादुरखां कन्दहारके हाकिमके भेजे हुए ८ ईराकी घोड़े कई थान सुनहरी कपड़े तथा मखमलके और केशके दाने बादशाहकी नजरसे गुजरे।

तूसीनाग—१५ चन्द्रवार (अषाढ सुदी ७) को बादशाह तूसीनाग देखनेको घाटी पर चढ़ा। दो कोसकी खड़ी चढाई अति कठिनतासे चढी गई। घाटी परसे उस विपिन तक एक कोस धरती ऊंची नीची थी। बादशाह लिखता है—"यद्यपि नाना प्रकारके वन फूले हुए थे परन्तु लोग यहांकी जैसी प्रशंसा करते थे वैसी देखनेमें न आई। सुना, पासही एक और घाटी खिली हुई है। मैं १८गुरुवार (अषाढसुदी१०) को उसे देखने गया। निस्सन्देह इस

(१) हुमायूं बादशाह (२) अकबर बादशाह।

फुलवारीकी जितनी प्रशंसा की जाय ठीक है। जहांतक नजर जाती थी रंग रंगके फूल फूले हुए थे। ५० तरहके फूल तो मेरे सामने चुने गये थे। सम्भव है कि और भी हों जो देखनेमें न आये। तीसरे पहर लौटे।"

एक अनोखीबात—बादशाह लिखता है—"आजकी रात अहमदनगरके घेरेका प्रसंग चल रहा था। उसमें खांनजहांने एक अजबबात कही जो पहलेभी अनेकबार सुनीगई थी। विचित्र होनेसे लिखी जाती है। जिनदिनों मेरे भाई शाहजादे दानियालने अहमदनगरके किलेको घेरा था, एकदिन किलेवालोंने मलिकमैदान नामकी तोप शाहजादेके लशकरकी ओर छोडी। गोला शाहजादे के डेरेके पास पड़ा। फिर वहांसे वह गोला गुंबदबांधकर शाहजादेके सभासद काजी बायजीदके घरमें जागिरा। काजीका घोडा ३।४ गजकी दूरीपर बंधा था। गोलेके पड़तेही घोड़ेकी जांघ जड़से उखड़कर अलग जमीनपर जापड़ी। गोला पत्थरका था और तोलमें १० मन हिन्दुस्तानी था। उसके ८० मन खुरासानी होते हैं। यह तोप इतनी बड़ी है कि उसमें एक आदमी अच्छी तर बैठ सकता है।"

अमरदाद महीना।

कोरीमर्ग— ८ मंगलवार(१) (सावन वदी १४) को बादशाह कोरीमर्ग देखनेको गया। उसकी बहुत प्रशंसा सुनी थी। वह लिखता है—इसकी क्या प्रशंसा करूं। जहांतक दृष्टि काम देती थी रग रंगके फूलही फूलखिले दिखाईदेते थे हरियाली और फूलोंमें निर्मल जल बहरहा था। मानो यह देवरचित चित्रशालाका एक चित्रपट था। दिलकी कली इसके देखतेही खिल जाती थी। यह दूसरे बागोंसे बहुत बढ़ चढ़कर है। काश्मीरके देखने योग्य बागोंमेंसे है।

---

(१) मंगलको ६ थी ८ लेखकके दोषसे लिखी गई है।

पपीहा—बादशाह लिखता है "हिन्दुस्तानमें पपीहा नाम एक प्रियवादी पच्ची है जो बरसातके दिनोंमें चित्तको विच्छिप्त करनेवाली बोलियां बोलता है। जिस प्रकार कोयल अपना अण्डा कव्वेके घोंसलेमें रखदेती है और कव्वा उसमेंसे बच्चे निकालता और पालता है, वैसेही काश्मीरमें देखागया कि पपीहेने अपना अण्डा गौगाई (एक पच्ची) के घोंसलेमें रखा था और गौगाई उसके बच्चे को पालती थी।"

औरगंज(१) का दूत—औरगंजके हाकिम इज्जतखांने मुहम्मद जाहिदके हाथ अर्जी और थोड़ीसी सौगात भेजकर पिछले सम्बधों की याद दिलाई थी। बादशाहने १००० दरब दूतको दिला कर कारखानोंमें हुक्म भेज दिया कि जिन जिन पदार्थोंको यह प्रार्थना करे वहां भेजनेके लिये वह सब तय्यार करदें।

शहरेवर महीना।

रावत शंकर(२) का बेटा मानसिंह—२ शहरेवर (भादों बदी ११) को रावत सगरके बेटे मानसिंहको डेढहजारी जात और ८०० सवारोंका मनसब मिला।

कबरे दांत—बादशाहकी रुचि जौहरदार(३) चितकबरे रंगके दांतोंमें देखकर बडे बडे अमीर उनकी खोजमें लगे हुए थे। तूरानके खाजिकलां जोयबारीके बेटे हसनके पास एक वैसाही पूरा और पक्का दांत था। अदुल्लहखां नकशबन्दीने वह लेकर बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह उस दांतको देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने खाजोंके पास तीस हजार रुपयेकी चीजें भेजनेका हुक्म दिया।

पहाडमें हार—सुन्दरकी अर्जी पहुंची कि जौहरमल (सूरजमल) सरगया। एक जमींदार पर सेना भेजी थी। वह लौटनेके मार्गका बन्दोबस्त किये विनाही घाटीमें घुसगई और वृथा युद्ध

(१) तूरानका एक प्रदेश। (२) सही नाम सगर था।
(३) छींटेवाला।

करके तीसरे पहर उल्टी भागी। बहुत आदमी मारेगये। जिन्होंने भागनेका कलंक न सहना चाहा वह जमकर लड़े और काम आये। इनमें शहबाजखां लोदी, जमालखां अफगानी, उसका भाई रुस्तम, और सैयद नसीब बारह आदि थे—कितनेही घायल होकर वहांसे निकले। यह भी लिखा था कि किलेवालोंने घेरेसे तंग होकर कुछ आदमी बीचमें डाले हैं और क्षमा मांगी है।

भटके तटपरदीप मालिका—१८ गुरुवार (भादोंसुदी १४) को रातको कश्मीरियोंने भट नदीके दोनों तट पर दीपमालिकाकी थी। बादशाह लिखता है "यह एक पुरानी प्रथा है। हरसाल इसदिन धनी और निर्धन लोग जो इस दरियाके किनारे रहते हैं शबबरातकी भांति दीपक जलाते है। ब्राह्मणोंसे उसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इस मितीको भट नदीका सोता निकला था। प्राचीनकालसे यह बात चली आती है कि इस दिन धनत्रिवाह का उत्सव होता है। धनका अर्थ भट और त्रिवाहका तेरह है। यह उत्सव जो शव्वालकी इस १३ (१) तारीखको करते हैं इसलिये धनत्रिवाह कहलाता है। अच्छी दीपमालिका हुई थी। नावमें बैठ कर देखी गई।"

सौर पचीय तुलादान—इसी दिन सौर पचीय जन्मदिवसके तुलादानका उत्सव हुआ बादशाह स्वर्ण आदि पदार्थोंमें तुला ५२वां वर्ष लगा।

आसफखांके घर गुरुवारका उत्सव—२६ गुरुवार (आश्विन वदी ६) को गुरुवारके उत्सवकी सभा आसफखांके घर हुई। वह बादशाहकी भेट पूजा करके सम्मानित हुआ।

मुर्गाबी—बादशाह लिखता है—१ शहरेवर (भादोंवदी१०) को अल्लडके और २४ (आश्विनवदी ४) को डलके तलावमें मुर्गाबियां

(१) इस दिन १३ शव्वाल थी, परन्तु १३ शव्वालको क्या, भादोंसुदी १३ को यह त्योहार माना जाता होगा और काश्मीरमें इस दिन त्रियोदशीही होगी।

दिखाई दी थीं। काश्मीरमें इतने प्रकारके पक्षी हैं "१ कुलंग २ सारस ३ मोर ४ चरज ५ लगलग ६ तगदरी ७ तगदाग ८ कारवानक ९ जर्दतिलक १० नुकरा ११ वाचरस १२ लेलूरा १३ हवासिल १४ मकशा १५ तकला १६ काज १७ गूंगला १८ तीतर १९ मैना २० नूनसरज २१ मूसीचा २२ हरियल २३ ढींक २४ कोमल २५ शक्करखोरा २६ सहका २७ महरलात २८ हंस २९ कालचिड़ी ३० टटीरी जिसका मैंने बदअवाज नाम रखा है।

इनमें जिन जिनके नाम फारसीमें मालूम नहीं थे बल्कि वह विलायतमें होते भी नहीं हैं उनके नाम हिन्दीमें लिख दिये हैं। काश्मीरमें जो पशु नहीं होते हैं उनके नाम यह हैं—

१ पीलासिंह २ चीता ३ भेड़िया ४ जंगली भैसा ५ कालाहरन ६ चिकारा ७ कोतापाचा ८ नीलगाय ९ गोरखर १० खरगोश ११ स्याहगोश १२ जंगली बिल्ली १३ मूशक १४ करबलाई १५ गोह १६ सेई।

शफतालू—इसी दिन काबुलके शफतालू डाकमें पहुंचे। उनमें जो सबसे बडा था वह २४ तोले उतरा। जब तक इसका मौसिम रहा इतने पहुंचते रहे कि कितनेही अमीरों और निजबन्दोंको भी दिये जाते थे।

बेरनाग और किश्तवारमें हानि—२७ शुक्रवार (आश्विनबदी ७) को बादशाह बेरनाग देखनेको ५ कोस नावमें जाकर गांव पानपुर के पास उतरा। इसीदिन किश्तवारसे यह अशुभ समाचार आयाकि दिलावरखां किश्तवारमें नसरुल्लह अरबको छोड़ आया था। उसने वहांके लोगोंको बहुत सताया और जो उसके सहाय थे उन्हें छुट्टी देदी क्योंकि वह मनसब बढानेके लालचसे दरगाहमें आना चाहते थे। इस प्रकार जब उसके पास थोड़ेसे लोग रहगये तो वहांके जमींदारोंने जो उससे जले हुए थे पुलको जलाकर बलवा कर दिया। नसरुल्लह घिरकर दो तीन दिन तो बचा रहा। पीछे अनाजकी कमीसे निकलकर लडा और बहुतसे साथियों सहित

मारा गया। बाकी लोग पकडे गये। बादशाहने दिलावरखांके बेटे जलालको हजारी जात और ६०० सवारोंका मनसब, उसके नौकर, तथा काश्मीरके सूबेकी कुछ सेना, बहुतसे जमींदार और बन्दूकची साथ, देकर उन बलवाइयोंको दंड देनेके लिये विदा किया और जम्मूके जमींदार संग्रामको हुक्म दिया कि अपने लोगों को लेकर जम्मूके पहाडी रस्तेसे वहां जावे।

काकापुर—२८ शनिवार (आश्विन वदी ८) को बादशाह ४॥ कोस चलकर काकापुरसे एक कोस भटके तटमें उतरा। वह लिखता है काकापुरकी भंग विख्यात है दरियाके किनारे पर उसके जंगलके जंगल है।"

पंचहजारा—२९ रविवार (आश्विनवदी ९) को पंचहजारामें डेरा लगा। यह गांव शाहपरवेजको दिया हुआ था। उसके वकीलों ने पानीके ऊपर बगीचा और एक छोटासा भवन बना रखा था। पचहजारेमें एक बहुत सुन्दर रमना था जिसके बीचमें चनारके ७ वृक्ष बहुत बडे खडे थे और नदी उनके चौफेर घूमी हुई थी। काश्मीरी इसको भूली कहते है। यह जगह काश्मीरके अतिदर्श-नीय स्थानोंमें है।

खांनदौरांकी मृत्यु—इसी दिन खांदौरांके लाहोरमें मरनेकी खबर आई। यह ८० वर्षके लग भग होगया था। अपने समयके वीरपुरुषोंमेंसे था सरदार भी अच्छा था। बादशाह लिखता है उसके ४ बेटे है पर एक भी उसका पुत्र कहलानेके योग्य नहीं। ४ लाख रुपयेका धन माल उसने छोडा था वह उसके बेटोंको मिलगया।

अनच—३० सोमवार (आश्विनवदी १०) को बादशाहने अनच का झरना देखा। यह गांव अकबर बादशाहने रामदास कछवाहे को दिया था उसने पहाडके नीचे झरनेके ऊपर कमरे और कुंड बनाये थे। बादशाह लिखता है—"यह वास्तवमें बहुत सुन्दर और सरस स्थान है। इसका पानी तो इतना निर्मल है कि अन्धा अंधेरी

रातमें उसके नीचेके रेणुकण गिन सकता है।"

"यह गांव मैंने खानजहांको दिया है। उसने जियाफतकी तैयारी करके भेट सजाई थी जिसमेंसे थोड़ी सी उसका मन रखनेको लेली।"

"इस झरनेसे आध कोस मच्छीभवन नाम एक और झरना है। स्वर्गीय श्रीमानके सेवकोंमेंसे विहारी चन्दने इसके ऊपर एक मन्दिर बनाया है। इस झरनेके पानीको प्रशंसा जितनी की जाय काम है। पुराने पुराने वृच्च चनार, सफेदार, और काले वेदके इसके आस पास उगे हुए हैं। मैं रात यहीं तैरके ३१ मंगलवार (आश्विनवदी ११) को अछोल नाम झरने पर उतरा।

अछोल—इस झरनेमें बहुत पानी है अच्छा जलाशय है। इसके किनारोंमें ऊंचे और फबते हुए वृच्च चनार और सफेदारके लगे हुए थे। जगह जगह मनोरम बैठकें बनी हुई थीं। सामने गुलजाफरीका बगीचा फूल रहा था स्वर्गका सा टुकड़ा है।

महर महीना।

१ बुधवार (आश्विनवदी१२) को अछोलसे कूच होकर वैरनाग में तंबू तने।

वैरनाग—२ गुरुवार (आश्विनवदी १३) को वैरनागके ऊपर प्यालोंकी मजलिस हुई। बादशाहने निज सेवकोंको बैठनेका हुक्म देकर प्याले भर भरकर दिये और गजकके वास्ते काबुलके शफतालू प्रदान किये। मतवाले सांझ समय अपने घरोंको लौटे।

वैरनागमें बागादि—बादशाह लिखता है कि यह झरना भट नदीका सोता है। यहां घने वृच्चों और घास तथा दूबकी पुष्कलतामें भूमि दिखाई नहीं देती है। मैंने युवराजवस्थामें यहां कुछ अच्छे स्थान बनानेकी आज्ञा दी थी। वह अब बन चुके थे। इस प्रकार थे। (१) अठपहलू हौज ४२गजका १४गज गहरा जिसका पानी पहाड़ी फूलों और हरयालीके प्रतिबिम्बसे, जंगाली होरहा था। बहुत सी मछलियां उसमें तैर रही थीं (२) हौजके ऊपर झरोके झुके हुए

(३) झरोखोंके आगे एकबाग (४) हौजसे बागतक नहर४गज चौड़ी १८० गज लम्बी और २ गज गहरी (५) नहरके ऊपरकी क्यारियां पत्थरकी बनी हुईं।

हौजका पानी ऐसा निर्मल और मंजुल था कि १४ गज गहरा होने पर भी यदि एक चना उसमें पड़ा हो तो दिखाई दे। नहरकी विशुद्धता तथा झरनेके नीचे उगी हुई घास और दूबकी शोभा क्या लिखी जावे। मानो नाना प्रकारके बेल और बूंटे मिले जुले उगे हुए थे। जिनमें एक बूंटा मोरकी पूंछके आकारका था और पानीकी लहरोंसे लहराता था। फूल जहां तहां खिले हुए थे। कश्मीर भरमें इस छटा और शोभाका कोई विलासस्थान नहीं है। यह भी विदित हुआ कि कश्मीरका जो प्रदेश नदीके ऊपर है उसकी नदीके नीचेके प्रांतसे कुछ तुलना नहीं है। जीमें था कि मैं कुछ दिनों यहां रहकर पूरा वनविहार करता और आनन्द लेता। पर कूचका मुहूर्त पास आगया था और घाटी पर बर्फ भी गिरने लगा था ठहरनेका अवकाश न था इसलिये मैंने शहरकी ओर बाग मोडी और नदीके दोनों तटपर वृक्ष लगानेका हुक्म दिया।

लोक भवन—४ शनिवार (आश्विनवदी ३०) को लोकभवनके झरने पर डेरा हुआ। यह भी अच्छा स्थान है। यद्यपि अभी ऊपर वाले झरनोंके समान नहीं है परन्तु सुधरानेसे ठीक होजायगा। मैंने हुक्म दिया कि इसकी हैसियतके अनुसार यहां भी इमारत बनावें और झरनेके सामनेके हौजकी मरम्मत करें।

अन्धनाग—"फिर रास्तेमें एक और झरना मिला जिसको अन्धनाग कहते हैं। प्रसिद्ध है कि इस झरनेकी मछलियां अन्धी होती हैं। चणभर वहां ठहरकर जाल डलवाया तो १२ मछलियां फंसीं उनमें ३ अन्धी और ८ आंखोंवाली थीं। शायद इस झरनेके पानीके दोषसे मछलियां अन्धी होजाती हैं। कुछ हो, बात विचित्र है।"

मच्छीभवन—५ रविवार (आश्विनसुदी १२) को बादशाह फिर

मच्छीभवन और एनच होकर श्रीगनरको आया।

९ गुरुवार (आश्विनसुदी ६) को इरादतखां काश्मीरका सूबेदार और मीर जुमला उसकी जगह खानसामान हुआ और मोतमिदखां को अर्ज मुकर्ररका काम मिला।

श्रीनगर—११ शनिवार (आश्विनसुदी ८) की रातको सवारी श्रीनगरमें पहुंची।

जम्मूका जमींदार—जम्मूके जमींदार संग्रामका मनसब डेढ़ हजारी जात १००० सावारका होगया।

दशहरा—१३ चन्द्रवार (आश्विनसुदी ९) को दशहरे(१)का उत्सव हुआ। प्रति वर्षकी परिपाटीके अनुसार घोड़े जो खासा तवेलोंमें थे और जो अमीरोंको सौंपे हुए थे, सजाकर बादशाहको दिखाये गये।

बादशाहको श्वासका रोग—बादशाह लिखता है—इन दिनों श्वास रुककर आने लगा था।

पतझाड़की शोभा—१५ बुधवार (आश्विनसुदी ११) को बादशाह खिजां (पतझाड़) की शोभा देखनेके लिये सफापुर, और लार के घाटेको गया जो भट नदीके नीचे था। सफापुरमें एक सुन्दर सरोवर और उसके उत्तर ओर वृत्तोंसे परिपूर्ण एक पर्वत था। पत्ते झाड़ने लगे थे तो भी उसकी विचित्र छटा थी। चनार और जर्दालू आदि वृत्तोंका प्रतिबिंब तलावमें बहुत भला दिखाई देता था। बादशाह लिखता है—"खिजांकी शोभा भी बहारसे कुछ कम नहीं होती।"

समय थोड़ा था और कूचका मुहूर्त पास आता जाता था इस लिये बादशाह संक्षिप्त रूपसे देख भालकर लौट आया।

मिरजा रहमानदादकी मृत्यु—शुक्रवारके दिन खानखानांके बेटे मिरजा रहमानदादके मरनेकी खबर पहुंची जो बालापुरमें मरा। कुछ दिनसे उसको ज्वर आता था। कमजोरीके दिनोंमें

(१) चंडू पंचांगमें इस दिन ९थी बादशाही पंचांगमें १० होगी।

एक दिन दखनी सजकर आये। बड़ा भाई दाराबखां उनसे लड़ने गया। यह सुनकर रहमानदाद भी उसी कमजोरीमें वीरतासे सवार होकर भाईके पास पहुंचा। जब बैरियोंको भगाकर आया तो असावधानीसे जल्द वस्त्र उतार दिये। हवा लग गई, शरीर ऐंठने लगा, जीभ बन्द होगई। दो तीन दिन यही दशा रही। फिर प्राण तज दिये। बादशाह लिखता है—"बड़ा लायक जवान था तलवार मारने और काम करनेकी उसको बड़ी उत्कण्ठा रहती थी। सब जगह यही उसकी इच्छा थी कि अपना जौहर तलवार में दिखावे। आग यद्यपि गीले सूखे सबको जलाती है लेकिन जब मेरे दिल पर इतना सदमा है तो उसके बूढ़े बापके टूटे दिल पर क्या गुजरी होगी। अभी शाहनवाजखांकी मौतका घाव भरा ही न था कि यह और नया घाव उस पर लगा। आशा है कि परमेश्वर उसे अब भी शान्ति देगा।"

कशमीरसे कूच।

२७ चन्द्रवार (कार्तिक बदी ८) को एक पहर ७ घडी दिन चढ़े बादशाहने कशमीरसे हिन्दुस्थानको प्रस्थान किया। अब केसर भी खिलने लगी थी, इस लिये सवारी सीधी पनैरको गई। कशमीर भरमें इस गांवके सिवा और कहीं केसर नहीं होती है।

केसरके खेत—३० गुरुवार (कार्तिक बदी १२) को प्यालोंकी मजलिस केसरकी क्यारियोंमें जुड़ी। केसर बागों और जंगलोंमें जहां तक नजर पहुंचती खिली हुई दिखाई देती थी। उसकी महक हवामें फैली हुई थी। बादशाह लिखता है उसका पौदा जमीनसे मिला रहता है। फूलमें ४ पंखड़ियां होती हैं। वह चंपाके फूलके बराबर बडा और रंगमें बनफशई होता है। उसके बीचसे केसरके ३ तन्तु निकलते हैं। उसकी जड़ लगाई जाती है। जिस वर्ष अच्छी उपज होती है वर्त्तमान तौलसे ४०० मन केसर आती है। इसमें आधी प्रजाकी और आधी राजकी होती है। १ सेर १०) को बिकती है। यह भाव कभी घट बढ़ भी जाता है। जो

लोग केसरके फूल चुनकर लाते हैं वह उनकी तोलसे आधा नमक प्राचीन प्रथाके अनुसार मजदूरीमें लेते हैं। क्योंकि नमक कश्मीर में नहीं होता है हिन्दुस्थानसे जाता है।”

कलगीके पर—“कश्मीरकी सौगातमें कलगीके पर भी हैं जो शिकारी जानवरों द्वारा साल भरमें १०७०० तक एकत्र किये जाते हैं।”

शिकारी जानवर—“बाज जुर्रे २६० तक जालमें पकडे जाते हैं बाशेके घोंसले भी होते हैं घोंसलेका बाशा बुरा नहीं होता।”

आबान महीना।

ईरानका दूत—१ शुक्रवार (कार्तिकबदी १३) को पनीरसे कूच होकर खानपुरमें मुकाम हुआ। यहां ईरानके एलची जंबील बेगके लाहोरमें पहुंचनेकी खबर सुनकर बादशाहने खिलअत और ३०००० खर्चके वास्ते उसके पास मीर हिसामुद्दीनके हाथ भेजे। मीरसे कहदिया कि यदि वह कुछ तुझे दे तो तू उसके मूल्य पर पांच हजार और बढ़ाकर उसको मेहमानीके तौर पर भेज देना।

महल—बादशाहने पहले हुक्म दिया था कि कश्मीरसे पहाडोंकी तलहटी तक हरेक मंजिलमें जो महल और मकान मेरे और बेगमोंके बैठनेके योग्य तय्यार हों, जिससे जाडा पाला पडने पर डेरोंमें ठहरना न पडे। वह इमारतें बन तो गई थी पर अभी गीली थीं और उनसे चूनेकी बास आती थी इसलिये बादशाहने डेरोंमे ही आराम लिया।

कलमपुर—२ शनिवार (कार्तिक बदी १४) को कलमपुरमें मुकाम हुआ। बादशाहने हीरापुरके पास एक बडे जलाशयकी बात सुनी थी। वह रास्तेसे तीन चार कोस पर बायें हाथको था। बादशाह छडी सवारीसे उसे देखने गया। वह कहता है “उसकी क्या प्रशंसा लिखी जावे तीन चार दरजेसे पानी ऊपर तले गिरता है। अबतक ऐसी छवि और छटाकी जलधारा देखनेमें न आई थी। बड़ी नज़ुन जगह है। मैं वहां २ पहर दिन विनोद और विश्राम

में व्यतीत करके चित्त और चक्षुको संतुष्ट करता रहा। पर बादल और वर्षाके समय यहां कष्ट होता है। तीसरे पहर सवार होकर संध्या समय हीरापुरमें पहुंचा और रातको वहीं रहा।

बाडी बरारी घाटी—४ चन्द्रवार (कार्तिकसुदी १) को बादशाह बाडी बरारी घाटीसे उतर कर पीरपंचाल पहाडी पर ठहरा। वह कहता है—"घाटी विकट है। मार्गमें कष्ट होनेकी बात क्या लिखूं विचारसे भी बढकर था। इन दिनों कई बेर बर्फ गिर चुकी थी। पहाड सफेद होरहे थे। रास्तोंमें कई जगह पाला पडा हुआ था। घोडेका पांव नहीं जमता था। सवार बडे परिश्रमसे पार होता था। पर इस दिन ईश्वरकी कृपासे पाला नहीं पडा था। हां जो लोग पहले जाचुके थे या पीछे आये वह सब बर्फ पडनेसे पीडित हुए।"

पोशाना—५ मंगलवार (कार्तिक सुदी ३) को बादशाह पीर पंचालसे उतर कर पोशानेमें ठहरा। इधर नीचा था तो भी इतनी ऊंचाई थी कि बहुतसे लोग पैदल चलने लगे थे।

बीरमकल्ला—६ बुधवार (कार्तिकसुदी ३) को बीरमकलेमें डेरा हुआ। इस गांवके पास एक बहुत सुन्दर जलाशय और स्वच्छ झरना था। बादशाहकी हुक्मसे उस पर उसके बैठनेके लिये चबूतरा बनाया गया था। वह लिखता है "सचमुच सुरम्य दर्शनीय स्थान है। मैंने हुक्म दिया कि मेरे आनेकी मिती पत्थर पर खोदकर इस चबूतरेमें जड दें। बेबदलखांने कुछ कविता लिखी थी वही यहां यादगारीके लिये खोद दीगई।"

इसरास्तेसे दो जमीन्दार रहते है। उनके अधिकारमें आने जानेका प्रबन्ध है। वह वास्तवमें काश्मीरकी कुंजी हैं। एकका नाम महदी नायक है और दूसरेको हुसैन नायक कहतेहैं। हीरापुर से बीरमकले तक रास्तेका बन्दोबस्त इनके हाथमें है। महदी नायकका बाप बहराम नायक काश्मीरियोंके राज्यमें बडा आदमी था। जब बादशाही बन्दोंके राज्य करनेकी बारी आई तो युसुफ-

खांने अपने शासनके समय बहरामको मार दिया। अब इन दोनों भाइयोंका अधिकार है। यह ऊपरसे तो मिले हुए है पर भीतरसे आपसमें वैर रखते है।

इस दिन बादशाहका पुराना और विश्वासी सेवक शेख इब्न असीन जो पीरपंचाल पर हवा लग जानेसे रोगग्रस्त होगया था मरगया। बादशाहके खानेको अफीम और पीनेका पानी उसके पास रहा करता था। अब बादशाहने अफीम तो खवासखांको सौंपी और पानी मूसवीखांको।

ठट्ठा—७ गुरुवार (कार्तिकसुदी ४) को ठट्ठेमें डेरे लगे। बादशाह लिखता है—बीरमकल्लेमें बहुत बन्दर देखे गये थे। पर यहां से वायु, बोली, पोशाक और पशुओंमें बड़ा परिवर्तन देखा गया जैसा कि गर्म देशोंमें होता है। यहांवाले फारसी और हिन्दी बोलते हैं। इनकी मूल भाषा हिन्दी है। कश्मीरी बोली इन्होंने पड़ोसी होनेसे सीखली है। यहांसे हिन्दुस्तान आरम्भ होता है। स्त्रियां ऊनी कपडे नहीं पहनती है, हिन्दुस्तानी औरतोंकी भांति नाकमें नथ पहनती हे।

राजौर—८ शुक्रवार (कार्तिकसुदी ५) को राजौरमें रहना हुआ। बादशाह कहता है—"यहांके मनुष्य प्राचीन समयमें हिन्दू थे यहांके जमीन्दारोंको राजा कहते थे। सुलतान फीरोजने उनको मुसलमान किया। तो भी वह राजा कहलाते है। मुसलमान होनेसे पहलेकी कुरीतियां अब भी इनमें प्रचलित हे। जैसे हिन्दुओंकी औरतोंमेंसे कोई कोई अपने पतिके साथ जीती जलजाती है वैसेही यह भी जीती स्त्रीको मरे पतिके साथ कबरमें गाड देते है। सुना इन दिनों एक दस ग्यारह सालकी लडकी जीती पतिके साथ कबरमें डाल दीगई। दूसरे कुछ कंगाल लोग लडकियोंको पैदा होतेही गला घोटकर मार डालते हैं। तीसरे हिन्दुओंको बेटी देते हैं और उनसे लेते हैं। बेटी लेना तो अच्छा है पर देनेसे खुदा बचावे। मैंने हुक्म दिया आगेसे ये

कुरीतियां दूर हों। जो न माने उसे दण्ड दिया जाय।”

विषैलापानी—राजोरमें एक नदी है जिसका पानी बरसातमें जहरीला होजाता है। बहुत लोगोंके गलेके नीचे घेघे निकल आते हैं और वह पीले और दुबले रहते हैं। राजोरके चावल कश्मीरसे अच्छे होते है। बनफशा जो इस पहाडकी तलहटीमें उगता है सुगन्धित होता है।

नौशहरा—१० रविवार (कार्तिकसुदी ७) को नौशहरेमें डेरे हुए। बादशाह लिखता है—कि यहां स्वर्गवासी श्रीमानके आदेश से पत्थरका किला बनाया गया है और हमेशा कश्मीरके हाकिम की तरफसे कुछ सेना थानेके तौर पर रहती है।

चौकीहटी—चन्द्रवारको चौकीहटीमें सवारी उतरी। यहांके मकानोंको मुराद चेलेने यत्नसे सुधरवाया था। राजभवनमें सुन्दर चबूतरा बनाया था, जो दूसरे स्थानोंसे उत्तम था। बादशाने प्रसन्न होकर उसका मनसब बढ़ाया।

ठट्ठड़—१२ मंगलवार (कार्तिकसुदी ९) को ठट्ठडमें पडाव हुआ। बादशाह लिखता है—“मै पहाडों और घाटियोंको पारकर भारतकी समतल भूमिमें आया।

शिकार—ठट्ठड़, करछाक, और नकथालेमें शिकार घेरनेके लिये किरावल पहलेसे विदा होगये थे। बुध और वृहस्पतिवारको जीते जन्तु घेरेगये। शुक्रवारको बादशाहने ५६ पहाडी कचकार आदिका शिकार किया।

सारंगदेव—इसी दिन राजा सारंगदेवको जो बादशाहके समीपस्थ सेवकोंमेंसे था ८ सदीजात और ४०० सवारका मनसब मिला।

१६ शनिवार (कार्तिकसुदी १२) को बादशाह करछाककी ओर प्रयाण करके ५ कूचमें भट नदीके तटपर उपस्थित हुआ।

करछाक—२१ गुरुवार (अगहनबदी २) को करछाकमें हाके का शिकार हुआ परन्तु और बेरसे बहुत कम जानवर मिले। बादशाह प्रसन्न न हुआ।

जहांगीराबाद—२५ चन्द्रवार (अगहनवदी ७) को बादशाहने नकथालेमें शिकार खेला। वहांसे २ कूचमें जहांगीराबाद पहुंचा और शिकारगाहमें ठहरा। लिखता है—"युवराजावस्थामें यह भूमि मेरी शिकारगाह थी। यहां मैंने एक गांव अपने नाम(१) पर बसा कर थोडी सी इमारत बनाई थी और अपने पास रहनेवाले सिकंदर मईनको सौंपदी थी। सिंहासनासीन होनेके पीछे उसगांवको परगना बनाकर उसकी जागीरमें देदिया। वहां दौलतखानेके वास्ते एक इमारत, तलाव, तथा, मिनारा बनानेका हुक्म दिया। मुईनके मरने पर यह परगना इरादतखांको जागीरमें लगाया गया और इमारतका काम भी उसीको सौंपागया जो इन दिनोंमें अच्छी तरहसे पूरा होगया। तालाब बहुत चौडा बना। उसके बीचमें उत्तम जल महल हैं। सब मिलाकर डेढलाख रुपये इसमें लगे होंगे। सच यह है कि बादशाहोंकीसी शिकारगाह है। गुरुवार और शुक्रवारको वहां रहकर शिकार खेला। लाहौरके सूबेदार कासिमखांने उपस्थित होकर ५० मोहरें भेट कीं।"

मोमिनका बाग—वहांसे एक मंजिल पर मोमिन कबूतरबाज़के बागमें जो लाहौरके घाटपर था सवारी उतरी। यहां चनार और सर्वके सुन्दर और सीधे वृक्ष थे।

---

(१) इससे जाना जाता है जहांगीरकी उपाधि युवराजावस्थामें भी मिल चुकी थी — [illegible: "(?) …भीसे बादशाहने धारण करली थी।"]

सतरहवां वर्ष।

सन् १०३० हिजरी।

अगहन सुदी २ संवत् १६७७ ता० १६ नवम्बर सन् १६२० से अगहन सुदी २ संवत् १६७८ ता० ५ नवम्बर सन् १६२१ तक।

बादशाह लाहोरमें।

८ आजर चन्द्रवार ५ मुहर्रम १०३० (अगहनसुदी ६) को बादशाह मोमिनके बागसे इन्द्रगज हाथी पर सवार होकर रुपये लुटाता शहरको चला। तीन पहर पर २ घडी दिन आनेके मुहूर्त्त से दौलतखानेमें पहुंचकर उस नये राजभवनमें उतरा जो मामूरखां के प्रयत्नसे प्रस्तुत हुआ था। उसमें अच्छे अच्छे रहनेके स्थान और बैठकें बनी थीं। चित्रकारीकी बहार थी। बागोंमें अनेक प्रकारके फूल फूले हुए थे। ७ लाख रुपये इसमें लगे थे।

कांगड़ेकी फतह—इसी दिन कांगड़ेकी फतह होनेकी बधाई पहुंची। उसकी प्रसन्नतासे बादशाहने परमात्माका धन्यवाद करके विजयके बाजे बजवाये।

कांगडेका वृत्तान्त—बादशाह लिखता है—"कांगडा एक पुराना किला लाहोरसे उत्तर पहाडोंमें है जो दृढ़ता और दुर्गमतासे बहुत विख्यात है। इसके बनानेकी तारीख खुदाके सिवा और किसी को ज्ञात नहीं है। पंजाबके जमीन्दारोंका यह विश्वास है कि यह किला कभी किसी दूसरी कौमके हाथमें नहीं गया न किसी बाहर-वालेका उस पर अधिकार हुआ। खैर यह तो खुदाही जाने पर जबसे इसलामकी दुहाई फिरी है किसी बडेसे बडे बादशाहको इसपर जय प्राप्त नहीं हुई। सुलतान फीरोज स्वयं बड़े ठाटसे इसके जीतनेको चढा था और वर्षों तक घेरे भी रहा था। परन्तु जब देखा कि यह दुर्ग इतना दृढ़ है कि जबतक अन्दरवालोंके पास

लडाई और खाने पीनेकी सामग्री रहेगी हाथ नहीं आवेगा तो राजाके आने और नम्रता दिखाने परही सन्तोष करके घेरा उठा लिया। कहते हैं राजा दावत और नजर देनेके लिये बादशाहको अन्दर लेगया। सुलतानने सब किला देखकर राजासे कहा कि मुझ जैसे बादशाहको गढ़में लाना सावधानीसे दूर था मेरे साथ जो सेना है यदि वह तुझ पर चढ़ाई करे और किला ले ले तो तू क्या कर सकता है? राजाने अपने सेवकोंको संकेत किया तुरन्त सजे हुए शूरवीरोंकी सेना घातसे निकली और बादशाहको सलाम करने लगी। बादशाह उस भीडको देखकर घबराया कि कहीं दगा तो नहीं है। परन्तु राजाने आगे बढकर कहा कि सेवा और सुश्रूषाके सिवा मेरा और कोई मतलब नहीं है। पर जैसा आपने फरमाया मै सावधान रहता हूं। बादशाहने राजाकी प्रशंसाकी। राजा कई कूच तक बादशाहके साथ रहकर लौट आया। फिर जो कोई दिल्लीके सिंहासन पर बैठा उसीने कांगड़ा जीतनेको सेना भेजी परन्तु कुछ काम न बना। मेरे पूज्य पिताने भी एक बेर एक बहुत बडा कटक हुसैनकुलीखांके साथ, जिसे उत्तम सेवा करने से खानजहाका खिताब मिला था भेजा था। उसने इस किलेको घेराही था कि इब्राहीम मिरजाका उपद्रव उठखड़ा हुआ। वह कृतघ्न गुजरातसे भागकर पंजाबमें विग्रह करनेको गया। जिससे खानजहांको घेरा छोड कर उस उपद्रवके शांत करनेको आना पडा और कांगडेका लेना खटाईमें पड़गया। इसका खयाल सदैव उनके मनमें बना रहता था पर उसका कोई रूपक नहीं बनता था। जब खुदाने अपनी इनायतसे यह तख्त मुझे दिया तो मैंने लडाके वीरो सहित पंजाबके सूबेदार मुरतिजाखांको इस किलेको फतहके लिये भेजा। पर किला फतह होनेसे पहलेही वह चल बसा। तब राजा बासूके बेटे जोहरमल (सूरजमल) ने इसके लिये प्रतिज्ञाकी और मैंने उसे सेनापति करके भेजा। वह सेना भंग होगई। किला जीतनेमें देर होगई और वह अपने कियेको पाकर

नरकमें गया, जैसा पहले लिखा जाचुका है। तब खुर्रमने इस सेवाका भार लिया और अपने सेवक सुन्दरको दलबल सहित भेजा। बहुतसे बादशाही वीर भी उसके साथ हुए। १६ शव्वाल सन् १०२९ (आश्विनबदी २ संवत् १६७६) को यह सेना किलेके निकट पहुंची। उसने मोरचे लगाकर जाने आनेके रास्ते बन्द किये। जब किलेमें खाने पीनेकी सामग्री न रही तो भीतर वालोंने सूखा अन्न उबालकर नमकसे खाया और चार महीने पार किये। जब मरने लगे तो हारकर किला सौंप दिया। १ मुहर्रम १०३० (अगहन सुदी २ सवत् १६७७) को यह फतह जो दूसरे बादशाहोंको नसीब न हुई थी इसअपने बंदेको खुदाने दी। जिन लोगोंने इसमें जान लडाई थी उनके पद बढ़ाये गये।

१२(१) गुरुवार (अगहन सुदी ८) को बादशाह खुर्रमके नये बनाये भवनमें गया उसकी भेटमेंसे कुछ पदार्थ और २ हाथी लिये।

कांगडेके कर्मचारी—इसी दिन अबदुलअजीजखां नक्शबन्दी कांगडेकी फौजदारी पर और अलफखां क्यामखानी किलेदारी पर भेजागया। मुरतिजाखांका जमाई शेख फैजुल्लाह किले पर रहने के लिये अलफखांके साथ किया गया।

चन्द्रग्रहण—१८(२) बुधवार (अगहन सुदी १५) की रातको (३) चांदगहन था बादशाहने यथा योग्य दानपुण्य किया।

ईरानकादूत—इसी दिन ईरानके एलची जंबीलबेगने, जो खान आलमके साथ विदा हुआथा, और कई आवश्यक कामोंसे पीछे रहगया था, चौखट और जमीन चूमकर शाह अब्बासका प्रेमपत्र बादशाहके सामने रखा और १२ अब्बासी(४) नजर कीं। साथ ही

(१) मूलमें लेखक दोषसे ११ लिखी है।

(२) मूलमें लेखक दोषसे १३ शनिवार लिखा है।

(३) चन्द्रग्रहण पंचांगमें २८ विसवे लिखा है।

(४) यह ईरानके शाह अब्बासका सिक्का था।

उसने ४ सजे हुए घोड़े ३ बाज तवेगून, ५ खच्चर ५ ऊंट ९ धनुष और ९ खड्ग भेट किये। बादशाहने भारी खिलअत जीगा, जडाऊ तुर्रा, जडाऊ खांडा उसको दिया। विसालवेग और हाजी न्यामत का भी सलाम हुआ जो उसके साथ आये थे। बादशाह कासिमकी प्रार्थनासे उसका बाग देखने गया। बाग शहरसे बाहर था। सवारी में १०००० चरन न्योछावर किये। उसकी भेटमेंसे १ लाल १ हीरा और कुछ कपड़ा चुनलिया।

आगरेको पेशखीमा—२१ रविवार (१) (पौषवदी ३) की रात को पेशखीमा आगरे जाने के लिये निकाला गया।

ईरानकी सौगात—२६ गुरुवार (पौषबदी ९) को मामूली उत्सव हुआ। शाह ईरानकी भेजी हुई सौगात बादशाहकी नजरसे गुजरी।

राजारूपचन्द गुलेरी—गुलेरके राजारूपचन्दने कांगडेकी चढ़ाई में अच्छा काम दिया था। इसलिये बादशाहने दीवानोंको हुक्म फरमाया कि उसका आधा वतन (देश) तो उसके इनाममें गिनें और आधा जागीरकी तनखाहमें देवें।

दे महीना।

शहरयारकी सगाई—३ (पौषसुदी १) को एतमादुद्दौलाकी नवासी शहजादे शहरयारके लिये मांगी गई। बादशाहने एक लाख रुपयेकी साचिक (बरी) भेजी जिसके साथ बड़े बड़े अमीर उसके घर गये। उसने भी बड़ी मजलिस सजाई थी।

एतमादुद्दौलाकी जियाफत—एतमादुद्दौलाने अपनी हवेलीमें अच्छे और उत्तम नयेभवन बनाकर बादशाहकी जियाफतकी। बादशाह बेगमों सहित उसके घर गया। उसने खूब मजलिस सजाई थी नाना प्रकारकी भेट बादशाहको दिखाई। बादशाहने उसकी

(१) यहां मुसलमानी मतसे रातको रविवार माना गया है दिन को शनिवार और पंचांगके मतसे रातको भी शनिवार रविको २२ तारीख थी।

खातिरसे कुछ चीजें पसन्द करके लेलीं।

इसी दिन ५०००० रुपये जवीलवेगको इनायत हुए।

दक्षिणमें दंगा—जिन दिनोंमें बादशाह कशमीरकी बहार और शिकारके मजे लूट रहा था दक्षिणके कर्म्मचारियोंकी बराबर अर्जियां पहुंचती थीं कि श्रीमानकी सवारीको दक्षिणके दुनियादारोंने राजधानीसे दूर देखकर अपनी प्रतिज्ञा भंगकर दीहै और सीमासे आगे बढकर अहमदनगर तकका देश दबा बैठे हैं। उनका काम लूटना जलाना, खेती तथा घास विध्वंस करना है।

बादशाह लिखता है—पहले जब दक्षिणी देशोंके जीतने और उन दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये चढ़ाई हुई थी और खुर्रमने आगे चलनेवाले लशकरके साथ जाकर बुरहानपुरमें डेरा किया था तो इन धूर्त्तोंने कपटसे उसको अपना आश्रय दाता बनाकर बादशाही देश छोड दिये थे और बहुतसा द्रव्य दरबारमें भेजकर यह प्रतिज्ञा की थी कि फिर कभी अपनी सीमासे आगे पांव नहीं रखेंगे जैसा कि पहले लिखा जाचुका है। खुर्रमकी प्रार्थनासे सवारी मंडूके किलेमेंही ठहरी रही और उसीकी सुफारशसे उनका रोना गिड गिडाना सुनकर उन्हें क्षमा दीगई थी। पर वह अब दुष्टता और धृष्टतासे बचन भंगकरके अधीनतासे विमुख होगये तो मैंने फिर प्रबल सैन्य उनको दण्ड देनेके लिये उसी खुर्रमके आधिपत्यमें भेजनेका विचार किया। पर कांगडा जीतनेका भी काम उसीके ऊपर छोड़ा गया था जिसमें उसकी अच्छी सेना लगी हुई थी इसलिये कुछ दिनों तक इस मनोरथके पूर्ण करनेमें शिथिलता रही। इतने में उधरसे फिर लगातार अर्जियां पहुचीं कि गनीमने ६०००० सवार संग्रह करके बहुतसा बादशाही इलाका दबालिया है और जहां जहां थाने थे वह सब उठाकर मह्लकरमें आक्रमण किया है जहां ३ महीनेमे लडाई चलती है। अबतक ३ बडे युद्ध हुए हैं। उनमें बादशाही बन्दोंकी प्रबलता शत्रुओं पर रही। पर सेनामें किसी मार्गसे अन्न नहीं पहुचता था और वह लोग उसके आसपास

लूट मार करते थे, इससे अनाजका अकाल पड़गया और जानवर थकगये। तब लाचार घाट परसे बालापुरमें सेनाके लोग उतर आये। शत्रु भी बल पाकर बालापुर तक आगये और चोरी धाडे करने लगे। बादशाही बन्दे ६।७ हजार चुने हुए सवारोंसे उनके डेरों पर गये। वह ६०००० सवार थे। बहुत बडा संग्राम हुआ। उनकी छावनी लूटी गई। हमारी सेना बहुतोंको मार बांधकर कुशल पूर्वक लौट आई। वह लोग फिर इधर उधरसे उमडकर लड़ते हुए छावनी तक आपहुंचे। इसपर भी बादशाही बंदे ४ महीने तक बालापुरमें जमे रहे। फिर जब यहां भी अनाज की महंगी बहुत बढ़ गई तो कई कच्चे आदमी भागकर उनसे जामिले और हमेशा इसी तरह जाने लगे तो वहां रहनेमें भलाई न देखकर बुरहानपुर आगये। उन दुष्टोंने पीछा करके बुरहानपुर को भी घेर लिया और ६ महीने तक घेरे रहे। कई परगने बराड़ और खानदेशके भी दबा बैठे। प्रजा और दीनोंको जबरदस्ती लूटने लगे। सेना थकी हुई थी और चौपाये भी चकनाचूर होगये थे इस कारण शहरसे बाहर निकल कर उनका पूरा मुकाबिला न कर सकी। इससे उन दोगलोंका घमंड और भी बढ़गया। इतने हीमें सवारीका कूच राजधानीको हुआ और खुदाकी इनायतसे कांगड़ा भी फतह होगया।

खुर्रमकी फिर दच्छिणपर चढ़ाई—४भृगुवार (पौषसुदी २) को मैंने खुर्रमको खिलअत जड़ाऊ तलवार और हाथी देकर उधर बिदा किया। नूरजहां बेगमने भी एक हाथी दिया। मैंने हुक्म दिया कि दो करोड दामका इलाका दच्छिण जीतनेके पीछे जीते हुए प्रदेशोंमेंसे अपने इनाममें ले ले। ६५० मनसबदार १००० अहदी १००० रूमी बन्दूकची १००० तोपची प्यादे सिवा ३०००० सवारोंके जो उन प्रांतोंमें हैं तरह तोपखाने बहुतसे हाथी उसे दिये। एक करोड़ रुपये फौज खर्चके वास्ते उसे दिये। जिन बंदों की नोकरी बोली गई थी उनको यथायोग्य घोड़े हाथी और खिलअत दिये।

आगरेको कूच—उसी मुहूर्तमें बादशाहने भी आगरेको कूच किया। नौशहरेमें डेरा हुआ।

जगतसिंह—राना करनसिंहके बेटे जगतसिंहने अपने वतनसे आकर चौखट चूमनेका सौभाग्य प्राप्त किया।

राजा टोडरमलका तलाव—६ रविवार (पौष सुदी ४) को राजा टोडरमलके तलाव पर पड़ाव हुआ। बादशाहने ४ दिन तक यहां रहकर कई एक मनवसदारोंके मनसब बढाये जो दक्षिण को बिदा हुए थे।

हृदयनारायण हाडा—हृदयनारायण हाडेका मनसब ९ सदी ६०० सवारका होगया। मोतमिदखां इस लशकरका बख्शी और वाकिआनवीस नियत हुआ और उसे तोग मिला।

कमाऊंका राजा लक्ष्मीचन्द—कमाऊंके राजा लक्ष्मीचन्दके भेजे हुए बाज, जुर्रे और दूसरे शिकारी पक्षी बादशाहकी भेट हुए।

जगतसिंह—राणा करणसिंहका बेटा जगतसिंह दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर खासा घोडा पाकर बिदा हुआ।

राजा रूपचन्द—राजा रूपचन्द हाथी और घोडा पाकर अपनी जागीरको बिदा हुआ।

मुलतान—१२ (पौष सुदी ९) को खानजहां मुलतानकी सूबेदारी पर भेजा गया। बिदा होते समय बादशाहने नादिरी सहित खिलअत जडाऊ तलवार सजा हुआ खासा हाथी, हथनी, खदंग नाम खासा घोडा और दो बाज उसको दिये।

भवाल—बादशाहने अपने पुराने सेवक भवालको तोपखानेके मुशरिफका ओहदा और रायका खिताब इनायत किया।

गोविन्दवाल—१३ (पौष सुदी १०) को गोविन्दवालके पासकी नदी पर बादशाहके डेरे हुए और चार दिन मुकाम रहा।

सौर तुलादान—१७ (पौष सुदी १४) को चान्द्रमासीय वर्ष-गांठके उत्सवका तुलादान हुआ।

कन्दहार—कन्दहारकी सूबेदारी अबदुल अजीजखांको मिली

और बहादुरखांको जिसने आंखोंकी पीड़ासे दरबारमें आनेकी प्रार्थना की थी किला उसे सौंपकर चले आनेकी आज्ञा हुई।

नूरसराय—२१ (माघ बदी ४) को नूरसरायमें डेरे हुए। यहां नूरजहांके वकीलोंने यह बड़ी सराय एक विशाल बाग सहित बनाई थी। बेगमने जियाफतकी तय्यारी करके बहुत बड़ी मजलिस रचाई और भांति भांतिके उत्तम पदार्थ भेट किये। बादशाहने उसका मन रखनेको उसमेंसे कुछ चुन लिये और दिन भर मुकाम रखकर सूबे पंजाबके सचिव समुदायको आज्ञा की कि कन्दहारको पहले जो ६०००० रुपये भेजे गये हैं उनके अतिरिक्त दो लाख रुपये और किलेकी सामग्रीके लिये भेज दें।

कांगड़ा—कांगड़ेकी तलहटीमें कुछलोग उपद्रव करते थे। बादशाहने कासिमखांको नादिरी सहित खासा खिलअत हाथी घोड़ा और तलवार देकर उन्हें दण्ड देनेके लिये विदा किया। उसका मनसब भी बढ़ाकर दोहजारी जात और १५०० सवारोंका कर दिया।

राजा संग्राम—राजा संग्राम भी कासिमखांकी प्रार्थनासे घोड़ा सिरोपाव और हाथी पाकर कांगड़ेको विदा हुआ।

बहमन महीना।

सरहिन्द—१ गुरुवार (माघ बदी १४) को बादशाहने सरहिन्द के पास एक दिन ठहरकर बागकी शोभा देखी।

४ रविवार (माघ सुदी २) को ख्वाजा अबुलहसन दक्षिण जानेको विदा हुआ। नादिरी सहित खिलअत खासा, जमधर, मुरस्सा खास हाथी तोग और नक्कारा बादशाहने उसे दिया और मोतमिदखांको भी खिलअत और सुवर्णसाटिक जादर खासा घोड़ा देकर विदा किया।

मुस्तफाबाद—७ (माघ सुदी ५) को सरस्वती नदी पर मुकाम बादमें और दूसरे दिन अकबरपुरमें डेरे हुए। यहां बादशाह नावमें बैठकर जमनाके जलमार्गसे रवाने हुआ और पांच दूसरों दिनमें

पहुंचा। यहां मुकर्रबखांका वतन था इसलिये उसके वकीलोंने ८१ याकूत ४ हीरे और एक हजार गज मखमल पगपांवड़ेके वास्ते उसकी अरजी सहित भेट की और १०० ऊंट दानके लिये पेश किये जो बादशाहने गरीबोंको बटवा दिये।

दिल्ली—वहांसे ५ कूचमें बादशाह दिल्ली पहुंचा और एतमादरायके हाथ खासा फरजी शाह परवेजके वास्ते भेजकर एक महीने में लौट आनेकी आज्ञा की।

पालम—बादशाह २ दिन सलीमगढ़में रहकर २२(१) गुरुवार (फाल्गुण बदी ५) को शिकारके लिये परगने पालममें जाते हुए दिल्ली शहरसे गुजरा और हौज शमसी पर ठहरा। रास्तेमें चार हजार चरन अपने हाथसे न्यौछावर किये। २२ हथनी और हाथी जो इफ्तखारखांके बेटे अलहयारने बंगालेसे भेजे थे भेट हुए।

जुलकरनैन—जुलकरनैन (२) सांभरकी फौजदारी पर बिदा हुआ। वह सिकन्दर अरमनीका बेटा था जो अकबर बादशाह की सेवा करता था। उन्होंने अबदुलहई अरमनीकी बेटी जो अन्तःपुरकी टहलनी थी उसको दी थी। उससे २ लड़के हुए थे जिनमेंसे एक यह जुलकरनैन था। बादशाह लिखता है यह कुछ सीखने और काम करनेकी चेष्टा रखता था। मेरे राज्यके प्रधानोंने खालसे के नमकका काम उसको दिया था जिसको वह अच्छी तरहसे करता था। इन दिनों उस प्रांतकी फौजदारीके पद पर पहुंचा। हिन्दी रागोंका रसिया है। उसे इस विद्यामें अच्छा अभ्यास है। उसकी कविता भी अनेक बेर सुननेमें आई है और पसन्द हुई है।

सलीमगढ—बादशाह ४ दिनतक पालममें शिकार खेल कर फिर सलीमगढमें लौट आया।

इब्राहीमखांकी भेट—२८ (३) बुधवार (फाल्गुणसुदी ११) को

(१) मूलमें २३ भूलसे लिखी है।

(२) सांभरमें १ शिलालेख पर इसका नाम खुदा है।

(३) मूलमें भूलसे २९ लिखी है तुजुक जहांगीरी पृ० ३२४

१८ हाथी २ ख्वाजासरा एक गुलाम ४१ जंगी मुर्गे १२ गायें ७ भैंसे इब्राहीमखां फतह जंगके भेजी हुई भेट हुईं।

२८ (१) गुरुवार (फाल्गुण वदी १३) २५ रबीउलअव्वलको वजनकमरी अर्थात् चांद्रमासीय वर्ष गांठका उत्सव हुआ।

मेवातका फौजदार मीरमीरां वहांसे आकर शेख भव्वाकी जगह दिल्लीकी हुकूमत पर नियत हुआ।

ईरानके दूत—इसीदिन ईरानके दूत आकावेग, और मुहिब अलीने चौखट चूमी। शाहकी भेजी अबलक कलगी भेट हुई। कलगीका मूल्य जौहरियोंने पचास हजार रुपये आंका।

एक प्राचीन लाल—१२ टांकका एक लाल मिरजाशाहरुखके बेटे मिरजा उलगवेगके जवाहिरखानेसे सफवी बादशाहोंके हाथ आगया था। उसपर अमीर तैमूर, मिरजा शाहरुख और उलगवेग के नाम लिखे थे। बादशाह लिखता है—मेरे भाई शाह अब्बासने भी एक कोनेमें अपना नाम खुदवाया था और उसको जीगेमें बैठा कर सौगातके तौर पर मेरे लिये भेजा था। उसमें मेरे पूर्वजोंके नाम खुदे थे इसलिये मैंने अपने लिये मुबारक समझकर जरगर-खानेके दारोगा सईदायको हुक्म दिया कि दूसरे कोनेमें "जहांगीर शाह अकबर शाह सुत" और वर्त्तमान मिती खोद दे।

असफन्दार महीना।

१ शनिवार (फाल्गुण वदी १४) को बादशाह सलीमगढ़से चल कर हुमायूं बादशाहके मकबरेमें गया। वहां २००० चरण मुजावरोंको दिये। दो दिन नगरके निकट यमुनातट पर रहा। ५०००० रुपये, मीर विरका, मावरुन्नहरी (तूरानी) के हाथ अपनी पीढ़ियोंके शुभचिन्तक ख्वाजा मालक दहवन्दीके और ५००० अमीर तैमूरके रोजेके मुजावरोंके वास्ते भेजे। उससे फरमाया कि मछलीके चितकबरे दांतोंकी खोजमें रहना जहांसे मिले मोल ले लेना।

(१) मूलमें भूलसे ३० लिखा है।

वृन्दावन—बादशाह दिल्लीके पाससे नाव पर चढकर ६ कूचमें वृन्दावन पहुंचा। दूसरे दिन गोकुलमें उतरा। वहां लश्करखां हाकिम आगरा, राजा नथमल आदि कर्मचारी उपस्थित हुए।

नूरअफशां बाग—११ (फाल्गुण सुदी ९) को बादशाह नूरअफशां बागमें जो यमुनाके उस पार था पहुंचकर मुहूर्तके वास्ते ३ दिन ठहरा।

आगरेके किलेमें प्रवेश।

१४ (फाल्गुण सुदी १२) को मुहूर्त आने पर बादशाह सवारी करके किलेमें गया और राजभवनमें सुशोभित हुआ।

२ महीने १० दिनका सफर लाहोरसे आगरे तक ४९ कूच और २१ मुकामोंमें पूरा हुआ। कोई दिन जल और स्थलमें बिना शिकारके नहीं गया। ११४ हरन, ५१ मुर्गाबी, ४ करवानक, १० तीतर, २०० पोदने इस रास्तेमें शिकार हुए।

लश्करखां अच्छी सेवा करनेसे ४ हजारी जात २५०० सवारों के पदको पहुंचकर दक्षिणकी सेनाकी सहायता पर नियत हुआ।

जरगरखानेके दारोगा सईदायको बेबदलखांकी उपाधि मिली।

ईरानकी सौगात—४ घोड़े कुछ चांदीके पदार्थ और कपड़ेके थान जो शाह ईरानने भेजे थे इन दिनोंमें बादशाहको नजरसे गुजरे।

२० (चैत्र बदी ४) को गुरुवारका उत्सव रुस्तमबागमें हुआ एक लाख रुपये शाहजादे शहरयारको इनाममें मिले। कुछ अमीरोंके मनसब बढ़े। कई अमीरोंकी ओरसे भेट पूजा हुई।

२७ (चैत्र बदी ११) को गुरुवारका उत्सव नूरअफशां बागमें हुआ।

२८ शुक्रवार (चैत्र बदी १२) को बादशाह शिकारके वास्ते समूनगरमें जाकर रातको लौटा। ईरानकेदूत आकाबेग और मुहिबअलीने ७ इराकी घोड़े भेट किये। बादशाहने १०० तोलेकी एक नूरजहानी मोहर ईरानके वकील जंबीलबेगको इनायत की।

सालभरकी खैरात—इस साल बादशाहने तुलादानके खजानेसे इस प्रकार दान अपने सामने किया—

भूमि ८५००० बीघे	धान ३३२५ गोन
गांव ४	हल २
बाग १	रुपये २३२७
मुहर १	दरब ६२००
चरण ७८८०	चांदी सोना १५१२ तोले
दाम १००००	

हाथी—३८ हाथी जिनका मूल्य २४१००० रुपये हुआ था भेट होकर खासे हाथीखानेमें आये और ५१ हाथी बड़े बडे अमीरों और दूसरे बन्दोंको बख्शे गये।

सोलहवां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

चन्द्रवार २७ रबीउल आखिर सन् १०३० हिजरी (चैत्र बदी १४) को सूर्य्य मेषमें आया। सोलहवां वर्ष बादशाहके राज्याभिषेकको लगा। बादशाहने शुभघडी शुभमुहूर्तमें आगरेके राजसिंहासन पर विराजमान होकर शाहजादे शहरयारका मनसब ८ हजारी ४००० सवारका कर दिया। वह लिखताहै मेरे पूज्य पिताने पहले यही मनसब मेरे भाइयोंको दिया था।

इस दिन बाकरखांने अपनी सेना सजाकर दिखाई। बखशियोंने उस सेनाकी संख्या १००० सवार और २००० पैदल शुमार की। बादशाहने उसको २ हजारी १००० सवारके मनसब पर चढ़ाकर आगरेका फौजदार किया।

बुधवारको बादशाह बेगमों सहित नाव पर बैठकर नूरअफशां बागमें गया। यह बाग नूरजहांकी सरकारमें था इसलिये उसने दूसरे दिन गुरुवारके उत्सवकी बड़ी भारी मजलिस करके एक शानदार भेट पेशकी। बादशाहने एक लाख रुपयेके जवाहिर, जड़ाऊ पदार्थ और दिव्य वस्त्र उसमेंसे चुनकर लेलिये।

इन दिनों बादशाह नित्य शिकार खेलने समूगर जाता था और रातको चला आता था। यह स्थान शहरसे ४ कोस था।

बिहार—बिहारका सूबा मुकर्रिबखांसे लेकर शाह परवेजको दिया गया था इसलिये राजासारंगदेवके हाथ खासाखिलअत जड़ाऊ परतला जिसमें एक नीला और कई लाल याकूत लगे हुए थे शाहजादेके वास्ते भेजा गया। उसे यह भी हुक्म था कि शाहजादे को इलाहाबाससे बिहारको रवाने कर दे।

अजदुद्दौलाकी पेन्शन—अजदुद्दौला बहुत बूढ़ा होजानेसे सेना और जागीरका प्रबन्ध नहीं कर सकता था इस लिये बादशाहने उसका ४०००) का महीना करके कह दिया कि आगरे या लाहौर में जहां चाहे सुखपूर्वक रहे।

ईरानके वकीलोंकी भेंट—८ (चैत सुदी ७) को ईरानके दूत मुहिबअली और आकाबेगने २४ घोड़े २ खच्चर ३ ऊंट ७ ताजी कुत्ते २७थान जरीके अम्बरका एक सुगन्धित द्रव्य, दो जोड़े, कालीन और दो तकिये नमदेके भेंट किये। दो घोड़ियां बछेरों सहित जो शाहने उनके साथ भेजी थीं वह भेंट कीं।

आसफखांके घर जाना—गुरुवारको बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे बेगमों सहित उसके घर गया। उसने बड़ी सभा सजाकर बहुतसे अनोखे जवाहिर उत्तम वस्त्र और अमूल्य पदार्थ भेंट किये जिसमेंसे बादशाहने १३००००) की चीजें लेकर बाकी उसीको बख्श दीं।

विचित्र गोरखर—इन दिनोंमें बादशाहने अद्भुत गोरखर देखा जो काले और पीले रंगके समान था। यह दोनो रंग नाककी नोकसे पूंछके नीचे तक थे। कानकी लौसे खुर तक छोटी बड़ी काली धारियां यथास्थान अनुक्रमसे खिंची हुई थीं। आंखके आस-पास बहुतही सुन्दर गोल कुण्डल बना हुआ था। मानो विधाताने अपनी लेखनीकी चित्रकारीसे यह कौतुक रचकर संसारमें भेजा था जो बहुतही अपूर्व था। कुछ लोगोंको भ्रम था कि कहीं रंग तो

नहीं कर दिया। परन्तु बादशाहके निर्णय करनेसे निश्चय होगया कि विधाताने ऐसाही बनाया है। इसी हेतु शाह ईरानके वास्ते जानेवाली सौगातोंमें रखा गया।

मेष संक्रान्ति—गुरुवार (बैशाख बदी २) को मेष संक्रान्तिका उत्सव हुआ। बादशाह दो पहर एक घड़ी दिन बीते सिंहासन पर बैठा। यह उत्सव एतमादुद्दौलाकी प्रार्थनासे उसके घर पर हुआ। उसने बहुत बड़ी भेट सजाई थी जिसमें देशदेशान्तरके दिव्यद्रव्य थे। बादशाहने १३८०००) के पदार्थ उठा लिये।

२०० तोलेकी मुहर—इसी दिन बादशाहने २०० तोलेकी एक मुहर ईरानके एलची जम्बीलबेगको दी।

अद्भुत ख्वाजासरा—इन्ही दिनोंमें इब्राहीमखांने कई ख्वाजेसरा (क्लीव) बंगालेसे भेजे थे उनमें एक नपुंसक निकला। उसमें स्त्री और पुरुष दोनोके चिन्ह थे। इनके सिवा बंगालेकी दो नावें भी उसकी भेटमें थीं जिनके अलंकृत करनेमें १००००) खर्च किये थे।

इलाहाबास—शेख कासिम, मोहतशिमखांका खिताब और पांचहजारी मनसब पाकर इलाहाबासकी सूबेदारी पर नियत हुआ। बादशाहने दीवानोंको हुक्म दिया कि इसके इजाफे की जागीरकी तनखाह उन परगनोंमें लगावें जिनमें अबतक अमल नहीं हुआ है।

श्रीनगरका राजा श्यामसिंह—श्रीनगरके राजा श्यामसिंहको हाथी और घोडा मिला।

यूसुफखांकी अद्भुत मृत्यु—हुसैनखांका बेटा यूसुफखां दक्षिणमें अकस्मात् मर गया। बादशाह लिखता है—ऐसा सुना गया है कि इस मुद्दतमें वह अपनी जागीरमें रहता था और ऐसा मोटा हो गया था कि थोडेमें चलने फिरनेमें भी श्वास रुकने लगता था। जिस दिन खुर्रमकी सेवामें गया उस दिन आने जानेसे इसका दम घुटने लगा था। जिस समय उसको खिलअत दिया गया तो पहनने और तसलीम करनेमें थक गया। सारा शरीर कांपने लगा।

बड़े परिश्रम और कष्टसे तसलीम करके जैसे तैसे बाहर निकला और कनातके पासही गिरकर अचेत होगया। उसके नौकर पालकीमें डालकर लेगये। घर पहुंचतेही मर गया।

उर्दीबहिश्त महीना।

१ (बैशाख सुदी १) को बादशाहने खासा खंजर जंबीलवेग वकीलको दिया।

शहरयारका विवाह—४ (बैशाख सुदी ४) को शहरयारका विवाह हुआ। मेंहदीकी मजलिस मरयमजमानीके महलमें जुड़ी। बादशाह भी वेगमों सहित वहां चला गया था। शुक्रवारको ७ घड़ी रात जाने पर निकाह हुआ।

२०(१) मङ्गलवार (ज्येष्ठ बदी ६) को बादशाहने नूरअफशांबाग में शहरयारको जडाऊ चार कुब्ब, पगडी पटका एक इराकी घोड़ा सोनेकी जीनवाला; दूसरा तुर्की जिसकी जीन चित्रदार थी इनायत किया।

शाह शुजाकी बीमारी और जोतकरायको इनाम।

इन दिनोंमें शाह शुजाको माता निकलनेसे ऐसी पीडा हुई कि पानी भी गलेसे नहीं उतरता था जीनेकी आशा न रही थी। उसके बापके जन्मपत्रमें ऐसा योग पडा था कि इस वर्ष उसका लडका मर जावे, सब ज्योतिषी यही कहते थे कि वह न बचेगा। परन्तु जोत-कराय कहता था कि बचेगा। बादशाह लिखता है—"मैंने प्रमाण पूछा तो कहा—हजरतके जन्मपत्रमें लिखा है कि इस वर्षमें किसी प्रकारका क्लेश न हो और हजरतको उससे बहुत मोह है इसलिये उसको कुछ हानि न पहुंचनी चाहिये कोई और लडका भलेही मर जाय। ऐसाही हुआ। शुजा अच्छा होगया और दूसरा लडका जो शाहनवाजखांकी बेटीसे हुआ था बुरहानपुरमें मर गया। इसके सिवा और भी उसके बहुत हुक्म (फल) मिले है जो विचित्रतासे खाली नहीं। वह पहले प्रसंगोंमें लिखे जाचुके हैं। इस वास्ते मैंने

(१) मूलमें १९ लिखी है २० चाहिये।

उसे रुपयोंमें तुलवा दिया। वह तोलमें ६५०० रुपयोंके बराबर हुआ। वह उसे इनाम दिये गये।

हुरमुज और होशंग—हुरमुज और होशंग मिरजा हकीमके पोते थे और गवालियारके किलेमें कैद थे। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर आगरेमें रहनेका हुक्म दिया। उनके खर्चके लायक रोजाना भी मुकर्रर कर दिया।

भट्टाचार्य्य—बादशाह लिखता है—भट्टाचार्य्य नाम ब्राह्मण जो इस जातिके शिरोमणि विद्वानोंमेंसे है और बनारसमें पढने पढानेका काम करता है इन दिनों आकर मिला। सच यह है कि अकली और नकली (वेद और शास्त्रों) के रहस्य समझनेमें इसने खूब अभ्यास किया है। अपनी विद्यामें पूरा है।

बिजलीका गिरना—३० फरवरदीन (बैशाख बदी १४) को परगने जालन्धरके एक गांवमें तड़केही पूर्व दिशामें ऐसा भारी कोलाहल उठा कि जिसके भयसे गांववालोंके प्राण जाने लगे और उसी गडगडाहटमें ऊपरसे रोशनी जमीन पर गिरी। लोगोंको आकाशमें आग बरसानेका भ्रम हुआ। कुछ देर पीछे जब शान्ति हुई और लोगोंके दिल ठिकाने आये तो उन्होंने एक जल्दी चलनेवाला कासिद मुहम्मद सईद आमिलके पास दौडाया और उसको इस वारदातकी खबर भेजी। वह तुरन्त चढकर आया और देखा तो १०।१२ गज लम्बी चौडी जमीन ऐसी जल गई है कि घासका नाम न रहा था। वह जमीन अभी गर्मही थी। उसने खोदनेका हुक्म दिया। जितनी अधिक खोदी उतनीही अधिक गर्मी और तपत प्रगट होती गई। अन्तको लोहेका एक टुकडा मिला जो ऐसा गर्म था कि मानो अभी भट्टीमेंसे निकला है। वह उसको उठाकर अपने डेरे पर ले आया और एक मुहर लगी हुई थैलीके भीतर रखकर दरबारमें भेजा। बादशाहके सामने तौला गया। १६० तोले का हुआ। बादशाहने उस्ताद दाऊदको हुक्म दिया कि इससे एक तलवार एक खंजर और एक छुरी बना लावे। उसने आकर

अर्ज की कि यह हथौड़ेके नीचे नहीं ठहरता है बिखर जाता है। बादशाहने फरमाया कि दूसरा लोहा मिलाकर बनाओ। तीन हिस्से वह और एक हिस्से दूसरा लोहा मिलाकर दो तलवार एक छुरी और एक खंजर बना लाया। दूसरा लोहा मिलानेसे इसके जौहर भी निकल आये। यमानी तथा दक्षिणी असील तलवारोंके समान यह भी मुड़ जाती थीं और बल नहीं पड़ता था। बादशाहके सामने परीक्षा की गई तो असील तलवारोंके बराबर काट किया।

शाह परवेज—सारंगदेव शाह परवेजके पाससे उसकी अर्जी लेकर आया, जिसमें लिखा था कि यह दास आज्ञानुसार इलाहाबाससे बिहारको रवाने होगया है।

दक्षिणमें विजय—इसी दिन खुर्रमका नौकर अलीमुद्दीन फतह की अर्जी और एक जड़ाऊ शिस्त(१) भेट लेकर आया। बादशाह ने उसके हाथ खुर्रमके वास्ते खिलअत भेजा।

इमामकुलीखांकी मा—इमामकुलीखांकी माने पुराने सम्बन्धसे नूरजहांके नाम पत्र और कुछ पदार्थ उस देशके भेजे थे। बादशाह ने भी नूरजहांकी तरफसे पत्रोत्तर और यहांकी सौगात देकर अपनी युवराजावस्थाके सेवक ख्वाजा नसीरको तूरानमें भेजा।

जंगका बच्चा—इन दिनों नूरअफशां बागमें जंगका(२) ८ दिन का बच्चा दौलतखानेकी ८ गज ऊंची छतसे छलांग मारकर जमीन पर आरहा और खूब उछला कूदा। किसी प्रकारकी चोट या मोच उसके शरीरमें न आई।

खुरदाद महीना।

दक्षिणमें फतह—४ (ज्येष्ठ सुदी ५।६) को खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया। उसमें लिखा था कि जब बादशाही लश्कर उज्जैनमें पहुंचा तो जो लोग मांडूके किलेमें थे उन्होंने यह लिखकर भेजा कि शत्रुओंकी एक सेना नर्बदासे उतर आई है और किलेकी तलहटीके कई गांवोंको जलाकर लूट मार

(१) सीधा वस्त्र (२) एक पशु।

आया था जिसमें घोड़े भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी बादशाहने राजा कृष्णदास मुशरिफको हुक्म दिया कि सरकारी तबेलोंसे १५ दिनमें एक हजार घोडे तैयार करके उसको देदे।

रूपरत्न घोड़ा—रूपरत्न घोड़ा जो शाह ईराननें रूसकी लूटसे भेजा था बादशाहने खुर्रमके वास्ते भेजा।

किश्तवार—पहले बादशाहने किश्तवारके जमीन्दारोंका बलवा मिटानेके लिये दिलावरखांके बेटे जलालको भेजा था परन्तु उससे वह काम न बना तब इरादतखांको खुद जानेका हुक्म दिया वह वहां गया और उपद्रवको दूर तथा थानोंको दृढ़ करके कशमीरको चला आया। बादशाहने इस सेवाके पुरस्कारमें ५०० सवार उसके मनसब पर बढ़ा दिये। ऐसेही ख्वाजा अबुलहसनके मनसबपर १००० सवार दक्षिणमें अच्छा काम करनेसे बढ़ाये गये।

उडीसा—इब्राहीमखां फतहजङ्ग सूबेदार बङ्गालके भतीजे अहमदबेगको बादशाहने उडीसेकी सूबेदारी खांका खिताब झण्डा और नक्कारा देकर उसका मनसब दो हजारी ५०० सवारोंका करदिया।

काजी नसीर बुरहानपुरी—बादशाहने काजी नसीरकी विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर उसको बुरहानपुरसे बुलाया था और आदरपूर्वक उससे मिला था। लिखता है—"कम कोई किताब होगी जो उसने न पढी हो। लेकिन उसके जाहिरका बातिनसे बहुत कम मेल है। इसलिये उसकी संगतसे प्रसन्नता नहीं होसकती और उसे भी मैंने विरक्त पाया। इसलिये नौकरीका कष्ट न दिया और ५०००) देकर विदा किया।"

अमरदाद महीना।

अमीरोंके इजाफे—१ अमरदाद (सावन सुदी ७) को बाकरखां का मनसब दो हजारी १२०० सवारोंका होगया। दक्षिणी सेनामें उत्तम सेवा करनेवाले ३२ अमीरों और बादशाही बन्दोंके मनसब यथायोग्य बढाये गये।

कन्दहार—कन्दहारके हाकिम "अबदुलअजीजखां नकशबन्दी"

का मनसब खानजहांकी प्रार्थनासे ३ हजारी २००० सवारोंका होगया।

शहरेवर महीना।

जंबीलबेगको बख्शिश—१ शहरेवर (भादों सुदी ८) को बादशाहने ईरानके एलची जंबीलबेगको एक जडाऊ तलवार बख्शी और १६००० रुपयेकी जमाका एक गांव भी उसे आगरा प्रान्तमें दिया।

हकीम रुकना कुपात्रतासे सेवाके योग्य न समझा जाकर मौकूफ किया गया।

इन्साफ—बादशाहने यह सुनकर कि खानआलमके भतीजे होशंगने एक नाहकका.खून किया है उसे अपने सामने बुलाया और तहकीकात की। सबूत होजाने पर उसके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा दी। वह लिखता है—इन बातोंमें मैं शाहजादोंकी भी रिआयत नहींकरता, अमीरों और दूसरे बन्दोंकी तो बातही क्या।

आसफखांके घर जाना—इसी दिन बादशाह आसफखांकी प्रार्थनासे उसके घर गया। उसने एक सुन्दर हम्माम नया बनवाया था उसमें स्नान किया और उसकी भेटमेंसे कुछ पदार्थ लेआया।

कल्याण लुहार—बादशाहने सुना कि कल्याण नामका एक लुहार अपनी जातिकी किसी स्त्री पर आसक्त होकर उसके पीछे पीछे फिरता है पर वह विधवा होने पर भी उसे नहीं चाहती है। बादशाहने दोनोंको अपने सामने बुलाकर पूछताछ की और स्त्रीको उससे नाता करनेके लिये बहुतसा कहा सुना। पर उसने अङ्गीकार न किया। तब लुहारने कहा यदि मुझे यह प्रतीत होजावे कि आप इसको मुझे बख्श देंगे तो मैं किलेके शाहबुर्ज परसे कूद पडूं। बादशाहने कहा कि जो तेरा मोह सच्चा है तो इस घरकी छत परसे ही कूद, मैं उसे तुझको बख्श देता हूं। अभी यह बात पूरी भी न हुई थी कि वह बिजलीकी तरह दौडकर कूद पडा और गिरतेही उसकी आंख और मुंहसे खून बहने लगा—बादशाह

लिखता है—मैं इस दिल्लगीसे बहुत पछताया और उदास हुआ। आसफखांको हुक्म दिया कि इसको अपने घर लेजाकर इलाज करे परन्तु उसकी मृत्यु आपहुंची थी उसी व्यथासे मरगया।

बादशाहको दमेकी बीमारी—दशहरेके दिन कशमीरमें बादशाहको सांस घुटकर आता सा जान पड़ा था। वहां बहुत मेह बरसने और ठण्डी हवा होनेसे सांसकी नालीमें बाईं तरफ दिलके पास तंगी और गरानी पाई गई थी। होते होते बहुत बढ गई। पहले हकीम रुहुल्लहने गर्म दवाइयां दीं जिनसे कुछ कमी होगई परन्तु जब बादशाह उस घाटेसे उतरा तो फिर तकलीफ बढ़ गई। इस समय कुछ दिनतक बकरीका फिर ऊटनीका दूध पिया। परन्तु किसीसे कुछ फायदा न हुआ। फिर हकीम रुकनाने जिसे बादशाह कशमीरमें छोड़ आया था आकर गर्म और खुश्क दवाइयोंसे इलाज किया जिनसे उल्टी गरमी और खुश्की मगजमें चढ गई। बादशाह बहुत दुबला होगया रोग बहुत बढ गया। वह लिखता है—ऐसी हालतमें जबकि पत्थरका दिल भी मेरे ऊपर पिघलता था हकीम मिरजा मुहम्मदका बेटा कृतघ्न सदरा, जिसे मैंने सब हकीमों से बढाकर मसीहुज्जमां की पदवी दी थी और यह जानता था कि वह किसी दिन मेरे काम आवेगा, कुछ दवा दारू न करता था और मुझे उसी दुर्दशामें रखना चाहता था। मैं बहुत कुछ मेहरबानी जताकर उसे इलाज करनेको कहता था तो वह और भी क्रूर होकर अर्ज करता था कि मुझे अपनी विद्या और हिकमत पर इतना भरोसा नहीं है कि इलाज कर सकूं। ऐसेही हकीमुल्मुल्क का बेटा हकीम अबुलकासिम भी जो खानाजाद और पाला हुआ था अपनेको ऐसा उदास और चिन्तातुर दरसाता था कि देखनेसेही मन मलिन और दुःखित होजाता था, फिर इलाज कराना तो कहां रहा? लाचार मैंने सबको छोडकर बाहरी उपचारोंसे दिल उठा लिया और अपनी आत्माको परमात्माके समर्पण करदिया। प्यालेके नशेमें रोगको कुछ कमी होजाती थी इसलिये नाचाके अतिरिक्त

दिनमें भी प्याले लेने लगा। इस तरह दारू बहुत बढ़ गई। जब गर्मी आई तो उसका नुकसान भी मालूम होने लगा। तब नूरजहां बेगम जिसकी चेष्टा और अनुभव इन तबीबोंसे बढ़ा हुआ था प्रेमवश प्याले घटाने लगी। पहले भी हकीमोंका इलाज उसी की सलाहसे होता था। पर अब मैंने उसीकी कृपा पर सब काम छोड़ दिये। उसने धीरे धीरे शराब कम कराई। अनुचित चीजों और कुपथ्य खानोंसे परहेज कराया। आशा है कि ईश्वर स्वास्थ्य देगा।

सौरपक्षीय तुलादान—१८(१) रविवार २५ शव्वाल सन् १०३० (आश्विन बदी ११ संवत् १६७८) को बादशाहके सौरपक्षीय जन्म दिवसका उत्सव बड़े समारोहसे हुआ। पिछले वर्ष बादशाहने बहुत कष्ट उठाया था और इस वर्षके लगतेही आराम होगया था। उसके हर्षमें नूरजहांने प्रार्थना की कि मेरे सचिव इस उत्सवका सम्पादन करेंगे। बादशाह लिखता है—"वास्तवमें उसने ऐसी मजलिस सजाई कि देखनेवालोंको आश्चर्य होता था। जिस तिथि से नूरजहां बेगम मेरे निकाहमें आई है प्रत्येक सौम और सौर-पक्षीय तुलादानोंके उत्सव इस महत् राज्यकी विभूतिके योग्य सम्पादन करनेमें वह अपना सौभाग्य समझती है। इस उत्सवमें तो उसने कमाल करदिया। सभा सजानेमें अत्यन्त प्रयत्न किया। जिन निज सेवकोंने बीमारीमें रात दिन निरन्तर कष्ट सहकर सेवा की थी उनको यथायोग्य खिलअत जड़ाऊ परतले जड़ाऊ खंजर हाथी घोडे और रुपयोंसे भरे हुए थाल मिले। हकीमोंने कोई अच्छी सेवा न की थी और थोड़ीसी शान्ति होजाने परही जो दो तीन दिनसे अधिक नहीं रहती थी अपनी सुसेवा जताकर इनाम इकराम पाते रहते थे, तोभी,वहलोग इस आनन्दोत्सवमें उचित पारि-तोषिक नक़द रुपये और अमूल्य वस्तुएं पाकर अपनी मनोकामना को प्राप्त हुए। सभा विसर्जन होने पर रुपयों और रत्नोंसे भरे हुए

(१) तुजुक जहांगीरीमें भूलसे १२ शहरेवर चन्द्रवार लिखा है।

थाल न्यौछावर होकर मंगलमुखियों और मुहताजोंकी झोलियोंमें डाले गये।"

जोतकराय—जोतकराय जो आरोग्य मंगलकी बधाई दिया करता था मोहरों और रुपयोंमें तोला गया। ५०० मोहरें और ७०००) उसको इस प्रसंगसे इनाममें मिले।

भेट—उठते वक्त भेट जो सजी रखी थी बादशाहको दिखाई गई। जवाहिर और जड़ाऊ चीजोंमेंसे कुछ बादशाहने चुन लीं। इस उत्सव और इनाममें नूरजहां बेगमने दो लाख रुपये खर्च किये। भेट इससे अलग थी।

बादशाहका वजन—बादशाह लिखता है—"पिछले वर्षों जब मैं भला चंगा था तो तोलमें ३ मनसे कभी सेर दो सेर ज्यादा और कभी कम होता था। इस वर्ष बीमारीसे दुबला होकर दो मन२७ सेर उतरा।"

मह्हर महीना।

१ मह्हर(१) शनिवार (आश्विनसुदी१०) को कशमीरके हाकिम एतकादखांका मनसब चारहजारी २५०० सवारोंका होगया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहका मनसब चारहजारी ३००० सवारोंका होगया।

शाह परवेज—शाह परवेज बादशाहकी बीमारीके समाचार मिलने पर व्याकुल होकर बिना बुलायेही चल दिया था सो १४ (कार्तिक वदी ८) को शुभमुहूर्तमें उसने चौखट चूमी। बादशाह लिखता है—वह तीन बार तख्तके आसपास फिरा। मैं जितना कहता था, शपथ देता था और निषेध करता था उतनाही वह दीनता और अधीनता जताता था। निदान मैंने उसका हाथ पकड

(१) तुजुक पृष्ठ ३३५ में १ मह्हर गुरुवारको लिखी है। पर उस दिन तो २९ शहरेवर थी। जो शहरेवरका महीना २८ दिनका माना हो तो १ मह्हर गुरुवारको होसकती है नहीं तो पंचांगके हिसाबसे शनिको थी—यही हमने ऊपर लिखी है।

कर अपनी तरफ खेंचा और बड़े चावसे बगलमें लेकर बहुतसा प्यार किया।

खुर्रमको २० लाख रुपये—इन दिनों दक्षिणी सेनाकी समर-सामग्रीके लिये बीस लाख रुपयेका खजाना खुर्रमके पास अलह-दादखांके हाथ भेजा गया।

कयामखां—२८ (कार्तिक सुदी ८) को कयामखां किरावलबाशी (शिकारियोंका नायक) मरगया। बादशाहको उदासी हुई क्योंकि वह शिकारके कामोंमें चतुर और बादशाहका मनोगामी था।

नूरजहां बेगमकी माका मरना—२९ (कार्तिक सुदी ९) को नूरजहां बेगमकी माका देहान्त होगया। बादशाह लिखता है—"सुशील घरानेकी इस विशुद्ध प्रकृतिवाली बेगमकी क्या प्रशंसा की जाय। जो उत्तम गुण स्त्रियोंके आभूषण होते हैं वह सब इसमें थे। इसके समान संसारमें कोई स्त्रीरत्न नहीं देखा। मैं उसे अपनी मासे कम नहीं जानता। एतमादुद्दौलाको इससे जो प्रेम था वह किसी पतिको भी अपनी पत्नीसे न होगा। इससे अनुमान कर सकते हैं कि उस व्यथित बूढे पर क्या बीती होगी। ऐसेही नूर-जहां बेगमकी ममताका जो उसे उस अच्छी मातासे थी क्या लिखा जावे। आसफखां जैसा पुत्र अति बुद्धिमान होकर भी व्याकुलतासे गृहस्थवृत्तिको छोड़कर विरक्त हो बैठा। शान्तचित्त पिताने जब प्रियपुत्रकी यह दशा देखी तो उसे और शोक हुआ। उसने बेटेको बहुत समझाया पर वह कुछ न समझा। जिसदिन मैं मातमपुर्सीको गया था उस दिन उसकी उदासीका प्रारम्भही था। इसलिये मैंने प्यारसे थोडासा उपदेश किया अधिक आग्रह नहीं किया। उसे उसी दशामें छोड़दिया कि जब शोकका वेग कम होजायगा तो कुछ दिन पीछे उसके हृदयके घावको मेहरबानीके मरहमसे अच्छा करके फिर गृहस्थाश्रममें ले आऊंगा। एतमादुद्दौला मेरे लिहाजसे अपना दुःख दबानेमें बहुत साहस करता था। पर इस प्रकारकी प्रीतिमें

कहांतक साहस उसका साथ देसकता है।"

आबान महीना।

१ आबान (कार्तिक सुदी ११) को सरबुलन्दखां, जानसुपारखां और बाकीखांको नक्कारे इनायत हुए।

अबदुल्लहखां बिना छुट्टी दक्षिणी सेनासे अपनी जागीरमें चला आया था, इस अपराधमें बादशाहने दीवानोंको कहा कि उसको जागीर उतार लें और एतमादरायको हुक्म दिया कि सजावली(१) करके उसको उसी सूबेमें पहुंचा दे।

हकीम मसीहुज्जमांकी बिदा—हकीम मसीहुज्जमांकी करतूत पहले लिखी जाचुकी है। अब उसने और ढिठाई करके मक्के जाने की आज्ञा मांगी। बादशाहने जो खुदा पर भरोसा रखता था प्रसन्न मनसे उसको बिदा किया और उसके सबप्रकार सम्पत्तिसम्पन्न होने पर भी उसे २००००) खर्चके वास्ते दिये।

उत्तरको बादशाहकी यात्रा—१३ शनिवार(२) (अगहन बदी७) को बादशाह उत्तरके पहाड़ोंकी ओर गया। क्योंकि आगरेकी गर्म हवा उसे बरदाश्त न थी। विचार था कि यदि प्रान्तिक वायु सम-भाव हो तो गंगाके तट पर कोई भली भूमि देखकर एक नगर बसावें जो गर्मियोंमें रहनेके काम आवे। नहीं तो काश्मीरको कूच कर जावें।

मुजफ्फरखांको नक्कारा घोड़ा और हाथी देकर राजधानीकी रखवाली पर छोड़ा। उसके भतीजे मिरजा मुहम्मदको असदखां की पदवी और शहरकी तहलटीकी फौजदारी दीगई।

बाकरखां अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया।

---

(१) घेर कर।

(२) यहां भी दो दिनका अन्तर है मूलमें चन्द्रवार है।

अठारहवां वर्ष।

सन् १०३१ हिजरी।

अगहन सुदी ३ संवत् १६७८ तारीख ६ नवम्बर सन् १६२१ से कार्तिक सुदी १ संवत् १६७९ तारीख २५ अक्टोबर सन् १६२२ तक।

शाह परवेज बिहारको—२६ (अगहन सुदी ६) को बादशाहने मथुराके पाससे शाह परवेजको नादिरी सहित खासा सिरोपाव जड़ाऊ खञ्जर घोडा और हाथी देकर बिहारकी सूबेदारी पर बिदा किया जहां उसकी जागीर भी थी।

आजर महीना।

६ आजर (अगहन सुदी १५) को बादशाह दिल्ली पहुंचा और दो दिन सलीमगढ़में रहकर शिकारका मजा लेता रहा।

जादूराय खाता—इन दिनों बादशाहसे अर्ज हुई कि जादूराय खाता जो दक्षिणके श्रेष्ठ सरदारोंमेंसे था भाग्यबलसे बादशाही दलमें आकर नौकर होगया है। बादशाहने उसके वास्ते कृपापत्र खिलअत और जड़ाऊ खञ्जर नारायणदास राठौरके हाथ भेजा।

दे महीना।

१ दे ८ सफर (पौषसुदी १०) को बादशाहने कासिमखांके भाई मकसूदको हाशिमखांका और हाशिमबेगको जांनिसारखांका खिताब दिया।

७ (माघ वदी १) को बादशाह हरिद्वारमें गंगाके किनारे उतरा। लिखता है—"हरिद्वार हिन्दुओंके प्रतिष्ठित तीर्थोंमेंसे है। बहुतसे ब्राह्मण और सन्यासी यहां एकान्तवासी होकर परमेश्वरका पूजन अपनी धर्मनिष्ठाके अनुसार कर रहे थे। मैंने प्रत्येकको यथा-योग्य रुपये और पदार्थ दिये। इस पहाड़का जलवायु मेरे मनको

न भाया और न ऐसी कोई भूमिही देखी जहां रहता। इससे मैने जम्मू और कांगड़ेके पहाडको प्रस्थान किया।"

राजा भावसिंहका देहान्त—इन्हीं दिनोंमें बादशाहसे अर्ज हुई कि राजा भावसिंह दक्षिणके सूबेमें मर गया। बादशाह लिखता है—"अधिक मद्य पीनेसे बहुत दुर्बल होगया था। अकस्मात् मूर्च्छा आई। हकीमोंने बहुत उपाय किये उसके मस्तक पर डाम भी दिये परन्तु होश न आया। एक रात एक दिन संज्ञाहीन पड़ा रहा। दूसरे दिन शान्त होगया। दो स्त्रियां और ८ लौंडियां उसकी प्रेमाग्निमें जल गई। उसका बडा भाई जगतसिंह और भतीजा महासिंह दोनो मद्यपानमें अपने प्राण खोचुके थे। तो भी इसने उनसे कुछ शिक्षा न लेकर अपनी मीठी जान इस कड़वे पानी में डबोई। बहुत सुन्दर सुशील और सजीला था। मेरी युवराजावस्थामें सेवाको प्राप्त होकर मेरे प्रतापसे पांचहजारीके पदको पहुंचा था। उसके कोई पुत्र न था इसलिये मैने उसके बड़ेभाईके पोते(१) को बालक होनेपर भी राजाकी पदवी दोहजारी जात और १००० सवारोंका मनसब इनायत करके आमेरका परगना जो इन लोगोंका वतन है यथावत उसकी जागीरमें रहने दिया जिससे उसकी सेना बिखरने न पावे।"

आलूतवा—(८ माघ बदी २) को बादशाहका मुकाम सराय आलूतवामें हुआ। बादशाहने पली मुर्गाबीका मांस खाना तो उसे कीडे खाते हुए देखकर अजमेरमें छोड दिया था, शिकारी मुर्गाबी का मांस खाना यहां छोडा। क्योंकि उसके पेटसे भी वैसेही कीडे निकले थे। बादशाह जिस पशु पक्षीका शिकार करता था उसका पेट भी अपने सामने चिरवाकर पोटा देखता था। यदि उसमें कोई वस्तु ऐसी निकल आती कि जिससे उसको घृणा होती थी तो उस का मांस न खाता था।

---

(१) जयसिंह, महासिंहका बेटा।

उकाबका मांस—खान आलमने कहा कि सफेद उकाबका मांस बहुत स्वादु और हलका होता है। बादशाहने अपने सामने मंगा कर साफ़ कराया तो उसके पोटेमेंसे भी १० कीड़े निकाले। इससे उसे घृणा होगई।

सरहिन्द—२१ (माघ सुदी १) को बादशाह सरहिन्दके बागमें पहुंचकर दो दिन तक यहां विहार करता रहा।

ख़्वाजा अबुलहसन दक्षिणसे आगया।

बहमन-महीना।

इलाहाबास—१ बहमन (माघ सुदी ८) को नूरसरायमें सवारी उतरी। खान आलम घोडा सिरोपाव और जड़ाऊ तलवार पाकर इलाहाबासकी सूबेदारी पर बिदा हुआ।

व्यास नदी—गुरुवार(१) को बादशाह व्यास नदीके तट पर पहुंचा। कासिमखां लाहोरसे और उसका भाई हाशिमखां कांगड़े से पहाड़ी जमींदारोंको लेकर उपस्थित हुआ।

बलवाडेका जमींदार बासू—बलवाड़ेके जमींदार बासूने एक पच्ची भेट किया जिसको पहाड़ी लोग जानवहन कहते हैं। बासूने अर्ज की कि यह जानवर बर्फके पहाडमें रहता है। बादशाह लिखता है—चकोरोंके दड़बेमें रखकर उससे बच्चे लिये गये। उसका मांस अनेकबार खाया गया। इसके मांसकी चकोरके मांससे कुछ बराबरी नहीं है। उसका मांस स्वादु है।

फूलपकार—बादशाह लिखता है,—जो जानवर इन पहाडोंमें देखे गये उनमें एक फूलपकार है जिसको कशमीरी सूतलू कहते हैं। यह मोरनीसे छोटा होता है। पीठ पूंछ और दोनो भुजा कलौंस लिये हुए (जैसे चरजके पंख होते हैं) और उनसे सफेद तिल पेट छातीके आगे तक काला और सफेद छींटे, किसी किसीके लाल छींटे भी होते हैं। भुजाओंके पंख सुर्ख अंगारा, खूब चमकता हुआ, चोंचसे गुद्दीके पीछे तक भी काला भंवर, माथे पर दो सींग,

(१) इस दिन ७ बहमन (माघ सुदी १५) थी।

कान फीरोजी रंगके, आंख और मुंहके आसपास लाल चमडा, गलेके नीचे दो हथेलियोंके बराबर गोल चमडा जिसमें एक हथेली भर तो बनफशाके रंगका (बैंगनी) और बीचमें फीरोजी रंगमें छींटे पडेहुए। उसके गिर्द फीरोजी रंगका कुण्डल खिंचा हुआ जिसमें ८ कंगूरे। उस पर शफतालूके रङ्गका घेरा, फिर गरदन पर फीरोजी लकिरें और पांव भी लाल, जीता तोला गया तो १३९ तोलेका हुआ।"

मुर्ग जरींन—दूसरा मुर्ग जरींन है जिसको लाहोरके लोग शन कहते हैं और कश्मीरी पोट। उसका रंग मोरकी छातीकासा सिर पर बाल। पूंछ चार पांच उंगलकी पीली मोरके बिचले परके समान डील काजके बराबर, परन्तु काजकी गर्दन लम्बी और वेडौल इसकी छोटी और सुडौल—मेरे भाई शाह अब्बासने मुर्ग जरींन मांगा था मैंने पकड़वाकर कईएक उसके वकीलके हाथ भेजे।"

चन्द्रतुलादान—चन्द्रवार(१) (फाल्गुण बदी ५) को चन्द्रतुलादान का उत्सव था जिसमें नूरजहां बेगमने बड़े, बड़े अमीरों और पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे ४५ को खिलअत दिये।

वहलोन—१४ (फाल्गुण बदी ८) को सीतामहल प्रान्तके गांव वहलोनमें लशकर उतरा। बादशाहके मनमें कांगडा देखनेकी इच्छा सदासे थी इसलिये बडे उर्दूको यहां छोड़कर निज पारिषदों और सेवकों सहित किला देखने गया। एतमादुद्दौला बीमार था उसको उर्दूमें छोड गया।

एतमादुद्दौलाकी मृत्यु—दूसरे दिन एतमादुद्दौलाके मरणप्राय होजानेकी खबर पहुंची। बादशाह लिखता है—मैं नूरजहांकी घबराहट और उसके मोहमें विवश होकर उर्दूमें लौट आया। तीसरे पहर उसे देखनेको गया। वह दम तोड रहा था कभी बेहोश होजाता था और कभी होशमें आजाता था नूरजहांने मेरी तरफ इशारा किया और कहा कि पहचानते हो? उसने ऐसे वक्त में अनवरीकी यह कविता पढी—

---

(१) इस दिन १० बहमन थी।

"जो माके पेटसे जन्मा हुआ अन्धा भी आवे तो वह भी उसके
जगत प्रकाशक ललाटमें बड़प्पनके चिन्ह देखले।"

मै दो घडी तक उसके सिरहाने बैठा रहा जब कभी होशमें आता था तो जो कुछ कहता था समझबूझके साथ कहता था १७ (फाल्गुण बदी ११) को ३ घड़ी रात गये परलोकको सिधारा। मै क्या कहूं कि इस घटनासे मुझ पर क्या बीती। वह बुद्धिमान मन्त्री भी था और मेहरबान मित्र भी।

ऐसे बड़े राज्यका भार उसके कंधे पर था और मनुष्य मात्रसे असम्भव है कि राज्यका अधिकार पाकर सबहीको अपनेसे राजी रख सके तोभी कोई आदमी अपने कामके लिये एतमादुद्दौलाके पास जाकर नाराज नहीं लौटा। वह स्वामीके हितका भी ध्यान रखता था और काम वालोंको राजी और आशावान भी कर देता था। सच तो यह है कि यह हतखण्डा उसीको आता था। जिस दिनसे उसका जोडा* बिछड़ा उसने आपा नहीं सम्हाला। दिन दिन घुला चला जाता था प्रत्यक्षमें राज्यके काम परिश्रम पूर्वक करता था परन्तु अन्तःकरणमें विरहकी आगसे जलता था निदान ३ महीने २० दिन पीछे मर गया।"

दूसरे दिन मै उसके बेटों और सम्बन्धियोंके पास मातमपुर्सीको गया। उनमेंसे ४१ और उनके आश्रितोंमेंसे १२ को सिरोपाव देकर उनको मातमी वेष उतार आया।

कांगड़ेके किलेकी कूच—दूसरे दिन बादशाह कांगडेको कूच करके ४ मुकामोंमें बानगंगा पहुंचा। किलेदार अलिफखां और शेख फैजुल्लह चौखट चूमनेको आये।

चम्बेका राजा—उसी स्थानपर चम्बेके राजाकी भेट भी पहुंची। बादशाह लिखता है—इसका मुल्क कांगडेसे २५ कोस दूर है। इन पहाडोंमें उससे अच्छा जमींदार और नहीं है। इस मुल्कके सब जमीन्दारोंके भागनेकी जगह उसका मुल्क है जिसमें विकट

---

*नूरजहांकी मा मरी।

घाटियां बहुत हैं। उसने अबतक किसी बादशाहकी अधीनता नहीं की थी और न भेट भेजी थी। उसके भाईने भी सेवामें उपस्थित होनेका सम्मान पाकर उसकी ओरसे भाव और भक्ति प्रगट की। वह कुछ शहरी और माकूल देखनेमें आया। उस पर बहुत तरह की कृपाएं की गईं।

किलेमें प्रवेश—बादशाह लिखता है—२४ (फाल्गुणसुदी ३) को मैं किला देखने गया और हुक्म दिया कि काजी, मीरअदल और मौलवी साथ रहकर मुसलमानीधर्मकी रीति पूरी करें। एक कोस चलकर किले पर पहुंचा। बांग, नमाज, खुतबा और गोवध आदि जो किला बसनेसे आजतक नहीं हुए थे वह सब मैंने अपने सामने कराये और खुदाका शुक्र किया क्योंकि किसी बादशाहको ऐसी श्रद्धा नहीं हुई थी। वहां एक बड़ी मसजिद बनानेका हुक्म दिया।

कांगड़ेकी कथा—बादशाह लिखता है—"कांगडेका किला एक बडे ऊंचे पहाड़ पर बना है, और ऐसा मजबूत है कि यहां अनाज और किलेदारीकी सामग्री हो तो कुछ जोर नहीं पहुंच सकता और उसके लेनेका कोई उपाय नहीं लग सकता। कहीं कहीं मोरचे लगानेके भी स्थान हैं और तोपें बन्दूकें भी यहां पहुंच सकती हैं किन्तु किलेवालोंका कुछ नहीं बिगड़ सकता। वह दूसरी जगह जाकर बच सकते हैं। इस किलेमें २३ बुरजें और ७ दरवाजे हैं। भीतरका गिर्दाव एक कोस १५ डोरीका है लम्बाई पाव कोस दो डोरी, चौडाई २२ डोरीसे ज्यादा और १५ से कम नहीं। ऊंचाई ११४ गज है। किलेमें दो कुण्ड हैं। दोनो दो दो डोरी लम्बे और डेढ डेढ डोरी (जरीब) चौडे हैं।

भवन—किला देखकर मैं दुर्गाके मन्दिरमें गया जो भवन कहलाता है एक दुनिया गुमराहीके जंगलमें भटकी हुई है। काफिरों के सिवा जिनका धर्मही मूर्तिपूजन है झुण्डके झुण्ड मुसलमान भी दूर दूरसे भेट लेकर आते हैं और इस काले पत्थरको पूजते हैं। शायद मन्दिरके पास गन्धककी खान है गर्मी और तपतसे ज्वाला

आगकी लौ उठा करती है। उसका ज्वालामुखी नाम है। उसे मूर्तिका चमत्कार बताते हैं। हिन्दुओंने अपना भाव सिद्ध करके साधारण लोगोंको बहकाया। हिन्दू कहते हैं—जब महादेवकी स्त्रीका देहान्त हुआ तो महादेव मोहसे उसके शरीरको कंधे पर उठाये हुए जगतमें फिरते रहे। शरीर गल जानेसे उसके अंग जहांतहां टूटकर गिरते थे। जहां जैसा अंग गिरा उस स्थानकी वैसी ही प्रतिष्ठा हुई। छाती दूसरे अंगोंसे उत्तम है, वह यहां गिरी थी। इस हेतु यह स्थान दूसरे स्थानोंसे अधिक पुनीत माना गयाहै।

कुछ यों कहते हैं कि यह पत्थर जो अब काफिरोंका पूज्य है वह पत्थर नहीं है जो आदिमें था। उसे मुसलमानोंकी एक सेना ने दरियाकी गहराईमें इस तौरसे डाल दिया कि फिर कोई उसका पता न पासका और बहुत वर्षों तक 'कुफ्र'का यह कोलाहल थम गया था। फिर एक धूर्त ब्राह्मणने अपनी दुकान जमानेके लिये एक पत्थर किसी जगह छिपा दिया और उस समयके राजाके पास आकर कहा कि मैंने दुर्गाको स्वप्नमें देखा है जो मुझसे कहती थीं कि मुझे अमुक जगह डाल गये हैं शीघ्र निकलवा लो। राजाने मूर्खता और भेटके लालचसे ब्राह्मणकी बात मानकर कुछ लोग उस के साथ भेजे और उस पत्थरको मंगवाकर बड़ेआदरसे यहां रखा है। यह नये सिरसे कुफ्र और गुमराहीकी दुकान जमाई गई है। आगे खुदा जाने क्या सच है।

मदारकी पहाडी—मन्दिरसे मैं उस घाटीके देखनेको गया जो मदारकी पहाडीके नामसे विख्यात है। जल वायु हरियाली और स्थानीय शोभाके प्रसगसे बहुत उत्तम जगह है। एक झालरा भी वहां है जिसमें पहाडके ऊपरसे पानी गिरता है। मैंने हुक्म दिया कि यहां कोई अच्छी इमारत बनावें।"

कांगड़ेसे लौटना—२५ (फाल्गुण सुदी ४) को बादशाह किले से लौटा। अलिफखां और फैजुल्लहको हाथी और घोडे देकर किले की रखवाली पर विदा किया।

नूरपुर—दूसरे दिन नूरपुरमें लशकर उतरा। बादशाहने यह सुन कर कि यहां जंगली मुर्गे बहुत हैं दूसरे दिन मुकाम करदिया और शिकार खेलने गया। ४ जंगली मुर्गे शिकार हुए। इस जानवरका शिकार अबतक नहीं किया था। बादशाह लिखता है—"रूप रंग और अंगमें तो पले मुर्गे जैसाही है पर विशेषता यह है कि यदि उसे पांव पकड़कर औंधा लटका लेजावें तो चुप चलाजाता है और घरेलू मुर्गा चिल्लाता है। घरेलू मुर्गेको जबतक गर्म पानीमें न डबो लेवें उसके पर सुगमतासे उखाड़े नहीं जाते। पर इस जंगलीके पर, तीतर और पोदनेके परोंके समान सूखेही उखाड़लिये जासकते हैं। मैंने उसका मांस पकवाया और कबाब बनवाये तो बदमजा निकला। जो जितनापुराना था वह उतना ही मजेमें बुरा था। जवान कुछ चिकना था पर वह भी बदमजा। यह पक्षी एक तीरके टप्पेसे ज्यादा नहीं उड सकता। इनमें मुर्गा तो बहुधा लाल होता है और मुर्गियांकाली तथा पीली—यह नूरपुरके इस जंगलमें बहुत है।

नूरपुर—नूरपुरका पुराना नाम धमरी था। जब राजा वासूने पत्थरका किला मकान और बाग बनाया तो इसको मेरे नाम पर नूरपुर कहने लगे। ३००००) इस इमारतमें लगे होंगे। हिन्दू अपने सलीकेसे कैसीही इमारत बनावें और कितनीही उत्तमता दिखावें दिलनशीन नहीं होती। यह जगह उत्तम और मनोरम थी इसलिये मैंने हुक्म दिया कि एक लाख रुपये सरकारी खजानेसे इसके लिये लेलें और यहां एक अच्छा महल बनावें।

मौनी—"इन दिनोंमें अर्ज हुई कि इस प्रान्तमें एक मौनी सन्यासी रहता है जिसने सब इच्छाएं त्यागदी है। मैने हुक्म दिया कि उसको मेरे सामने लाओ। मै उसे देखूंगा। हिन्दुओंके मुनि तपस्वी सर्वनाशी अर्थात् सर्वत्यागी कहलाते हैं। सर्वनाशीसे सन्यासी हुआ। सर्वनाशी कई प्रकारके होते हैं—उनमेंसे एक मौनी है जो अपना अधिकार छोडकर परवश होजाते हैं। चुप रहते हैं। यदि दस दिन रात एक जगह खडे होजावें तो आगे या पीछे पांव न

धरें। सारांश यह कि अपनी इच्छासे कुछ नहीं करते पत्थरसे बने रहते है। मेरे सामने लाया गया तो मैंने उसमें अद्भुत दृढता देखी। विचार हुआ कि शायद नशेमें उसकी कुछ बात प्रगट हो। इससे दोआतशा शराबके कई प्याले पिलाये पर वह हिला तक नहीं। उसे मुर्दोंकी भांति उठा लेगये। खुदाने बड़ी इनायत की कि वह मरा नहीं। वह अपूर्व स्थिरता रखता है।

अस्फन्दार महीना।

६ अस्फन्दार (फाल्गुण सुदी १०) को बादशाहने एतमादुद्दौलाका लशकर और ठाठबाठ सब नूरजहां बेगमको देदिया और यह हुक्म किया कि बादशाही नौबतके पीछे उसकी नौबत बजा करे।

कसहोना—४ (फाल्गुण सुदी १२) को परगने कसहोनेमें मुकाम हुआ। ख्वाजा अबुलहसनको कुल दीवानीका काम मिला।

खुसरोकी मृत्यु—खुर्रमकी अर्जी पहुंची। उसमें लिखा था कि ८ (चैत्र बदी २) को खुसरो बायगोलेकी व्यथासे मर गया।

राजा कृष्णदास—राजा कृष्णदासका मनसब बढ़कर दो हजारी जात ५०० सवारोंका होगया।

२४ (चैत्र सुदी ३ संवत् १६७९) को बादशाह करछाककी शिकारगाहमें शिकार खेलने गया। वहां किरावलों और यसावलों ने पहलेसे जाकर जानवरोंको घेर लिया था १२४ पहाडी कलकचार और चिकारे शिकार हुए।

जैनखांका बेटा जफरखां मर गया।

१७ वां नौरोज।

८(१) जमादिउलअव्वल चन्द्रवारको रात (चैत्र सुदी ८) को एक पहर पांच घडी बीते सूर्य्य मेष राशि पर आया। बादशाहके राज्याभिषेकका १६वां वर्ष उतरकर १७ वां लगा। इस दिन बाद-

(१) तुजुकमें तारीख भूलसे रह गई है इकबालनामेमें ८ है वही हमने ऊपर लिख दी है।

शाहने आसफखांका मनसब ६ हजारी ६००० सवारका कर दिया। कासिमखांको घोड़ा हाथी और सिरोपाव देकर पञ्जाबकी सूबेदारी पर बिदा किया।

ईरानके एलची जंबीलबेगको हुक्म हुआ कि सवारीके कश्मीरसे लौटने तक लाहोरमें सुखपूर्वक रहे।

शाह ईरानका कन्दहार लेनेका विचार।

इन दिनों सुना गया कि शाह ईरानने खुरासानसे कन्दहार लेने के उद्योगमें प्रस्थान किया है। बादशाहको यह विश्वास न होता था कि शाह इतना पुराना सम्बन्ध छोड़कर ऐसा ओछापन करेगा और इतना बड़ा बादशाह होकर मुझ छोटे सेवक पर जिसके पास तीन चार सौ से अधिक सेना कन्दहारमें न थी स्वयं चढ़ आवेगा। तो भी दूरअन्देशीसे अहदियोंके बखशीने जैनुलआदिनीको कृपापत्र देकर खुर्रमके पास भेजा और लिखा कि उस सूबेकी सेना जंगी हाथियों और तरल तोपखानों सहित तुरन्त सेवामें उपस्थित होवे। यदि खबर सच हो तो उसे बडी सेना और खजाना देकर भेजा जायगा कि वह जाकर शाह ईरानको सन्धिभङ्ग और अकृतज्ञताका मजा चखावे।

हसन अब्दाल—८ फरवरदीन (बैशाखबदी२) को हसन अब्दाल के झरने पर बादशाहके डेरे हुए।

१२ शुक्रवार (बैशाख बदी ६) को महाबतखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी। १००० मोहर और दस हजार रुपये न्यौछावर किये।

ख्वाजा अबुलहसनने अपनी सेना सजाकर हाजिरी दी। २०५० सवार अच्छे घोडों सहित लिखे गये जिनमें ४०० सवार बर्कन्दाज (बन्दूकची) थे।

वहीं बादशाहने हाकेका शिकार करने कबकार वगैरह ३३ जन्तु बन्दूकसे मारे।

हकीम मेमिना महावतखांके वसीलेसे सेवामें उपस्थित होकर इलाज करने लगा।

१९ (वैशाख वदी १३) को पगलीमें डेरे लगे। मेष संक्रान्ति का उत्सव हुआ। महावतखांको हाथी घोड़ा सिरोपाव और काबुल जानेका आदेश मिला।

एतबारखां पुराना सेवक था और बूढा होगया था। बादशाह ने उसको ५ हजारी ४००० सवारका मनसब देकर आगरेकी सूबेदारी किले और खजानोंकी रखवाली पर नियत किया और हाथी घोड़ा तथा सिरोपाव देकर आगरे भेजा।

२९ (वैशाख सुदी ७) को कंवार घाटीमें इरादतखांने कश्मीर से आकर चौखट चूमी।

उर्दी बहिश्त।

बादशाह कश्मीरमें—२ (वैशाख सुदी १२) को बादशाह काश्मीरमें पहुचा।

फौजदारी रसम माफ—बादशाहने रैयत और सिपाहीके सुख के लिये फौजदारीका कर माफ करके हुक्म दिया कि राजभरमें फौजदारीके वास्ते किसीको कुछ खेद न पहुंचावें।

१३ (ज्येष्ठ वदी ८) को बादशाहने हकीमों और विशेषकरके हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बायें हाथकी फस्द खुलवाई। मुकर्रिबखांको सिरोपाव और हकीम मोमिनाको १०००० दरब इनाम मिले।

अबदुल्लहखांका मनसब खुर्रमकी प्रार्थनासे ६ हजारी होगया और नक्कारा भी मिला।

बहादुरखां उजबकने कन्दहारसे आकर १०० मोहरें नजर और ४०००) रुपये न्यौछावर किये।

खुरदाद।

१ (ज्येष्ठ सुदी १२—१३) को बादशाहने दक्षिण सेनाके कई अमीरोंके मनसब बढाये। राजा जगतसिंह और हिम्मतखांको नक्कारे दिये।

तीर महीना।

२ (द्वितीय आषाढ बदी १) सैयद बायजीदको मुस्तफाखांका खिताब और झंडा इनायत हुआ।

कन्दहार—तहव्वुरखां शाह परवेजके बुलानेको गया। कुछ दिन पहले कन्दहारके कर्मचारियोंकी अर्जी शाह ईरानके कन्दहार लेनेके विचारमें पहुंची थी। बादशाह पिछले और वर्त्तमान बरताव से इस बातको सच नहीं समझता था। अब खानजहांकी अर्जी आई कि शाह अब्बासने ईराक और खुरासानकी सेनाओंके साथ आकर कन्दहारके किलेको घेर लिया है। बादशाह लिखता है— मैंने हुक्म दिया कि कशमीरसे निकलनेका मुहूर्त्त नियत करें। ख्वाजा अबुलहसन दीवान और सादिकखां बखशी पहलेसे लाहोर को जावें और शाहजादोंके दक्षिण गुजरात बंगाला तथा बिहारके लशकरों सहित पहुंचने और जो बड़े बड़े अमीर सवारीमें हैं उनके आने तक, और लोग, जो अपनी जागीरोंसे पहुंचा करें उनको पुत्र(१) खानजहांके पास मुलतानमें भेजते रहें। ऐसेही तोपखाने, मस्त हाथियोंके हलके, खजाने और सलहखाने तैयार करके भेजें। मुलतान और कन्दहारके बीचमें बस्ती कम है और अनाजका प्रबन्ध किये बिना इतने बड़े लशकरका भेजना सम्भव नहीं था। इसलिये यह स्थिर हुआ कि बनजारोंको दिलासा और रुपये देकर सेनाके साथ रखें। जिससे अनाजका कष्ट न हो। यहां बनजारे एक जातिके लोग है। इनमें कोई तो १००० बैल रखता है कोई जियादा और कोई कम। यह लोग गांवोंसे शहरमें अनाज लाते है और बेचते है। लशकरोंके साथ रहते है। ऐसे लशकरमें कमसे कम १ लाख बैल बल्कि विशेष साथ रहेंगे। परमेश्वरकी कृपासे आशा है कि इतना लशकर शस्त्रों सहित प्रस्तुत होजावेगा कि अस्फहान तक पहुंचनेमें जो उसकी राजधानी है

(१) खानजहांको भी बादशाह पुत्र कहता और लिखता था और पुत्रोंके बराबरही उसका लाड़ रखता था।

कहीं विलम्ब और बाधा न होगी। खानजहांको हुक्म दिया गया कि लशकरोंके पहुंचने तक मुलतानसे उधर जानेमें आतुरता न करे और हुक्म पर कान लगाये रहे। बहादुरखां उजबक घोडा और सिरोपाव पाकर कन्दहारके लशकरकी सहायता पर नियत हुआ।

कशमीरके फकीरोंके वास्ते गांव—बादशाहने यह सुनकर कि कशमीरके फकीर जाड़ेमें ठण्डसे कष्ट पाते हैं हुक्म दिया कि कशमीरके परगनोंमेंसे ३।४ हजार रुपयेका एक गांव मुल्लातालिब अस्फहानीको देदें। वह फकीरोंके कपडों और मसजिदोंमें वजूके वास्ते पानी गर्म होनेका प्रबन्ध करा दिया करे।

किश्तवार—किश्तवारके जमींदारोंका फिर बदल जाना सुनकर बादशाहने इरादतखांको हुक्म दिया कि शीघ्रही वहां जाकर उनको पूरा पूरा दण्ड दे जिसमें फसादकी जड़ उखड जावे।

खुर्रमकी अर्जी—इसी दिन जैनुलआबिदीनने उपस्थित होकर प्रार्थना की कि खुर्रमने बरसात मंडूके किलेमें बिताकर दरगाहमें आना निश्चय किया है। उसकी अर्जी पढी गई। बादशाह लिखता है—"अर्जीके लेख और प्रार्थनासे खैरकी नहीं बेदौलतीकी बू आती थी। हुक्म हुआ कि यदि उसका इरादा बरसात बाद आनेका है तो बड़े बड़े अमीरों और दरगाही बन्दोंको जो उसकी सहायता पर स्थित है, विशेषकर बारह बुखाराके सैयद शेखजादे पठान और राजपूतोंको दरगाहमें भेज दे।

मिरजा रुस्तम और एतकादखांको हुक्म हुआ कि लाहोरमें जाकर कन्दहारके लशकरकी तय्यारी करें। उनको एक लाख रुपये मदद खर्चके दिये गये। इनायतखां और एतकादखांको नक्कारे इनायत हुए।

किश्तवार—इरादतखां जो किश्तवारमें गया था बहुतसे फसादियोंको मारकर और वहांके थानोंको दृढ़ करके बादशाहके पास आगया।

मोतमिदखां जो दक्षिणी सेनाका बखशी नियत हुआ था वहां

का काम पूरा होजानेसे बादशाहके बुलाने पर सेवामें उपस्थित होगया.

ज्योतिष और रमलका चमत्कार—बादशाह लिखता है—अजब बात यह हुई कि महलमें १४।१५ हजार रुपयेका एक मोती गुम होगया। जोतकरायने अर्ज की थी कि दो तीन दिनमें मिल जायगा। सादिकखां रम्मालने यह अर्ज की कि इन्हीं दो तीन दिनमें किसी पुनीत स्थान अर्थात् (इबादतखाना) नमाज पढने, माला फेरने तथा ध्यान करनेकी जगहसे मिल जायगा। और एक रम्माल स्त्रीने यह प्रार्थना की थी कि शीघ्रही उपलब्ध होगा और एक स्वेतांगी रमणी हंसती हंसती लाकर हजरतके हाथसें देदेगी। अकस्मात् तीसरे दिन एक तुर्क लौंडी इबादतखानेमें उसे पाकर प्रसन्नता पूर्वक मुसकराती हुई मेरे हाथमें देगई। तीनोंकी बात एकसी मिली इसलिये तीनोंही मनचाहा इनाम पाकर प्रतिष्ठित हुए। यह बात विचित्रतासे खाली न थी इस लिये लिखी गई।

दक्षिणी सेना—बादशाहने अपने पास रहनेवाले बन्दोंमेंसे कौकब और खिदमतगारखां वगैरह १२ पुरुषोंको दक्षिणके अमीरो की मजावली पर नियत किया कि वह अच्छे प्रबन्धसे उन सबको शीघ्रही दरगाहमें ले आवें और वह कन्दहारकी सेनामें भेजे जावें।

खुर्रमके कौतुक—इन दिनों लगातार अर्ज हुई कि खुर्रमने नूरजहां और शहरयारकी जागीरों(१) पर विना हुक्म हस्तक्षेप करके परगने धौलपुरमें, जो दीवानआलासे शहरयारकी जागीरमें तनखाह किया गया था दरिया नाम पठानको भेजा। वह उस प्रान्त

(१) यह जागीरें शाहजहांकी थीं जो नूरज[illegible] जमाई शहरयारको दिलादी थी। क्योंकि वह खुर[illegible] घट शहरयारको युवराज कराना चाहती थी। बा[illegible] ल।

के फौजदार और शहरयारके नौकर शरीफुल्मुल्कसे आकर लड़ा। दोनों ओरके बहुतसे आदमी मर गये हैं।

बादशाह लिखता है—"उसने मंडूके किलेमें ठहरकर जो असम्भव और अनुचित प्रार्थनायें अर्जीमें लिख भेजी थीं उनसे पाया जाता था कि उसकी मत मारी गई है। अब इन बातोंके सुननेसे निश्चय होगया कि उसका जो इतना अधिक लालन पालन किया गया उसकी समाई उसमें नहीं है और उसका मगज चल गया है। इस लिये मैंने राजा रोजअफजूंको जो पुराना और पास रहनेवाला सेवक है उसके पास भेजकर इस ढिठाईका जवाब पूछा और आज्ञा दी कि अपनेको सम्हालकर मर्य्यादासे आगे पांव न बढ़ावे और अपनी जागीर पर जो दीवानेआलासे तनखाहमें पाचुका है सन्तुष्ट रहकर हजूरमें आनेका इरादा न करे। जो बन्दे कन्दहार जाने के वास्ते बुलाये गये हैं उनको तुरन्त दरगाहमें भेजदे। यदि आज्ञा के विरुद्ध करेगा तो पछतायेगा।"

राजा वरसिंहदेव—उजाला दखनी, राजा वरसिंहदेवके लाने को कृपापत्र सहित भेजा गया।

प्रणभङ्ग—बादशाह लिखता है—"मैं खुर्रम और उसकी सन्तानसे पूर्ण स्नेह रखता था। जब उसका बेटा बहुतही बीमार होगया था तो मैंने यह प्रण किया था कि यदि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा तो मैं बन्दूकका शिकार न करूंगा और किसी जीव को अपने हाथसे न सताऊंगा। मुझे शिकारकी बड़ी लत है और विशेषकर बन्दूकसे शिकार मारनेकी। तोभी ५ वर्षमें उसके पास नहीं गया हूं। अब जो उसके दुष्कर्मोंसे मन फट गया तो फिर बन्दूकका शिकार अंगीकार कर लिया और यह हुक्म देदिया कि किसीको बिना बन्दूक दौलतखानेमें न आने दें। थोड़ेही दिनोंमें बहुतसे बन्दोंको बन्दूक बांधने और लगानेका शौक होगया। तर्कशबन्द तो घोड़े पर चढ़ेही चढ़े उसका अभ्यास करने लगे।"

अमरदाद।

काश्मीरसे कूच और राणा करणके बेटेको बुलाना।

२५ अमरदाद (सावन सुदी ११) ९(१) शव्वालको शुभमुहूर्त्तमें बादशाहने काश्मीरसे लाहोरको कूच किया। बिहारीदास ब्राह्मण को कृपापत्र देकर राणा करणके पास भेजा कि उसके बेटेको सेना सहित हजूरमें लेआवे।

शहरेवर।

अछोल—१ (भादों बदी ३) को अछोलके झरने पर सवारी उतरी। गुरुवारको सहनागमें प्यालोंकी मजलिस हुई।

शहरयार—शहरयारने कन्दहार जानेका मुजरा करके १२ हजारी जात ८००० सवारका मनसब और मोतीके तुकमेकी नादिरी सहित खासा खिलअत पाया।

कीमती मोती—इन दिनोंमें एक सौदागर दो बड़े मोती रूमसे लाया था। उनमें एक ४५ रती और दूसरा ४४ रती था। नूर-जहांने दोनों ६० हजार रुपयेमें लेकर बादशाहको भेट किये।

फस्द—१० शुक्रवार (भादों बदी १२) को हकीम मोमिनाकी सम्मतिसे बादशाह अपने हाथकी फस्द खुलवाकर हलका हुआ। वह लिखता है—"मुकर्रबखां इस काममें पूरा अभ्यास रखता है और हमेशा मेरी फस्द वही खोलता रहा है। वह कभी न चूका था पर अबके दोबार चूका। तब उसके भतीजे कासिमने फस्द खोली। खिलअत और दो हजार रुपये उसको और १०००० दरब हकीम मोमिनाको इनाममें दिये गये।

सौर तुलादान—२१ (भादों सुदी ९) को सौरपक्षीय जन्मतिथि का उत्सव और तुलादान हुआ। बादशाहको ५४वां वर्ष लगा।

गङ्गाजलकी परीक्षा—२८ (आश्विन बदी १) को बादशाह ऊहर का झरना देखने गया। उसका पानी स्वाद और निर्मलतामें

(१) मूलमें भूलसे ७ लिखी है।

विख्यात था। बादशाहने उसका और लारके घाटेका पानी गङ्गा-जल(१) से अपने सम्मुख तुलवाया तो जहरका पानी ३ माशे और लारका आध माशे भारी हुआ।

हीरापुर—३० (आश्विन बदी ३) को हीरापुरमें डेरे हुए। इरादतखांने किश्तवारका प्रबन्ध किया था तोभी बादशाहने उसके बरतावसे कशमीरकी प्रजाके गिला करने पर एतकादखांको कश-मीरकी सूबेदारी घोड़ा खिलअत और दुशमनगुदाज नाम खासा खांडा दिया और इरादतखांको कन्दहारके लशकरमें नियत किया।

महर।

कंवरसिंह किश्तवारका राजा—बादशाहने किश्तवारके राजा कंवरसिंहको जो गवालियरके किलेमें कैद था बुलाकर किश्तवार देदिया। घोड़ा खिलअत और राजाका खिताब भी इनायत किया।

हैदर मलिक—हैदर मलिकको लारके घाटेसे नूरअफजाबागमें पानीकी नहर लानेके लिये भेजा और इस कामके लिये ३००००) उसको दिये।

भंबर—१२ (आश्विन सुदी १) को बादशाह जम्मूके पहाड़ोंमें होकर भंबरमें आया। दूसरे दिन कमरगे (हाके) का शिकार हुआ।

खुसरोके बेटे दावरबख्शको ५ हजारी जात और २००० सवार का मनसब मिला।

२४ (आश्विन सुदी १३) को बादशाह चिनाब नदीसे उतरा।

खुर्रम—इसी दिन खुर्रमका दीवान अफजलखां उसकी अर्जी लेकर आया जिसमें उसने अपने अपराधोंके उज्र लिखे थे। बाद-शाहने कपटयुक्त समझकर उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

आबान।

१ आबान (कार्तिक बदी ७) को महाबतखांके बेटे अमानुल्लह

(१) इससे पाया जाता है कि गङ्गाजल बादशाहके साथ रहता था।

का मनसब ५ हजारी १७०० सवारका होगया और महाबतखांके बुलानेके लिये प्रसादपत्र भेजा गया।

बादशाह लाहोरमें—४ (कार्तिक बदी ८) को बादशाह लाहोर पहुंचा और दीवानोंको हुक्म हुआ कि खुर्रमको जागीरोंकी तनखाह जो हिसारकी सरकार, अन्तरवेद और इन प्रान्तोंमें है उन बन्दोंकी तलबमें लगादें जो कन्दहारके लशकरमें नियत हुए हैं और खुर्रम इसके बदले मालवे दक्षिण और गुजरातके सूबोंके परगनों मेंसे जहां चाहे लेले। अफजलखांको खिलअत देकर बिदा किया गया और खुर्रमको गुजरात मालवा दक्षिण और खानदेशके सूबे इनायत होकर हुक्म हुआ कि इनमेंसे जहां चाहे वहीं रहकर उस मण्डलको दृढ़ रखे और कन्दहार जानेके वास्ते जिन बन्दोंको लाने के लिये सजावल भेजे गये हैं उनको दरगाहमें भेजदे। इसके पीछे अपनेको सम्हाले रहे आज्ञा भंग न करे नहीं तो पछतायगा।

उन्नीसवां वर्ष।

सन् १०३२ हिजरी।

कार्तिक सुदी २।३ संवत् १६७९ ता० २६ अकतूबर सन् १६२२ से कार्तिक सुदी २ संवत् १६८० ता० १५ अकतूबर सन् १६२३ तक।
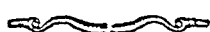
ईरानके वकील—२६ (कार्तिक सुदी १५) को हैदरबेग और वलीबेग शाह ईरानके भेजे हुए आये और आदाब बजाकर शाहका पत्र बादशाहके सामने लाये। खानजहांने आज्ञानुसार मुलतानसे आकर १०००मोहरें, १००० रुपये और १८ घोड़े भेट किये।

महाबतखांको ६ हजारी ५००० सवारोंका मनसब मिला।

राजा बरसिंह देव—बादशाहने सारंगदेवको राजा बरसिंह देव को सज़ावली पर भेजकर हुक्म दिया कि उसको बहुत जल्दी दरगाहमें ले आवे।

आजर।

ईरानके एलचियोंकी विदा—७ (अगहन बदी १२) को बादशाहने शाह अब्बासके वकीलोंको जो कई बार करके आये थे खिलअत और खर्च देकर बिदाकिया। शाहने जो पत्र कन्दहार लेने की माफीमें हैदरबेगके हाथ भेजा था और बादशाहने जो जवाब लिखा उसका सारांश यह है।

ईरानके बादशाहका पत्र।

आपको मालूम होगा कि बडे बादशाहका स्वर्गवास होने पर ईरानमें क्या क्या उपद्रव उठे थे। कई मुल्क भी इस राज्यके कर्मचारियोंके अधिकारसे निकल गये थे। जब मैं शासन करने लगा तो खुदाकी इनायत और मित्रोंकी सहायतासे बापदादाके समय के वह सब प्रदेश जो शत्रुओंके हाथ पड गये थे छीन लिये गये। कन्दहार आपके नौकरोंके पास था उसको मैं अपनाही समझकर

भाई चारे और प्रीतिकी रीतिसे यह आशा रखता था कि आप भी अपने बाप दादों कासा बरताव करके उसको सौंप देनेकी मेहरबानी करेंगे। परन्तु जब आपने आनाकानी की तो मैंने कई बेर पत्र और संदेसा भेजकर खुलेतौर, उसे आपसे मांगा। इस आशासे कि यह छोटासा देश आपकी विशाल दृष्टिमें संकीर्णता उत्पन्न न करेगा और उसे हमारे सेवकोंको सौंपकर शत्रुओंका संदेह दूर कर देंगे। परन्तु कुछ लोगोंने इस काममें पहलेसेही ढील डाल रखी थी। जब यह बात मिटी और शत्रुओंमें फूट निकली और उधर से कोई उत्तर न पहुंचा तो यह विचार हुआ कि कन्दहार जाकर शिकार और वनविहार किया जाय। कदाचित इसी प्रसंगसे आपके कर्मचारी स्वागत करें और सेवामें उपस्थित हों। जिससे दोनों ओरके प्रेमका प्रकाश पृथ्वीमें नये सिरेसे हो तथा शत्रुओं और निन्दा करनेवालोंकी जबान बन्द होजाय। जब हम इस चेष्टासे किला लेनेके सामानके बिनाही प्रस्थान करके फरहमें पहुंचे तो कन्दहार के हाकिमको सैरोशिकारके लिये वहां आनेकी सूचना ज्ञापनपत्र द्वारा दी, इसलिये कि वह अथिति सत्कार करे। मान्यवर ख्वाजा बाकी करकराककी बुलाकर हाकिम और अमीरोंको कहलाया कि हमारे और श्रीमान बादशाहके बीचमें कुछ अन्तर नहीं है। हम केवल सैरको इस सूबेमें आये हैं। उन्होंने यह हितकी बात भी न सुनी। हमारी तुम्हारी मित्रताको मंजूर न रखकर प्रतिकूलता प्रगट की। हमने किलेके पास पहुंचकर फिर उसी मान्यवरको बुलाया और जो उपदेश करनेका विधान था वह उसके द्वारा कहला भेजा। अपनी विजयिनी सेनाको दस दिन तक किलेके पास जानेसे मनाकर दिया। पर कुछ फल न हुआ। उलटी और शत्रुता बढ़ी। आगे गुंजाइश न थी। कजलबाशोंके पास किला लेनेका कुछ सामान न था तो भी वह कन्दहार फतह करने पर उद्यत हुए। अल्पकालमें कोट और बुर्जोंको गिराकर किलेवालों को ऐसा तंग किया कि उन्होंने शरण चाही। हमने भी उनके

प्रेम और आपकी जवानीके समयकी प्रीतिका खयाल करके, जिस पर दुनिया भरके बादशाह डाह करते हैं, उनकी विनय मानी और अपनी स्वाभाविक सज्जनतासे उनके अपराध क्षमा कर दिये। उन पर कृपाकरके निज भक्त हैदरबेग तौरवाशीके साथ आपकी दरगाहमें भेजा है। मैं खुदाकी कसम खाकर कहता हूं कि पुराने और नये प्रेमकी नीव मेरी ओरसे ऐसी कम मजबूत नहीं है जो उन तुच्छ कारणोंसे जो अचानक होपडे है हिलसके। आशा है कि उधरसे भी यही बरताव रहेगा और इन विचित्र घटनाओं पर कुछ दृष्टि न दी जायगी। यदि उस स्नेहमें कोई आशंका होगई हो तो उसको निवृत्ति नई पुरानी प्रतिसे करके प्रेमकी जड और सुदृढ करें। हमारे समग्र राज्यको अपना समझकर जिसे बखशना चाहें उसकी सूचना कर दें, तुरन्त बिना किसी विचारके उसे सौंप दिया जावेगा—ऐसी छोटी छोटी बातोंका तो कहनाही क्या है। किलेके हाकिम और अमीरोंने यद्यपि कई काम प्रीतिकी रीतिके विरुद्ध किये तथापि जो कुछ हुआ हमारी तरफसे हुआ। उन्होंने तो अपनी नौकरीका हक पूरा कर दिया। आशा है कि श्रीमान भी उनपरबादशाहों कीसी कृपा करेंगे और हमको उनसे शर्मिन्दा न करेंगे।

पत्रोत्तर।

परमेश्वरका अनन्त धन्यवाद है, जिसने बडे बडे बादशाहोंके सन्धिबन्धनको अपनी सृष्टिकी शान्तिका हेतु बनाया है। इसका प्रमाण वह प्रेम और प्रीति है जो इन दोनो बडे घरानोंमें चली आती है और जिसकी वृद्धि और दृढता हमारे दिन दिन बढनेवाले राज्यमें इतनी बढी थी कि उसका डाह दुनियाके बादशाहोंको था। पर आप उस प्रेम और भाईपनके खिले बागको अकारण सुखा देने के कारण हुए, जिसमें कयामत तक हानि पहुंचनेकी सम्भावना न थी। क्या बादशाहोंकी प्रीतिकी कभी यह भी रीति रही है कि पूरा भाईचारा होने पर भी जब कि प्यारमें एक दूसरेके सिरकी

सौगंद खाते हों और जो मिलजानेसे मुल्क माल तो क्या जान देनेमें भी न अटकते हों, इस प्रकार सैर और शिकारके वास्ते आवें! आपके प्रेमपत्रसे, जो कन्दहारकी सैर और शिकारके उजरमें हैदर बेग और वलीबेगके हाथ आया, आपके शरीरकी कुशलता ज्ञात होकर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस सिद्धमनोरथ भाईसे छिपा न होगा कि जम्बीलबेगके आनेतक कभी पत्र और सन्देसा कन्दहारकी कामनाका न आया था। हां जब कि हम मनोहर-देश कश्मीरमें विहार कर रहे थे और दक्षिणके दुनियादारोंने मूर्खतासे अधीनता छोड़कर सिर उठाया था और हम उनके दण्ड देनेके लिये लाहोरमें पधारे और पुत्र शाहजहांको उनके ऊपर भेजकर आगरेको आते थे, उस समय जम्बीलबेगने पहुंचकर आपका प्रेमपत्र दिया। हम उसे अपने लिये अच्छा शगून समझकर राजधानीमें आये। उस मोती बरसानेवाली चिट्ठीमें भी कन्दहारके मांगनेकी बात न थी। जम्बीलबेगने जबानी कहा तो हमने फरमाया कि हमें अपने भाईसे किसी बातका उजर नहीं है। दक्षिण फतह हो जाने पर उचित रीतिसे तुमको विदा करेंगे। तुम बहुत दूरसे चल कर आये हो इससे कुछ दिन लाहोरमें आराम करो। फिर हम बुला लेंगे। आगरेमें पहुंचकर हमने उसे विदा करनेके लिये बुलाया तो ईश्वरकी कृपासे दक्षिण फतह होगया। हम आप प्रसन्नतापूर्वक पञ्जाबको पधारे। तब उसको लौटानेका विचार हुआ। पर तुरन्त ही कुछ जरूरी काम कर लेने पर हवा गर्म होजानेसे कश्मीरको रवानेहुए जो स्वर्ग समान है। जलवायुके सुरम्य होनेमें सातों विलायतोंके घूमनेवालोंको प्रमाण है। उस मनोरमा मेदनीमें पहुंचकर जम्बीलबेगको विदा करनेके वास्ते बुलाया और विदा करनेसे पहले यही चाहा कि स्वयं साथ रहकर उसको यहांके सब सुन्दर और सुरम्य स्थान भी दिखा देवें। इतनेहीमें उस प्यारे भाईके कन्दहार लेनेके इरादेसे पहुंचनेके समाचार लगे जिसका कभी विचार भी चित्तमें न हुआ था। बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि एक तुच्छ

स्थानको विजय करनेके लिये आप स्वयं पधारें और ऐसे प्रेम और भाईपनसे आंख छिपावें ! सच्चे सावधान लोग यह समाचार बारम्बार भेजते थे तो भी हम विश्वास न करते थे। निदान जब यह बात निश्चय होगई तो हमने उसी घड़ी अबदुलअजीजखांको हुक्म दिया कि उस भाईके राजी रखनेमें कमी न करे। अब भी वही भाई-चारा बना है। हम इस मित्रताको दुनियाभरसे बढकर गिनते थे। मित्रताके योग्य तो यह बात थी कि एलचीके लौटने तक सन्तोष करते। शायद वह सफलमनोरथ होकर लौटता। एलची के पहुंचनेसे पहले ऐसा खटकता हुआ काम करनेसे प्रतिज्ञा और प्रीतिके पलड़ेको लोग न जाने किधर झुकावें !

कन्दहार—बादशाहने ईरानके दूतोंको विदा करके कन्दहार के लशकर(१) को दण्ड देनेके लिये खानजहांको आगे जानेवाली सेनाके तौरपर बिदा किया जो कई कामोंकी सलाहके लिये बुलाया गया था। उसको हाथी, खासा घोड़ा, तलवार, जड़ाऊ खञ्जर, और खिलअत दिया और कहा कि शाहजादे शहरयारके पहुंचने तक मुलतानमें ठहरकर हुक्म पर कान लगाये रहे। बाकरखांको जो मुलतानका फौजदार था दरगाहमें बुलाकर अलीकुली बेगदर-मनको डेढ़हजारी मनसब दिया और खानजहांकी मदद पर नियत किया। लशकरखां वगैरह कई अमीरोंको दक्षिण दल तथा निज जागीरोंसे आये थे, घोड़े और खिलअत देकर खानजहांके साथ कर दिया।

आगरेके खजाने—आगरेमें मुहरों और रुपयोंका जितना कुछ खजाना अकबर बादशाहके समयसे आजतक जमा हुआ था उसे दरगाहमें लेआनेके लिये बादशाहने आसफखांको आगरे भेजा।

शाह परवेज—शाह परवेजके वकील शरीफको हुक्म हुआ कि जल्दी जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित लेआवे और उसके

(१) ईरानी लशकरसे मतलब है।

साथ खास दस्तखतोंका फरमान भी भेजा। जिसमें उसके आनेकी बहुत ताकीद थी।

मोतमिदखां मुसव्वदा-नवीस—बादशाह लिखता है, कमजोरीके कारण जो दोबर्ष पहले होगई थी और अबभी है दिल और दमाग ने रोजनामचेके मुसव्वदे लिखनेमें साथ न दिया। मोतमिदखां जो दक्षिणसे आगय था मिजाज जाननेवाले बन्दों और बात समझने-वाले शागिर्दोंमेंसे है। पहले भी यह खिदमत और अखबारोंके जमा करनेका सरिश्ता उसको सौंपा हुआ था। इसलिये मैंने हुक्म दिया—जिस तारीख तक मैने लिखा है आगे वह अपने खत से लिखे और मेरे मुसव्वदोंमें दाखिल करे। इसके पीछे जो कुछ हो उसका मुसव्वदा रोजनामचेके तौरपर करके मुझसे सही कराले और वयाज (किताब) में लगाता रहे।

[यहांसे मोतमिदखांके लिखे मुसव्वदे हैं।]

खुर्रमकी कुपात्रता—इन दिनों बादशाह कन्दहारके ईरानी लशकरको सजा देनेके कामोंमें लगा हुआ था। खुर्रमकी तरफकी बुरी बुरी खबरें पहुंचती थीं। उनसे चित्त बिगडता था। इसलिये उसने अपने मिजाज जाननेवाले बन्दोंमेंसे मुसव्विरखांको उस बेदौ-लत (कर्महीन) के पास डराने धमकाने और उपदेश करनेको भेजा। जिससे वह गफलत और घमण्डकी गहरी नींदसे जागे। साथही उसके खोटे इरादों और झूठे मनसूबोंका भी पता लगे। और समयोचित काम करे।

बहमन महीना।

चन्द्र तुलादान—१ बहमन (माघ बदी ४) को चन्द्रतुलादानका उत्सव था, जिसमें महावतखां काबुलसे पहुंचकर आदाब बजा लाया और बादशाहकी कृपासे सम्मानित हुआ।

खुर्रमका मांडूसे कूच करना—एतबारखांकी अर्जी आगरेमे पहुंची कि खुर्रमने अपनी अशुभ सेना सहित मांडूसे इधर कूच किया है। बादशाहने यह सोचकर कि खजानेका मंगाना सुनकर

उसकी तन बदनमें आग लग गई है और व्याकुल होकर इस विचार मे आता है कि शायद रास्तेमें खजाने तक पहुंचकर हाथ मारे, सुलतानपुरकी नदीतक सैर और शिकारके तौर पर जानेका विचार किया इसलिये कि यदि वह मूर्खतासे आगे चलाही आवे तो पूरी पूरी सजा दीजावे। नहीं तो जैसा उचित हो किया जावे।

बादशाहका कूच खुर्रम पर—१७ (माघ सुदी ६) को बादशाह ने शुभ मुहूर्त्तमें कूच किया। महाबतखांको खासा खिलअत दिया। एक लाख रुपये मिरजा रुस्तमको और दो लाख अवदुल्लहखांको मदद खर्चके लिये दिलाये। जैनखांके बेटे मिरजाखांको परवेजके पास भेजकर जल्दी आनेकी ताकीद लिखी।

राजा बरसिंहदेव—राजा सारगदेवने जो राजा बरसिंहदेवको लानेके लिये भेजा गया था आकर यह अर्ज की कि राजा अपनी सजी हुई सेना सहित थानेश्वरमें आ मिलेगा।

खुर्रम—इन दिनों एतबारखां और दूसरे बन्दोंकी फिर अर्जियां पहुंचीं कि खुर्रम सपूतीको त्याग और कपूतीको अङ्गीकार करके अपनी सेना लिये इधर आता है। इस वास्ते हम लोग खजाना निकालना उचित न जानकर किलेकी मजबूतीमें लगे हुए है। ऐसे ही आसफखांने भी प्रार्थना की कि वह बेदौलत लज्जा छोडकर कुमार्गी होगया और उसके आनेमें कुशल नहीं है। इसलिये खजाना लानेका समय न था। मैं उसको ईश्वरकी रक्षामें छोड़कर आता हूं।

खुर्रमका बेदौलत कहलाना—बादशाह लिखता है—मैंने सुलतानपुरकी नदीसे उतरकर उस कर्महीनको दण्ड देनेके लिये, लगातार कूच किया और हुक्म फरमाया कि अब उसको बेदौलत कहा करें। इस ग्रन्थमें जहां बेदौलत लिखा जावेगा वह उसीका विशेषण होगा। उसके साथ जैसे अनुग्रहका बर्ताव हुआ है उससे कह सकता हूं कि अबतक किसी बादशाहने अपने बेटे पर इतनी कृपा न की होगी। जो मेहरबानी मेरे बापने मेरे भाइयों पर की थी

वह मैंने उसके नौकरों पर की और उनको खिताब भण्डे और नक्कारे दिये जैसा कि इस किताबके पिछले पत्रोंमें लिखा जाचुका है। पढनेवालोंसे छिपा न होगा कि कितना ध्यान उसकी परवरिश और तरक्कीमें दियागया है। इसलिये मैंने उसका समाचार लिखनेसे कलमको रोक लिया है। मैं अपना क्या दुःख लिखूं, इस गर्म हवा में जो बीमारी और कमजोरीसे मेरे मिजाजके मवाफिक नहीं है सवारी और सफर करना पड़ा है और इस हालसे ऐसे कुपुत्र पर चढ़ाई करना जरूरी हुआ है। बहुतसे बन्दे जो वर्षों तक पालकर अमीरीके दरजे पर पहुंचाये गये हैं, जो आज उजबक(१) या कजलबाश(२) की लडाईमें काम आने चाहियें थे उनको उसके पापसे सजा देकर अपने हाथसेही नष्ट करना पडा है। खुदाका शुक्र है कि उसने इतनी सहनशीलता और गम्भीरता दी है कि इस सबको सह सकता हूं और एक तौरसे गुजार सकता हूं। यह कष्ट अपने ऊपर झेल लिया है। पर जो बात दिलमें खटकती है और गैरतके मिजाजको तेज करती है वह यह है कि इस समय सपूत शाहजादे और राजभक्त अमीर एक दूसरेकी रीस करके कन्दहार और खुरासानकी खिदमत (लड़ाई) का काम करते जो राजको लाज रखने वाला है। पर इस कपूतने अपनीही सम्पत्तिके पांवमें कुल्हाड़ी मारकर उस इरादेके रास्तेमें रोडे डाल दिये और कन्दहारकी लड़ाई खटाईमें पड गई। आशा है कि परमेश्वर इस उद्वेगको दिलसे दूर करे।

इसी समय यह अर्ज हुई कि मोहतरिमखां ख्वाजा सरा, खलील बेग जुलकदर और फिदाईखां मीरतुजुक उस बेदौलतसे मिले हुए हैं और उसके साथ पत्र व्यवहार करते हैं। बादशाहने ढीलका न देखकर तीनोंको कैद करके निर्णय किया। मिरजा रुस्तम जैसे अमीरोंके सौगन्द खाकर सांची देनेसे मोहतरिम और खलील अपराधी सिद्ध होकर दण्डित हुए और फिदाईखां निर्दोष साबित

(१) तूरानी। (२) ईरानी।

होकर प्रतिष्ठा पूर्वक कैदसे निकाला गया।

राजा रोजअफजूं—राजा रोजअफजूं डाक चौकी पर शाह परवेजको सेना सहित सजावली करके लानेके लिये भेजा गया।

अस्फन्दार महीना।

१ अस्फंदार (फाल्गुण बदी ४) को बादशाह नूरसरायमें पहुंचा। इसी दिन एतबारखांकी अर्जी आई जिसमें लिखा था कि बेदौलत किलेकी मजबूती होनेसे पहले पहुंच जानेकी मनशासे आगरेकी सीमामें बहुत जल्दी आधमका था। पर जब फतहपुरमें पहुंचकर सुना कि किलेका बन्दोबस्त होचुका है तो लज्जित होकर वहीं ठहर गया। खानखानां, उसका बेटा और बहुतसे अमीर जो दक्षिण और गुजरातके सूबोंमें तैनात थे उसके साथ है और नमकहरामीमें शामिल मूसवीखांने उससे फतहपुरमें मिलकर शाही पैगाम पहुंचाया। उसने अपने नौकर काजी अबदुलअजीजको उसके साथ अरज मारूज करनेके वास्ते दरगाहमें भेजनेकी बात ठहराई है और सुन्दर(१) को लोगोंके खजाने छीननेके लिये आगरे भेजा है। वह लशकरखांके घरमें घुसकर ८ लाख रुपये निकाल लेगया है। इसी तरह दूसरे बन्दोंके घरमें जहां जहां उसको धन माल होनेका खयाल था हाथ मारा है।

खानखानां नमकहराम—बादशाह लिखता है—"जब खानखानां जैसा अमीर जो अतालीकीके बडे दरजे पर पहुंचा हुआ था ७० वर्षकी उमरमें अपना मुंह नमकहरामीसे काला करले तो दूसरोंका क्या गिला है? उसकी सृष्टिही नमकहरामीसे हुई थी। उसके बापने भी अन्तावस्थामें मेरे बापसे यही बुरा बरताव किया था। वह भी बापकी चाल चला और इस उमरमें हमेशाके लिये कालंक लगा लिया। भेडियेका बच्चा आदमीके साथ पलकर भी अन्तमें भेडियाही होता है।"

---

(१) वही सुन्दर ब्राह्मण जिसे राजा विक्रमाजीतका खिताब दिया गया था।

इसी दिन मुसव्विरखां वेदौलतके दूत अबदुलअजीजको साथ लेकर आया। उसने जो अर्ज कराई थी वह ठीक नहीं थी इस लिये मैंने उसकी बात न सुनी और उसे कैद रखनेके लिये महाबत खांको सौंप दिया।

लुधियाने पहुंचना—५ (फाल्गुण बदी ८) को बादशाह लुधियाने पहुंचकर नदीके तट पर उतरा। खानआजमको सातहजार ६००० सवारका मनसब मिला।

राजा भारत बुन्देला—राजा भारत बुन्देला दक्षिणसे आया। बादशाहने उसको डेढ़ हजारी १००० सवारका मनसब दिया।

राजा बरसिंहदेव—१२ गुरुवार (फाल्गुण सुदी १) को थानेश्वर के परगनेमें राजा बरसिंहदेवने अपनी सजी हुई सेना बादशाहको दिखाकर शाबाशी पाई।

राजा सारंगदेव—राजा सारंगदेवका मनसब डेढ़ हजारी ६०० सवारोंका होगया।

आसफखां—करनालके पास आसफखां भी आगरेसे आगया। बादशाहने उसका आना फतहका चिन्ह समझा।

फौजोंका जमा होना—बादशाह लिखता है—"लाहोरसे जब कूच किया गया था तो पहलेसे किसीको खबर न थी और समय भी ठहरने और ढील करनेका न था। कई अमीर जो सवारी और सेवामें थे वही साथ थे। सरहिंद पहुंचनेतक भी थोड़ेसेही लोग सवारी में पहुंचे थे। पर सरहिन्द पहुंचने पर झुंडके झुंड और दलके दल लश्कर इधर उधरसे आने लगे। दिल्ली पहुंचने तक इतनी भीडभाड होगई थी कि जिधर देखता था तमाम जंगलको लशकर से पटा हुआ पाता था। अब यह अर्ज हुई कि वेदौलत फतहपुर से निकलकर दिल्लीको गया है। मैंने लश्करको चितला(१) पहनने का हुक्म दिया। इस चढ़ाईमें फौजोंको सजाने और चलानेका काम महाबतखांके ऊपर छोड़ा गया था। हिरावल सेनाकी सरदारी

(१) बकतर।

अबदुल्लहखांको दीगई थी। चुने हुए और खास किये हुए जवानों मेंसे उसने जिन जिनको मांगा मैंने उनको उसकी फौजमें लिखकर हुक्म फरमाया कि एक दल दूसरी फौजोंसे आगे चला करे। खबरों के पहुंचाने और रास्तोंके बन्दोबस्त करनेका भी उसने जिम्मा लिया था। हम इस बातसे गाफिल थे कि वह बेदौलतसे मिला हुआ है और असल मतलब उस बदजातका यह है कि हमारे लशकरकी अखबार उसको भेजे। इससे पहले भी सच्ची झूठी खबरोंके लम्बे लम्बे तूमार लिखकर लाता था कि मेरे जासूसोंने वहांसे भेजे हैं। जो भोवाने वाले बन्दोंमेंसे कितनोंको कलङ्कित करता था कि ये बेदौलतसे मेल रखते हैं और दरबारकी खबरें उसको लिखते हैं। यदि मैं उसके लगाने बुझाने पर धीरता छोड़कर आतुरता करता तो ऐसी हलचलमें जबकि झगड़े बखेड़ोंकी आंधियां चल रही थीं बहुतसे सुसेवकोंको उसके दोष लगानेसे नष्ट करना पड़ता। यद्यपि कई शुभचिन्तक स्पष्ट और संकेतसे उसके बुरे विचारकी बातें अर्ज करते थे। पर समय ऐसा न था कि उसका भांडा फोड़ दिया जावे। बल्कि आंख और जबानको भी ऐसे इशारेसे जिसमें उसको कुछ आशङ्का हो, रोककर उस पर अधिक कृपा कीजाती थी कि शायद वह अपने कुकर्मोंसे लज्जित होकर कुटिलता छोड़दे। पर उस दुष्टकी दृष्टिहीमें छल छिद्र था। उसे होश न आया। उसने जो किया वह उसीके योग्य था। उसका वर्णन आगे आता है—

"कड़वे स्वभावके वृक्षको यदि बहिश्तके बागमें लगाओ और शहदसे सींचो तोभी उसका फल कड़वाही होगा।"

दिल्ली पहुंचना—दिल्लीके पास सैयद बहवा बुखारी, रुदरदा और राजा लछमीदासने शहरसे आकर रकाब चूमी। सरकार अवधका फौजदार बाकरखां भी आया।

जमना पर डेरे—२५ (फाल्गुण सुदी १४) को बादशाह दिल्लीमें होकर जमना पर आया और वहां छावनी लगाई।

गिरधरको राजाकी पदवी—बादशाह दरबारीके बेटे गिरधरने

दक्षिणसे आकर भूमि चूमी। दो हजारी डेढ़ हजार सवारके मनसब और राजाके खिताबसे सम्मानित हुआ।

जबरदस्तखां मीर तुजुकको झंडा मिला।

१८ वां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

२०(१) जमादिउलअव्वल सन् १०३२ मंगलवार (चैत्र वदी ५) की रातको सूर्य्यने मेष राशिके उच्चभवनमें प्रवेश किया बादशाहके राज्यशासनका १८ वां वर्ष आरम्भ हुआ।

खुर्रम मथुरामें—इसी दिन बादशाहने सुना कि बेदौलत मथुरा की तलहटीमें पहुंचा। उसका लशकर परगने शाहाबादमें उतरा था १७ हजार सवार देखने गये थे।

राजा जयसिंह—राजा मानसिंहके पोते राजा जयसिंहने अपने वतनसे आकर रकाब चूमी।

राजा बरसिंहदेव—बादशाह लिखता है—"मैंने राजा बरसिंहदेवको जिससे अच्छा कोई अमीर राजपूतोंकी जातिमें नहीं है महाराजाका खिताब देकर उच्च पद पर पहुंचा दिया और उसके बेटे राजा जुगराजको दो हजारी २००० सवारके मनसबसे सरफराज किया।"

बेदौलतका आना—बादशाहसे अर्ज हुई कि बेदौलत जमनाके किनारे किनारे चलो आता है। बादशाहने भी उसी तरफ कूच करना ठहराया। हिरावल, चरनगार, बुरनगार, अलतमश, तरह और चपावल वगैरह दस्ते फौजको दशा और स्थानके अनुसार सजाई गई। इतनेमें फिर खबर पहुंची कि बेदौलत खानखानां समेत सीधे रास्तेसे मुडकर परगने कोलको जो २० कोस बायें हाथको है गया है। और सुन्दर ब्राह्मणको जो उसका बहकानेवाला है खानखानांके बेटे दराब, हिम्मतखां, सरबुलन्दखां, गिरजाखां, आबिदखां, जादूराय, ऊदाराम, आतिशखां, मनसूरखां आदि

(१) जन्त्रीके हिसाबसे १९।

बादशाही अमीरों और मनसबदारोंके साथ जो दक्षिण और गुज-रातमें तैनात थे और नमकहरामीमें उसके शामिल होगये थे और रानाके बेटे राजा भीम, रुस्तमखां, बैरमबेग, दरियापठान और तकी आदि अपने सब नौकरोंको बादशाही लश्करके मुकाबिलेपर छोड कर पांच सेनाएं कर गया है। उनकी सरदारी कहनेको तो दाराब के नाम है परन्तु असलमें कर्त्ता धर्त्ता सुन्दर है। यह दुष्ट बलोच-पुरेके आसपास आपहुचे हैं।

लडाईका आरम्भ—८ (चैत्र वदी १३) को बादशाही लश्कर कबूलपुरेमें पहुंचा। इसी दिन चन्दावलीकी बारी बाकरखांकी थी। बादशाहने उसको सबके पीछे छोडा था। बागियोंका एक झुण्ड रास्तेमें आकर लश्करका सामान लूटने लगा। बाकरखां उनके रोकनेको ठहर गया। ख्वाजा अबुलहसन खबर पाकर सहा-यताके लिये लौटा। परन्तु वह लोग ठहर न सके पहुंचनेसे पहले ही भाग गये।

९ बुधवार (चैत्र बदी १४) को बादशाहने २५ हजार सवार छांटकर आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और अबदुल्लहखांकी अफसरी में बागियोंके ऊपर भेजे। कासिमखां, लश्करखां, इरादतखां और फिदाईखां वगैरह ८००० सवार लेकर आसफकी फौजमें नियत हुए। बाकरखां, नूरुद्दीनकुली और इब्राहीमहुसैन काशगरी आदि आठ हजार सवारी सहित ख्वाजा अबुलहसनको सहायता पर गये। नवाजिशखां, अबदुलअजीजखां, अजीजुल्लह और बहुतसे सैयद बारह और अमरोहेके अबदुल्लहखांके साथ लिखे गये। इस फौज में दसहजार सवार गिने गये। सुन्दर इस समय आगे बढा। बादशाह लिखता है—"मैंने अपना खासा तरकश जबरदस्तखां मीरतुजुकके हाथ अबदुल्लहखांके वास्ते भेजा जिससे उसे और उत्साह हो। जब दोनों लश्कर भिडे तो वह इस लोक और परलोकका कालमुहां कलजी भागकर शत्रुओंसे जामिला। खानजहांका बेटा अबदुलअजीजखां न जाने जानकर वा बेजाने उसके साथ चला

गया। नवाजिशखां, जबरदस्तखां और शेरहमला जो उस निर्लज्ज की फौजमें थे उसके जानेसे विचलित नहीं हुए। खुदा सदा मेरे सानुकूल है इसलिये उस समय भी जबकि अबदुल्लहखां जैसा अमीर दसहजार फौजको उलट पलटकर शत्रुसे जामिला था और बादशाही फौजको कोई धक्का लगनेवाला था, अकस्मात एक गोली सुन्दरके मर्मस्थानमें लगी और वह गिरा। उसके गिरतेही दुशमनों के छक्के छूट गये। इधर अबुलहसनने अपने सामनेकी फौजको हटा कर भगा दिया और उधर आसफखांने बाकरखांके पहुंचतेही बहादुरीसे काम पूरा कर दिया। ऐसी जीत हुई कि जो पृथिवीकी सब जीतोंमें शिरोमणि कही जासकतीहै। जबरदस्तखां, शेरहमला, उसका बेटा शेरबच्चा, असदखां मामूरीका बेटा, ख्वाजाजहांका भाई मुहम्मदहुसैन और बहुतसे बारहके सैयद जो अबदुल्लहखांकी फौजमें थे शहीद होकर सदाके लिये जी गये। हुसैनखांका पोता अजीजुल्लह गोलीसे घायल हुआ पर बच गया। इस समय उस कपटीका चलाजाना भी अच्छाही हुआ। वह यदि लड़ाईके बीचमेंसे जाता तो लशकरके सरदार या तो बागी होजाते या पकड़े जाते। दैवयोगसे आमलोगोंमें वह 'लानतुल्लह' के नामसे मशहूर होगया और यह नाम गैबसे उसको मिला। इसलिये मैने भी उसका यही नाम रख दिया। आगे जहां जहां लानतुल्लह लिखा जावे वह उसीका नाम होगा।"

बागी जो लड़ाईसे भागे थे वह फिर नहीं सम्हल सके। लानतुल्लह भी उन सबके साथ भगा ही चला गया। बेदौलतके पास पहुचने तक जो २० कोस पर था कहीं न रुका।

सुन्दरका सिर—बादशाह लिखता है—"जब इस फतहकी खबर मेरे पास पहुंची तो मैने खुदाकी इस नई इनायतका बहुत धन्यवाद किया। शुभचिन्तकोंको जिन्होंने अच्छी सेवा की थी अपने पास बुलाया। दूसरे दिन सुन्दरका सिर मेरे सामने लाया गया। ऐसा विदित हुआ कि गोली लगतेही उसने अपने प्राण नरकके दूतोंको

सौंप दिये थे। उसकी लाश जलानेके लिये पासके एक गांवमें ले गये थे। उसमें आग लगानाही चाहते थे कि एक फौज दूरसे दिखाई दी। जलानेवाले पकड़े जानेके भयसे इधर उधर भाग गये। उस गांवका पटेल अपने मुजरेकेलिये उसका सिर काटकर खानआजमके पास लेगया क्योंकि यह गांव उसीकी जागीरमें था। खानआजम उसे मेरे पास लाया। वह अशुभ चेहरा दुरुस्त दिखता था। उसके कान कोई मोतियोंके लालचसे काट लेगया था। कुछ बिगडा न था। कुछ न मालूम हुआकि किसकी गोली उसके लगी। उसके मिट जानेसे बेदौलतने फिर कमर न बांधी। मानो उसकी दौलत हिम्मत और अक्ल यही हिन्दू कुत्ता था। जब वह मुझ जैसे बापके साथ, जिसने उसे पैदाकिया और पालकर बादशाह बनाया, किसी चीज को उससे अच्छा न समझा, ऐसा करे तो खुदाके इनसाफसे कभी बेहतरीका मुंह न देखेगा।

अमीरोंका मनसब बढ़ना—जिन लोगोंने इस लड़ाईमें अच्छा काम किया था उन्होंने अपने दरजेके मुवाफिक ज्यादासे ज्यादा मेहरबानियोंसे सरफराजी पाई। ख्वाजा अबुलहसनका मनसब पांचहजारी होगया। नवाजिशखांने चार हजारी ३००० सवारका और बाकरखांने तीन हजारी ५०० सवारोंका मनसब और नक्कारा पाया।

इब्राहीमहुसैन काशगरीका मनसब दोहजारी १००० सवार, नूरुद्दीनकुलीका दो हजारी ७०० सवार, राजा रामदासका दो हजारी १००० सवार, लुतफुल्लहका डेढहजारी ५०० सवार और परवरिशखांका हजारी ५०० सवारका हुआ। सबका समाचार लिखनेसे बहुत तूल होगा।

उस दिन वहीं मुकाम रहा, दूसरे दिन कूच हुआ। खानआलमने इलाहाबादसे आकर चौखट चूमी।

सरबुलन्दराय—१२ (चैत्र सुदी २ संवत् १६८०) को गांव भाने

के पास डेरे हुए। इस दिन सरबुलन्दराय(१)ने दक्षिणसे आकर चौखट चूमी। वह फूलकटारे सहित जड़ाऊ खासा खञ्जर पाकर और सरबुलन्द हुआ।

अबदुलअजीजखां तथा अन्य कई अमीर जो लानतुल्लहके साथ चले गये थे, बेदौलतसे पीछा छुड़ाकर बादशाहकी खिदमतमें आ गये। उन्होंने कहा—जब लानतुल्लह दौड़ा तो हमने जाना कि लड़नेके वास्ते घोड़ा बढ़ाया है। फिर जब हम बागियोंमें पहुंच गये तो उनको राजी रखनेके सिवा और कोई उपाय न था। हमने बेदौलतसे २००० मोहरें मदद खर्चके वास्ते लेली थीं। तो भी काबू पाकर भाग आये हैं। बादशाह लिखता है—"विशेष पूछताछ करनेका समय न था इसीसे उनकी बात सच समझ ली गई।"

१८ (चैत्र सुदी ८) को शरफेआफताब (मेष संक्रान्ति) का दिन था। बहुतसे अमीरोंके मनसब बढ़े और उनके ऊपर उचित इनायतें भी हुईं।

मीर अजदुद्दौलाका कोष—अजदुद्दौलाने आगरेसे आकर एक कोष बादशाहको दिखाया। बादशाह लिखता है—बेशक बड़ी मेहनत की है। खोज खोजकर सामयिक शब्द पुराने विद्वानोंकी कविताकी साक्षीसे संग्रह किये हैं। कोषका ऐसा ग्रन्थ न देखा था।

राजा जयसिंह—राजा जयसिंहका मनसब तीन हजारी १००० सवारोंका होगया।

अमानुल्लहको खानाजादखांका खिताब—महाबतखांके बेटे अमानुल्लहको खानाजादखांका खिताब और चारहजारी ४००० सवार का मनसब इनायत हुआ।

उर्दी बहिश्त।

१ (वैशाख वदी ७) को बादशाहके डेरे फतहपुरके तालाब पर हुए।

एतबारखांको मुमताजखांका खिताब—एतबारखां आगरेमें

(१) रावरतन हाड़ा।

हाजिर हुआ। उसने आगरेके किलेकी रखवाली बहुत मेहनत और नमकहलालीसे की थी। इसलिये बादशाहने उसको मुमताज खांका खिताब, ६हजारी५०००सवारका मनसब, खिलअत, जड़ाऊ तलवार घोड़ा और खासा हाथी देकर उसी खिदमत पर विदा किया। मुकर्रमखां आदि कई अमीरोंके मनसब बढ़े जो आगरेसे आये थे!

मनसूर फरंगी—४ (बैशाख बदी १०) को मनसूर फरंगी और नौबतखां दक्षिणी बेदौलतको छोड़कर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होगये।

हिण्डौन—१० (बैशाख बदी १) को बादशाहकी सवारी हिण्डौनमें उतरी।

परवेजका आना—११ को भी वहीं मुकाम हुआ। इसी दिन परवेजके उपस्थित होनेका मुहूर्त था। इस लिये बादशाहने सब शाहजादों, अमीरों और बन्दोंको हुक्म दिया कि फौजों सहित पेश-वाईमें जाकर उस प्रतापी पुत्रको उचित आदरसे हुजूरमें लावें। दो पहर दिन आने पर उसने शुभमुहूर्तमें जमीन चूमनेका सौभाग्य पाया। जब वह कोरनिश, तीरे और तरतीबके आदाब अदाकर चुका तो बादशाहने उसको प्रेम पूर्वक छातीसे लगाया और बहुत कृपा और प्रीति प्रगट की।

बेदौलत—इन दिनों खबर पहुंची कि बेदौलतने आम्बेरके पास से निकलते हुए जो राजामानसिंहका वतन है, बहुतसे बदमाशोंको भेजा। उन्होंने उस बस्तीको लूट लिया।

मारवाली—१२ (बैशाखसुदी २) को गांव मारवालीमें डेरेहुए। बादशाहने हबशखांको अजमेरके महल दुरुस्त करनेके लिये पहले से भेज दिया।

शाह परवेज—बादशाहने परवेजको ४० हजारी ३००००सवार का मनसब दिया।

जगतसिंह—बादशाह यह सुनकर, कि बेदौलतने राजा बासूके

बेटे जगतसिंहको कहा है कि अपने वतनमें जाकर पंजाबके पहाड़ों में बलवा करे। उसको दण्ड देनेके लिये सादिकखां मीर बख्शी को पंजाबकी सूबेदारी पर भेजा। खिलअत हाथी तलवार तोग और नक्कारा देकर मनसब चार हजारी ३०००सवारोंका करदिया।

मिरजा बदीउज्जमांका मारा जाना—बादशाह लिखता है— मिरजा शाहरुखके बेटे मिरजा बदीउज्जमांको जो फतहपुरी कहलाता था उसके छोटेभाई बेखबरीमें मारकर दरगाहमें आगये और उसकी सगी मा भी आई। परन्तु जैसा कि चाहिये था अपने बेटेके खूनकी दावेदार न हुई और न शरईसबूत(१) पहुंचा सकी। उसका मिजाज ऐसा खराब था कि उसका मारा जाना अफसोस करनेके लायक न था वरञ्च समय और राज्यके विचारसे मुनासिब था। पर इन बेदौलतोंसे अपने पितातुल्य बड़े भाईके साथ ऐसा अनाचार हुआ जिसको अदालत नहीं सह सकती थी। इसलिये मैंने हुक्म दिया कि अभी यह लोग कैद रहें। पीछे जैसा उचित होगा किया जायगा।

राजा गजसिंह—२१ (वैशाख सुदी १२) को राजा गजसिंह और राय सूरजसिंहने अपनी अपनी जागीरोंसे आकर रकाबचूमी।

बेदौलत पर परवेज—२५ (ज्येष्ठ बदी १) को बादशाहने शाहजादे परवेजको सेना सहित बेदौलतके पीछे जाने और दण्ड देने पर नियत किया। कामोंका पूरा अधिकार महाबतखांको दिया। खानआलम, महाराजा गजसिंह(२), फाजिलखां, रशीदखां, राजा गिरधर, राजा रामदास कछवाहा, ख्वाजा मीर अबदुलअजीज, अजीजुल्लह, असदखां, परवरिशखां, इकरामखां, सैयद हिजबरखां, लुतफुल्लह, राय नारायणदास आदिको ४०००० सवार, एक बड़े तोपखाने और २० लाख रुपयेके खजाने सहित साथ किया। शुभ

(१) मुसलमानी धर्म्मशास्त्रके अनुसार साक्षी।

(२) यहांसे जोधपुर वालोंको महाराजाकी पदवी होना जाना जाता है। तुजुकजहांगीरी पृष्ठ ३६०

मुहूर्तमें शाहजादेको बिदा किया। फाजिलखां इस लश्करकी बख्शीगरी और विकायेनवीसी पर मुकर्रर हुआ। खासा खिलअत जरीकी सिली हुई नादिरी सहित, जिसके दामन और गिरीवानोंमें मोती टके हुए थे और ४०००० रुपयेकी लागतसे सरकारमें तय्यार हुई थी, जड़ाऊ तलवार खासा हाथी रतनगज नाम, हथनी और खासा घोडा बादशाहने शाहजादेको इनायत किया। यह सब सामान ७७०००) का था।

ऐसेही नूरजहां बेगमने भी खिलअत घोडा और हाथी दस्तूरके मुआफिक उसको दिया। महाबतखां और दूसरे अमीरोंको भी उनके लायक हाथी घोडे और खिलअत मिले। शाहजादेके जिन जिन नौकरोंको बादशाह पहचानता था वह भी उचित इनायतसे सरफराज हुए।

इसी दिन मुजफ्फरखांने भी मीरबखशीका खिलअत पहना।

खुरदाद महीना।

दावरबख्शको गुजरातकी सूबेदारी।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ वदी ८) को खुसरोके बेटे शाहजादे दावरबख्शको गुजरातकी सूबेदारी इनायत हुई। खानआजम उसका अतालीक हुआ। शाहजादेको हाथी घोड़ा खिलअत जड़ाऊ खासा खञ्जर तोग और नक्कारा मिला। खानआजम और दूसरे बन्दों पर भी यथायोग्य कृपा हुई।

फाजिलखांके बदल जानेसे इरादतखां बख्शी हुआ।

बङ्गाले और उड़ीसेकी सूबेदारी—आसफखांको बङ्गाले और उड़ीसेकी सूबेदारी खासा खिलअत और जड़ाऊ तलवार सहित इनायत हुई। उसका बेटा अबूतालिब भी बापके साथ बिदा किया गया और उसको दो हजारी १००० सवारका मनसब मिला।

बादशाह अजमेरमें—८ मङ्गलवार(१) २८ रज्जब (ज्येष्ठसुदी १)

(१) असलमें लेखकके दोषसे मंगलकी जगह शनि और २८ की जगह १८ रज्जब लिखी है। तु० पृष्ठ ३६१ में।

को बादशाह अजमेर पहुंचकर आनासागर तालाब पर उतरा। शाहजादा दावरबख्श आठ हजारी २००० सवारके मनसबसे सरफराज हुआ। दो लाख रुपये खजानेसे उसके साथ जानेवाले लश्करकी मदद खर्चके वास्ते मिले और एक लाख रुपयेकी मदद खानआजमको दीगई।

गवालियर—तातारखां गवालियरके किलेकी हिफाजत पर भेजा गया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहको पांच हजारी ४००० सवारका मनसब मिला।

मरमयजमानीकी मृत्यु—आगरेमें बादशाहकी मा मरयमजमानीका देहान्त होगया।

जगतसिंह—राणाके बेटे जगतसिंहने वतनसे आकर जमीन चूमी।

बङ्गालेके हाथी—बङ्गालेके हाकिम इब्राहीमखां फतहजङ्गने ३४ हाथी भेजे थे वह बादशाहको भेट हुए।

बाकरखां अवधकी और सादातखां मयानदुआबकी फौजदारी पर नियत हुए।

तीर महीना।

गुजरातमें बादशाहकी फतह—१२ तीर (आषाढ सुदी ७) को गुजरातके मुतसद्दियोंकी अर्जीसे बादशाहकी फतह होनेकी खबर पहुंची। वह लिखता है—मैंने राणाको फतह करनेके इनाममें गुजरातका सूबा जो बडे बडे बादशाहोंका स्थान है बेदौलतको इनायत किया था और उसकी तरफसे उस मुल्ककी हुकूमत सुन्दर ब्राह्मण करता था। जब उसने खोटी मनशासे उसको हिम्मतखां, शिरजहखां, सरफराजखां वगैरहको बहुतसे बादशाही बन्दों सहित जो उस सूबेके जागीरदार थे अपने पास बुला लिया तो उसके भाई कन्हरको उसकी जगह रहने दिया। फिर सुन्दरके मारे जाने पर मडूका रास्ता लेकर गुजरातका मुल्क लानतुल्लहको जागीरमें दे

दिया। कन्हरको उस सूबेके दीवान आसफखां खजाने, तथा जड़ाऊ तखत और परदले सहित जो मेरी भेटके लिये ५ लाख और दो लाखमें तय्यार हुए थे बुलाया। तब सफीखांने बहुत अच्छा काम किया जो जाफरबेगका भाई है और जिसने मेरे बापसे आसफखां का खिताब पाया था। एक लडकी मेरे इस आसफखांकी बेदौलत के घरमें है और दूसरी उससे छोटी इसके घरमें। बेदौलत इस प्रसंगसे अपनी तरफदारीकी उम्मेद उससे रखता था। परन्तु उसकी किस्मतमें अमीर होना लिखा था इसलिये जब लानतुल्लहका गुलाम वफादार नाम थोडेसे आदमियोंके साथ अहमदाबादमें आ बैठा तो सफीखांने कुछ नौकर रखे और कुछ लोगोंको राजी करके साथ लिया। वह कन्हरके निकलनेसे थोडे दिन पहले शहरसे निकल कर कांकरिया तालाब पर जा उतरा और वहांसे महमूदाबादमें चला गया। यह मशहूर किया कि बेदौलतके पास जाता हूं। फिर ताहिरखां, सैयद दिलेरखां, नानूखां पठान और दूसरे खैरख्वाह बन्दोंसे जो अपनी अपनी जागीरोंमें थे लिखापढी करके उन्हें गांठ लिया और मौका देखने लगा। पर बेदौलतके नौकर सालह को जो सरकार फलादका थानेदार था आशङ्का हुई कि सफीखांका औरही इरादा है। कन्हरने भी यह भेद पा लिया। सफीखां लोगोंको तसल्ली देकर ऐसी होशियारीसे रहता था कि वह लोग कुछ नहीं कर सकते थे। सालह यह सोचकर कि कहीं सफीखां खजाने पर हाथ न मारे १० लाख रुपये मांडूमें बेदौलतके पास ले गया। कन्हर भी उसके पीछेही परदला लेकर चल दिया। पर तखत न लेजा सका जो बहुत भारी था। सफीखां अवकाश पाकर महमूदाबादसे 'करीज' के परगनेमें जो सीधे रास्तेसे बायेंको है नानूखांके पास चला गया। नाहरखां आदिको चिट्ठिया लिखकर यह बात ठहराई कि जागीरोंसे अपने अपने आदमियोंके साथ सवार होकर तडकेही अपनी अपनी तरफके शहरके दरवाजों पर पहुंच जावें। आप अपनी औरतोंको उसी परगनेमें छोड़कर

को बादशाह अजमेर पहुंचकर आनासागर तालाब पर उतरा। शाहजादा दावरबख्श आठ हजारी २००० सवारके मनसबसे सरफराज हुआ। दो लाख रुपये खजानेसे उसके साथ जानेवाले लशकरकी मदद खर्चके वास्ते मिले और एक लाख रुपयेकी मदद खानआजमको दीगई।

गवालियर—तातारखां गवालियरके किलेकी हिफाजत पर भेजा गया।

राजा गजसिंह—राजा गजसिंहको पांच हजारी ४००० सवार का मनसब मिला।

सरभयजमानीकी मृत्यु—आगरेमें बादशाहकी मा सरयमजमानी का देहान्त होगया।

जगतसिंह—राणाके बेटे जगतसिंहने वतनसे आकर जमीन चूमी।

बङ्गालेके हाथी—बङ्गालेके हाकिम इब्राहीमखां फतहजङ्गने ३४ हाथी भेजे थे वह बादशाहकी भेट हुए।

बाकरखां अवधकी और सादातखां मयानदुआबकी फौजदारी पर नियत हुए।

तीर महीना।

गुजरातमें बादशाहकी फतह—१२ तीर (आषाढ सुदी ७) को गुजरातके मुतसद्दियोंकी अर्जीसे बादशाहकी फतह होनेकी खबर पहुंची। वह लिखता है—मैंने राणाको फतह करनेके इनाममें गुजरातका सूबा जो बड़े बडे बादशाहोंका स्थान है बेदौलतको इनायत किया था और उसकी तरफसे उस मुल्ककी हुकूमत सुन्दर ब्राह्मण करता था। जब उसने खोटी मनशासे उसको हिम्मतखां, शेरजङ्गखां, सरफराजखां वगैरहको बहुतसे बादशाही बन्दों सहित जो उस सूबेके जागीरदार थे अपने पास बुला लिया तो उसने भाई कान्हरको उसकी जगह रहने दिया। फिर सुन्दरके मारे जाने पर मंडूका रास्ता लेकर गुजरातका मुल्क सानतुल्लहको जागीरमें दे

दिया। कान्हरको उस सूबेके दीवान आसफखां खजाने, तथा जड़ाऊ तख्त और परदले सहित जो मेरी भेटके लिये ५ लाख और दो लाखमें तय्यार हुए थे बुलाया। तब सफीखांने बहुत अच्छा काम किया जो जाफरबेगका भाई है और जिसने मेरे बापसे आसफखां का खिताब पाया था। एक लडकी मेरे इस आसफखांकी बेदौलत के घरमें है और दूसरी उससे छोटी इसके घरमें। बेदौलत इस प्रसंगसे अपनी तरफदारीकी उम्मेद उससे रखता था। परन्तु उसकी किस्मतमें अमीर होना लिखा था इसलिये जब लानतुल्लहका गुलाम वफादार नाम थोडेसे आदमियोंके साथ अहमदाबादमें आ बैठा तो सफीखांने कुछ नौकर रखे और कुछ लोगोंको राजी करके साथ लिया। वह कान्हरके निकलनेसे थोड़े दिन पहले शहरसे निकल कर कांकरिया तालाब पर जा उतरा और वहांसे महमूदाबादमें चला गया। यह मशहूर किया कि बेदौलतके पास जाता हूं। फिर नाहिरखां, सैयद दिलेरखां, नानूखां पठान और दूसरे खैरख्वाह बन्दोंसे जो अपनी अपनी जागीरोंमें थे लिखापढी करके उन्हें गांठ लिया और मौका देखने लगा। पर बेदौलतके नौकर सालह को जो सरकार फलादका थानेदार था आशङ्का हुई कि सफीखांका औरही इरादा है। कान्हरने भी यह भेद पा लिया। सफीखां लोगोंको तसल्ली देकर ऐसी होशियारीसे रहता था कि वह लोग कुछ नहीं कर सकते थे। सालह यह सोचकर कि कहीं सफीखां खजाने पर हाथ न मारे १० लाख रुपये मांडूमें बेदौलतके पास ले गया। कान्हर भी उसके पीछेही परदला लेकर चल दिया। पर तख्त न लेजा सका जो बहुत भारी था। सफीखां अवकाश पाकर महमूदाबादसे 'करीज' के परगनेमें जो सीधे रास्तेसे बायेंको है नानूखांके पास चला गया। नाहरखां आदिको चिट्ठियां लिखकर यह बात ठहराई कि जागीरोंसे अपने अपने आदमियोंके साथ सवार होकर तड़केही अपनी अपनी तरफके शहरके दरवाजों पर पहुंच जावें। आप अपनी औरतोंको उसी परगनेमें छोड़कर

नानूखांके साथ दिन निकलनेसे पहले शहरके पास पहुंच गया। कुछ देर बागशाबानमें ठहरा। अभी नाहरखां आदि पहुंचे भी न थे कि दरवाजे खुलतेही यह सारंगपुर दरवाजेसे शहरसे घुस गया। साथही नाहरखां भी दूसरे दरवाजेसे दाखिल हुआ। लानतुल्लहके ख्वाजासराने बादशाही इकबालका यह पलटा देखा तो मियां वजीहुद्दीनके पोते शेख हैदरकी शरण गया। बन्दोंने विजय के बाजे बजाकर किला सजाया और कुछ लोगोंको बेदौलतके दीवान तकी और बखशी हमनबेगके घरों पर भेजकर उन्हें पकड़ा। शेख हैदरने खुद आकर सफीखांसे कह दिया कि लानतुल्लहका ख्वाजासरा मेरे घरमें है। वह भी वहांसे बंधवा मंगवायागया। इसी तरह बेदौलतके सब नौकरोंको कैद करके शहरका बन्दोबस्त किया। वहे जड़ाऊ सिंहासन, दो लाख रुपये और सब सामान बेदौलत और उसके लोगोंका जो शहरमें था बादशाही बन्दोंके हाथ आया।

बेदौलतको जब यह खबर पहुंची तो लानतुल्लहको हिम्मतखां, शिरजाखां, सरफ़राजखां, काबिलबेग, रुस्तमबहादुर, सालहबदखशी और दूसरे बागी बादशाही बन्दों और अपने नौकरों सहित पांच हजार सवार देकर अहमदाबाद पर भेजा। सफीखां और नाहरखां ने यह सुना तो सिपाहियोंको तसल्ली देकर फौज जमा की। जो रुपये हाथ आये थे वह और वह तख्त तोड़कर नये पुराने सिपाहियोंको बांट दिया। ईडरके राजा कल्याण, लालकोलीके बेटे और आसपासके सब जमींदारोंको शहरमें बुलाकर अच्छी भर्ती करली। लानतुल्लह मददका रास्ता न देखकर ८ दिनमें मांडूसे बड़ौदे पहुंचा। बादशाही बन्दोंने शहरसे बाहर आकर कांकरिया ताल पर छावनी डाली। लानतुल्लहने अपने मनमें यह जाना था कि जल्दी पहुंचनेसे शुभचिन्तक बिखर जायंगे। परन्तु जब उनका बाहर निकलना सुना तो बड़ौदेमेंही मदद पहुंचने तक रुक गया। जब सब बागी उससे आमिले तो आगे बढ़ा। शुभचिन्तक भी

कांकरियासे कूच करके गांव तेवेमें कुतुबआलमकी कबरके पास जा उतरे। लानतुल्लह तीन दिनका रास्ता दो दिनमें काटकर बडौदेसे महमूदाबादमें पहुंचा। सईद दिलेरखां, शिरजाखांकी औरतें बड़ौदेसे पकड़कर शहरमें लेआया था और सरफराजखांकी औरतें भी शहरमें थीं इसलिये सफीखाने दोनोंके पास पोशीदा आदमी भेजकर कहलाया कि जो भाग्यबलसे कलङ्कका टीका अपने ललाट परसे मिटाकर शुभचिन्तकोंमे आजाओगे तो दोनों लोकमें मुंह उजला रहेगा नहीं तो तुम्हारे बालबच्चोंको पकडकर तरह तरहसे कष्ट दूंगा। लानतुल्लहने इस बातकी खबर पाकर सरफराजखांको एक बहानेसे बुलाकर कैद कर दिया और शिरजाखां, हिम्मतखां तथा सालह.बदखशी आपसमे मिलेजुले रहते थे और एक जगहही उतरा करते थे इस वास्ते शिरजाखांको न पकड सका।

२१ शाबान (आषाढ़ बदी ८) को लानतुल्लहने सवार होकर अपनी फौजें सजाईं। शुभचिन्तकोंने भी परे जमाये और लडनेको तैयार हुए। लानतुल्लह अपने दिलमें यह समझे हुए था कि मेरे आनेसे यह लोग हिम्मत हार देंगे और विना लडेही इधर उधर चले जायंगे। परन्तु जब उसने इनको अपनी जगह पर जमा हुआ देखा तो ठहर न सका और बायें हाथकी तरफ घोडेकी बाग मोड़कर बोला कि यहां तो जमीनके नीचे बारूद बिछी हुई है, अपने आदमी मारे जायंगे। सरखीजमें चलो वहां लडेंगे। इसमें भी बादशाही इकबालकी खूबी थी क्योंकि उसके बाग फेरतेही उसके भागने की अवाई उड गई और बादशाही बहादुरोंने उसका पीछा कर दिया। जिससे वह सरखीचमें तो नहीं पहुंच सका गांव मरींचेमें उतर पडा। यह लोग मालोदेसें जो ३ कोस पर था रहे। दूम रेदिन फौजें सजाकर लड़नेको गये। हिरावलसे नाहरखां ईडरका राजा कल्याण और दूसरे बहादुर लोग थे। चरनगारसें सैयद दिलेरखां सैयद सीदू और दूसरे बन्दे थे। बैरुनगार सें नानूखां, सैयद याकूब सैयद गुलाममुहम्मद वगैरह थे। कोलमें सफीखा किफायतखां

बखशी और दूसरे सेवक थे। खानतुल्लह जहां उतरा था वहां नीची ऊंची जमीन थी थूहरका बन और रास्ता तङ्ग था। इस सबबसे उसके लशकरका परा ठीक तरहसे न जमा। उसने कितनेही कामके आदमियोंको रुस्तम बहादुरके साथ आगे कर दिया था। हिम्मत-खां और सालहबेग भी अगली अनीमें थे। पहले नाहरखां और हिम्मतखांकी मुठभेड़ होकर खूब लड़ाई हुई। हिम्मतखां बन्दूकसे मारा गया—सालहबेगका मुकाबिला नानूखां, सैयद याकूब, सैयद गुलाममुहम्मद और दूसरे बन्दोंने किया। ऐन कटाछनीमें सैयद गुलाममुहम्मदके हाथोंने मुहरा करके सालहको घोड़ेसे गिरादिया। वह जखमोंसे चूर होकर मरा और १०० आदमी उसके बचानेमें काम आये।

बागियोंकी फौजके आगे जो हाथी था वह इस समय बाणकी गर्जना और बन्दूकोंकी बाड़ोंसे भडककर पीछेको मुड़ा और थूहरों की एक तंग गलीमें फंसकर उसने बहुतसे नालायकोंको मारडाला। खानतुल्लहको हिम्मतखां और सालहबेगके मारे जानेकी खबर न थी। इसलिये उसने उनकी मददके इरादेसे घोड़े उठाये। हिरा-वलके सिपाही जो अकसर जखमी होगये थे उसके आनेसे घबरा कर पीछेको हटे और नजदीक था कि कोई बड़ी हानि पहुंचे परन्तु ईश्वरने सहायता की। सफीखां गोलमेंसे हिरावलकी मदद को दौड़ा। इतनेमेंही हिम्मतखां और सालहके मारेजानेकी खबर खानतुल्लहको लगी और उधरसे सफीखां और गोलकी फौजको आते हुए देखा तो उसका जमा हुआ पांव उखड़ गया। भागतेही बना। सैयद दिलेरखांने एक कोस तक पीछा करके बहुत बागी मारे। नमकहराम काबिलबेग बहुतसे बदमाशों सहित अपने कियेको पहुंचा।

खानतुल्लहको सरफराजखांका भरोसा न था इसलिये उसे बेड़ि योंमें जकड़कर एक हाथी पर बैठाया था और अपने एक गुलामसे कह दिया था कि जो हार होती देखे तो उसको मार डाले और

ऐसेही सुलतान अहमदके बेटे बहादुरके पांवमें बेड़ी डालकर दूसरे हाथी पर चढ़ाया था और उसके मार देनेका भी हुक्म देदिया था। जब भागड़ पडी तो सुलतानके बेटे पर जो आदमी रखा गया था उसने तो उसको जमधरसे मार डाला पर सरफराजखां हाथीसे कूद पड़ा। उस गडबड़में उस गुलामने उसके एक जखम तो लगाया पर कारी न लगा। सफीखांने उसको रणमें पड़ा पाकर शहरमें भेज दिया।

लानतुल्लहने बड़ौदे तक घोडा न रोका। मिरजाकी औरतें शुभचिन्तकोंकी कैदमें थीं इसलिये वह आकर सफीखांसे मिला।

लानतुल्लह बडौदेसे भिरोंचको गया। हिम्मतखांके बेटोंने जो किलेमें थे उसे अन्दर तो नहीं आने दिया परन्तु पांचहजार महमूदी खर्चके वास्ते उसके पास भेज दीं। वह तीन दिन बुरी हालत में किलेके बाहर पडा रहा, चौथे दिन दरियाके रास्ते सूरतमेंपहुंचा। यह बन्दर बेदौलतकी जागीरमें था इस लिये ४ लाख महमूदी तो उसके मुसद्दियोंसे लीं और जो कुछ जुल्म जबरदस्तीसे हाथ लगा वह लेकर फिर अभागे बागियोंको जमा किया और बुरहानपुरमें बेदौलतसे जा मिला।

सफीखां और दूसरे नमकहलाल बन्दोंसे जो गुजरातमें थे ऐसी अच्छी खिदमत बन आई। वह तरह तरहकी इनायत और नवाजिशसे सरफराज हुए। सफीखांका मनसब सातसदी तीनसौ सवारोंका था मैंने तीन हजारी दो हजार सवारोंका करके उसे सैफखां जहांगीरशाहीके खिताब, झंडे और नक्कारेसे सरफराजी बख्शी। नाहरखांका मनसब हजारी दोसौ सवारका था वह भी तीन हजारी दो हजार सवारोंका करके शेरखांके खिताब, घोडे, हाथी और जडाऊ तलवारकी इनायतसे उसकी इज्जत बढ़ाई।

शेरखां—शेरखां रायसेन और चंदेरीके हाकिम पूर्णमलके भाई नरसिंह देवका पोता था। जब शेरखा पठानने किले रायसेनको

(१) गुजराती मोहर।

घेरा और उसे वचन भंग करके मारा जैसा कि मशहूर है तो उस की रानियां हिन्दुओंके दस्तूरके मुआफिक जौहर करके आगमें जल मरीं। जिससे उनका पतिव्रत परपुरुषके हाथसे नष्ट न हो। उसके बेटे और बिरादरीवाले इधर उधर चले गये। नाहरखांका बाप जिसका नाम खानजहां था आसेर और बुरहानपुरके हाकिम मुहम्मदखां फारूकीके पास जाकर मुसलमान होगया। जब मुहम्मद खां मरा और उसका बेटा हसन छोटी उमरमें उसकी जगह बैठा, तो मुहम्मदखांका भाई राजीअलीखां उस बालककी कैदकरके राज्य करने लगा। कुछ दिन पीछे उसे खबर लगी कि खानजहां और मुहम्मदखांके बहुतसे नौकरोंने एका करके यह बात ठहराई है कि उसे तो मार डालें और हसनखांको किलेसे निकालकर हुकूमत पर बैठा दें। राजा अलीखांने फुरती करके हयातखांको बहुतसे बहादुरों सहित खानजहांके घर पर भेजा कि उसे या तो जीता पकड लावें या मार डालें। वह अपनी इज्जतके वास्ते लडनेको खड़ा हुआ और जब काम कठिन देखा तो जौहर करके अपनी जानसे गुजर गया। उस वक्त नाहरखां बहुत छोटा था हयातखां हबशीने राजीअलीखांसे अर्ज करके उसे अपना बेटा बनाया और मुसलमान कर लिया। उसके मरने पर राजीअलीखांने नाहरको पाला। जब मेरे बापने आसेरका किला फतह किया तो नाहरखां उनकी खिदमतमें पहुंचा। उन्होंने उसको लायक देखकर एक लायक मनसब दिया और मुहम्मदपुरका परगना जो गुजरातमें है उसकी जागीरमें इनायत किया। फिर इसने मेरी खिदमतमें ज्यादा से ज्यादा तरक्की की। अब अपनी नमकहलालीका इनाम जैसा कि चाहिये था पाया।

बारेके सैयद—सैयद दिलेरखां बारेके सैयदोंमेंसे है। पहले इस का नाम सैयद अबदुलवहाब और मनसब एकहजारी ८०० सवारों का था। अब दो हजारी १२०० सवारोंका मनसब और झण्डा पाकर सरफराज हुआ है। मयान दोआब (गङ्गा जमनाके बीच)

के १२ गांवोंमें जो पास पास बसते हैं इन सैयदोंका वतन है जिससे बारहके सैयद मशहूर हैं। बाजे लोग इनके सही सैयद होनेमें बातें बनाते हैं मगर इनकी बहादुरी सैयद होनेकी पक्की दलील है। इस सलतनतमें कोई ऐसी लडाई नहीं हुई है जिसमें इन सैयदोंने अपना नाम न किया हो। मिरजा अजीज कोका हमेशा कहा करता था कि बारहके सैयद इस बादशाहतके बलागरदानान (बलिदान) हैं। सचमुच ऐसाही है।

नानूखां पठानका मनसब ८ सदी ८०० सवारोंसे डेढहजारी १२०० सवारोंका कर दिया गया। ऐसेही दूसरे नमकहलाल बंदे अपनी अपनी खिदमतके बमूजिब बड़े बड़े मनसब पाकर मुरादको पहुंचे।

खानजहांका बेटा असालतखां शाहजादे दाराबख्शकी मदद पर गुजरातके सूबेमें तैनात हुआ और नूरुद्दीनकुली, शिरजाखां, सरफ़राजखां तथा बागी लशकरके दूसरे सरदारोंके लानेको भेजा गया जो पकडे गये थे।

शाहनवाजखांका बेटा मनूचहर बेदौलतको छोड़कर शाहपरवेज से आ मिला।

शेरका शिकार—बादशाह एक शेरकी खबर सुनकर शिकार-गाहको गया। जंगलमें ३ शेर और मिले चारोंको मारकर दौलतखानेमें आगया। वह लिखता है—"मेरी तबीयत शेरके शिकार पर ऐसी लगी हुई है कि जबतक वह न होजाय दूसरा काम नहीं करने देती। सुलतान महमूद गजनवीके बेटे सुलतान मसऊदको भी शिकारकी बड़ी लत थी। उसके शेर मारनेकी तवारीखमें अजब अजब बातें लिखी हैं। 'तवारीख बोहकी'के कर्त्ताने जो बातें इस सम्बन्धमें आंखोंसे देखीं वही रोजनामचेके तौर पर लिखी है। वह लिखता है—एक दिन सुलतान हिन्दुस्थानकी सरहदमें शिकारको गया। हाथी पर सवार था। बहुत बड़ा शेर जंगलसे निकलकर हाथी पर आया। सुलतानने एक ईंट फेंक

कर उसकी छाती पर मारी। दर्द और गुस्सेमें शेर हाथीकी पीठ पर चढ़ गया। सुलताननें घुटनोंके बल खड़े होकर ऐसी तलवार मारी कि दोनों हाथ शेरके कट गये। शेर पीछेको गिरा और मर गया—" मुझे भी शाहजादगीके दिनोंमें ऐसाही इत्तफाक पड़ा। मैं पञ्जाबकी सरहदमें शिकारको गया था। एक बड़ा शेर जङ्गलसे निकला। मैंने हाथी परसे बन्दूक मारी। शेर गुस्से होकर उछला और हाथीके पुट्ठे पर आचढ़ा। मुझे इतनी फुरसत न मिली कि बन्दूक रखकर तलवारका वार करूं। बन्दूककी नाल सम्हाल कर मैं घुटनोंके बल खड़ा हुआ। दोनों हाथोंसे इस जोरसे नाल उसके सिर पर मारी कि उसकी चोटसे वह जमीन पर गिर पडा और मर गया। इससे भी अजब बात यह है कि कौलके पहाड़में एक दिन भेड़ियेके शिकारको गया। हाथीपर सवार था। एक भेड़िया आगेसे निकला। मैंने उसके कानकी नोक पर तीर मारा। जो बेंतभर घुस गया। वह उसी तीरसे गिरा और मरा। बहुत ऐसा हुआ है कि कडी कमानोंके खेंचनेवाले जवानोंने बीस बीस तीस तीस तीर मारे हैं और शिकार नहीं मरा है। पर अपनी बात आपही लिखना अच्छा नहीं लगता है इसलिये मैं ऐसे वृत्तान्तोंसे कलम रोकता हूं।

जगतसिंह—२८ (सावन बदी ८) को राना करणके बेटे जगतसिंहको मोतियोंकी माला इनायत हुई।

पगली—पगलीका जमींदार सुलतानहुसैन मर गया था। बादशाहने उसकी जागीर उसके बड़े बेटे शादमानको देदी।

अमरदाद महीना।

खुर्रम पर फतह—७ अमरदाद (सावन सुदी ३) को शाह परवेजके लश्करसे उसके नौकर इब्राहीमहुसैनने पहुंचकर फतहकी खुशखबरी सुनाई और परवेजकी अर्जी जिसमें सब हाल लिखा था बादशाहकी खिदमतमें पेश की। उसका खुलासा यह है—जब परवेज घाटी चांदासे उतरकर मालवेमें पहुंचा तो बेदौलत बीस

हजार सवार ३०० जङ्गी हाथी और एक बड़े तोपखानेके साथ मंडू से लडनेको आया । उसने दक्षिणके बरगियोंको जादूराय उदयराम और आतशखां वगैरहके साथ पहलेसे विदा करदिया था कि बादशाही लशकरमें यह चक्कर लूट मार करें । महाबतखांने परा जमाकर शाहजादेको गोलमें रखा और सारी फौज सजाकर उतरने चढनेमें खूब खबरदारी बरती । बरगी दिखाई तो देते थे परन्तु सामने नहीं आते थे । एक दिन मंसूरखां फरंगीकी बारी चन्दावलीकी थी । लशकर उतरनेके समय महाबतखां सावधानीके लिये पराजमाकर लशकरके बाहर खड़ा होगया । जिससे सब लोग दिलजमईसे उतर जावें । मंसूरखां रास्तेमें प्याला पीकर झूमता हुआ मंजिल पर आपहुंचा था कि इतनेमें दूरसे एक फौज दिखाई दी । उसको नशेकी तरंगमें धावा करनेकी सूझी । उसने न तो भाइयों से कहा न अपने लोगोंको खबर की और सवार होकर दौड गया । दो तीन बरगियोंको मारता मारता वहां जापहुंचा जहां जादूराय और ऊदाराम दो तीन हजार सवारोंसे परा जमाये खडे थे । जैसा कि इन लोगोंका कायदा है इन्होंने हर तरफसे उसको घेर लिया । वह जबतक जीता रहा लडा । आखिर नमकहलाली करके काम आया ।

वेदौलतने बरगियोंको भेजे पीछे रुस्तमखां, तकी, बरकन्दाज खांको तोपचियोंके साथ भेजा था । फिर दाराबखां, भीम, बैरम और दूसरे कामके लोगोंको रवाने किया । उसका इरादा मैदान की लडाई लड़नेका न था । हमेशा पीछेको देखा करता था इसलिये मस्त और जंगी हाथियोंको नर्बदाके पार उतारकर छड़ी सवारोंसे दाराब और भीमके पीछे पीछे आता था । जब बादशाही लशकर कालियादहमें पहुंचा तो वेदौलत अपना तमाम लशकर बादशाही फौजके मुकाबिलेमें भेजकर खानखानां सहित एक कोस पीछे रह गया ।

महाबतखांने वेदौलतके कई अमीरोंको मिला लिया था । इस

लिये लशकरोंका सामाना होतेही बरकन्दाजखां बहुतसे बन्दूकचियों सहित दौड़कर महाबतखांके पास आगया। महाबतखांने शाहजादेके पास लेजाकर उसको खातिर करादी। इसका नाम बहाउद्दीन था जैनखांका नौकर था। उसके मरे पीछे बादशाहके रूमी तोपचियोंमें नौकर हुआ। आदमी मेहनती था और कुछ जमाअत भी साथ रखता था इसलिये बादशाहने परवरिश करके बरकन्दाजखांका खिताब दिया था। जब बेदौलत दक्षिणको जाता था तो उसको उस लशकरका मीरआतिश करके भेजा था। उसने पहले तो कलंकका टीका अपने माथे पर लगा लिया था परन्तु पीछे सम्हल गया और ठिकाने आगया।

उसी दिन बेदौलतका भरोसेवाला उमदा नौकर रुस्तमखां भी उसको बात बिगड़ती देखकर महाबतखांसे वचन लेके मुहम्मद मुरादबदखशी वगैरह अपने साथके मनसबदारों समेत शाहजादे परवेजके लशकरमें चला आया। बेदौलत यह खबर सुनतेही ऐसा घबराया कि उसे बादशाही बन्दोंका क्या अपने नौकरोंकाही भरोसा न रहा। वह अपने लोगोंके लौटालानेको आदमी भेजकर रातों रात नर्बदासे पार उतर गया। उस समय फिर उसके कई एक साथी सुभीता देखकर अलग होगये और शाहपरवेजके पास पहुंचकर उसको मेहरबानीमें दाखिल हुए।

नर्बदासे उतरते हुए बेदौलतको एक कागज महाबतखांका लिखा हुआ हाथ आया जो उसने जाहिदखांके जवाबमें लिखा था कि बादशाहकी इनायत और मेहरबानीका उम्मेदवार होकर जरूर चले आओ। उसे पढ़तेही उसने जाहिदखांको उसके तीन बेटों सहित पकड़कर कैद कर दिया। बादशाह लिखता है—जाहिद खां शुजाअतखांका बेटा है जो मेरे बापके विश्वासपात्र बन्दोंमेंसे था। मैंने इस नालायकको हकदार और खानाजाद होनेसे परवरिश करके खानके खिताब और डेढ़हजारी मनसब पर चढ़ाकर बेदौलतके साथ दक्षिणमें भेजा था। अब जो उस सूबेके अमीरोंको

कन्दहार भेजनेके वास्ते बुलाया तो इस कुपात्रको भी ताकीदी हुक्म भेजा था। पर यह दरगाहमें न आया और बेदौलतका साथी हो गया। जब बेदौलत दिल्लीकी तलहटीसे हारकर लौट गया तो वहां इसके बालबच्चे नहीं थे तो भी इसको बन्दगीमें पहुंचने और अपने ललाटसे कलंकका टीका मिटानेकी श्रद्धा न हुई। आखिर ईश्वरके कोपमें पकड़ा गया। बेदौलतने एक लाख तीस हजार रुपये नकद इसके धनमालमेंसे लेलिये!

बेदौलतने जल्दीसे नर्बदा पार होकर तमाम नावोंको उधर खेंच लिया और अपनी समझके मुवाफिक घाटोंको मजबूत करके निज बख्शी बैरमबेगको अपने मोतबिर आदमियों और बहुतसे दक्षिणी बरगियोंके साथ नदीके किनारे छोडा। तोपोंको सामने लगाकर आसेर और बुरहानपुरकी तरफ कूच कर दिया। इस वक्त उसका एक नौकर एक कासिदको पकड़कर उसके पास लेगया जिसे खानखानांने महाबतखांके पास भेजा था। जो खत कासिद के पास था उसके सिरेपर एक शेर लिखा था जिसका मतलब यह था—

सौ आदमी मुझे नजरोंमें रखते है
नहीं तो मैं बेचैनीसे उड़ जाता।

बेदौलतने उसे बेटों सहित घरसे बुलाकर उसका वह खत उसे दिखाया। उसने उजर तो बहुत किये लेकिन सुने जानेके लायक कोई जवाब न देसका। आखिर बेदौलतने उसको दाराब और दूसरे लड़कों समेत अपने डेरेके पास कैद कर दिया। बादशाह लिखता है—उसने जो यह कहा था कि सौ आदमी मुझे नजरोंमें रखते हैं वहीं उसके आगे आया।

बादशाहने इब्राहीमहुसैनको जो यह विजयसम्वाद लाया था खुशखबरखांका खिताब, खिलअत और हाथी दिया। शाहजादे और महाबतखांके नाम मेहरबानीके फरमान खवासखांके हाथ भेजे। परवेजको भरी मूल्यकी पहुंची और महाबतखांको जड़ाऊ

तलवार बखशी। महावतखांको इस उत्तम सेवाके लिये सातहजारी जात और सवारका मनसब इनायत किया।

सैयद सलावतखां बेदौलतको छोडकर बादशाहके पास आगया।

बादशाहने परवेजके वास्ते नादिरी सहित खिलअत और महाबतखांके लिये पगड़ी, दफतरखानेके दारोगा लालखांके हाथ भेजी।

सांपकी करतूत—बादशाह लिखता है—एकदिन मैं नीलगायके शिकारसे दिल बहला रहा था। एक सांप देखनेमें आया जो २॥ गज लम्बा और ३ गिरह चौड़ा था। वह आधे खरगोशको निगल गया था और आधेको निगल रहा था कि किरावल लोग उसे मेरे पास उठा लाये। खरगोश उसके मुंहसे गिरपड़ा। मैंने फरमाया कि फिर इसके मुंहमें डाल दो। लोगोंने बहुत जोर किया मगर न डाल सके। बहुत जोर करनेसे उसका जबड़ा भी फट गया। तब मैंने कहा कि इसके पेटको चीरो। चीरा तो दूसरा खरगोश समूचा उसके पेटसे निकला। ऐसे सांपको हिन्दुस्थानमें चीतल कहते हैं। यह इतना बड़ा होता है कि कोतापाचाको समूचा निगल जाता है। पर जहर इसमें नहीं होता है और न काटता है। एक दिन इसी शिकारमें मैंने एक नीलगाय बन्दूकसे मारी। उसके पेटमेंसे दो पूरे बच्चे निकले। सुना था कि नीलगायके बच्चोंका मांस बहुत मजेदार होता है इसलिये सरकारी बावरचियोंको दुप्याजा पकाकर लानेको कहा। खाया तो नर्मी और मजेसे खाली न था।

शहरेवर महीना।

१५ (भादों सुदी १४) को रुस्तमखां, मुहम्मद मुराद और बेदौलतके कई नौकर उससे फटकर शाहजादे परवेजके पास आगये। बादशाहने रुस्तमखांको पांच हजारी ४०० सवारका और मुहम्मद मुरादको हजारी जात ५०० सवारका मनसब दिया। रुस्तमखां बदखशांका रहनेवाला था उसका नाम यूसुफबेग था। रानाकी लड़ाईमें काम अच्छा देनेसे बेदौलतने उसको अपने सब नौकरोंसे

सुनकर अमीरोंके दरजे पर पहुंचाया और बादशाहसे रुस्तमखांका खिताब दिलवाया था।

नमकहरामोंको सजा—नूरुद्दीनकुली ४१ नमकहरामोंको बेड़ियोंमें जकड़कर अहमदाबादसे लाया जिनमेंसे बादशाहने शिरजाखां और काबिलबेगको मस्त हाथीके पांवमें डालकर मरवा दिया।

शहरयारके बेटी होना—२० शहरेवर ८(१) जीकाद (आश्विन बदी ४) को शहरयारके एतमादुद्दौलाकी नवासी(२)से लड़की पैदा हुई।

२२ (आश्विनबदी द्वितीय ५) को सौर तुलादानका उत्सव हुआ। बादशाह मामूलके मुआफिक सोने वगैरहमें तुला। ५५वां वर्ष लगा। तुलादानकी जमामेंसे २०००) शेख अहमद सरहिन्दीको इनायत किये।

महर महीना।

१ महर (आश्विन बदी ३०) को मीर जुमलाने तीनहजारी ३००० सवारका मनसब और गुजरातके बख्शी मुकीमने किफायत खांका खिताब पाया।

सरफराजखांके बेकसूर होनेका यकीन बादशाहके दिलमें हो गया। उसे जेलखानेमेंसे बुलवाकर उसका सलाम लिया।

शहरयारके घर जाना—बादशाह शहरयारकी अर्जसे उसके घर गया। उसने एक बडी मजलिस सजाकर उत्तम नजर दिखाई। अकसर बन्दोंको सिरोपाव भी दिये।

बेदौलतका बादशाही सरहदसे निकल जाना।

आसेरका किला जो मजबूतीमें मशहूर है पहले तो ख्वाजा फतहुल्लहके बेटे ख्वाजा नसरुल्लहको सौंपा हुआ था। फिर बेदौलतकी अर्जसे मीर हिसामुद्दीनको सौंपा गया। यह नूरजहां बेगमकी दुगाइका जमाई था। इसलिये जब बेदौलत दिल्लीके पास लडाईमें हार

---

(१) पंचाङ्गके हिसाबसे १६ जीकाद २० शहरेवरको थी।

(२) नूरजहांकी बेटी।

कर मांडूकी तरफ भागा तो नूरजहां बेगमने उसको ताकीदें लिख कर भेजी थीं कि हरगिज बेदौलत और उसके आदमियोंको किले के पास मत फटकने देना, बल्कि किले और कोटको सजाकर अपना फर्ज अदा करना, अपनी इज्जतमें बट्टा न लगाना।" किलेमें सामान भी बहुत था और उसका जल्दीसे फतह होजाना भी सम्भव न था। परन्तु जब बेदौलतने अपने नौकर शरीफाको उसके पास भेजा तो वह तरत उसको किला सौंपकर बेटों समेत बेदौलतके पास चला गया। बेदौलतने उसको चार हजारी मनसब झण्डा नक्कारा और मुरतिज़ाखांका खिताब देकर दीन और दुनियामें बदनाम किया। फिर खानखानां, दाराब और उसकी सब औलादको लेकर किले पर चढ़ा और तीन चार दिन वहां रहा। जब अनाज और किलेदारीके सब सामानोंसे दिलजमई होगई तो गोपालदास नाम राजपूतको जो पहले सरबुलन्दरायका नौकर था और दकन जाते वक्त उसका नौकर होगया था किला सौंपा। औरतों और फालतू असबाबको वहां छोड़ा तीनों व्याही बीबियों, बेटों और जरूरी लौंडियोंको साथ लिया। खानखाना और दाराबको पहले तो किलेमें छोड़नेका इरादा था पर फिर मत बदल गई और साथ लेकर बुरहानपुरको कूच किया।

लानतुल्लह भी सूरतसे आकर उससे मिल गया। उसने बड़ी घबराहटसे रायभोज हाड़ाके बेटे सरबुलन्दरायको बीचमें डालकर सुलहकी बात चलाई। महाबतखांने जवाब दिया कि जबतक खानखानां न आवे सुलह नहीं होसकती इससे उसका मतलब उस कपटियों और फसादियोंके सरदार खानखानांको बेदौलतसे अलग कर लेनेका था।

बेदौलतने लाचार खानखानांको कैदसे छोड़ा और उससे कुरान की कसम लेकर तसल्ली और वचन पक्का करनेके लिये उसको महल में लेगया। अपनी जोरू बच्चोंको उसके सामने लाकर बहुतसी लाचारी और आजजी की और कहा कि हमारे ऊपर बुरा वक्त

आपड़ा है काम मुशकिल होगया है मैं अपनेको तुम्हें सौंपता हूं। अब मेरी इज्जत आबरू बचाना तुम्हारे हाथ है। वह काम करना चाहिये कि जिसमें इससे ज्यादा खराबी न हो और मुझे फिर भटकाना न पड़े।

खानखानां सुलहके इरादेसे बेदौलतसे बिदा होकर बादशाही लशकरमें आया। यह बात ठहरी कि वह नदीके उधर रहकर सुलहको लिखा पढी करे। परन्तु खानखानांके नदी तक पहुंचने से पहलेही बादशाही लशकरके कुछ बहादुर जवान रातको काबू पाकर जिधर बागी लोग गाफिल थे उधरके घाटसे उतर गये। इससे बागियोंमें घबराहट पड गई और बैरमबेग उनके सामने न ठहर सका। उसके भागतेही सब लशकर बेदौलतका रातोंरात भाग गया। खानखानांको बड़ी हैरानी हुई। न जा सकता था न ठहर सकता था।

शाहजादे परवेजने लगातार कई कागज तसल्ली और मेहरबानी के भेजकर खानखानांको अपने पास बुलाया। खानखानांभी बेदौलत की हार और कमबख्ती देखकर महाबतखांकी मारफत परवेजसे जा मिला।

बेदौलत बादशाही फौजके नर्बदासे उतरने, बैरमबेगके भागने और खानखानांके चले जानेकी खबर सुनकर बरसते मेहमें मरहट(१) के रास्तेसे दक्षिणको चल दिया। इस गडबडमें बादशाही बन्दे और उसके नौकर साथ छोडकर अलग होगये। जादूराय ऊदाराम और आतिशखांके घर रास्तेमें थे इसलिये वह कई मंजिल तक सङ्ग रहे परन्तु जादूराय उसके लशकरमें न गया। एक मंजिल पीछे रहता था और लोगोंके असबाबको मालिकी करता था जिसको वह जानके डरसे छोडते जाते थे।

बेदौलत जिस दिन नर्मदासे उतरता था तो उसने अपने निज खिदमतगार जुलफिकारखां तुरकुमानको सरबुलन्दखां पठानके

(१) महाराष्ट्र देश।

लानेके लिये भेजकर उससे कहलाया था—"तू अबतक नदीसे क्यों नहीं उतरा है यह बात तेरी भलमनसी और सचाईसे बहुत दूर है जितनी तेरी बेईमानी मेरे दिलमें खटकती है उतनी और किसीको नहीं खटकती।" तुरकमानने जाकर जब यह सन्देसा उससे कहा तो उसने पूरा जवाब नहीं दिया और कड़वाईसे कहा कि मेरे घोडे का रास्ता छोड़दो। तुर्कमानने तलवार सूंत कर उसकी कमर पर मारी। पर एक पठानने बरछा बीचमें देकर झेल ली। तलवार के निकलतेही पठानोंने उमड़कर तुरकमानके टुकड़े टुकड़े कर डाले। बेदौलतके खजानची सुलतानमुहम्मदका बेटा भी मारा गया जो तुरकमानकी दोस्तीसे बेदौलतको पूछे बगैर साथ आया था।

बेदौलतका पीछा करनेका हुक्म—जब बादशाहने बेदौलतके बुरहानपुरसे निकलने और परवेजके बुरहानपुरमें पहुंचनेकी खबर सुनी तो खवासखांको परवेजके पास दौडाकर कहलाया कि कि इतने परही बस न करे बल्कि उसको जीता पकड ले या बादशाही सरहदसे निकाल दे। बादशाह यह भी सुना करता था कि जब बेदौलत इधरसे भागेगा तो कुतुबुल्मुल्कको अमलदारीमें होकर उडीसे और बङ्गालेमें आवेगा, यह बात सिपाहगरीके हिसाबसे ठीक भी थी। इसलिये बादशाहने होशियारीसे मिरजा रुस्तमको इलाहाबादकी सूबेदारी देकर बिदा किया कि यदि ऐसा हो तो यह उस समय वहां कुछ काम दे।

खानजहां—खानजहांने मुलतानसे आकर १००० मुहरें, लाख रुपयेका एक लाल एक मोती और दूसरी चीजें भेट कीं।

बीसवां वर्ष।

सन् १०३३ हिजरी।

कार्तिक सुदी ३ संवत् १६८० तारीख १६ अकतूबर सन् १६२३ से कार्तिक सुदी १ संवत् १६८१ तारीख १३ अकतूबर सन् १६२४ तक।

आबान महीना।

बेदौलतका कुतुबुल्मुल्कके मुल्कमें जाना—८ आबान (कार्तिक सुदी ९।१०) को खवासखां, शाहजादे और महाबतखांकी अर्जी लाया और बादशाहसे अर्ज की कि जब शाहजादा बुरहानपुर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मेहके मारे पीछे रह गये थे तो भी उसने हुक्म के मुताबिक फौरन नदीसे उतरकर बेदौलतके पीछे कूच करदिया। बेदौलत यह खबर सुनकर घबराया और जल्दी जल्दी चलने लगा। मेह, कीचड़, पानी और लगातार कूच करनेसे बारबरदारीके जानवर थक गये। जो आदमी रास्तेमें रह जाता था वह फिर नहीं लौटता था। ऐसेही जो चीज जहां रह जाती थी फिर नहीं मिलती थी। बेदौलतको अपनी, अपने बेटों और कबीलोंको जानके आगे मालकी कुछ परवा न थी। बादशाही लश्कर भंगारके घाटेसे उतर कर रनकोट तक जो बुरहानपुरसे ४० कोस है उसके पीछे गया। वह इस हालसे माहूरके किले तक पहुंचा और यह जानकर कि जादूराय ऊदाराम वगैरह दखनी सब यहांसे आगे उसके साथ नहीं जायंगे उनको बिदा किया। हाथी और दूसरा बोझ भार माहूरके किलेमें छोडकर ऊदारामको सौंपा और आप कुतुबुल्मुल्ककी विलायतकी तरफ चल दिया। जब उसका बादशाही सरहदसे निकल जाना भलीभांति मालूम होगया तो शाहजादा परवेज, महाबतखां आदि सब खैरखाहोंकी सलाहसे लौटा और १ आबान (कार्तिक सुदी १) को बुरहानपुरमें पहुंच गया।

बादशाहने मेहरबानीसे राजा सारंगदेवको फरमान समेत परवेजके पास भेजा।

कासिमखांका मनसब चारहजारी २००० सवारोंका होगया।

अलिफखां कयामखानी पटनेसे आया। बादशाहने उसे झण्डा देकर किले कांगड़ेकी रखवाली पर भेजा।

आजर महीना।

कशमीरको कूच—२ आजर (अगहन सुदी २।३) को बादशाह ने अजमेरसे कशमीरको कूच किया क्योंकि बेदौलतकी लड़ाई पूरी होचुकी थी और हिन्दुस्थानकी गर्मी उससे सही नहीं जाती थी।

आसफखां भी बंगालेसे आगया। उसकी बातोंके विना बादशाह का जी नहीं लगता था इसलिये उसके बुलानेका हुक्म भेजदिया था।

जगतसिंह—राणा करणका बेटा जगतसिंह खिलअत और जडाऊ खंजर पाकर अपने देशको बिदा हुआ।

परवेजकी अर्जी—राजा सारंगदेव, परवेज और महावतखांकी अर्जी लेकर आया जिसमें लिखा था कि बेदौलतकी मुहिमसे दिलजमई होगई है और दक्षिणके दुनियादारोंने भी तावेदारी कबूल कर ली है इसलिये हजरत इधरकी फिक्र छोडकर सैर और शिकार करें। बादशाही मुल्कोंमें जहांकी हवा मिजाजके मुवाफिक हो वहां तशरीफ लेजाकर अपना दिल खुश करें।

२० (पौष वदी ५) को मिरजावाली सिरोंजसे आया।

राजा गिरधरका मारा जाना—इन दिनों सूबे दक्षिणके बखशी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें राजा गिरधरके मारे जानेका हाल लिखा था। परवेजके नौकर सैयद कबीर नाम बारहके एक सैयदने अपनी तलवार बाड रखने और उजली करनेके लिये सीकलगरको दी थी जिसकी दुकान राजागिरधरके घरके पास थी। दूसरे दिन जब लेनेको आया तो मजदूरी देने पर तकरार होगई। सैयदके नौकरोंने सीकलगरके कई लाठियां मारदीं। राजाके आदमियोंने उनकी हिमायत करके उन लोगोंको पीटा। दो तीन

बारहके सैयद उधर रहते थे वह हल्ला सुनकर सैयदकी मददको आये। सैयदों और राजपूतोंमें बात बढ़कर लड़ाई छिड़ गई। तीर और तलवार चलनेकी नौबत पहुंची। सैयद कबीर खबर पाकर तीस चालीस सवारों सहित मददको पहुंचा। राजा गिरधर और उसके भाईबन्द राजपूत जैसा कि हिन्दुओंमें दस्तूर है हवेलीके अन्दर नंगे बदन खाना खारहे थे। राजाने सैयद कबीरके आने और सैयदोंकी जियादतीसे वाकिफ होकर अपने आदमियोंको हवेलीमें बुला लिया और किवाड लगा दिये। सैयद कबीर किवाडोंको आगसे जलाकर अन्दर घुस गया। लड़ाई हुई। यहां तक कि राजा गिरधर २६ नौकरों सहित मारा गया। ४० आदमी दूसरे जखमी हुए। ४ सैयद भी मारे गये। फिर सैयद कबीर राजाके तवेलेके घोड़े लेकर अपने घर चला गया।

राजपूत अमीर राजा गिरधरके मारे जानेकी खबर सुनतेही सेना लेकर अपने अपने डेरोंसे चढे। उधर बारहके तमाम सैयद, सैयदकबीरकी मददको दौड़े। किलेके मैदानमें बड़ा घमसान मचा। दोनो दलोंमें मुठभेड होनेवालीही थी कि महावतखां खबर पाकर फौरन वहां पहुंचा। सैयदोंको तो किलेमें छोड़ आया और राजपूतोंको जैसा कि उस वक्त मुनासिब था तसल्ली देकर कई सरदारों को खानआलमके डेरे पर लाया जो पासही था और फिर उसको समझाकर सैयदोंको सजा देनेका जिम्मा लिया। शाहजादा भी यह हाल सुनकर खानआलमके डेरोंमें आगया और राजपूतोंको तसल्ली देकर घर भेजा।

दूसरेदिन महाबतखांने राजागिरधरके घरपर जाकर उसके बेटोंको दिलासा दिया और सैयद कबीरको तदबीर और स्यानपनसे पकड कर कैद किया। मगर राजपूतोंको उसे मारे बिना तसल्ली न होती थी इसलिये कई दिन पीछे उसको कतलकी सजा देदी गई।

अजमेरकी फौजदारी—२३ (पौष बदी ८) को मुहम्मदमुराद सरकार अजमेरकी फौजदारी पर नियत हुआ।

दे महीना।

१० (पौष सुदी १०) को बादशाह रहीमाबादके परगनेमें शेर की खबर पाकर शिकारको गया। हाथी बढ़ाकर शेरको बन्दूकसे मारा। वह लिखता है—शाहजादगीसे अबतक जितने शेर शिकार हुए उनमें ऐसा बड़ा और सुडौल शेर कोई न देखा गया था। २०॥ मन जहांगीरी तोलमें उतरा। लम्बा साढे तीन गज और २ तसू हुआ। मैंने चितेरोंको हुक्म दिया कि इसकी तसवीर डौल डौलके मुवाफिक खेंचदें।

१६ (माघ बदी १) को अर्ज हुई कि आगरेका हाकिम मर गया। उसने ५६ साल बादशाही नौकरी की। बादशाने मुकर्रिब खांको उसकी जगह नियत करके आगरे भेजा।

मथुरा—बादशाह फतहपुर होकर मथुरामें आया। वहां २२ (माघ बदी ७) को चन्द्र तुलादानका उत्सव हुआ। इस पचसे ५७ वां वर्ष लगा।

मथुराके निकट बादशाह नावमें बैठा और यमुनाके मार्गसे चला। मार्गमें शिकारकी खबर लगी। एक शेरनी तीन बच्चों सहित निकली। बच्चे बहुत छोटे थे। वह बादशाहने हाथसे पकड़ लिये और शेरनी बन्दूकसे मारदी।

गंवारोंको सजा—बादशाहसे अर्ज हुई कि जमना पारके गंवार और जमींदार चोरीधाडा नहीं छोड़ते हैं और घने जंगलोंकी आड़ में रहकर जागीरदारोंको माल भी नहीं देते हैं। बादशाहने खान जहांको उनके दण्ड देनेका हुक्म दिया। दूसरे दिन फौज जमना से उतरकर दौड़ी गई। वह भागनेकी फुरसत न पाकर लड़नेको सामने आये और जमकर लड़े। बहुतसे मारे गये। उनकी औरतें और बच्चे कैद हुए। फौजको खूब लूट हाथ आई।

बहमन महीना।

कन्नौज—१ (माघ बदी ३०) को रुस्तमखां सरकार कन्नौजकी फौजदारी पर भेजा गया।

अबदुल्लहको सजा—२ (माघ सुदी १।२) को बादशाहने हकीम नूरुद्दीन तुहरानीके बेटे अबदुल्लहको अपने रूबरू बुलाकर सजादी। जब शाह ईराननें इसके बापको माल और जरके वास्ते पकड़कर तकलीफ दी थी तो यह वहांसे भाग आया था। बादशाहने इसको ५ सदी मनसब देकर रख लिया था। बहुत खातिर और परवरिश करता था। परन्तु वह बादशाहकी बुराई किया करता था। सबूत होने पर सजाको पहुंचा।

शिकार—किरावलोंने अर्ज की कि इस इलाकेमें एक शेर रहता है जिससे यहांके लोग बड़ी तकलीफमें हैं। बादशाहने फिदाईखांको हुक्म दिया कि हाथियोंके हलके लेजाकर उस शेरको घेरो। पीछे बादशाहने जंगलमें जाकर उसे एकही गोलीमें मार डाला।

तीतरके पेटमें चूहा—एकदिन बादशाहने शिकारमें एक काला तीतर बाजसे पकड़वाया। उसका पेट चिरवाकर देखा तो उसमें एक पूरा चूहा निकला जो गला न था। बड़ी हैरत हुई कि इतनी पतली नालीमें समूचा चूहा कैसे उतर गया। बादशाह लिखता है—"यही बात कोई दूसरा कहता तो सच न मानीजाती। जब खुद देखी तो अनोखी होनेसे लिखी गई!"

दिल्ली पहुंचना—६ (माघसुदी ६) को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुआ।

माधवसिंहको राजाका खिताब—राजा बासूके बेटे जगतसिंहने बेदौलतके कहनेसे पंजाबके उत्तरी पहाड़ोंमें ऊधम मचा रखा था और सादिकखां उसे दण्ड देनेको गया था। अब बादशाहने जगतसिंहके छोटे भाई माधवसिंहको राजाका खिताब देकर घोड़ा और खिलअत इनायत किया और हुक्म दिया कि सादिकखांके पास जाकर उधरका फसाद मिटावें।

सलीमगढ़में बादशाह—दूसरे दिन बादशाह दिल्लीसे कूच करके सलीमगढ़में उतरा। राजा कृष्णदासका मकान रास्तेमें पड़ता था।

उसने बहुतसी प्रार्थना की। इससे बादशाह उस पुराने नौकरके घर गया और उसका मन बढ़ानेको उसकी कुछ भेट भी लेली।

दिल्लीकी हुकूमत—२० (फाल्गुणबदी ४) को बादशाहने सलीम गढ़से कूचकरके सैयद भवा बुखारीको दिल्लीकी हुकूमत दी। उसका घर भी दिल्लीमें था और यह काम पहले अच्छी तरह करचुका था।

तिब्बतके अलीरायका बेटा—तिब्बतके हाकिम अलीरायके बेटे अलीमुहम्मदने अपने बापके कहनेसे दरगाहमें आकर जमीन चूमी। अलीरायको इससे बहुत प्यार था और इसको अपनी जगह बैठाना चाहता था। दूसरे बेटे इस लिये नाराज हुए। बड़े बेटे अबदाल ने जो सबमें लायक था काशगरके खानका वसीला पकडा कि बूढ़े अलीरायके मरने पर वह खानकी मददसे तिब्बतका हाकिम हो। अलीरायने इस आशङ्कासे कि कहीं उसके बड़े बेटे, छोटे अलीमुहम्मदको मार न डालें और उस देशमें फसाद न बढ़े उसको दरगाहमें भेजा था। असल मतलब उसका यह था कि वह इस दरगाहके वसीलेदारोंमें होजावे और यहांकी हिमायतसे उसका काम बन सके।

असफन्दार महीना।

१८ (फाल्गुण सुदी १) को अम्बालेके परगनेमें सवारी पहुंची।

आदिलखां—इमामवर्दीका बेटा लशकरी जो बेदौलतके पाससे भागकर परवेजकी खिदमतमें आगया था वहांसे परवेज और महाबतखांकी अर्जी आदिलखांकी सुफारिशमें लेकर बादशाहके पास आया। अर्जीके साथ आदिलखांका खत भी था जो उसने महाबतखांके नाम भेजकर ताबेदारी और खैरखाही जाहिर की थी। बादशाहने उसीको वापिस भेजकर, शाहजादे, खानआलम और महाबतखांके लिये खिलअत भेजे। शाहजादेका खिलअत मोतीके तुकमोंकी नादिरी समेत था। शाहजादेकी अर्जसे आदिलखांके नाम फरमान लिखा और उसके लिये भी खिलअत नादिरी सहित भेजा और लिखा कि जो मुनासिब समझें तो इसी (लशकरी) को आदिलखांके पास भेजें।

जगतसिंहको माफी—५ (फाल्गुण सुदी ५) को बादशाह सरहिन्द पहुंचकर बागमें ठहरा। ब्यास नदीके किनारे पर सादिकखां मुखतारखां, असफन्दारखां, राजा रूपचन्द गुलेरी और दूसरे अमीरों ने जो उत्तरके पहाड़ोंमें काम करके आये थे मुजरा किया। जगतसिंह जो बेदौलतके इशारेसे उन पहाडोंमें मैदान खाली पाकर लूट मार कर रहा था सादिकखांके जानेपर किलेमार(१)में जाबैठा। जब काबू पाता कुछ फौजसे बाहर निकलकर बादशाही बन्दोंसे लड़ता और भाग जाता था। जब अनाजकी कमी और दूसरे जमींदारोंकी मददसे नाउम्मेदी हुई, जिनको सादिकखांने लालच और धमकी देकर गांठ लिया था, साथही भाईको राजाकी पदवी मिल जानेसे वह घबराया, उसने नूरजहां बेगमका वसीला उठाया। बादशाहने बेगमकी सुफारिश और खातिरसे उसके कुसूर माफ कर दिये।

बेदौलत उड़ीसेमें—दक्षिणके मुत्सद्दियोंकी अर्जियां पहुंची कि बेदौलत लानतुल्लह और दाराब वगैरहके साथ कुतुबुल्मुल्कको सरहद से उड़ीसे और बंगालेको गया। रास्तेमें उसको बहुत तकलीफें हुईं। उसके बहुतसे साथी जगह जगहसे भाग गये। उनमें उसके दीवान अफजलखांका बेटा मिर्जा मुहम्मद भी था। बेदौलतने कुछ आदमी उसके लानेको भेजे परन्तु वह न गया और लडकर जानसे जाता रहा।

जब बेदौलत दिल्लीसे भागकर गया था तो अफजलखांको मदद मांगनेके लिये आदिलखांके पास भेजा। आदिलखांके लिये बाजू और अम्बरके लिये हाथी घोडा और जड़ाऊ खांड़ा भेजा था। परन्तु अम्बरने यह चीजें नहीं लीं। कहा कि मैं आदिलखांके ताबे हूं। वही दक्षिणके दुनियादारोंमें बड़ा है। तुम पहले उसके पास जाओ और अपना मतलब कहो। वह कबूल करे तो मैं भी करूंगा और जो कुछ तुम लाये हो लेलूंगा नहीं तो नहीं।

(१) मऊ।

अफजलखां आदिलखांके पास गया। वह बहुत बुरी तरह पेश आया। बहुत दिन तक शहरके बाहर पड़ा रखा। बात भी न पूछी और जो कुछ वह उसके और अम्बरके लिये लेगया था वह भी संगाकर रख लिया। इतनेहीमें अफजलखांको बेटेके मारजाने की खबर पहुंची तो वह जीताही मर गया।

बेदौलत इस हैसियतसे लम्बा सफर करके मछलीपट्टनमें पहुंचा जो कुतुबुल्मुल्कके इलाकेमें था और आदमी भेजकर कुतुबुल्मुल्कको अपनी मदद पर बुलाया। उसने कुछ रुपये और सामान भेजकर अपनी सरहदके हाकिमको लिख दिया कि अपने इलाकेसे सलामत निकल जाने दो और बनियों तथा जमींदारोंको दिलासा देकर कह दो कि इनके लशकरमें अनाज और दूसरी जरूरी चीजें पहुंचाते रहें।

डूबी वस्तुका मिलना—२७ (चैतबदी १२) को बादशाह शिकार से आता था। नदीमें उतरतेहुए एक खिदमथगारके हाथसे सोनेका सरकारी गजकदान पानीमें गिर पड़ा जो एक थैलेमें था और जिस में एक थाल और ५ प्याले ढकने समेत थे। लोगोंने ढूंढा तो बहुत परन्तु पानी गहरा और तेज था न मिला। दूसरे दिन बादशाहसे अर्ज हुई तो उसने मल्लाहों और किरावलोंको हुक्म दिया कि जहां गिरा है वहीं ढूंढें। शायद मिल जावे। वहीं मिला। उथल पुथल न हुआ था बल्कि पानीकी एक बून्द भी प्यालोंमें न पहुंची थी। बादशाह लिखता है—यह बात वैसीही है कि जब हादी खलीफा हुआ था तो उसने अपने भाई हारूनसे एक अंगूठी याकूतकी मंगवाई थी जो उसे बापके मालसे मिली थी। जब हादीका आदमी अंगूठी मांगनेको गया तो हारून दजला नदीके तटपर बैठा था। उसने खफा होकर जवाब दिया कि मैंने तो बादशाही तेरे पास रहने दी। तू एक अंगूठी मेरे पास नहीं रहने देना चाहता है। यह कह कर अंगूठी दजलेमें फेंक दी। कई महीने पीछे जब हादी मरा और हारून खलीफा हुआ तो गोते

लगानेवालोंको हुक्म दिया कि मैंने जहां अंगूठी डाली है वहां गोता लगाकर उसे ढूंढ़ो। उसके प्रतापसे पहलेही गोतेमें अंगूठी उनके हाथ आगई और उन्होंने लाकर हारूनके हाथमें दी।

नर और मादा तीतरकी पहचान—इन दिनों शिकारमें इमामवर्दी किरावलबखशी एक तीतर बादशाहके पास लाया। उसके एक पांवमें कांटा था दूसरेमें नहीं। उसने परीक्षाके तौर पर पूछा कि यह नर है या मादा? बादशाहने फौरन कहा कि मादा है। उसका पेट चीरा गया तो उसमेंसे अण्डा निकला। जो लोग खिदमतमें खड़े थे उन्होंने अचम्भा करके बादशाहसे पूछा कि हजरतने किस पहचानसे ऐसा कहा? बादशाहने फरमाया कि मादाकी चोंचकी नोक नरसे कुछ छोटी होती है इससे और बहुत देखनेसे ऐसी पहचान होगई।

पक्षियोंकी शारीरिक दशा—बादशाह लिखता है—अजीब बात यह है कि सब जानवरोंका नरखड़ा गलेसे पेट तक एकही होता है मगर जरजके गलेमें ४ उंगल तक एक नाली है फिर दो शाखा होकर पेटमें गई है और जहांसे कि दो शाखा हुई हैं ढकी हुई हैं। हाथ लगानेसे वह गांठसी मालूम होती है। कुलंगमें इससे भी अजब बात है कि उसके गलेकी नाली सांपकी तरह लहराती हुई छातीकी हड्डियोंमेंसे पूंछ तक गई है और वहांसे लौट कर फिर गलेमें शामिली है। जरज दो तरहका होता है। एक चितकबरा दूसरा बोरता। पर इन दिनों मालूम हुआ कि दो तरहका नहीं है। जो चितकबरा है वह नर है और जो बोरता है वह मादा है। इसकी यह दलील है कि चितकबरेमें पोतघाल और बोरतेमें अंडे पाये गये हैं। कई बार इसका इमतिहान किया गया है।

मछली—मछलियोंकी बाबत बादशाह लिखता है—मछलियों का मुझे बहुत शौक है। मेरे वास्ते तरह तरहकी मछलियां लोग लाते हैं। हिन्दुस्थानकी मछलियोंमें सबसे अच्छी रोहू है। उससे

उतरकर भेन है। दोनोहीमें छिलके होते हैं। दोनोकी शकल मिलती जुलती होती है। उनके मांसमें भी बहुत थोडा भेद है। जिसको पहचान है वही जान सकता है कि रोझका मजा कुछ अच्छा है।

उन्नीसवां नौरोज।

फरवरदीन महीना।

१८ जमादिउलअव्वल सन १०३३ (चैत्र सुदी १ संवत् १६८१) बुधवारको एक पहर दो घड़ी दिन चढ़े सूर्य्य मेष राशिमें आया। बादशाहने अपने बन्दोंके मनसब बढ़ाये। यसावलों (अरदलीवालों) को हुक्म दिया कि सवारी और दौलतखानेसे बाहर आते वक्त काने कोढ़ी नकटे और कनकटे आदमियोंको सामने न आने दें।

१९ फरवरदीन (बैशाख बदी ५) को मेष संक्रांतिका उत्सव हुआ।

बेदौलत पर परवेज—बादशाहने बेदौलतका उड़ीसेकी सरहद में आना सुनकर शाहजादे और महाबतखांको ताकीद लिखी कि वहांका बन्दोबस्त करके सूबे इलाहाबाद और बिहारको रवाने हों। बंगालेका सूबेदार उस बेदौलतकी राह न रोक सके तो अपनी सेना से उसे रोकदो।

उर्दीबहिश्त महीना।

२ (बैशाख सुदी ४) को बादशाहने खानजहांको आगरेके सूबे में रवाने किया कि वहां रहकर हुक्मकी राह देखता रहे और जब कोई हुक्म पहुंचे उसकी मुनासिब तामील करे। उसको मोतीके तुकमेंकी नादिरी समेत खिलअत खासा, जड़ाऊ तलवार खासा और उसके बेटे असालतखांके घोड़ा और खिलअत इनायत हुआ।

परवेजका विवाह—सूबे दकनके बखशी अकीदतखांकी अर्जी पहुंची कि शाह परवेजने गजसिंहकी बहनसे हुक्मके मुवाफिक व्याह कर लिया है। जब बेदौलत बुरहानपुरसे भागा तो मीर हिसामुद्दीन भी अपने बेटों सहित भागकर आदिलखांके पास

जाता था। जानसुपारखां खबर पाकर, उसे महाबतखांके पास पकड़ लाया। महाबतखांने उसे कैद करके एक लाख रुपये उससे लिये।

बेदौलत जो हाथी बुरहानपुरके किलेमें छोड़ गया था उनको जादूराय और ऊदाराम शाहजादे परवेजके पास लेआये।

दक्षिणियोंकी ताबेदारी—काजी अबदुलअजीज जो बेदौलतका भेजा हुआ दिल्लीमें बादशाहके पास आया था और बादशाहने उसे महाबतखांको सौंप दिया था वह पहले कई वर्ष तक खानजहांकी तरफ़से बीजापुरमें वकील रहा था और आदिलखांका पुराना मुलाकाती था। इसलिये महाबतखांने उसको वकील करके आदिलखांके पास भेजा। दक्षिणके दुनियादारोंने देश काल और अपना काम निकलता देखकर बन्दगी और खैरख्वाही दिखलाई। अंबरने अपने भले नौकर अलीशेरको भेजकर बहुत आजिजी और ताबेदारी जताई। उसने महाबतखांको नौकरकी तरह अर्जी लिखकर यह बात ठहराई थी कि देवगांवसे आकर आपसे मिलूंगा। अपने बेटेको बादशाही नौकर कराके शाहजादेकी बन्दगीमें रखूंगा

आदिलखां—उधरसे काजी अबदुलअजीजने लिखा कि आदिल खांने सच्चे दिलसे ताबेदारी कबूल करके इकरार किया है, कि अपने मुखतारकार मुल्ला मुहम्मद लारीको जो वहां मुलाबाबा कहा और लिखा जाता है ५००० सवारोंसे खिदमतमें रहनेके लिये भेजूंगा। उसे पहुंचा समझें।

परवेजका कूच—परवेजको बेदौलतकी रोक थामके लिये इलाहाबाद और बिहार जानेकी ताकीदें हुई थीं। इसलिये वह ६ फरवरदीन (चैत्र सुदी ६) को फौज समेत कूच करके लालबागमें उतरा और महाबतखां मुल्ला मुहम्मद लारीसे मिलनेके लिये बुरहानपुरमें ठहर गया। लशकरखां जादूराय ऊदाराम और दूसरे बन्दोंने कहा कि बालाघाटमें जाकर जफरनगरमें ठहरें। असदखां मामूरी को एलचपुरमें और शाहनवाजखांके बेटे मनूचहरको खानपुरमें

रखा रजवीखांको थानेश्वरमें सूबे खानदेशकी रखवाली पर भेजा।

आदिलखांका बरताव—इसी दिन खबर पहुंची कि जब लश्करी फरमान लेकर आदिलखांके पास पहुंचा तो आदिलखां शहर सजाकर ४ कोस तक फरमान और खिलखत लेनेको आया। तसलीमात और आदाब बजालाया।

२१ (ज्येष्ठ बदी ८) को बादशाहने दावरबख्श खानआजम और सफीखांको खिलअत हाथी देकर लाहोरकी हुकूमत पर बिदा किया।

सांपके मुंहमें सांप—एक दिन शिकारमें अर्ज हुई कि एक काला सांप दूसरे सांपका फन निगलकर बिलमें घुस गया है। बादशाहके हुक्मसे बिल खोदकर वह सांप निकाला गया। वह इतना बड़ाथा कि अबतक वैसा सांप बादशाहने न देखा था। उसका पेट चीरा तो दूसरे सांपका फन साबित निकल आया। वह भी वैसाही था पर कुछ पतला और छोटा था।

महाबतखांका आरिफको मारना—दक्षिणके वाकआनवीसने बादशाहको अर्जी लिखी कि जाहिदके बेटे आरिफने बेदौलतको अपनी और अपने बापकी ताबेदारी और खैरख्वाहीकी अर्जी लिखी थी। वह महाबतखांके हाथ लग गई उसने आरिफको बुलाकर दिखाई तो वह ठीक जवाब न देसका और क्या देता जबकि उसकी लिखी थी। इसलिये महाबतखांने उसको मारकर उसके बाप और दो भाइयोंको कैद करदिया।

खुरदाद महीना।

बेदौलत उड़ीसेमें—इब्राहीमखां फतहजंगकी अर्जी बादशाहके पास पहुंची जिसमें लिखा था कि बेदौलत उडीसेमें पहुच गया है। उडीसे और दकनकी सरहदमें एक घाटा है जिसके एक तरफ तो बड़ा पहाड़ है और दूसरी तरफ झील और नदी है। गोलकुंडेके हाकिमने वहां दरवाजा और किला बनाकर उसको तोपों और बन्दूकोंसे सजा रखा था। उसकी आज्ञा बिना कोई

आदमी उधरसे नहीं निकल सकता था । बेदौलत कुतुबुल्मुल्ककी इजाजत और मददसे उसी घाटेसे उतरकर उड़ीसेके सूबेमें आगया। उस वक्त इब्राहीमखांका भतीजा अहमदबेग जो गढेके जमींदारों पर गया हुआ था एकाएकी इस खबरको सुनकर आश्चर्य्यमें आ गया। वह उस मुहिमको छोड़कर उस सूबेके सदरमुकाम बलबलीमें आया और अपनी औरतोंको लेकर काटक चला गया, जो बलाबलीसे १२ कोस बङ्गालेकी तरफ है। वक्त तङ्ग होनेसे फौज जमा करने और बेदौलतसे लड़नेकी फुरसत न पाकर काटकसे भी चल दिया और बर्दवानमें जाकर ठहरा। वहां मृत आसफखां का भतीजा सालह जागीरदार था। उसने पहले तो बेदौलतका आना सच न माना पर जब लानतुल्लहका कागज उसके पास पहुंचा तो बरदवानको मजबूत करके बैठगया। इब्राहीमखां भी इस खबरको सुनकर घबराया। क्योंकि उसको फौजवाले और मददगार लोग मुल्कमें बिखरे हुए थे। तो भी अकबर नगरमें जमकर लड़ाईका समान और फौज जमा करने लगा। इतनेमेंही बेदौलतका निशान (१) उसको पहुंचा जिसमें लिखा था कि जो बात मेरे लायक न थी वही तकदीरसे आगे आई है और यह मुल्क मेरी नजरमें तिनकेके बराबर भी नहीं है किन्तु इधर आ निकला हूं तो योंही नहीं जासकता।

"वह जो दरगाहमें जाना चाहता हो तो उससे और उसकी इज्जत आबरू और घरबारसे कुछ रोक टोक नहीं है खुशीसे चला जावे और जो ठहरनेकी सलाह हो तो इस मुल्कके जिसकोनेमें रहना चाहे वही उसको बख्श दिया जायेगा।

[यहां तक मोतमिदखांका लिखा हुआ है
आगे मुहम्मद हादी(२)ने लिखकर
किताब पूरीकी है।]

(१) शाहजादेके हुक्मनामेको निशान कहते थे।

(२) मुहम्मद हादीका यह लेख शाहजहांके समयमें लिखा

इब्राहीमखांने जवाबमें लिखा कि यह विलायत हजरत शाहंनशाहीने बंदेको सौंपी है, सिर और जान इस अमानतके साथ है।

बरदवानमें शाहजहां—जब शाहजहां बर्दवानमें पहुंचा तो सालह किलेमें बैठकर लड़नेको तैयार हुआ। अबदुल्लहखांने आकर किलेको घेरा। जब काम कठिन होगया और सालहने कहींसे मदद मिलने और बचाव होनेकी सूरत न देखी तो लाचार किला छोड़कर अबदुल्लहखांसे मिला। अबदुल्लहखां उसको शाहजहांके पास लेगया।

शाहजहां अकबरनगरमें—शाहजहां बरदवान लेकर अकबरनगरको रवाना हुआ। इब्राहीमखांने पहले तो चाहा कि अकबरनगरके किलेमें बैठकर लड़े। पर वह किला बहुत लम्बा चौड़ा था और उसके पास इतनी फौज न थी जो उसकी रक्षा कर सकता। इस लिये अपने बेटेके मकबरेमें जिसका कोट बहुत पक्का था जाबैठा। इस वक्त दूसरे अमीर भी इधर उधरसे उसके पास आगये। शाहजहां अकबरनगरके किलेमें उतर पडा और उसकी फौजने मकबरेको घेरलिया। अहमदबेगखां भी आमिला, जिससे लोगोंको ढारस बन्धगई। मगर सबके कबीले नदीके उस पार थे इसलिये अबदुल्लहखांने दरियाखांको नदी पार करके उन पर भेजा। इब्राहीमखां यह खबर सुनतेही अहमदबेगखांको साथ लेकर उधर दौडा और अपने भरोसेके आदमियोंको कोटकी हिफाजत पर छोडगया। उसने जंगी नावोंके बेड़ेको दरियाखांके रोकनेके लिये पहलेसे भेज दिया था। मगर दरियाखां बेड़ेके पहुंचनेसे पेशतरही नदीसे उतर गया था। इब्राहीमखांने अहमदबेगखांको उसके मुकाबिले पर भेजा। नदीके किनारे पर दोनोंकी लड़ाई हुई। इधर उधरके बहुत से आदमी मारे गये। अहमदबेगखां इब्राहीमखांके पास लौट

हुआ जान पडता है और मोतमिदखांके बनाये हुए इकबालनामये-जहांगीरीसे बहुत मिलता है इसलिये आश्चर्य नहीं जो उसीसे लिया गया हो।

आया। इब्राहीमखांने आदमी भेजकर कोटमेंसे मदद मंगवाई। बहुतसे बहादुर सिपाही उसके पास आगये दरियाखां यह सुनकर कई कोस पीछे हटगया।

बेड़ा इब्राहीमखांके हाथमें था जिससे शाहजहांका लशकर नावों बगैर गंगासे नहीं उतर सकता था। आखिर वलिया राजा नाम एक जमींदारने आकर कहा कि कुछ फौज मेरे साथ करो तो मैं अपने इलाकेसे नावोंमें बैठाकर पार उतार दूं।

शाहजहांने अबदुल्लहखांको १५०० सवारोंसे उसके साथ किया। वह उसके रास्ता बतानेसे गंगाके पार होकर दरियाखांसे जामिला।

जब इब्राहीमखांको यह खबर लगी तो घबराकर लड़नेको गया। आप तो १००० सवारोंके बीचमें रहा हिरावलमें नूरुल्लह सैयदजादेको रखा। अपने और उसके बीचमें अहमदबेगको रखा। इन दोनोंके पास भी हजार हजार सवार थे। दोनों फौजोंके भिड़ने पर बड़ी लड़ाई हुई। अबदुल्लहखांने हिरावल पर हमला करके नूरुल्लहको भगा दिया और अहमदखांको जा लिया। वह बहादुरीसे जमकर लड़ा और जखमोंसे चूर होगया। यह हाल देख कर इब्राहीमखांसे रहा न गया उसने भी अपनी सवारी बढ़ाई। उधरसे अबदुल्लहखां बढ़ा। इस वक्त इब्राहीमखांके साथी भाग निकले। उसके पास थोडेसे आदमी रहगये मगर वह अपनी जगह पर जमा रहा। लोगोंने बाग पकड़ कर उसको भी रणमेंसे निकाल लेजाना चाहा मगर उसने कहा कि यह काम हिम्मत और मरदानगीका नहीं है। बादशाहकी बन्दगीमें जान जानेसे अच्छी और क्या बात होगी। अभी ये शब्द पूरे भी न हुए थे कि दुशमनो ने चरों तरफसे आकर उसको घेर लिया और अबदुल्लहखांके नौकर नजरबेगने उसे कतल करके उसका सिर शाहजहांके पास भेजदिया। जो लोग मकबरेके कोटमें घिरे हुए थे वह इब्राहीमखां फतहजंग का मारा जाना सुनकर घबरागये। रूमीखांने जो सुरंग कोटके नीचे पहुंचा दी थी वह अब आगसे उडाई गई। उससे ४० गज़

दीवार गिर पडी। कोट टूटगया, उसमें जो लोग थे वह भाग भाग कर गंगामें गिरते थे और जो कोई नाव हाथ आजाती थी उसपर भीड़ करके डूब जाते थे। मीरक जलायर, जो उस सूबेका बड़ा आदमी था पकड़ा गया। शाहजहांके साथियोंमेंसे आबिदखां दीवान, शरीफखां बखशी, सैयद अबदुस्सलाम बारह, और हसन बदखशी आदि कई आदमी काम आये।

अहमदबेगखां कई एक मनसबदारोंके साथ बंगालेके सदर मुकाम ढाकेको चला गया था। जहां इब्राहीमखांका सामान और खजाना था। इसलिये शाहजहांका लशकर उधरही रवाने हुआ। जब ढाकेमें पहुंचा तो अहमदबेगखां लाचार होकर शाह जहांकी खिदमतमें हाजिर हुआ। शाहजहांने ४० लाख रुपये इब्राहीमखांके और ५ लाख जलायर वगैराके मालमेंसे लिये। ५०० हाथी ४०० गोट घोड़े जो उस विलायतमें होते हैं लूटमें आये। कपड़ा और दूसरा माल भी बहुत था। बेड़ा और तोपखाना तो बड़े बादशाहोंके योग्य हाथ लगा। शाहजहांने अबदुल्लहखांको २ लाख राजा भीमको २ लाख दाराबखां और दरियाखांको एक एक लाख; वजीरखां, शुजाअतखां, मुहम्मदतकी और बैरमबेगको पचास २ हजार रुपये बखशे और ऐसेही थोड़े बहुत दूसरे आदमियोंको भी उनके दरजेके मुवाफिक दिये।

दाराबखां बंगालेमें—शाहजहांने बङ्गालेमें कबजा करके खानखानांके बेटे दाराबखांको जो अबतक कैदमें था छोड़ दिया और उसको कसम देकर बङ्गालेका मुल्क सौंपा। मगर उसकी जोरूको एक बेटी और एक बेटे शाहनवाजखां सहित अपने साथ रखकर बिहार लेनेके लिये कूच किया।

रानाके बेटे राजा भीमको जो इस हरज मरजमें उसके पाससे अलग न हुआ था कुछ फौजके साथ आगे रवाना कर दिया था। आप अबदुल्लहखां और दूसरे बन्दोंके साथ उसके पीछे पीछे आता था।

शाहजहां बिहारमें—बिहारका सूबा शाहजादे परवेजकी जागीरमें था। उसने अपने दीवान मुखलिसखांको वहांकी हुकूमत और हिफाजत पर छोड़ा था। इफ्तखारखांके बेटे अलहयार और बैरमखां पठानको फौजदारी पर रखा था। मगर यह लोग राजा भीमके पहुंचतेही हिम्मत हारगये। इनसे इतना भी न होसका कि पटनेके किलेको सजाकर बादशाही लशकरके आनेतक कुछ दिन वहां जमें रहें। यह ऐसे भागे कि इलहाबाद तक पीछे फिरकर न देखा। राजा भीमने पटनेमें अमल करलिया। कुछ दिनों पीछे शाहजहां भी वहां पहुंच गया। बङ्गालेके बहुतसे मददगार साथ थे। बिहारके अकसर तइनातियों और जागीरदारोंने भी उसके साथ चलनेका इकरार किया। इधर उधरसे पांच हजार सवार आकर नौकर होगये। रुहतासके किलेदार सैयद मुबारकने किला मजबूत और सब तरहका सामान होने पर भी सौंप दिया। उज्जैनिया और उस जिलेके दूसरे जमींदार भी आमिले।

इलाहाबादको कूच—शाहजहांने अबदुल्लहखां और राजा भीम को इलाहाबादकी तरफ बिदा किया। पीछेसे आप भी रवाने हुआ। अबदुल्लहखां जब जोसा नदी पर पहुंचा तो जौनपुरके हाकिम आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां मिरजा रुस्तमके पास इलाहाबादमें चला गया। अबदुल्लहखां उसके पीछे जाकर झूसीमें उतरा जो गङ्गाके किनारे इलाहाबादके सामने है। भीम इलाहाबादसे ५ कोस पर ठहरा। शाहजहां जौनपुर जाकर ठहरा।

इलाहाबादको घेरना—अबदुल्लहखांके साथ बहुत बड़ा बेड़ा था। वह उससे गोले मारकर गङ्गाके पार होगया और इलाहाबादके पास डेरा करके किलेके घेरनेमें मशगूल हुआ। मिरजा रुस्तमने अन्दर से लड़ाई शुरू की। दोनो तरफसे तोप और बन्दूकोंके दूत सिपाहियोंको मौतके पैगाम पहुंचाने लगे।

दक्षिणका हाल—अम्बर हबशीका मतलब अलीशेरको महावत

खांके पास भेजने और बहुत जोर डालनेसे यह था कि दक्षिण के सूबेका काम उसकी जिम्मेदारी पर छोड़ दिया जावे और यह बादशाही बन्दोंकी मददसे आदिलखांके ऊपर अपना जोर जमावे। क्योंकि इन दिनोंमें उससे बिगाड़ होगया था। ऐसेही आदिलख भी उसको दबानेके लिये उस सूबेका इखतियार अपने कब्जेमें लेन चाहता था। आखिर उसका मन्त्र चल गया और महाबतखां अम्बरको छोड़कर आदिलखांकी उम्मेद पूरी कर दी। अम्ब बीजापुरके रास्तेमें था और आदिलखांके मुखतार मुल्ला मुहम्मदको उसका खटका था इसलिये महाबतखांने बादशाही लशकरसे कुछ फौज बालाघाटमें उसके लानेको भेजी। अम्बर इस खबरके सुनने से घबराकर निजामुल्मुल्कको खिडकीसे कन्दहारमें लेगया जो गोलकुंडेके पास है और खिड़की शहरको खाली करके सब माल असबाब और बालबच्चे दौलताबादके किलेमें भेजदिये। यह मशहूर किया कि कुतुबुल्मुल्कसे अपना ठहराया हुआ रुपया लेनेके लिये गोलकुंडेकी सरहदमें जाता हूं।

जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंचा तो महाबतखांने शाहपुर तक पेशवाई करके उसकी बहुत खातिर और तसल्ली की तथा उसको लेकर शाहजादे परवेजकी खिदमतमें रवाना हुआ। बुरहानपुरकी हुकूमत और हिफाजत पर सरबुलन्दरायको छोड गया। जादूराय और ऊदारामको उसकी मदद पर रखकर दोनोंके बेटे और भाईको अपने साथ लेगया।

जब मुल्ला मुहम्मद शाहजादेसे मिला तो यह बात ठहरी कि वह ५००० सवारों सहित बुरहानपुरमें रहकर सरबुलन्दरायके साथ उस सूबेका काम करे और उसका बेटा अमीनुद्दीन १००० सवारो सहित शाहजादेके साथ चले। यह कौल करार होकर शाहजादेने मुल्लाको खिलअत, जड़ाऊ तलवार हाथी और घोडा देकर बिदा किया और मुहम्मद अमीनको भी हाथी घोडा खिलअत और पचास हजार रुपये देकर अपने साथ लिया। महाबतखांने भी

अपनी तरफ़से ११० घोड़े २ हाथी ७०ं हजार रुपये नकद और ११० थान कपड़ोंके मुल्लामुहम्मद, उसके बेटे और जमाईको दिये।

बादशाह कश्मीरमें—१९ खुरदाद (आषाढ़ बदी ८) को बादशाह कश्मीरमें पहुंचा। यहां अर्ज हुई कि नजरमुहम्मदखांका सिपहसालार पलंगतोश उजबक काबुल और गजनीन पर आनेका इरादा कर रहा है। महाबतखांके बेटे खानाजादखांने उसके रोकने के लिये शहरसे बाहर निकलकर डेरा किया है। बादशाहने सही खबर लानेके लिये गाजीखांको डाकचौकीमें भेजा।

अबदुलअजीजखांने मदद न पहुंचनेसे कन्दहारका किला शाह अब्बासको सौंप दिया था और यह बात बादशाहको बहुत बुरी लगी थी। इसलिये अब उसको सोदू मनसबदारके हवाले करके हुक्म दिया कि सूरत बन्दरसे जहाजमें बिठाकर उसे मक्के भेजदें। फिर दूसरा हुक्म मार डालनेका भेजा। वह बेचारा रास्तेहीमें मारा गया।

तीर महीना।

७ (आषाढ़ सुदी १२।१३) को बादशाहकी बहन आरामबानू बेगम दस्तोंकी बीमारीसे मरगई। अकबर बादशाह इसका बहुत लाड़ और प्यार करते थे। यह ४० वर्षकी होकर दुनियामें जैसी आई थी वैसीही गई।

उजबक काबुलकी सरहदमें—गाजीबेगकी अर्जीसे मालूम हुआ कि पलंगतोश हजारा लोगोंके बन्दोबस्तको आया था जो गजनीके इलाकेमें रहते हैं और कदीमसे गजनीनके जागीरदारको हासिल देते हैं। पर पलंगतोशने गांव स्वारमें किला बनाकर अपने भतीजेको कुछ फौज सहित रख दिया जिसमें हजारेके सरदारोंने खानाजादखांके पास आकर पुकार की कि हम कदीमसे काबुलके हाकिम की प्रजा और मालगुजार हैं। पलंगतोश हमें जबरदस्ती अपना ताबेदार किया चाहता है। आप हमें उससे बचालें तो हम आपके ताबेदार हैं। नहीं तो उससे मेल करके उजबकोंके जुल्मसे अपना बचाव करेंगे।

खानेजादाखांने हजारावालोंकी मदद पर फौज भेजी। पलंग-तोशका भानजा लडा। बहुत उजबक मारे गये। फौज उसके किलेको गिराकर लौट आई। तब पलंगतोशने खिसियाकर तूरान के बादशाह इमामकुलीखांके भाई नजरमुहम्मदखांसे काबुलकी सर-हदमें लूट मार करनेकी इजाजत मांगी। पहले तो वह और उसके फौजी अफसर मंजूर नहीं करते थे मगर फिर उसने बहुत कह सुन कर आज्ञा लेली और १० हजार सवार उजबक और अलमानचो से चढाई की। खानाजादखांने थानेके आदमियोंको बुलाकर लड़ने को कूच किया और गजनीनसे १० कोस पर गांव शेरगढ़में जाकर छावनी डाली। वहांसे फौज कमर बांधकर आगे हुई। बीचकी फौजमें खानजादाखां अपने बापके मनसवदारों सहित था और हिरावलमें मुबारजखां पठान, अनीराय सिंहदलन और सैयद हाजी वगैरह थे। ऐसेही दहने और बायें हाथकी फौजें बहादुर सरदारों से सजाई गई थीं। दूसरे दिन लड़ाई होनेकी उम्मेद थी। उजबकों का डेरा गजनीनसे २ कोस उधर सुना जाता था। पर शेरगढसे २ कोस आगे बढ़तेही उजबकोंके किरावल दिखाई दिये। इधरके किरावल भी उनके सामने गये। फौज तोपखाने और हाथियोंको लिये धीरे धीरे बान मारती हुई जाती थी। पलंगतोश एक टीले के पीछे इस इरादेसे दबा खडा था कि फौज जो रास्तेसे थकीमांदी चली आती है जब पास आवे तो घातसे निकलकर हमला करें। मगर मुबारजखांने जो हिरावलके लशकरका सरदार था दुशमनों को देखकर कुछ लोग किरावलोंकी मदद पर भेजे। तब तो उधरके किरावलोंने भी पलंगतोशके पास आदमी भेजकर मदद मांगी। उसने अपनी फौजोंमेंसे एक फौज हिरावल पर भेजी और आप दूसरी फौज सहित एक गोलीके टप्पे पर आकर खडा होगया। उसकी फौज हिरावलसे ज्यादा थी इस लिये बीचका लशकर फौरन हिरावलकी मददको बढा। पहले बहुतसे बाण, बन्दूक जंबूरकें और तोपोंके गोले मारे गये फिर जङ्गीहाथी दौड़ाये गये। लड़ाई बड़ी

सख़्तीसे होने लगी। पलंगतोश अपनी फौजकी मददको आया मगर कुछ कर न सका पीछे हटा। उजबकोंके भी पांव उखड़ गये। बादशाही बन्दे उनको मारते गिराते 'हमाद' के किले तक भगा लेगये जो लड़ाईके मैदानसे ६ कोस पर था।

जब इस बड़ी फतहकी खबर बादशाहको पहुंची तो जैसी जिसकी खिदमत थी वैसे सबके मनसब बढाये। पलंगतोश भी उजबक था पलंगके मानो नंगा और तोश मानो छातीके है। वह एक लड़ाईमें नङ्गीछातीसे लड़ा था उस दिनसे उसका नाम पलंग-तोश पड़ गया। यह कन्दहार और गजनीनके बीच रहता था और दो एक दफे खुरासानमें लूट मार कर चुका था जिससे शाह अब्बास को भी उसका खटका रहता था।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके वकायेनवीस फाजिलखांकी अर्जीसे बादशाहको मालूम हुआ कि जब मुल्ला मुहम्मद लारी बुरहानपुरमें पहुंच गया और उस सूबेके बन्दोबस्तसे बेफिकरी हुई तो शाहजादे परवेजने महाबतखां और दूसरे अमीरोंके साथ बङ्गालेको कूच किया। खानखानांके छल कपटका खटका रहता था और उसका बेटा दाराब भी शाहजहांके पास था इसलिये दौलतख़्वाहोंकी सलाह से उसको नजरबन्द करके यह तजवीज की कि उसके वास्ते दौलत-खांनेके पास डेरा लगाया जाय और उसकी बेटी जानाबेगम जो शाहजादे दानियालकी बेवा और अपने बापकी लायक शागिर्द है बापके पास रहे। कुछ आदमी उसके डेरे पर माल असबाबकी जबतीके लिये भेजे गये। वह उसके बहादुर और कारगुजार गुलाम फहीमको जो उसके उमदा सरदारोंसे था पकड़ने लगे। उसने अपनेको दूसरेके हाथमें योंही मुफ्त पड़ने न दिया और बहादुरोंसे पांव अमाकर जानको आबरू पर कुरबान कर बैठा।

शाहजहांका दीवान अफजलखां बीजापुरसे बादशाहके पास आगया बादशाहने उसके ऊपर बहुत मेहरबानी की।

शाहजादोंकी लड़ाई—इतनेमें शाहजादोंके आपसमें लड़नेकी

खबर पहुंची जिसका बयान यह है। जब सुलतान परवेज और महाबतखां इलाहाबादके पास पहुंचे तो अबदुल्लहखां किलेका घेरा छोड़कर भूसीको लौट गया। दरियाखांने नावोंको अपनी तरफ खेंचकर दरियाका किनारा मजबूत कर रखा था। इससे बादशाही लशकरको पार उतरनेमें कई दिनको ढील होगई। शाहजादे परवेज और महाबतखांने इस किनारे पर छावनी डालदी। दरियाखां उधर मजबूती करता रहा। आखिर बैसवे जमींदारोंने जो उस जिलेमें मोतबिर हैं इधर उधरसे ३० नावें जमा करके कई कोस ऊपरको पानीमें रास्ता निकाला। दरियाखां तो उधर उनके रोकनेको गया और इधरसे बादशाही लशकर पार उतर गया। तब तो दरियाखां भी वहां ठहरना ठीक न समझकर जौनपुरको चल दिया। अबदुल्लहखां और राजा भीमने भी जौनपुरका रास्ता लेकर शाहजहांसे बनारसमें आनेको अर्ज कराई। शाहजहां बेगमोंको रुहतासके किलेमें भेजकर बनारसको रवाने हुआ। अबदुल्लहखां, राजा भीम और दरियाखां रास्तेमें आमिले। शाहजहां बनारसमें गंगासे उतरकर तोनस नदीपर ठहरा। उधरसे शाहजादा परवेज और महाबतखां दमदमेमें पहुंचे और आका मुहम्मदजमान तुहरानी और कुछ फौजको वहां छोड़कर गंगासे उतरे। तोनससे भी उतरनाही चाहते थे कि बैरमबेग जिसका खिताब खानदौरां था शाहजहांके कहनेसे गंगा पार होकर मुहम्मदजमानके ऊपर गया। उस वक्त तो मुहम्मदजमान भूसीमें चला गया मगर जब चार दिन पीछे खानदौरां बडे घमण्डसे वहां भी जा पहुंचा तो मुहम्मदजमानने उसके सामने जाकर बडी बहादुरीसे लडाई की। खानदौरांकी फौज भाग गई तो भी वह अपनी जगहसे न हटा। अकेला हर तरफ दौड दौडकर लड़ता रहा आखिर मारा गया। उसका सिर शाहजादे परवेजके पास पहुंचा तो वह भालेमें पिरोया गया। रुस्तमखांने जो पहले शाहजहांका नौकर था और फिर परवेजके पास भाग आया था कहा कि खूब हुआ जो हरामखोर मारागया।

आजमखांका बेटा जहांगीरकुलीखां भी वहां हाजिर था। उसने कहा कि इसको हरामखोर और बागी नहीं कह सकते। इससे बढकर कोई आदमी नमकहलाल नहीं होगा जिसने अपने मालिकके वास्ते जान दी है और इससे ज्यादा वह क्या कर सकता था? देखो अब भी उसका सिर सबके सिरोंसे ऊंचा है। शाहजादा परवेज, खानदौरां के मारे जानेसे बड़ा खुश और आका मुहम्मदजमान पर बहुत मेहरबान हुआ। उधर शाहजहांने अपने सरदारोंसे सलाह पूछी। अकसर खैरख्वाहों और खासकर राजा भीमने तो मैदानकी लड़ाई लड़नेकी सलाह दी मगर अबदुल्लहखां बिलकुल इस बातपर राजी न हुआ। वह कहता था कि बादशाही लशकरमें ४० हजार सवार हैं और अपने पास नये पुराने मिलाकर सात हजार भी नहीं हैं। इसलिये यह मुनासिब है कि जहांगीरी लशकरको यहीं छोड़कर अवध और लखनऊके रास्तेसे दिल्लीको चले और जब यह भारी लशकर भी उधर मुडकर पास आपहुंचे तो दक्षिणको कूच करदें। तब यह आपही इतना बोझ भार लादे फिरनेसे थककर सुलह कर लेगा। सुलह न होगी तो जैसा मुनासिब हो वैसा कर लिया जायगा। पर शाहजहांने गैरत और बहादुरीसे इस बातको कबूल न करके लड़नेकी ठानली। सवार होकर अपने लशकर का इस तौर पर परा बांधा—बीचमें तो आप खडा हुआ. दहनी अनीमें अबदुल्लहखांको, बाईंमें नुसरतखांको, हिरावलमें राजा भीम को रखा। राजाके दहने हाथ पर दरियाखांको पठानों समेत, बायें हाथ पहाडसिंह वगैरह बरसिंहदेवके बेटोंको और अलतमश (अगली अनी) में शेरख्वाजाको जगह दी। तोपखानेके मीरआतिश (अफसर) रूमीको आगे रवाने किया।

उधरसे शाहजादा परवेज और महावतखां भी परे बांधकर लडनेको आये। बादशाही लशकर इतना अधिक था कि उसने शाहजहांकी फौजको तीन तरफसे घेर लिया। रूमीखांने तोपखाना बढाकर गोले मारे मगर एक गोला भी किसीके न लगा।

तोपें गर्म्म होकर बेकार होगईं। शाहजहांका हिरावल तोपखाने से बहुत दूर रह गया था इसलिये बादशाही हिरावल बेफिकरीसे तोपखाने पर आपड़ा। तोपखानेवाले उसके सामने न ठहर सके। भाग निकले। तोपखाना बादशाही नौकरोंके हाथ आगया यह हाल देखकर दरियाखां जो हिरावलके दहने हाथ पर था बिना लड़ेही भाग गया। उसके मुंह मोड़तेही हिरावलके बायें हाथकी फौज भी भाग खड़ी हुई। मगर राजा भीमने बादशाही फौजके बहुत होनेकी कुछ परवा न करके अपने थोड़ेसे पुराने राजपूतोंके साथ घोड़ा उठाया और बादशाही फौजके बीचमें पहुंचकर तलवार बजाई। जटाजूट हाथी जो आगे था तीरों और गोलियोंके जख्मोंमें चूर होकर गिर पड़ा मगर उस शेरमर्दने अपने राजपूतों समेत लड़ाईके मैदानमें पांव जमाकर ऐसी बहादुरी दिखाई कि जब चुने हुए सिपाहियों और लड़ाइयां जीते हुए जवानोंने जो सुलतान परवेज और महाबतखांके आसपास खड़े हुए थे हर तरफसे दौड़कर उस इक्के बहादुरको तलवारोंसे मार गिराया तोभी जब तक उसके दममें दम रहा लड़ा किया। अन्तको अपनी जान अपने मालिक पर कुरबान की। भीम राठौड़ पृथ्वीराज राठौड और अक्षयराज राठौड़ आदि कई रणबांके राजपूतों सहित जखमों के चूर होकर गिरे।

राजा भीमके काम आने और हिरावलके उजड जानेसे शुजाअतखां भी जो अलतमाशमें था भाग गया। मगर शेरख्वाजा अपनी जगह न छोडकर कतल हुआ। जब हिरावल और अलतमशकी फौजें आगेसे उठ गईं तो लड़ाई कोल (बीचकी फौज़) में आकर पड़ी। तब नुसरतखां जो बाईं अनीका धनी था हिम्मत हारकर अलग होगया। शाहजहांके पास ५०० सिपाही रह गये और अबदुल्लह दहनी अनीमें, तो भी शाहजहां जंगमें जमकर इन्हीं लोगों को लडाता रहा। जब इनमेंसे भी बहुतसे कतल और जखमी हो गये तो भण्डी और खासा हथियारखानेके हाथियों या अबदुल्लहखा

के सिवा जो कुछ फासिले पर दहने हाथकी तरफ खड़ा था और कोई नजर नहीं आता था। ऐसे वक्तमें एक तीर शाहजहांके दकतर पर लगा। पर खुदाने उसे एक हिकमतके लिये बचा लिया। फिर एक तीर शैख ताजुद्दीनके मुंह पर लगकर कानकी लौमेंसे निकल गया। शाहजहांने यूसुफखांको अबदुल्लहखांके पास भेजकर कहलाया कि अब काम नाजुक होगया है हम इन्हीं थोड़ेसे आदमियोंसे जो साथ रह गये हैं खुदाकी मेहरबानीका भरोसा करके बादशाही लशकरके कल्ब (बीचकी फौज) पर हमला करना चाहिये। अबदुल्लहखांने पास आकर कहा कि अब वक्त नहीं रहा। हमला करनेमें कुछ फायदा नहीं है अमीर तैमूर और हजरत बाबर जैसे बादशाहों पर भी ऐसेही वक्त आपडे है। वह मैदान छोडकर अपना बचाव कर गये तो फिर उनको फतह भी हुई। आखिर वह लोग जो सवारीमें हाजिर थे घोड़ेकी बाग पकडकर शाहजहांको वहांसे निकाल लेगये। बादशाही लशकरने आकर उनका लशकर तो लूट लिया पर पीछा न किया।

हारकर लौटना—शाहजहां ४ कूचमें रुहतासके किले पर पहुंचा। तीन दिन रहकर वहांका बन्दोबस्त करता रहा। फिर सुलतान मुरादबख्शको जो उन्हीं दिनों पैदा हुआ था दाइयो खिलाइयोंके साथ वहां छोड़कर दूसरे शाहजादों और बेगमों सहित पटनेको कूच कर गया।

महावतखां खानखानां—बादशाहने यह खबर सुनकर महावत खांको खानखानां सिपहसालारका खिताब सातहजारी सातहजार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब देकर तुमन और तोग बख्शा।

दक्षिणका हाल—मलिक अम्बरने कुतुबुल्मुल्ककी सरहदमें पहुंचकर, अपना दो बर्षका चढ़ा हुआ रुपया उससे लिया और वहांसे विलायत विदुर (विदर्भ देश) में आकर जब आदिलखांके नौकरोंको गाफिल देखा तो उस मुल्कको लूटकर आदिलखां पर चढाई की। आदिलखांके अच्छे अच्छे सिपाही और सरदार मुल्ला

मुहम्मदके साथ गयेहुए थे और अम्बरसे लड़नेके लायक फौज उसके पास न थी इसलिये उसने बुरहानपुरमें आदमी भेजे और बादशाही अमीरोंको लिखा कि मेरी खैरख्वाही सबको मालूम है और मैं अपनेको उस दरगाहके ताबेदारोंमेंसे समझता हूं। इस वक्त अम्बर ने मुझसे गुस्ताखी की है मैं चाहता हूं कि सब बादशाही खैरख्वाह जो सूबेमें मौजूद हैं मेरी मददको आवें। जिससे उस गुलामको हटाकर पूरी पूरी सजा दी जावे।

महाबतखां जब शाहजादेके साथ इलाहाबादको जाता था तो सरबुलन्दरायको बुरहानपुरकी हुकूमत पर छोड़कर कह गया था कि तमाम छोटे बड़े काम मुल्ला मुहम्मद लारीकी सलाहसे करे और दक्षिणके इन्तजाममें उसके कहनेसे बाहर न हो। इसलिये मुल्लाने बहुत जोर दिया और तीन लाख हुन जिसके १२ लाख रुपये होते थे लशकरके मददखर्च वास्ते उस सूबेके मुतसद्दियोंको दिये, उधर आदिलखांने महाबतखांको अपनी मददके वास्ते लिखा तो महाबतखांने भी इस बातकी तजवीज करके दक्षिणके मुतसद्दियों को लिख भेजा कि फौरन मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखांकी मददको चले जावें। तब सरबुलन्दराय लाचार होकर आप तो थोड़े आदमियोंसे बुरहानपुरमें रहा और लशकरखां, मिरजा मनूचहर, खञ्जरखां हाकिम अहमदनगर, जांसुपारखां हाकिम बीदर, रजवीखां, तुर्कमानखां, अकीदतखांबख्शी, असदखां, अजीजुल्लहखां जादूराय, ऊदाजीराम वगैरह तमाम अमीरों और मनसबदारोंको जो सब दक्षिणमें तैनात थे मुल्ला मुहम्मद लारीके साथ आदिलखां की मदद पर अम्बरकी जड़ उखाड़नेके लिये भेज दिया। जब अम्बरने यह खबर पाई तो उसने बादशाही बन्दोंको लिखा कि मैं दरगाहके गुलामों और आपके कुत्तोंमेंसे हूं। मुझसे कोई बेअदबी भी नहीं हुई है। फिर क्यों आप मुझे खराब करनेको आदिलखां और मुल्ला मुहम्मदके कहनेसे आते हैं? मुझसे और आदिलखांमें तो एक मुल्कके वास्ते जो पहले निजामुल्मुल्कका था और अब उसने

दबा लिया है झगड़ा है। वह बादशाही बन्दोंमेंसे है तो मै गुलामोंमेंसे हूं। उसे मेरे लिये और मुझे उसके वास्ते छोड़ दें। फिर जो खुदाको मंजूर है हो रहेगा। मगर किसीने उसकी बात न मानी और उस तरफ कूच होता रहा। अंबर जितनी विनय करता था उतनेही यह लोग सख्त होते जाते थे। लाचार वह बीजापुर के पाससे उठकर अपने मुल्कमें चला आया। तोभी इन्होंने उसका पीछा न छोड़ा। वह तो बहुत नर्मी करता था और लड़ाईको टालता था मगर मुल्ला और बादशाही उमरा उसको दबाये चले जाते थे। जब बहुत तंग आगया तो एक दिन बादशाही आदमियोंको गाफिल देखकर बीजापुरवालों पर जापड़ा उससे और मुल्लासे सख्त लड़ाई हुई। मुल्ला मारागया आदिलखांके लश्करकी हार हुई। उसके २५ अफसर इखलासखां वगैरह पकडे गये जो आदिलखांकी रियासतके रुक्न थे। अम्बरने उनमेंसे फरहादखांको मार डाला जिसके खूनका वह प्यासा था और बाकी को कैद रखा।

जादूराय और ऊदाजीरामने कुछ काम न किया भागकर चले गये। बादशाही अमीरोंमेंसे लश्करखां मिरजा मनूचहर और अकीदतखां गिरफतार हुए। खञ्जरखां अहमदनगरमें और जांसुपारखां बीयरमें चले आये दोनोंने अपने अपने किलोंको मजबूत किया। दूसरे लोग जो घातसे बचे उनमेंसे कुछ तो अहमदनगरके किलेमें गये और कुछ बुरहानपुर पहुंचे। अंबरकी बडी फतह हुई जिसकी उसे उम्मेद भी न थी। उसने कैदियोंको दौलताबाद के किलेमें भेजकर अहमदनगरके किलेको आघेरा और उसके फतह करनेको बहुत कोशिश की मगर कुछ न हुआ। तब थोडी सी फौज वहां छोडकर बीजापुर पर कूच किया। आदिलखां फिर किला पकड़कर बैठ गया अंबरने उसका तमाम मुल्क बादशाही सरहद (बालाघाट) तक दबा लिया। बहुतसी फौज जमा करके शोलापुरके किलेको जाघेरा। इसपर निजामुलुल्क और

आदिलखांके बीचमें झगड़ा रहा करता था। याकूतखांको कुछ फौजसे बुरहानपुर भेजा और मलिकमैदान तोपको दौलताबादसे लाकर शोलापुर फतह कर लिया।

काबुल—इन खबरोंको सुननेसे बादशाहको बड़ी घबराहट हुई। इसी बीचमें बलखसे नजरमुहम्मदखांका खत आया जिसमें लिखा था कि पलंगतोशने बगैर मेरी इजाजतके जो गुस्ताखी की थी उसकी सजा उसने खूब पा ली। अब मेरी यह अर्ज है कि खानाजादखांको काबुलसे बदलकर किसी दूसरेको उसकी जगह भिजवादें।

बादशाहने मंजूर करके वह सूबा ख्वाजा अबुलहसनको दिया और उसको पांचहजार सवारकी तनखाह दोअस्पा और तिअस्पाके जाबतेसे बढ़ाकर उसके बेटे अहसनउल्लहको बापकी नायबीमें काबुल भेजा। उसको भी डेढ हजारी ८०० सवारका मनसब जफरखांका खिताब खिलअत तलवार जड़ाऊ खञ्जर और हाथी मिला।

कशमीरसे लौटना—जब जाड़ेके आनेसे कशमीरकी खूबियां खतम होगईं तो बादशाह २५ शहरेवर (आश्विन सुदी ४) को वहांसे कूच करके लाहोरमें आया। पञ्जाबका सूबा सादिकखांसे लेकर आसफखांको दिया। खानाजादखांने काबुलसे आकर जमीन चूमी।

महाबतखांकी अर्जी पहुंची जिसमें लिखा था कि शाहजहां पटने और बिहारसे चलकर बङ्गालेको आगया और शाह परवेज बिहारमें जापहुंचा।

शाहजहां दक्षिणको—शाहजहांने दाराबखांको बङ्गालेकी हुकूमत देकर उसकी औरत एक लड़के और एक भतीजेको अपने साथ लेलिया था। तोनसकी लड़ाईके पीछे उसको रुहतासके किले में रखकर दाराबखांको लिखा कि गढीमें हाजिर हो। उसने जमानेका रङ्ग बदला देखकर अर्जी भेजी कि जमींदारोंने एका करके मुझे घेर रखा है इसलिये खिदमतमें हाजिर नहीं होसकता। शाहजहांको जब दाराबकी तरफसे निराशा हुई, और साथ कोई कामका आदमी न था इसलिये गुस्सेसे दाराबके बेटेको अबदुल्लहखांको सौंपा और बाकी सबको साथ लेकर जिस रास्तेसे आया था उसी रास्ते दक्षिणको कूच किया।

इक्कीसवां वर्ष।

सन् १०३४ हिजरी।

कार्तिक सुदी २ संवत् १६८१ ता० ४ अक्तूबर सन् १६२४ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८२ ता० २३ सितम्बर सन् १६२५ तक।

अबदुल्लहने दाराबके कसूरमें उसके जवान बेटेको मारडाला।

शाहजादा परवेज बङ्गालेको महाबतखां और उसके बेटेको जागीरमें देकर लौट आया। बङ्गालेके जमींदारोंके नाम जो दाराब को घेरे हुए थे हुक्म पहुंचा कि उसको यहां भेजदें वह आकर महाबतखांसे मिला।

दाराबका मारा जाना—जब बादशाहको दाराबके आनेकी खबर पहुंची तो महाबतखांको लिखा कि उस नालायकको जिन्दा रखनेमें क्या मसलिहत है चाहिये कि फरमानके पहुंचतेही उसका सिर दरगाहमें भेजदें। महाबतखांने ऐसाही किया।

खानाजादखां बङ्गालेमें—बादशाहने खानाजादखांको खासा खिलअत जड़ाऊ खञ्जर फूलकटारे समेत और खासा घोडा देकर बङ्गालेकी सूबेदारी पर भेजा। अबदुर्रहीमके बुलानेके लिये लिखा जिसका खिताब पहले खानखानां था।

परवेजको दक्षिण जानेका हुक्म—दक्षिणके फसादमें बादशाही लश्करके सरदारोंके कैद होजाने और शाहजहांके उधर रवाने होने से बादशाहने मुखलिसखांको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर शाह-जादा परवेजको अमीरों सहित दक्षिण को तरफ रवाने करे।

आगरेकी सूबेदारी—बादशाहने मुकर्रिबखांकी जगह कासिम खांको आगरेकी सूबेदारी पर मुकर्रर किया।

दक्षिणकी हकीकत—दक्षिणके बखशी असदखांकी अर्जी पहुंची लिखा था कि याकूतखां हबशी १००० सवारों सहित मलिकापुरमें

जो बुरहानपुरसे २० कोस है पहुंच गया है। सरबुलन्दराय शहर से बाहर निकल आया है और उससे लडनेके इरादेमें है। बादशाहने उसको ताकीदी हुक्म लिखा कि मददके पहुंचने तक हरगिज जल्दी न करे और बुरजोंको मजबूत करके शहरमेंही बैठा रहे।

कशमीरको कूच—असफन्दार सन १०३२ (चैत्र वदी) को बादशाहने मामूलके मुवाफिक कशमीरको कूच किया।

शाहजहां दक्षिणमें—शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचने पर अम्बरने उसको तावेदारी शुरू की। जो फौज याकूतखांकी सरदारीमें बुरहानपुर भेजी थी वह उसीकी खैरख्वाहीसे थी और शाहजहांको लिखा था कि आप जल्दी इधर पधारें। शाहजहां वहां जाकर टेवलगांवमें ठहरा। अबदुल्लहखां और मुहम्मद तकीको फौज दे कर कहा कि याकूतसे मिलकर बुरहानपुरको घेरें। उनके पीछे आप भी आकर लालबागमें उतरा जो शहरके बाहर है। रावरतन और दूसरे सरदारोंने जो किलेमें थे शहर और किलेको मजबूत करके मुकाबिला शुरू किया। शाहजहांने फरमाया कि एक तरफ से अबदुल्लहखां और दूसरी तरफसे शाहकुलीखां कोट पर चढें। अबदुल्लहखांकी तरफ तो गनीम(१) बहुत थे वहां सख्त लडाई हुई और शाहकुलीखां, फिदाईखां और जांनिसारके साथ कोटकी दीवार तोडकर अन्दर घुस गया। सरबुलन्दराय अपने कामके आदमियोंको अबदुल्लहखांके मुकाबिले पर छोडकर शाहकुलीखांके ऊपर आया। शाहकुलीखां किलेके सामने उससे लडा और जब कई उसके साथके बादशाही(२) बन्दे मारे गये तो उसने किलेके अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। जब सरबुलन्दरायने किले

(१) गनीम यहां बादशाही आदमियोंको लिखा है।

(२) बादशाही बन्दोंसे शाहजहांके नौकरोंसे मुराद है क्योंकि इस किताबका यह हिस्सा शाहजहांके बादशाह होनेके पीछे लिखा गया है।

को घेरकर जोर दिया तो शाहकुलीखां कौल कसम लेकर उससे मिला। शाहजहांने इस हालको सुनतेही फिर अपनी फौज जमा करके हमला करनेका हुक्म दिया। इस हमलेमें मुबारकखां और जांसुपारखां वगैरह बहादुरोंने बहुतही जान मारी मगर कुछ काम न निकला। बल्कि शाहबेग, बरकन्दाजखां, और सैयद शाहमुहम्मद जो शाहजहांके जाने पहचाने हुए सरदारोंमेंसे थे मारे गये।

शाहजहांने तीसरी दफे खुद सवारी करके हल्ला कराया। उसके बहादुर साथियोंने हर तरफसे आगे बढबढ़कर बहादुरी की। किले वालोंमेंसे बूदनखां भाइयों समेत, बाबा मीरक, लशकरखांका जमाई और बहुतसे राजपूत रावरतनके मारे गये और बाकी लोग भी घबरा उठे थे कि इतनेमें एक गोली सैयद जाफरके गलेसे छिलती हुई निकल गई। जाफर घबराकर भागा। उसको देखकर दच्छिणी सब भाग गये और शाहजहांकी फौजके बहुतसे नामर्दोंको भी अपने साथ लेगये। फिर इसी हालतमें यह भी खबर लगी कि शाहजादा परवेज और खानखानां महाबतखां बंगालेसे लौटकर नर्मदा नदी तक पहुंच गये हैं। तब शाहजहां भी लाचार होकर बालाघाटको लौट गया और अबदुल्लहखां उस को छोडकर इन्दौर(१) में जा बैठा। इसी तरह नुसरतखां भी अलग होकर निजामुल्मुल्कके पास गया और उसका नौकर हो गया।

खानआजमका मरना—इन्हीं दिनोंमें खानआजम मिरजाअजीज कोकलताश मर गया। उसका बाप गजनीनके मलेआदमियोंमेंसे था और उसकी माने अकबर बादशाहको दूध पिलाया था। इससे उन्होंने मिरजाअजीजका दरजा सब अमीरोंसे बढा दिया था उससे और उसके बेटोंसे उनको तकलीफें भी अजब गजब तरहकी उठानी पडती थीं। मिरजाको तवारीखका खूब इल्म था। लिखने और

(१) यह इन्दौर मालवेका इन्दौर नहीं है दच्छिणका इन्दौर है जो अब हैदराबादके नीचे है।

बोलनेवाला भी बडा था। खुश खत भी ऐसा था कि अच्छे अच्छे लिखनेवाले उस्तादोंसे उसका खत कुछ कम न था। मगर अरबी न जानता था। हाजिरजवाबीमें अपना जवाब न रखता था और शेर भी खूब कहता था। वह अहमदाबाद गुजरातमें मरा उसकी लाश दिल्लीमें निजामुद्दीन औलियाके रौजेमें बापकी कबरके पास दफन की गई।

गुजरातकी सूबेदारी—बादशाहने खानआजमके मरनेसे शाहजादे दांवरबख्शको हुजूरमें बुलाकर खानजहांको गुजरातकी सूबेदारी पर भेजा।

बीसवां नौरोज।

१० जमादिउस्सानी गुरुवार सन् १०३४ (प्रथम चैत सुदी १२) को सूर्य्य मेष राशिमें आया और बादशाहके जुलूसका बीसवां वर्ष लगा। बादशाहने भंवरके पहाड़में शिकार करके १५१ पहाडी मेंढे तीर और बन्दूकसे मारे। जंगरथीमे मेष संक्रान्तिका उत्सव हुआ। भंवरसे यहांतक खूब फूल फूलेहुए थे। पीरपञ्चालकी पहाडी वर्फसे ढकी हुई थी इसलिये बादशाह पूणिचके रास्तेसे गया। इन पहाड़ोंमें नारंगी बहुत होती हैं एक एक दरख्तमें हजार हजार नारंगियां लग जाती हैं।

आसफखांका बेटा अबूतालिब लाहोरकी हुकूमत पर बापकी नायबीमें और सरदारखांका बेटा आशिक उत्तर पञ्जाबके पहाड़में अपने बापकी जगह भेजा गया।

२८ फरवरदीन गुरुवार(१) (द्वि० चैत सुदी १० संवत् १६८२) को बादशाह भट नदी पर नूराबादमें पहुंचा। जैसे भटके घाटसे पीरपंचाल तक रास्तेमें मंजिल दरमंजिल मकान और महल बने थे वैसेही काश्मीर तक भी थे। कभी कुछ जरूरत डेरे खीमे या और किसी तरहके सामान फर्राशखानेकी न पड़ती थी। मार्गमें जाडे पाले और मेहसे विकट घाटियोंके उतरनेमें बहुत तकलीफ

(१) तुजुकजहांगीरीमें शुक्रवार भूलसे लिखा है।

हुई। रास्तेमें एक सुन्दर झरना मिला जो कशमीरके अकसर झरनोंसे अच्छा था। ५० गज ऊंचा और ४ गज चौडा था। उस पर इमारतके मुत्सद्दियोंने एक बड़ा चबूतरा बनवाया था। बादशाहने कुछ देर उसके ऊपर बैठकर कई प्याले पिये और हुक्मदिया कि यहां हमारे आनेकी तारीख यादगारीके लिये पत्थरकी तख़ती पर खोद दें।

इसी जगह लाला, सोसन, अर्गवां और नीलीचमेलीके फूल कशमीरसे आये।

कशमीर पहुंचना—१ उर्दी बहिश्त (द्वि० चैत्र सुदी १३) को सवारी बारामूलामें पहुंची जो कशमीरके बड़े कसबोंमेंसे है। यहां श्रीनगरके काजी, मौलवी, मुल्ला, सौदागर और सब जातिके लोग पेशवाईमें आये थे। इन दिनों मञ्जिलोंमें फूलोंकी खूब सैर थी। बादशाह और सब अमीर नावोंमें बैठकर कशमीरको रवाने हुए। १८ मंगलवार (वैसाख सुदी १) को कशमीरके दौलतखानेमें उतरे जहां नीली चमेली खूब महक रही थी। शहरके बाहर तरह तरह के फूल खिल रहे थे।

केसरका गुण—यह बात मशहूर थी, तिब्बकी किताबों और खास करके 'जखीरे ख्वारज्मशाही(१)' में भी लिखी थी कि केसर के खानेसे हंसी आती है और जो ज्यादा खाई जाय तो इतना हंसे कि मर जानेका खटका होजावे। बादशाहने परीक्षाके वास्ते मारने के लायक एक कैदीको जेलखानेसे बुलवाकर पाव भर केसर अपने सामने खिलाई पर कुछ न हुआ। दूसरे दिन दूनी खिलाई पर वह तो मुसकराया भी नहीं हंसना तो कहां और मरना किसका।

कांगडेमें मनोराय—कांगड़ेकी हिफाजत मनोराय सिंहदलन को सौंपी गई।

दावरबख्श गुजरातसे आया।

---

(१) यह एक बहुत बड़ाग्रन्थ हकीमोंका फारसीमें है।

बाईसवां वर्ष।

सन् १०३५ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८२ तारीख २४ सितम्बर सन् १६२५ से आश्विन सुदी २ संवत् १६८३ तारीख १२ सितम्बर सन् १६२६ तक।

सरदारखां ५० वर्षका होकर ११ मुहर्रम सन् १०३५ (आश्विन सुदी १३।१४) को दस्तोंकी बीमारीसे मर गया। बादशाहने यह सुनकर उत्तर पञ्जाबके पहाड़ोंकी फौजदारी अलिफखांको दी जो उसके मददगारोंमेंसे था।

इन्हीं दिनोंमें ठट्ठेका हाकिम मुस्तफाखां भी मरगया। बादशाहने वह सूबा शहरयारको इनायत किया।

दक्षिणका हाल—दक्षिणके बखशी असदखांकी अर्जी पहुंची कि शाहजहां देवलगांवमें पहुंच गया और याकूतखां हबशी अंबरके लशकरसे बुरहानपुरको घेरे हुए हैं। सरबुलन्दराय किलेमें जमा हुआ बराबर लड़ रहा है पर यह कुछ कर नहीं सकते।

रायराज सरबुलन्दराय—फिर खबर पहुंची कि कुछ दिनों पीछे अंबरके आदमी भी उठ गये हैं। बादशाहने खुश होकर पांचहजारी ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब जिससे बढ कर दक्षिणमें कोई खिताब नहीं होता, सरबुलन्दरायको दिया।

शाहजहांका माफी मांगना—जब शाहजहां बुरहानपुरका घेरा छोडकर दक्षिणको लौटा तो रास्तेमें बहुत कमजोर होगया था और उसी कमजोरीमें उसके जीमें यह बात आई कि बापसे अपने कसूरों की माफी मांग लेना चाहिये। इस इरादेसे उसने एक अर्जी बादशाहको भेजी जिसमें लिखा था कि मैं अपनी पिछली तकसीरों से बहुत शर्मिन्दा हूं। बादशाहने उसके जवाबमें अपने हाथसे फरमान लिखा कि जो दाराशिकोह और औरङ्गजेबको हुजूरमें भेजे,

रुहतास और आसेरके किले जो उसके आदमियोंके पास हैं बादशाही बन्दोंको सौंपे तो उसके कुसूर माफ किये जायं और बालाघाटका मुल्क उसको इनायत हो।

शाहजहांने इस फरमानकी पेशवाई और ताजीम करके बेटोंके साथ अधिक प्रेम होने पर भी उनको जवाहिरात, जड़ाऊ जेवर और बड़े बड़े हाथियोंकी भेट सहित जो १० लाख रुपयेकी थी बापकी खिदमतमें भेजा। सैयद मुजफ्फरखां और रजाबहादुर को जो रुहतासके किलेदार थे हुक्म लिखदिया कि जब कोई बादशाही फरमान लेकर आवे तो उसको किला सौंपकर शाहजादे मुरादबख्शके साथ यहां चले आवें। ऐसेही हयातखांको भी आसेर का किला बादशाही नौकरोंको सौंप देनेका हुक्म भेज दिया। आप नासिक चला गया।

सुलतान होशंगका आना—बादशाहने अरबदस्तगैबको शाहजादे दानियालके बेटे सुलतान होशङ्ग और अबदुर्रहीम खानखाना के लानेके लिये शाहजादे परवेजके पास भेजा। वह सुलतान होशंग को लेकर आया। बादशाहने अपने भतीजे पर मेहरबानी करके मुजफ्फरखां बख्शीको फरमाया कि इसकी खबर रखो और जिस चीजकी जरूरत पड़े बादशाही सरकारसे दिला दिया करो। उसकी सरकारको ऐसी बनादो कि किसी बातकी उसको तकलीफ न रहे।

खानखानांका हाजिर होना—इसी अरसेमें खानखानांने आकर चौखट चूमी और बहुत देरतक मारे शर्मिन्दगीके जमीन परसे सिर न उठाया। बादशाहने उसकी तसल्लीके वास्ते फरमाया कि इस मुद्दतमें जो कुछ हुआ तकदीरसे हुआ। हमारे तुम्हारे बसकी बात न थी। इसलिये कुछ सोच फिकर न करो। बख्शियोंको इशारा किया कि इसको लाकर मुनासिब जगह पर खड़ा करदो।

महावतखांको बंगाले जानेका हुक्म—बादशाहने नूरजहांके बहकानेसे फिदाईखांको शाहजादे परवेजके पास इस गरजसे भेजा

था कि महाबतखांको परवेजसे अलग करके बंगालेको रवाना करे और परवेजकी मुखतारीका काम खानजहां गुजरातसे आकर करेगा। फिदाईखांकी अर्जी आई कि मैंने सारंगपुरमें पहुंचकर शाहजादेको बादशाही हुक्म सुना दिया, मगर शाहजादे महाबतखां के अलग करने और खानजहांके साथ रहने पर राजी नहीं हैं। मैंने बहुतसी अर्ज की मगर मंजूर न हुई। इसलिये मैं लशकरके साथ रहनेमें फायदा न देखकर सारंगपुरमें ठहर गया हूं और खानजहांके जल्दीसे बुला लानेके लिये कासिद दौड़ाये हैं।

बादशाहने अर्जी पढ़कर शाहजादेको ताकीदी हुक्म लिखा कि जो पहले हुक्म हो चुका है हरगिज उसके खिलाफ़ न करो। अगर महाबतखां बंगाले जानेमें राजी न हो तो उसको अकेला हुजूरमें भेज दो और तुम तमाम अमीरोंके साथ बुरहानपुरमें ठहरे रहो।

तेईसवां वर्ष।

सन् १०३६ हिजरी।

आश्विन सुदी ३ संवत् १६८३ ता० १३ सितम्बर १६२६ से भादों सुदी २ संवत् १६८४ ता० १ सितम्बर सन् १६२७ तक।

कशमीरसे कूच—१९ मुहर्रम सन् १०३५ (कार्तिकवदी ७) को बादशाह कशमीरसे लाहोरको रवाने हुआ।

हुमाकी जांच—यह कई दफे अर्ज होचुकी थी कि पीरपंचालके पहाडोंमें एक जानवर होता है जो हुमाके नामसे मशहूर है। वहाके आदमी कहते है कि यह हड्डियोंके टुकडे खाता है और हमेशा उडता हुआ दिखाई देता है बैठता कम है। बादशाहको ऐसी बातोंकी तहकीकातका बहुत शौक था। हुक्म दिया कि जो कोई शिकारी उसको बन्दूकसे मारकर हुजूरमें लावेगा एक हजार रुपये इनाम पावेगा। जमालखां किरावल बन्दूकसे मारकर हुमा को लाया। गोली पैरोंमें लगी थी जिससे वह ताजाही बादशाहके देखनेमें आगया। बादशाहने फरमाया कि इसका पोटा चीरकर देखो क्या खाया है। चीरा तो उसमें हड्डियोका चूरा निकला। उन पहाडियोंकी बात सच्ची हुई जिन्होंने अर्ज की थी कि इसकी खुराक हड्डियोंका चूरा है। वह हमेशा उडता हुआ जमीनपर नजर रखता है। जहा कहीं हड्डी पडी देखता हे चोचमें उठाकर ऊपर को उड जाता है और वहासे उसको पत्थर पर पटक देता है। जब वह टूटकर चूर चूर होजाती हे तो चुन चुनकर खाजाता है। इससे जो हुमा मशहूर है वह यही है। जैसा कि शेख सादीने कहा है—

"हुमा सब जानवरो पर इसलिये बड़प्पन रखता है कि हड्डी खाता है और किसी पखेरूको नही सताता।"

उसका सिर कलसे मिलता हुआ था। मगर कलमुर्गके सिरमें पर नहीं होते, इसके सिरमें काले पर थे। बादशाहने अपने सामने तुलवाया तो ४१५ तोलेका हुआ।

बादशाह लाहोरमें—३०(१) गुरुवारको बादशाह लाहोर पहुंचा और एक लाख रुपये अबदुर्रहीम खानखानांको दिये।

ईरानका एलची—शाह अब्बासका एलची आकामुहम्मद ईरान से खत और तुहफे लेकर आया जिनमें एक जोड़ा सफेद शाहीनका भी था।

शेर और बकरीकी मुहब्बत—शाहजादे दादरबख्शने एक शेर बादशाहके नजर किया जो बकरीसे हिलमिल गया था। दोनो एक पिञ्जरेमें रहते थे और शेर उस बकरीको गोदमें बैठाकर प्यार किया करता था। बादशाहके हुक्मसे जब वह बकरी छिपादी गई तो शेर घबराने और चिल्लाने लगा। तब दूसरी बकरी उस पिंजरे में डाली गई मगर शेरने सूंघकर उसकी कमर मुंहमें पकड़ी और तोड डाली। फिर एक भेड़ उसके पास लेगये वह भी फाड डाली। आखिर वही बकरी उसके पास लाई गई तो पहलेकी तरह उससे प्यार किया। आप लेट गया और उसको छाती पर लेकर मुंह चाटने लगा। बादशाहने अबतक किसी जंगली और पलाऊ जानवरको अपनी मादाका मुंह चूमते नहीं देखा था!

दक्षिणका दीवान—बादशाहने फाजिलखांको दक्षिणका दीवान करके डेढहजारी डेढ़हजार सवारोंका मनसब दिया और उसके हाथ वहांके ३२ अमीरोंके वास्ते खिलअत भेजे।

महावतखांसे तकरार—महावतखांने अबतक जो हाथी बंगाले वगैरहसे जमा किये थे दरगाहमें नहीं भेजे थे और बहुतसे रुपये सरकारी हिसाबके उसमें निकलते थे। ऐसेही जागीरोंकी अदला-बदलीमें उसने दूसरे बन्दोंकी भी जमा दबा रखी थी इसलिये बाद-

(१) महीनेका नाम नहीं लिखा है और इकबालनामये जहांगीरीमें २आजर लिखी है। पर वह भी गुरुवारको न थी।

शाहने अरब दस्तगैबको इन दोनो कामोंके वास्ते महावतखांके पास भेजा कि वह हाथी और रुपये दे तो ले आवे नहीं तो कहदे कि दरगाहमें आकर दीवानोंको हिसाब समझा जावे ।

महावतखांका बंगाले जाना—फिदाईखांकी अर्जी पहुंची कि महाबतखां शाहजादे परवेजके पाससे बंगालेको रवाने होगया और खानजहां गुजरातसे शाहजादेकी खिदमतमें आपहुंचा है ।

अबदुल्लहखांके कुसूरोंकी माफी—इन्हीं दिनों खानजहांने अबदुल्लहखांकी अर्जी भेजकर उसके कुसूरोंकी माफी चाही। वादशाहने खानजहांकी खातिरसे माफी देदी ।

तह्मुर्स और होशंगका विवाह—शाहजादे दानियालका बडा बेटा तह्मुर्स भी शाहजहांका साथ छोडकर हाजिर होगया उसका छोटा भाई होशंग पहलेही आगया था। वादशाहने मेहरबानी करके दोनोको गोरकां(१) (जमाई) बनाया। तह्मुर्सको तो अपनी बेटी बहारबानू बेगम दी और सुलतान खुसरोकी बेटी होशमन्दबानू बेगमकी सगाई होशंगसे की ।

मोतमिदखांका बखशी होना—इन्हीं दिनों मोतमिदखांको बखशीका ओहदा मिला ।

वादशाहका काबुल जाना—वादशाह १७ असफन्दार (फालुगण सुदी १०) को कूच करके कई दिन तक लाहोरके बाहर रहा फिर २३ शुक्रवार (फालुगण सुदी १५) को काबुलकी तरफ रवाने हुआ ।

अहदादका सिर—अहसदबेगखांका बेटा इफतखारखां अहदादका सिर काटकर लाया। वादशाहने माथा जमीन पर टेककर खुदाका शुक्र किया और शादियाने बजानेका हुक्म देकर फरमाया कि इस सिरको लाहोरमें लेजाकर किलेके दरवाजेपर लटका दो। जब ख्वाजा अबुलहसनका बेटा जफरखां काबुलमें पहुंचा तो पलगतोश उजबकका, गजनीनके इलाकेमें आना सुनकर उस सूबेके

(१) मुगल वादशाहोंमें जमाईको गोरकां कहते थे ।

लश्कर समेत उससे लडनेको निकला तो अहदाद भी पलंगतोशके इशारेसे तिराहमें आकर लूटमार करने लगा था। फिर पलंगतोशने अपने एक रिश्तेदारको जफरखांके पास भेजकर माफी मांग ली। वह लश्कर जो उसके मुकाबिलेको जमा हुआ था अहदादके ऊपर गया। वह अवागर नाम पहाड़में जहां उसका अड्डा था जाछिपा और घाटेमें भीत चुनकर लड़नेको तय्यार होबैठा। बादशाही लश्कर ७ जमादिउलअव्वल (माघसुदी ८) को नक्कारा बजाकर चढ़ा। तड़केसे तीसरे पहर तक लड़ाई होती रही। वह अड्डा फतह होगया। अहदाद बन्दूकसे मरा पड़ा था। एक अहदी उसकी तलवार छुरी और अंगूठी जफरखांके पास लेगया। जफरखां जाकर उसका सिर काट लाया जो सरदारखांके हाथ दरगाहमें भेजा गया था। गोली किसके हाथसे लगी इसका कुछ पता नहीं चला।

बादशाहने जफरखां और दूसरे बन्दोंके जैसी जिसकी खिदमत थी मनसब बढाये इनाम भी दिये।

बादशाहकी बड़ी मांकी मृत्यु—इन्हीं दिनों खबर पहुंची कि रुकैया सुलतान बेगम जो मिर्जा हिन्दालकी बेटी और अकबर बादशाहकी बडी बेगम थी ८० वर्षकी होकर आगरेमें मर गई। इससे कोई औलाद न हुई थी। जब शाहजहां पैदा हुआ था अकबर बादशाहने उसे इसको सौंप दिया था और इसने उसको पाला था।

खानखानां पर फिर मेहरबानी—इसी अरसेमें बादशाहने बैरमखांके बेटे अबदुर्रहीम पर भांति भांतिसे कृपा करके खानखानांका बडा खिताब फिर उसे देदिया और घोडा सिरोपाव देकर कन्नौजकी हाकिमी पर बिदा किया।

महाबतखां पर कोप—महाबतखांके सब हाथी आकर बादशाही फीलखानेमें दाखिल होगये। महाबतखांने अपनी बेटी ख्वाजा बरखुरदार नाम एक नकशबन्दी शेखको बादशाहमें

अर्ज किये बिना व्याह दी थी। इस नाराजीसे बादशाहने शेखको हुजूरमें बुलाकर पूछा कि क्यों तूने ऐसे बड़े अमीरकी बेटी हमारी इजाजत बिना लेली? वह इसका कुछ जवाब न देसका बादशाहने उसको पिटवाकर कैद कर दिया।

मिरजा रुस्तम सफवीके बेटे मिरजा दखनीको शाहनवाजका खिताब मिला।

२९ असफन्दार ८ (चैत्रबदी ६) को बादशाहकी सवारी चिनाब नदी पर उतरी।

इक्कीसवां नौरोज।

२२ जमादिउस्सानी सन् १०३५ शनिवार(१)(चैत्र बदी ८) को सूर्य्यनारायणके मेष राशिमें आने पर इक्कीसवां नौरोज लगा। बादशाह चिनाब नदी पर उसका उत्सव करके रवाने होगया।

बादशाहने शाह ईरानके एलची आकामुहम्मदको खिलअत जड़ाऊ तलवार और ३० हजार रुपये देकर बिदा किया। शाहके खतके जवाबमें खत और एक लाख रुपयेके हीरोंसे बना हुआ एक गुर्ज उसके हाथ शाहके वास्ते भेजा।

महाबतखांका आना—महाबतखांने हाथी तो पहले भेजही दिये थे अब वहभी बुलाया हुआ आया। उसका आना आसफखांकी कारस्तानीसे हुआ था जो उसे बेइज्जत और खराब करना चाहता था। वह भी इस बातको समझ गया था। इसीलिये चार पांच हजार इकरंगे खूनख्वार(२) राजपूत अपने साथ लाया था जिनमें बहुतोंके जोरू बच्चे भी साथ थे। इसलिये कि जब मरनेकी नौबत पहुंचे तो खूब तलवारें मारकर बालबच्चों समेत मर जावें।

---

(१) पञ्चांगमें शनिवार है और इकबालनामयेजहांगीरीमें भी शनिकी रातको सूर्य्यका मेषमें आना लिखा है मगर भूल इसमें भी है कि २२ तारीखकी जगह २ लिखी है।

(२) लहूके पीनेवाले अर्थात् बहुत क्रूर।

उसके इस तरह आनेकी खबरें पहलेसे उड गई थी मगर आसफखांने गफलतसे कुछ परवा न की। जब बादशाहसे उसके आनेकी अर्ज हुई तो हुक्म हुआ कि जबतक सरकारी हिसाबकी सफाई दीवानोंसे न करे और मुद्दइयोंके दावे अदालतके बमूजिब न चुकावे दरबारमें न आवे। फिदाईखांको हुक्म हुआ कि कैदी बरखुरदारसे वह सब माल असबाब भी छीनले जो महाबतखांने उसे शादीमें दिया था।

बादशाहका डेरा भट नदीके पार था। आसफखां ऐसे बड़े दुश्मनसे गाफिल होकर अपने बालबच्चों और माल असबाब समेत पुल परसे इधर उतर आया। बादशाही कुल कारखाने और पास रहनेवाले बन्दे भी सब उतर आये थे। महावतखांने जब देखा कि अब जानपर आ बनी है तो लाचार पांच हजार जङ्गी राजपूतों को लेकर (जिनसे पक्के वचन होचुके थे) तड़केही अपने डेरेसे निकला। २००० राजपूतोंको पुलपर यह कहकर छोड़ा कि पुल को जलाडालें और जो आना चाहे उसको रोकदें। आप बादशाही दौलतखानेको गया जिसमें बादशाह अकेला रह गया था। महावतखांने दरवाजेमें मोतमिदखांके पेशखानेमें पहुंचकर हाल पूछा तो मोतमिदखां तलवार बांधकर डेरेसे निकला। महावत खांने उसको देखतेही बादशाहका हाल पूछा। उस समय १०० राजपूत तलवार और बरछे लिये उसके साथ थे और धूलधक्कड़में आदमीका चेहरा अच्छी तरह नहीं पहचाना जाता था। वहांसे वह बड़े दरवाजेकी तरफ गया। उस वक्त दौलतखानेके चौकमें थोड़े से पहरेवाले थे और तीन चार नाजिर दरवाजेके आगे खडे थे। महावतखां दौलतखाने तक चढा चला गया। फिर पैदल गुसलखानेको चला। अब उसके साथ २०० राजपूत होगये थे। मोतमिदखांने उसके सामने जाकर कहा कि हैं! यह कैसी गुस्ताखी और बेअदबी है? जरा ठहरो मैं जाकर अर्ज करता हूं। मगर उसने न माना और गुसलखानेके दरवाजेपर पहुंचकर किवाड़ तोड़

डाले जो दरवानोंने बन्द करदिये थे। फिर दौलतखानेके चौकमें घुस गया। बादशाहके आसपास जो खवास थे उन्होंने बादशाहसे उसकी गुस्ताखीकी अर्ज की। बादशाह डेरेमेंसे निकलकर पालकीमें बैठा। महावतखांने आदाब बजा लाकर पालकीकी परिक्रमा की और अर्ज की कि जब मुझे यह यकीन होगया कि आसफखांकी दुश्मनीसे छुटकारा न पाकर बुरी तरह मारा जाऊंगा तो लाचार यह जुरअत और दिलेरी करके हजरतकी पनाहमें आया हूं। यदि कतलके लायक हूं तो अपने हुजूरमें सजा दीजिये। इतनेमें उसके सशस्त्र राजपूतोंने आकर बादशाही कनातोंको घेर लिया। उस हालतमें सिवा दस्तगेब अरब, मीरमनसूर बदखशी, जवाहिरखां ख्वाजासरा, बुलन्दखां, खिदमतपरस्तखां, फीरोजखा, खिदमतखां ख्वाजासरा, फसीहखां मजलिसी और तीन चार दूसरे खवासोंके और कोई हाजिर न था। बादशाहका मिजाज उसकी बेअदबीसे बिगड़ा हुआ था। उसने दो बार तलवारकी मूठ पर हाथ डाला मगर मीरमनसूर बदखशीने हर दफा तुर्की बोलीमें कहा—"अभी वक्त नहीं है, इस कमबख्तको खुदा पर छोड देना चाहिये। आपही इसके सजा पानेका वक्त आजावेगा।" उसका यह कहना ठीक था। इस लिये बादशाह चुप होरहा। फिर तो राजपूतोंने आकर दौलतखानेको बाहर और और भीतरसे ऐसा घेरा कि उनके और महावतखांके सिवा और कोई नजर नहीं आता था। तब उसने फिर अर्ज की कि यह सवारीका वक्त है मामूली जाबतेके मुवाफिक सवारी फरमावें तो यह गुलाम खिदमतमें रहे और सब लोगोंको मालूम होजावे कि यह गुस्ताखी हुक्मसे हुई है।" महाबतने अपना घोडा आगे करके बहुत जिद्द और आजिजी की कि इसी पर सवार हों। बादशाहने मन्जूर न करके अपना खासा घोड़ा मंगवाया और सवारीके कपडे पहननेको अन्दर जाने लगा। महाबतखांने जाने नहीं दिया। इतनेमें खासा घोड़ा आगया। बादशाह सवार होकर दो तीरके

टप्पे पर गया होगा कि महाबतखांने अपना हाथी लाकर अर्ज की कि इस वक्त गडबड़ और भीडभाड़ होरही है हजरत हाथी पर सवार होकर शिकारको तशरीफ लेचलें। बादशाह हाथी पर सवार होगया। महाबतखांका भरोसेवाला एक राजपूत हौदेके आगे बैठा और दो पीछे। फिर मुकर्रिबखां आकर महाबतखांकी रजामन्दीसे हौदेमें बादशाहके पास बैठ गया। इस हलचलमें एक जख्म भी उसके माथेमें लग गया था।

खिदमतपरस्तखां खवासके पास बादशाहकी शराब और प्याला था। वह दौडकर हौदेसे जा लिपटा। राजपूतोंने उसको धक्के तो बहुत दिये और भालोंसे भी हटाया पर उसने हौदेको न छोड़ा। बाहर तो जगह न थी जैसे तैसे हौदेमें घुस बैठा।

आध कोस चले होंगे कि फीलखानेका दारोगा गजपतखां सवारीकी खासा हथनी लेकर आया। आप आगे और उसका बेटा पीछे बैठा था। महाबतखांके इशारेसे वह दोनो बेगुनाह मारे गये।

महाबतखां शिकारके बहाने बादशाहको अपने डेरेपर लाया। बादशाह उसके घरमें उतर पड़ा। उसने अपने बेटोंको बादशाहके आसपास खड़ा कर दिया। वह नूरजहां बेगमकी तरफसे गाफिल था। अब बेगमके लानेके लिये बादशाहको फिर दौलतखानेमें ले गया। पर बेगम इस फुरसतमें बादशाही महलोंके नाजिर जवाहिरखांके साथ नदीसे उतरकर अपने भाई आसफखांके डेरेमें चली गई थी। महाबतखां इस भूलसे बहुत पछताया। शहरयारका बादशाहसे अलग रखना ठीक न समझकर बादशाहको उसके डेरे पर लेगया। बादशाह उसके काबूमें था जो वह कहता था वही करता था। इस वक्त शुजाअतखांका पोता छज्जू साथ होगया। उसे शहरयारके डेरे पर पहुंचतेही महाबतखाने राजपूतों द्वारा मरवा डाला।

नूरजहां बेगमने भाईके डेरे पर पहुंचतेही सब अमीरोंको

बुलवाया और खफा होकर कहाकि तुम्हारी गफलत और नादानीसे यह हाल हुआ। जो बात किसीने न सोची थी वह हुई। तुम खुदा अर खल्कके सामने बदनाम हुए। अब इसका क्या बन्दोबस्त करना चाहिये सब सलाह करके अर्ज करो।

सबने कहा कि सलाह यही है कि कल फौजें तय्यार करके आपकी अर्दलीमें नदीसे उतरें और बदमाशोंको सजा देकर हजरतकी चौखट चूमें।

जब बादशाहसे इस सलाहकी अर्ज हुई तो बादशाहने रातहीको मुकर्रिबखां, सादिकखां बखशी, मीरमनसूर और खिदमतखांको लगातार भेजकर आसफखां तथा दूसरे अमीरोंको कहलवाया कि नदीसे उतरना और लडना ठीक नहीं है। कभी भूलकर ऐसी खोटी बात न करना। इससे सिवा पछतानेके और कोई नतीजा न होगा। जब हम इधर हैं तो तुम किसके भरोसे और किस आशा पर लड़ते हो? पूरा यकीन दिलानेके लिये अपनी अंगूठी भी मीरमनसूरके हाथ भेज दी कि यदि आसफखां आदिको सन्देह हो कि यह बातें महाबतखांकी बनाई हुई हैं और हजरतने उसके दबानेसे हुक्म देदिया है, तो दूर होजाय।

फिदाईखांको जब इस गदरका हाल मालूम हुआ तो सवार होकर नदी पर आया और पुलके जलनेसे पार उतरना मुश्किल देखकर तैरकर पार होनेके लिये बादशाही दौलतखानेके सामने घोड़ा पानीमें डाला। पर तीर बरसने लगे। ६ आदमी उसकी फौजके मारे गये और कुछ पानीके जोरसे गोते खाकर अधमुये किनारे पर जालगे। तोभी वह घोडे पर चढाहुआ पार उतर गया और खूब लडा। यहां उसके चार आदमी और मारे गये। जब उसने देखा कि दुशमन घिर आये और हुजूरसे पहुंचनेका रास्ता नहीं है तो लौटकर नदीसे उतर आया।

बादशाह उस दिन और उस रात शहरयारके डेरेमें रहा।

नूरजहां बेगमका लड़नेको आना—८ फरवरदीन शनिवार २८

जमादिउस्सानी (चैत्र सुदी १ संवत् १६८३) को आसफखां और ख्वाजा अबुलहसन वगैरहने लडनेके इरादेसे नूरजहां बेगमकी अर्दलीमें एक घाटसे जिसे नवाड़ेके दारोगा गाजीबेगने पायाब देखा था उतरना चाहा। पर सब घाटोंसे बुरा वही था। तीन चार जगह चौडे और गहरे पानीमें उतरना पड़ा जिससे लश्करका सिलसिला टूट गया। फौजें बिखर गईं। आसफखां ख्वाजा अबुलहसन और इरादतखां बेगमकी अम्मारी (१) के साथ दुश्मन की बडी फौजके सामने जा निकले जहां उसने नदीके घाटोंको अपने जंगी हाथियोंसे मजबूत कर रखा था। फिदाईखां एक तीरके टप्पे पर उनसे नीचे दुश्मनकी दूसरी फौजके आगे जा उतरा। उससे भी नीचेको आसफखांका बेटा अबूतालिब शेरख्वाजा अलहयार और बहुतसे आदमी उतरे। अभी दूसरे लोग किनारे परही पहुंचे थे और कुछ पानीके बीचमें थे कि दुश्मनकी फौज हाथियोंको आगे करके बढी। उस समय आसफखां और ख्वाजा अबुलहसन पानीमेंही थे और मोतमिदखां एक धारसे उतर कर दूसरी पर खडा भाग्यके हेर फेरका तमशा देख रहा था। सवार पैदल ऊंट घोड़े पानीमें एक दूसरेसे भिड़ भिड कर पार उतरनेकी कोशिश कर रहे थे। इतनेमें बेगमके ख्वाजासराने नदीमें आकर कहा कि महद उलिया(२) फरमाती हैं कि यह जगह क्या ठहरने और ढील करनेकी है। पांव आगे रखो गनीम तुम्हारे जातेही भाग जायगा। इस हुक्मके सुनतेही ख्वाजा अबुलहसन और मोतमिदखांने घोड़े पानीमें डालदिये। मगर गनीमके सिपाही और राजपूत इधरके आदमियोंको हटाते हुए नदीमें आगये। बेगमकी अम्मारीमें शहरयार और शाहनवाजखांकी बेटियां भी थी। एक तीर शहयारकी बेटीकी भुजामें लगा जिसे बेगमने अपने हाथसे खेंच कर बाहर फेंका। सबके कपडे खूनमें रंग गये। महलका

(१) गुमटीदार हौदा।

(२) यह बेगमोंका खिताब होता था।

नाजिर जवाहिरखां ख़ाजासरा, बेगमका ख़ाजासरा नदीम, और एक दूसरा ख़ाजासरा, तीनों हाथीके आगे काम आये। दो तलवारें बेगमके हाथीकी सूंडपर भी लगीं। हाथीका मुंह फिरगया। फिर दो तीन जख्म बर्छेके उसकी पीठ पर लगे। महावत हाथी को जल्दी जल्दी चला रहा था कि गहरे पानीका एक दह आगया। घोड़े उसमें तैरने लगे सवारोंने डूब जानेके डरसे वागें मोड़लीं। मगर बेगमका हाथी पार होगया बेगम बादशाही दौलतखानेमें जाकर उतर गई।

राजपूत जब इधर आये तो आसफखां अपने साथियोंके औघट रास्ते जानेसे बुरा नतीजा पैदा होनेका गिला करके एक तरफको चलदिया। साथवालोंने पूछा किधर जाते हो मगर कुछ पता न बताया। ख़ाजा अबुलहसनने घबराकर पानीमें घोडा डाला पानी गहरा था घोड़ा तैरने लगा। वह जीनसे अलग होगया गोता खाया सांस भूलगया मगर काठीका डंडा न छोडा। आखिर एक कश्मीरी मल्लाहने पहुंच कर उसको निकाल लिया। मगर फिदाईखां अपने नौकरों और कुछ बादशाही बन्दोंके साथ जो उससे मुहब्बत रखते थे नदीसे उतर कर गनीमकी फौजसे लड़ा जो उसके सामने थी और उसे हटाकर शहरयारके घर तक जा पहुंचा जहां बादशाह मौजूद था। मगर कनातके भीतर सवार और पैदल भरे हुए थे। उनपर वह दरवाजेसे तीर मारने लगा। अकसर तीर दौलतखानेके चौकमें बादशाहके पास जाकर गिरते थे। उस वक्त मुख़लिसखां तख्तके आगे खड़ा था।

फिदाईखां देरतक तीर मारता रहा और उसके साथियोंमेंसे सैयद मुजफ्फर जो एक बहादुर जवान था और फिदाईखांका जमाई अताउल्लह तथा सैयद अबदुलगफूर बुखारी मारे गये। चार जख्म फिदाईखांके घोडेके भी लगे। आखिर वह भी बादशाहके पास पहुंचना मुशकिल देखकर लौट गया और दूसरे दिन नदीसे उतरकर रहतासमें अपने बेटोंके पास पहुंचा। वहांसे बाल

बच्चोंको उठाकर गरचाक टंडेमें लेगया जहांका जमींदार बदरबख़्श उसका पुराना मुलाकाती था। उनको वहां छोड़ कर छडा हिन्दुस्तानको रवाने हुआ।

शेरख़्वाजा, अलहवरदीखां किरावलवाशी और इफ्तखारखांका बेटा अलहयारखां बिखर कर अलग अलग जापडे। आसफखां महाबतखांके हाथसे अपना बचाव न देखकर अपने बेटे अबूतालिब और दो तीन सौ बारगीर सवारों और खिदमतगारोंसे अटकके किलेको चल दिया जो उसकी जागीरमें था। जब रुहतासमें पहुंचा और सुना कि इरादतखां यहां छुपा हुआ है तो आदमी भेजकर बुलाया और साथ चलनेको बहुतसा कहा मगर राजी न हुआ। तब आसफखां तो अटकके किलेमें जा बैठा और इरादतखां लशकरमें आगया। फिर ख़्वाजा अबुलहसन प्रतिज्ञा कराके महाबत खांसे मिला। उसने इरादतखां और मोतमिदखांके नाम भी जान माल और इज्जतमें नुकसान न पहुंचानेका कौल नामा लेकर उनको महाबतखांसे मिलाया। उसी दिन महाबतखांने शेख चांद ज्योतिषीके जवान पोते अबदुस्समदको आसफखांसे मेलमिलाप रखनेके कुसूरमें अपने सामने मरवा डाला।

बलखका एलची—इन्हीं दिनोंमें बलखके खांन नजर मुहम्मदखांके एलची शाहख़्वाजाने बादशाहके हुजूरमें यहांके मामूलके मवाफिक आदाब बजा लाकर नजर मुहम्मदखांके भेजे हुए तुर्की घोडे और गुलाम नजर किये। फिर अपनी पेशकश भी गुजरानी नजर मुहम्मदखांके तुहफे ५००००) के आंके गये शाह ख़्वाजाको ३००००) इनामके मिले।

आसफखांका कैद होजाना—महाबतखांने कुछ बादशाही अहदी, कुछ अपने सिपाही, और कुछ उधरके जमीन्दार अपने बेटे बहरोज और शाहकुलीके साथ आसफखांपर भेजे। उन्होंने जल्दी से पहुंचकर अटकका किला लेलिया। आसफखां प्रतिज्ञा लेकर

उनसे मिला उन्होंने महाबतखांको हाल लिखा इस अरसेमें बादशाहकी सवारी भी अटकसे उतर आई थी। महाबतखां बादशाहसे रुखसत लेकर अटकके किलेमें गया और आसफखां, उसके बेटे अबूतालिब, और मीरमीरांके बेटे खलीलुल्लाहको पकड़कर किला अपने मोतमिदोंको सौंप आया। उसने आसफखांके मुसाहिब अबदुलखालिक, और शाहजहांके बखशी मुहम्मद तकी, को जो बुरहांनपुरके घेरेमें उसके हाथ आगया था मरवा डाला। आसफखांके उस्ताद मुल्ला मुहम्मदके पावोंमें भी बेडी डाली थी पर वह ढीली रह जानेसे खुलगई। इस बातको उसकी जादूगरी समझकर उसको भी उसने कतल करा दिया। यह मुल्ला मुहम्मद हमेशा कुरान पढ़ा करता था और उसके होठ हिलते थे। जिससे उसका डर होगया था कि कहीं जादूसे मुझे न मार डालें।

काफिरोंका हाल—जब सवारी जलालाबादमें पहुंची तो कुछ काफिरोंने आकर बन्दगीकी। उनका हाल मिर्जा हादीने इस तौर पर लिखा है—इनका मजहब तिब्बतके काफिरोंसे मिलता है। ये आदमीकी सूरत पर एक मूर्त्ति सोने या पत्थरकी बनाकर पूजते हैं। एकही औरत करते है मगर जो वह बांझ हो या खसमसे मेल न रखे तो दूसरी भी कर लेते है। जो किसी दोस्त या रिश्तेदारके घर जाना चाहें तो छतो पर होकर जाते हैं। शहरका दरवाजा एक रखते हैं। सूवर, मछली, और मुर्ग, को छोडकर सब जानवरोंका मांस खाते है। मछलीके वास्ते कहते है कि जिस किसीने हमारी कौममेंसे खाई वह अन्धा होगया। मांस उबालकर खाते हैं। लाल कपडेको बहुत पसन्द करते है। मुर्देको कपड़े और हथियार पहनाकर शराबकी सुराही और प्याले समेत गाडते हैं। सौगन्द खानेका यह दस्तूर है कि हरन या बकरेको सिरोको आगमें रखते है फिर वहांसे उठाकर पेडमें टांगते है और कहते हैं कि जो कोई हममेंसे यह सौगन्द झूठी करता है वह जरूर किसी बलामें फंसता है;

बाप जो अपने बेटेकी जोरू पसन्द करे तो लेलेता है बेटा कुछ नहीं कहता।

बादशाहने उनसे फरमाया कि हिन्दुस्थानकी चीजोंमेंसे जिस चीजको तुम्हारा दिल चाहता हो अर्ज करो। उन्होंने घोड़े तलवार नकद रुपये और सुरख रंगके खिलअतकी अर्ज की और अपनी मुरादको पहुंचे।

जगतसिंहका भागना—इसी अरसेमें राजा बासूका बेटा जगतसिंह बगैर रुखसतके बादशाही लशकरसे अपने घर पंजाबके पहाड़ोंमें चला गया। बादशाहने सादिकखांको पंजाबका सूबा देकर जगतसिंहकी सजाका हुक्म दिया।

काबुल पहुंचना—रविवार २० उर्दीबहिश्त (बैशाख सुदी ११ को बादशाह काबुल पहुंचकर हाथी परसे रुपये लुटाता बाजार निकला और किलेके पास जहांआरा बागमें उतरा।

१ खुरदाद (ज्येष्ठ बदी १२) शुक्रवारको बादशाह बाबर बादशाह, मिरजा हिन्दाल और अपने चचा मिरजा मुहम्मदकी कबरों की जियारत करनेको गया।

महाबतखांके राजपूतोंकी हार—महाबतखांके राजपूत जो इत्तिफाकसे इतना जोर और गलबा पागये थे मारे घमण्डके किसी को कुछ खयालमें न लाते थे रैयतको लूटते और गरीबोंको सताते थे गैबकी मारमें पड गये। उनमेंसे कुछ लोग काबुलकी शिकारगाह चलकामें जाकर घोडे चराने लगे। वहां बादशाहके शिकार खेलने के लिये बन्दोबस्त होकर अहदियोंका पहरा लगा था। एक अहदी ने उन राजपूतोंको रोका तो उसको मारे तलवारोंके टुकडे टुकडे कर डाला। उसके घरवालों और दूसरे अहदियोंने दरगाहमें जाकर फरियाद की। बादशाहने फरमाया कि मारनेवालेको पहचान लो तो उसे हुजूरमें बुलाकर तहकीकात करें। खून साबित होने पर सजा दी जाय। इस हुक्मसे नाराज होकर अहदी लौट आये। राजपूत उनके पासही ठहरे हुए थे। दूसरे दिन लड़नेके

इरादेसे चढकर राजपूतोंके डेरों पर गये। थोडीसी लड़ाईमें आठ नौसौ राजपूत मारे गये। क्योंकि अहदी अच्छे तीरन्दाज और बन्दूकची थे। महाबतखां जिन राजपूतोंको अपने सगे बेटोंसे भी ज्यादा समझता था वह सब वहीं खेत रहे। ५०० राजपूतोंको जिनमें अकसर अपनी कौमके सरदार और बहादुरीमें नाम पाये हुए थे काबुल और हजाराकी कौमोंके लोग पकड़कर हिन्दूकुश पहाड़के उधर लेगये और बेच आये।

महाबतखां यह खबर सुनतेही अपने नौकरोंकी मददको चढ़ा था, पर हाल बिगडा देखकर मारेजानेके भयसे रास्तेसे लौटआया। दौलतखानेकी पनाह पकडकर बादशाहसे हुलड़ मिटानेकी अर्ज करने लगा। बादशाहने हबशियों, कोतवालखां और जमाल खवास को हुक्म दिया। उन्होंने जाकर वह फसाद मिटा दिया। फिर बादशाहसे अर्ज हुई कि इस फसादका उठानेवाला ख्वाजा अबुल-हसनका जमाई बदीउज्जमां और उसका भाई ख्वाजा कासिम है। बादशाहने दोनोंको हुजूरमें बुलवाकर पूछताछ की वह कोई जवाब महाबतखांकी तसल्लीके लायक न दे सके। उसके बहुत आदमी तीर बन्दूकोंसे मारे गये थे इसलिये बादशाहने उसकी खातिर से दोनोंको उसके हवाले कर दिया। वह उन्हें नंगे पांव नंगे सिर बडी ख्वारीसे खेंचता हुआ अपने घर लेगया और वहां कैद करके उनका माल असबाब जब्त कर लिया।

अम्बर हबशीका मरना—इन्हीं दिनों अर्जहुई कि अम्बर हबशी ८० वर्षका होकर स्वाभाविक मृत्युसे दक्षिणमें मर गया। सिपाह-गरी सरदारी और बन्दोबस्तके जोड तोडमें इक्का था। उसने वहांके बदमाशोंको जैसा चाहिये वैसा दबा रखा था। अखीर वक्त तक इज्जतसे रहा। किसी इतिहासमें नहीं देखा गया कि कोई गुलाम हबशी उसके दरजेको पहुंचा हो।

अबदुर्रहीम खानखानांका लाहोरमें आना—इसी अरसेमें दिल्ली के हाकिम सैयद बहवाने महाबतखांके लिखने पर अबदुर्रहीम

खानखानांको जो अपनी जागीरको जाता था लौटाकर लाहोरमें भेज दिया।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्हीं दिनों बादशाह को सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेबके आगरे तक पहुंचनेकी खबर सुननेसे बहुत खुशी हुई। मगर महावतखांने आगरेके किलेदार मुजफ्फरखांको लिखा कि शाहजादोंको नजरबन्द करले और अपने साथ दरगाहमें लावे।

शिकारके वास्ते रस्सा—बादशाहको शिकारकी ऐसी लत थी कि कूच और मुकाममें एक दिन भी बिना शिकारके नहीं रहता था। इस लिये अलहवर्दीखां किरावलबेगीने कमरगोके शिकारके वास्ते एक बडा रस्सा बटकर नजर किया जिसको हिन्दुस्थानी नावर कहते थे। बादशाहने उसका नाम नूर रखा। २५०००) इस पर खर्च हुए थे। वह बादशाहके हुक्मसे गांव अरगन्देकी शिकारगाह में खडा किया गया और जानवर हर तरफसे घेरकर उसमें लाये गये। बादशाह बेगमोंको लेकर शिकार खेलने गया। गांव मीरआनूसमें शाह इसमाइल हजारा जिसको हजाराके लोग गुरु मानते थे बालबच्चों समेत उतरा हुआ था। बादशाह उससे मिलने गया। नूरजहांने शाहके बेटोंको मोती जवाहिर और जडाऊ गहने दिये। फिर बादशाहने शिकारगाहमें जाकर ३०० के करीब जंग, पहाड़ी मेढे, रोझ और जरक शिकार किये। इन सबमें जो बडा था वह तोला गया तो जहांगीरी तोलसे ३ मन ३ सेर हुआ।

शाहजहांका ठट्ठे जाना—शाहजहांको जब महाबतखांकी गुस्ताखीकी खबर पहुंची तो थोडासा लशकर और सामान पास होने पर भी बापकी खिदमतमें पहुंचकर महाबतको सजा देनेके इरादे से २३ रमजान सन् १०३५ (आषाढ बदी १०) को १००० सवारोंके साथ नासिक त्रिम्बकसे रवाना हुआ। उसने यह खयाल किया था कि इस सफरमें और भी फौज जमा होजावेगी। मगर जब अजमेरमें पहुंचा तो महाराजा भीमका बेटा राजा कृष्णसिंह जिसे

पास ५०० सवार थे मर गया। उसके मरने और उसके सवारोंके बिखर जानेसे कुल ५०० सवार शाहजहांके पास रह गये। वह भी खराब हाल और खर्चसे तङ्ग थे। शाहजहांने वह इरादा पूरा होता न देखकर ठट्ठेमें कुछ दिन जारहनेके लिये अजमेरसे नागोर, नागोरसे जोधपुर और जोधपुरसे जैसलमेरको कूच किया। इसी रास्तेसे हुमायू बादशाह भी अपने गिरे दिनोंमें सिन्धको गया था। दादा पोतेका एक हालतमें इधर जाना कराल कालका विचित्र चक्र था।

काबुलसे कूच—जब बादशाहका दिल काबुलकी सैर और शिकारसे भर गया तो १ शहरेवर सोमवार (भादों सुदी ३) को आगरेकी तरफ कूच किया।

परवेजकी बीमारी—इसी दिन अर्ज हुई कि शाहजादे परवेज के पेटमें वायगोलेका दर्द होजानेसे उसे बहुत देर तक बेहोशी रही। फिर इलाज करनेसे कुछ होश आया है। इसके साथही खानजहां की अर्जी पहुंची जिसमें लिखा था कि शाहजादा फिर बेहोश हो गया। ५ घड़ी बेहोश रहा। हकीमोंने दाग देनेकी तजवीज करके ५ दाग उसके सिर ललाट और कनपटियोंमें लगाये तो भी होशमें न आया। एक घण्टे पीछे कुछ होश हुआ और फिर बेहोशी होगई। हकीम इस बीमारीको मिरगी बताते हैं और यह जियादा शराब पीनेका फल है। इसी बीमारीसे इनके दोनों चचा शाहजादे मुराद और शाहजादे दानियालने अपनी जान खोई थी।

दाराशिकोह और औरंगजेबका आना—इन्हीं दिनों सुलतान दाराशिकोह और औरंगजेब अपने दादाकी खिदमतमें पहुंचे। उनके साथ जो १० लाख रुपयेकी पेशकश हाथियों और जवाहिर के जड़ाऊ सामानोंकी थी बादशाहकी नजरसे गुजरी।

बायसनकर सुलतान दानियालका बेटा—फाजिलखांकी अर्जी पहुंची कि दानियालका बेटा बायसनकर उमरकोटसे शाहजहांका साथ छोड़कर राजा गजसिंहके मुल्कमें आगया है। शाहजादे

परवेजके पास पहुंचनेवाला है।

महावतखांका निकाला जाना—महावतखांने बादशाहके साथ जो इतनी बडी गुस्ताखी करके दरबारमें दखल पाया था इससे उसका मिजाज बिगड़ गया था। उसने सब अमीरोंके साथ बदसलूकी करके बहुतसे दुश्मन पैदा कर लिये थे। मगर बादशाह इस पर भी बुर्दबारीसे उस पर अपनी पूरी इनायत और मेहरबानी दिखाता था। जो कुछ नूरजहां बेगम अकेलेमें उससे कहती थी वह सब उसे कह देता था। कई बार कह चुका था कि बेगम तेरी फिकरमें है तू खबरदार रहना। शाहनवाजखांकी बेटी जो अबदुर्रहीम खानाखानांकी पोती और आसफखांके बेटे शाइस्ताखांकी जोरू है कहती है कि जब मैं काबू पाऊंगी महाबतखांको बन्दूकसे मार दूंगी।

बादशाहकी इन बातोंसे महावतखांके दिलका खटका कम हो गया था। जैसे वह पहले बहुतसे राजपूतोंके साथ लेकर दरगाह से आता था और उनको दौलतखानेके आसपास खडा करके अन्दर जाता था अब उतना सामान साथ नहीं लाता था। उसके अच्छे अच्छे नौकर भी अहदियोंकी लडाईमें मारे जाचुके थे।

इधर नूरजहां बेगम उसके घातमें लगी हुई थी। वह अपनी फौज भी बढातीजाती थी और बहादुरसिपाहियोंका दिलभी बढाती थी। उसका ख्वाजासरा हुशयारखां उसके लिखने पर लाहोरमें २००० सवार नौकर रखकर लाया था और यहां उसके पास भी एक अच्छी फौज जमा होगई थी। अब उसने रुहतससे एक मञ्जिल आगे अपने सवारोंकी हाजिरी लेनेकी तजवीज करके हुक्म दिया कि तमाम नई पुरानी सिपाह वर्दी पहनकर रास्तेमें खड़ी हो। बुलन्दखां ख्वाससे कहा कि हजरतकी तरफसे महावतखांके पास जाकर कहे कि आज बेगम अपने नौकरोंकी हाजिरी बादशाह को देगी। तुम अपना पहला मुजरा मौकूफ रखो जिससे तुम्हारे उसके बीच कोई झगड़ा न पड सके।

बुलन्दखांके पीछेही ख्वाजा अनवरको भेजा कि यह बात महाबतखांको खूब सोचा दे कि हुक्मके मुवाफिक अमल करके इस वक्त मुजरा करनेको न आवे।

दूसरे दिन बहुतसे बादशाही बन्दे दरगाहमें भर गये और हजरतने महाबतखांको हुक्म भेजा कि उर्दूसे एक मंजिल आगे चला करे। महाबतखां भी असल भेद पागया था। पर अहदियोंकी लड़ाईमें उसे बड़ा सदमा पहुंच चुका था इसलिये लाचार होकर आगेको कूच कर गया। तब बादशाह भी उसके पीछेही सवार होकर ऐसी गर्मागर्मीसे गया कि वह फिर अपनेको सम्हाल न सका और आगेकी मंजिलसे भी कूच करके भटके पार उतर गया। बादशाहने इधर नदी पर अपना लश्कर डालकर अफजलखांको महाबतखांके पास भेजा और यह चार हुक्म कहलाये—

१—शाहजहां ठट्ठेको गया है वह भी उसके पीछे जाकर इस मुहिमको पूरी करे।

२—आसफखांको हुजूरमें भेज दे। न भेजेगा तो बादशाही फौज उस पर भेजी जायगी।

३—शाहजादे दानियालके बेटे तहमुर्स और होशंगको हुजूरमें रवाने करे।

४—मुखलिसखांके बेटे लश्करीको हाजिर करे जो अबतक हुजूरमें नहीं आया है क्योंकि वह उसका जामिन है।

अफजलखांने शाहजादे दानियालके बेटोंको लाकर अर्ज की कि वह आसफखांके वास्ते यह अर्ज करता है कि मैं बेगमकी तरफ से बेखटके नहीं हूं। डर है कि आसफखांको अपने हाथसे जाने दूं तो बेगम मेरे ऊपर फौज भेजेगी। इसलिये हजरत चाहें जिस खिदमत पर मुझे मुकर्रर फरमादें। मैं लाहोरसे गुजरतेही आफस खांको बडी खुशीसे हुजूरमें भेज दूंगा।

यह सुनकर बेगम बहुत गुस्से हुई। अफजलखांने फिर जाकर जो कुछ देखा सुना था महाबतखांसे साफ साफ कह दिया।

कहा कि आसफखांके भेजनेसे ढील करना भला नहीं है। अन्यथा करनेमें पछताना पड़ेगा। महाबतखां भी समझ गया। उसने फौरन आसफखांको लाकर माफी मांगी और कौल कसम लेकर उसको दरगाहमें भेज दिया। मगर उसके बेटे अबूतालिबको कुछ दिनोंके वास्ते अपने पास रखकर ठट्ठेकी तरफ कूच कर गया।

भटसे उतरना—१२ (आश्विनबदी १०) को बादशाहकी सवारी भटसे उतरी। अजब बात यह है कि महाबतखांकी चढाई इसी नदीके किनारे पर हुई थी और अब इसी नदीपर उसकी कमबख्ती भी आगई। उसने कुछ दिन पीछे अबूतालिब, बदीउज्जमां और ख्वाजा कासिमको भी दरगाहमें भेज दिया।

जब जहांगीराबादमें सवारी पहुंची तो दावरबख्श, खानखानां, मुकर्रिबखां, मीरजुमला और शहर लाहोरके बडे बडे आदमियोंने पेशवाईमें आकर जमीन चूमी।

लाहोरमें पहुचना—७ आबान (कार्तिक सुदी १०) को बादशाह लाहोरमें पहुंचा। इसी दिन आसफखांको पंजाबका सूबा और वकालतका बडा ओहदा मिला और हुक्म हुआ कि दीवान (कचहरी) में बैठकर अपने इखतियारसे मुल्क और मालके कुल काम किया करे। दीवानका ओहदा ख्वाजा अबुलहसनको, मीरसामानीका अफजलखांको और बख्शीका मीरजुमलाको इनायत हुआ।

महाबतखांका खजाना जब्त होना—इन्हीं दिनों अर्ज हुई कि महाबतखां ठट्ठेका रास्ता छोडकर हिन्दुस्थानको रवाने हुआ है और उसके वकीलोंने बंगालेसे २२ लाख रुपये भेजे हैं जो दिल्ली तक पहुंच गये हैं। बादशाहने सफदरखां, सिपहसालारखां, अलीकुली दरमन, नूरुद्दीनकुली और अनीराय सिंहदलनको १००० अहदियों सहित उस खजानेको लानेके लिये भेजा। यह लोग शाहाबादके पास महाबतखांके नौकरोंके सामने जापहुंचे जो खजाना लाते थे। उन्होंने रुपयोंको सरायमें लेजाकर मुकाबिला करना शुरू किया।

बादशाही बन्दे बहुतसी लडाईके पीछे सरायमें आग लगाकर अन्दर घुस गये और खजाना ले आये। अब उनको बादशाहका हुक्म पहुंचा कि रुपयोंको दरगाहमें भेजकर महाबतखांके पीछे जावें।

खानखानां महाबतखां पर—फिर बादशाहने खानखानांको ७ हजारी जात और ७ हजार सवार दुअस्पे तिअस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, जडाऊ जीनका पंचाक घोड़ा और खासा हाथी इनायत करके दरगाहके कुछ बन्दोंके साथ महाबतखांके मारनेको बिदा किया और अजमेरका सूबा उसकी जागीरमें लिख दिया।

जगतसिंह—जगतसिंहकी मुहिम सादिकखांसे पार नहीं पडी थी और बादशाह उसको महाबतखांका दोस्त समझता था इस लिये उसके नाम दरबारमें न आनेका हुक्म भेज दिया।

मुखलिसखां और जगतसिंहने कांगड़ेके पहाड़ोंसे आकर बन्दगी की।

मुकर्रमखांको बंगालेका सूबा—मुकर्रमखांको जो मुल्क कोचमें हाकिम था बादशाहने हुक्म भेजा कि हमने तुमको बंगालेका सूबेदार किया है। वहां जाकर बन्दोबस्त करो और खानेजादखांको दरगाहमें भेजदो।

शाहजादे परवेजका मरना—शाहजादे परवेजको बहुत शराब पीनेसे मिरगी होगई थी खाना नहीं भाता था। ताकत सब टूट गई थी। हकीमोंने बहुत इलाज किया मगर अखीर वक्त आजानेसे कुछ फायदा न हुआ। वह ७ सफर सन् १०३६ बुधवारको रात को ३८ सालकी उमरमें मर गया। पहले तो उसकी लाश बुरहान पुरमें जमीनको सौंपी गई थी पीछे आगरे लाकर उसके बनाये हुए बागमें दफन की गई।

बादशाहने यह सुनकर बहुत रंज किया। अन्तमें सन्तोष करके खानजहांको लिखा कि परवेजके बेटों और आदमियोंको हुजूरमें रवाने कर दे।

बलखके वकीलोंकी बिदा—इन्हीं दिनों बादशाहने नजरमुहम्-

दखांके एलची शाहख्वाजाको रुखसत किया। उसको जो कुछ पहले कई दफे करके मिल चुका था उसके सिवा ४००००) और इनायत किये। खानके वास्ते भी कुछ नमूना हिन्दुस्थानकी तुहफा चीजों का भेजा।

शाइस्ताखां—आसफखांके बेटे अबूतालिबको शाइस्ताखांका खिताब मिला।

बिहारकी सूबेदारी मिरजा रुस्तम सफवीको इनायत हुई।

दखनियोंकी ताबेदारी—सूबेदच्छिणके मुतसद्दियोंकी अर्जी पहुंची कि याकूतखां हबशीने जिससे बडा कोई सरदार अम्बरके पीछे उस देशमें न था और अम्बरकी जिन्दगीमें भी वही सिपहसालार था, जालनाके पास आकर सरबुलन्दरायको लिखा कि मैं अम्बरके बेटे फतहखां और निजामुल्मुल्कके दूसरे सरदारोंके साथ बादशाही बन्दगी किया चाहता हूं। आगे मैं आया हूं बाकी लोग पीछे आते हैं।

सरबुलन्दरायने खानजहांको लिखा। खानजहांने तसल्लीकी बहुतसी बातें लिखकर याकूतखांको अपने पास बुलाया। एक चिट्ठी सरबुलन्दरायको भी लिखी कि उसकी खूब खातिर और मेह-मानदारी करके उसे बुरहानपुरको रवाना करे।

शाहजहां—शाहजहां ठट्ठेको इस मतलबसे गया था कि ईरानके बादशाह शाह अब्बाससे नजदीक रहे। उसके साथ पहले से दोस्ती और चिट्ठीपत्री थी। शाह भी इन हरज मरजके दिनोंमें हाल पूछता रहता था। इससे शाहजहांको शाहसे मदद की बहुत कुछ आशा थी। पर जब ठट्ठेके पास पहुंचा तो वहांके सूबेदार शरीफुल्मुल्कने ८०० सवार और १२००० पैदल जमा करके मुकाबिले की तय्यारी की। शाहजहांके साथ तीन चारसौकी जान देनेवाले बन्दे थे तो भी सूबेदार सामने नहीं आया किलेमें जा बैठा। किला पहलेही तोपों और बन्दूकोंसे सजा लिया था। शाहजहांने अपने नौकरोंसे कह दिया था कि किले पर न जावें और अपनेको तोपों

और बन्दूकोंसे मुफ्तमें तबाह न करें। इस पर भी कई दिलचले जवान दौड़कर शहरके कोट पर चढ़ गये मगर किलेको मजबूतीसे कुछ कर न सके लाचार लौट आये। कुछ दिनों पीछे फिर किले पर गये और किलेका मैदान साफ होने और किसी दीवार और दरख्तकी आड न होनेसे ढालें अपने मुंहके आगे करके आगे बढे। एक बड़ी लम्बी चौड़ी खाई पानीसे भरी हुई मिली। वह उससे न तो उतर सके और न पीछे फिर सके। बीचमेंही रामभरोसे बैठ गये।

इतनेहीमें शाहजहां बीमार होगया। और भी दूसरी कई बातोंसे ईरान जाना मुलतबी रहा। इधर परवेजकी बीमारीकी खबरें भी पहुंची थीं जिससे उसके बचनेका यकीन न था। इसके सिवा नूरजहां बेगमका भी खत पहुंचा था जिसमें लिखा था कि महाबतखां बादशाही लशकरके धावेका शोर सुनकर बहक गया है कहीं रास्ते में तुम्हारे लडकोंको कुछ तकलीफ न दे, इसलिये सलाह दौलत यही है कि दक्षिणको लौटकर कुछ दिनों जमानेकी हवा देखो कि क्या होता है। शाहजहां बीमारी और कमजोरीसे पालकीमें बैठ कर गुजरात और भाराके मुल्क (काठिवाड़) से दक्षिणको लौटा। रास्तेमें शाहजादे परवेजके मरजानेकी खबर सुनी तो जानेमें जल्दी की। गुजरातमें अहमदाबाद(१)से २० कोस पर चांपानेरके नीचे नर्बदासे उतरकर छपराईके घाटेसे जो बुगलानेके राजाकी अमलदारीमें था नासिक त्रिम्बकमें आगया जहां अपने आदमियोंको छोडा था। पर वहां कोई इमारत न थी इस लिये जुनेरमें जाकर रहने लगा।

आसफखांको मनसब—महाबतखांकी कैदसे छूटे पीछे आसफ के पास न कोई मनसब था न जागीर थी। उसका हाल खराब था

(१) सुलतान महमूद गजनवीने इसी रास्तेसे आकर सोमनाथ फतह किया था।

इसलिये बादशाहने उसको सातहजारी सातहजार सवार दुअस्से और तिअस्पेका मनसब इनायत किया।

दक्षिणियोंका फसाद—दक्षिणके मुतसद्दियोंकी अर्जी पहुंची कि निजामुल्मुल्कने फतहखां और अपने दूसरे सरदारोंको बादशाही सरहदमें भेजकर लूट मार कराना शुरू किया था जिस पर खान-जहां लश्करखांको बुरहानपुरमें छोड़ बालाघाटको गया और खिड़की तक जो निजामुल्मुल्कके रहनेकी जगह थी न रुका। मगर निजामुल्मुल्क दौलताबादके किलेसे बाहर न निकला।

मीरमोमिनको सजा—सैयद मीर मोमिन ईरानसे हिन्दुस्थान में आया था और अकबर बादशाहने नकीबखांके चचाके पोते सिया-दतखांकी बेटीसे उसका विवाह किया था। शाहजहांके पूर्वदेशमें आनेपर जहां उसकी जागीर थी वह शाहजहांके साथ चलागयाथा। सियादतखांने जो परवेजके साथ था बहुतसी लिखापढ़ी करके उस को अपने पास बुला लिया था। बादशाहने यह सुनकर उसको हुजूरमें बुलाया। परवेजने उसकी बहुत सिफारिश लिखी थी तो भी हाथीके पांवमें डालकर मरवा दिया।

खानजहांका निजामुल्मुल्कको बालाघाट देदेना—निजामुल्मुल्क ने हमीदखां हबशीको अपना पेशवा(१) बनाकर मुल्कका कुल अधिकार सौंप दिया था। बाहरसे वह और अन्दरसे उसकी जोरू दोनों मिलकर निजामुल्मुल्कको जानवरके मुवाफिक पिंजरेमें बन्द रखते थे। जब खानजहांके आनेकी खबर सुनी तो हमीदखांने १२ लाख रुपयेकी ३ लाख हुन उसके पास भेजकर कहलाया कि यह रकम लेलें और बालाघाटका सारा मुल्क अहमदनगरके किलेसमेत निजामुल्मुल्कको सौंप दे। उस बेईमान पठानने बादशाहके इतने वर्षोंसे पालनेका हक भूलकर सिर्फ ३ लाख हुनके लालचमें आ।

(१) दक्षिणके बादशाह अपने बड़े वजीरको पेशवाकी पदवी देते थे जो पीछेसे मिल रहे राजा भी अपने प्रधानोंको देने लगे थे। दूसरे पेशवा चितपावनोंमें प्रधान थे।

मुल्क हाथसे खोकर थानेदारोंको लिख दिया कि वह अपने दो मुहाल निजामुल्मुल्कको सौंपकर हुजूरमें आजावें। ऐसाही हुक्म अहमदनगरके किलेदार सिपहदारखांको भी लिखा था। पर जब निजामुल्मुल्कके आदमी किला लेनेको उसके पास गये तो उसने कहा—मुल्क पर भलेही तुम कब्जा करलो, किला मैं बगैर फरमान दिखाये तुमको नहीं दूंगा।

निजामुल्मुल्कके वकीलोंने बहुत हाथ पांव पीटे मगर उसने कुछ न सुना। बहुतसा सामान खाने पीने और लड़नेका किलेमें जमा करके अपना पांव जमा लिया। दूसरे नामर्दोंने बालाघाटका कुल मुल्क निजामुल्मुल्कके वकीलोंको सौंप दिया और बुरहानपुरमें चले आये।

हमीदखां हबशी और उसकी औरत—इस गुलामकी औरत इसी मुल्कके गरीब घरानेकी थी। पहले जब निजामुल्मुल्क शराब और औरतोंके फन्दमें पड गया था तो यह औरत जनानेमें दखल पाकर उसके वास्ते चोरी छुपे शराब लेजाती थी बाहरवालोंको खबर भी न होनेदेती थी। ऐसेही लोगोंकी जोरू और बेटियोंको भी फुसलाकर उसके पास पहुंचाती थी। होते होते बाहरका अधिकार तो उसके खाविन्दके हाथमें आगया और अन्दर वह निजामुल्मुल्ककी जान मालकी मालिक होगई। वह जब सवार होती थी तो बडे बडे सरदार उसकी अर्दलीमें चलते थे और अपना मतलब अर्ज करते थे। यहांतक कि आदिलखाने निजामुल्मुल्क पर फौज भेजी और इधरसेभी ऐसीही जरूरत हुई तो इस औरतने बडी चाह और मजबूतीसे निजामुल्मुल्कसे फौज मांगी और खुद लड़नेको तय्यार हुई। उसके दिलमें यह बात बिठाई कि जो मैं आदिलखा की फौजको हरादूंगी तो यह एक औरतका बडा काम समझा जायगा और हारजाऊंगी तो औरतकी हार कुछ बड़ी बात न होगी।

यह उस लड़ाईमें घूंघट निकाले घोडे पर सवार होती थी। जडाऊ तलवार और खञ्जर कमरमें बांधती थी। जडाऊ कडे

हाथोंमें पहनती थी। इनाम देने और घोड़े बखशनेके बहाने ढूंढा करती थी। कोई दिन न जाता था कि किसी सरदारपर कुछ इनयत न करती हो। सिपाहियोंको खूब रुपये देती थी। जब आदिलखांकी फौजसे मुठभेड हुई तो बडी हिम्मत और बहादुरीसे लडी और अपने सिपाही तथा सरदारोंको खूब उभारकर लडाया। आखिर ऐसे बडे दुश्मनको हराकर उसके तमाम हाथी और तोपखाने छीन लाई और सही सलामत लौट आई।

तूरानके वकीलका आना—तूरानके बादशाह इमामकुलीखांने बादशाहके वकील सैयद बिरकाको बहुत दिनोंतक ठहराकर अच्छा सुलूक कियाथा। अब उसने बादशाह और शाहजहांके बिगाडकाहाल सुना तो अबदुर्रहीमख्वाजा और अरकानख्वाजाको खत और तुहफे देकर भेजा। ख्वाजाका बडा घराना था और उसका दादा ख्वाजा जूयबारी तूरानके बादशाह अबदुल्लहखां उजबकका गुरु था। इस लिये बादशाहने उसकी बहुत इज्जत की। बादशाही अमलदारोंमें उसकी जगह जगह पेशवाई और अतिथिसत्कार हुआ। दरगाहमें आनेपर उसको तसलीम और कोर्निशकी तकलीफ नहीं दीगई, सिर्फ हाथ चूम लेनेमें सब कुछ मान लिया गया। तखतके पास बैठनेका हुक्म हुआ ५० हजार रुपये दिये गये। दूसरे दिन १४ थाल खाने खानेके सोने चान्दीके बरतनोंमें भेजे गये। वह सब बर्तन भी उसीको दे दिये गये।

मुकर्रमखांका डूबना—बादशाहने मुअज्जमखांके बेटे मुकर्रमखां सूबेदार बंगालेके नाम फरमान भेजा था। उसके लेनेके लिये वह नावमें बैठकर आता था। नाव हवासे उलट गई और मुकर्रमखां कई आदमियों समेत पानीमें डूब गया।

खानखानांका मरना—इन्हीं दिनोंमें बैरमखांका बेटा खानखानां ७२ वर्षका होकर मर गया। वह जब दिल्ली पहुंचा तो उसके बदनमें बहुत कमजोरी आगई थी इसलिये वहां ठहर गया। सन् १०३६ में मर गया और उस मकबरेमें दफन हुआ जो उसने अपनी

व्याहता बीबीके वास्ते बनाया था। यह इस सल्तनतके बड़े अमीरों मेंसे था। अकबर बादशाहके वक्तमें इसने अच्छी अच्छी खिदमतें और बड़ी बड़ी फतहें की थीं। इसके बढ़िया कामोंमेंसे पहला गुजरातकी फतह और मुजफ्फरकी शकस्त था। उससे वह गया हुआ मुल्क फिर बादशाही बन्दोंके हाथमें आया था।

दूसरी फतह सुहेलकी लड़ाईमें की थी। शत्रुके पास दच्छिणका लशकर जङ्गी हाथियों और सङ्गीन तोपखाने सहित था। सत्तर हजार सवार जमा होगये थे। खानखानां बीसहजार सवारोंसे उससे भिड़ा। दो दिन एक रात बड़े घमसानकी लड़ाई लड़कर फतह पाई। इसमें राजीअलीखां जैसा सरदार काम आया था। तीसरी फतह ठट्ठा और सिन्धकी थी।

इस बादशाहके वक्तमें उसके बड़े बेटे शाहनवाजखांने थोडेसे आदमियोंसे अम्बरको हराया था। यह बड़ा सपूत खानाजाद था। यदि मौत उसे समय देती तो उसकी भी दुनियामें अच्छी यादगार रहती। खानखानां योग्यतामें अपने समयका एकही पुरुष था। अरबी तुर्की फारसी और हिन्दी जानता था। तरह तरहके अकली और नकली इल्म जानता था। हिन्दी शास्त्रके जाननेमें पूरा था। बहादुरी और सरदारीमें तो बहुतही बढ़ाहुआ था। फारसी और हिन्दी जबानोंमें अच्छी कविता करता था। उसने अकबर बादशाहके हुक्मसे "वाकआते-बाबर"का फारसीमें अनुवाद किया।

बांधोंका राजाअमरसिंह—बांधोंके राजाअमरसिंहने बन्दगी स्वीकार करके अर्ज कराई थी कि मेरे बाप दादे चौखट चूमनेकी इज्जत पाते रहे हैं मैं भी वही इज्जत हासिल करनेकी उम्मीद रखता हूं। इस पर बादशाहने तहव्वुरखांको जो जबान (बात) समझनेवाले खिदमतगारोंमेंसे था हुक्म दिया कि आगवानी होकर राजाको दरगाहमें लेआवे। राजाकी सरफराजीके लिये भी तसल्लीका फरमान खिलअत और घोडा भेजा।

महाबतखां शाहजहांके पास—जब बादशाही फौजके पीछे आनेसे महाबतखांने शाहजहांका वसीला पकडनेके सिवा और कोई सूरत अपनी जान बचानेकी न देखी तो एक अर्जी अपने एक मोतमिदके हाथ शाहजहांके पास भेजी। उसमें लिखा था कि जो मेरे कुसूर बखशे जायं तो मैं उस दरगाहमें हाजिर हूं। शाहजहांने वक्त देखकर उसके कुसूर माफ किये और मेहरबानीका फरमान अपने पंजेके निशान समेत उसकी तसल्लीके वास्ते भेजा। वह २००० सवारों सहित राजा पीपला और भरजी(१)के मुल्कमें होता हुआ जुनेर पहुंचा। वहां १००० अशरफी ७००० रुपयेका एक हीरा और दूसरी कीमती चीजें शाहजहांकी नजर कीं। जड़ाऊ खञ्जर, जडाऊ तलवार, खासा घोडा और खासा हाथी इनाममें पाया।

खानजहांका सिपहसालार होना—बादशाहने जब महाबतखां का शाहजहांके पास पहुंचना सुना तो उसके बरखिलाफ खानजहां को सिपहसालारका खिताब देदिया।

खानजहांका अबदुल्लहखांको कैद करना—खानजहांने खत लिखकर अबदुल्लहखां फीरोजजंगको जो उन्हीं तरफोंमें था बुरहानपुरमें बुलाया। कुछ दिनों पीछे लोगोंके बहकानेपर जबकि वह सिर्फ एक खिदमतगारको लेकर उसके घरमें आया था पकड़कर कैदकर लिया और बादशाहको इत्तला दी। वहांसे आसेरके किलेमें रखने का हुक्म आया(२)।

बादशाहका कशमीर जाना—२१ असफन्दार (चैत बदी ८) को हिन्दुस्थानकी हवा गर्म होनेपर बादशाह कशमीरको रवाने हुआ। कई वर्षोंसे यह मामूल होगया था।

बाईसवां नौरोज।

रविवार ३ रज्जब सन् १०३६ (चैत सुदी ४ संवत् १६८४) को

---

(१) बगलानेका राजा भरजी कहलाता था।

(२) शाहजहांके वक्तमें अबदुल्लहखांने खानजहांको मारकर अपना बदला लिया था। यह हाल शाहजहांनामेमें लिखा गया है।

सूर्य्यके मेषमें आने पर बाईसवां वर्ष बादशाहके जुलूसका लगा। नौरोजका जशन चिनाब नदीके किनारे पर हुआ। इसके वास्ते बादशाह एक दिन ठहरा था। फिर कूच दरकूच शिकार खेलता हुआ कशमीर पहुंचा।

फिदाईखांको बंगालेकी सूबेदारी—मुकर्रमखांके डूबनेपर फिदाई खांको बंगालेकी सूबेदारी मिली। बादशाहने उसको पांचहजारी ५००० सवारका मनसब, बढ़िया खिलअत और शाह ईरानका भेजा हुआ अबलक ईराकी घोडा देकर उस तरफको रुखसत किया। नियत किया कि वह हरसाल ५ लाख रुपये बादशाहको और ५ लाख बेगमको पेशकशके खजानेमें भेजा करे।

एतमादुद्दौलाका पोता अबूसईद पटनेकी और बहादुरखां इलाहाबादकी सूबेदारी पर जहांगीरकुलीखांकी जगह नियत हुआ और मोहतशिमखांको कालपीमें जागीर मिली।

बादशाहकी बीमारी—कशमीरमें बादशाहकी बीमारी बढ़गई। इतना कमजोर होगया कि नालकीमें बैठकर बाहर निकलता था। घोडे पर सवार नहीं होसकता था। एक दिन दर्द इतना बढा कि जीनेकी आशा न रही। बादशाह निराशाकी बातें करने लगा। लशकरमें बहुत हलचल मच गई। पास रहनेवाले घबरा गये। पर कुछ दिनोंकी जिन्दगी और बाकी थी आराम होगया। फिर कुछ दिनों पीछे भूख बिलकुल बन्द होगई। अफीमसे नफरत होने लगी जिसे ४० वर्षसे खाता था। अब सिवा कई एक प्याले अंगूरी शराबके किसी चीजको दिल नहीं चाहता था।

शहरयारका बीमार होना—इन्हीं दिनों शहरयारको एक ऐसी बीमारी होगई थी कि उसको मूछों भवों और पलकोंके बाल गिर पडे थे। इससे शर्माकर उसने इलाजके वास्ते लाहोर जानेकी रुखसत ली। खुसरोके बेटे दावरबख्शको जो नूरजहांकी तजवीजसे शहरयारके पास कैद था बादशाहने शहरयारकी अर्ज पर उससे लेकर इरादतखांको सौंप दिया।

बिठाया चाहती थी और आसफखांको यह बात मंजूर न थी। आसफखां इस बन्दोबस्तके बाद दावरबख्शके नामका खुतवा पढवा कर लाहोरको रवाने होगया।

आगे जो कुछ हुआ वह सब "शाहजहांनामे"में लिखा गया है पाठक उसमें देखले।

कलकत्ता—८७ मुक्ताराम बाबूस्ट्रीट, भारतमित्र प्रेसमें
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित।
अगस्त १९०६।

बिठाया चाहती थी और आसफखांको यह बात मंजूर न थी। आसफखां इस बन्दोबस्तके बाद दावरबख्शके नामका खुतबा पढ़वा कर लाहोरको रवाने होगया।

आगे जो कुछ हुआ वह सब "शाहजहांनामे"में लिखा गया है पाठक उसमें देखलें।

कलकत्ता—८७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, भारतमित्र प्रेसमें
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित।
अगस्त १९०६।

रावलने उत्तरमें कहा—जल्दी क्या है राजा लोगोंमें चर्चा हो रही है, सन्ध्या सवेरेमें कहीं न कहींसे विवाहका पत्र आता है। यदि अपनी तरफसे किसीके पास पत्र भेजा जायगा तो उसका मिजाज आसमान पर चढ़ेगा।

मारवाड़के राव मालदेव* राठौड़ने भी उमादेके रूपकी प्रशंसा सुनी। उन्होंने रावलसे कहला भेजा कि अपनी कन्या हमें दो। पुराने समयसे हमारे आपके सम्बन्ध चला आता है कुछ नई बात नहीं है।

रावलने यह समाचार पाकर जीमें कहा कि वाह, मेरा सारा देश तो नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब बेटी भी मांगता है। फिर सोचा कि शेर स्वयं पिंजरेमें फंसता है ऐसा अवसर फिर न मिलेगा चूकना न चाहिये। घर बैठे शत्रुका शिकार होता है। यह सोच कर रावलने सोने चान्दीके नारियल† भेजे। राव मालदेवजी बरात सजाकर जैसलमेर आये। जैता और कूंपा उसके सूरमा सरदार सेना सहित दायें बायें चलते थे।

रावलने अपनी रानीसे जैसलमेरके किलेके झरोखोंसे दिखाकर कहा कि यह वही है जिसके भयसे न मुझे रातको नींद आती है और न तुझे कल पडती है। यह अब उसी द्वार पर तोरण‡

---

* राव मालदेव संवत् १५८८ में गद्दी पर बैठे।

† सगाईमें राजा लोग सोने चान्दीके सढे हुए नारियल भेजते हैं।

‡ तोरण बान्धना—वर ससुरालके द्वार पर जाकर तोरणको छडी या तलवारसे छूता है। इसे तोरण छूना तोरण चटकाना या मारना कहते हैं। तोरण माने मेहराब। वरके द्वार प्रायः महराबदार ही होते हैं इससे तोरण नाम द्वारका समझना. पर विवाहके समय काठकी चिड़ियोंका एक बन्दनवार लगा देते हैं उसीको वर छूता है।

बांधेगा जो उसीके भयमे बहुधा बन्द रहता है। पर देख, मैं भी क्या करता हूं। यदि चौरीॐ मेंसे बचकर चला गया तो मुझे रावल मत कहना। बेटी तो विधवा होगी पर तेरी तरफका कांटा जन्मभरके लिये दिलसे निकल जायगा, बल्कि कुल राजपूतानेभरकी कल पड़ जायगी।

रानी यह सुनकर रोने लगी। रावलने डांटकर कहा, चुप! रोयेगी तो बात फूट जायगी। फिर कुशल नहीं, यह हिंसक सबको खाजायगा। देख व्याहने आया है पर सेना कितनी साथ लाया है। यह तो एक दिनमें घड़सीसर§ का सब पानी पी जायगी। हम तुम और सब नगरवासी प्यासे मर जायंगे। रानीको बेटीके विधवा होनेकी आशङ्कासे दुःख तो बहुत हुआ पर पतिकी बात मानकर वज्रकी छाती करके चुप होरही तथापि उसकी घबराहट छिपाई छिपती न थी।

बेटी माकी घबराई देखकर समझ गई कि दालमें कुछ काला है, माको अधिक रोते देखकर उसने जान लिया कि आज रातको सोहाग और रण्डापा साथ साथ मिलनेवाला है। जीमे बहुत तड़पी तलमलाई पर कलेजा मसूस कर रह गई। जीमें कहा कि बेटी बिन सींगोंकी गाय है जब मा बापही उस पर अत्याचार करें तो किससे कहा जाय और कौन सुने।

सखी सहेलियां फूली फूली फिरती थीं, राजभवनमें आनन्द फैला हुआ था। बाहर शादियाने बज रहे थे, उधर बरातमें भी ऐसीही तय्यारियां होरही थीं पर उमादेके जीका दुखड़ा कोई नहीं जानता था। सखियां उसे दुलहन बना रही हैं कोई उसके हाथ पांवमें मेहदी लगाती है कोई मोतियोंसे मांग भरती है कोई चोटीमें फूल गूंधती है कोई दर्पण दिखाकर कहती है वाह अच्छी बनी हो। पर बनीकी जान पर आबनी है, ज्यों ज्यों

ॐ विवाह होनेकी जगह। § जैसलमेरके पास एक तालाब है।

रावलने उत्तरमें कहा—जल्दी क्या है राजा लोगोंमें चर्चा हो रही है, सन्ध्या सवेरेमें कहीं न कहींसे विवाहका पत्र आता है। यदि अपनी तरफसे किसीके पास पत्र भेजा जायगा तो उसका मिजाज आसमान पर चढ़ेगा।

मारवाड़के राव मालदेव* राठौड़ने भी उमादेके रूपकी प्रशंसा सुनी। उन्होंने रावलसे कहला भेजा कि अपनी कन्या हमें दो। पुराने समयसे हमारे आपके सम्बन्ध चला आता है कुछ नई बात नहीं है।

रावलने यह समाचार पाकर जीमें कहा कि वाह, मेरा सारा देश तो नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब बेटी भी मांगता है। फिर सोचा कि शेर स्वय पिंजरेमें फंसता है ऐसा अवसर फिर न मिलेगा चूकना न चाहिये। घर बैठे शत्रुका शिकार होता है। यह सोच कर रावलने सोने चान्दीके नारियल† भेजे। राव मालदेवजी बरात सजाकर जैसलमेर आये। जैता और कूंपा उसके सूरमा सरदार सेना सहित दायें बायें चलते थे।

रावलने अपनी रानीसे जैसलमेरके किलेके झरोखोंसे दिखाकर कहा कि यह वही है जिसके भयसे न मुझे रातको नीन्द आती है और न तुझे कल पड़ती है। यह अब उसी द्वार पर तोरण‡

---

* राव मालदेव संवत् १५८८ में गद्दी पर बैठे।

† सगाईमें राजा लोग सोने चान्दीके मढ़े हुए नारियल भेजते हैं।

‡ तोरण बान्धना—वर ससुरालके द्वार पर जाकर तोरणको छड़ी या तलवारसे छूता है। इसे तोरण छूना तोरण चटकाना या बान्धना कहते हैं। तोरण सं० स्त्री० सहराव। घरके द्वार प्रायः महरावदारकी भांति [illegible] इसको तोरण नाम द्वारका समझना चाहिये। [illegible] विवाहके समय काठकी चिड़ियोंका एक गुलदस्ता बनाकर द्वार [illegible]

बांधेगा जो उसीके भयमें बहुधा बन्द रहता है। पर देख, मैं भी क्या करता हूं। यदि चौरीॐ मेंसे बचकर चला गया तो मुझे सबल मत कहना। बेटी तो विधवा होगी पर तेरी तरफका कांटा जन्मभरके लिये दिलसे निकल जायगा, बल्कि कुल राजपूतानेभरको कल पड़ जायगी।

रानी यह सुनकर रोने लगी। रावलने डांटकर कहा, चुप! रोयेगी तो बात फूट जायगी। फिर कुशल नहीं, यह हिंसक सबको खाजायगा। देख ब्याहने आया है पर सेना कितनी साथ लाया है। यह तो एक दिनमें घड़सीसर§ का सब पानी पी जायगी। हम तुम और सब नगरवासी प्यासे मर जायगे। रानीको बेटीके विधवा होनेकी आशङ्कासे दुःख तो बहुत हुआ पर पतिकी बात मानकर वज्रकी छाती करके चुप होरही तथापि उसकी घबराहट छिपाई छिपती न थी।

बेटी माको घबराई देखकर समझ गई कि दालमें कुछ काला है, माको अधिक रोते देखकर उसने जान लिया कि आज रातको सोहाग और रण्डापा साथ साथ मिलनेवाला है। जीमें बहुत तडपी तलमलाई पर कलेजा मसूस कर रह गई। जीमें कहा कि बेटी बिन सींगोंकी गाय है जब मा बापही उस पर अत्याचार करें तो किससे कहा जाय और कौन सुने।

सखी सहेलियां फूली फूली फिरती थीं, राजभवनमें आनन्द फैला हुआ था। बाहर शादियाने बज रहे थे, उधर बरातमें भी ऐसीही तय्यारियां होरही थीं पर उमादेके जीका दुखडा कोई नहीं जानता था। सखियां उसे दुलहन बना रही हैं कोई उसके हाथ पांवमें मेहदी लगाती है कोई मोतियोंसे मांग भरती है कोई चोटीमें फूल गूंथती है कोई दर्पण दिखाकर कहती है वाह अच्छी बनी हो। पर बनीको जान पर आबनी है, ज्यों ज्यों

ॐ विवाह होनेकी जगह। § जैसलमेरके पास एक तालाब है।

दिन छनता जाता है उसकी देहका रक्त उड़ता जाता है, मगर ग्रहकी व्याधि नहीं है, यह बातही और है।

उमादे अचानक सखियोंके झुरमटसे उठ गई और भारेली नाम की एक सुघड सहेलीको इशारेसे अलग बुलाकर कुछ बातें करने लगी।

भारेली रूप बदलकर चुपकेसे रावोजी जोशीके पास गई और पूछने लगी कि क्या आपने किसी कुमारीकन्याके विवाहका मुहूर्त्त निकाला है। उन्होंने कहा और किसीका तो नहीं रावलजीकी बाईके विवाहका मुहूर्त्त अवश्य निकाला है।

भारेली—क्या आप फेरोंके समय भी जायंगे ?

जोशी—नहीं जाऊंगा तो मुहूर्त्तकी खबर कैसे पडेगी ?

भारेली—क्या नगरमें और भी कहीं आप मुहूर्त्त बताते और विवाह कराते है ?

जोशी—सारे नगरमें मैंही इन कामोंके लिये बुलाया जाता हूं।

भारेली—जोशीजी, यह मैं पूछती हूं कि आप जिन कन्याओं का विवाह कराते है वह कितनी घडियों तक सुहागन रहती है ?

जोशी—(चमककर) हैं, यह तूने क्या कहा ! क्या मुझसे दिल्लगी करती है ?

भारेली—नहीं जोशीजी, दिल्लगी नहीं करती।

जोशी—तो फिर क्या कहती है ?

भारेली—कुछ नहीं, एक बात पूछती हूं। मैंने आज एक अड़बड़की बात सुनी है।

जोशी—वह क्या ?

भारेली—तुम अपने मुहूर्त्तको एक बार फिर जांच करलो तो —

।

जोशी पत्री निकाल बैठा और अपने निकाले मुहूर्त्तको खूब जांच करके बोला—"मुहूर्त्तमें तो कुछ खोट नहीं है।"

भारेली—इसमें खोट है।

जोशी—नहीं मैंने जन्मपत्र देखकर मुहूर्त्त निकाला है, खोट कैसा ?

भारेली—अजी कर्मपत्र भी देखा है ? तुम्हारे मुहूर्त्तमें तो बाईजीका कर्म फूटना लिखा है।

जोशी—तो क्या रावलजीने कुछ दगा बिचारी है ?

भारेली—हां। राव मालदेवजी वैसे तो मारे नहीं जाते, चौरी में उन्हे मारडालनेकी सलाह हुई है।

जोशी—(उदास होकर) हरे हरे, राजाओंको धिक्कार है।

भारेली—जोशीजी इस दुःखको तो जानेदो, यदि कुछ उपाय हो तो करो।

जोशी—जब पिताहीको पुत्री पर दया नहीं तो मैं दीनब्राह्मण क्या कर सकता हूं।

भारेली—उपाय सब बातोंका होसकता है।

जोशी—तूही बता मैं क्या करूं।

भारेली—भले जोशी हुए, राजदरबारके जानेवाले होकर मुझ अबलासे पूछते हो कि क्या करूं!

जोशी—नहीं बाई, इसमें कुछ दोष नहीं। गुरु गुरु विद्या और सिर सिर बुद्धि।

भारेली—मेरी कही मानो तो इसी समय राव मालदेवजीके पास पहुंचकर उन्हें सावधान करदो।

जोशी—हां, यह ठीक है।

भारेली—तो क्या मैं जाकर बाईजीसे कहदूं ?

जोशी—क्या तू भारेली है ?

भारेली—जी हां।

जोशी—अच्छा मैं भी जाता हूं।

विवाह।

दिन ढल गया, बाजारोंमें छिड़काव होगया। लोग बरात देखनेके चावमें घरोंसे उमडे चले आते है। जोशीने दरबारमें जाकर रावलसे कहा—सामेले (स्वागत) का मुहूर्त्त निकट है आप सवारीकी आज्ञा दें।

रावल—बहुत अच्छा, बरातवालोंको भी इसकी खबर करदो।

जोशी—हां, एक बात मुझे मारवाडके ज्योतिषियोंसे पूछनी है।

रावल—वह क्या?

जोशी—जन्मपत्रसे तो नहीं, पर बोलते नामसे रावजीको आज चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य है।

रावल—(जोशसे प्रसन्न होकर) तो इससे क्या, मुहूर्त्त तो आपने जन्मपत्रोंसे निकाला है?

जोशी—महाराज, बोलते नामसे भी ग्रह देखे जाते है। चौथा चन्द्रमा और आठवां सूर्य घातक होता है। कोई ग्रह बारहवां नहीं है, नहीं तो——

रावल—(जोशसे) क्या अच्छा होता जो कोई बारहवां ग्रह भी होता, जिससे पूरी विघ्नकी होजाती (एकान्तमें बात काटकर) मारवाड बड़ा राज्य है, वहांके ज्योतिषियोंने देख लिया होगा। आप कुछ न कहें, उन्हें व्यर्थ शङ्का होगी।

जोशी—नहीं, मैं आपका शुभचिन्तक हूं, मेरा धर्म है कि उनसे पूछकर कुछ समाधान कराद।

रावल—क्या समाधान?

जोशी—[illegible]

रावल—[illegible]

[illegible]

जोशी—नहीं, यह दान उन्हींकी तरफसे होना चाहिये, मैं सामग्री बता आऊंगा।

रावल—अपनी ओरसे होनेमें क्या कुछ हानि है?

जोशी—अपनी तरफसे तब दान कराया जाता जब बाईजीको कोई क्रूर ग्रह होता।

रावल—आज बाईको कैसे ग्रह हैं?

जोशी—बहुत बलवान हैं, पर स्त्रीका अच्छा बुरा अधिक उसके पतिके ग्रहोंसे सम्बन्ध रखता है। इसलिये बाईजीको भी वही ग्रह समझने चाहिये जो रावजीको है।

रावल—(फिर प्रसन्न होकर) तो अच्छा, जोशीजी बरातमें हो आइये। जल्दी आना यहां भी काम है।

जोशीजी—(चुटकी बजाकर) गया और आया।

रावलसे आज्ञा पाकर जोशी प्रसन्न मन वहांसे चला। राव मालदेवजीको खबर हुई कि जोशी राघोजी आते है। रावजीने कहा, उन्हें आदरसे लाओ वह बड़े ज्योतिषी हैं। वह क्या, उनके बेटे चंडूजी भी बड़े पण्डित हैं पञ्चांग बनाते है। चोबदार और ड्योढीदार दौड़े जोशीजीको हाथोंहाथ लेआये। जोशी आशीर्वाद देकर बैठ गया। रावजीने कुशल पूछकर कहा—आपका पधारना कैसे हुआ?

जोशी—(इधर उधर देखकर) कुछ मुहूर्त्त बताना है।

यह सुन लोग हट गये और जोशी राव साहबसे दो बातें कह कर चल दिया। रावको बड़ी चिन्ता हुई, उन्होंने सरदारोंको बुलाकर सलाह की। जैता और कूंपा सरदारोंने कहा—आप कुछ चिन्ता न करें हम वहां इसका सब बन्दोबस्त कर लेंगे।

इतनेमें धौंसा बजा, कोलाहल होने लगा कि रावलजी आगये। तब रावजी भी सिर पर मौर माथे पर सिहरा बांधकर अपने डेरेसे निकले और घोड़ेकी पूजा करके सवार हुए। बरात चढ़ी कुछ दूर जाकर जाजम बिछ गई, गद्दी तकिये लग गये। ५

राव दोनो अपने अपने घोड़ेसे उतरे और गले मिले। फिर निशान का हाथी बढा, दोनो साथ साथ किलेकी ओर चले। द्वार पर पहुंचकर रावलजी तो भीतर चले गये, रावजी तोरण बांधकर पीछे पहुचे। राजभवनमें फिर दोनो मिलकर मसनद पर बैठ गये।

राजभवनमें विवाहकी तय्यारी होगई, नाजिर रावजीको बुलाने आया। रावजीके साथ रावलजी भी उठे। उठते समय रावजीके सरदार कहने लगे कि आप हमें छोडकर कहां जाते हैं। यह कहकर उन्होंने रावजीका हाथ पकड़कर बीचमें बिठा दिया। रावलजी उस समय रावजीका कुछ नहीं कर सकते थे उन्होंने उल्टा अपनीही जानको जोखमें पाया। उनके सरदार भी अपनी सब झटपट भूल गये। रावजी बेखटके धीरे धीरे रनवासमें चले गये।

जनानी ड्योढीसे उमादेकी मा सोढी रानीने आरती करके राव-जीके माथे पर दही लगाया* और जीमें कहा कि ऐसेही मेरा दिल ठण्डा रहे फिर नाक खेंचकर† अपना दुपट्टा उनके गलेमें डाल चौरीमें लेआई।

ब्राह्मण वेदमन्त्र उच्चारण करने लगे, अग्निमें आहुति पड़ने लगी, रावजीका हाथ उमादेके हाथसे जोडा गया, उमादे आगे हुई और रावजी पीछे चले। तीन बार अग्निके चारोंओर फिरे। तब स्त्रियां गाने लगी—

> पहले फेरे आई काकारी भतीजी,
> दूजे फेरे आई मामारी भानजी,
> तीजे फेरे आई भूआरी भतीजी,

चौथे फेरेमें रावजी आगे होगये और उमादे उनके पीछे चलने

* जैसे घरकी माता उसे दूध पिलाती है, वैसेही सास उसके माथे पर दही लगाती है, अर्थात् उसे अपनी कन्याका वर मान लेती है। कहावत है कि दहींको बान मसे।

† यह भी एक रीति रिवाज की है।

लगी । तब स्त्रियोंने यह पिछला अन्तरा गाकर अपना गीत पूरा किया—

चौथे फेरे बाई हुई रे पराई ।१

गीत सुनतेही माता और बहनोंका दिल भर आया आंखोंसे आंसू टपकने लगे कि अब उमादे पराई होगई । इस प्रकार यह विवाह वैशाख सुदी ३ संवत् १५९३ की रातको हुआ ।

रङ्गमें भङ्ग ।

विवाह होजानेके बाद कन्या अपने महलमें चलीगई । बड़ी बड़ी स्त्रियां इधर उधर खिसक गईं । बहूकी सहेलिया रावजीको महलकी ओर लेचलीं । राहमें एक जगह गाना होरहा था, कितनी सुन्दरिया मिलजुल कर गारही थीं । रावजी चलते चलते वहां फिसल पड़े उनके गाने और रूप रंगने रावजी पर जादू कर दिया । वहीं डटगये, खवासें दौड़ीं एकने चान्दनी दूसरीने सोजनी और तीसरीने मसनद लगादी, चौथीने तकिये लगादिये, पांच सातने मिलकर शामियाना खड़ा कर दिया । राव मालदेव लट्टू होकर वहीं बैठगये, दो खवासें दायें बायें मोरछल लेकर खड़ी होगईं दो चंवर हिलाने और पंखा झलने लगीं । गर्मियोंकी सुहानी रात थी, चान्दनी छिटकी हुई थी, ठण्डी हवा चलरही थी, भीनी भीनी बू चारोंओर फैली हुई थी । रावजी उस परिस्तानमें इन्द्र बनकर

---

१ गीतका मतलब यह है—पिता लड़कीको सगाई करके और माता जमाईके सिर पर दही लगाकर लड़की उसे दे चुकती है तब वेद और शास्त्रकी विधिसे उसका विवाह होता है । उस समय उस पर चचा मामा और फूफीका अधिकार रह जाता है । चचा को कुछ आपत्ति हो तो पहले फेरे तक उसे प्रगट कर सकता है मामा दूसरे फेरे तक और फूफी तीसरे तक । चौथे फेरेमें कन्या पराई होजाती है फिर किसीका कुछ दावा नहीं चलता ।

बैठगये। गायनें चुप थीं, सामने कुछ फासिले पर रूपवती पातरें नाचनेको तैयार थीं।

कलालियोंमेंसे चन्द्रज्योति नामकी एक सुन्दरीने आगे बढ़कर रावजीको सलाम किया, और भोजनीसे कुछ हटकर बैठी, गानेवालियोंसे इशारा किया कि हां—"दारूडो दाखांरो।"

बस तबलेपर थाप पड़ी और सुरीली गानेवालियां ऊंचे और मीठे सुरोंसे गाने लगीं—

भरला ए! सुघडकलालि—दारूड़ो दाखांरो
पीवनवालो लाखांरो।

चन्द्रज्योतिने पन्नेके हरे प्यालेमें लाल शराब भरकर हंसते हुए हाथ बढ़ाकर रावजीको भेट की। उन्होंने बडे प्रेमसे लेकर पीली और प्याला अशरफियोंसे भर कर लौटा दिया। चन्द्रज्योतिने उठकर सलाम किया और अपने गलेका चन्द्रहार तोडकर उसके मोती वार वार कर गानेवालियोंकी ओर फेंकने लगी। गायनें सोरठके सुरोंमें गाने लगीं—

(१) ब्रज देसां, चन्दन बनां, मेरु पहाडां मोड।
गरुड खगां लंका गढां, राजकुलां राठौड॥
दारूडो दाखांरो—

चन्द्रज्योतिने फिर प्याला भरकर रावजीको दिया और गायनें गाने लगीं।

(२) दारू पीवो रंग चढो, राता राखो नैन
वैरी थारा जलमरे, सुख पावेला सैन,
दारूडो दाखांरो—

---

(१) इस दोहेमें राठौर घरानेकी प्रशन्सा है—देशोंमें ब्रज, वनोंमें चन्दन पहाडोंमें मेरु पक्षियोंमें गरुड और किलोंमें लंका मौड अर्थात ताज है वैसेही सब राजघरानोंमें राठौड घराना सब का ताज है।

(२) यह दोहा शराब पीनेका उत्साह दिलाता है, अर्थात्—

(३) दारू दिल्ली आगरो, दारू बीकानेर
दारू पीवो साहबा, सौ रुपयां रो फेर,
दारूड़ो दाखांरो—

(४) सोरठ रो दोहो भलो, कपडो भलो सपेत
नारी तो निबली भली, घोड़ो भलो कुमेत,
दारूड़ो दाखांरो—

भरला ए ! सुघड कलाल।

इस गाने बजाने और कलालियोंके लुभाने रिझानेने रावजीका दिल छीन लिया। उसपर नर्तकियोंके गाने और बजानेने और भी सितम ढाया। रावजी उनके हाव भावमें उलझ कर रानीको भूल गये।

उधर नईबधू उमादे बैठी रावजीकी प्रतीक्षा कर रही थी. कितनीही बान्दियां उनको बुलानेको गईं, पर रावजी उस जलसेको छोड कर उठनाही नहीं चाहते थे और रात कम रही जाती थी।

रानीने इस बार अपनी उस चपल सहेली भारेलीसे कहा कि अब रावजीको लाना तेराही काम है। उसने कहा कि रावजी इस समय आपेमें नहीं हैं मुझे न भेजिये, पर उमादेने न माना, उसीको भेजा।

रानीके यहां भी महफिल सजी हुई थी, गायनें तैयार बैठी थी. शराब और गजक तैयार थी. केवल रावजीके आनेकी देर

"शराब पिओ और लडनेको चढो. आंखें लाल रखो जिससे तुम्हारे शत्रु जल मरें और सेन अर्थात् मित्र प्रसन्न हों.

(३) यह दोहा शराबकी प्रशन्सामें है—शराबही दिल्ली आगरा है और शराबही बीकानेर है. हे साहब, शराब पीजिये इसका एक एक फेर (दौर) सौ सौ रुपयेका है।

(४) इस दोहेमें अच्छी अच्छी चीजें बताई है—सोरठका दोहा सफेद कपड़ा, सुकुमारी स्त्री और कुम्मैत घोडा अच्छा होता है।

थी। रानीने भारेलीके जानेसे रावजीको आया समझ कर गाने-वालियोंको इशारा किया, वह ऊंचे सुरोंमें गाने लगीं।

महलां पधारो महाराज हो।
दारूरा मारू * महलां पधारो महाराजहो॥
कदरी जोऊं छूं सेजां बाटहो—दारूरा मारू०

उमादे इस ठीक अवसरका गीत सुनकर कुछ मुसकुराई और फिर उसने लजाकर नीची आंखें करलीं। गानेवालियोंने भाटी वंशकी प्रशन्सामें यह दोहा गाया।

§ मथुरा पूंगल प्राग मरु लाहोरो भटनेर।
देरावर गढ़ गंजनो नौमो जैसलमेर॥
महलां पधारो महाराज हो।

सहेलियोंने कुछ रुपये उमादे परसे वारकर गायनोंको दिये, और उन्होंने यह दूसरा गीत आरम्भ किया—

† रंग माणो म्हारा राव।
तारां छाई रात ढोला फूलां छाई सेज॥
गोरी छायी है रूप ढोला वेगा वेगा आव।
ओ रंग माणो म्हारा राव।

इतनेमें एक खवासने आकर कहा कि वहां तो रावजी नशेमें चूर बैठे है और "दारूडो दाखांरो" गवाया जाता है। यह सुनकर गानेवालियोंने यहां भी वही गीत आरम्भ कर दिया पर अन्तरे पलट दिये—

---

* महाराज महलोंमें पधारो। हे मदिराके रसिया महलोंमे पधारो मै बहुत देरसे सेजो पर तुम्हारी प्रतीक्षा कररही हू।

§ मथुरा पुगल प्रयाग मारवाड लाहोर भटनेर देरावर गजनी और जैसलमेर यह नौ देश भाटियोंके हैं।

† मेरे राव आनन्द कीजिये, रात तारोंसे सेज फूलोंसे और सुन्दरी रूपसे छाई हुई है, प्यारे जल्द आकर सुख लूटो।

* भर ला ए सुघड़ कलालि दारूड़ो दाखांरो।
सोनिरी भट्ठी करूं रूपेरी घड़नार
हाथ पियालो धन खड़ी पीवो राजकुमार।
दारूड़ो दाखांरो—

(१) आम फले परवारसों, मह्न फले पत खोय,
तिणरो रस साजन पिवे, लाज कठाथी होय,
दारूडो दाखांरो—

(२) गैलां गैलां भूलियां मेंला पड़ी पुकार,
आवणरी बेलां नहीं अलबेला राजकुमार,
दारूडो दाखांरो—

उधर चंचल भारिली छलबल करती हुई इस ढंगसे रावजीके पास पहुंची कि रावजी जवानी और शराब की मस्तीमें उसेही रानी समझ कर उसके साथ चलदिये। वह भी उन्हें अपने मकानको ओर लेगई। रानी उमादे यह सुनकर सन्न होगई और उसकी गायनें गाने लगीं—

---

* हे सुघर कलालो अंगूरी शराब भरला, सोनेकी भट्ठी और चान्दीका भबका बनाऊं। रानी अपने हाथमें प्याला लिये खडी कहती है राजकुमार तुम पियो।

(१) यह मदिराकी निन्दामें है—आम पत्तोंके साथ फलता है और महुआ पत (पत्ते और इज्जत) खोकर, उसका रस साजन पीता है, फिर उसे लज्जा कैसे हो अर्थात् महुआ पत्ते खोकर नंगा होकर फलता है उसकी शराबमें लज्जा कहां। फूल फल आनेके समय महुएके पत्ते झडजाते हैं और आम पत्तोंके झुरमुटमें फलता है इससे कैरी कुछ छिपी रहती है।

(२) महलोंमें पुकार पडी कि मतवाले गली गली भटककर फिर रहे हैं अलबेले राजकुमार को आनेका अवसर नहीं।

(१) अरला ए सुघड कलालि दारूड़ो दाखांरो,
पहलां तो छोकलाली म्हारा सारूजीरी आयली
अब छै आलीजारी घरनार,
दारूड़ो दाखांरो—
(२) बीजलियां माडेचियां ऊपर ले रलियां
परदेसांरा साजना पतीजे मिलियां।
दारूडो दाखांरो—
(३) लड़री लीनी जननै बांधी चरै कपास।
दासी दीनी दायजै पण गई पिउरै पास॥
दारूड़ो दाखांरो।

यह सुनकर उमादेको बड़ा दुःख हुआ। उसने गानेवालियें को चुप कर दिया। जो थाल आरतीके लिये उसने सजाया था और वह दीपकोंसे जगमगा रहा था उसने उसे औंधा दिया और पलंगपर जाकर पड़ रही। महलमें सन्नाटा होगया। उस समय जो विचार उसके जीमें उत्पन्न होते थे उसीका जी जानता था।

सवेरा हुआ रावजीका नशा उतरा। देखा रातको जिसे उन्होंने रानी समझा था वह पानीकी झारी और चिलमची लिये एक बड़े महलकी ओर जारही है। उन्हें अपनी भूलकी खबर हुई। उसी समय शरमाये हुए महलमें गये पर वहां जाकर यह दशा देखी कि कुछ करते न बना।—

(१) पहलेतो कलाली मेरे प्यारेकी आशना थी पर अब तो उस आलीजाहकी घरवाली होगई है।

(२) मारू अर्थात् जैसलमेर देशमें जो बिजलियां चमकती है वह ऊपरही ऊपर चली जाती हैं ऐसे ही परदेशी सज्जन जब मिलें तब मन पतियाता है। जैसलमेरमें अनेक वार वारिशकी पूरी आशा होने परभी वर्षा नहीं होती।

(३) भेड ली तो थी ऊनके लिये पर अब वह बंधी हुई कपास चरती है। दासी दहेजमें दी गई थी वह पियासे हिलमिल गई।

मान गुमान न कामिनी ऊमादे बड भाग ।
रूठी बैठी सेजमें मालदेव पियत्याग ॥

वह रावजीको देखके उठी पर कुछ न बोली ।—

भौंहा चाप चढायने नैनारा सर जोड ।
कर मरोड़ पिव सोंखड़ी खड न मते सुख मोड ॥

खवासें दूर दूर चुप खड़ी थीं, भारलीका लङ्ग सूख रहा था, पर गायनें बन्द न हुईं, वह गाने लगीं,—

मधू छकिया महाराज
थाने किणी पियाई दारूडी ॥

रावजीने नशेमें होनेका बहाना करके रानीको बहुत मनाया, पर वह न मानी। गानेवालियोंसे कहकर भी मनानेके बहुतसे गीत गवाये पर कुछ फल न हुआ। इस झमेलेमें बहुत दिन चढ गया। अन्तमें रावजी मनानेकी बात फिरपर छोड़ कर महलसे निकले, उसी समय उनके सरदार भी रावलजीके पाससे उठ गये।

रावजी फिर महलमें जाकर जोखोंमें पडना नहीं चाहते थे, बाहरहीसे बिदाके लिये कहलाने लगे। रावलजी भी यही चाहते थे कि भेद न खुले और बिदाई होजाय।

रानी उमादे रावजीके साथ जाने पर राजी नहीं होती थी। राघोजी जोशीने आकर कहा कि कल तुम्हें रावजीको जान प्यारी थी, क्या आज नहीं है? अब भी रावजीके प्राणका भय नहीं गया है, यह समय रूठनेका नहीं है।

यह सुनकर रानी नर्म हुई। हिन्दू राजाकी लडकी है और हिन्दू धर्मको मानती है जो स्त्रियोंको पतिपूजा सिखाता है। वह माताके पास गई, कुछ देर उससे और सखियोंसे बिछडनेके लिये रोती रही और फिर दो घूंट पानी पीकर चुपचाप सुखपालमें बैठ गई।

रावजीके कहनेसे रानी उमादेने भारलीको भी एक अलग रथमें बिठा लिया। राघोजी जोशी भी पहुंचानेके बहाने साथ होगये।

उनके बेटे चण्डूजी पहलेहीसे रावजीके लश्करमें पहुंच गये थे, क्योंकि इन दोनों को रावलजीकी ओरसे आशंका थी। रावलजी को यह सन्देह होगया था कि इन्होंने हमारा भेद जानकर रावजी को सावधान करदिया। अन्तमें बरात बिदा हुई और जोधपुर दिन दिन निकट होने लगा।

रानीकी हठ।

रानी उमादे अपनी हठ पर दृढ़ है। रावजीसे न बोलती है न उन्हें अपने पास बैठने देतीहै। रावजी आते है तो वह उन्हें ताजीम देकर अलग बैठ जाती है। रावजी उसके रूप और अवस्था पर मोहित होकर चाहते हैं कि कुछ न हो तो जरा यह हंसकर बोल ही ले। पर वह ऐसी पट्टी पढ़ीही न थी। इसी प्रकार वह भारे-लीसे भी नहीं बोलतीथी। भारेली अपने मामूली काम किये जाती थी और आंख बचाकर रावजीसे मिल लेती थी और राघोजीको साची बनाकर रावजीसे कहती थी कि मैने जहां तक बना आपकी भलाईकी है पर बाईजी मुझसे नाराज हैं, मेरी लज्जा आपके हाथ है। राघोजीने रावजीसे कहा, कि निस्सन्देह भारेलीके कारणही से आपकी एक सेवा कर सका और श्रीमान की शरणमें आगया, रावलजी मुझसे वैसेही अप्रसन्न है जैसे आपसे बाईजी।

रावजी जानते थे कि राघोजीनेही रावलजीके बुरे विचारोंका पता दिया और राघोजीको भारेलीने भेद दिया था, पर यह नहीं जानते थे कि भारेलीको कैसे पता लगा। इसका हाल तो जब मालूम होता कि रानी उमादे अपने मुंहसे कुछ कहती, वह भारेली और रावजीसे ऐसी वेजार थी कि मुंहसे कुछ बोलती ही न थी। वह यह जानती थी कि इस प्रकार रूठे रहना अच्छा नहीं, पर उसका दिल नहीं मानता था, इसलिये वह अपने मानमेंही मस्त बैठी थी।

भारेली भी उमाकी चुपसे बड़ी भयभीत थी। एक दिन साहस करके वह उसके पैरों पर गिर पडी और गिड़गिडा कर कहने लगी, कि बाईजी आपका विचार जो हो सो हो पर मैंने तो उस समयभी आपकी भलाईहीकी है जब आपने मुझे रावजीके लानेको भेजा था। क्योंकि महलसे बाहर निकलतेही मुझे ऐसा सन्देह हुआ था कि कोई जनाना वेशमें रावजीको ताक रहा है, इसलिये मैं उनको आपके महलमें लाना उचित न समझकर अपने घर लेगई। रावजी नशेमें थे पड़कर सोरहे और मै रातभर कटार लिये उनकी रक्षा करती रही। जब वह जागे तो आपकी सेवामें हाजिर होगई, इसमें यदि कुछ मेरा दोष हो तो क्षमा करें। उमादेने यह सब बातें सुन तो लीं, पर कुछ बोली नहीं। भारेली खिसियानी होकर चली गई।

बरात जोधपुर पहुंच गई। दीवान और प्रधान बड़ी धूम धाम से स्वागतको आये, कोसों तक सेना और तमाशाइयोंका तांता लग गया। किलेमें जनान खानेकी ओरसे गाजे बाजेके साथ बडबेवडा अर्थात् फूल पत्तोंसे सजा जलसे भरा कलश आया। रावजी उसमें अशरफियां डालकर अन्दर चले गये। वहां उनकी माता देवड़ी पद्माजीने बेटे और बहू पर अशरफियां न्योछावर कीं। बेटे और बहूने उनके चरण छुए. भीतर जाकर देवी देवताओंकी पूजाकी गई और उमादे एक अच्छे महलमें उतारी गई।

रावजीके रानियां भी और थीं और उनके बाल बच्चे भीथे। पाटरानी अर्थात् प्रधान रानी कछवाही लाछल दे आम्बेरके राजा भीम की बेटी थी। रावजीका बडा बेटा राम उसीसे उत्पन्न हुआथा झाली रानी स्वरूप दे सब रानियोंमें रूपवती थी, पर उमादेके बराबर न थी रावजीके जीपर उसीने अधिक अधिकार जमारक्खा था। उमादे से रावजीके विवाहकी बात सुनकर उसे बडा खटका हुआ था; उसे भय हुआ कि रावजी उसीके वशीभूत होजायंगे पर जब उसने सुना कि वह पहलीही रातमें रूठगई और यहां आकर भी वही

हालत है तो उसको जानमें जान आई।

मातासे बिदा होकर रावजी झाली रानी स्वरूपदेके महलमें गये। उसने बडे हर्षसे दौडकर रावजीके वारने लिये और गले का हार तोडकर उनपरसे मोती न्योछावर किये। रावजी उमादे के मान और घमण्डसे बड़े दुःखित थे। झाली रानीके आदर सत्कारसे बहुत प्रसन्न हुए और उसे विवाहका सब हाल सुनाने लगे। स्वरूपदे रानीने कहा—"आज्ञा हो तो मैं भी एक दिन भटानीजीसे मिल आऊं।

रावजी—भटानी क्या है एक भाटा (पत्थर) है।

स्वरूपदे—(हंसकर) वाह, आपने भला आदर किया। भाटा क्यों है वह भटानी है।

रावजी—हां भटानी तो है पर भाटेकी बनी है, मानकी मूर्ति है।

स्वरूपदे—वाह आपको उसका मान भी न भाया।

रावजी—मानकी भी एक सीमा होती है।

स्वरूपदे—भला जो एक बडे घरकी बेटी हो एक बडे रावकी रानी हो नवयुवती और नई बहू हो, रूपवती हो, उसके घमण्ड की क्या सीमा होसकती है? मुझ जैसी गरीब घरकी कोई क्या घमण्ड करेगी?

रावजी—यह सब ठीक है, पर स्वभावकी बडी कडी है, तुम जाकर प्रसन्न न होगी।

स्वरूपदे—अच्छा तो है कि आप भी पधारें और हम सब साथ चलें।

रावजी (हंसकर)—ठीक है, तुम्हारे साथ चलकर अपमान करावें।

स्वरूपदे—वह क्या उसका बाप भी आपका अपमान नहीं कर सकता।

रावजी—स्त्री अपने पतिका बहुत कुछ अपमान कर सकती है,

यदि वह तुम्हारे सामने मेरी ओर ध्यान ही न दे तो मेरा अपमान हुआ कि नहीं ?

स्वरूपदे—जब आप इतनी सी बातमें अपमान समझेंगी तो उसका मान कैसे निबहेगा ?

रावजी—हां यही देखना है।

उमादे और उसकी सौतें।

स्वरूपदेने सब रानियोंसे कहला दिया। दूसरे दिन सब रानियां बन ठनकर उमादेसे मिलने गईं। उमादेने उठकर लाछलदेको सबसे ऊपर बिठाया और उसीसे अधिक बातचीत की। बाकी सब रानियोंसे साधारण रीतिसे मिली और बहुत कम बातचीत की। इसलिये वह बहुत कुढीं और उसके रूपको देखकर तो सब जल गईं।

लौटनेपर लाछलदे तो अपने महलमें चली गई। बाकी रानियां स्वरूपदेके महलमें जमा होकर सलाह करने लगी। उन्होंने निश्चय किया कि उमादे तो रावजीसे रूठी है, रावजीको भी उससे रुठा देना चाहिये जिससे वह उसके महलमें जाना छोड दे। क्यों कि उसने कभी हंसकर यदि रावजीकी ओर देख लिया तो वह उसीके होजायगे।

इतनेमें रावजी आगये। उन्होंने पूछा—कहो, महारानीजी कैसी है ?

स्वरूपदे—महाराज बहुत अच्छी है, पर अल्हड बड़ी है।

रावजी—तब तो दुलत्तियां भी झाडती होगी ?

स्वरूपदे—हमें इससे क्या, जो पास जाय वह लात खाय।

राव—जिसे दुलत्तियां खाना होंगी वही पास जायगा।

स्वरूपदे—सौ बातकी एक बात तो यही है ।

तब रावजीने फिर दूसरी रानियोंसे पूछा । सीसोदिनी रानी पार्वतीने कहा—महाराज वह बड़ी घमण्डन है, अपने बराबर हमें क्या वह साजीको भी नहीं समझती ।

झालीरानी हीरांदे बोली—महाराज कुछ न पूछिये अपने सिवा वह सबको पशु समझती है ।

आहड़ी रानी लाछोयाईने कहा—मैं तो जाकर पछताई उसकी मा ऐसी अनगढ़ बेटी न जाने कहांसे लाई । उसकी आखोंमें न लाज है, न बातोंमें लोच है । मै तो आपको उसके पास न जाने दूंगी ।

सोगरी रानी लाडांने कहा—वह तो, मिजाजमें मरी जाती है, न आयेका आदर न गयेका मान, ऐसीके पास जाकर कोई क्या करे ।

चौहान रानी ईंदा बोली—महाराज, मैंने स्वरूपवती भी देखीं लाडली भी देखीं पर उसका दमाग चला हुआ है । न जाने उसके गोरे शरीरमें कौन भूत घुस रहा है ।

रानी राजबाईने कहा—गोरी चिट्टी है तो क्या, लक्षण तो दो कोडीकेभी नहीं । बड़ेघर आगई है नहीं तो सारा मान झडजाता ।

झाली रानी नौरंगदे बोली—जवानीके नशेमें दीवानी होरही है । यह नहीं जानती कि जवानी सबको चढती है, अकेली उसे ही नहीं चढ़ी है । कल जवानी जाती रहेगी, सब बल निकल जायगा ।

इन बातोंसे रावजीको भी क्रोध आगया । उन्होंने भी जाना कम कर दिया, कभी जाते तो उसके रूपको एक निगाह देखकर चले आते । उमा भी केवल ताजीमके लिये खडी होजाती और कुछ बात न करती ।

रावजीके दो भटानी रानियां और थीं । उनसे वह उमाकी बात कुछ न करते । क्योंकि जानते थे कि वह उमाकी निन्दा न

सुन सकेंगी। वह भी रावजीसे कुछ न कहतीं पर जीसे यही चाहती थीं कि रावजीका उमासे मेल होजाय। इससे मौका मिलने पर वह कछवाही रानी लाछलदेसे बोलीं कि उमादे लड़कपनके कारण अपनी हानि कर रही है, सौतोंके दाव पेचको नहीं जानती अबतो रावजी भी उसके पास कम जाते हैं। पर उसका स्वभाव अबतक न बदला। खैर वह तो नासमझ है पर रावजी समझदार होकर उससे क्यों रूठते है! लाछलदे बहुत भली रानी थी। उसने एक दिन अवसर पाकर रावजीसे कहा—अपनी नई लाडीके पास आना जाना क्यों कम कर दिया?

रावजी—मैं तो बराबर जाता था उसीने रूठकर काम खराब कर दिया।

लाछल—वह रूठी क्यों, इसका भेद मै अबतक न जान सकी।

रावजी—भारेलीके कारण।

लाछल—फिर आप भारेलीको इतना क्यों मुंह लगाते हैं? उमाके बराबर वह नहीं है।

रावजी—मैं क्या करूं, उमाने ही उसको मेरे पास भेजा।

लाछल—ठीक है, पर भारेली भारेलीकी जगह रहे और उमा उमाकी जगह।

रावजी—मैं भी यही चाहता हूं, पर उमा नहीं चाहती। उसके जीका हालही नहीं मालूम नहीं होता कि वह क्या चाहती है, तुम जरा पता तो लगाओ।

लाछल—बहुत अच्छा, कोई अवसर आने दीजिये।

लाछलदेने यह सब बातें उमासे कहीं। उसने धन्यवाद किया। उमा कभी कभी लाछलसे मिलकर जी बहलाती थी और उसे जीजीबाई कहती थी। उसके पुत्र कुमार रामका भी बहुत लाड़ प्यार करती थी।

जनानेकी चेष्टा।

अगले वर्ष संवत् १५९४ में राव मालदेव दौरा करते हुए अजमेर गये। वहां कुछ दिन किलेमें रहे जिसमें पहले वीसलदेव और पृथ्वीराज जैसे प्रसिद्ध महाराजोंका सिंहासन बिछता था। रावजी उसे अपने अधिकारमें देखकर एक रात इतराकर अपनी चौहान रानियोंसे कहने लगे कि इसे भलीभांति देख लो यह तुम्हारे बड़ोंकी राजधानी है।

रानियोंने कहा कि हम तो आपके अधीन हैं अपने बड़ोंकी होड नहीं कर सकतीं। वह जैसे थे उन्हें आपके बड़े भी जानतेहो होंगे।

रावजी इस उत्तरसे पृथ्वीराज और संयोगिताकी घटनाका इशारा समझकर जीमें गुस्सा लेआये और झटपट जनानेसे बाहर निकल गये। उस समय काली काली घटाएं छाई हुई थीं, कुछ बूँदें भी पड़ रही थीं। रावजीकी आंखोंमें नशा दिलमें क्रोध और हाथमें खांडा था। आपने आवाज दी ड्योढ़ी पर कौन हाजिर है?

ईश्वरदास बारहटने आगे बढ़कर मुजरा किया और कहा—जड़ी खमा अन्नदाता, पृथ्वीनाथ पधारो, शुभचिन्तक हाजिर है।

रावजी—अभी आप जागते हैं? अच्छा कोई कहानी तो कहो।

ईश्वरदास—जो आज्ञा, विराजिये।

रावजी बैठ गये। ईश्वरदासने कहानी शुरु की। बीच कहानी में उसने यह दोहा पढ़ा—

> मारवाड़ नर नीपजे नारी जैसलमेर।
> तुरी तो सिन्धां सांतरां करहल बीकानेर॥

अर्थात् मारवाड़में मर्द, जैसलमेरमें स्त्रियां, सिन्धमें घोड़े और बीकानेरमें ऊंट अच्छे होते है।

रावजी—बारहटजी! निस्सन्देह जैसलमेरमें स्त्रियां अच्छी होती हैं, पर हमें तो वहांकी स्त्रियोंसे कुछ लहना नहीं।

ईश्वरदास—क्यों अन्नदाता! यह क्या आज्ञा करते हैं? जैसलमेरकी अच्छीसे अच्छी नारी उमादे—

रावजी—(बात काटकर) वह तो फेरोंकी रातसेही रूठी बैठी है।

ईश्वर०—आपसे नोज रूठे, चलिये अभी मेल कराटूं।

दोनों उमादेके महलकी ओर चले। रावजी चलते चलते रुककर ईश्वरदाससे बोले—बारहटजी, आप चलते तो हैं पर वह बोलेगी भी नहीं।

ईश्वर०—मैं चारण हूं। चारण मरेको बुला सकते हैं वह तो जीती हैं।

ड्योढ़ी पर पहुंचकर ईश्वरदासने रावजीको अपने पीछे बिठा लिया और उमादेसे कहलाया कि मैं रावजीके पाससे कुछ कहने आया हूं। उमादे परदेके पास आबैठी। ईश्वरदासने कहा—बाईजी मुजरा, बड़ी खमा।

उमादेने कुछ जवाब न दिया। ईश्वरदासने फिर कहा—बाईजी राजसे मेरा मुजरा।

इसका भी कुछ उत्तर न मिला। तब ईश्वरदासने रावजीसे धीरेसे कहा—मैं न कहता था कि वह न बोलेगी, मुर्दा बोले तो वह बोले।

ईश्वरदास—बाईजी। मैं भी आपहीके घराने(१)का हूं इसी लिये बाईजी बाईजी करता हूं। यदि ऐसा न होता तो तुम देखती कि कैसा तुम्हें और तुम्हारे घरानेको लजाता। यह क्या

(१) ईश्वरदास रोहड़िया जातिका चारण था, उसका पूर्वपुरुष मांगा भाटी था। रावजीके परदादा राव रायपालने बहुतसा धन देकर उसे अपना चारण बनाया था।

उमा—उन्हें लानेसे क्या हुआ ?

ईश्वर—और कुछ तो नहीं, मेरे प्राण संकटमें पड़गये।

उमा—आप भोजन तो करें।

ईश्वर—अगले जन्ममें करूंगा।

इतनेमें भारेलीने आकर कहा—बारहटजी, बाईजीने भी भोजन नहीं किया।

ईश्वर—वह भोजन करें, उन्हें किसने रोका है ?

भारेली—भला कभी ऐसा हुआ है कि चरण तो ड्योढ़ी पर भूखा बैठा हो और कोई राजपूत जाई भोजन करले !

ईश्वर—यदि बाईजी चारणोंका ऐसा आदर करती हैं तो उनकी बात क्यों नहीं मानतीं ?

भारेली—आप क्या कहते हैं ?

ईश्वर—मैं कहता हूं कि बाईजी रावजीसे मान छोड़दें।

उमा—रावजी भी कुछ करेंगे या नहीं ?

ईश्वर—जो तुम कहोगी सो करेंगे। हाथ जोड़नेको कहोगी हाथ जोड़ेंगे, पांव पड़नेको कहोगी पांव पड़ेंगे, जैसे मानोगी मनायेंगे। मैंने सब ठीक कर लिया है।

उमा—बाबाजी, आपने समझदार होकर यह क्या कहा! अपने धर्म और कुलकी रीति से क्या ऐसा होसकता है? रावजी मेरे स्वामी हैं मैं उनकी दासी हूं, भला मैं उनसे यह कह सकती हूँ कि वह ऐसा करें या वैसा करें। मै तो रूठनेमें भी उनसे सब प्रकार प्रसन्न हूँ और वह भी मेरा पूरा पूरा आदर करते हैं। इसीसे मैं जीती हूँ, क्योंकि मैं मानको प्राणसे भी ज्यादा समझती हूं।

ईश्वर—धन्य बाईजी धन्य! पतिव्रता स्त्रियोंका ऐसाही धर्म है।

उमा—बाबाजी यह धर्म अन्त तक निभ जाय तो धन्य कहना नहीं तो क्या धन्य।

ईश्वर—हां, तो फिर तुम अब क्या चाहती हो ?

उमा—कुछ नहीं ; तुम-भोजन करो तो मैं भी करूं।

ईश्वर—तुम भोजन करो, मै तो तब खाऊंगा कि जब तुम मेरा कहना करोगी।

उमा—कहो क्या कहना करूं।

ईश्वर—रावजीसे रूठना छोड़ दो।

उमा—मेरा तो जी नहीं चाहता कि जो बात मैंने स्वीकार करली उसे छोड़ दूं, यह एक दम मेरे स्वभावके विरुद्ध है, पर आप के अनुरोधसे लाचार हूँ।

ईश्वर—ऐसा हो तो रावजी भी वही करेंगे जो तुम कहोगी।

उमा—मैं कुछ नहीं कहती रावजीकोसब बातोंका अधिकार है। पर हां, कोई बात स्वभाव विरुद्ध देखूंगी तो फिर अलग हो जाऊंगी।

ईश्वर—हां ठीक है ; कहो तो रावजी को लेआऊं और तुम चलो तो सुखपाल और अर्दली मंगाऊं।

उमा—अभी नहीं रातको चलूंगी, आप भोजन करें।

ईश्वर—पहले मैं रावजीसे मिल आऊं।

बारहट ईश्वरदास रावजीके पास चला गया और उमादेने फिर से भोजन बनवाकर उसके डेरे पर भेज दिया।

फिर मान।

रावजी प्रसन्न हैं रात होने को घड़ियां गिन रहे हैं। राजभवन सज रहा है, सन्ध्याहीसे सभा लगती है, गायनें और पातरें एकत्रहो जाती हैं नाचगाना आरम्भ होता है, शराब चलती है। उमादेको बुलाने बांदी पर बांदी आती है, रानी उमादे अभी शृंगारही कर रही है। मांगमें मोती भरे जारहे हैं, जी अब भी रावजीकी ओर नहीं है, मान अलग मचल रहा है स्वभादने

हठ नहीं छोड़ा है, जाने न जानेका अभी निश्चय तक नहीं हुआ, इतनेमें फिर बुलावा आया। उमा फिर उखड गई। भारेलीसे बोली, जाकर कह दे आते आते आवेगी ऐसी जल्दी क्या है? भारेली सुनकर सहम गई, कांप कर कहने लगी—बाईजीराज! क्या अन्धेर करती हो, मुझे क्यों भेजती हो, क्या और लौंडिया नहीं है? उमादेने कहा, तुझसी एक नहीं, तू यह उत्तर देकर जल्द चली आ फिर मेरे साथ चलना।

भारेली लाचार गई। रावजीकी दृष्टि ज्योंही उसपर पड़ी वह रानीको भूल गये, उसे हाथ पकड़कर बिठा लिया। वह बहुत कहती रही कि जो मै कहने आई हूँ वह सुनिये और मुझे जाने दीजिये नहीं तो रंगमें भग पड़ जायगी। रावजी बोले, कुछ नहीं होगा, भटानीने तुझे मेरी दिल्लगीके लियेही भेजा है वह आवे जब तक यहीं रह, फिर चली जाना। रावजी शराबकी धुनमें न उसकी कुछ सुनते हैं और न उसे जाने देते है, यहां तक कि पातरों और गायनोंको भी वहांसे हटा देते है। कुछ देर पीछे रानी उमादे वहां पहुची। देखा, रावजी भारेलीको लिये बैठे हैं, उसी दमही लौट गई। जीमें कहा अच्छा हुआ, मै भी चाहती थी कि मेरा मान बना रहे।

उधर भारेली रानीको देखकर घबराकर उठी और झरोखेसे नीचे कूद पडी। बाघा कोटडिया पहरे पर था, गहनोंकी झनकार सुनकर उसने ऊपरको देखा और भारेलीको गिरते गिरते ऊपर ही रोक लिया। उससे पूछने लगा, तू कौन है, परिस्तानकी परी है या इन्द्रके अखाडेकी अप्सरा? भारेली बोली, चुप, अभी यहांसे मुझे निकालले चल, नहीं तो तेरी और मेरी जानोंकी खैर नहीं! बाघाने कहा, मै रावजीका नोकर हू, विना आज्ञा कैसे जासकता हू? पहरा पूरा करलू तब जो कहोगी सो करूंगा। भारेली बोली, खैर तू मुझे अपने डेरेपर छोड आ, फिर जैसा होगा देखा जायगा। बाघाका डेरा

ईश्वरदासके पासही था, भारेलीको देखतेही उसने पहचान लिया। झट रावजीके पास गया, वह चकित बैठे थे, ईश्वरदासको देखकर बहुत उदास होकर बोले—मेरे हाथोंसे तो दोनोंही तोते उड़गये।

ईश्वर—एक तो उड जानेकेही योग्य था, उसकी चिन्ता न करें, बाघा कोटडियासे कहिये कि उसे जैसलमेर छोड़ आवे, नहीं तो दूसरा तोता आपके हाथ न आयगा।

रावजी—अच्छा यदि आपकी यही इच्छा है तो बाघासे कहदो।

ईश्वरदासने उसी समय जाकर भारेलीको एक वेगवती सांडनी पर चढाकर बाघाकी रक्षामें जैसलमेरको भेज दिया और वापस आकर रावजीको खबर दी।

रावजी तब बोले—अब तो भटानी राजी होगी।

ईश्वर—यह मैं नहीं कह सकता क्योंकि आप उनका मिजाज जानते है।

रावजी—हां इसीलिये तो मैं उसके पास गया नहीं; आप जाकर देखिये अगर होसके तो मना लाइये।

ईश्वर—अब उनका आना कठिन है है पर मैं जाता हूं।

ईश्वरदासने जाकर देखा कि राजभवन सूना पडा है और रानी बुर्जमें जाबैठी है। सखियोंने सफेद चान्दनी तान कर परदा कर दिया है। लौंडियां बांदियां पहरे पर है। उड़दा बेगणे (१) नंगी तलवारें लिये खडी है। ईश्वरदासने निकट जानेका साहस न किया, दूरसे देखकर रावजीके पास लौट गया और उनसे सब हाल कहा।

रावजी—(बिगड़कर) क्या भटानी बुर्जमें जा बैठी! यह क्या किया?

ईश्वर—बुर्जका भाग्य खुलनेवाला था। आज उस पर वह तेज बरस रहा है जो वहा कभी पृथ्वीराज चौहानके राज्य सिंहासन पर भी न बरसा होगा। चान्दनीका परदा पडा है, नंगी तलवारों

(१) उर्दू बेगमें अर्थात सिपाही स्त्रियां।

का पहरा है, मेरी तो वहांतक जानेकी भी हिम्मत न हुई अधिक क्या कहूँ।

रावजी—नंगी तलवारोंका पहरा है।

ईश्वर—हां महाराज ; विश्वास न हो तो चलकर देख लीजिये।

रावजी—तब तो उसे मनाना कठिन है।

ईश्वर—बहुतही कठिन ; रानीने मुझसे शर्त करली थी। आप ने अंधेर किया जो उनके स्वभावके विरुद्ध बात की, मेरे लिये भी कहने सुननेकी जगह न रखी।

रावजी—होनहार टलती नहीं। मै भी अब बहुत पछताता हूं। पहले भी भारिलीके लियेही बिगाड़ हुआ था।

ईश्वर—वह तो गई, पाप कटा।

रावजी—इसका भी मुझे दुःखही रहेगा—

ईश्वर—(बात काटकर) अभी तो बाईजी दो चार दिन तक महलमें आती नहीं जान पडतीं। उनके लिये क्या किया जाय ?

रावजी—मैं तो कल चला जाऊंगा, मुझे बीकानेर पर चढाई करना है, यहांका प्रबन्ध सब होचुका है। हुमायूँ बादशाहके आने की खबर थी वह भी नहीं आया। फिर क्यों समय नष्ट किया जाय। तुम यहां रहो और इस बुर्जके पास कनाते खड़ी कराकर पहरे चौकीका प्रवन्ध करो। जब उसका मिजाज ठीक हो तो समझा बुझाकर जोधपुर ले आना, मैं क़िलेदारसे कह दूंगा वह सब प्रवन्ध कर देगा।

रावजी यह कहकर अगले दिन अजमेरसे चल दिये। दीवान उनकी आज्ञासे अजमेरका रामसर परगना रानी उमादेकी जागीर में लिखकर पट्टा उसके पास भेज देता है। किलेदार उसकी ड्योढी पर परदे और तम्बूका प्रवन्ध करके संध्या सवेरे सलामको हाजिर होता है। अजमेरका हाकिम नित्य रानीकी ड्योढी पर मुजरेको हाजिर होता है और बड़े बड़े काम रानीकी सलाहसे पूरे करता है। उमादेका नाम अब 'रूठीरानी' प्रसिद्ध होजाता है। वह बुर्ज भी

रूठी रानीका बुर्ज(१) कहलाने लगा जो आजतक उसी नामसे प्रसिद्ध है।

जोधपुर पहुंचकर राव मालदेवने सुना कि बंगालमें हुमायूँ और शेरशाह सूरसे लड़ाई छिड़ गई और दिल्ली आगरा खाली पड़ा है। उन्होंने बीकानेरका खयाल छोड़कर पूरबकी ओर चढ़ाई की और हिन्दौन, बियाना तक फतह करते चले गये। वहांसे लौटकर संवत् १५९८ में बीकानेर भी जीत लिया।

इस बीचमें शेरशाह हुमायूँको सिन्धमें भगाकर आगरे पहुंचा। इधरसे वह सब राजा रईस और ठाकुर जिनके इलाके राव मालदेवने लेलिये थे बीकानेरवालोंकी सरपरस्तीमें उसके पास गये और उसे रावजी पर चढ़ा लानेकी चेष्टा करने लगे। रावजीने उससे लड़नेको ८० हजार सवार जमा किये और बारहट ईश्वरदासको लिखा कि आप रूठीरानीको लेकर चले आइये और अजमेरके किलेमें जल्दी बन्दोबस्त करा दीजिये।

रूठी रानीने इस पर कहा—मुझे क्या डर पड़ा है। मैं राजपूतकी बेटी हूँ, किले पर कोई चढ़ आवेगा तो मैं करमेती हाड़ी* की भांति अग्निमें जलकर नहीं मरूंगी, मर्दोंकी भांति लड़ूंगी। रावजीको लिख दो कि यह किला मेरे भरोसे पर छोड़ दें और बाकी राज्यका स्वयं प्रबन्ध करें।

रावजीने उत्तर दिया कि अजमेरमें तो हम शेरशाहसे लड़ेंगे। रानीको राजपूती दिखानेकी यदि ऐसीही इच्छा है तो जोधपुरका

(१) यह बुर्ज अजमेरके किलेमें दक्षिणकी ओर है।

* करमेती हाड़ी महाराणा सांगाकी रानी और विक्रमादित्य तथा उदयसिंहकी माता थी। जब गुजरातके बादशाह सुल्तान बहादुरने संवत् १५९१ में चित्तौड़का किला जीता तो करमेती १३ हजार स्त्रियोंके साथ अपनी इज्जत बचानेके लिये चिता बना कर जल मरी।

दूर तक लगा था, हाथीके पीछे ऊंटोंका नौबतखाना था, उसके पीछे घोड़ों पर नक्कारा बजता था। पीछे सजे हुए ऊंट और फिर चीलोंका झण्डा(१) हवामें उड़ता दिखाई दिया। झण्डेके पीछे रणबंका बरछेत राठौड़ोंका एक रिसाला था फिर एक कतार बन्दूकचियोंकी, उनके पीछे तीरन्दाज, फिर ढाल तलवारवाले राजपूत थे। आगे कुछ दूर मैदान खाली रखकर कोतल हाथी और घोड़े चलते थे। उनके पीछे नकीब चोबदार सोने चान्दीके असे लिये हुए प्रबन्ध करते चलते थे। बारहट ईश्वरदास भी पांचों हथियार लगाये एक चालाक घोड़े पर अकड़े बैठे थे। ज्योंही उसकी दृष्टि अपने चचा आसाजी पर पड़ी, घोड़ेसे उतरकर मुजरा किया और पूछा, आप यहां कहां? आसाजी बोले, बाईजीकी पेशवाईको आया हूं। दोनो वहीं खड़े होकर बाते करने लगे, सवारी बढ़ती चली गई।

फिर एक झुण्ड सजी सजाई और कसी कसाई स्त्रियोंका आया। उनमें कुछके पास तीरकमान और तलवारें भी थीं। उन्हींके झुमुट में रानीका सुनहरी सुखपाल था। उस पर जरीका गहरा गुलाबी पर्दा पड़ा और जगह जगह गहरे और चमकीले रंगके नग जड़े थे जिन पर निगाह नहीं ठहरती थी। सुखपालके पीछे नंगी तलवारोंका पहरा था। फिर कई जनानी सवारियां पालकियों, पिनिसों और रथोंमें थीं। उनके पीछे राठौड़ोंका एक एक रिसाला और रिसालेके पीछे जुलूसके शेष कोतल घोड़े हाथी और ऊंट थे। सबके पीछे फर्राश खाना तोशाखाना और मोदी आदि लावलशकरकी ऊंट गाडियां थीं।

आसाजीके साथी कहते थे कि देखें आसाजी कैसे इस धूमधड़क्केसे चलती हुई शाहाना सवारीको रोक देंगे, जिसके आगे कोई चूं नहीं कर सकता। इतनेमें रूठीरानी

(१) जोधपुरके झण्डेमें चीलोंकी तस्वीर होती है। यह राठौड़ों का खास निशान है।

का सुखपाल आसाजीके बराबर पहुंचा। उसने बड़े अदबसे ड्योढ़ीदारको आवाज देकर कहा, बाईजीसे अर्ज करो कि आसा बारहट सुजरा करता है और कुछ विनय भी किया चाहता है और साथही यह दोहा पढ़ा—

> मान रखे तो पीवतज, पीव रखे तजमान!
> दोय गयन्द न बन्धिये, एकण खम्भू ठान॥

अर्थात् मान रखती है तो पति छोड और पतिको रखना चाहती है तो मान छोड, क्योंकि एकही थानमें दो हाथी नहीं बान्धे जाते।

दोहा सुनतेही रूठीरानी फिर सनक उठी, और उसका दिल उसके वशमें न रहा, उसी दम सवारी लौटानेकी आज्ञा दी। सब चकित रहगये कि यह क्या हुआ, ईश्वरदासने बहुत जोर मारा, हाथ जोड़े पर आसाजीके जादू भरे शब्दोंके सामने उसकी कुछ पेश न गई। रानीने किसीकी बात न सुनी कोसाना गांवमें डेरे करा दिये। आसा उसे और पक्का करनेको ड्योढ़ी पर पहुंचा और सुजरा करके कहा—बाईजी, धन्य हो, मान तुम्हाराही सच्चा है और सब कहनेकी बातें हैं।

रानी—बाबाजी, वह दोहा फिर पढो, बड़ा अच्छा और सच्चा दोहा है। अपना मान मैं कभी न छोडूंगी।

आसा—(दोहा पढ़कर) बाईजी। राजाओंमें सच्चा मानी दुर्योधन हुआ उसी कुलमें आप हैं। रानियोंमें सच्चे मान गुमानवाली आपही हैं।

रानी—बाबाजी! दुर्योधन नामका तो एक ही राजा हुआ, पर अभागी उमाके नामकी तो कई रानियां हुईं। उनमें एकके नामका यह दोहा प्रसिद्ध है—

> हार दियो छन्दो कियो, मूक्यो मान मरम्म।
> उमा पीव न चक्खियो, भाडो लेख करम्म॥

अर्थात् हार दिया, छिपाया, मान छोड़ा, फिर भी उसको

पतिका सुख न मिला, उसके भाग्यकी लकीर आडी पड़ गई।

आसा—बाईजी। वह तो उमा सांखेली(१) थी और तुम उमा भट्टानी हो, दोनोंका घराना भी एक नहीं।

रानी—(रोकर) बाबाजी दोहेमें तो केवल उमा है, सांखेली और भट्टानीको कौन जाने।

आसा—क्यों नहीं जाने, यह दोहा अचलदास खेचीकी वार्त्ता का है, उमादे सांखेली उसकी रानी थी, उसे सब जानते हैं, क्या तुम नहीं जानतीं?

रानी—मेरे और तुम्हारे जाननेसे क्या होता है, दोहेमें तो जाति नहीं लिखी है, मेरे और तुम्हारे पीछे कौन जानेगा?

आसा—तुम्हारे पीछे तक जीता रहा तो तुम्हारे नामको अमर कर दूंगा।

रानी—आप न आते तो न जाने क्या होता। आपके भतीजे की बात पर धोखा खाकर मैं अपनी मर्य्यादा छोड़ देती तो सौतें मुझ पर हंसतीं और कहतीं कि बस इतनाही पानी था।

इतनेमें अर्ज हुई कि ईश्वरदास हाजिर है, यह सुनकर आसा चला गया। ईश्वरने आकर कहा—बाईजी। यह आपने क्या

---

(१) उमादे सांखेली गागरोनके खेची राजा अचलदासकी रानी थी। उसकी सौत सोढी रानी राजाके ऐसी मुंह लगी थी कि राजा उसके भयसे सांखेलीके पास नहीं जाता था। जब इस प्रकार बहुत वर्ष बीत गये तो एक दिन सोढी रानीने सांखेलीके पास एक बहुमूल्य हार देखकर एक रातके लिये मांगा। उसने हार इस प्रतिज्ञा पर दिया कि वह राजाको एक रात उसके पास आने दे। सोढी रानीने यह स्वीकार किया पर राजाको समझा दिया कि जाना पर चुपचाप रात बिताकर चले आना। राजाने वैसाही किया। सवेरे सांखेली रानीने दुःखके साथ ऊपर लिखा दोहा पढा। राजस्थानके लोग इसे निराशाके समय पढ़ा करते हैं।

किया, चलती सवारी राहमें ठहराली? रावजी आपकी बाट देख रहे हैं। कुमार रामसिंह, रायमल, उदयसिंह और चन्द्रसेन आदि स्वागतको तय्यार हैं। नगर भरमें आनन्द फैल रहा है कि रूठी रानी आती हैं और रावजी उन्हें किला सौंपकर लड़ने जाते हैं।

रानी—तुम रावजीको लिख भेजो कि मैं तो यहांही रहूंगी। यहांका जो प्रबन्ध करना हो वह मेरे जिम्मे करें और हर्षपूर्वक लड़नेको जावें। राजपूतोंको शत्रुओंसे लड़नेमें देर न करना चाहिये।

ईश्वर—अंधेर करती हो, यहां रहकर क्या करोगी? रावजीने अपने पराये सबसे शत्रुता कर रखी है, घर फूट रहा है। वीरमदेव मेड़तिया और मारवाड़के दूसरे भूमिये और जागीरदार जिनकी भूमि रावजीने छीन ली है शेरशाहके पास पुकारने गये हैं, फिर एक ओरसे शेरशाह और दूसरी ओरसे हुमायूंके आनेकी खबरें उड़ रही हैं आप जोधपुर चलकर किलेका प्रबन्ध कीजिये।

रानी—बादशाह आते हैं तो आने दो, मुझे उनका क्या डर पड़ा है, मैंने तुमसे जो बात अजमेरमें कही थी वही यहां कहती हूं। रावजी यदि कोई काम मेरे अधिकारमें कर देंगे और अपने पासकी सेनामेंसे आधी भी यहां भेज देंगे तो मैं यहां बैठी बैठी भी जोधपुरकी रक्षा कर लूंगी। रावजी जहां चाहें जायं, मैं अब जोधपुर नहीं जाऊंगी। हां यदि रावजी आज्ञा दें तो रामसरमें जा रहूं।

ईश्वरदासका मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। उसने जोधपुर जाकर रावजीसे कहा कि मैंने तो बाईजीको प्रसन्न कर लिया था, आसाजीने सारी बिगाड़ दी, किये कराये पर एक दम पानी फेर दिया, आपने उसे भेजा क्यों? रानी उमादेको आप जानते हैं। आसाजीने मानका शब्द उसे फिर याद दिला दिया और वह रूठ गई और कोसानेमें डेरे कर दिये। मैंने बहुत समझाया पर उन्होंने एक न सुनी। किसीने पागलसे पूछा—क्यों गांव जलाया? उसने

कहा खूब याद दिलाया, अब जलाता हूं।

रावजी—फिर अब क्या करना चाहिये, किसे भेजूं?

ईश्वर—मुझे तो ऐसा कोई नहीं दिखता जो जाकर उन्हें मना लावे, और वह भी आसाजीके होते।

रावजी—आसाजी तो मुझसे घर जानेको छुट्टी लेकर गये थे?

ईश्वर—बस इसीमें कुछ चाल हुई।

रावजी—चाल कैसी?

ईश्वर—विशेष कुछ नहीं (कहते कहते रुक गया क्योंकि आप भी रिशवत हजम किये बैठा था)

रावजी—तब क्या करना चाहिये।

ईश्वर—अभी तो आसाजीको हुक्म होना चाहिये कि वहांसे चले जायं, फिर मै बाईजीको लेआऊंगा।

इतनेमें हुमायूं सिन्धसे मारवाड़में आया और आगरेसे शेरशाह के वकील यह पैगाम लेकर पहुंचे कि हुमायूंको पकड़ना, जाने न देना। इसके बदलेमें गुजरात फतेह करके तुम्हें दिया जायगा। यह सुन रावजी दुविधामें पड़ गये। यह खबर हुमायूंने भी सुनी, वह ऊपर ऊपर लौट गया। उसके साथियोंने मारवाडमें गोवध किया था, रावजीने इस अपराधका दण्ड देने और शेरशाहको दृष्टिमें भला बननेके लिये कुछ फौज हुमायूंके पीछे भेजी, पर वह बचकर निकल गया।

राजपूतोंकी वीरता।

शेरशाह हुमायूंके बचकर निकल जानेकी बात सुनकर रावजीसे बिगड़ा उसने मारवाडपर चढाई कर दी। रावजी अजमेर जानेको तो पहलेसे ही तैयार थे, अब मेडतेका रास्ता छोड़कर जैतारनके रास्ते चले। जोधपुरके हाकिमने रावजीको आज्ञासे

कोसानेमें जाकर रूठी रानीकी सवारीका अधिकार मेड़तेके हाकिमसे लेलिया। मेड़तेके हाकिम और आसाजी दोनोंने रूठीरानीको सरकारसे खिलअत पाये, हाकिम मेड़तेको गया और आसाजी जेसलमेरको। आसाजोसे रावजीने जोधपुरके हाकिम द्वारा कहला दिया था कि अब तुम हमारे राज्यमें न रहो।

जब रावजी अजमेर पहुंचे तो शेरशाहने सुना कि उनके पास ८० हजार सेना है, वह सन्नाटेमें आगया। वीरमजी (१) मेड़तियेने कहा कि आप चलें तो सही, मैं रावजीको जरा देरमें भगा सकता हूं। शेरको इसका विश्वास न हुआ, वह फूंक फूँककर पांव रखता हुआ चला जब अजमेर बहुत पास रह गया तो उसने वीरमजीसे कहा कि अब अपनी चतुराई दिखाइये। वीरमने राव मालदेवके सरदारोंके नाम फारसीमें फर्मान लिखाया, "हम तुम्हारे बुलानेसे आगये हैं अब तुम अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार रावजीको पकडकर लेआओ तुम्हारे खर्चके लिये फीरोजियां(२) भेजी जाती है।" फिर एक एक फर्मान ढालकी गद्दीमें रखकर सी दिया। जिस ढालमें जिस सरदारके नामका फर्मान था वह उसीके पास बेचनेको भेजी और बेचनेवालेसे कह दिया कि वह जिस दाममें ले देआना। फिर कई लाख फीरोजियें शेरशाही खजानेसे लेकर कुछ तो आप रखलीं और बाकी अपने आदमियोंके हाथ रावजीके उर्दूबाजारमें भेजकर सस्ते दामपर बिकवा दीं। इसी प्रकार ढालें भी रावजीके सरदारोंने लड़ाईकी जरूरतसे महंगी सस्ती सब खरीद लीं।

यह कार्रवाई करके रातको वीरमजी रावजीके पास गया और कहने लगा कि आपने मेडता मुझसे छीन लिया और बीकानेरके

---

(१) यह मेड़तेका राव था, राव मालदेवने इसे मेड़तेसे निकाल दिया था। चित्तौड़का प्रसिद्ध वीर जयमल राठौड़ इसीका पुत्र था।

(२) फीरोजशाही सिक्का जो उस समय भी चलता था।

राव जैतसीको मारडाला, इससे यदि हम बादशाहसे मिलें तो मिल सकते हैं, पर आपके और सरदार उससे क्यों मिल गये हैं, उन्होंने रिशवतमें खूब फीरोजियां ली हैं।

रावजी—बाबाजी(१) मुझे तो कुछ खबर नहीं, इसका कुछ सबूत है?

वीरम—अपने सरदारोंकी ढालें देखिये उनकी गद्दियोंमें बादशाही फर्मान हैं और लाखों फीरोजियां आई हैं क्या, बाजारमें न बिकी होंगी?

वीरम यह कहकर चल दिया पर रावजी बड़े फेरमें पड़े। आदमी भेजकर फीरोजियोंका हाल पूछा तो सब सर्राफों के पास निकलीं। उनसे पूछा तो कहा कि अपनेही आदमी बेच गये हैं। इससे रावजीको अपने सरदारों पर पूरा सन्देह होगया। दूसरे दिन जब सब सरदार मुजरेको आये तो रावजीने उनके पास नई नई ढालें देखकर पूछा, यह कहांसे आईं? उत्तर मिला कि व्यापारियोंसे खरीदी गई है।

रावजीने देखनेके बहानेसे सब ढालें रखलीं। दरबार उठ जाने पर उनकी गद्दियोंको निरवाकर देखा तो वही फर्मान मिले जिन की बात वीरमने कही थी। मुन्शीको बुलाकर पढवाया तो वही लेख निकला। रावजीको विश्वास होगया कि सब सरदार रिशवत लेकर बादशाहसे मिल गये है, मेरे साथ दगा करेंगे। रामसे मिल जानेका सन्देह तो पहले ही था, अब यकीन होगया कि सरदारों की नीयत खराब है। उसीदम कूचकी आज्ञा दी, सब चकित रहगये। सरदारोंने विनय की, कि हम बादशाहसे कभी नहीं मिले, हमारे साथ जालसाजी हुई है, पर रावजीको विश्वास न हुआ।

बादशाहने वीरमकी कारस्वाईसे साहस पाकर रावजीका पीछा

(१) वीरमजी सम्बन्धमें रावजीके दादा होतेथे और जयमल चचा।

किया। जब रावजी बाबरा जिला जैतारनके पास सुमेल नदीसे उतरे, तो उनके सूर्मा सरदार जेता और कूंपाने विनय की, कि यहां तक जो भूमि आप पीछे छोड आये हैं वह आपकी जीती हुई थी, अब आगे हमारे बड़ों (१) की जीती हुई है। हम ऐसे कुपूत नहीं हैं जो अपनी भूमिको यों ही छोड़कर चले जायं। आप जाते हैं, खुशीसे जायं, हम तो शेरशाहसे यहीं जम कर लड़ेंगे वह भी तो देखे कि राजपूत भूमिके लिये कैसे प्राण देते हैं।

रावजीने कहा यहां लडना व्यर्थ है, जोधपुर चलकर लडेंगे। पर जेता कूंपाने न माना वह दस हजार वीर राठौडोंको लेकर पलट कर बादशाहकी सेना पर पिलच पडे, ऐसे लडे कि बादशाहको अपने मारे जानेका भय होगया। पर उसकी सेना चालीस पचास हजार थी और यह कुल दस हजार। कहां तक लडते अन्तको मारे गये, अपनी वीरताका सिक्का बादशाहके दिल पर जमा गये। शेरशाहने खुदा खुदा करके विजय पाई। शुक्र करते हुए कहा, बडी खैर हुई, नहीं तो मुट्ठी भर बाजरीके लिये हिन्दुस्तानकी सलतनतही खोई थी।

दूसरे दिन इस समाचारको सुनकर रावजीने सिवानेकी ओर बाग मोडी। जोधपुरके किलेदार को लिखा कि किलेका बन्दोबस्त रखो और रानियोंको हमारे पास भेज दो, यही बात रूठीरानीसे कहला दो। किलेदारने आज्ञा पातेही सब रानियोंको सिवाने भेज दिया जो जोधपुरसे ३० कोस पश्चिमी मरुस्थलमें है और स्वयं किला सजाकर लड़ने मरनेको तैयार हो बैठा। जो राठौड़ रावजीके अविश्वाससे अप्रसन्न होकर फिर आये और जो जेता कूंपाके मारे जाने पर बच रहे वह सब मिल कर कोसानेमें रूठीरानीके पास एकत्र होगये।

शेरशाह स्वयं तो नहीं आया पर उसने पांच हजार सवारोंके

---

(१) जेता और कूंपासी वीरोंकी भांति रावजीके खान्दानके थे।

साथ खवासखां को जोधपुर जीतनेके लिये भेजा। उसने आकर किला घेर लिया। किलेदार उससे लडा पर जब पीनेका पानी समाप्त हो चुका तो किलेके द्वार खोलकर और एक घमसान युद्ध करके मर गया। किले पर खवासखांका अधिकार होगया। तब उसने कुछ सेना बीकानेरमें राव जैतसीके पुत्र कल्याणमलको दखल देनेके लिये भेजी और कुछ राव वीरमदेवके साथ मेडतेमें उसका अधिकार करानेके लिये। उस सेनाने लौटकर खवासखांको खबर दी कि कोसानेमें राठौड़ जमा होते हैं। खवासखांने कोसाने जाकर रूठीरानीसे कहलाया कि या तो लड़ो या जगह खाली करो। रानीने कहलाया कि मैं लड़नेको तैयार हूं, पर यदि जीत गई तो तेरी और तेरे बादशाहकी बनी बनाई बात दो कौडी की हो जायगी, और यदि तू जीता तो स्त्रीसे जीतनेमें तेरी कुछ बहादुरी नहीं।

खवासखांने अपने सरदारोंसे सलाह की। उन्होंने कहा कि अभी तो थोड़े से राजपूतोंने बादशाहसे लडकर आफत मचा दी थी, उनके साथ राजा भी न था, जो वह होता तो न जाने क्या कर डालते। यहां रानी मौजूद है जो मर्दानी जान पड़ती है। मर्दानी न भी हो तो राजपूत अपनी रानीकी इज्जतके लिये खूब जी तोड़ कर लडेंगे। खवासखांने कहा कि यह ठीक है, पर अगर यहांसे बिना लडे चला जाऊंगा तो लोग कहेंगे कि मर्द होकर स्त्रीके सामनेसे भाग गया। सरदारोंने कहा कि औरतसे न लड़नेमें उतनी हतक नहीं जितनी उससे हार जानेमे है। अन्तमें निश्चय हुआ कि बादशाहसे सलाह ली जाय।

बादशाह उस समय अजमेरमें था, वह राना उदयसिंह पर चढाई करनेकी चिन्ता कर रहा था। खवासखांकी अरजी पहुंचने पर उसने उत्तर दिया कि अब उस भिडोंके छत्तेको न छेडो, अगली फतहको गनीमत समझो। हां अगर वह खुद लडने आवें तो न हटो। खवासखांने यह उत्तर पाकर लड़ाईका इरादा छोड़ दिया।

और रूठीरानीसे कहलाया कि जहां मेरा लशकर पडा है हुक्म हो तो वहां एक गांव बसाकर चला जाऊं जिससे मेरा भी कुछ निशान आपके मुल्कमें रह जाय।

रानीने कहा—नाम नेकीसे रहता है. इस समय तू जोधपुरका हाकिम है, यदि प्रजाके साथ अच्छा बर्ताव करेगा तो लोग आप तेरी यादगार बनावेंगे। उसने कहा, खुदा आपकी जुबान मुबारक करे, मै जो अपने हाथसे कर जाऊं वही अच्छा है। रानीने अपने सरदारोंसे सलाह की। उन्होंने कहा कि क्या हानि है, अपने देशमें एक गांव बढ़ेगा। रानीने उसे गांव बसानेकी आज्ञा देदी और खवासखां खवासपुरा(१) बसाकर चल दिया। इस तरह रूठीरानीकी बात रहगई। यह घटना फाल्गुण मवत् १६०० की है।

रावजीका देहान्त।

संवत् १६०२ में शेरशाह मर गया। यह खबर मारवाडमें फैलतेही रावजीके राजपूत इधर उधरसे खवासखां पर हमला करने लगे। खवासखां उनसे लड़ता भिड़ता जोधपुरके बाजारमें मारा गया। रूठीरानीके उपदेशसे उसने जोधपुरवालोंकेसाथ अच्छा बर्ताव किया था इससे जोधपुरवालोंने वहां उसकी कबर बनाई और लाश को खवासपुरमें लेगये, वहां भी एक मकबरा बनाया. गांव बसा बाग लगा दोनों जगह उसकी कबरकी मानता हुई। किन्तु मुस-लमान वहां चढ़ावा चढाते हैं, यह उसकी नेकीका फल है जो बडे बडे बादशाहोंको भी प्राप्त नही होता। रावजी भी सिवानेकी तरफसे रास्तेके अफगानी थानोंको उठाते हुए लडते भिडते जोधपुर

(१) यह गांव परगने मेडतामें कोसानासे जो अब परगना बेलाडेमें है २-३ कोस पर है।

पहुंच गये और जोधपुरमें फिरसे राठौडोंका राज्य होगया। साथ ही कुछ घरेलू झगडे भी उठे, जिनकी नींव रावजीने झालीरानी स्वरूपदेके प्रेमसे स्वयं डाली। रावजीका बडा बेटा राम रानी लाछलदे कछवाहीसे उत्पन्न हुआ था और रूठीरानीके पास अधिक रहा करता था। उससे छोटा रायमल झाली हीरांदेसे उत्पन्न हुआ था। उदयसिंह और चन्द्रसेन रानी स्वरूपदेसे हुए थे। हीरांदे और स्वरूपदे चचेरी बहनें थीं वह अपने पुत्रोंके लाभके लिये आपस में साजिश करके रावजीको रामकी ओरसे बहकाती रहती थीं। राम भी रावजीको खिंचा देखकर खिन्नसा रहता था। रावजीके साथी भी रावजीके शासनकी कमजोरी देखकर रामको रावजीके विरुद्ध भडकाते रहते थे। मारवाडके अमीर घरोंमें पुरुषोंके लिये दाढ़ी छटाने और स्त्रियोंके लिये हाथी दांतका चूड़ा पहननेके दो अवसर बडी खुशीके होते हैं। इन अवसरों पर खूब आनन्दोत्सव किये जाते हैं राम संवत् १६०४ में १६ वर्षका होगया, उसके थोडी थोडी दाढी मूंछें भी निकलआईं। दाढ़ी जबतक ठोडीके ऊपर बीचमेंसे नहीं छटाई जाती तबतक हिन्दू मुसलमानोंमें कुछ भेद नहीं समझा जाता। मानो यह पहचान हिन्दू मुसलमानकी दाढीकी है। लाछलदेने अपने पुत्र रामकी दाढी छटानेका सामान करके रावजीसे उत्सवके लिये आज्ञा मांगी। उन्होंने आज्ञा दी। जोधपुरमें जल कम है, इससे राम उत्सव करनेके लिये मण्डोर (१) के हरे भरे बागोंमें चला गया और उत्सवके बहाने वहीं पर अपने मित्रों और विश्वासी लोगोंको एकत्र करके बोला कि रावजी वृद्ध होगये हैं, उन्होंने बहुतसे शत्रु उत्पन्न कर लिये हैं, देशमें झगडा फैला रखा है आज यहांसे चलतेही उन्हें पकड लो और कैद करदो जिससे सबको सुख होजाय। यहां यह सलाह होती

---

(१) मण्डोर मारवाडकी पुरानी राजधानी है जोधपुरसे तीन कोस उत्तर पहाड़ोंके नीचे बसा है।

हो रही वहां रावजीको भी इसकी खबर लग गई। उन्होंने झटपट कछवाही रानी लाछदे की ड्योढ़ी पर पालकी भेजकर कहलाया कि अभी किलेसे नीचे आजाओ। रानीने पूछा, मेरा दोष? उत्तर मिला कि तेरा बेटा तुझसे कहेगा। रानीको उसीदम किला छोड़ना पड़ा। सन्ध्याको रामभी नशेमें झूमता आया किलेमें जाने लगा तो किलेदारने कहा भीतर जानेका हुक्म नहीं है। रामके कहनेसे किलेदारने रावजीसे जाकर कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि राम कुपुत्र है किलेमें रहनेके योग्य नहीं। वह गोन्दोज चला जाय वहीं उसके लिये सब प्रबन्ध होजायगा। राम अपनी मा सहित गोन्दोज चला गया, इस तरह यह काम झाली रानियोंकी इच्छानुसार होगया। तब वह रूठी-रानीको हटानेकी चेष्टा करनेलगीं। कहती थीं कि यह सिल अभी छाती परसे नहीं सरकी, पहले ६० कोस पर थी अब १५ कोसपर है। झाली रानियोंने स्वयं भी रावजीसे कहा और दूसरोंसे भी कहलाया कि रूठीरानीके कारणही राम ऐसा उद्धत और अशिष्ट होगया है। रावजीने रूठीरानीको भी गोन्दोज भेज दिया। रूठी-रानीने कुछ तो राम पर स्नेह रखनेसे कुछ रावजीके आदरके लिये और कुछ अपने स्वाधीन स्वभावके अनुकूल देखकर यह हुक्म मान लिया और गोन्दोज चली गई, उसकी सौतोंके घर उस दिन घीके दिये जले।

गोन्दोजमें अपना निर्वाह न देखकर राम उदयपुर चला गया। क्योंकि राना उदयसिंहकी पुत्रीसे उसका विवाह हुआ था। रानाने उसका बहुत आदर किया और केलोह ग्राममें उसके रहनेको स्थान दिया जो मारवाड़से निकट पड़ता है। राम अपनी सगी माता और सौतेली मा रूठीरानीको भी वहीं लेगया। झाली रानियोंकी आंखोंका कांटा यों निकल गया, रावजीभी कालि भीतर के शत्रुओंसे बेखटके होकर फिर देश विजय करनेमें लग गये और लड़करके अपने खोये हुए इलाके फिर जीत लिये, कई नये इलाके

भी फतेह किये, पर जल्दही विजयकी धारा रुक गई। अकबरके बादशाह होने और जोर पकड़नेसे रावजीको अपनीही पगडी सम्हालनी कठिन होगया, धीरेधीरे कितनेही परगने मुगलोंके अधिकारमें चले गये। इसी दशामें कार्त्तिक सुदी द्वादशी संवत् १६१८ को राव मालदेवका देहान्त होगया।

रूठीरानीका सती होना।

रानियां सती होनेकी तय्यारी करने लगीं। झाला रानीको उसके बेटे चन्द्रसेनने सती होनेसे रोक लिया और कहा कि दो चार दिनमें सब सरदार बाहरसे आजायंगे उनसे मेरी सहायता करनेका वचन लेकर सती होना। झालीरानीने चन्द्रसेनको उदयसिंहसे छोटा होने पर रावजीसे कह सुनकर युवराज बना दिया था। झालीरानी हीरादेने भी उससे चन्द्रसेनकी सिफारिश की, इस लिये स्वरूपदे ठहर गई, उसी समय सती न हुई। दूसरी रानियां, पातरें और खवासें रावजीके साथ सती होगईं जो गिनतीमें २१ थीं।

रावजीके मरनेकी खबर बहुत जल्द सारे देशमें फैल गई, उनके बडे बडे सरदार अपने अपने सिर मुंड़ाकर जोधपुरमें आने लगे। झालीरानी स्वरूपदेने रावजीके मरनेके पांचवें दिन चन्द्रसेनको सरदारोंका वचन तो दिला दिया पर इस झमेलेमें देर होजानेसे उसने चन्द्रसेनसे कहा कि तूने अपने राज्यके लिये मुझे रावजीके साथ जानेसे रोक लिया इसलिये इस राज्यसे तू कुछ लाभ न उठावेगा और न तेरी सन्तान। यह कहकर उसने चिता बनवाई और रावजीकी पगड़ीके साथ सती होगई।

दूसरी पगड़ी(१) कार्त्तिक सुदी पूर्णिमाको केलोहमें पहुंची। उसे

---

(१) जब कोई राजा मर जाता था तो नाजिर उसकी पगडी लेकर जनानेमें जाता था। सती होनेवाली रानी उस पगडीको

देख रूठीरानीने आपसे आप मान छोड़ दिया, उसका सारा बल निकल गया। कहने लगी—अब किससे रूठूंगी, जिससे रूठी थी वही अब नहीं रहा तो जीकर भी क्या करूंगी। भगवानने मेरा मान सुधार दिया। जल्द चिता तय्यार करो मैं भी रावजी का साथ न छोड़ूंगी। उधर लाछलदे भी सती होनेकी तय्यारी करने लगी पर उसका पुत्र राम राज्य लेनेके लिये माताओंके सती होने तक न ठहरा, उदयपुर चल दिया। माताने उसे श्राप दिया कि राम! तेरे लिये हमें जोधपुर छोडकार यहां दिन काटने पड़े और तू हमें छोड़कर जाता है इससे तू और तेरी सन्तान कभी मारवाड़का राज्य न करेगी सदा बाहर रहेगी।

चिता तय्यार होते होते यह खबर दूर तक फैल गई कि रूठीरानी भी पतिके पीछे सती होतीहै। चारचार पांचपांच कोससे लोग सतीके दर्शन करने दौड़े। सब हाथ जोडकर कहते थे—सती माता। तू धन्य है। सच्ची सती इस कलियुगमें तूही है। धन्य है तू और तेरे मातापिता। यह मेवाड देश भी धन्य है जिसे तू सती होकर पवित्र करती है। लाछलदे! तू भी धन्य है!

चिता तय्यार होगई, बाजे बजने लगे। दोनो सतियां घोड़ों पर चढ़कर बाजारोंसे निकलीं, रुपये और गहने लुटाती जाती थीं। चिता पर पहुचकर दोनो आमने सामने बैठीं और पतिकी पगडी बीचमें रखली। पर लांपा अर्थात् आग देनेवाला कोई नहीं था, सब लोग चुप खड़े देख रहे थे। रूठीरानीका चेहरा चांदसा चमक रहा था, पर अचानक रामकी कुपात्रता याद आकर लाल होगया। उसके दग्ध हृदयसे फूलसी कोमल जिह्वाको झुलसाते हुए यह वचन निकले—"मैं तो अपने पतिसे रूठकर आई सो आई पर दूसरीकोई

लेलेती थी दूसरी रानिया भी उसीके साथ सती होजाती थीं। जो रानी कहीं दूर होती थी एक पगडी उसके पास भी भेज दीजाती थी।

खोजाई इस प्रकार सौतके पुत्रके साथ न आवे।" लाछलदे उसका यह नृसिंह रूप देखकर डरी कि कहीं उसके पुत्रको कोई कडा शाप न दे दे। उसने रूठीरानीको और बोलने न दिया और कहने लगी—बाईजी। उस कुपूतने सगी माकी ओर भी ध्यान न दिया, वह जरा ठहर जाता तो हमें पतिके पास जानेमें इतना विलम्ब न होता, आग देदेता तब चला जाता।

पतिका प्यारा नाम सुनकर उमादेको जोश आगया पतिकी प्रीति उस पर छागई। उस समय उसकी दृष्टि जिस पर पड़ती थी वही मस्त होजाता था। किसीने क्या अच्छा कहा है—

नैन छके बैना छके; छके अधर मुसक्याय।
छकी दृष्टि जापर पडे; रोम रोम छक जाय॥

फिर रूठीरानीने जरा सम्हलकर कहा—देखो, यहां कोई राठौड तो नहीं है? जैत मालौत नामका एक कंगाल राठौड मिला। वह डरता डरता आया और हाथ जोड़कर बोला—सती माता! मुझपर दया करो। मैं तो भूखा मरता मारवाड छोड़ कर यहां मेवाडमें पेट पालता हूं। उमादेने कहा—ठाकरां डरो मत, स्नान करके चितामें आग देदो, तुम राठौड हो इस लिये तुम्हें बुलाया है। उसने कहा—सती माता। आग तो मैं दूंगा पर माथलवाडा(१) डालकर बारह दिन तक कहां बैठूँगा मेरा तो घर भी इतना बडा नहीं कि जोधपुरकी रानीको दाह करके उसमें शोकको जाजम बिछाकर बैठूंगा। उमादेने यह सुनकर मुंशीको इशारा किया, उसने उसी दम रानाजीके नाम सतियोंकी ओरसे चिट्ठी लिखी कि राग हम सती किये विनाही चला गया। आप यह केलोह गांव उससे छीनकर जैत मालौत राठौडको देदे। इस तरह सतीने दस हजारकी पैदावारका गांव उस कंगाल राठौडको दिला दिया।

---

(१) शोकके लिये जाजम बिछाकर बैठना।

जेत सालीतने चिट्ठी लेकर कुछ देर न की भद्र होकर स्नान किया और चितामें आग देदी। इस प्रकार विवाह होनेके २७ वर्ष बाद उमादेका रूठना और मान उसके साथही समाप्त हुआ, चारों ओरसे धन्य धन्य की ध्वनि होने लगी।

उमाकि सती होनेकी खबर जब जोधपुर पहुंची तो सब उसे सराह कर कहने लगे कि भाटी वंश धन्य है जिसमें ऐसी राजकुमारियां उत्पन्न होती है। पतिरी रूठने पर भी जिनके पातिव्रतमें कोई फरक नहीं पड़ता। रावजीको मरे बारह दिन होने पर जेत मालीतके लिये जोधपुरसे पगड़ी आई उसने क्रिया कर्म समाप्त करके पगड़ी बान्धी, फिर उदयपुर जाकर वह चिट्ठी राना उदयसिंहको दी। उन्होंने चिट्ठी पढ़कर सिर पर रखी और केलोह का पट्टा उसके नाम लिख दिया। उसने लौटकर गांव पर अपना अधिकार कर लिया और जहां रूठीरानी सती हुई थी वहां एक पक्की छतरी बनवा दी जिसका चिन्ह अब तक बना हुआ है।

रूठीरानीकी कृपासे जिस प्रकार जेत सालीतको केलोह गांव मिला उसी प्रकार उसका शाप खाली न गया, रामको जोधपुरका राज्य न मिला। उदयसिंह और अकबरकी चेष्टा भी उसे राज्य दिलानेमें निष्फल हुई और वह विना राज्य पायेही दुःखित हो कर मरा। उसके पोते केशवदासको जो अकबर और जहांगीर के इतिहासमें केशव मारूके नाम से प्रसिद्ध है मालवेमें एक छोटी सी जागीर अमझेरा मिली थी जो सन् १८५७ ई० के गदरमें जब्त होगई।

झाली रानी स्वरूपदेका शाप भी खाली न गया। चन्द्रसेन उस समय तो जोधपुरका राव होगया था पीछे अकबरने राव मालदेव का मरना सुन कर मारवाड़ पर फौजें भेजीं। राम, रायमल और उदयसिंह बादशाहकी सेनासे जा मिले। फल यह हुआ कि चन्द्रसेनने संवत १६२२ में जोधपुर खाली कर दिया जिसे अकबरने १८ वर्ष अपने अधिकारमें रखकर संवत्

१६४०में उदयसिंहके हवालेकिया। उसके वंशके अबतक जोधपुरका राज्यकरते है। चन्द्रसेनके पोते कर्मसेनको जहांगीरने अजमेर जिले में भिनाय का परगना दिया था, उसकी औलाद वहां है। इस प्रकार रूठीरानीकी कहानी पूरी हुई। वह नहीं है उसका नाम आज साढे तीन सौ साल वीत जाने पर भी बना हुआ है।

कवीश्वरोंने सती उमादेकी प्रशंसामें जो कविता लिखी है और गीत बनाये है वह ऐसे प्रभावशाली है कि उनके पढ़नेसे अब भी हृदय उमड़ आता है। इस समय सती होनेकी रीति नहीं है तोभी उस कविताको पढकर उस समयका चित्र आंखोंके सामने खिंच जाता है। आसाजी बारहट जिसने एक दोहा पढ़कर उमा को सदाके लिये पतिके पास जानेसे रोक दिया था उस समय कोटरा गांवमें बाघा और भारेली के पास था। जब उसने रूठी-रानीके सती होनेकी बात सुनी तो कहा कि धन्य उमा। धन्य, आज तेरा मान सच्चा हुआ। उसने उसी समय १४ छप्पय बनाये और जगह जगह लिखकर प्रसिद्ध कर दिये क्योंकि उसने उमाके नाम ओर मानको अमर कर देनेकी प्रतिज्ञा की थी। वह छप्पय इस प्रकार है—

छप्पय।

गिरां सिरे गोरहर(१)—चन्दजस(२) नामो चाड़ण।
मेदपाट चीतोड—भलो जोधाण भवाडण।
नव(३) सहसी छत्र पडे—वडम(४) सागर लीलावर(५)।
आई कालाखरी(६)—सुवो राजेद मण्डोवर(७)।
सांभले(८) वात उमा सती—जादव आंगमियो(९) जलण।
मोलियो(१०) गड़े राव मालरो—वांध कण्ठ ऊठी वलण॥

---

(१) पहाडका नाम जिस पर जैसलमेरका किला है (२) अमर नाम करना (३) नौहजार गांवोंवाला (४) वडप्पन (५) महावीर या महादानी (६) छत्रु की पत्नी (७) मण्डोर (८) सुनकर (९) अङ्गीकार किया (१०) चौगा जो राजाओंके मरनेकी खबर देनेके लिये रनवासमें रानियोंके पास भेजा जाता है।

अर्थ—पहाडोंमें सिरे (उत्तम) गोरहर है जो यशको अमर करनेवालाहै और मेवाड चित्तोड़ तथा जोधपुरको खूब भरमानेवाला है। नौ हजार गांवोंका छत्र बड़प्पनका समुद्र अच्छी लीलावाला, काल पत्री आई कि, मण्डोरका राजराजेन्द्र मर गया। यह बात सुनकर जादव जातिकी सती उमाने जलना अंगीकार किया और राव मालदेवका चोरा लेकर गलेसे बांध लिया और जलनेको उठी।

रोपे काठ सुगन्ध—अगर चन्दण मलियागर।
परमल धूप कपूर—घिरत सींचे वैसन्नर(१)।
मिले कोड तेंतीस—सूर उचिस्रव साहे(२)।
करन बात अख्यात—माल राजा पड गाहे(३)।
शशिबिंब जेम ऊमां सती—कमल(४) बसे सोलह कला।
गंगेव राव रावल करन—आज करे बिहूँ(५) ऊजला।

अर्थ—सुगन्धित काष्ठ अगर चन्दन मलयागिरिको रोपकर, धूप कपूरकी सुगन्धके साथ आगमें घी सींचा। ३३ करोड़ देवताओंसे मिलकर सूर्य्यने उच्चैःश्रवा नामक अपने घोड़ेको रोका राजा मालदेवके मरनेकी बात विख्यात करनेको। चन्द्रबिंब जैसी उमा सती जिसके मस्तकमें १६ कला बसती है गंगाके बेटे (मालदेव) और रावल करण (अपने पिता) दोनोंको उज्वल करती है। २

जिकण(६) लाज हम्मीर—मुवो जूझि रिणथम्भर(७)।
जिकण लाज पातल—मुवो पावागढ ऊपर।
जिकण लाज चूँडरज—मुवो नागोर तणे सिर।
कान्हड दे जालोर—अने दूदो जैसलगिर।
वडघरां लाज राखण वडी—करन मिधू(८) खत्रवट(९)करे।
सो लाज काज ऊमां सती—मालराज कारण मरे।

अर्थ—जिस लाजसे हम्मीर चौहान लडकर रणथम्भोर पर मरा,

---

(१) अग्नि (२) रोका (३) मरा (४) मस्तक (५) दोनों
(६) जिस (७) लडकर (८) बेटी (९) क्षत्रियपन।

जिस लाजसे पातल (प्रताप) पावागढ पर काम आया, जिस लाजसे चूँडा (राठौड़) नागौर पर मरा, कान्हडदेव (चौहान) जालोर पर और दूदा भाटी जैसलमेर पर मरा, बडे घरोंकी बड़ी लाज रखनेके लिये करन (लवनकरण) की बेटी साहस करती है, उसी लाजके काज उमा सती मालराज (मालदेव)के साथ मरती है।

मरणो भय बीकम्म—खलो तज वायस खद्दो।
मरणे भय रावणह—जीवरव किरणां बद्दो।
मरणे भय जल पेस—माण दुर्योधन मुक्के[1]।
मरणे भय पण्डवां—कोट हतणापुर;मुक्के।
विकराल झाल हुय वय वसण[2]—वलेमाल[3] वैकुण्ठ वरण।
सामरे[4] काम ऊमा सती—मेडिचो[5] रचियो मरण।

अर्थ—मरनेके डरसे बीकमने क्षत्रियपना छोड़कर कव्वा खाया था, मरनेके डरसे रावणने अपने प्राणोंको सूर्य्यकी किरणोंसे बांधा था, मरनेके डरसे दुर्योधनने मान छोड़ दिया था, मरनेके डरसे पांडव हस्तिनापुरका गढ छोड़ गये थे परन्तु विकराल ज्वालामें प्रवेश करके वैकुण्ठमें मालदेवको फिर बरनेके लिये जैसलमेरवाली उमा सतीने स्वामीके वास्ते मरना रचा।

मन्दोदर मेलियोराण[6]—हे कल्लो[7] रावण।
कुन्ती पांडु नरिंद रही—वोलाय[8] विचक्षण।
कान्ह मरण गोपियां—करग[9] थम्भो नह दीधो।
कौसल्या दसरत्थ—काठ चढ़ साथ न कीधो।
पांतरी[10] इती सह[11]बडो परव—सनमुख झालां कुण[12]सहै।
पातरू[13] केम[14] मोटो परव—कथन एम[15] ऊमा कहै।

अर्थ—मन्दोदरीने रावण राजाको अकेला भेजा, कुन्ती विच-

---

१ छोडा २ वदनको वमाने (प्रवेश करनेको) लिये ३ फिर ४स्वामी ५ माड देश अर्थात् जैसलमेरवाली ६ राजा ७ अकेला ८ डबोकर ९ हाथ १० चूकीं ११ सब १२ कौन १३ चूकूं १४ कैसे १५ ऐसे।

क्षणाने भी पाण्डु राजाको डबो दिया, कृष्णको मरते हुए गोपियों ने हाथका सहारा नहीं दिया, कौसल्याने चिता पर चढ़कर दशरथ का साथ न किया ; इतनी सब बडे पर्वको चूक गईं कि सम्मुख झलोंको कौन सहे मैं कैसे ऐसे बड़े पर्वको चूकूँ इस तरह उमा कहती है।

गरुड चढौ गोबिन्द—सांड चढ़ आयो संकर।
इन्द्र चढो इणवार—पीठ एरावत मद्दर।
हस चढौ सुर जरठ—चढौ देवी सिंहवाहण।
चढ़ो सूर सपतास—चढौ अपछरा विमाणण।
सांपड़े सूर मुख सामहो—भूजवड़े को धांधडे।
सुर इता आज आयो सती—चढ़ आंजस काठां चढ़े।

अर्थ—गोविन्द गरुड पर चढ़ो, शंकर बैल पर चढकर आयो, इन्द्र अब प्रवल ऐरावत (हाथी) की पीठ पर चढ़ो, ब्रह्मा हंस पर चढो, देवी अपने बाहन सिंह पर चढो, सूर्य्य सप्ताश्व घोडे पर चढो अप्सरा विमानों पर चढो—आज इतने देवता आयो (क्योंकि) स्नान करके सूर्य्यके सम्मुख ध्रुवके बराबर अभिमान चढ़ी हुई सती चिता पर चढती है।

सझ सोले सिणगार—सतव्रत अंग अंग साहे१।
अरवावार(२) मुख ऊग—नीर गंगाजल नाहै।
चोर पहर अस चढे—केश वेणी सिर खुल्ले।
देती परदक्खणा—हंसगत राणी हल्ले।
सुर भुवन पैम पहुंता३ सरग—साम तणो मनरंजियो४।
रूसणी मालदेरावस—भटियाणी इम५ भंजियो६।

अर्थ—१६ शृङ्गार करके सतीके व्रतको अंग अंगमें लिये हुए (जिसके) मुखसे (मानो) १२ सूर्य्य उगे हैं गंगाजलसे नहाई चीर

१ पकड़े हुए (२) १२ सूरज ३ पहुंचा हुआ ४ प्रसन्न हुआ ५ इस प्रकार ६ तोडा, दूर किया।

पहनकर घोड़े पर चढके बाल और चोटी खुली हुई प्रदक्षिणा देती रानी हंसकी चाल चलती सुरभवनमें पहुंची, स्वामीका मन राजी हुआ। भट्टानीने अपना रूठना इस तरह राव मालदेवसे दूर किया।

हंस गमण राव रमण—निरमल सारंग नैणी।
इम्रत वैण सबजाण—वदन चन्दा अह वेणी।
पतंवरता पदमणी—सील सुन्दर सतवत्ती।
लछण महा लच्छिमी—जिसी गंगा पारवत्ती॥
वड सती माल चाढल वडम—जीव अंग करती जुवा¶।
झिलती झाल आठूं दिसा—हार कण्ठ जू जू* हुआ।

अर्थ—हंस जैसी चलनेवाली रावमें रमनेवाली मृगकेसे निर्मल नैनवाली, मीठी बोलनेवाली सर्वज्ञान चन्द्रवदनी अहिवेनी पतिव्रता पद्मिनी सुशीला सुन्दर सत्यवती, लक्षणोंमें महालक्ष्मी गंगा और पार्वती जैसी, वडी सतीने मालदेवको वड़प्पन चढ़ानेके लिये जीव को अङ्गसे अलग किया, आठों दिशाकी ज्वाला झिलते हुए उसके हार और कण्ठ जुदा जुदा होगये।

सझ सचील सिनान—दान सोव्रन (१) विप्रांदे।
धारे चित निजधर्म्म—पषां(२) ऊजला करे वे(३)॥
मेट मोह मृतलोक—काठ भखण (४) मझ पेसे।
महाझाल मंगाल(५)—मांहिसिंहासण वैसे(६)॥
करकाल(७)दोप जिवालंक कारण
तवजे (८) तिण (९) वारां (१०) तणी (११)।
सुरभवन पधारे साम सूं
राणी भांगे रूसणी(१२)॥

¶ जुदा अलग * अलग अलग

(१) सोना (२) पक्ष (३) दो (४) आग (५) प्रज्वलित (६) बैठ कर (७) शरीर (८) कहते है (९) उस (१०) समय (११ के १२) रूठना

अर्थ—वस्त्र सहित स्नान करके ब्राह्मणोंको सोनेका दान देके नीज धर्म धारण किया दोनों पक्ष (सुसराल पीहर) उज्वल करनेके लीये संसारका मोह मिटकर अग्निमें घुसी (और) महाज्वाला प्रज्व-लीत करके उसमें सिद्धों कासा आसन लगाकर शरीरका दोष दूर किया। उस वक्ताका (कवि) ऐसा कहता है कि सुरभवनमें पधारकर रानीने अपने स्वामीसे रूठना मिटाया।

भंवर भ्रूहपर जाल—जाल जंघा रंभातर।
कउण पयोधर कुंभ—राख कीन चड़ जमहर१ ॥
चंपकली निरमली—भषे झाला दावानल।
वाहांडाल मृणाल—कंठहोमे सानू जल २ ॥
विधु३ वदन केस कोमल तवां४ दहवे५ जेम६ सहमफण ७।
बालिशा ८सती ऊमां विनें ९अधर बिंब दाड़म१० दसण११ ॥

अर्थ—भंवोंकि भंवरे जलाकर जांघोके रंभातरु (केले) जलाये। हाथीके कुंभस्थल जैसे कठिन कुच जलाकर राख किये। निर्मल योनिको भी दावानलको ज्वालाने भख ली। कंवलकी डालियां जैसी बांहीं और कैलास शिखर जैसे उज्वल कंठोंको होम किया। चन्द्रमासा मुख और वासुकि नाग जैसे कोमल केश जलाये उमा सतीने बिंबाफल जैसे होंठ और अनार जैसे दांतोंको जलाकर भस्म किया।

होम हंस गत चाल—होम सारंगह१२ लोचण।
सुंद होम सरीर—होम सोव्रन्न १३ महाव्रन१४।
कंठ होम कोयल्ल—गात होमे चल१५ गंवर१६।
भ्रूह होम त्रिहुं१७ भंवर—चीर होमे पाटंबर ॥

---

१ आग २ कैलास जैसे ३ चन्द्र ४ तिनको ५ जलाये ६ जैसे ७ हजार फणवाला वासुकी नाग ८ जलाया ९ दोनों १० अनार ११ दान्त १२ हिरन १३ सोना १४ रंग १५ चाल १६ हाथी १७ दोनों

बत्तीस लक्षण गुण रूप बहण त्यारांं† अंतर दाख ‡तण।
होमतां* निहु§ मेला = हुवा सीलमाण लज्जा मघण॥

अर्थ—हंसगतिचालको होमकर मृगोंकेसे लोचनको होमा सुन्दर शरीर होमा, सुन्दर महावरण (रंग) होमा। कोयल का सा कंठ होमा हाथी जैसा चलनेवाला गात होमा। दोनों भवें भौंरे जैसी होमी, रेशमके चीर भी जलाये। ३२ लच्चण, गुण, अपार रूपको उनके अन्तर कहते होमते हुए ये तीनों (अर्थात्) शील मान और सघन लज्जा भी इकट्ठे होगये थे।

नमि बंदो १ नह कियो—नमि छंदो २ नह कीधो।
नमि नलियो सुहाग—नमि आदर नह लीधो॥
नमि न कीधो नेह—नमि संतोष न पायो।
नमि न लागी पाय—माण एकोज उपायो ३॥

मेलाय ४ नसकियो मालदे जुग सह ५ जीतो पुरुष जिण ६।
तद ७ सधर ८ माण ऊमां तणो ९ रहीयो जेम १० फणेन्द्रमिण॥

झुककर नमस्कार नहीं किया झुककर अधीनता नहीं की। झुककर सुहाग न लिया और न झुककर आदर लिया झुककर नेह नहीं किया न झुककर संतोष पाया। झुककर पावोंसे न लगी (क्योंकि उसने) एक मान जो संपादन किया था उसको माल देव जैसा पुरुष भी नहीं छुडा सका जिसने सब जगतको जीत लिया था। तब ऊमाका प्रबल मान (वासुकि) नागकी मणिकी तरह (ऊंचा) रहा।

माण नेह भंजणो—माण छंदो जड तोड़ण।
माण करण वैराग—माण बर नार बिछोडण॥

¶बहुत †तिनके ‡कहना *होमते हुए §तीनों =एकत्र

१ नमस्कार २ खुशामद, अधीनता ३ पैदा किया, कमाया ४ रखाना, छुडाना ५ सब ६ जिसने ७ तब ८ दृढ़, अखड, प्रबल ९ का १० जैसे।

माण वेध घर गमण—माण सज्जन होय दुर्जन।
माण पेम अवहरण—माण अवधूतां लच्छन॥

सो ग्रहे माण उमा सती तैं१ सत राखे माण तण२।
मेले३ न माण राव मालसूं जली मान जलते जलण॥

अर्थ—मान नेहको तोड़नेवाला है मान अधीनताकी जड़ उखाड़नेवाला है। मान बैराग करनेवाला है मान वरवधूको छुडाने वाला है मान घर जानेमें बाधा डालनेवाला है मानसे सज्जन दुर्जन होजाते है मान प्रेमका हरनेवाला है मान अवधूतोंका लक्षण है। सो वही मान है उमा सती तूने ग्रहण किया और उसका सत रखा है। राव मालदेवसे भी उस मानको न छोड़ा और जलते जलते भी अपने मानको लेकर जलगई॥

पेस मज्झ पावक्क—हुई जमहर नख चख जल।
क्रम चौरासी तणा—करे तण्डल४ भूमण्डल।
होमदहण बिच होत—देह वाली दावानल।
धुके धोम धडहड़ण—वात सुख सहंस वलोवल५।
सामहा६ जोड उमा सती—देव भाण दिस हाथ दुवे।
मालराव तणो सांभल मरण—होय अङ्गारा राख हुवे॥

अर्थ—अग्निमें प्रवेश करके नखसे शिखा तक जलकर राख हो गई, चौरासी योनिके कर्मोंको भूमण्डलमेंही टुकड़े टुकड़े करके आगमें होमते हुए देहको दावानलमें जला दिया। अग्निसे धड़-धड़ाकर धुआं उठा। हजारों मुखोंसे यह बात चौतरफ़ फैलगई कि उमा सती सूर्यदेवताके सामने दोनो हाथ जोड़कर राव मालदेव का मरना सुनकर अंगारे होकर राख होगई।

---

१ तू २ का ३ छोड़कर रखकर। ४ टुकड़े टुकड़े ५ चारों तरफ़ ६ सामने

ऊमाजी बारहटके बनाये हुए छप्पय—

वप१ बांकम२ वीटियो—तेज झलहल सूरातन।
मन धारण व्रत मुनो—महा अहंकार सहज मन।
भृकुटी चढ ब्रूहार—अटल त्रिसलोन उतारे।
आग झाल चख अरुण—निमख नह कोप निवारे।
उधारे बोलइल पर अमर—पतराखे सतजत पणो।
कोजो कोई ऊमा कली—राणीजाई रूसणो॥

अर्थ—शरीर बांकपनसे घिरा हुआ है सूरापनका तेज मनमें झलक रहा है मनमें मुनिकी वृत्ति (मौन) धारे हुए है मन और स्वभावमें बड़ अहङ्कार है भृकुटी भौवों पर चढ़ी है ललाटके अटल ३ सल उतरे हुए नहीं हैं अग्निकी ज्वालाके समान आंखें लाल हो रही है चणभर भी कोपको दूर नहीं किया है अपने बोल अमर करके पृथ्वी पर पूरे किये हैं और सत जत (जितेन्द्रियपने) की पत रखी है ऐसी उमाकी तरहसे कोई रानीजाई (रानी) रूठनाकरना।

धरा माडे३ धिन धिन्न—वंस धिन सोम वखाणो।
जात धिनों जादम—सहर धिन धिन जैसाणे४।
धिन पित मात धिनौ—जिकां घर देवी जनमिय।
गढ धिन धिन गोरहर—राय आंगण उण रमिय॥
धिन धिन ऊमादे धीवड़ी५—वडपण सींग वधाड़िया६।
सासरो पीहर मा माण सहु७—तीन पखांनू तारिया॥

अर्थ—माडकी धरती धन्य है चन्द्रवंशको धन्य कहो जादवकी जातिको धन्य है जैसलमेर शहर धन्य है धन्य पिता धन्य माता, जिनके घरमें देवी जन्मी। गढ़ धन्य है गोरहर (पहाड) धन्य है जिनके राय आंगनमें वह खेली है। उमादे वड़ी वेटी धन्य है धन्य

१ शरीर २ बांकपन ३ जैसलमेरका देश ४ जैसलमेर ५ वेटी ६ बढ़ाया ७ सब

है जिसने बड़प्पनका सींग बढाया सुसराल, पीहर और ननसालके तीनो घरानोंकी तारा।

घुरिया१ ढोल निघाय२—गहरघण घोर नगारां।
अमरवृन्द आणन्द—समर३ हर हर सुख सारां।
व्रषा पहुप बरसतां—वुही चढ बैस विमाणां।
बसे बास बैकुण्ठ—क्रीत कथ हुई ठिकाणां।
पटाझर४ आप छूटा पटां—सुगन्दरे रूप सगत्तरे५।
सुलकते६ बदन राव मालूसूं—मिलिया महल सुगत्तरे७॥

अर्थ—तीन डंकोंसे ढोल बजे, घनघोर नौबतें बजीं देवताओंमें आनंद हुआ सब मुंहसे हर हर करने लगे फूलोंकी वर्षा होते हुए विमानों पर चढ़कर चली बैकुण्ठमें जाकर बसी कीर्त्ति की कथा ठौर ठौर हुई, मस्त हाथीके समान खुलेकेशोंसे शक्तिके रूप से मुलकते (हसते) मुंह मुक्तिके महलमें राव मालदेवसे जाकर मिली।

दोहा।

ऊसां सतव्रत आगले—भई सती भटियाण।
उभै दुरंग उजवालिया—जोधाणे जैसाण।*

---

१ बजे २ चोट ३ स्मरण करके ४ मस्त हाथी ५ शक्ति देवी ६ हंसती मुसकुराती ७ मुक्ति।

*यह सब कवित्त बहुत अशुद्ध लिखे हुए मिले थे और जिन चारणोंको जबानी याद थे वह भी अशुद्धही पढते थे इससे इनका शुद्ध करना बडा कठिन होरहा था। परन्तु कविराज श्रीमुरारीदानजी बारहट श्रीकृष्णसिंहजी दधिवाडिया करनीदानजी और मोतीदानजी किनयाका अत्यन्त धन्यवाद है कि इन महाशयोंसे इन को शुद्ध करने और अर्थ करनेमें बडीही सहायता मिली है क्योंकि इस डिंगल भाषाके यही विद्वान है।

अर्थ—उमा भट्टानी सतव्रतको आगे लेकर सती हुई (उसने) जोधपुर और जैसलमेरके दोनो कुलोंको उजला किया ।

समाप्त ।

॥ रानी भवानी ॥

बाबू गङ्गाप्रसाद दु४ ।

॥ श्रीः ॥

रानी भवानी।

काशी-निवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित।

कलकत्ता।

८७ मुक्तारामबाबूष्ट्रीट, भारतमित्र प्रेसमें
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित और
प्रकाशित।

सन् १८०४ ई०।

भूमिका ।

यह छोटीसी पुस्तक इतिहासप्रेमी पाठकोंके मनोविनोदके लिये लिखी गई है। इसके लिखनेमें मुझे जिन पुस्तकोंसे सहायता मिली है, मैं उनके लेखकोंका हृदयसे धन्यवाद करता हूं। यदि मेरी इस अठारहवीं भेटको रुचिपूर्वक ग्रहणकर, पाठकोंने मुझे उत्साहित किया, तो इस ढङ्गकी और भी पुस्तके लिखनेकी मैं चेष्टा करूंगा।

काशी।
७ अगस्त सन् १८०४।

गङ्गाप्रसाद गुप्त।

रानी भवानी ।

प्रथम परिच्छेद ।

हमारे माननीय पाठकोंमेंसे बहुतोंने रानीभवानीका नाम सुना होगा । जिस रानीभवानीका नाम इतिहासके पृष्ठ पृष्ठ पर सोनेके अक्षरोंमें लिखा है ; जिस रानीभवानीका कीर्तिस्तम्भ मुर्शिदाबाद के अन्तर्गत 'बडनगर' नामक स्थानमें अबतक विद्यमान है ; जिस रानीभवानीके नामको लोगोंने प्रातःस्मरणीय मान लिया है ; हम समझते हैं कि उस पुण्यवती सती साध्वी रानीभवानीका नाम हमारे पाठकोंने अवश्य सुना होगा । आज हम उसी जगद्विख्यात रानीकी संक्षिप्त जीवनी अङ्गरेजीकी Indian Women और बंगलाकी 'आर्य्यमहिला' पुस्तकके आधार पर लिखकर अपने प्रिय पाठकोंके आगे उपस्थित करते हैं ।

राजशाही जिलेके अन्तर्गत 'छातिम' नामक गांवमें आत्माराम चौधरी नामक एक दरिद्र ब्राह्मण रहता था । यद्यपि ब्राह्मण दरिद्र था तथापि अपना उदर पोषण करनेके लिये वह कभी भीख मागने नहीं निकलता था । उसके पास जो थोडीसी जमीन थी, उसीकी आयसे वह बड़े कष्टके साथ समय व्यतीत करता था । ऐसी दशामें अर्थाभावसे बेचारे ब्राह्मणको अपनी गृहिणीके सहित कभी कभी दो दो दिन निराहार रह जाना पड़ता था ।

कहा है कि विपत्तिके समय धैर्य्यही एक मात्र अवलम्ब है । जो लोग विपद पडने पर उस जगत्पालक परमेश्वर पर विश्वास कर धैर्य्य धारण करते हैं, उनका उद्धार वह विपदहारी परमेश्वर, उस विपत्तिसे अवश्य करता है । इसलिये यद्यपि आत्माराम चौधरी बहुत दरिद्र था ; यद्यपि उस बेचारेको अर्थाभावसे अपनी स्त्रीके

सहित दो दो दिन भूखा रह जाना पडता था, और यद्यपि उसका दारिद्र्य देखकर कोई उससे बात भी नहीं करता था, तथापि वह केवल ईश्वर पर अटल और दृढ विश्वास रखता था, और समय समय पर उसीको अपने दुःखकी बात सुनाया करता था। कभी कभी उसकी स्त्री उससे नवाबकी नौकरी कर लेनेको कहा करती थी, किन्तु आत्माराम इस बातको स्वीकार नहीं करता था। जब उसकी स्त्री उसे बहुत समझाती बुझाती तो वह कहता,—"जब सुसमय आवेगा तब आपही नौकरी मिल जावेगी। इस समय मेरा दुःसमय है। ऐसी अवस्थामें किसीके निकट जाना अथवा किसीसे किसी बातके लिये प्रार्थना करना अनुचित है।"

स्वामीकी बात सुनकर पतिव्रता गृहिणी चुप होजाती और मनही मन अपने भाग्यको धिक्कारने लगती। किन्तु सच यह है कि आत्मारामको म्लेच्छकी नौकरी स्वीकार न थी। जिन म्लेच्छोंने भारतवासियोंको बडे बडे दुःख दिये थे; जिन म्लेच्छोंने उनके धर्मके बिगाडनेकी बराबर चेष्टा की थी; जिन म्लेच्छों ने धर्मभीरु हिन्दू-रमणियोंका सतीत्व नष्ट करनेके लिये अनेक अत्याचार—अनेक उपद्रव किये थे; उनका दास बननेकी इच्छा आत्मारामको नहीं थी।

कविके इस कथनके अनुसार—"सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्, चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च" किसीका समय सदा एकसा नहीं बीतने पाता। ईश्वरभक्त आत्मारामको विश्वास था कि किसी न किसी दिन उसका भाग्यचक्र अवश्य पलटा खायगा;—उसको निश्चय था कि जिस भगवानने इस जगतमें उसे उत्पन्न किया है, वह [illegible] न किसी दिन उस पर अवश्य दयालु होगा। इसी कारण [illegible] तरहके कष्ट सहकर आत्माराम जैसे तैसे समय [illegible]।

परन्तु ईश्वरका [illegible] मङ्गल-मय भगवान [illegible] सुखों बाधा

कौन देसकता है ?—इसी समयमें ऐसीही दुरावस्थामें भगवद्भक्त आत्मारामकी पत्नी गर्भवती हुई। यह देख आत्मारामने अपने मनमें कहा—"हाय! हम लोगोंके साथ दुःख भोगनेके लिये एक और प्राणी आरहा है। हमलोग तो भूखों मरतेही है, बेचारे बच्चेकी न जाने क्या दशा होगी। मातः अन्नपूर्णे! हमारे भाग्यमें अन्न नहीं था तो क्या हुआ; देखना—इसको भी हमारी तरह कष्ट न उठाना पड़े।"

पाठक! जान पड़ता है कि आत्मारामकी बात स्वीकृत हुई; जान पड़ता है कि बेचारे ब्राह्मणकी करुण प्रार्थना माता अन्नपूर्णा के कानों तक पहुंच गई। उसी समयसे धीरे धीरे आत्मारामका दारिद्र्य-दुःख घटने लगा-धीरे धीरे उसकी आय बढ़ने लगी। सारांश यह कि शीघ्रही आत्मारामकी सांसारिक अवस्था बहुत कुछ बदल गई।

यथा समय आत्मारामकी पत्नीके गर्भसे एक अत्यन्त रूपवती कन्या उत्पन्न हुई। कन्याको देखतेही क्षणभरके लिये आत्माराम की पत्नीको परमानन्द प्राप्त हुआ—क्षणभरके लिये वह अपना सब दुःख भूल गई। परन्तु तत्कालही उसको अपनी दरिद्रताकी बात याद आई। अश्रुपूर्ण नेत्रोंको पोंछकर उसने कहा—"मा अन्न-पूर्णे! क्या इस सोनेकी पुतलीको भूखों मारनेहीके लिये तू ने इस जगतमें भेजा है?"

* * * * * * *

आठवें महीने कन्याका अन्नप्राशन हुआ। आत्मारामकी गृहिणी ने कन्याकी अलौकिक सुन्दरता देखकर उसका नाम भवानी रक्खा। प्रियपाठक! याद रखियेगा,—छातिम—ग्राम-निवासी दरिद्र आत्माराम चौधरीकी कन्या भवानीही इतिहास-प्रसिद्ध रानीभवानी हुई थी। क्योंकर दरिद्र निःसहाय आत्मारामकी लावण्यमयी कन्या अतुल ऐश्वर्य्यकी अधिकारिणी हुई यह बात आगे लिखी जायगी।

दूसरा परिच्छेद।

नाटोरमें कामदेवराय नामक कोई ब्राह्मण रहता था। उसके रघुनन्दन और रामजीवन नामक दो पुत्र थे। कामदेवने, "पुटिया" के जमींदार दर्पनारायणके यहां, अपने बडे लडके रघु-नन्दनको एक सामान्य काममें लगा दिया। रघुनन्दन बडा बुद्धिमान युवक था। कर्म्म दक्षताके प्रभावसे, उसने बहुत शीघ्र दर्पनारायण की दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट करली। दर्पनारायणने, जांचके लिये रघुनन्दनको कठिन कठिन कामोंमें लगाना आरम्भ किया। बुद्धि-मान रघुनन्दन भी उन सब कामोंको थोडी थोडी देरमें उत्तमतासे समाप्त कर, उत्तरोत्तर उनका प्रीतिभाजन बनता गया। अन्तमें, रघुनन्दनको योग्यता और कार्य्यपटुतासे प्रसन्न होकर, दर्पनारायण ने मुर्शिदाबादके नवाबकी सरकारमें उसे अपनी ओरसे नौकर रखवा दिया।

रघुनन्दन बहुत सीधासादा और मिष्टभाषी पुरुष था। जिस किसीके साथ केवल एकबार उससे बातचीत होती, वह उसे स्नेहदृष्टि से देखने लगता। इसी कारण, थोडेही दिनोंमें मुर्शिदाबादके नवाब के यहां के अनेक मनुष्य उसके पक्षपाती होगये, वहांके अनेक कर्म्म चारी उसे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। यहां तक, कि धीरे धीरे, नवाबके यहांके बडे बडे पदाधिकारियोंका भी प्रीतिभाजन वह बन गया।

उक्त कर्म्मचारियोंमेंसे कानूनगो रघुनन्दनको बहुत प्यार करने लगा। रघुनन्दनके साथ उसकी ऐसी मैत्री बढी, कि वह अपने नामकी मुहर भी उसके पास रखने लगा। नवाबके यहांके जिन कागजों पर इस मुहरका चिन्ह नहीं रहता था, वह कागज विश्वा-सनीय नहीं समझे जाते थे। अतएव वह मुहर केवल विश्वासी लोगों के पास रहने पाती थी।

जिस समय की बात हम कह रहे हैं, उस समयके मुसल्मान

अधिकारियोंका स्वभाव बहुतही बिगड़ा हुआ था। वह विलासी हो गये थे; स्वेच्छाचारी हो गये थे;—राज्य सम्बन्धी कामोंमें उनका मन नहीं लगता था। इधर दिल्लीके बादशाहोंका बल दिनोदिन घटता जाता था; दिनोदिन उनका प्रताप-सूर्य्य अस्त होता जाता था; अतएव इन विलासी शासन कर्त्ताओंके दमन करनेकी शक्ति उनमें नहीं थी! ऐसी दशामें केवल कर लेकरही उसको सन्तुष्ट होना पड़ता था। वह जिस प्रदेशके शासनकर्त्ताके यहांसे उपयुक्त कर नहीं पाते थे, उसे पदच्युत करके, उसकी जगह दूसरेको नियुक्त करते थे। मतलब यह कि केवल कर देनेहीमें दिल्लीके बादशाहके अधीन थे; शासन-सम्बन्धी बातोंमें वह बिलकुल स्वाधीन थे।

उस समय मुर्शिदाबादके नवाबने, भोग विलासमें मत्त होकर बहुत धन व्यय किया था; अतएव दिल्लीको जो नियमित कर भेजा जाता था, वह बन्द होगया। इससे बादशाह बहुत क्रुद्ध हुआ; नवाबको पदच्युत करने की उसकी इच्छा हुई। उस समय बचावका कोई दूसरा उपाय न देख, नवाबने आय व्ययका एक बनावटी हिसाब भेजकर, उपस्थित विपत्तिसे अपनी रक्षा करनेका निश्चय किया।

परन्तु कानूनगोही सब हिसाबकिताबका रखनेवाला था; उसकी मुहरके बिना कोई कागजपत्र सत्य और विश्वासनीय नहीं समझा जाता था। इसलिये नवाबने उसको आय व्ययका एक झूठा लेखा तय्यार करनेकी आज्ञा दी। परन्तु कानूनगो बड़ा धर्म्मभीरु था; उसने स्पष्ट कह दिया, कि यह काम मुझसे नहीं होगा। यह सुनकर, नवाब, बहुतही चिन्तित और व्यथित हुआ। अनुसन्धान करने पर उसको मालूम हुआ कि रघुनन्दनके पास कानूनगोके हस्ताक्षरकी मुहर रहती है। यह जानकर उसने एकान्त में रघुनन्दनको बुलवाया, और उसे सब बातें साफ साफ समझाईं फिर कहा—"देखो! मैं ऐसे कष्टमें पड़ा हूं। मेरे पदच्युत होनेसे भी कानूगोको कोई लाभ नहीं होसकता। मैं उसका अन्नदाताहूं—

प्रति पालक हूं; तिस पर भी उसने इस विपत्तिके समय मेरी रक्षा करना स्वीकार नहीं किया। क्या तुम्हारे शास्त्रमें ऐसाही लिखा है? क्या थोड़ा अधर्म करके अन्नदाता प्रतिपालककी रक्षा करना पाप है? जोहो मैं तुमको एकलाख रुपया दूंगा। तुम मेरे साथ यह उपकार करके, मेरे प्राणकी, मेरे मानकी, और मेरे धनकी रक्षा करो।"

रघुनन्दनने कुछ सोचकर कहा—"जहांपनाह! मुझे आप रुपयेका लालच न दिखाइये। मैं इस समय न्यायदृष्टिसे आपकी बातोंकी विवेचना करता हूं। मैं इस समय पर सोचता हूं, कि यदि मिथ्या कागज पर मुहर करदी जायगी, तो एक तो आपका काम निकल जायगा—दूसरे कानूगोकी भी कोई हानि नहीं होगी। अस्तु जो हो, मैं आपके साथ यह उपकार अवश्य करूंगा।"

इसके अनुसार रघुनन्दनने बनावटी हिसाब तय्यार करके दिल्ली भेज दिया। नवाब साहब बच गये। निर्लोभी रघुनन्दन को प्रतिज्ञानुसार एक लाख रुपया नकद देकर, "राय बहादुर" को उपाधिसे उन्होंने भूषित किया, और अपना दीवान बनाया।

सन् १७०७ ई० में बनगाछी का कर बाकी पडा। रघुनन्दन ने वही रुपया देकर उक्त जमींदारी खरीद ली, और उसे अपने भाईको दे दिया। १७०८ ई० में, राजशाहीके जमींदार राजा उदितनारायणकी मृत्यु पर रामजीवन उनकी सब सम्पत्तिका अधिकारी हुआ। केवल नस्करपुर और पूंटियाकी जमींदारी उसके अधिकारसे बाहर रही। इस प्रकार बहुत बड़ी जमींदारी पाकर जिसकी वार्षिक आय डेढ़ करोड रुपये होती थी, रामजीवन, मुर्शिदाबादके नवाबको ५२ लाख रुपया सालाना कर देने लगा। नवाबने बडे समारोहके साथ, उसको राजाकी उपाधि दी। यही रामजीवन परमप्रसिद्ध रानी भवानीका श्वशुर था।

राजा रामजीवनके दो पुत्र थे। पहला लडका कुमार कालू

बचपनमें मर गया था। दूसरे पुत्र रामकान्तके विवाहके लिये बहुत दिनोंतक कन्याका अनुसन्धान करनेके पश्चात राजा रामजीवनने "छातिम" गांवके निवासी उसी आत्माराम चौधरीकी कन्या भवानीके साथ उसका विवाह कर दिया।

विधिलिपि पूरी हुई। दरिद्रकी कन्या राजाकी बहू बनी। आत्माराम चौधरी और उसकी स्त्रीने सोचा—"माता अन्नपूर्णाने सचमुच हमलोगोंके कातर हृदयकी करुणापूर्ण प्रार्थना सुनली।" अड़ोस पड़ोसके लोग कहने लगे—"भवानी रानी होगई। इसी लिये तो परमेश्वरने उसे ऐसा रूप रङ्ग दिया था। अच्छा हुआ। बेचारी पिताके घर भूखों मरती थी; अब वहां उसको भरपेट भोजन तो मिलेगा। पतिके यहां वह सुखसे रह भी सकेगी। और वहां उसको परिश्रम भी कम करना पड़ेगा।"

सन् १७३० ई०में राजा रामजीवन परलोकको सिधारा। रामकान्त जिसकी अवस्था उस समय १८ वर्षकी थी, राजा हुए। भवानी, विधिलिपिके अनुसार रानी हुई। रानीभवानीकी उमर उस समय १५ बरसकी थी।

तीसरा परिच्छेद।

जिस समय राजा रामजीवन जीवित था, उस समय रामकान्त बड़ाही शिष्ट और शान्त था; उससमय उसके शरीरको किसी प्रकारके दोषने स्पर्श नहीं किया था; उस समय भवानी भी बहुत सुखी थी। परन्तु विधाताकी कैसी अपूर्व्व लीला है! राजा रामजीवनके परलोक होतेही, चारों ओरसे लोगोंने उसको आ घेरा। कोई मित्र बनकर, कोई आत्मीय बनकर, कोई हितोपदेशक बनकर, राज रामकान्तके पास आगया। रामकान्त उस समय युवक था, सांसारिक बातोंका उस समय उसको कुछ भी ज्ञान नहीं था।

प्रति पालक हूं; तिस पर भी उसने इस बिपत्तिके समय मेरी रक्षा करना स्वीकार नहीं किया। क्या तुम्हारे शास्त्रमें ऐसाही लिखा है? क्या थोड़ा अधर्म करके अन्नदाता प्रतिपालककी रक्षा करना पाप है? जोहो मैं तुमको एकलाख रुपया दूंगा। तुम मेरे साथ यह उपकार करके, मेरे प्राणकी, मेरे मानकी, और मेरे धनकी रक्षा करो।"

रघुनन्दनने कुछ सोचकर कहा—"जहांपनाह! मुझे आप रुपयेका लालच न दिखाइये। मैं इस समय न्यायदृष्टिसे आपकी बातोंकी विवेचना करता हूं। मैं इस समय पर सोचता हूं, कि यदि मिथ्या कागज पर मुहर करदी जायगी, तो एक तो आपका काम निकल जायगा—दूसरे कानूगोकी भी कोई हानि नहीं होगी। अस्तु जो हो, मैं आपके साथ यह उपकार अवश्य करूंगा।"

इसके अनुसार रघुनन्दनने बनावटी हिसाब तय्यार करके दिल्ली भेज दिया। नवाब साहब बच गये। निर्लोभी रघुनन्दन को प्रतिज्ञानुसार एक लाख रुपया नकद देकर, "राय बहादुर" की उपाधिसे उन्होंने भूषित किया, और अपना दीवान बनाया।

सन् १७०७ ई० में बनगाछी का कर बाकी पडा। रघुनन्दन ने वही रुपया देकर उक्त जमींदारी खरीद ली, और उसे अपने भाईको दे दिया। १७०८ ई० में, राजशाहीके जमींदार राजा उदितनारायणकी मृत्यु पर रामजीवन उनकी सब सम्पत्तिका अधिकारी हुआ। केवल नस्करपुर और पूंटियाकी जमींदारी उसके अधिकारसे बाहर रही। इस प्रकार बहुत बडी जमींदारी पाकर जिसकी वार्षिक आय डेढ करोड रुपये होती थी, रामजीवन, मुर्शिदाबादके नवाबको ५२ लाख रुपया सालाना कर देने लगा। नवाबने बड़े समारोहके साथ, उसको राजाकी उपाधि दी। यही रामजीवन परमप्रतिष्ठा रानी भवानीका श्वशुर था।

राजा रामजीवनके दो पुत्र थे। पहला लड़का कुमार कालू

बचपनमें मर गया था। दूसरे पुत्र रामकान्तके विवाहके लिये बहुत दिनोंतक कन्याका अनुसन्धान करनेके पश्चात राजा रामजीवनने "छातिम" गांवके निवासी उसी आत्माराम चौधरीकी कन्या भवानीके साथ उसका विवाह कर दिया।

विधिलिपि पूरी हुई। दरिद्रकी कन्या राजाकी वहू बनी। आत्माराम चौधरी और उसकी स्त्रीने सोचा—"माता अन्नपूर्णाने सचमुच हमलोगोंके कातर हृदयकी करुणापूर्ण प्रार्थना सुनली।" अड़ोस पड़ोसके लोग कहने लगे—"भवानी रानी होगई। इसी लिये तो परमेश्वरने उसे ऐसा रूप रङ्ग दिया था। अच्छा हुआ। बेचारी पिताके घर भूखों मरती थी; अब वहां उसको भरपेट भोजन तो मिलेगा। पतिके यहां वह सुखसे रह भी सकेगी। और वहां उसको परिश्रम भी कम करना पड़ेगा।"

सन् १७३० ई०में राजा रामजीवन परलोकको सिधारा। रामकान्त जिसकी अवस्था उस समय १८ वर्षकी थी, राजा हुए। भवानी, विधिलिपिके अनुसार रानी हुई। रानीभवानीकी उमर उस समय १५ बरसकी थी।

तीसरा परिच्छेद।

जिस समय राजा रामजीवन जीवित था, उस समय रामकान्त बड़ाही शिष्ट और शान्त था, उससमय उसके शरीरको किसी प्रकार के दोषने स्पर्श नहीं किया था; उस समय भवानी भी बहुत सुखी थी। परन्तु विधाताकी कैसी अपूर्व्व लीला है! राजा रामजीवन के परलोक होतेही, चारों ओरसे लोगोंने उसको आ घेरा। कोई मित्र बनकर, कोई आत्मीय बनकर, कोई हितोपदेशक बनकर, राज रामकान्तके पास आगया। रामकान्त उस समय युवक था, सांसारिक बातोंका उस समय उसको कुछ भी ज्ञान नहीं था।

इसी लिये उसने उन शठोंका विश्वास किया, और सचमुच उसको अपना मित्र समझा। वह सब दुष्ट, अवसर देखकर अपने अपने लाभ और स्वार्थसाधनके उपाय सोचने लगे। उस विशाल राजमहलमें, जिसमें कि राजा रामकान्त रहा करता था, केवल दो मनुष्य उसके सच्चे हितैषी थे। एक पतिप्राणा रानी भवानी; दूसरा विश्वासी दीवान दयाराम।

दयारामने, राजा रामजीवनके समयमें, पहले एक सामान्य भण्डारीके पद पर नियुक्त होकर राजदरबारमें प्रवेश किया था; फिर अपनी बुद्धिमानी, निष्कपटता और स्वामिहितैषितासे, थोड़े ही दिनोंमें उसने दीवानको उच्चपदवी प्राप्त की थी। राजा रामजीवन मृत्युके समय रानी भवानी और रामकान्तसे कह गया था, कि तुम दोनों जो काम करना, उसमें दीवान साहबसे परामर्श कर लेना। राजा रामजीवन दयारामको बहुत चाहता और पुत्रकी तरह मानता था। रामकान्त भी दयारामको "भाईसाहब" कहकर पुकारा करता था। इसी दयाराम और रानी भवानीके सिवा, राजमहलमें नवीन राजा रामकान्तका सच्चा हितैषी कोई नहीं था।

राजा रामकान्त, युवावस्थाहीमें पिताकी धन सम्पत्ति पाकर, दुष्ट तथा स्वार्थी साथियोंके फेरमें पड़कर, विलासिता और इन्द्रियपरायणतामें उन्मत्त होकर, पूर्व्वसञ्चित धनको जलकी तरह बहाने लगा। रानी भवानीको उसकी इन बातोंकी खबर लगी। उसने उसे बहुत समझाया, और बारम्बार इस बातकी प्रार्थना की, कि वह बुरी चाल छोड़कर सीधी चालसे चले; परन्तु राजाकान्तने उसकी एक न सुनी। वह बहुत थोड़ी देरके लिये महलमें जाता था, और भवानीसे विशेष बातचीत नहीं करता था। भवानीने उसको बहुत समझाया बुझाया, आगा पीछा सुझाया, परन्तु रामकान्तने उसकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया।

भवानी अपने लिये सुख नहीं चाहती थी, वह स्वामीकेलिये अपने प्राण तक दे देनेको तय्यार थी। इसी कारण, जब उसने उसको सुमार्ग पर लानेका कोई उपाय न देखा, तो उसके पांवों पर सिर रखकर बारम्बार इस बातका अनुरोध करना आरम्भ किया, कि आप इन दुष्टा स्त्रियोंको एकदम त्यागकर किसी सुन्दरीके साथ अपना विवाह करलें। भवानीने उसके समझानेमें बहुत आंसू बहाये, किन्तु रामकान्तको समझमें कोई बात न आई। मानो नदीकी प्रबल धारामें तिनकेकी तरह भवानीका सब उपदेश बह गया। राजा रामकान्तको भले बुरेकी पहचान नहीं थी; उसका धन जल-स्रोतकी तरह बह रहा था, और स्वार्थी कर्मचारीगण अच्छी तरह अपना अपना पेट भर रहे थे।

बुद्धिमान दयाराम प्रायः नित्यही राजा रामकान्तको सावधान करनेकी चेष्टा किया करता था, किन्तु किसीप्रकार कृतकार्य्य नहीं होता था। एक दिन उसने राजाके मित्रोंके सामने ही, उसके कुकार्य्योंके लिये उसका तिरस्कार किया, राजाने, इस बातमें अपनेको बहुतही अपमानित जानकर, अपने मनमें कहा—"एक छोटे कर्मचारीका इतना बढ बढ़कर बातें करना अच्छा नहीं है। आजही, इसी समय, इसको अप्रतिष्ठाके साथ राजमहलके बाहर निकलवा देना चाहिये।" यह मनसूबा बांधकर, राजा रामकान्त ने, दीवान दयारामको अपमानपूर्वक राजमहलसे बाहर निकलवा दिया!

रानी भवानीके कानों तक यह बात पहुंची। जब राजा रामकान्त महलमें गया, तो उसने उनके पांव पकड़कर गिडगिडा-हटके साथ कहा—"स्वामिन्! दीवानजी हमलोगोंके सच्चे हितैषी है; उनके साथ ऐसा बरताव करना उचित नहीं हुआ। यदि "

रानी और कुछ नही कहने पाई। क्रोधमें आकर राजा राम-कान्तने कहा—"तुम लोगोंको मेरी आज्ञाके अनुसार चलना पड़ेगा न कि मुझको तुम्हारे मतके अनुसार! क्या एक नासान्ध मन्द

सबके सामने मेरा अपमान करे, और मैं सह लूं? यह तो मेरे प्राणोंके रहने तक कभी नहीं होगा।"

रानी—"महाराज! सोचिये तो, कि आप क्या थे, और क्या होगये। खजाना खाली होगया; सिपाहियोंको वेतन नहीं मिलता; उनका हिसाब कैसे चुकावेंगे? नवाबकी सरकारमें वार्षिक टैक्स कहांसे लाकर देंगे? क्या आपने इस विषयमें कुछ सोचा है? अबतक दीवानजी तय्यार थे, इसीसे मैंने इस विषयमें आपसे कुछ नहीं कहा था। दीवानजीको आपने अपराधी समझ कर निकाल दिया, तो उत्तमही किया; पर इन सब बातोंका आगापीछा भलीभांति सोच लीजिये; तब निश्चिन्त होकर अपने बन्धुओंमें आनन्द मनाइये। बस, मेरी केवल इतनीही प्रार्थना है।"

राजा रामकान्तने बुद्धिमती रानीकी बात पर बिलकुल विचार नहीं किया। उसने कहा—"इन बातोंके लिये तुम्हें चिन्ता करनेका प्रयोजन नहीं है; तुम निश्चिन्त रहो। अपना काम मैं स्वयं कर लूगा। तुम लोगोंको इन बातोंके लिये चिन्तित होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

रानी भवानी और क्या कहती? प्रतिदिन वह अनेक प्रकारसे राजाको समझाती थी; परन्तु उसकी बातोंपर कानही नहीं दिया जाता था। पहले राजा साहब, दीवान दयारामके भयसे, खुल्लमखुल्ला ऐशमें नहीं डूबे रहते थे, किन्तु अब तो रात दिन साथी मित्रों और वेश्याओंके जमघटेमें बैठे रहने लगे। बेचारी रानी भवानीको चैन नहीं था। वह प्रत्येक समय पतिके मङ्गलके लिये ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थी।

चौथा परिच्छेद।

किन्तु क्या दयाराम निश्चिन्त था? क्या उसने राजा रामकान्त की ऐसी दुरवस्था देखकर, उसकी रक्षाका कोई उपाय नहीं सोचा? राज दरबारसे अपमानित होकर, रामकान्तकी कड़वी बातोंको सुनकर, दुष्टोंके सामने तिरस्कारपूर्वक निकाले जाकर, अपने अपमानका, अपने दुःखका—उसने क्या बदला लेना निश्चय किया? नहीं, कदापि नहीं। दयाराम ऐसा आदमी नहीं था; वह रामकान्तका सच्चा हितैषी था। उसकी खराबी देखकर, वह बराबर उसकी रक्षाका उपाय सोच रहा था। रामकान्तके व्यवहार से वह दुःखित नहीं हुआ; न उसने बदलाही लेनेका विचार किया। अन्तमें उसने उसकी, उसके धनकी, उसके बाप दादोंकी प्रतिष्ठाकी, और उसके राज्यकी रक्षाका एक दूसराही उपाय सोच कर मुर्शिदाबादकी ओर यात्रा की।

मुर्शिदाबाद पहुंचकर दयाराम नवाब अलीवर्दीखांसे मिला। नवाबने दयारामको राजा रामजीवनका दीवान जानकर बड़े आदरसे उससे बातचीत करना आरम्भ किया। अलीवर्दीखांने यह भी पूछा कि राजा रामजीवनकी मृत्युके पश्चात् उनका पुत्र किस प्रकार राजकार्य्य चलाता है।

अवसर देखकर दयारामने कहा—"राजा रामजीवनका पुत्र बडा नालायक है। युवावस्थाकी तरङ्गमें वह व्यर्थ धन लुटाये देता है। केवल शिरपेंचके लिये उसने बेमतलब दो लाख रुपये खर्च कर डाले। पिछले वर्ष इसी फजूलखर्चीके कारण वह आपका कर न दे सका था। इस वर्ष भी उसके कुछ देनेकी आशा नहीं है।"

नवाब अलीवर्दीखां यह समाचार सुनकर बहुत क्रुद्ध हुआ। पूछने लगा—"क्या राजा रामजीवनके खान्दानमें राजा होनेके क़ाबिल कोई दूसरा शख्स नहीं है?"

दयाराम—"है; राजा-रामजीवनका भतीजा देवीप्रसाद बड़ा बुद्धिमान और कार्य्यकुशल है। यदि उसके हाथमें राज्यका भार दिया जायगा तो मैं आशा करता हूँ कि आपका नियत कर बराबर मिलता रहेगा।"

अलीवर्दीखां—"अच्छा तो मै तुम्हारे साथ फौज रवाना करता हूं। तुम देवीप्रसादको राजा बनाकर खुद दीवान बनना, और होशियारीके साथ सब बातोंका इन्तजाम करना।"

दयाराम—"जो आज्ञा।"

* * * * *

राजा रामकान्तके सैनिकोंने भी सुना कि मुर्शिदाबादसे नवाब अलीवर्दीखांकी अगणित सेना आरही है। वह बेचारे प्रायः दोवर्षसे वेतन नहीं पाते थे, विशेषकर राजाकी जैसी दशा थी, उससे राज्य का बचाव कठिन था; अतएव नवाबी फौजके साथ युद्ध करना महज नहीं था। यही बातें सोचकर गांववालोंके मकानों और झोंपड़ोंको लूटते हुए, वह सब जहां उनके जीमें आया, चले गये। रामकान्तके आश्रयमें रहनेवाली वेश्याओं और उनके स्वार्थी मित्रों ने भी यह बात सुनी। वह सब भी अवसर देखकर जो उनके हाथ लगा, ले देकर भाग गये!

जिस समय नाटोरमें नवाबी फौज आकर पहुंची, उसी समय राजा रामकान्तकी आंखोंका पर्दा हटा। परन्तु ऐसी दशामें वह क्या कर सकता था? युद्ध करने अथवा परामर्श देनेके लिये वहा कोई नहीं था; सभी अपना अपना मतलब साधकर भाग गये थे। राजा रामकान्तने अपने मनमें कहा—"क्या संसारके सभी लोग स्वार्थी होगये? क्या दुनियामें कोई भी मेरा सच्चा हितैषी नहीं है? इस विशाल राजमहलमें मेरा साथ देनेवाला क्या एक आदमी भी नहीं मिलेगा?" इसी तरह मनही मन अनेक बातें सोचते और उदासभावसे गर्दन झुकाये हुए राजा रामकान्तने राजमहलके अन्दर [illegible] को अच्छी तरह देख डाला; परन्तु कहीं भी उसको

मनुष्यका चिन्ह दिखाई नहीं दिया; कहीं भी उसका कोई सहाय नहीं मिला;—दास दासी—आत्मीय वान्धव सभी भाग गये थे। हा! विपत्तिके समय साथ देनेवाला कहां मिलता है।—
"तारीकीमें साया भी जुदा होता है इन्सांसे।"

इसके बाद पागलकी तरह नाट्य करता हुआ राजा रामकान्त अन्तःपुरमें गया। वहां जाकर भी उसने वहांकी हरेक कोठरी देख डाली; परन्तु वहां भी उसको कोई दिखाई नहीं पडा। अन्तमें एक घरमें प्रवेश करके उसने देखा कि भवानी भूमि पर पडी रोरही है। राजा रामकान्त धीरे धीरे उसके पास जाकर बोला—भवानी। तुम यहां क्यों पड़ी हो?"

रानीने कोई उत्तर नहीं दिया। राजा रामकान्तने फिर पूछा—"भवानी। अब भी भागकर अपनी प्राणरक्षा करो। जब मेरे स्नेही मित्र, आत्मीय वान्धव, दास दासी, सभी मुझको छोडकर चले गये, तब तुम क्यों यहां रहकर वृथा कष्ट उठा रही हो?"

रानीने रोते हुए कहा—"महाराज! मेरा आपका सम्बन्ध वैसा नहीं है, जैसा आपके मित्रोंका और आपका था। यदि मेरा भी आपके साथ वैसाही सम्बन्ध होता, यदि उन्हींकी तरह मेरी भी स्वार्थसाधनकी अभिलाषा होती, तो मै अबतक कभीकी भाग गई होती। परन्तु मेरा आपका सम्बन्ध वैसा नहीं है। मुझे आपके सुखसे सुख है, और आपके दुःखसे दुःख है। जबतक मैं जीवित रहूंगी तबतक कभी आपको छोडकर नहीं भागूंगी। जब मरण-काल आवेगा, तब आपके मुखकी ओर देखते देखते—हंसते हंसते—मै यह जीवन त्याग दूंगी।"

एक लम्बी सांस खींचकर राजा रामकान्तने कहा—"अहो! मैं कैसे भ्रममें पड गया था; मेरी वुद्धि कैसी भ्रष्ट होगई थी।"

रानी—"महाराज, यदि आपकी आज्ञा हो तो मै प्राणरक्षा का एक उपाय करूं।"

राजा—"मुझे सब स्वीकार है। अब मुझको विश्वास है, कि जहां तुम रहोगी वहीं मुझे स्वर्गसुख प्राप्त होगा।"

रानी—"अस्तु, जल्दी कीजिये।"

इसी समय राजमहलके बाहरसे नवाबी सैनिकोंका विकट कोलाहल सुनाई दिया।

राजा—"अब भागनेका कोई उपाय नहीं है; वह सब आगये।"

परन्तु रानी पतिका हाथ पकड़ धीरे धीरे उस मार्गसे महलके बाहर निकलने लगी, जिधरसे भीतरका जल बहकर नदीकी ओर जाता था। गर्भवती होनेके कारण रानी जल्दी जल्दी नहीं चल सकती थी।

पांचवां परिच्छेद।

प्राणभयसे, राजा रामकान्त, गर्भवती स्त्रीके साथ राजमहलके बाहर निकल आया; पर अब जाता कहां? ऐसे दुर्दिनमें—ऐसी विपदके समयमें—कौन उसको आश्रय देकर नवाबकी कोपदृष्टिका निशाना बनता? यही सब सोच उसने निराश होकर रानीसे कहा—"भवानी। प्राणरक्षाके लिये तो सब कुछ छोडकर हम लोग नदी-किनारे आगये, परन्तु अब क्या करना चाहिये? हम लोगोंको अब रहनेके लिये स्थान कहां मिलेगा? कौन हम लोगोंको आश्रय देकर, नवाबका विपक्षी बनकर, अपनेही हाथोंसे अपने पांवोंमें कुल्हाडी मारेगा? हाय। अब हमारे रहनेके लिये कहीं ठौर ठिकाना नहीं है। खैर, आओ, इस नदीमें आश्रय लेकर अनन्त कालके लिये सब दुःखों, सब विपत्तियों और सब अपमानोंसे अपना छुटकारा करें।"

बुद्धिमती रानीने स्वामीको धैर्य धराकर कहा—"स्वामिन्! विपत्तिसे मनुष्य अधैर्य होनेसे, विपत्ति बराबर बढ़तीही जाती है,

घटती नहीं; अतएव, ऐसे समयमें अधैर्य्य न होकर, धैर्य्यका अव लम्बन कीजिये, और आश्रयके लिये चिन्तित न हूजिये। हमलोग एक बड़े उत्तम व्यक्तिके घरमें चलकर ठहरेंगे जिनके यहां विपदका आना बहुतही कठिन है, जो हमलोगोंको आदरपूर्वक अपने घरमें रखेंगे, वहीं चलकर हमलोग रहेंगे।"

रामकान्त—(उदासभावमें) मुझको वृथा प्रबोध क्यों देरही हो? यदि पहलेसे तुम्हारे परामर्शके अनुसार कार्य्य करता, तो आज यह दिन देखनेमें न आता। प्रियतमे! नवाबके विपक्षमें हम लोगोंको आश्रय देनेवाला इस देशमें कौन है?

रानी—(प्रेमपूर्ण शब्दोंमें) महाराज! मैं आपको वृथा प्रबोध नहीं देती हूं। मैं जिनके विषयमें कहती हूं, उनके लिये नवाबके भयकी बात तो दूर है—स्वयं नवाब अनेक विषयोंमें उनके ऋणी हैं, और उनसे बहुत दबते हैं। वही हमलोगोंको आश्रय देंगे।

राजा रामकान्तने पहलेकी तरह निराश भावसे कहा—"मुझको तो विश्वास नहीं होता। खैर, वह कहां रहते हैं? उनका नाम क्या है?"

रानी—"वह मुर्शिदाबादमें रहते हैं; उनका नाम है जगत् सेठ।"

प्रिय पाठक! "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" आख्याधारी मुगल-सम्राटको समय समय पर जिसके द्वार पर जाना पड़ता था; सम्पत्तिशालिनी भारतमाता जिसके धनके गौरवसे संसारमें गौरव पाती थी; हिन्दुस्थानके प्रत्येक कर्म्मक्षेत्रमें—भारतवर्षके प्रत्येक नगरमें, वाणिज्य-व्यवसायसे शोभा पानेवाले प्रत्येक बन्दरमें, जिसके गुणोंका बखान लोग किया करते थे; वैकुण्ठवासिनी साक्षात् लक्ष्मीदेवी मानो "चञ्चला" अपवाद मिटानेके लियेही जिसके यहां जमकर बैठ गई थी; देशके राजा महाराजा—अमीर उमरा सदैव जिसके यहांसे ऋण लिया करते थे; उसी धन-कुबेर जगत्सेठके विषयमें रानी भवानीने अपने पतिसे कहा था।

जगत्सेठका नाम सुनकर, राजा रामकान्तके उदास मुख पर थोड़ी देरके लिये प्रसन्नता दिखाई दी। उसने प्रफुल्लित होकर कहा—"प्रियतमे। तुमने ठीक कहा। इस विपत्तिके समय, जगत्सेठके सिवा दूसरा कोई भी हमारी सहायता नहीं कर सकता। ईश्वरने अच्छे समय पर यह बात तुमको सुझा दी।"

इसके बाद, एक नाव भाड़े पर लेकर, राजा रामकान्त अपनी स्त्रीके सहित मुर्शिदाबादकी ओर चल निकला। मुर्शिदाबादमें वह कब पहुंचे; मार्गमें उनको कैसी कैसी आपत्तियां झेलना पड़ीं; यह सब न लिखकर, हम संक्षेपमें केवल इतना लिखे देते हैं, कि जगत्सेठने उनको आदर सहित अपने घरमें स्थान दिया।

दुर्भाग्यवश राजा रामकान्तकी विवेकशक्ति नष्ट होगई थी। जब उसकी दशा कुछ सम्हली, तो उसने सब कामोंका भार रानी भवानीको सौंप दिया। जगत्सेठने भी उनको नवाबके प्रसन्न करनेके उपाय बताये; किन्तु रानी भवानीने कहा—"इस प्रकार काम नहीं चलेगा। सबसे पहले दीवान दयारामको प्रसन्न करना चाहिये, क्योंकि वह सब समय नवाबके यहां उपस्थित रहता है।" इसके बाद उसने अपने पतिको यह सलाह दी, कि आप दीवान दयारामको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करें।

पर राजा रामकान्त क्योंकर दीवान दयारामको प्रसन्न करता? उसने सोचा, कि यदि मैं दीवानको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करूंगा, या उससे मिलनेके लिये नवाब मुर्शिदाबादके दरबारमें जाऊंगा, तो अवश्य लोग मुझे पकड़कर कैदखानेमें डाल देंगे। अस्तु।

एक दिन दयाराम, पालकी पर चढ़ा, दरबारसे अपने घरकी ओर जा रहा था। राजा रामकान्तने उसको इस तरफ जाते हुए देख लिया और जाकर यह समाचार रानी भवानीको सुनाया। इस पर रानी भवानीने उसको कुछ सलाह दी। निदान उन्हींके कहनेके अनुसार राजा रामकान्त जगत्सेठकी कोठीसे एक दा

जा चढा और वहींसे उसने पुकारा—"भाई साहब! अब कितने दिनों तक हम लोगोंको योंही बन्द रहना पडेगा?"

दीवान साहबके मनमें दया आई। विशेषकर, जिस रामकान्त को वह अपने छोटे भाईकी तरह चाहता था, उसी रामकान्तको पराई रोटीका टुकड़ा तोडते देख, उसको बहुत दुःख हुआ। पालकीसे उतरकर, वह तुरन्त रामकान्तके पास आया वहां आकर उसने उसको गलेसे लगा लिया। रामकांतकी आंखोंसे आंसू बहने लगे। दयारामने कहा—"अब तुमको अधिक दिन तक इस दशामें रहना नहीं पडेगा। जो बुरे कर्म्म तुमने किये, उसका उचित फल तुमको मिल गया। मैं इस बातका पूर्ण उद्योग कर रहा हूं, कि तुम्हारी जमींदारी फिर तुमको मिल जाय। सब मिलाकर इस समय तुम्हारे पास कितने रुपये होंगे?"

उदास मुखसे रामकान्तने उत्तर दिया—"भाई साहब! भवानी के शरीर पर जो थोडेसे गहने हैं, उनके सिवा हम लोगोंके पास एक पैसा भी नहीं है। उन्हीं गहनोंको थोड़ा थोडा बेचकर किसी तरह काम चलाता हूं। आज भी एक अंगूठी बेचनी है।"

रामकान्तकी बात सुनकर, दीवान दयारामको और भी दया आई। बडे स्नेहसे उसने कहा—"भैया! यदि तुमने मेरी या बहूजीकी प्रार्थना पर ध्यान दिया होता, तो ऐसी बातोंके कहनेका अवसर न आता।"

रामकान्त—(दयारामके दोनों हाथ पकडके और आंखोंमें आंसू भरके) "भाई साहब! मुझे क्षमा करो। मैंने जो कुछ किया उसका फल मुझे मिल गया। अब सब कामोंको भवानी और तुम मिलकर करोगे; मैं अब कुछ नहीं चाहता।"

दयाराम—(कुछ सोचकर) "अच्छा, बहूजीके गहने मुझे देदो। मैं तुम्हारी जमींदारीके फिरसे मिल जानेका प्रबन्ध कर दूंगा।"

रामकान्तकी आज्ञासे पहलेही रानी भवानीने अपने सब गहने उतारकर दयारामके आगे रख दिये। भवानीकी यह दशा देख,

सुन दयाराम और भी दुःखित हुआ। धैर्य्य धराते हुए उसने कहा—"बेटी! घबराना मत। जहांतक मुझसे होसकेगा, मैं शीघ्र तुमको नाटोरकी रानी बना दूँगा।"

उसी अलङ्कारोंको बेचकर, दयारामने ५० हजार रुपये इकट्ठा किये और रुपयोंको नवाबके कर्म्मचारियोंमें बांटकर उसने उन सबको अपने वशमें कर लिया। दयारामके बुद्धि-कौशलसे नवाबके यहांके छोटे बड़े सब लोग देवीप्रसादका अनादर करने लगे। वहांके सभी लोग, उसको "कमबख्त" कहकर पुकारने लगे। पहले कुछ दिन तक देवीप्रसादने किसीकी बात पर ध्यान नहीं दिया; परन्तु जब उसने देखा कि दीवान, दरबारी, खिदमतगार —आदि सभी लोग "कमबख्त" कहकर अपमानित करते हैं, तब उसने नवाब अलीवर्दीखांसे इस बातकी शिकायत की। नवाबने कहा—"मैं सबको मना कर दूंगा। आइन्दा तुमको इस तौर पर कोई तकलीफ न देगा।"

नवाबके मना करने पर भी फिर दूसरे दिन सब कर्म्मचारियोंने देवीप्रसादको "कमबख्त" कहा। उसने फिर नवाबसाहबसे उनकी शिकायत की।" इस बात पर नवाब अलीवर्दीखां बहुत चिढ़ा; परन्तु उस दिन भी उसने सबसे कह दिया कि "अबसे कोई इनको कमबख्त न कहे।" उसदिन तो सब चुप रहे, लेकिन दूसरे दिन फिर वही बात! लाचार होकर फिर देवीप्रसादको दरबारियोंकी शिकायत करना पड़ी। नवाबने कहा—"हकीकतमें तुम बड़े भारी कमबख्त हो। राजा रामजीवनकी जमींदारी तुम्हारे हाथमें नहीं रह सकती। क्या रामजीवनके खान्दानमें कोई ऐसा शख्स नहीं है, जो जमींदारीका अच्छा इन्तजाम कर सकता हो?"

उसी समय दीवान दयारामने सिर झुकाये हुए आगे बढ़कर कहा—"हे जहांपनाह! राजा रामजीवनका एक लड़का है। यदि आज्ञा हो तो——"

देवीप्रसाद दयारामकी बात काटकर कुछ कहना चाहता था

पर नवाब साहबने उसे जोरसे डपटकर कहा—"मैं तुम्हारा कोई उज्र नहीं सुन सकता। आजही रामजीवनका लड़का उसकी जमींदारीका मालिक होगा। अब तुम मेरे दरबारमें न आना। अगर आनेकी कोशिश करोगे, तो सख्त सजा मिलेगी।"

राजा रामजीवनका पुत्र कौन है, उसका नाम क्या है, इन बातोंको नवाब अलीवर्दीखांने नहीं पूछा। दीवान दयारामकी कृपासे फिर रामकान्तने अपना राज्य पाया। देवीप्रसादकी दशा फिर वैसीही होगई, जैसी कुछ दिन पहले थी।

छठा परिच्छेद।

नाटोरमें आकर फिर राजा रामकान्तने राजकार्य्यका भार अपने ऊपर नहीं लिया; दयाराम और रानी भवानीही सब कामों की देखभाल करने लगे। राजा रामकान्त किसी काममें हस्तक्षेप नहीं करता था; किन्तु रानी भवानी दयारामकी सलाहसे सब कामोंका प्रबन्ध कर लेती थी। उस समय रामकान्त नाम मात्रके लिये राजा था; यथार्थमें रानी भवानी और दयारामही सब कामोंके कर्त्ताधर्त्ता थे।

बहुत दिनोंतक ऐश्यमें डूबे रहनेके कारण राजा रामकान्तका शरीर टूट गया था, अतएव रानी भवानी अधिक दिनोंतक स्वामिसुख न भोग सकी। फिरसे राज्य पानेके बाद केवल १६ वर्ष तक राजा रामकान्त जीवित रहा; सन् १७५६ ई० के मध्यमें बेचारा इस लोकसे चल बसा। रानी भवानीकी उमर उस समय केवल ३२ वर्षकी थी। प्यारे पतिकी अकाल मृत्युसे रानीभवानी को कैसा दुःख हुआ होगा इसका अनुमान पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

इससे पहले रानी भवानीके गर्भसे केवल दो पुत्र हुए थे। इन मेंसे एक तो ११ मासका होकर मरा था ; दूसरा छःही महीनेमें कालग्रसित होगया था। इस समय उसकी एक मात्र कन्या तारा जीवित थी। ताराका विवाह भी खजूरा-निवासी रघुनन्दन पण्डित के साथ करके उसने छुट्टी पाई। परन्तु विधाताकी लीला देखिये कि विवाह होनेके थोडे ही दिनोंके बाद रघुनन्दन मर गया, बेचारी ताराको छोटी अवस्थामेंही वैधव्य—दुःख भोगना पडा। रानी भवानीने सोचा था कि मैं दामादको राज्य देकर, आप पुण्यधाम काशीको चली जाऊंगी ; किन्तु उसकी सब आशा टूट गई। परन्तु ऐसी दशामें वह क्या करती?—लाचार होकर फिर उसको राज्यका भार लेना पडा। अब दयाराम भी इस लोकमें नहीं था ; इस लिये सब कामोंमें उसको अपनीही बुद्धिका भरोसा करना पडता था। अस्तु, बडी बुद्धिमानी और सावधानीसे उसने सब कामोंका प्रबन्ध किया।

सातवां परिच्छेद।

बहुत बढ़ गया और स्वयं नवाब तक उसकी ओरसे शङ्कित रहने लगे।

इसी समय सिराजुद्दौलाने मुर्शिदाबादकी गद्दी प्राप्त की। सिराजुद्दौला चञ्चल, अविवेकी और ऐयाश नवाब था; अतएव उसके समयमें उसके कर्मचारियों और दरबारियोंको अपना अपना मतलब निकालनेका खूब मौका मिल गया। वह सब सिराजुद्दौला को बुरे बुरे परामर्श देकर और भी खराब करने लगे। उस समय नवाबको राजसम्बन्धी कामोंके करनेका अवकाश नहीं मिलता था, दुष्ट साथियोंके परामर्शसे दिनोदिन उसकी पापइच्छा बढ़तीही जाती थी। सतीका सतीत्व नाश करना, वेश्याओंके जमघटमें बैठकर ऐश मनाना इत्यादि निन्दनीय कर्मही उस समय उसके प्रधान कर्म होगये थे।

रानी भवानीके प्रवल प्रतापकी बात सुनकर, नवाबके दुष्ट साथियोंने उसके दमन करनेका एक जघन्य उपाय स्थिर किया। दुष्टोंने रानी भवानीकी विधवा कन्या ताराकी नवाब सिराजुद्दौलासे खूब बढ़ चढ़कर प्रशंसा की। उन बदमाशोंका विचार था कि नवाबको ताराके लिये उत्तेजित कर, उसीकी सेनाकी सहायतासे रानी भवानीका धन लूट लेंगे। नवाब उनके हाथका खिलौना हो रहा था—बिना सोचे बिचारे उसने उनकी बात स्वीकार कर ली। तुरन्तही रानी भवानीकी विधवा कन्या ताराको मुर्शिदा-बाद लानेके लिये एक दूत नाटोर भेजा गया!

यह गन्दा सन्देशा लेकर दूत नाटोरमें रानी भवानीके पास पहुँचा। रानीने उसकी पूरी दुर्दशा की। उसने उसे केवल जान से नहीं मारा—क्योंकि दूतवध राजनीतिके विरुद्ध है—बाकी सब तरहसे उसकी दुर्गति की।

दूत क्रोधमें भरा हुआ मुर्शिदाबाद आया और रानी भवानीका हाल उसने सिराजुद्दौला और उसके मित्रोंसे कह सुनाया। चाहे सिराजुद्दौलाके मनमें कोई दूसरीही बात रही हो, पर उसके साथि-

योंने रानी भवानीकी जमींदारी आदि लूट लेनेके लिये नवाबी सेना भेजही दी। रानी भवानीको पहलेहीसे निश्चय था, कि नवाबी फौज युद्धके लिये अवश्य आवेगी ; अतएव वह भी लड़नेके लिये तय्यार थी। नवाबी फौजके आनेका हाल सुनकर वह जरा भी विचलित नहीं हुई,—बल्कि स्वयं 'सरदार' बनकर युद्धक्षेत्रमें उपस्थित हुई। नवाबी सैन्यके पहुंचतेही लड़ाई होने लगी; पर रानी भवानीकी सेनाकी मार न सह सकी, नवाबी फौज इधर उधर भागने लगी। रानी भवानीने स्वयं घोड़े पर सवार होकर, अपने राज्यकी सीमा तक उस भागती हुई फौजका पीछा किया। उस समय देशके सभी लोग मुसलमानोंके अत्याचारसे दुःखित थे, अतएव उन्होंने यह अवसर हाथसे जाने नहीं दिया—सब नवाबकी भागती हुई सेना पर टूट पड़े। इस प्रकार नवाबकी अधिकांश सेना नष्ट होगई, बहुत थोड़ी बचकर मुर्शिदाबाद लौटी। युद्धका परिणाम सुनकर पापी सिराजुद्दौलाका कलेजा कांप उठा।

सिराजुद्दौलाके अत्याचारोंसे उस समय सभी लोग दुःखित थे ; सभीका यह इरादा था, कि किसी तरह यह दुष्ट गद्दीसे उतार दिया जावे। सभी इतिहासवेत्ता इस बातको जानते होंगे, कि सिराजुद्दौलाको सिंहासनच्युत करनेके लिये राजा कृष्णचन्द्र, राजा राजवल्लभ, राजा रायदुर्लभ, जगत्सेठ और रानी भवानी आदिने मिलकर एक गुप्त सभा की थी। सभी इतिहास-पाठकोंको यह बात याद होगी, कि सभाके सब सभ्योंने अंगरेजोंकी सहायतासे सिराजुद्दौलाको गद्दीच्युत कर मीरजाफरको मुर्शिदाबादका अधिकारी बनानेका निश्चय किया था ; किन्तु रानी भवानीने यह राय पसन्द नहीं की थी।—उसने कहा था,—"अङ्गरेजोंसे मदद लेना, या और आपको नवाब बनाना दोनों बातें मेरी समझमें ठीक नहीं हैं। यदि आपलोग अपने हाथोंसे राजकार्य चला सकें, तो सिराजुद्दौलाको गद्दीसे उतारनेका विचार करें, नहीं तो व्यर्थ इस झगड़ेमें न पड़ें। यदि हिन्दूराज्य स्थापन करना चाहते हों तो

उद्देश्य हो, तब तो मैं भी इस कार्य्यमें सहायता कर सकूंगी ; किन्तु एक यवनको हटाकर उसकी जगह दूसरेको बैठानेकी कदापि मेरी इच्छा वा प्रवृत्ति नहीं है।"

दुःखकी बात है, कि रानी भवानीकी राय किसीके पसन्द न आई। बहुत दिनोंसे पराधीनताके जालमें पड़े रहनेके कारण, रानी भवानीके सिवा, सभीको यह आशङ्का थी कि हम लोग राज्यशासन न कर सकेंगे। इसीसे सबने मीरजाफरको नवाब बनाना स्थिर किया। यदि उन लोगोंने तेजस्विनी रानी भवानीकी बात मानी होती, यदि उन्होंने उसकी बातका जरा सोच विचारके बाद परिणाम निकाला होता, तो पराधीनताकी कठिन कैदसे अवश्यही उनको छुटकारा मिलता। पर दुर्भाग्य!

आठवां परिच्छेद।

रानी भवानी पहलेहीसे समझ गई थी कि अब देशका कुशल नहीं है। अन्त वैसाही हुआ। जल्दी जल्दी नवाबोंकी बदली होने लगी। यहांतक कि लोग मनमानी कारखाइयां करने लगे। "जबरदस्तका ठेगा सिर पर" की कहावत चरितार्थ होने लगी।

बुद्धिमती रानी भवानी देशकी ऐसी दुरवस्था देखकर अपनी प्रजाके सुखके लिये उचित प्रबन्ध करने लगी। कुछ दिनोंके बाद उसने एक दीवान नियुक्त किया और सच्चरित्र रामकृष्णको अपना दत्तकपुत्र बनाया और आप उसके हाथमें राज्यका भार सौंपके मुर्शिदाबादसे कुछ दूर पश्चिमकी ओर गङ्गाजीके किनारे बड़नगर नामक स्थानमें जाकर रहने लगी।

रानी भवानी स्त्री होकर भी पुरुषकी अपेक्षा अधिक परिश्रमी थी। वह प्रतिदिन ४ घण्टे रात बाकी रहते सोतेसे उठकर जप करती। गई दण्ड रात रहते बगीचेमें जाकर अपने हाथोंसे फूल

एक साल नाटौरसे काशीसे खर्चके लिये रुपयोंके आनेमें विलम्ब होगया। रानी भवानीने यहांके अमृतलाल नामक एक धनवन्त वणिकसे एक लाख रुपया ऋण मांगा। वनियेने रानी भवानीको झूठा समझकर ऋण देना स्वीकार नहीं किया। रात्रि-समय जब वह सोगया, तो क्या देखता है कि मानो स्वयं माता अन्नपूर्णा उससे कह रही हैं, कि "अरे मूर्ख! तूने किसको क्या समझा है? क्या मुझमें और रानी भवानीमें कुछ भेद है?" रातमें ऐसा स्वप्न देख प्रभात होतेही वह वनिया एक लाख रुपया लेकर स्वयं रानी भवानीको दे आया। रुपया देते समय उसे ऐसा जान पड़ा मानो साक्षात् अन्नपूर्णा देवी रानी भवानीके रूपमें खड़ी है। वास्तवमें रानीभवानी बड़ीही रूपवती थी। उसको देखकर कोईभी यह नहीं कह सकता था कि उसकी उमर २० वर्षसे अधिक होगी। यद्यपि उसकी उमर अधिक होगई थी, उसके सब दांत गिर गये थे; किन्तु उसका एक भी बाल नहीं पका था। उसके उन्हीं काले बालों और अपूर्व सौन्दर्यको देखकर लोग सदा उसको युवतीही समझते रहे।

रानी भवानीके कीर्तिकलापकी बातें इस छोटेसे संग्रहमें नहीं लिखी जासकतीं, न हमारे जैसे क्षुद्रबुद्धि लेखककी लेखनीमें उसके सद्गुणोंका वर्णन करनेकी शक्तिही है। वह दरिद्र ब्राह्मणों की कन्याओंका अपने खर्चसे विवाह करा देती थी; वह सालमें लाखों रुपये खर्चकर विद्यार्थियोंका उत्साह बढ़ाती थी; वह अपने शत्रुओं पर क्रोध न दिखाकर उन पर दयाभाव रखती थी। उसके समान परदुःखकातरा, उसके समान स्वधर्म-निरता और उसके समान विद्योत्साहदात्री भी इस कलिकालमें कदाचित्ही कोई हुई होगी। पर हा! निठुर कालने उसको भी नहीं छोड़ा। सन् १८१० ईसवीमें ८८ वर्षकी अवस्थामें सबको रोता छोड़के वह इस [illegible]

हा रानी भवानी। तुम्हारा वृत्तान्त समाप्त करते करते इस लेखककी आंखोंसे भी दो बूंद आंसू निकल पड़े। हे ईश्वर! तू रानी भवानी जैसी रमणियोंको उत्पन्न करके इस पृथ्वीका पाप दूर कर।

समाप्त।

॥ ग्रीसकी स्वाधीनता ॥

ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा।

॥ श्रीः ॥

ग्रीसकी स्वाधीनता।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

लेखक

ठाकुर सूर्य्यकुमार वर्मा।

कलकत्ता।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, "भारतमित्र" प्रेससे

पण्डित कृष्णानन्द शर्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९०६।

समर्पण ।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

माता

भारतभूमि

के

चरण कमलोंमें

आन्तरिक श्रद्धा, भक्ति

और

प्रीतिके निदर्शन स्वरूप

लेखककी

सविनय भेंट

सादर समर्पित ।

॥ श्रीः ॥

परिचय ।

हिन्दी भाषामें ऐतिहासिक-राजनीति सम्बन्धी पुस्तकें बहुतही कम देखनेमें आती हैं। राजनैतिक विचारोंसे बहुत लोग घबराते है। परन्तु भारतकी अन्य प्रान्तिकभाषाओंकी यह दशा नहीं है। मराठी, बंगला और गुजराती भाषाओंमें राजनैतिक आन्दोलन पर बहुतसी पुस्तकें पाई जाती हैं। समाचारपत्र भी अच्छे अच्छे ऐतिहासिक-राजनीति सम्बन्धी लेख लिखते और प्रकाशित करते है। मराठी भाषामें "काल" नामका एक राजनैतिक विचारों का प्रचार करनेवाला उत्तम पत्र है। इस पत्रको श्रीयुत् पण्डित शिवराम महादेव परांजपे एस० ए० सम्पादन करते है। ऐतिहासिक लेख लिखनेमें आप बहुतही चतुर है। गत वर्ष दिसम्बर महीनेमें आपकी मुझसे काशीमें भेट हुई थी। आपने अपने उत्तम उत्तम ऐतिहासिक निबन्धोंके हिन्दी अनुवादकी मुझे अनुमति दी। आपने पूना पहुंचकर अपने लिखे मराठी निबन्धोंकी एक एक कापी भी मुझे छपाकर भेज दी। मैंने आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य करके सबसेपहले "ग्रीस कैसे स्वतन्त्र हुआ" नामक निबन्धका हिन्दी अनुवाद किया। वही आज पाठकोंको भेट करता हूं। मराठी भाषामें निबन्ध लिखनेकी चाल बहुत दिनोंसे है। चिपलूनकरके कई एक मराठी निबन्धोंका हिन्दी अनुवाद श्रीयुत् पण्डित गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्रीजीने भी किया है। हिन्दी समालोचकों और पाठकोंने उनको बहुत पसन्द किया। इसी ख्यालसे मैंने भी परांजपेके इस ऐतिहासिक निबन्धका हिन्दी अनुवाद किया है, अगर पाठक पसन्द करेंगे तो मैं उनके और ऐतिहासिक-निबंधोंका अनुवाद जो मसिरिजा इटली और जर्मनी वगैरह देशोंकी स्वतन्त्र,

पर उन्होंने लिखे हैं किसी समय पर भेट करूंगा। हिन्दी भाषाभाषीलोगोंमें भी इस प्रकारके निबंध लिखने और पढनेकी रुचि हो, अन्य देशके लोगोंने किसप्रकार उन्नतिकी—यह बात हिन्दीपढ़नेवाले लोग जानें; इसी मतलबसे यह अनुवाद किया गया है। अगर इसे पढ़कर पाठकोंको कुछ लाभ होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। इस पुस्तकमें जो नाम आये हैं वह वैसेही दिये गये हैं जैसे अंगरेजीमें लिखे अथवा बोले जाते हैं। जैसे ग्रीसको हिन्दीमें यूनान कहतेहैं सेक्रोटिसको सुकरात, कान्सटेन्टीनोपलको कुस्तुन्तुनियां इत्यादि। मैंने अपनी आसानीके लिये अंगरेजी नामोंकाही प्रयोग किया है।

ग्वालियर
१—३—०६।

सूर्य्यकुमार वर्मा।

॥ श्रीः ॥

ग्रीसकी स्वाधीनता।

यूरोपमें ग्रीस नामका एक देश है। भारतवर्षकी तरह यह भी बहुतही प्राचीन और प्रसिद्ध देश है। आजकल हमारा देश गुलामीकी दशामें है परन्तु एक ऐसा समय था जब स्वतन्त्रता, पराक्रम और वैभवके सारे सुख इस देशवाले लूटते थे। ग्रीसकी दशा, ईसाका संवत् आरम्भ होनेके पहले ऐसीही थी। भारतवर्षके अनुसार ग्रीसदेश भी स्वदेशभक्ति, वेदान्तविचार, तत्व-ज्ञान तर्कशास्त्र, अलंकारशास्त्र, युद्धविद्यामें निपुणता, पराक्रम और राजनीति इत्यादि अनेक प्रकारके कलाकौशलका भाण्डार था। यूरोपनिवासी और लोग उस समय जंगली आदमियोंकी तरह देह को रंगते थे, खाल अथवा छाल पहनते थे और जंगलोंमें फिरा करते थे। उस समय भारतवर्षकी तरह ग्रीसके लोग भी उन्नतिके शिखर पर विराजमान थे। भारतवर्षके तुल्य इस समय ग्रीसके तत्कालीन कवियोंकी कविता, नाटककारोंके नाटक, तत्ववेत्ता लोगोंके तत्वज्ञान और योद्धा लोगोंके अद्भुत कार्य्योंको सुन और जानकर जिनका मन आनन्दसे प्रफुल्लित और हुल्-सित नहो हो ऐसे विरलेही मनुष्य होंगे। भारतवर्ष और ग्रीस, दोनो देश पहले ऐश्वर्य्य बुद्धि वैभव और पराक्रमके शिखर पर जाकर विराजमान होचुके हैं। एक समय इन दोनो देश सुखकी बहुतसी बातोंमें एक दूसरेके समान थे और दोनो ही देशोंने पीछे दुःख खूबही भोग किया। स्वान स्ट भारतवर्ष आजकल दरता वहता गुलामीकी चट्टानमें किस प्रकार

टकरा गया है यह बात करीब करीब सबको मालूम है। ग्रीसकी कथा भी ऐसीही विलक्षण है। ग्रीसको रोमन लोगोंने विजय किया। उन रोमन लोगोंको जर्म्मनीके जङ्गली आदमियोंने जीता परन्तु उनको भी मुहम्मद साहबके अनुयायियोंने अपने अधिकारमें कर लिया। कान्सटेन्टीनोपल जो रोमन बादशाहोंका स्थान था मुसलमान सुलतानने अपने कब्जेमें कर लिया। इस सुलतानने एशिया माइनर इजिप्ट, काकेशस, आस्ट्रिया, सर्विया, बलगेरिया इत्यादि आसपासके जो अनेक प्रान्त अपने अधिकारमें कर लिये थे उसीके साथ ग्रीस पर भी अपना प्रभुत्व जमाया। मुसलमान लोगोंका अत्याचार अरिस्टाटल और प्लेटोके ग्रीसने कितनेही दिनों तक सहन किया। परन्तु उसका भाग्य उन्नीसवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें उदय हुआ। इतने दिनोंमें वहां बहुतसे ईसाई जाकर रहने लगे थे परन्तु उनके ऊपर राज्य करनेवाले मुसलमान ही थे आजकल भारतवर्षमें भी हिन्दू और मुसलमान रहते हैं और उन पर ईसाई राज्य करते हैं। इसीके अनुसार उस समय ग्रीसकी स्थिति थी। आजकल जिस प्रकार वृटिश साम्राज्यके अधिकारमें अन्य धर्मावलम्बी और अन्य जातिके लोग रहते है उसी प्रकार उस समय अन्य जाति और धर्म्मके लोग टर्कोंके अधिकारमें थे। अन्य धर्म्मावलम्बी और जातिके लोगोंको अधीन रखना बडा कठिन काम है और इस कठिन कामको अंगरेज आजकल बडी कुशलता के साथ कर रहे है। परन्तु गत शताब्दीमें टर्किश लोग भी इस कामको बडी चतुराईके साथ करते थे। आजकलके अंगरेज और उस समयके टर्किश दोनो एक ही मार्ग पर चलते थे। उस समय टर्किश साम्राज्यके अधीन करीब एक करोड पचास लाख लोगोंमें मुसलमान ३० लाखके करीब थे। परन्तु इतने कम लोग अपनेसे चौगुने लोगों पर हुकूमत करते थे और उनकी युक्तियां भी अंगरेजों की तरह बिलकुल सीधीसादी थीं। सब मुसलमान हथियारबन्द थे। जिन वक्त लडाईका समय आदि उसी वक्त वह लडनेको तय्यार

रहते थे। राज्यमें जितने किले अथवा बन्दर थे वह उनके अधिकार में थे। उन्हें राजकाज चलानेके अधिकार प्राप्त थे और धनको जरूरतके लिये खजाना मौजूद था। सब बड़े बडे शहर मुसलमानो के अधिकारमें थे। बहुत दिनों तक राज्याधिकार रहनेके कारण उनके यह विचार होगये थे कि हम राज्यका काम अच्छी तरह चला सकते हैं। कोई ऐसा काम नहीं जिसे हम न कर सकें!

इसके अलावा ग्रीकलोगोंके शारीरिक और व्यावहारिक दोषही उनके ऊपर दूसरेका राज्य स्थिर रखनेमें सहायता करते थे। टर्की के अधिकारमें उस समय भिन्न भिन्न जातिके लोग रहते थे अतएव उनमें वैमनस्य होना सहज बात है। रेलगाडी वगैरह न होनेके कारण दूरदेशी लोग आपसमें एक दूसरेसे मिल भी नहीं सकते थे। इन कारणोंसे उन सबके विचार एक कभी नहीं होते थे। इसके सिवा सैकडों वर्षकी गुलामीके कारण सबलोग हतवीर्य्य होगये थे। तुर्कोंके जुल्मसे हम सबको बराबर दुःख पहुंचता है अतएव हम सबको मिलकर उनके अत्याचार रोकनेका कुछ उपाय करना चाहिये—यह बात उस समय उन लोगोंके ध्यानमें ही नहीं आती थी और वैसा करनेके लिये समय भी अनुकूल न था। भारतमें गुलामी कायम रखनेके लिये जो कारण हुए वही कारण उस समय टर्कीके साम्राज्यमें मौजूद थे। भारतमें अंगरेजोंकी तरह टर्किश एम्पायरमें राज्याधिकार मुसलमानोंके हाथमें था और वह सब एक धर्मके माननेवाले और एक विचारके थे। उनकी प्रजा भिन्न भिन्न धर्म और विचारकी थी। राज्याधिकारी शस्त्रधारी थे और प्रजा निःशस्त्र! राज्याधिकारी एक जाति एक भाव और एक धर्मके माननेवाले थे। अपना राज्य किस प्रकारसे स्थायी होसकता है इस विषयके विचार भी उनके एकहीसे थे। परन्तु गुलाम बनी हुई प्रजामें अनेक जाति अनेक भाषा अनेक धर्म और अनेक स्वहितविनाशक कुकल्पनाओं का साम्राज्य था। प्रजाकी [illegible] व्यवस्[illegible] [illegible]रण अन्यायी राजा

टकरा गया है यह बात करीब करीब सबको मालूम है। ग्रीसकी कथा भी ऐसीही विलक्षण है। ग्रीसको रोमन लोगोंने विजय किया। उन रोमन लोगोंको जर्मनीके जङ्गली आदमियोंने जीता। परन्तु उनको भी मुहम्मद साहबके अनुयायियोंने अपने अधिकारमें कर लिया। कान्स्टेन्टिनोपल जो रोमन बादशाहोंका स्थान था मुसलमान सुलतानने अपने कब्जेमें कर लिया। इस सुलतानने एशिया माइनर इजिप्ट, काकेशस, आस्ट्रिया, सर्विया, बलगेरिया इत्यादि आसपासके जो अनेक प्रान्त अपने अधिकारमें कर लिये थे उसीके साथ ग्रीस पर भी अपना प्रभुत्व जमाया। मुसलमान लोगोंका अत्याचार अरिस्टाटल और प्लेटोके ग्रीसने कितनेही दिनों तक सहन किया। परन्तु उसका भाग्य उन्नीसवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें उदय हुआ। इतने दिनोंमें वहां बहुतसे ईसाई जाकर रहने लगे थे परन्तु उनके ऊपर राज्य करनेवाले मुसलमान ही थे। आजकल भारतवर्षमें भी हिन्दू और मुसलमान रहते हैं और उन पर ईसाई राज्य करते है। इसीके अनुसार उस समय ग्रीसकी स्थिति थी। आजकल जिस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यके अधिकारमें अन्य धर्मावलम्बी और अन्य जातिके लोग रहते है उसी प्रकार उस समय अन्य जाति और धर्मके लोग टर्कोंके अधिकारमें थे। अन्य धर्मावलम्बी और जातिके लोगोंको अधीन रखना बडा कठिन काम है और इस कठिन कामको अंगरेज आजकल बडी कुशलता के साथ कर रहे है। परन्तु गत शताब्दीमें टर्किश लोग भी इस कामको बडी चतुराईके साथ करते थे। आजकलके अंगरेज और उस समयके टर्किश दोनो एक ही मार्ग पर चलते थे। उस समय टर्किश साम्राज्यके अधीन करीब एक करोड़ पचास लाख लोगोंमें मुसलमान ३० लाखके करीब थे। परन्तु इतने कम लोग अपनेसे चौगुने लोगों पर हुकूमत करते थे और उनकी युक्तियां भी अंगरेजों की तरह बिलकुल सीधीसादी थी। सब मुसलमान हथियारबन्द थे। जिस वक्त लड़ाईका समय आवे उसी वक्त वह लड़नेको तय्यार

रहते थे। राज्यमें जितने किले अथवा बन्दर थे वह उनके अधिकार में थे। उन्हें राजकाज चलानेके अधिकार प्राप्त थे और धनकी जरूरतके लिये खजाना मौजूद था। सब बड़े बड़े शहर मुसलमानों के अधिकारमें थे। बहुत दिनों तक राज्याधिकार रहनेके कारण उनके यह विचार होगये थे कि हम राज्यका काम अच्छी तरह चला सकते हैं। कोई ऐसा काम नहीं जिसे हम न कर सकें!

इसके अलावा ग्रीकलोगोंके शारीरिक और व्यावहारिक दोषही उनके ऊपर दूसरेका राज्य स्थिर रखनेमें सहायता करते थे। टर्कीके अधिकारमें उस समय भिन्न भिन्न जातिके लोग रहते थे अतएव उनमें वैमनस्य होना सहज बात है। रेलगाड़ी वगैरह न होनेके कारण दूरदेशी लोग आपसमें एक दूसरेसे मिल भी नहीं सकते थे। इन कारणोंसे उन सबके विचार एक कभी नहीं होते थे। इसके सिवा सैकड़ों वर्षकी गुलामीके कारण सबलोग हतवीर्य्य होगये थे। तुर्कोंके जुल्मसे हम सबको बराबर दुःख पहुंचता है अतएव हम सबको मिलकर उनके अत्याचार रोकनेका कुछ उपाय करना चाहिये—यह बात उस समय उन लोगोंके ध्यानमें ही नहीं आती थी और वैसा करनेके लिये समय भी अनुकूल न था। भारतमें गुलामी कायम रखनेके लिये जो कारण हुए वही कारण उस समय टर्कीके साम्राज्यमें मौजूद थे। भारतमें अंगरेजोंकी तरह टर्किश एम्पायरमें राज्याधिकार मुसलमानोंके हाथमें था और वह सब एक धर्म्मके माननेवाले और एक विचारके थे। उनकी प्रजा भिन्न भिन्न धर्म्म और विचारकी थी। राज्याधिकारी शस्त्रधारी थे और प्रजा निःशस्त्र! राज्याधिकारी एक जाति एक भाव और एक धर्म्मके माननेवाले थे। अपना राज्य किस प्रकारसे स्थायी होसकता है इस विषयके विचार भी उनके एकहीसे थे। परन्तु गुलाम बनी हुई प्रजामें अनेक जाति अनेक भाषा अनेक धर्म्म और अनेक स्वहितविनाशक कुकल्पनाओं का साम्राज्य था। प्रजाकी ऐसी अव्यवस्थाके कारण अन्यायी राजा

के अन्यायोंका खूब विधिपूर्वक उपयोग होता था। अंगरेज भारत मे जिस पद्धतिको व्यवहारमें लाते है उसी पद्धतिसे उस समय तुर्क काम लेते थे। अंगरेजों और तुर्कोंकी इस काममें मुख्य एकही कुञ्जी थी। अंगरेजोंकी भांति तुर्कोंका भी यह खास नियम था कि सेनाविभागमें विजित लोगोंको किसी प्रकारका कोई अधिकार न दिया जावे। केवल मुसलमानोंकोही हथियार दिये जावें और वही लडाईके समय बुलाये जावें। यह मुसलमानोंकी परिपाटी थी। अंगरेजोंने कुछ काले लोगोंको अपनी पल्टनोंमें जगह दी है यह सच बात है। परन्तु यह बडे आश्चर्यकी बात है कि भारतकी तीस करोड प्रजामेंसे नाम मात्रके लोग सेनाविभागमें है और थोडेसे गोरोंमें प्राय: सब। थोडेसे लोगोंको सेनाविभागका लालच दिखलाकर रखना और बाकी करोडो लोगोंके मुंहबन्द करनेकी युक्ति उन्नीसवीं शताब्दीके मुसलमानोंको मालूम न थी। तोभी फौजी सिपाही जो मुसलमान थे उनका खर्च और ऐश आरामकी सामग्री भारतके तुल्य विजातीय प्रजाके द्रव्यसेही प्राप्त होती थी। फौजमें स्वदेशी लोग भरती नहीं होने पाते थे परन्तु उनका धन फौजी काममें खूब खर्च किया जाता था। टर्की साम्राज्यके और लोग अनेक प्रकारके उद्योग करके धन इकट्ठा करें और वह उस इकट्ठे किये हुए धनको फौजे नियत करनेके लिये दें पर उनको स्वयं शस्त्र धारण करनेकी कोई जरूरत नहीं—ऐसाही नियम था। इसी प्रकार वर्तमान भारतके तुल्य उस समय टर्किश साम्राज्यकी स्थिति थी। यदि उससमयकी दशाका वर्णन आलंकारिक भाषामें किया जाय तो यों होसकता है कि उस समयके मुसलमान सिपाही मानो घोडे थे और बाकी लोग उनके भरणपोषणके निमित्त बोझ लादनेवाले बैल अथवा गर्दभ थे—ऐसीही बुरी स्थिति उस समय टर्कीकी थी। मुसलमान जाति लडाई की जाति बन गई थी। और बाकी लोग गर्दभ मनकी जाति बन गये थे। उस समय ऐसीही निकृष्ट स्थिति आगई थी! युद्धका काम स्वयं करने

और इधर उधरके फुजूल काम गुलामोंसे करानेका मार्ग आजकल के अंगरेजोंकी भांति उस समयके तुर्कोंने भी ग्रहण किया था। ऐसा करना पहले पहल तो विजयी लोगोंको लाभ पहुंचाता है पर आगे गुलामोंके लिये गुणकारक होजाता है। क्योंकि युद्ध सदैव नहीं होता अत: एकबार लडकर विजय पानेके बाद बाकी दिन विजयी लोग शान्तिसे आलस्य और आनन्दमें बिताते हैं। उनके आनन्दकी मात्रा दिनोंदिन बढती जाती है। अतएव उनका शौर्य दिनोदिन घटता जाता है। परन्तु गुलामको सदैव उद्योगमें मग्न रहना पडता है। इस कारण उनमें साहस बुद्धि और दीर्घ प्रयत्न इत्यादि अनेक उत्तम उत्तम गुण आजाते है और आगे वही उनके अभ्युदय और शत्रुके पराजयका कारण होते हैं। ग्रीसमें भी इसी प्रकारकी स्थिति थी। ग्रीक लोगोंके हाथमें सब प्रकारके व्यापार थे। राज्यके सिविल अधिकार भी उनके हाथमे थे। व्यापार, लेनदेन, नाविकका काम इत्यादि छोटे वडे सब काम ग्रीकही करते थे। मुसलमान पृथ्वी पर शूर वीर थे परन्तु समुद्रके पानी पर उनकी बुद्धि कुछ काम नहीं करती थी। सब कलाएं ग्रीकलोगोंके हाथोंमें थीं। मुसलमान घोडे पर खूब अच्छी तरह चढते थे और यदि वह चाहते तो खुश्की पर एक साम्राज्यको भी दबा सकते थे। पर नाव पर बैठकर एक छोटीसी खाडी भी पार करना उनके लिये बहुत कठिन काम था। इधर ग्रीक लोग सदैव समुद्र सहवासके कारण नौकारोहणके काममें बहुतही चतुर और प्रवीण थे। उस समय टर्किश लोगोंके पास जो कुछ जहाज थे वह सब ग्रीक लोगोंके हाथमें थे इसी कारण खासकर स्वतन्त्रताकी लडाईमें ग्रीक लोगोंको विजय हुई। अङ्गरेज और टर्किश लोगोंकी तुलना करनेसे ज्ञात होता है कि टर्किश लोगोंने उस समय यह बडी भारी गलती की कि ग्रीक लोगोंके हाथ मे कुछ मुल्की कामकाज व्यापार जहाजी काम इत्यादि रहने दिये। यदि यह इच्छा हो कि लोग गुलामीके फन्देसे कभी किसी

प्रकार छूट न सकें तो उनके हाथमें कुछभी काम न रहने देना चाहिये। चारों ओरसे लोग फंसे रहे तो वह गुलामीके जालमें रह सकते है। इस प्रकारके उदात्त और महत् विचार उस समय तुर्कोंके नहीं थे। निराशा, दारिद्र, भिक्षा और उपवाससे दुःखित विजित लोगों के हाथमें कुछ काम न दिया जाना चाहिये यदि इस तत्वको वह लोग ध्यानमें रखते तो उनका साम्राज्य स्थिर रहता। बहुत हुआ तो बहुतही नीचे दर्जे और कम वेतनकी नौकरी, राजनिष्ठाके हेतु सभा समाज करनेकी इजाजत, सीधेसादे तौर पर बकनेके लिये मुंह खोलनेकी आज्ञा, आपसमें लडने झगडने और मनोविकारोंके प्रगट करनेके निमित्त समाचारपत्र और केवल राजनिष्ठाके हेतु चन्दा देने भरको धन इत्यादि अनेक छोटे छोटे अधिकार विजित लोगोंको दे रखना चाहिये था जिससे कि वह शान्त बने रहें। परन्तु इससे अधिक एक रत्तीभर भी ज्यादा अधिकार विजितलोगों को देनेका कोई काम नहीं। यह साम्राज्यको स्थिर बनाये रखने के लिये सबसे पहला नियम सबको ध्यानमें रखना चाहिये। तुर्क लोगोंका ध्यान इसकी ओर ठीक ठीक नहीं पहुंचा। इसका जो कुछ परिणाम हुआ उसे ग्रीसका इतिहास स्वयं बताता है।

सेनाविभागके अलावा और सब कामोंमें तुर्कोंने ग्रीकोंको अधिकार देरखे थे। यही कारण टर्कीके नाशका हुआ। परन्तु इसके सिवा एक और दूसरा कारण भी था। आज कल जिस तरह यूरोपियन राजाओंके पास पक्की सेना है उस समय ऐसी पद्धति टर्कीमें सेना रखनेकी नहीं थी। टर्कीके सुलतानके पास बहुत थोडी सेना थी। यही हाल भारतका पेशवाई जमानेमें था। जिन पेशवाओंने दक्षिणमें करनाटक और उत्तरमें पंजाब तक विजय किया उनके पास स्वयं बहुतही कम सेना थी। सेनाके खर्चके लिये सरदारोंको जागीरें मिलती थीं। जब कभी काम पडता तुरन्त ही उन सरदारोंको वह काम करनेके लिये हुक्म दिया जाता था। सेन्धिया, होल्कर, रास्ते, पटवर्द्धन वगैरह सर-

दारोंके हाथमें फौजी इन्तजाम था। पेशवाई जमानेकी यह पद्धति अच्छी नहीं थी। जब दूसरे वाजीरावके गद्दी पर बैठनेका समय आया तब उनको अपने अधिकार स्वरक्षित करनेके लिये पूनासे गवालियर तक दौड धूप करना पडी। यह वात इतिहासप्रसिद्ध है। इस प्रकारकी पद्धतिसे बहुत हानि होती है। एकाके हाथमे अधिकार न रहनेके कारण राजसूत्रके रेशे एकसे नहीं रहते और राजकाजमे विघ्न उपस्थित होते है। जबतक राजा बलवान होता है तबतक सरदारी पद्धति ठीक ठीक चलती है परन्तु राजाके कमजोर होने पर सरदार लोग राज्यमें बडी गडवड़ मचा देते हैं और और सन् १८१८ की तरह शत्रुपक्षसे मिलकर झगडे बखेडेका काम करनेमें कमी नही करते। गत शताब्दीमें जो पूने का हाल था वही सरदारीपद्धतिके कारण उस समय टर्कीमें था। वहां पाशाकी पद्धति थी। सुलतान अपने राज्यमेसे कुछ भाग पाशाको देदेते थे और उसके बदले सेना रखते और काम पडने पर सुलतानको मदद देनेका काम उनके सपुर्द था। इस पद्धतिके कारण पाशा लोग बिलकुल स्वतन्त्र होगये और आपसमेंही लडने लगे। सुलतानको खुशामदसे खुश करके प्रजाको कष्ट पहुचाने लगे। इस प्रकार लोग पाशाओंके अत्याचारसे दुःखित होकर स्वतन्त्रताके लिये प्रयत्न करने लगे।

राजा और प्रजाका उस समय टर्कीमें वैसाही सम्बन्ध था जैसा आजकल भारतमें है। अपनी इच्छाके अनुसार अफसरोंका मुकर्रर करना और वह चाहे जैसा काम करे उनकी ओर ध्यान न देना यही सुलतानकी टर्कीमें चाल थी। सुलतान पाशासे कर लेते थे पाशा उस धनको आगासे वसूल करता और आगा सिपाहियोंसे। सिपाही गरीब किसानोंसे धन वसूल करके शान्त होते। भारत और टर्की दोनोमें जमीनकी मालगुजारी राजा लेता है। यहां आजकल लेण्डएक्ट(भूमिकेकानून) द्वारा लोगोंने इसबातको स्वीकारकरलिया है। पर टर्कीमें सुलतान साफ कहतेथे कि हमने जमीनको जीता है

इसलिये वह हमारी है। लोगोंके मनको दुःखित न करके उन्हें समझा बुझाकर प्रसन्न रखना सुलतान जानतेही न थे। जमीनके ऊपर सरकारी हक होनेके कारण स्थावर जायदाद पैदा करनेकी ओर किसीका ध्यान न था। जिनके ऊपर न्याय करने और लोगों की रक्षा करनेकी जिम्मेदारी थी वह सब लोग प्रजासे जबरदस्ती धन लेते और उनको तंग करते थे। टर्कीके लोगोंने अपनी धर्म्म-पुस्तकको एक ओर रख दिया था और अपने स्वार्थकी पुस्तकको खोल दिया था। यदि कोई ग्रीस व्यापारी धनाढ्य होता दिखाई देता तो तुरन्त उसकी जड काट दी जाती थी। जिसके जीमें आता वही दूसरेकी जमीन दबाकर बैठ जाता। यदि कोई शराब पीकर बेहोश हुआ और नशेमें किसी भलेमानस ग्रीकको मार डाला तो उसकी कहीं दाद फरियाद न थी! इस प्रकार ग्रीकों पर नाना प्रकारके अत्याचार होते थे। इस दुर्दशासे छूटनेके लिये ग्रीकोंने अपने स्वतन्त्र होनेका उपाय सोचा, स्वतन्त्र होनेके लिये यथासाध्य उद्योग भी करने लगे।

ग्रीसदेश टर्किश साम्राज्यके आगे एक बहुतही छोटासा दिखाई पडता था। उसका क्षेत्रफल इक्कीस हजार वर्गमील और जनसंख्या सात लाखके करीब थी। इतने थोड़े आदमियोंने टर्किश साम्राज्य के विरुद्ध लडकर अपनी स्वतन्त्रता फिरसे स्थापित की यह बडे आश्चर्यकी बात है। उन लोगोंके मनमें स्वतन्त्रताकी इच्छा कैसे उत्पन्न हुई इसकी बाबत भी बहुतोंको कौतूहल मालूम पड़ता है। क्योंकि गुलामीमें सुख नहीं, यह बात नहीं। परन्तु गुलामी की दशामें रहना अज्ञानताका लक्षण है। ग्रीक लोगोंमें ज्ञान बढनेके साथ साथही स्वतन्त्रताकी इच्छा बढती गई। तुर्कोंके अत्याचारके कारण भारतवर्षके लोगोंकी तरह ग्रीक लोग बिलकुल कंगाल नहीं होगये थे। उनके पास बहुत कुछ सम्पत्ति एकत्र थी। यूरोपके अन्यान्य ईसाई राष्ट्रोंको ज्ञानसम्पन्न और स्वतन्त्र देख कर ग्रीक लोगोंकी इच्छा उनके समान ज्ञानसम्पन्न और स्वतन्त्र

होनेकी हुई। चारसौ वर्षसे बराबर इनके ऊपर तुर्कलोग हुकूमत और अत्याचार करते थे। परन्तु इस प्रकार अत्याचार सहकर भी उन्होंने अपना कुछ अधिकार स्थिर रखा। अपने देश अपने धर्म्म और स्वभाषाका उन्हें मुसलमानी राज्य होने पर भी अभिमान बना रहा। जहां पर भावी स्वतन्त्रताका बीज बना रहता है; वहां पर विदेशियोंका कितनाही अत्याचार कितनेही दिनोंसे क्यों न चला आता हो, समय आने पर वह लोग जरूर स्वतन्त्र होजाते हैं। मुसलमानोंका धर्म्म स्वीकार करनेसे क्या होता है? उनकी भाषा बोलनेसे क्या लाभ? इस प्रकारके विचार ग्रीक लोग बहुधा किया करते थे। मुसलमान लोग उन पर बहुतही अधिक अत्याचार करते थे परन्तु ग्रीक लोगोंने कभी ईसाई धर्म्म नहीं त्याग किया। ग्रीकके बडे बडे शहरोंमें मुसलमानोंने मसजिदें बनवाईं परन्तु छोटे छोटे गांवोंमें ईसाई धर्मके अनुसार उन्होंने अपने चर्च कायम रखे। स्वाभिमानके जिस ज्ञानके सहारे उन्होंने अपनेमें निजत्व कायम रखा; उसी ज्ञानके प्रकाशसे वह स्वतन्त्र हुए। ग्रीक लोग व्यापार करनेके लिये यूरोपके अन्य स्वतन्त्र राज्योंमें आते जाते थे और उनकी स्वतन्त्रता देखकर स्वयं भी स्वाधीन होनेकी इच्छा करते थे, स्वतन्त्रताके उद्देश्यसे ही ग्रीकके बडे बडे शहरोंमें लोगोंने मदरसे खोले, ग्रीसकी प्राचीन उत्कृष्ट और प्रसिद्ध प्रचलित भाषामें अनेक प्रकारकी उत्तम उत्तम पुस्तकोंके अनुवाद हुए। उन पुस्तकोंको पढकर ग्रीकोंमें और भी अधिक उत्साह और साहस उत्पन्न हुआ। होमरने जिस भाषामें अपने ग्रन्थ लिखकर अपनी कीर्तिको अजरामर किया है वह हमारी मातृभाषा है, प्लेटो और सुकरातने जो हमें सिखाया वही हमारा तत्वज्ञान है, प्लाटेयस और और अथेनियंस इतिहासप्रसिद्ध वंशमें हमारा जन्म और थर्मापिली सरीखी पवित्र भूमि हमारा देश है; इस प्रकारकी कल्पनाएं इन की आंखोंके सामने नाचने लगीं और वह दिनोंदिन स्वतन्त्रताके लिये अधिक व्याकुल और चिन्तित होने लगे। अपने देशको

जुल्मसे छूटना और स्वतन्त्र होनेका प्रयत्न करना था। तीसरे भाग में दूसरे दर्जेके लोगोंसे अधिक उच्च विचारके लोग लिये जाते थे। इनको यह बात बताई जाती थी कि गदरका समय अब बहुतही समीप है और इस सभामें आपसे भी बडे बड़े लोग मौजूद हैं। इस भागमें ज्यादातर ग्रीकके धर्माधिकारी लोग शामिल हुए थे। चौथे भागमें केवल सोलह आदमी थे उनके नाम प्रगट नहीं हुए; परन्तु रूसके जार, बवेरियाके युवराज वगैरह बड़े बड़े लोग इसमें शामिल थे। इस सभाकी बैठक मास्कोमें होती थी और सभाकी आज्ञाओंका प्रचार सांकेतिक अक्षरों द्वारा किया जाता था। संकेत के सब शब्द सभासदोंको आरम्भमें ही बता दिये जाते थे। इस प्रकारकी गुप्त सभाके स्थापित हुए बहुत दिन होगये, तोभी मुसलमानोंने उनकी दाद फरियाद कुछ न सुनी। अन्तमें सन् १८२१ ई० में गदर आरम्भ होगया।

यह तो हुआ मनुष्यके प्रयत्नका इतिहास। यदि इस काममें ईश्वरीय सहायता न होती तो इतना महत् कार्य्य किस प्रकार देशव्यापी होकर पूर्ण होता। जिस प्रकार पृथ्वी पर भूकम्प होनेके लिये अग्निकी लहरें पृथ्वीके अन्दर उठती है उसी प्रकार पृथ्वीके ऊपर लोगोंके हृदयमें गदरकी लहरें उठती है। उस समय एक ऐसीही लहर यूरोपमें सर्वत्र फैल रही थी जिसका धक्का पहलेपहल स्पेन देशमें लगा। सन् १८२० ई०में पहले पहल स्पेनहीमें गदर मचा। पीछे नेपल्स, सिसली पिटमांट, जर्मनी वगैरह युरोपके देशों में इसकी लहर धीरे धीरे फैल गई और अन्तमें सबसे पीछे यह लहर युरोपके एक किनारे ग्रीसमें पहुंची। हिटेरिया नामकी सभाने लोगोंके विचार पहलेसेही बदल रक्खे थे; इस कारण लोगोंको मालूम हुआ कि हमें स्वतन्त्रता मिलनेका समय आगया है। अन्य देशोंसे ग्रीकोंमें गदरकी कल्पनाकी उत्तेजना मिलने लगी। अन्य पड़ोसी देशोंवाले गुप्तरीतिसे ग्रीकोंको धन और अन्न नगरकी सहायता पहुंचाने लगे। स्वतन्त्रताकी प्रबल

इच्छा, आत्मशासन प्रणाली द्वारा राज्य चलानेकी उत्कट लालसा और मुसलमानोंके अत्याचारसे छूटनेकी मनकामना ग्रीक लोगों के मनको जोश दिलानेके लिये एकत्रित हुईं। ग्रीसदेशमें स्वतन्त्रताके लिये गदर करनेका आन्दोलन होने लगा। उस समय टर्कीकी सेनामें भी असन्तोष फैल गया था। टर्कीके सुलतानको बाहरी शत्रुकी अपेक्षा अपने सिपाहियोंका अधिक भय था। समय अनुकूल आया जानकर ग्रीकोंने विद्रोह आरम्भ कर दिया। वलेश्रिया नामका टर्कीमें एक प्रान्त है। वहींसे लोगोंने विद्रोह आरम्भ किया। वहांका पहला गवर्नर मर गया और नया गवर्नर नियत होनेवाला था। ऐसे समय पर हिटोरिस्टोंने विद्रोह फैलाना निश्चय किया। रूसी फौजमें थियोडर नामका एक लफटनट् कर्नल था वह हिटोरिस्टोंका अगुआ बना। उसने अपने साथ डेढसौ किसान लेकर जरविट्स नामका एक शहर अपने अधिकार में कर लिया और एक विज्ञापन निकाला जिसमें लिखा था— "तुम्हारी स्वाधीनताका समय समीप आगया है। अब तुम शस्त्र लेकर उठो और जो लोग तुम्हारे ऊपर अत्याचार करते हैं उनके अत्याचारका अन्त कर डालो।" इसी प्रकारकी बातें उस विज्ञापनमें लिखी थीं। राजकीय अत्याचारके कारण लोगोंमें इतना असन्तोष फैल गया था कि इस विज्ञापनके प्रकाशित होतेही थियोडरके झंडेके नीचे बहुत जल्द करीब दस हजार किसान इकट्ठे होगये।

इसके थोड़े दिन बादही टर्कीके मोल्डेविया नामक प्रान्तकी राजधानी जसीमें विद्रोह हुआ। प्रिंस अलेकजेण्डर इप्सलन्टी वहांके लोगोंका नेता बना। यह भी रूसकी फौजमें किसी समय पर अधिकारी था। सन् १८१५ में नेपोलियनसे सुलहनामा होने के बादसे यह वीर युवा हिटोरिस्टोंकी गुप्तसभामें आमिला। दो सौ सवार लेकर इसने विद्रोह आरम्भ किया और आगे लिखा हुआ विज्ञापन ग्रीकोंमें बांटा—

"देशवान्धवगण। इस समय ग्रीस देशमें स्वतन्त्रताकी अग्नि प्रज्वलित हुई है और उसने अत्याचारका भार अपने ऊपरसे उतार दिया है। मानव जातिके स्वतःसिद्ध अधिकार फिरसे पानेकी इच्छा हममें उत्पन्न हुई है। ऐसे कठिन समयमें मुझे अपना कर्तव्य कर्म इधर घसीट लाया। मैं अपना कर्तव्य कर्म करनेको तय्यार हूं। तुम्हारे जान मालको कुछ भी हानि नहीं पहुंचेगी। अतएव सार्वजानिक सुखप्राप्ति के लिये तय्यार होजाओ। अगर कोई तुर्क तुम्हारे ऊपर हमला करे तो तुम उससे बिलकुल मत डरो। उसको दण्ड देनेके लिये तुम्हारा सहाय तुम्हारे साथ है।"

रूस सम्राट जार अलेकजेण्डर विद्रोहियोंको उत्तेजना देते हैं यह विचार बहुतसे ग्रीकोंका था और ऊपर लिखे विज्ञापनसे यह बात और भी दृढ़ होती थी इससे तमाम ईसाई उठखड़े हुए; उन्होंने लूट मार करना आरम्भ कर दिया और बन्दरगाह विद्रोहियोंने अपने अधिकारमें करके वहांके सब जहाज और तोपें हस्तगत कर लीं। इप्सलन्टीका विज्ञापन लोग बडे शौकसे पढते और उसको सहायताके लिये चन्दा इकट्ठा करके उसके पास भेजने लगे। विद्रोहियोंकी संख्या करीब बीस हजारके थी। इप्सलन्टीने सेक्रेड बटालियन नामकी एक पल्टन तय्यार की जिसमें ग्रीसदेशके युवा और उत्साही वीर भरती किये गये और सबको काली पोशाक पहननेको दी गई थी। उस पर क्रासका चिन्ह बना दिया गया था। इस प्रकारसे स्वतन्त्रता रूपी वृक्ष धर्म रूपी जलसे सींचा गया जिसके कारण वह बहुत जल्द हराभरा होकर फल देने योग्य होगया। धर्मके सहारे लोगोंने और भी अधिक उत्साहके साथ गदरमें काम किया।

ग्रीस देशमें राज्यविद्रोह किस प्रकार आरम्भ हुआ इसका वर्णन ऊपर किया जाचुका है परन्तु इसके होनेका कारण क्या है? यह बात समझमें नहीं आई। क्योंकि अगर यह कहा जाय कि तुर्कोंके अत्याचारने ग्रीसवासियोंके मनमें विद्रोह करनेकी इच्छा

उत्पन्न हुई तो यह बात ठीक नहीं हैं। आजकल संसारमें बहुतसी ऐसी जातियां है जो गुलामीकी दशामें हैं उन पर ग्रीकोंसे अधिक अत्याचार होते है। यदि यह कहा जाय कि उस समय ग्रीसवालोंके पास राजविद्रोह करनेकी सामग्री मौजूद थी तो यह भी ठीक नहीं है। दूसरे लोगोंके पास भी साधन मौजूद हैं, वह क्यों नहीं स्वतन्त्र होसके ? इतिहासमें इसके कई एक उदाहरण मिल सकते हैं।

राजविद्रोह क्यों होता है ? अधिक अत्याचार होनेसे ? बहुत लोगोंकी यही राय है कि अत्याचारकी परमावधि हुए विना लोग उस अत्याचारीके विरुद्ध खडे नहीं होते। परन्तु यह गुलामीका तत्वज्ञान विलकुल गलत है। पत्थरको पीटने, वृक्षको जडसे नष्ट कर देने अथवा कीड़े मकोडोको पैरके नीचे कुचल डालनेसे वह राजद्रोह नहीं करते। तो क्या उन्हें राजद्रोही करनेके लिये अधिक अत्याचारकी जरूरत है ? नहीं ; जिनके ऊपर अत्याचार होता है उन्हें इस वातका ज्ञानही नहीं है। इसलिये यह कभी सम्भव नहीं है कि वृक्ष और कीडे मकोड़े अत्याचारका वदला लें। अधिक या थोडे अत्याचार पर राजविद्रोह मुनहसर नहीं है। अत्याचार का ज्ञान होनाही राजविद्रोहका आदि कारण है। फ्रांस और ग्रीसके राजविद्रोहमें यही वात दिखाई पडती है। जब लोगोंको इस बातका ज्ञान होजाता है कि हमारे ऊपर अत्याचार होरहा है और गुलामीकी हालतमें रहकर अत्याचार सहन करना बहुतही बुरा है तब उनके हृदयमें स्वतन्त्रताका प्रकाश पडता है और वह विद्रोहके लिये उद्योग करने लगते हैं।

उन्नीसवी शताब्दीके प्रथम चरण तक ग्रीकोंने विना आह किये मुसलमानी अत्याचार सहन किये। परन्तु आगे वह सह न सके। उन्होंने जिन जिन अत्याचारोंको सहा उनमें और आजकलकी हमारी स्थितिमें कुछ कुछ समानता पाई जाती है। ग्रीक और तुर्कके बीच कुछ लड़ाई झगडा होता तो वहां ग्रीकको न्याय पाने

की बिलकुल आशा न थी। टर्कीमें मुसलमानोंको दण्ड देनेके लिये कोई कानून अथवा अदालतही न थी। हमारे देशकी ऐसी खराब हालत नहीं है। इस देशमें गोरे और कालोंके बीचमें कुछ झगडा हो तो नेटिवके साथ सुविचार होनेकी यहां भी कम आशा है। यह बात आजकलके तजरबेसे साफ मालूम होती है। परन्तु गोरोंको दण्ड देनेके लिये कानून अथवा अदालतें इस देशमें नहीं है यह बात नहीं। वैसी शोचनीय स्थिति भारतकी नहीं है। सरकारी मालगुजारी अदाकरनेमें जो जो कष्ट भारतवासियोंको भुगतने पडते हैं वैसेही ग्रीसवालोंको भीभोगना पड़तेथे। इनके अलावा सबसे भारी अत्याचार उनपर यह होताथा कि जो गरीब ग्रीक मालगुजारी का रुपया किसी कारण नहीं अदा कर सकता था उसके छोटे छोटे बच्चोंको सरकारी कर्मचारी पकाड़ लेजाते थे और उनसे नीच काम लेते थे। इन बालकों द्वारा टर्कीके सुलतानने एक फौज तय्यार की थी और उसका नाम 'जेनी सिरीज' रखा था। इस सेना के सिपाहियोंकी शूर वीरता और पराक्रमकी तारीफ सारे देशमें फैल गई थी। इन बालकोंसे उस समय काम क्या लिया जाता था यह जानकर पाठकोंको बडा आश्चर्य होगा। ग्रीसके ईसाइयों के इन बालकोंको यह काम सौंपा गया था कि वह अपनेही माता पिताको गुलाम बनाये रखें जिससे सुलतान की इच्छा पूरी हो। भारतवर्ष और ग्रीसमें इसमें भी कुछ समानता पाई जाती है। ग्रीसकी तरह भारतमें भी बहुतसे बालकोंको बाल्यावस्थामेंही अपने मातापितासे अलग होना पडता है। मालगुजारीकी कडाईके कारण लोग यहां दिनोदिन गरीब होते जाते हैं। अन्तमें उनकी इतनी शोचनीय दशा होजाती है कि पैसा पास न होनेकेकारण उनको अपना धर्मत्याग करना पड़ता है। पेट बुरी बला है। बिना अन्न खाये जीवन निर्वाह नहीं होसकता इसीसे लोग अपने बालबच्चोंको दुःखित होकर स्वधर्म त्याग करानेको मजबूर होते हैं। भारतवासियोंको

भी ग्रीक लोगोंके समान अत्यन्त दीन दशा होरही है। परन्तु हमारे प्रभु अङ्गरेज बडे दयालु और न्यायी हैं। वह टर्कीके सुलतानकी तरह गरीबोंके लडकोंको मा बापसे जबरदस्ती छीन नहीं लेते। प्राण रहते कभी अङ्गरेज इस प्रकारका प्रगट अत्याचार करनेवाले नहीं। वह हमारे बालकोंको जबरदस्ती पकडकर और विधर्मी बनाकर अपनी सेनामें भरती नहीं करते; तो भी यह बात झूठ नहीं कि बहुतसे भारतवासियोंकी सन्तान अपने मा बाप के हाथसे निकलकर ईसाइयोंके हाथमें जाती है। जिन लोगोंने अकालके दिनोंमें मिश्नरियोंको काम करते देखा है; उनके अनाथालयोंके दर्शन किये हैं वह भलीभांति जानते होंगे कि कितने बालकोंको रोटीके कारण अपना धर्म्म त्याग करना पडता है। इन देशी बालकोंको ईसाई मिश्नरी उनके मा बापसे जबरदस्ती नहीं छीन लेते; परन्तु धनहीन, अन्न वस्त्रहीन होनेके कारण लाचार होकर लोगोंको अपनी प्रिय सन्तान मिश्नरियोंके हवाले करना पडती है। भारतवर्षके यही बालक ईसाईधर्म्ममें पलकर बडे होनेपर अपने माता पिता अथवा स्वदेशबान्धवोंके कैसे गुप्त शत्रु बन जाते हैं यह बात पाठकोंको बतानेकी जरूरत नहीं है। इससे यह नहीं कह सकते कि दरिद्रताके कारण बालक देनेकी चाल हमारे देशमे नहीं है। दूसरे यहांके काले सिपाही अङ्गरेजोंके एक प्रकारके 'जेनीसिरीज' हैं—यह कहनेमें भी किसी प्रकारकी हानि नहीं है। टर्कीमें सुलतानकी जेनीसिरीज विजित लोगोंमेंसे कुछ मनुष्योंकी सेना कहलाती थी। उन लोगोंको मा बाप, भाई बन्द, देश धर्म्म वगैरह किसीका भी स्मरण नहीं था। वह अपने देशबान्धवोंको सुलतानका गुलाम सदैव बनाये रखनेकी चेष्टा करते थे। इस प्रकार के लोग भारतमें भी हैं। गरीबीके कारण जिनको पेट भर अन्न नहो मिलता वही भारतवासी जेनिसरीज' सरकारी नौकरीमें पैर रखते है। वह अपने मा बाप, भाईबन्द, देशधर्म्म सबको भूलजाते हैं, अपने देशबान्धवोंको गुलाम बनाये रखनेके काममें सहायक होते

हैं। इस बातमें भारत और ग्रीस दोनो देशोंमें बहुत कुछ समानता है। परन्तु इस साम्यतामें भी एक वैषम्य है। वह किसीको भूलना नहीं चाहिये। भारतमें यद्यपि ग्रीसकीभांति परिणाम निकलता है तथापि यहां किसीके ऊपर किसी तरहका अत्याचार अथवा सख्ती नहीं होती। पादरी छोटे छोटे बालकोंको लेजाते हैं और इण्डियन 'जेनिसरीज' स्वदेशके विरुद्ध आचरण करते हैं; परन्तु ऐसा कोई नियम नहीं है कि लोगोंको अपने बालक देनाही हो अथवा किसीको 'जेनीसिरीज' होनाही हो और न इसके लिये किसी तरहका अत्याचार होता है। हम लोग गरीबीके कारण इस प्रकारका काम खुद स्वीकार करते हैं यह हमाराही दोष है इसमें सरकारका कुछ भी दोष नहीं। इस दृष्टिसे देखने पर भी यह बात जाहिर होती है कि भारतकी अपेक्षा उस समय ग्रीसकी स्थिति हजारों गुनी अधिक भयंकर होगई थी। ग्रीसके ऊपर सुलतानका इतना अधिकअत्याचार होगयाथा कि उसका बदला उन्हें जरूर मिलना चाहिये था। ऐसा भयंकर अत्याचार करनेवालोंको सृष्टिके नियमके अनुसार कभी न कभी अत्याचारके पापका फल भोगनाही पडता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर बीज बोनेसे अंकुर अवश्य निकलता है अथवा आसमानकी तरफ पत्थर फेंकनेसे वह फिर लौटकर नीचे जरूर आता है उसी प्रकार अत्याचारी राजाका अत्याचार करनेके पश्चात् नाश अवश्यही होता है और अत्याचारसे दुःखित और पीडित प्रजा अवश्यमेव स्वाधीनताका सुख लाभ करती है। सृष्टिकर्त्ताका यह नियम कभी झूठा नही होता है। इसी नियमके अनुसार ग्रीकोंके मनमें स्वतन्त्रताकी स्फूर्ति उत्पन्न हुई। उस समयके ग्रीकोंकी स्थितिकी बाबत एक इतिहासकारने यह लिखा है—

"The sacred right of rebellion had come almost revelation to the [illegible] of Turkish misrule, and [illegible] hey re[illegible] that the casting off of a

yoke was a solemn duty, than they became from that very moment practically free."

तात्पर्य्य यह कि मन सूतन्त्र होनेसे शरीर सूतन्त्र होनेमें अधिक विलम्ब नहीं लगता। टर्कोंका जुल्म अब हमें नहीं सहना चाहिये हमें सूतन्त्र होना चाहिये; ऐसी बुद्धि ग्रीकोंके मनमें उत्पन्न होतेही उनके सब काम भिन्न प्रकारके होने लगे। ग्रीकों पर जिस तरह सुलतान अत्याचार करते थे उसी प्रकार ग्रीक भाषा पर मुसलमानी भाषाका अत्याचार था। नये नये मुसलमानी शब्द ग्रीक भाषामें घुस चले थे और पुराने मूल ग्रीक भाषाके शब्द वहां की भाषासे निकाल बाहर किये जाते थे। अपनी भाषाके ऊपर जो अत्याचार होरहा है उसे बन्द करने और अपनी मातृभाषाको सूतन्त्र करके पुनः प्राचीन वैभव पर लानेकी इच्छा ग्रीकलोगों के मनमें उत्पन्न हुई। इसके लिये उन्होंने अपनी भाषामें जो तुर्की शब्द घुसगयेथे उनको निकालकर और उनकेबदले पुराने ग्रीक शब्द तलाश कर व्यवहारमें लाना आरम्भ कर दिया। मनुष्यका मन सब जगह एक समानही है। आजकल हमारे यहां जो नागरीप्रचारिणी सभाएं प्रयत्न करती हैं उसमें और ग्रीकोंके काममें क्या अन्तर है? हमारी देशभाषामें बहुतसे अंगरेजी शब्द घुस गये हैं। आजकल इस देशके बहुतसे लोगोंमें भी यह इच्छा उत्पन्न हुई है कि अङ्गरेजी न लिखें न बोलें। यह इच्छा दिनोंदिन इस देशमें भी प्रबल होती जाती है। परन्तु अंगरेज़ी भाषामें बहुतसे उत्तम विचार मौजूद हैं जिनकी आजकल हमको बहुतही ज्यादा जरूरत है। अतएव हमको अंगरेजी भाषाका बहुतही अधिक आदर और प्रचार करना चाहिये परन्तु अङ्गरेजी पढ़कर अपनी मातृभाषा भूल न जाना चाहिये। यहां हम एक उदाहरण देते हैं जिससे प्रगट हो जायगा कि ग्रीकोंको तुर्की भाषासे कितनी घृणा होगई थी। तोप मुसलमानी शब्द है। ग्रीक बहुत दिन तक इसी शब्दका व्यवहार करते रहे। परन्तु तोपकी युक्ति नवीन होनेके कारण ईसासमीह

के पूर्व ग्रीक भाषामें इसके वदलेका कोई शब्द न था अतएव उन लोगोंने उसके लिये एक नया शब्द बना लिया तथापि तोपको शत्रु की भाषाका शब्द समझकर कबूल नहीं किया। इन सब बातोंके कहनेका मतलब यह है कि मनमें जहां एक बार स्वतन्त्रताकी इच्छा उत्पन्न हुई कि फिर वह यथासम्भव स्वतन्त्रता प्राप्त किये बिना नहीं रह सकती। अपनेमें अपनापा लानेके लिये ग्रीक अपने प्राचीन ग्रन्थोंका पठन-पाठन करने कराने लगे। उन ग्रंथोंकी सहायतासे ग्रीकोंके मन पर बहुतही अच्छा असर पड़ा। ग्रीसके प्राचीन ग्रंथोंने एक बार ग्रीकोंको स्वतन्त्रता प्रदान की थी। इन्हीं ग्रन्थोंके सहारे दो हजार वर्ष बाद ग्रीकोंने फिर स्वतन्त्रता प्राप्तकी। शिवाजीके जमानेमें महाभारतके पठन पाठनसे, जिस प्रकार महाराष्ट्र देश स्वाधीन हुआ उसी प्रकार उस समय होमरके पवित्र ग्रन्थ द्वारा ग्रीकोंको स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। ग्रीसको स्वाधीन करनेके लिये सबसे पहले वहांके शिक्षकोंने काम आरम्भ किया। कुछ लोग पहले पहल विद्या प्राप्तिके लिये वेनिसमें गये। दूसरे देशमें जाकर उन्होंने अपनेदेशको भुला नहीं दिया अन्तःकरणसे याद रखा। वहांसे वापिस आकर अथेंसमें स्कूल खोला। यह स्कूल लड़कोंको पढ़ानेके लिये नहीं था; इसमें शिक्षक तय्यार किये जाते थे। जिस प्रकार हमारे यहा ट्रेनिङ्ग कालिज अथवा नार्मल स्कूल है उसी प्रकारका ग्रीसमें यह पहला स्कूल था। इस स्कूलसे शिक्षा पाकर लोग देश भरमें फैल गये और उन्होंने दूसरोंको स्वतन्त्रताकी शिक्षा देना आरम्भ किया। इनके उपदेशका फल भी हुआ। इस शिक्षा प्रचारमें ग्रीसके धनी आदमियोंने भी सहायता दी। तुर्कोंके विरुद्ध किसी ग्रीक धनाढ्यका काम करना बड़ा कठिन था परन्तु धन द्वारा अपने देशवासियोंको सहायता पहुंचाना उनके लिये कुछ भी कठिन न था। अतएव धनाढ्य लोगोंने अपनी अपनी सम्पत्ति खुशीके साथ अपने देशवासियोंके विद्याप्रचारमें लगाना आरम्भ की। राजाके अत्याचारको प्रत्यक्ष रूपसे रोकना बड़ा कठिन काम है परन्तु उस

अत्याचारके कारणों का कारण रोकनेके लिये उपाय सोचना कठिन नहीं है। ऐसे कारण उत्पन्न होजानेके पश्चात् काम आपसे आप आसानीके साथ होने लगता है। विद्याप्रचारकी युक्ति काम में लाना बहुतही अच्छा हुआ। हम लोगोंमें एक प्रकारकी यह धार्मिक धारणा है कि गरीबोंको भोजन करानेसे बहुत पुण्य होता है परन्तु इसका उपयोग ठीक ठीक नहीं किया जाता। गरीबोंको स्वादिष्ट भोजन करानेसे उसका आनन्द क्षण भर ही मिलता है पेटकी ज्वाला अधिकसे अधिक एक दिनके लिये शान्ति होजाती है। एक दिनसे ज्यादा वह दान उन गरीबोंके पेटमें नहीं ठहरता। अतएव इस दानका प्रबन्ध देशकालके अनु-सार होनेसे उसका फल भी अच्छा होता है। यदि गरीबोंको भोजनके साथ विद्यादान भी दिया जाय तो वह कितने दिनों तक उनके पेटमें स्थिर रहेगा इसका विचार स्वयं पाठक करलें। हजार ब्राह्मणोंको भोजन देनेकी अपेक्षा एक ब्राह्मणको विद्या देना अच्छा है। भोजनसे एक दिन पेट भरेगा परन्तु विद्यासे जन्म भर वह अपना पेट आनन्दपूर्वक भर सकेगा। अतएव देशके अमीरोंका इस ओर ध्यान होना देशहितके लिये बड़ा जरूरी है। इसीसे उनकी सम्पत्तिका अच्छा उपयोग होगा और उन्हें धार्मिक विचारसे भी पुण्य जरूर होगा। ग्रीसके अमीर स्कूल खोलकर उसके द्वारा शिक्षक पैदा करकेही शान्त नहीं हुए उन्होंने मुख्य मुख्य स्थानों पर पुस्तकालय खोले और लोगोंसे विद्याप्रचार करने के खयालसे मुफ्त पुस्तकें बांटना आरम्भ कीं। मतलब यह कि ग्रीक लोगोंने अपने देशबान्धवोंको सुशिक्षित करनेके लिये बहुत कुछ प्रयत्न किया जिसके कारण वह स्वतन्त्रता पानेके योग्य हुए। ज्ञानही स्वतन्त्रताकी पहली सीढ़ी है। ग्रीसमें विद्याप्रचारके लिये जिस तरह लोग मिहनत कर रहे थे उसी तरह कवि लोग भी अपना काम करनेसे गाफिल न थे। कवि राष्ट्रके पथप्रदर्शक होते है। उस समय ग्रीसमें कवि भी अपना कर्तव्य पालन कर रहे थे।

उनमें भी स्वतन्त्रताका संचार होगया था। उस समयके कवियों की कविता देशवासियोंकी स्वतन्त्रताका उत्साह दिलानेवाली होती थी। परमात्माने मनुष्यके अन्तःकरणमें स्पर्श करने योग्य कविता-रूपी पवित्र अस्त्र मनुष्यको दिया है। उस शस्त्र द्वारा ग्रीक कवि गुलामीकी स्तुति नहीं करते थे, टर्कीके सुलतानकी प्रशंसा उनके पुत्रका यशवर्णन, उनकी कन्याकी टोपी पर लिखी हुई कविताकी यशपताका, उनके दरवाजे पर रहनेवाले कुत्तोंकी सुन्दरता और उत्तमता पर एक मनोहर काव्य—इस प्रकारकी नीच कविता करके वह कभी अपनी अलौकिक शक्तिका नाश नहीं करते थे। अपने स्वदेशबान्धवोंका मन निर्मल स्वदेशभक्तिकी ओर आकर्षित करनेके लिये वह सरस्वती देवीकी आराधना करके उसे प्रसन्न करते थे। उस समयकी उनकी कवितासे स्वदेशभक्ति और स्वतन्त्रताकी प्रीति धन्य होती है। शत्रुओं पर चढाई करते समय सैनिकगण जातीय गीत गाते थे; जिसके कारण वह अधिक उत्साहके साथ युद्ध कर सकते थे। The Turk shall live no longer, neither in Morea nor in the whole earth.* अर्थात केवल हमारे देशमें ही नहीं वरन् सारी पृथ्वी पर तुर्कोंके रहनेका काम नहीं है। इस भावकी उत्तेजना भरे हुए गीत गाते थे। स्वतन्त्रताकी बाबत उन्होंने अपने एक गीतमें लिखा है—हे स्वतन्त्रता देवी! तेरा तेज बिजलीके समान अद्भुत है तेरे तेजसे निर्दय राजा भस्म होजाते हैं और तेरे आवेशसे शूर वीर पुरुषों में स्फूर्तिका समावेश होता है। तेरा तेज ऐसाही अपूर्व था किन्तु दुर्भाग्यसे तेरा वह तेज ग्रीसमें शान्त होगया! अब तू फिर शान्तिका त्याग करके ग्रीसमें अपना तेज प्रकाशित कर। परमेश्वरने तुझे यह आज्ञा दी है। विदेशियोंके अत्याचारसे दुःखित हमारे देशमें तू आकर फिरसे अपना तेज प्रज्वलित कर। वसन्तमें घन्न गन्न तय्यार हैं। अब केवल तेरी कृपाकी देर है! इतने दिनोंतक हमलोग पहाड़ों और खुले मैदानोंमें रहकर दुःखके साथ

अपना जीवन बिताते रहे। हम अब बिलकुल हताश होगये हैं। परन्तु अब ग्रीसवासी युद्धके लिये तय्यार हैं। हमारे ऊपर चाहे जितना दुःख पडे, हमें विदेशी अधिकारी लोग चाहे कितनाही कष्ट पहुंचावें; हम सब सहन करनेको तय्यार हैं। अब हम किसी विदेशी मनुष्य पर किसी तरहका विश्वास न करके या तो स्वतन्त्रता लाभ करेंगे अथवा लड़ते लड़ते युद्धक्षेत्रमें अपना जीवन समाप्त कर देंगे। अब हम लोगोंका यही अन्तिम कर्त्तव्य है।" अंगरेजी भाषाके प्रसिद्ध कवि लार्ड बैरनने ग्रीकोंकी ऐसी ही एक वीर रसकी कविताका अंगरेजी अनुवाद किया है; उसका भाव यह है;—ग्रीसके सपूतो! उठो। अब बहुतही स्पृहणीय समय आया है। हमने किनके पेटमें जन्म लिया है यह बात अब संसारमें प्रगट करदो। हाथमें शस्त्र लेकर अब शीघ्र शत्रुके सम्मुख चलो। तुर्क लोगोंके अत्याचारको हमने रोकदिया है; गुलामीकी जंजीरें तोड डाली है; यह बात देशवालोंको जल्द बतादो। हमारे मृत पूर्वज महात्माओ! हम स्वतन्त्रताके लिये युद्ध आरम्भ करते हैं; हमारी ओर आप लोग कृपा दृष्टि करो। आप फिर हमारे लिये जन्म लीजिये! हमलोग जो यह रण दुंदुभी बजाते है उसकी आवाज सुनकर अब आप जाग्रत हो और जब तक हम स्वतन्त्र न होजायं तब तक आप हमारी ओरसे लडें। हे स्पार्टादेश! तू अबतक सोयाही पडा है? जिसने अपना देश स्वतन्त्र बनाये रखनेके लिये तीनसौ आदमी लेकर परशियन लोगोंकी सेनाके साथ लडकर थरमापिलीमें विजय प्राप्तकी वह लिओनिडास शूर कहां है? अब आप सब लोग मिलकर हमारी सहायता करो।

ग्रीकलोगोंकी कविताका यह थोडासा नमूना ऊपर दियागया है उससे पाठकोंको ज्ञात होगा कि उस समय ग्रीक लोगोंकी कविता कैसी होती थी और उससे लोगोंके अन्तःकरणमें स्वदेश भक्ति किस प्रकार उत्पन्न हुईथी। वह कविता पढनेसे ग्रीसवालोंको देशभक्ति

याह बहुत कुछ लग सकती है। इसके अलावा और बहुतसे देश-सेवाके काम व्यापार, शिल्पविद्या इत्यादिमें भी ग्रीकलोगोंने बहुत तरक्की की। परन्तु उनकी दशामें बहुत कुछ उन्नति नहीं हो सकी। जितना सुख मिलना चाहिये उतना सुख उन्हें प्राप्त नहीं होता था। इससे उन लोगोंको इस बातका निश्चय होगया कि विना राजकार्य्यकी स्वतन्त्रता प्राप्त हुए कभी हम सुखी नहीं रह सकते। सब प्रकारके उपाय करने पर भी जब ग्रीक लोगोंको किसी तरह सुख स्वतन्त्रता न प्राप्त हुई तब उन्होंने अन्तिम उपाय राज्य विद्रोहका सोचा। ग्रीक लोगोंने किस प्रकार कार्य्य आरम्भ किया इसका वर्णन ऊपर दिया गया है। जब उनके विद्रोहकी खबर कान्सटेन्टीनोपलमें सुलतान मुहम्मदके पास पहुंची उसी समय उसने विद्रोह रोकनेके लिये उपाय किया। ग्रीकलोग ईसाई धर्मके अनुयायी थे। इनके आचार्य कानस्टन्टिनोपलमेंही रहते थे। ईसाई धर्मके अनुयायियों को अपने अधीन रखनेके इरादेसे सुलतान ईसाई धर्मके आचार्य की बडी इज्जत करते थे। आचार्यके धार्मिक दबावसे ईसाईलोग आनन्द पूर्वक हमारे आधीन रहें इसी दुष्ट कामनाके हेतु, सुल-ताननें आचार्यको हर प्रकारका सुख देनेकी व्यवस्थाकी थी। इसी कारण कानस्टन्टिनोपलमें ईसाई धर्माचार्य सुलतानके [illegible] आनन्द पूर्वक रहते थे। जब ग्रीकोंने विद्रोह आरम्भ किया तब सुलताननें आचार्यसे कहा कि आपलोगों पर प्रगट करदे कि यह विद्रोह हमारी इच्छाके विरुद्ध कियागया है। यह हुक्म सुलतान ने आचार्य महाशयको दिया और पेट्रियार्क ग्रेगारियसने इस हुक्म की तामील की। ग्रेगारियसका यह काम किसीको पसन्द न आया। धर्माचार्य धर्मका उपदेश देनेके लिये है। अन्यायी राजा [illegible] दासत्व शृंखलामें लोगोंको बांधना उनका काम नहीं है। धर्म बहुत ही पवित्र वस्तु है। जिसके द्वारा मनुष्य बंधनसे [illegible] [illegible] धर्म है। परन्तु अन्यायी दुष्ट राजा अपने दुष्ट [illegible]

को रखनेके लिये धर्मका उपयोग करते हैं। इससे अधिक निन्द-नीय और क्या बात होसकती है? धर्माचार्य, लोगोंको अधर्मसे बचानेवाले है। वह लुटेरे, डाकू, हिंसा करने वाले अथवा अन्यायी राजाके साथी नहीं हैं। परन्तु सुलतान मुहम्मदने ग्रेगोरियसको अपना साथी बनाया! आचार्यकी बनावटी बातेंके कारण लोगोंने अपना काम नहीं छोडदिया वरन् आचार्य महाशयको उनके पापके बदले बहुतही जल्द दण्ड भोगना पडा। एकदिन सुलतान मुहम्मद के मनमें यह आशंका हुई कि हिटेरिस्टोंकी गुप्त सभामें यह ईसाई धर्माचार्य भी गुप्त रूपसे मिला हुआ हैं। उसने इसी आशंका पर ग्रेगोरियसको फांसीकी आज्ञा दी। सुलतानके इस अन्यायसे अधिक दुःखित होकर ग्रीकलागोंने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। वह सुलतानकी प्रजा थे इस कारण उनके विद्रोह करने पर सुलतानको क्रोध आना एक सहज बात थी। यूरोपके अन्य राजाओं को इससे घबरानेका कोई कारण न था। पर वह लोग भी ग्रीसका विद्रोह देखकर घबरा गये! उस समय यूरोपमें Holy alliance के एक मुख्य राजाने अपनी इच्छा प्रकट की कि यूरोपमें किसीको स्वतन्त्र होनेदेना नहीं चाहिये। यदि कोई अपनी इच्छा और प्रयत्नसे स्वतन्त्र होसके तो उससे किसीको कुछ हानि नहीहै। परन्तु अपना काम अगर सिद्ध न हो तो दूसरेका भी काम सिद्ध न होने देना चाहिये यह उसका मतलब था। ऐसे दुर्जनो का क्या नाम रक्खा जावे यह बात भर्तृहरिको भी न सूझी। उन्होंने साफ लिख दिया हैकि हम उनका नाम तक नहीं जानते जो दूसरो को बिना कारण हानि पहुंचाते हैं। होली एलायन्समें कितनेही साधुपुरुष भी शामिल थे इस कारण उस समय अन्यायी राजाओंको मानो अपनी प्रजा पर यथेच्छ अत्याचार करनेकी सनद मिल गई थी। रूस, आस्ट्रिया, फ्रांस और इङ्गलेण्डही इसमें मुख्य थे। इनमें से किसीकी इच्छाके विरुद्ध ग्रीक विद्रोह नहीं करते थे। तो भी उन्हें विद्रोह करनेसे रोकनेका उन्होंने निश्चय किया! ग्रीसवाले

थाह बहुत कुछ लग सकती है। इसके अलावा और बहुतसे देश-
सेवाके काम व्यापार, शिल्पविद्या इत्यादिमें भी ग्रीकलोगोंने बहुत
तरक्की की। परन्तु उनकी दशामें बहुत कुछ उन्नति नहीं हो
सकी। जितना सुख मिलना चाहिये उतना सुख उन्हें प्राप्त
नहीं होता था। इससे उन लोगोंको इस बातका निश्चय
होगया कि बिना राजकार्य्यकी स्वतन्त्रता प्राप्त हुए कभी हम
सुखी नहीं रह सकते। सब प्रकारके उपाय करने
पर भी जब ग्रीक लोगोंको किसी तरह सुख स्वतन्त्रता न
प्राप्त हुई तब उन्होंने अन्तिम उपाय राज्य विद्रोहका सोचा! ग्रीक
लोगोंने किस प्रकार कार्य्य आरम्भ किया इसका वर्णन ऊपर
दिया गया है। जब उनके विद्रोहकी खबर कान्सटेन्टीनोपलमें
सुलतान मुहम्मदके पास पहुंची उसी समय उसने विद्रोह रोकनेके
लिये उपाय किया। ग्रीकलोग ईसाई धर्मके अनुयायी थे। इनके
आचार्य कानस्टन्टिनोपलमेंही रहते थे। ईसाई धर्मके अनुयायियों
को अपने अधीन रखनेके इरादेसे सुलतान ईसाई धर्मके आचार्य
की बडी इज्जत करते थे। आचार्यके धार्मिक दबावसे ईसाईलोग
आनन्द पूर्वक हमारे आधीन रहें इसी दुष्ट कामनाके हेतु, सुल-
तानने आचार्यको हर प्रकारका सुख देनेकी व्यवस्थाकी थी। इसी
कारण कानस्टन्टिनोपलमें ईसाई धर्माचार्य सुलतानके [illegible]
आनन्द पूर्वक रहते थे। जब ग्रीकोंने विद्रोह आरम्भ किया तब
सुलतानने आचार्यसे कहा कि आपलोगों पर प्रगट करदें कि यह
विद्रोह हमारी इच्छाके विरुद्ध कियागया है। यह हुक्म सुलतान
ने आचार्य महाशयको दिया और पैट्रियार्क ग्रीगोरियसने इस हुक्म
की तामील की। ग्रीगोरियसका यह काम किसीको [illegible]
[illegible]। धर्माचार्य धर्मका उपदेश देनेके लिये हैं। [illegible]
[illegible] परतन्त्र शृंखलामें लोगोंको बांधना उनका काम नहीं था।
[illegible] धर्म इतना ही पवित्र वस्तु है। जिनके द्वारा मनुष्य बंधनसे [illegible]
[illegible] परन्तु [illegible] अपने दृढ [illegible]

को रखनेके लिये धर्मका उपयोग करते हैं। इससे अधिक निन्द-नीय और क्या बात होसकती है? धर्माचार्य, लोगोंको अधर्मसे बचानेवाले हैं। वह लुटेरे, डाकू, हिंसा करने वाले अथवा अन्यायी राजाके साथी नहीं हैं। परन्तु सुलतान मुहम्मदने ग्रेगोरियसको अपना साथी बनाया! आचार्यकी बनावटी बातेंके कारण लोगोंने अपना काम नहीं छोड़दिया वरन् आचार्य महाशयको उनके पापके बदले बहुतही जल्द दण्ड भोगना पड़ा। एकदिन सुलतान मुहम्मद के मनमें यह आशंका हुई कि हिटेरिस्टोंकी गुप्त सभामें यह ईसाई धर्माचार्य भी गुप्त रूपसे मिला हुआ है। उसने इसी आशंका पर ग्रेगोरियसको फांसीकी आज्ञा दी। सुलतानके इस अन्यायसे अधिक दुःखित होकर ग्रीकलोगोंने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। वह सुलतानकी प्रजा थे इस कारण उनके विद्रोह करने पर सुलतानको क्रोध आना एक सहज बात थी। यूरोपके अन्य राजाओं को इससे घबरानेका कोई कारण न था। पर वह लोग भी ग्रीसका विद्रोह देखकर घबरा गये! उस समय यूरोपमें Holy alliance के एक मुख्य राजाने अपनी इच्छा प्रकट की कि यूरोपमें किसीको स्वतन्त्र होनेदेना नहीं चाहिये। यदि कोई अपनी इच्छा और प्रयत्नसे स्वतन्त्र होसके तो उससे किसीको कुछ हानि नहींहै। परन्तु अपना काम अगर सिद्ध न हो तो दूसरेका भी काम सिद्ध न होने देना चाहिये यह उसका मतलब था। ऐसे दुर्जनो का क्या नाम रक्खा जावे यह बात भर्तृहरिको भी न सूझी। उन्होंने साफ लिख दिया हैकि हम उनका नाम तक नहीं जानते जो दूसरो को विना कारण हानि पहुंचाते है। होली एलायन्समें कितनेही साधुपुरुष भी शामिल थे इस कारण उस समय अन्यायी राजाओंको मानो अपनी प्रजा पर यथेच्छ अत्याचार करनेकी सनद मिल गई थी। रूस, आस्ट्रिया, फ्रांस और इङ्गलैण्डही इसमें मुख्य थे। इनमें से किसीकी इच्छाके विरुद्ध ग्रीक विद्रोह नहीं करते थे। तो भी उन्हें विद्रोह करनेसे रोकनेका उन्होंने निश्चय किया! ग्रीसवाले

समझते थे कि रूमके जार हमारे अनुकूल हैं। परन्तु इस विद्रोह की और इप्सिलेन्टीके ढिंढोरेकी बात सुनकर जारने अपने मुखार-विन्दसे यह शब्द निकाले—"मै यदि ग्रीसको इस विद्रोहमें सहायता पहुंचाऊं तो कदाचित् उससे मेरे साम्राज्यको लाभ पहुंचे; परन्तु मुझे अब और राज्य लेकर क्या करना है? परमात्माने मुझे आठ लाख सेना दी है वह मेरी महत्वाकांक्षा पूरी करनेके लिये नहीं दी, वरन् उसकी सहायतासे मुझे धर्म, नीति और न्यायकी रक्षा करनाचाहिये। इसलिये मैं इन विद्रोहियोंकी मदद नहीं करूंगा।" यह कहकर उन्होंने इप्सिलेन्टीके सम्बन्धसे अपनी अनिच्छा प्रगट की और उसका नाम भी अपनी फौजसे काटकर उसे बरखास्त कर दिया। इन सब कारणोंसे ग्रीसवालोंका कुछ थोडासा साहस कम होगया। परन्तु जो अन्तःकरणसे स्वतन्त्रताप्रिय है वह दूसरोंसे सहायता पानेके लिये काम आरम्भ करनेके पश्चात् सुस्त होकर बैठ नही रहता। ग्रीकोंने अधिक जोशके साथ अपना काम आरम्भकरके जारी रखा। अबतक वह जो काम करते थे वह छुपा छिपाकर करते थे परन्तु अब उन्होंने अपना काम प्रगट रूपसे आरम्भ किया।

जो लोग आरम्भमें कुछ देश भलाईका काम गुप्त रूपसे करते है उन्हें लोग चोर, डाकू और विद्रोही कहते हैं उनको पापी और उनके कामको महापाप समझते है, राजा उनको दण्ड देता है रातके सिवा उनको काम करनेका और कोई समय नहीं और जंगलके सिवा और कोई स्थान नहीं। उनकी ऐसी शोचनीय दशा होती है! इस काममें उन्हें चोरी करना पडती है। जिनके उप-कारके लिये वह काम करते हैं वही उनपर विश्वास नही करते लोग उनका सत्कार नहीं करते। इस प्रकार इस गुप्त प्रयत्नको आरम्भ में मनुष्योंकी जो दशा होती है वह बडी भयङ्कर है! परन्तु काम आरम्भ होनेके पश्चात् कुछ फल निकलने पर उनकी दशा बदल जाती है। जो नाम पहले चोरोंका समझा जाता है वह पवित्र समझा जाता है। जो लोग आरम्भमें चोर, बदमाश, अधम और

पापी कहे जाते हैं वही पीछे परोपकारी, नेक, उदार और देशभक्त कहे जाने लगते है। जो राजा पहले उनको सजा देते हैं वही उनका नाम सुनकर डरके मारे थरथर कांपने लगते है। जिस कामसे कुछ भी सम्बन्ध रखनेसेलोग आरम्भमें डरते हैं उसी कामसे वह अपना सर्वस्व लगा देनेको तय्यार होजाते हैं। जो राजद्रोही कहलाते हैं वही देशभक्त कहलाने लगते हैं। जो लोग अपनी गुप्त बात अपने असल स्नेही तकके कानोंमें पहुंचानेसे डरते हैं वही अपनी भयङ्कर तोपोंकी गर्जनासे सारे संसारको हिलादेते है। जहां पर पहले अन्धकारही अन्धकार होताहै वहांपर सूर्य्यका प्रकाश फैलता है। जिसे लोग पाप कहते हैं वही पुण्य कहाजाने लगता है। जो दूषण है वही भूषण होजाता है, जो त्याज्य है वही ग्राह्य होजाता है। जिससे अपकीर्ति होती है उसी द्वारा यश प्राप्त होता है। जो काम करनेके लिये बड़ेबड़े शूरवीर भयभीत होतेहैं उसीको करने को एक साधारण पुरुष सबसे पहले आगे कदम बढ़ाकर अगुआ बनता है। रीति रिवाजमें एक बारगी अन्तर पड़ जाता है। अतएव राज्यविद्रोहके लिये गुप्तप्रयत्न करना जितना हितकारी होता है उसी कदर प्रगट आरम्भ भी हितकर होता है। सफर करनेमे रातको चलना अच्छा है जरूर परन्तु सूर्य्यके प्रकाशसे भी बहुत कुछ लाभ होता है। राह आंखोंके सामने साफ दिखाई देने लगती है और उसके द्वारा बहुत कुछ कष्ट सरल होजाते है। यही हाल राज्यविद्रोहका है।

इसी तत्वका स्मरण करके ग्रीकोंने अलग अलग शहरोंमें विद्रोह आरम्भ कर दिया। थियोडर और इप्सिलेंटीने ग्रीसके उत्तरकी ओर वलेशिया और मोल्डोविया प्रान्तमें विद्रोह आरम्भ कर दिया और इनके साथ साथ ग्रीस निवासी भी अपने हथियार लेलेकर मैदानमें निकले। कोलोकोट्रोनी, मिकाएल वगैरह ग्रीस देशके अगुआ लोग जो पहलेसे युद्धकी तय्यारीमें लगे थे और हथियार आदि युद्धकी सामग्री पहाड़की खोहोंमें जमा करते रहते थे;

उन्होंने भी इस्लिंटोसे सूचना पाकर दक्षिणकी ओर गदर मचा दिया। किसान पहाडों पर इकट्ठे हुए और अपने पुराने गले सडे हथियार निकाल कर काममें लाये। वह तुर्कों पर अस्त्र प्रहार करने लगे। साधारण लोग स्वतंत्रताके लिये अपना प्राण न्योछावर करके तुर्कोंसे मुकाबला करते थे और धर्माधिकारी-मठाधीश-आचार्य लोग भी अपने अपने देवताके स्मरणमेंही नहीं लगे थे; वह भी देशकी स्वतंत्रताके लिये अन्य लोगोंके साथी हुए। कितनेही स्थानों पर कितनेही धर्मोपदेशक विद्रोहियोंके अगुआ बने। जिस समय वह शत्रुओं पर धावा करते उस समय नाना प्रकारके गीत गाते और अनुयायियोंको उपदेश देते कि यह धर्म युद्ध है। हम सब धर्महीके लिये लडते हैं। जो पुरुष इस लडाईमें मारा जायगा वह स्वर्गलोक पावेगा। "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा मोक्ष्यसे महीम्" अपने प्राचीन धर्मका यह गूढ़ तत्व उस समय ग्रीक लोगों का लक्ष्य बन रहा था। इसी गूढ़ तत्वका उस समय ग्रीक उपदेशक उपदेश देकर लोगोंको युद्धमें शामिल होनेका उत्साह दिलाते थे। इस प्रकार पेट्रस, अथेन्स, क्रीट, हायड्रा, स्पेजिया, इप्सारा इत्यादि सब स्थानों पर विद्रोह होगया। आचार्योंके सब टापुओं में वहांके लोगोंने विद्रोहका झगड़ा खडा किया। जो शहर समुद्र के किनारे थे और जो टापू समुद्रके मध्यमें थे वहांके निवासियोंने जल मार्गमें शत्रुओंको रोकनेका प्रबंध किया। उन्होंने अपने अपने जहाज तय्यार किये। ग्रीसमें पहाड़ अधिक है, वह पहाड़ी मुल्क है; अतएव वहां आने जानेके लिये रास्ते वगैरहका सुभीता बहुत कम है। इस कारण विद्रोहकी पूर्व रचना करनेमें ग्रीकोंको पहाडी किलोंसे बहुत मदद मिली। वहां पर उन्होंने छिप छिप कर अपनी फौज और लडाईका बहुतसा सामान इकट्ठा किया। एपिरस, थिसली और अलिम्पसके पहाड़, मैसिडोनियाके पहाड, इनेड्रा वगैरह पर हजारों आदमी जमा हुए। उन्होंने तुर्कोंके अत्याचारसे बचनेके लिये जो उन पर सैकड़ों वर्षोंसे होता था,

अपने हथियारोंसे काम लिया। हायड्रा, स्पेजिया इत्यादि स्थान के लोगोंने विद्रोह आरम्भ करने पर यह जाहिर किया—

"हम पर सैकड़ों वर्षोंसे जो गुलामीका बोझ रखा हुआ है उसे आज उतारे देते हैं। इस बोझके कारण हमको असह्य दुःख भोगना पड़ा है और अब आगे यह दुःख भोगने की हममें शक्ति नहीं है। ऐसी हालतमें अत्याचारके विरुद्ध हथियार उठानेका हमने निश्चय किया है। हममें आपसमें फूट है; परन्तु उस फूटको इस समय भुलाये देते है और सब लोग मेल मिलापकी डोरी द्वारा आज एक होते है। आपसके झगडे बखेडे भुलादेना बडा जरूरी है; यह बात हमारे ऊपर होनेवाले अत्याचारने हमें सिखाई है। ऐसा करनेसे हमको स्वतंत्रताकी सुगंधित वायुमें सांस लेनेका अवसर मिला है। हमारे हाथोंने गुलामीकी जंजीर तोडदी है और अब वह अपने शत्रुकी भगानेका समाचार जाननेके लिये तय्यार हैं।" इस तरहके मनोविकार ग्रीस देशमें एकही समय पर सर्वत्र फैलगये और विद्रोह आरम्भ होगया।

एकही समय पर अनेक स्थानोंमें एक काम आरम्भ होनेसे यश प्राप्त होता है। यह बात ग्रीसका इतिहास पढ़नेसे साफ जाहिर होती है। अमुकने काम आरम्भ किया है यदि उसे यश प्राप्त होगा तो हम भी आरम्भ करेंगे; यह बात ग्रीसमें कहीं दिखाई नहीं पडी। यह बात देशका अहित करनेवाली है। यश प्राप्त होने पर जिसे यश प्राप्त होता है उसके पक्षमें पीछे बहुतसे आदमी आ कर शामिल होजाते है और उसका अनुकरण करने लगते है। परन्तु साहस और वीरता इसमें है कि आरम्भमेंही यश पानेके लिये उद्योग किया जाय। एकही समय विद्रोह आरम्भ करनेसे ग्रीसके राज्याधिकारी लोग घबरा गये! कहां पर कितने आदमी इकट्ठे हुए है, यह बात उनके ध्यानमें न आई। यदि एक स्थान पर विद्रोही जमा हुए होते तो फौज भेजकर उनका नाश किया जा सकता था। परन्तु चारों ओर उपद्रव होनेसे राज्याधिकारियोंको

कुछ सूझ नहीं पड़ा। शत्रुका घबरा जाना आधी जय मिलनेके बराबर है। यह जय ग्रीसवालोंको आरम्भमेंही प्राप्त हुई। वह एक दूसरेकी बैठे बैठे बाट नहीं देखते थे; सब अपना अपना काम बराबर करते रहे!

राज्याधिकारियों और विद्रोहियोंमें स्वभावतः अन्तर रहता है। राज्याधिकारियोंके हाथमें बहुत दिनों तक इन्तजाम रहनेसे उन्हें हर तरहका सुबीता रहता है। विद्रोह करनेवालोंको सब प्रकार की व्यवस्था स्वयं समयानुकूल करना पडती है। अतएव विद्रोहियों की व्यवस्थाका स्थायी रहना बहुतही कठिन काम है। यदि राज्याधिकारियोंने सेना भेजकर विद्रोहियोंका दमन करना चाहा तो उनके पास खाने पीनेका सामान, गोला बारूद—सब तय्यार रहता है। राजकोष उनके हाथमें रहता है; इससे उनको जयलाभ करनेमें बहुत सुबीता मिलता है। परन्तु इस प्रकारकी सब व्यवस्था विद्रोही एकदम नहीं कर सकते। विद्रोह आरम्भ होने पर तुरन्त ही कमसरियट ट्रान्सपोर्ट वगैरह जल्दीमें उत्तमतापूर्वक तय्यार नहीं होसकते और इससे उनको बहुत कठिनाई पडती है। गुलामी में फंसे हुए देशके लोग विद्रोहियोंके अनुकूल होते हैं, यह बात सच है और इसी कारण सर्वसाधारणसे उनको कुछ सहायता भी पहुंचती है। परन्तु उनकी बहुतसी जरूरतें उनसे पूरी नहीं होतीं। इससे बहुधा विद्रोहियोंको अन्न, धन घोडे इत्यादि सामान लोगोंसे जबरदस्ती छीन लेना पडता है और इसी सबबसे राज्याधिकारी इनको डाकू, लुटेरे कहकर कलंकित करते है। इस कलंकसे मुक्त होनेके लिये उन लोगोंने और ही विचार किया। भारतवर्षमें ग्राम्यप्रथा (Village System) की पद्धति अंगरेजोंने तोड़ दी, परन्तु टर्कीके साम्राज्यमें उस समय इसका प्रचार था। लोगोंमें एकता और कर्तव्यका बीज मात्र न रहे और बालूके कणके समान सब एक दूसरेसे अलग रहें जिससे जब जरूरत पड़े तभी वह नष्ट कर दिये जायं। इस लिये ग्राम्यप्रथाकी पद्धति

उठा देनेकी युक्ति टर्कीके सुलतानको उस समय नहीं सूझी। ग्रीसमें सर्वत्र यह पद्धति जारी थी और हर एक गांवके लोगोंको अपने स्थानिक काम आप चलानेका अधिकार प्राप्त था। इस कारण ग्रीसमें विद्रोहका आरम्भ होनेके साथही एक विलक्षण चमत्कार दिखाई पडा। ग्रीकोंके दो भाग होगये। जिनके शरीरमें वल था वह तो लडाईका काम चलानेके लिये फौजमें भर्ती हुए और जिनमें केवल वुद्धि थी वह लड़ाईका सब सामान इकट्ठा करने उसे व्यवस्थित रखने और समय पर अपने भाइयों तक पहुंचानेका काम करने लगे। पञ्चायतकी पद्धतिका प्रचार होनेके कारण यह काम किस प्रकार किया जावे इसकी उनको पहलेसेही शिक्षा मिली थी। वह सब अपने अपने काममें लग गये।

पिलापोनिससमें सब ग्रीक लीडर इकट्ठे हुए। उन्होंने नीचे लिखा हुआ आज्ञापत्र प्रगट किया;—"हम लोगोंने अपने देशको विदेशियोंके अत्याचारसे मुक्त करनेके लिये शस्त्र धारण किया है। हम चाहते हैं कि अपने स्वदेशवान्धवोंको स्वतन्त्रता फिर प्राप्त हो। अपनी स्वतन्त्रता, अपने धर्म्म और अपने प्रसिद्ध देशकी रक्षाके लिये ही हम सबको युद्ध करना चाहिये ; अब यही हमारा कर्तव्य है। इस कर्तव्यका पालन करनेके लिये हम तय्यार हैं। इस काममें हम सब लोगोंसे और कुछ सहायता नहीं चाहते ; केवल सब लोग हमें हथियार, धन और उत्तम सलाहसे सहायता दें।"

उन्होंने इस प्रकारका विज्ञापन लोगोंमें वितरण करके राजविद्रोह कारक सेनाकी व्यवस्था की। हायड्रामें भी इसी प्रकारकी एक सभा स्थापित हुई। ग्रीसके इतिहास प्रसिद्ध नगर अथेन्समें भी सीनेट स्थापित हुई। इन सभाओंने यह विचार करके कि हमारी सेना कहां पर और किस तरह तुर्क सेना पर हमला करे, उन पर कहांसे छापा मारे, कहां बैठकर सलाह मशविरा किया जावे, सैनिकोंको सामान किस तरह पहुंचाया जावे. गोला बारूद युद्धकी सामग्री कहांसे लाई जावे और कहां एकत्र कीजावे, अथवा

लोगोंके कुटुम्बके पालन पोषण आदि सब कामोंको चतुराईके साथ अपने हाथमें लेकर पूरा किया। भिन्न भिन्न स्थानों पर जो सेना इकट्ठी थी उसे एकत्रित करना और उससे एक केन्द्रस्थानमें किसी योग्य नायककी आज्ञानुसार काम कराना बहुत जरूरी था। बिना एक सूत्रमें बंधे लड़ाईमें यश प्राप्त करना असम्भव है। यह बात ग्रीक लोग पहलेहीसे जानते थे; अतएव उन्होंने आरम्भसेही वैसी व्यवस्था कर रखी थी। एकताके सूत्रमें बंधकर काम करनेसेही उन्हें यश प्राप्त हुआ।

उन्होंने जब देश भरमें विप्लव मचा दिया तब सुलताननें भी अपने हाथ पैर हिलाना जरूरी समझा और विद्रोह दमन करनेके लिये अपनी सेनाको आज्ञा दी। ग्रीसवालोंका साहस देखकर मुसलमान क्रोधके मारे आग बबूला होगये। वह कानस्टन्टिनोपल में जमा हुए और ग्रीकोंको कतल करनेकी आज्ञा चाही। उनके क्रोधका रोकना असंभव जानकर आज्ञा दीगई। आज्ञा पातेही उन्होंने गरीब अनाथ ग्रीकोंको कतल करना शुरूकिया। मुसलमानी जोशने सबसे पहले पेट्रियार्क ग्रेगोरियसका वध किया। यह बात ऊपर लिख आये हैं। यह पुरुष ग्रीकोंका धर्म्माचार्य्य था। इसके अलावा और बहुतसे धर्म्माधिकारियोंने भी इनके द्वारा स्वर्गकी राह ली। ईसाइयोंके धर्म्ममन्दिर तोड़े गये और उनमें जो कीमती चीजें थीं वह सब मुसलमानोंने लूट लीं। हर रोज ग्रीकोंका वध होने लगा, उनका धनधान्य सब लूटा जाने लगा और उनके स्त्री पुत्र गुलाम बनाकर बेचे जाने लगे। दस बारह दिनमेंही हजारों ग्रीकोंकी लाशें इधर उधर सडक और गली कूचोंमें पडी दिखाई देने लगीं। ईसाई मजहबके बिशप, आर्च बिशप वगैरह बड़े बडे लोगोंको आम रास्तेके ऊपर मुसलमानोंने फांसी पर लटका दिया। सलोनिकाके किलेमें मुसलमानोंने क्रोधवश होकर एक बड़ा भयं-कर काम [illegible] किले [illegible] किनारे किनारे ईसाइयोंकी [illegible] रक्त निकलकर किलेकी

दीवारपर टपकताथा उस दीवारके पास जो खाई थी उसमें पानीभरा था वह पानी रक्तसे लाल होगया। समरनामें भी बहुतसे ग्रीक वसते थे। वहां भी मुसलमानोंने कतलआम जारी कर दिया। सायप्रस द्वीपमेंभी उन्होंने ग्रीकोंके साथ यही सलूक किया। वहांके लोगों को भी बड़ी निर्दयतासे वध किया! इस टापूमें करीब दस हजार मुसलमान जाकर उतरे और गांव गांवमें फैल गये। जहां जो ग्रीक मिला उन्होंने वहीं उसे वध किया और उनकी स्त्रियोंका धर्म्म नष्ट किया। पहले तो उन्होंने गांवोंको जहांतक बन पडा खूब लूटा और पश्चात् उनमें आग लगा दी जिससे बाल बच्चे जो वधसे बचे थे सब उसमें भस्म होगये। इस प्रकार उन्होंने सारा द्वीप उजाड़ दिया।

वहांकी इस भयंकर दशाको पढ़कर कौन होगा जिसको दु:ख न मालूम होगा? राज्य-विप्लवके ऐसे भयंकर परिणामको पढ़कर शायद कुछ नरमदिल लोग यह कह उठें कि जो काम करनेसे हजारों लोगोंकी जान जाती है हजारों लाखों रुपयोंका धन नाश होजाता है और हजारों वर्षोंमें बडे परिश्रम द्वारा जो राज्य स्थापित किया जाता है वह नष्ट होजाता है वैसा पाप कर्म करनेमें किसीको शामिल न होना चाहिये! परन्तु उन का ऐसा विचारना ठीक नहीं है। एक अंगरेजी इतिहास लेखकने राज्यक्रान्तिकी बाबत लिखा है—Revolutions are not made with rose-water! इसका मतलब यहहै कि राज्यक्रान्ति गुलाबजल द्वारा नहीं होती। जो अपने ऊपर अत्याचार करता है उससे हमको मृदुभाषण करना चाहिये उसके चरण छूना चाहिये और उसके गलेमें सुन्दर पुष्पोंकी माला डालकर उसके अत्याचारके बदले उसे धन्यवाद देना चाहिये और उसके ऊपर गुलाब जल छिड़-कना चाहिये। परन्तु यह बात ऐतिहासिक विचारसे कभी ठीक नहीं होसकती है। इतिहासके तत्वोंको उलटने पुलटने अथवा उनको घटाने बढानेसे कुछ भी मतलब नहीं निकलता। राजविद्रोह

से आरम्भमें हानि जरूर पहुंचती है यह बात ठीक है ; परन्तु स्वतन्त्रताके आगे वह हानि बिलकुल तुच्छ है ! यही बात अबतक लोग समझते आये हैं। यदि ग्रीसवासी आरम्भिक हानि न सहते तो आज स्वतंत्रताकी सुख नींदमें वहांसे सोते।

इसप्रकार ग्रीसमें राज्यक्रान्तिका आरम्भ ग्रीकलोगोंकी ओरसे हुआ और उसे रोकनेके लिये सुलतानकी ओरसे कारखाई होने लगी। प्रजा और राजाके बीचमें सात आठ वर्ष तक खूब युद्ध होता रहा। उस युद्धका पूरा विवरण यहां पर देना असम्भव है। वह पाठकों को अधिक रुचिकर भी न होगा। अतएव उसको छोड़कर अब हम केवल उन महात्माओंका थोडासा हाल पाठकोंको सुनाते हैं जो इस अपूर्व युद्धमें देशके अगुआ थे। उन लोगोंने जो विलक्षण प्रेम और शौर्य अपने देशके लिये प्रगट किया उनका निरूपण जरूर बोध प्रद होगा। उन लोगोंके बहुतसे गुण ग्रहण करने योग्य और बहुतसे दुर्गुण त्याग देने योग्य है : पाठकोंको उनका हाल जाननेसे लाभ होगा।

ग्रीक लीडरोंमेंसे इप्सिलेंटीका चरित्र बहुत ही हृदयद्रावक है। ग्रीसमें राज्य-क्रान्तिका आरम्भ होनेसे रूसके सम्राट जार महोदय ग्रीक लोगोंकी जरूर कुछ न कुछ मदद देंगे इसका इप्सिलेंटी को पूरा पूरा विश्वास था। परन्तु यह देखकर कि यूरोपका कोई राजा ग्रीक लोगोंको मदद नहीं करता और न किसी प्रकारकी उत्तेजना उनसे ग्रीक लोगोंको मिलती है वह निराश होगया। तथापि उसने साहस और धर्मको परित्याग नहीं किया। यह सोच कर कि कहीं हमारे सिपाहियोंकी आशा भंग न होजाय उसने अपने सिपाहियोंको सम्बोधन करके कहा;—"हम सबको अब यूरोपके राजाओंसे आगे पीछे किसी समय मदद मिलनेकी आशा नहीं है यह बात कभी नहीं होगी ; ग्रीस सरीखे देशको स्वतन्त्र होनेमें अमुक अमुक राजाने मदद नहीं की ऐसा इतिहासमें स्थापित होनेवाला कलंक अपने नामको कौन राजा लगावेगा ?"

इस प्रकार उत्तेजना भरेहुए शब्द कहकर उसने अपने साथियोंका धीरज बंधाया। सुलतानकी सेना उसे अपने पक्षमें करनेके लिये आरही थी उसका नाश करनेके लिये वह अपने साथियोंके साथ आगे बढा। ड्रगस्थनमें दोनो ओरकी सेनाकी भेट हुई। वहां घनघोर युद्ध हुआ परन्तु उस युद्धमें कितनेही ग्रीक विश्वासघातक निकल आये। इस कारण इप्सिलेन्टीकी हार हुई। उसने 'सेक्रेड बटेलियन' नामकी एक पल्टन तय्यार की थी। वह पूरी पल्टन उस लडाईमें नष्ट होगई। इस हारके दूसरे दिन उसने साथियों और सिपाहियोंके लिये यह पत्र प्रकाश किया—

"हमारे वीर साथी सिपाहियो।—अथवा तुम्हारे सरीखे विश्वासघातक और देशद्रोही लोगोंको सिपाही कहकर उस पवित्र और सम्माननीय शब्दका मूल्य कम करना ठीक नहीं है। मैं तुम्हारा सेनापति और तुम मेरे सैनिक; तुममें और मुझमें जो यह नाता था वह आज समाप्त हुआ। परन्तु आजतक मैं तुम जैसे लोगों का सेनापति रहा इसके लिये मुझे शर्म मालूम होती है। तुमने जो कसम खाई थी वह प्रतिज्ञा तोड दी। तुमने अपने देव और देश दोनोके लिये नमकहरामी की। मैं तुम्हारे साथ युद्धमें जय प्राप्त करने अथवा समरक्षेत्रमें प्राणत्याग करनेके लिये तय्यार था ऐसे समयमें तुमने हमारे साथ नहीं, नहीं, सारेदेशके साथ विश्वासघात किया। यह तुमने बहुतही अनुचित किया। अब तुम्हारा और मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं रहा। अब तुम खुशीसे जहां चाहो वहां चले जाओ और शत्रुपक्षमें खुशीके साथ शामिल होजाओ। तुम सरीखोंका वहीं मित्र ठीक है! जाओ, उनकी ओर जाओ। उनके पास जल्द जाओ॥ तुम अपना रक्त उनके लिये बहाओ। अपनी स्त्री और बच्चोको उनकी भेट करके अपनी गुलामी कायम रखो। परन्तु इस 'सेक्रेड बटेलियन' के शूरवीर सिपाहियोंको आत्माओ। तुम इनमें शामिल नहीं हो: तुमने अपने देशके लिये अपने प्राणत्याग किये है और तुम्हारी इस अलौकिक देशभक्ति

लिये तुम्हारा देश तुम्हारा ऋणी है। मैं तुम्हारे देशकी ओरसे तुमको, तुम्हारी आत्माओंको धन्यवाद देता हूं। आप इसको अवश्यमेव स्वीकार करें। तुम्हारा नाम अजर अमर होगया है, इसमें किसी प्रकारकी शंका नहीं है। परन्तु जिन्होंने देशद्रोह किया और ऐन वक्त पर विश्वासघात करके देशकी भलाईकी नाव मझधारमें छोडकर चले गये, उनका नाम सुनकर सब लोग तिरस्कार करेंगे! उनका देश उनको शाप देगा और परमात्मा उनको इस अपकारके बदले विना दण्ड दिये कभी न रहेगा।"

इस प्रकारका हृदयद्रावक पत्र प्रकाशित करके निराश होकर इप्सिलेन्टी आस्ट्रेलिया चला गया। वहां आस्ट्रेलियन सरकारने उसे पकडकर छः वर्ष तक कैद रखा। वहांसे छुटकारा पाने पर वह बहुत जल्द मर गया!

इप्सिलेन्टीके पास जार्गेकिस नामका एक वीर पुरुष था। इप्सिलेन्टीकी हार होने पर वह कुछ सेना अपने साथ लेकर रूस राज्यकी सरहदके पास धीरे धीरे हटता हुआ चला गया। परन्तु अपने देशके शत्रुओंसे विना युद्धकिये हटना उसको अच्छा न लगा। अतएव उसने एक स्थान पर तुर्कोंसे मुकाबला किया। इस समय जार्गेकिसके पास कुल चारसौ आदमी थे और तुर्क सेना करीब चार हजारकी थी। दोनो ओरसे घोरयुद्ध हुआ। जार्गेकिसने कसम खाई थी कि जबतक जानमें जान है तबतक शत्रुको कभी पीठ न दिखाऊंगा और जीतेजी शत्रुको आत्मसमर्पण नहींकरूंगा। इस उग्र प्रतिज्ञाको जार्गेकिसने बडी विलक्षणताके साथ पूरा किया। एक देवालयमें यह लोग तुर्क सेनासे घिर गये। जार्गेकिसने अपना अन्तिम समय आया जान देवालयका दरवाजा खोल दिया और अपने साथियोंसे कहा कि जिसको अपनी जान प्यारी हो वह बाहर खुशीके साथ निकल जावे और जो मरनेको तय्यार हो वह मेरे साथ रहें। इसके बाद उसने एक बारूदके थैलेमें आग लगादी और वहीं जलकर खाक होगया! बहुतसे शत्रुओंको भी अपने

साथही जलाकर भस्म कर दिया! निरपेक्ष काम जिस स्वदेशभक्ति की सहायतासे किया जाता है वह स्वदेशभक्ति जिन लोगोंके अन्तःकरणमें उत्पन्न हो उनके द्वारा उनका देश बहुतही जल्द स्वतन्त्र होसकता है।

ऊपर जिन दो वीर पुरुषोंका हाल दिया गया है वह स्थल पर युद्ध करनेवाले थे। परन्तु ग्रीसको समुद्र द्वारा भी शत्रुओंका नाश करना जरूरी था। कप्तान पाशा नामक एक मुसलमान सरदारके अधिकारमें टर्कीके बहुतसे लड़ाईके जहाज इजिप्शियन समुद्रमें आगये थे और इजिप्टसे और भी बहुतसे जहाज उसके पास आकर लड़ाईमें शामिल होनेवाले थे। कप्तान पाशाके जहाजोंका नाश करना ग्रीकोंको बहुत जरूरी था। उन्होंने पाशाके जहाज तबाह करनेके लिये तय्यारियां करदीं। टर्कीकी जहाजी ताकतका नाश करनेके लिये एक दिन अन्धेरी रातमें दो नावें भेजनेका उन्होंने निश्चय किया! यह दोनों नावें अगनबोटके समान थीं और वह अगनबोट स्वयं ग्रीकोंने तय्यार कियेथे। इनसेलोगोंको बहुत फायदा पहुंचा। इनकी बनावट इस प्रकार थी कि किसी पुरानी परन्तु मजबूत नावको लेकर उसमें राल वगैरह पदार्थ जो आसानीसे जल सकें भर देते थे और उन ज्वालाग्राही पदार्थोंका सम्बन्ध बारूद द्वारा एक दूसरेसे कर दिया था और इसी प्रकार नावके पाल रस्से वगैरह तारपीनके तेलमें भिगोकर रक्खे गये थे। इस प्रकारके दो अगनबोट शत्रुओंके जहाजके पास वह लोग लेगये। रमजानका महीना था और उस दिन कोई खास मुसलमानी त्योहार था। इस कारण पाशा साहब एक खास जहाज पर आनन्दपूर्वक सोते थे। उसी जहाज पर करीब एक हजार आदमी थे वह भी आनन्दमें मग्न थे। ऐसा सुअवसर देखकर ग्रीकोंने उन पर हमला करनेकी तय्यारी की। उन दोनों अगनबोटों पर कुल चौतीस आदमी थे जो मरनेके लिये त्यारी हुए। अगनबोटोंके साथ उन्होंने दो नावें और बांध लीं कि यदि इनमेंसे कोई पानीमें डूबने

लगे, तो उन्हें तुरन्त निकाल लें। शत्रुओंको धोखा देनेके लिये उन्हों ने फ्रेंच और आस्ट्रियन झंडे अपने आगेवाले दोनो अगनबोटों पर खडे किये। इस काममें कनेरीस नामका एक खलासी अगुआ बना था। वह अपने दोनो अगनबोटोंको शत्रुके जहाजोंके बीचमें ले गया और जिस जहाज पर पाशा साहब थे कनेरीसने वहीं अपनी नावें लाखडी कीं और उनमें आग लगादी। वह अपने साथियोंको दूसरी नाव पर जो पीछे थी चढाकर वापिस आया। उसने अपनी नाव पर जिसमें बैठकर वह वापिस आया गोला बारूद आदि बहुतसा सामान भर लिया था। उसका विचार था कि यदि हम लोग शत्रुओंके बीचमें किसी तरह फंस जायंगे तो शत्रुको आत्म-समर्पण न करके बारूदमें आग लगाकर इसी नाव पर भस्म हो जायंगे। परन्तु ईश्वरकी कृपासे ऐसा बुरा समय उनपर न आया। कनेरीसने अपनी नावोंको पाशाके जहाजसे इस कदर मजबूत बांध दिया था कि वह फिर किसी तरह छूट नहीं सकती थीं। नावों के द्वारा पाशाके जहाज पर आग बहुत जल्द पहुंच गई और उसके बाद आसपासके सब जहाजों और नावों पर भी अग्निने अपना प्रभाव जमा लिया! छोटी मोटी नावें और जहाज बहुत जल्द जलकर समुद्रमें डूब गये। बहुतसे मल्लाह और खलासी समुद्रमें कूद पड़े और बहुतसे जहाजों परही जल भुनकर खाक होगये। स्वयं पाशाके सिरमें बहुत सख्त चोट लगी जिससे उनका भी वहीं प्राणान्त होगया। इस प्रकार कनेरीसने सुलतानकी सारी जहाजी ताकत अपने बुद्धिबलसे न[illegible]। इस वी[illegible] नाम इसके पराक्रम और साहसके द[illegible] इतिह[illegible] अमर हो

सेना लेकर आरहे थे। उस समय ग्रीक सेनापति बोजरीस था। उसके पास केवल तीन हजार आदमी थे। इतने थोड़े आदमियो द्वारा खुल्लमखुल्ला युद्ध करना बिलकुल असम्भव था। अतएव बोजरीसने छिपकर गुप्तरीतिसे शत्रु पर हमला करना निश्चय किया। एक पल्टनमेंसे उसने १५० आदमी इस कामके लिये छांट लिये और उनको अपने साथलेकर शत्रुकी छावनीमें स्वयं जापहुंचा। तुर्क सेनाके जिस भाग पर वह हमला करना चाहता था वहां पांच हजार आदमी मौजूद थे। परन्तु रात होनेके कारण वह गाढ़ी नींद लेरहे थे। बाहर पहरा देनेके लिये भी कोई आदमी न था और न छावनीके आसपास रक्षाके लिये कोई खाई खन्दक थी। ऐसी अवस्थाके कारण बोजरीसने तुर्कसेना पर हमला किया। और शत्रुओंको जीतनेके लिये अपने सिपाहियोंको ऊंचेस्वरसे उत्ते-जित करने लगा। तुर्कोंने बोजरीसकी आवाज पहचानकर उसी अंधेरी रातमें शत्रु मित्र, अपना पराया बिना पहचाने मारकाट आरम्भ कर दी। इस लड़ाईमें उसके बहुत चोट लगी मगर उसने यह विचारकर कि यदि हमारे सिपाहियोंको हमारे चोट लगनेका हाल मालूम होगा तो वह निराश होकर धैर्य्य छोड़ देंगे; अपना जखम वहीं ज्योंका त्यों दबा लिया और अपने साथियोंको बराबर साहसके साथ हमला करनेकी आज्ञा देता रहा। यहांतक कि सवेरा होगया और तुर्क सेना इधर उधर भाग गई। इस हमलेसे ग्रीकोंको बहुत बड़ी जय प्राप्त हुई। परंतु सवेरा होते होते सेना-पतिके सिरमें एक और जख्म लगा जिसके कारण शीघ्रही वह मर गया। मरनेसे पहले उसे यह मालूम हुआ कि शत्रु सेना हारकर भाग गई इस कारण मरने परभी उसे कुछ दुःख नहीं हुआ। उसने अपने जयका समाचार पाकर शान्तिपूर्वक प्राण त्यागा। उसके साथी उसका शरीर रणक्षेत्रसे उठाकर मिसलोंघीमें लेगये और उस की अन्तिम क्रिया बडे ठाटबाट और सम्मानपूर्वक की। उसकी बावत लिखा गया है—

Beloved Greeks ! Lo, another Leonidas figures in your history.

इसी प्रकार कोलोकोट्रोनी वगैरह ग्रीकके प्रधानोंके शौर्य और स्वदेशभक्तिके उदाहरण देने योग्य है। परन्तु ऊपर दियेहुए उदाहरण ही काफी है। तुर्कोंने किआस द्वीपमें कतलआम किया और मिसलोंघीके अन्तिमयुद्धमें असंख्य ग्रीकोंका नाश हुआ। इससे और अन्य अमानुषी कामोंके कारण यूरोपवालोंका ध्यान ग्रीसकी ओर गया। उससे ग्रीकोंको बहुत फायदा पहुंचा। ग्रीक आरम्भसेही चाहते थे कि हमारी इस स्वतन्त्रताप्राप्तिकी कलहमें यूरोपके और राजा भी शामिल हों। मगर आरम्भमें किसीने इनका साथ नहीं दिया। आखिरमें फ्रांस और इंगलेण्डने मिलकर और अपने लड़ाईके जहाज इकट्ठा करके इजिप्टमें इब्राहीम पाशाके जहाजी बेड़ेको नवारिनो स्थान पर परास्त किया। तबसे ग्रीसकी स्वतन्त्रताने मानो एक नया स्वरूप धारण किया। जनवरी सन् १८२२ में ग्रीकोंने यह प्रगट किया कि हम लोग पूर्णरूपसे टर्की राज्यसे अलग होगये। अब हमारा टर्कीसे कुछ सम्बन्ध नहीं। हमने अपनी स्वतन्त्र गवर्नमेण्ट स्थापित करली। उस समय ग्रीकोंने जो आज्ञापत्र प्रकाशित किया उसमें लिखा था—

"हम लोगोंके ऊपर अत्याचार इतना असह्य होगया था कि उसके कारण ग्रीकजातिका नामोनिशानही मिटा जाता था। परन्तु परमेश्वरकी कृपासे ग्रीक जाति अब भी जीवित है। ग्रीसके ऊपर हुकूमत करनेवाले अत्याचारी क्रूर राजाने अपने सब अहद पैमान तोड़ दिये थे। किसी प्रकारके न्यायका अवलम्बन वह नहीं करता था। न्याय अन्यायकी उसे कुछ परवा न थी। दिनोदिन ग्रीकों पर वह अपना अत्याचार बढ़ाता जाता था विजित लोगोंका समूल उच्छेद होजाय इसके लिये वह सदैव कोशिश करता था। ऐसी हालतमें अपनी रक्षाके लिये ग्रीसको स्वयं अपने हाथमें अस्त्र लेना पड़ा। ग्रीसवासियोंने किसीका सहारा अथवा मदद लिये बिना

युद्ध करके शत्रुके अत्याचारसे अपने आपको मुक्त कर लिया है। हम लोगोंको ईश्वरकी कृपासे अब जय प्राप्त हुई है। अतएव आज ग्रीसदेशके सब प्रतिनिधि एकत्रित होकर ईश्वरकी साक्षी करके कहते हैं कि **हमारा ग्रीस देश आजसे स्वतन्त्र हुआ। यह बात अब हम सारे संसार पर प्रगट करते हैं।"**

इस प्रकार ग्रीकोंने अपनी स्वतन्त्रता सब लोगों पर प्रगट की। परन्तु यह बात उस समय यूरोपके अन्य राजाओंने स्वीकार नहीं की। इस कारण ग्रीसवालोंको चार पांच वर्षतक और युद्ध करना पडा। कष्ट सहन किये बिना सुख कभी प्राप्त नहीं होता; इस तत्वके अनुसार ग्रीकलोग बराबर कष्ट सहते रहे जबतक उनकी लक्ष्य वस्तु स्वाधीनता न प्राप्त होगई। इन अन्तिम वर्षों में ग्रीकोंने बडी होशियारी और पराक्रमके साथ युद्धका काम चलाया। जिस का मधुर फल आज उनके वंशज स्वाधीनता रूपी कल्पवृक्षके नीचे बैठकर इच्छापूर्वक खारहे है।

इति।

जिनही सरितान पोखरिनको जल सोखि लीन्हो
उनही सरितानमें फेरि जल भरिहै।
जिनही तरुवरनको पत्र फल विहीन कीन्हो
तिनही तरुवरनमें फेरि फल फरिहै।
जिनही बलिराजजूको स्वर्ग तजि पताल राखो
तेही बलिराज फेरि इन्द्र पद करिहै।
कहै छत्रसाल वीर मेरे मन धरो धीर
जिनही उपराजी पीर सोई पीर हरिहै॥
"छत्रसाल।"